

भोट-भारतीय ग्रन्थमाला-९

51

आचार्यकमलशीलप्रणीतः

## भावनाक्रमः

( भोटोय-संस्करण, संस्कृत उद्धार एवं हिन्दी अनुवाद )

ॐ । स्त्रोव-दवोक्-गमव-मूयस-महद-वर्-मल्लोम-मि-प्रोवा-  
मधव-वर-मशुम-मलुम-सो॥



भोट विद्या संस्थानम्

संस्कृत-पुनरुद्धारक, हिन्दी-अनुवादक एवं सम्पादक

आ० जलछेन नमडोल

केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५२९ • सन्-१९८५

BIBLIOTHECA-INDO-TIBETICA-IX  
BHĀVANĀKRAMAḤ  
OF  
ĀCĀRYA KAMALAŚĪLA

(Tibetan Version, Sanskrit Restoration and Hindi Translation)



भोट विद्या संस्थानम्

RESTORED, TRANSLATED AND EDITED

BY

ĀCĀRYA GYALTSEN NAMDOL

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES  
SARNATH, VARANASI

1985



भोट-भारती ग्रन्थमाला-९

प्रधान सम्पादक : भिक्षु समबोड् रिनपोछे

प्रथम संस्करण : ५०० प्रतियाँ

मूल्य : ( १ ) सजिल्द : रु०

( २ ) अजिल्द : रु०

सर्वाधिकार सुरक्षित

१९८५

प्रकाशक :

केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान  
सारनाथ, वाराणसी

---

मुद्रक : शिवम् प्रिंटर्स, मलदहिया वाराणसी-२  
भोटभाषा का कम्पोज-सुशील प्रिंटिंग प्रेस, सारनाथ

ཞོ་དཀར་ཆག

(༡) དབར་སྐྱུན་པའི་ཆེད་བཞིན།- སློབ་སྦྱི་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ།

|            |   |   |     |
|------------|---|---|-----|
| ༡-བོད་སྐད། | ” | ” | ༡-ཨ |
| ༢-ནིན་དྲི། | ” | ” | ༡-ཅ |

(ཁ) སློན་སླང་།

|            |  |  |     |
|------------|--|--|-----|
| ༡-བོད་སྐད། |  |  | ༡-ང |
| ༢-ནིན་དྲི། |  |  | ཅ-ང |

(ག) སླང་བཞིན།

|            |  |  |         |
|------------|--|--|---------|
| ༡-བོད་སྐད། |  |  | ༡-༡༣༠   |
| ༢-ནིན་དྲི། |  |  | ༡༣༡-༡༣༡ |

(ང) གཞུང་དངོས་གཞི།

|                     |  |  |       |
|---------------------|--|--|-------|
| (༡) བོད་སྐད།        |  |  |       |
| ༡-བསྐྱོམ་རིམ་དང་བོ། |  |  | ༡-༡༣  |
| ༢-བསྐྱོམ་རིམ་བར་བ།  |  |  | ༡༣-༡༧ |
| ༣-བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མ།   |  |  | ༡༧-༡༩ |



## (༡) ལེགས་སྦྱར།

༡- བསྐྱེམ་རིམ་དང་བོ།

༡༩༥-༢༠༠

༢- བསྐྱེམ་རིམ་བར་བ།

༢༠༡-༢༢༢

༣- བསྐྱེམ་རིམ་ཐ་མ།

༢༢༣-༢༣༣

## (༢) ཉིན་རི།

༡- བསྐྱེམ་རིམ་དང་བོ།

༢༣༥-༢༤༣

༢- བསྐྱེམ་རིམ་བར་བ།

༢༤༥-༢༥༣

༣- བསྐྱེམ་རིམ་ཐ་མ།

༢༥༥-༢༦༣

## (༣) ཁ་སྐོང་ལྟན་ཐབས།

(༡) ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་དཀའ་གནད་རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་བཞིན་བཤད་བ།

༡- བོད་སྐད།

༢༦༥-༢༦༦

༢- ཉིན་རི།

༢༦༦-༢༦༧

(༢) ཞི་གནས་ཀྱི་དཔེ་རིས།

༢༦༧-༢༦༨

(༣) འཕགས་བོད་སྐད་གཉིས་ཆོག་མཛོད།

༢༦༨-༢༦༩

(༤) ལུང་འདྲེན་ལེན་ལུལ་གྱི་མདོ་སྟེང་མཚན་བྱང་།

༡- བོད་སྐད།

༢༦༩-༢༧༠

༢- ལེགས་སྦྱར།

༢༧༠-༢༧༡



## विषयानुक्रमणी

| प्रकाशकीय                    | भिक्षु समदोङ् रिनपोछे | पृष्ठ सं० |
|------------------------------|-----------------------|-----------|
| 1. तिब्बती                   | " " "                 | 1-4       |
| 2. हिन्दी                    | " " "                 | 5-6       |
| प्राक्कथन                    |                       |           |
| 1. तिब्बती                   |                       | क-ड       |
| 2. हिन्दी                    |                       | च-ज       |
| भूमिका                       |                       | 1-142     |
| 1. तिब्बती                   |                       | 1-130     |
| 2. हिन्दी                    |                       | 131-142   |
| मूलग्रन्थ ( तीन भाषाओं में ) |                       | 1-314     |
| I भोट भाषा                   |                       | 1-164     |
| 1. प्रथम भावनाक्रम           |                       | 1-72      |
| 2. द्वितीय भावनाक्रम         |                       | 73-118    |
| 3. तृतीय भावनाक्रम           |                       | 119-164   |
| II संस्कृत भाषा              |                       | 165-244   |
| 1. प्रथम भावनाक्रम           |                       | 165-200   |
| 2. द्वितीय भावनाक्रम         |                       | 201-222   |
| 3. तृतीय भावनाक्रम           |                       | 223-244   |
| III हिन्दी भाषा              |                       | 245-314   |
| 1. प्रथम भावनाक्रम           |                       | 245-274   |
| 2. द्वितीय भावनाक्रम         |                       | 275-294   |
| 3. तृतीय भावनाक्रम           |                       | 295-314   |



## परिशिष्ट

|  |         |
|--|---------|
| शमथ-विषयनादुःस्थल-जिनाभिप्राय-अविपरोतभाष्यम् | 315-376 |
| I तिब्बती      "      "      "               | 315-322 |
| II हिन्दी      "      "      "               | 223-326 |
| III शमथ-भावना-विधि : चित्र के रूप में        | 327-330 |
| IV भोट-संस्कृत-शब्दकोश                       | 331-370 |
| उद्धृत ग्रन्थों की सूची                      |         |
| V तिब्बती      "                             | 371-374 |
| VI संस्कृत      "                            | 375-376 |



ཏོ དབར་སྐྱོན་བའི་ཆེད་བཞིན།

༡། སློབ་དཔོན་ཆེན་པོ་བསྐྱའི་ངང་ཚུལ་མཆོག་ནི། བོད་ཡུངས་སུ་  
 གྲུལ་བསྐྱོན་ཁྲུབ་སྤྱེལ་དག་ཐེར་གྱི་མཛད་རྗེས་ཐོག་ མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཕྲོ་དང་།  
 སློབ་དཔོན་བསྐྱའི་འབྱུང་གནས་སོགས་དང་འཕྲིན་ལས་ཀྱི་བཀའ་དྲིན་མཉམ་བ་ལྟ་  
 བྱར་ཡོད་པས། བོད་རིགས་སྤྱི་འགྲོ་ཡོངས་ཀྱིས་ཁོང་གི་བཀྲིན་ནམ་ཡང་  
 བཞིན་ཐབས་མེད། བོད་དུ་ཐོག་བ་གསུམ་དང་རྒྱུད་སྤེ་བཞིས་བསྐྱུས་བའི་གྲུལ་  
 བའི་བསྐྱོན་བ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་ཤིང་། འབྲུལ་བའི་དྲི་མ་དང་བྲལ་བ། སྐྱོན་  
 རྒྱུད་ཀྱི་མན་ངག་དང་བཅས་བ་དར་གྱིས་ཁྲུབ་སྤྱེལ་ཆད་ལྷན་བྱུང་བ་འདི་ནི་ཞི་འཕྲོ་  
 དཔོན་སློབ་གྱི་མཁུན་བཅེ་ཐབས་མཁས་ཀྱི་མཛད་བྱས་ཉག་གཅིག་གི་བཀའ་དྲིན་  
 ལས་བྱུང་བ་ལས། ལེན་དུ་ན་གངས་ཡུངས་ཀྱི་བསྐྱོན་བའང་ཡུལ་གྱུ་གཞན་  
 ལྟར་སྤྱོགས་རེ་བའས། འདྲིས་བསྐྱེད་ཅན་ཞིག་དུ་གྱུར་བ་གདོན་མི་ཟ།

མཁན་ཆེན་ཞི་བ་འཕྲོ་སྐྱེ་ཆེ་སྤྱད་ཀྱི་དབྱང་གྲངས་མང་པོ་བོད་དུ་གཏན་.....  
 བཞུགས་ཀྱིས་འོ་གྲུལ་ལ་མ་དགོངས་པར་གྲུལ་བསྐྱོན་ཁྲུབ་སྤྱེལ་གྱི་མཛད་བཟང་གྱི་  
 ཆེར་བསྐྱེད་ནའང་། བསྐྱོན་བཅོས་ཁག་བོད་ཡུལ་དུ་བཞུགས་རིང་ལྷགས་ཅོམ་  
 མཛད་པའི་ལོ་རྒྱུས་མི་སྤྱང་། བསྐྱའི་ངང་ཚུལ་མཆོག་གི་གསུང་ཅོམ་ནམས་ཀྱི་  
 ཉང་ནས་སྤུལ་དུ་བྱུང་བ་བསྐྱོན་རིམ་གསུམ་བོད་ཡུལ་རང་དུ་སྐབས་དེའི་ལོག་བར་  
 སྤྱི་བ་ནམས་ཀྱི་ལོག་དོག་དང་། ལཱུལ་བྱའི་ཁམས་མོས་དབང་བོ་དང་འཕྲུལ་ས་  
 བར་ལྷགས་ཅོམ་གནང་བས། ཆོག་སྤྱོར་ཡང་རང་ཉིད་ཀྱི་བསྐྱོན་བཅོས་གཞན་དང་



མི་འདྲ་བར་གོ་བདེ་ཞིང་འཇུག་སྤྱོད་བར་ཡོད་ཅིང་། འདི་ནི་རྒྱ་གར་གྱི་མཁས་  
 བས་བོད་ལྷལ་དུ་ལེགས་སྦྱར་གྱི་བཟུན་བཅོས་རྩོམ་པའི་ཐོག་མ་ཉིད་དུ་མངོན།  
 དེ་ལྟ་བུས་ན་བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་པོ་འདི་ནི་བཞེད་བྱའི་ཟབ་ཁྱད་དང་། ལུང་  
 རིགས་མཐའ་བཙན་པའི་སྒྲིལ་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཙམ་དུ་མ་ཟད། བོད་  
 གྱི་སྒྲེ་རྒྱའི་སེམས་ཚོར་དང་འབྲེལ་ལམ་གྱི་དུ་ཆེ་བའི་གཞུང་ལུགས་ཞིག་ཡིན་པ་  
 བས། གནའ་དུས་སུ་བོད་ལྗོངས་མཐའ་དབུས་ཀྱི་གཙུག་ལག་ཁང་པལ་ཆེར་  
 འདི་ཡི་དཔེ་རྒྱན་རྒྱ་ཁྱད་དུ་བཞུགས་པ་དང་། འཆད་ཉན་ཀྱང་དར་ཞིང་། བོད་  
 གྱི་གཞུང་ཆེན་པལ་ཆེར་། འདིའི་ལུང་ཁྱད་མ་དངས་པ་མེད་པ་ལྟ་བུར་ཡོད་ཀྱང་།  
 རིམ་བས་དུས་ཀྱི་འགྱུར་བས་བོད་ནང་ལེགས་སྦྱར་གྱི་འཆད་ཉན་རིམ་སྤྱི་  
 བ་དང་ཆབས་ཅིག་གཞུང་ལུགས་འདི་རིགས་ཀྱི་འཆད་ཉན་དང་། བ་ན་སྒྲིགས་  
 བས་ཚུན་རིམ་བརྒྱུགས་ཀྱིས་དེད་དུས་མ་ཕྱི་ཙམ་ཡང་མི་རྒྱེད་པའི་གནས་སྐབས་པ་  
 འདི་འདྲ་བུ་ཞིང་། རྒྱ་བློང་ཨི་ཏེ་ཡིའི་མཁས་དབང་ཏུ་ཅིས་འབད་བཙོན་  
 ཐབས་འཛོལ་གྱི་འབྲས་བུར། བོད་ནས་བསྐྱོམ་རིམ་དང་བོ་དང་། ཅུ་སྤྱོད་ནས་  
 བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མའི་རྒྱ་དཔེ་ལག་གིས་རྒྱུང་སྤོང་དག་རྒྱེད་པ་དབུ་ཞབས་ཀྱི་ཤོག་པ་  
 བུ་རེ་རྒྱང་མ་ཆང་ཡང་། འཕྲོས་རིམ་རྒྱེད་བོད་དཔེ་དང་བསྐྱར་ནས་དག་ཞུས་ཐག་  
 རོ་མན་ཡིག་གཟུགས་སུ་དཔར་འབྲེམས་མཛད་འདུག་ཅུང་། བསྐྱོམ་རིམ་བར་  
 བ་མ་ཆང་བ་དང་། ཡིག་གཟུགས་ཀྱང་ནམ་པ་གཞན་དུ་གནས་པ་བཅས་ལ་བརྟེན།  
 ཕྱོགས་འདིའི་དོན་གཉེར་ཅན་ནམས་ལ་པན་རྒྱལ་རྒྱུང་བར་མཐོང་ཞིང་། སློབ་  
 དཔོན་བསྐྱའི་ངང་ཚལ་གྱི་བཀའ་བློན་རིམ་སུ་བཞུགས་ཏེ་བར་བསྐྱལ་དེ།



བསྐྱེམ་རིམ་གསུམ་ཀ་ལེགས་སྤྱར་གྱི་སྐད་དུ་ཚང་བ་བཟོ་གྱུ་དང་། ཉིན་  
 སྐད་དུ་བསྐྱར་གྱུ་བཅས་འདི་གའི་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་ལེགས་སྤྱར་གཞུང་ལུགས་...  
 བསྐྱར་གསོའི་ལས་རིམ་ནང་གལ་འགངས་ཆེ་བུས་སུ་ཅིས་ཏེ། ཚུལ་བ་ལ་  
 ཞུགས་པ་ན། ཁོ་བོའི་བཙེ་བའི་སློབ་མ་ཆེ་དང་ལྷན་བ་བྱལ་མཚན་ནས་གྲོལ་  
 གྱིས་གུས་དྲུག་གྱི་བཙེན་བ་མི་འདྲིར་བས་བསྐྱེམ་རིམ་གསུམ་ཀ་འདི་བོད་སྐད་དང་།  
 ཐོག་མཐའི་ལེགས་སྤྱར་ལ་ཞུས་དག། བསྐྱེམ་རིམ་བར་བ་ལེགས་སྤྱར་དུ་བསྐྱར་  
 གསོ། གསུམ་ཀ་ཉིན་རྗེའི་སྐད་དུ་སྐྱ་བསྐྱར་བཅས་ཀྱི་བྱེད་སྒོ་ནམས་སྤྲོ་ཆོས་སུ་  
 མ་སོང་བར་ནན་དན་བྱས་པའི་ཁར། ལུང་ཁྲུངས་འཚོལ་ཞིབ་དང་། མཚན་བྱ།  
 ཆོག་མཛོད་སོགས་དེང་རབས་དང་མཐུན་པའི་ཞུ་ཆེན་གྱི་བྱ་བ་ནམས་ཡང་དག་...  
 བར་བྱས་པ་འདི་ཉ་ཅང་སློ་ཁ་ཆོསས་པའི་གནས་སུ་གྱུར་བ་མ་ཟད། དག་ཞུས་  
 དང་ཚུམ་བསྐྱར་གྱི་ལས་དོན་འདྲིར་ངོས་ཀྱི་ལས་གྲོགས་བརྗེད་ཀྱི་ལུ་ལྷན་མཐུས་...  
 ངལ་བ་ལྟར་ལེན་གྱིས་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་དུ་མཐུན་འགྱུར་གྲོགས་དན་ཚད་...  
 མེད་གནང་བར་ཡང་ལེགས་གསོའི་བསྐྱེམས་བཟོད་ཡོད། འདྲིའི་སྒོན་སྒྲུང་གུས་  
 བཤད་སོགས་སུ་སྐབས་འགར་ཆོག་འགྲོས་དང་། དོན་གནད་རེ་རྒྱུ་ཁོ་བོའི་  
 འདོད་ཚུལ་དང་མི་མཐུན་བའང་འདུག་མོད། རང་སློབས་ཀྱིས་དབྱེད་མཐར་ཆེད་  
 བའི་འདོད་ཚུལ་སྐྱབ་བྱེད་དང་ལྷན་བར་བསམ་སྟེ། དགག་སྐྱབ་བཅོས་བསྐྱར་གྱི་  
 ངལ་བ་མ་བྱས་པར་རང་སོར་བཞག།

ཐབས་ཤེས་ཡོད་གྱུ་བྱས་ཅང་། འཕུལ་བར་གྱི་སྤྱོད་བ་སློ་ཁ་ཆོས་བ་ཞིག་  
 བྱང་མི་འདུག་ཀྱང་། མཐུན་ཀྱིན་དེ་རྒྱག་འགྱུར་རེ་མི་འདུག་གཤིས། གང་



བྱང་དེ་ཉིད་ལ་ཚོག་ཤེས་པར་བྱ་བྱུ་ཉིད་དགོ་བར་བསམ་དེ་སྒྲུབ་བ་བསྐྱེད་སྤྲོད།

དཔར་འགྲེམས་འདིས་དོན་གཉིས་ཅན་ནམས་ལ་མཁོ་ཕན་གང་འཚམས་.....  
ཡོང་རེ་དང་བཅས་ཚུལ་འདིར་འབད་བ་ལས་བྱང་བའི་ནམ་དཀར་དགོ་ཚོགས་གྱི་..  
ཕྱང་བོ་ཅི་མཆིས་མཁའ་ཁྱབ་སྒྲེ་འགྱོར་སྒྲན་བའི་རྒྱར་བསྐྱོ་སྒྲེ།      སྒྲོབ་དཔོན་  
ཆེན་པོ་བརྒྱའི་ངང་ཚུལ་གྱི་བཞེད་དགོངས་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པར་སྒྲན་བའ་.....  
མཚམས་སྒྲོར་དང་བཅས་ཤུགས་ཉིད་སྒྲོང་ཟམ་གདོང་བ་སྒྲོ་བཟང་བལྟན་འཛིན་དུ་  
འབོད་པས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༤༧ ཟླ་བ་ ༧ ཚེས་ ༢༡ ལ་བྲིས།



## प्रकाशकीय

भोटदेश में बुद्धशासन के प्रचार-प्रसार कार्य में आचार्य कमलशील का योग-दान आचार्य शान्तरक्षित और पद्मसंभव के समकक्ष ही रहा है। इनकी कृपा और ऋण का भोट-वासियों के वंशज कभी भी विस्मृत नहीं कर सकते। त्रियान एवं चतुस्तन्त्रों में निबद्ध श्रुतिपरम्परा सहित समस्त बौद्धवाङ्मय सर्वांगतः भोटदेश में विकसित करने का श्रेय आचार्यपाद शान्तरक्षित एवं आचार्य कमलशील के उपाय-कौशल्य को जाता है। अन्यथा वहाँ पर भी बुद्धशासन एकांगी या दूषित ही रह जाता।

आचार्य शान्तरक्षित ने अपने जीवन के अन्तिम अनेक वर्ष भोट देश में बुद्धशासन के प्रसार में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुये बिताये, परन्तु उन्होंने अपने किसी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना भोटभूमि में बैठ कर नहीं की। उनकी समस्त रचनाएँ भोटदेश में उनके पहुँचने के पूर्व ही सम्भवतः सम्पूर्ण हो चुकी थीं। आचार्य कमलशील ने अपनी प्रमुख रचना “भावना-क्रम” को भोटभूमि में ही बैठ कर वहाँ के विनेयजनों की पात्रता एवं क्षमता को देखते हुये लिखी और यथासंभव अपने प्रौढ़ पाण्डित्यमयी श्लिष्टशैली से हटकर भाषा की सरलता पर भी ध्यान दिया जिससे इनके अन्य ग्रन्थों की भाषा की तुलना में यहाँ अधिक सुगमता दिखाई देती है। यह किसी भारतीय आचार्य के द्वारा, भोटदेश में रहकर लिखा गया प्रथम संस्कृत-ग्रन्थ है। इस आचार्य ने अपना सारा जीवन भोटवासियों के लिये न्योछावर कर दिया था, अतः यह ग्रन्थ भोटवासियों के लिये न केवल अपने गम्भीर विषय के कारण महत्त्वपूर्ण है, अपितु इससे सभी विनेयजनों की भावना भी जुड़ी हुई है।

कालान्तर में भोटदेश में भी इस ग्रन्थ के साक्षात् पठन-पाठन का क्रमशः ह्रास हुआ, यद्यपि इसके उद्धरण अधिकांश भोटविद्वानों की रचनाओं में मिलते हैं और इसके मूल विषय “शमथ-विपश्यना” की भावना के अध्ययन-अध्यापन की परम्परा आज भी पूर्ण रूप से जीवित है। इसके मूलसंस्कृत की पाण्डुलिपियाँ कुछ समय तक सर्वत्र भोट-विहारों में उपलब्ध थीं, परन्तु संस्कृतज्ञों की कमी के साथ-साथ ये ग्रन्थ भी क्रमशः दुर्लभ या अनुपलब्ध होने लगे। फलतः “भावना-क्रम” के प्रथम एवं तृतीय क्रमों को छोड़कर द्वितीय भावनाक्रम वर्तमान में अनुपलब्ध ही रहा। स्व० प्रोफेसर जी० दूची ने सतत परिश्रम करके भोट देश से प्रथम भावनाक्रम तथा



रूस से तृतीय भावनाक्रम का मूल लाकर रोमन लिपि में प्रकाशित किया, किन्तु इसके "द्वितीय भावनाक्रम" का न रहना और शेष का देवनागरी लिपि में न होना भारतीय विद्वानों एवं जिज्ञासुओं के लिये विशेष असुविधा का कारण बनता रहा। आचार्य कमलशील के प्रति कृतज्ञता से प्रेरित होकर इस संस्थान ने भावनाक्रम-द्वितीय का भोटभाषान्तर से पुनरुद्धार, तीनों भावना-क्रमों का देवनागरी लिपि में सम्पादन तथा हिन्दो-अनुवाद कार्य को संस्थान की शोधयोजना में प्राथमिकता दी। मेरे प्रिय शिष्य आयुष्मान् जलछेन नमडोल ने पूरे मनोयोग से इस कार्य में अपने को समर्पित करके मेरी आशाओं के अनुसार कार्य सम्पन्न किया, जिससे मैं सन्तोष का अनुभव कर रहा हूँ। भोट-भाषा में जो विस्तृत भूमिका लिखी गयी है, उनमें उनके कुछ प्रतिपाद्यों से मेरा कदाचित् वैमत्य भी है, तथापि उनके परिश्रम एवं दृष्टिकोण का सम्मान करते हुये मैंने परिवर्तन की चेष्टा नहीं की। संभव है उनकी ही मान्यता अधिक संगत हो।

मेरे निकट सहयोगी प्रो० डा० कामेश्वरनाथ मिश्र ने निरन्तर परिश्रम से इस कार्य में योगदान करके इसे सफल बनाया है। वह अनेक साधुवाद के पात्र हैं।

यथासंभव चेष्टा करने पर भी मुद्रण-व्यवस्था से मैं सम्पूर्ण-रूप से सन्तुष्ट नहीं हो पाया हूँ, जिसका कोई निराकरण संभव न होने से जैसा है उसी से सन्तुष्ट रहने में कल्याण समझता हूँ। आशा है, इस प्रकाशन से सुधीजन को बौद्ध भावना-विधि के अध्ययन में सहायता मिलेगी। इस कार्य से प्राप्त समस्त पुण्य की सम्पूर्ण जगत् के कल्याण के लिये परिणामना करता हूँ, जिससे आचार्य कमलशील की मनःकामना सिद्ध हो सके।

बुद्धाब्द—२५२९

सन्—१९८५

स० रिनपोछे

( प्राचार्य/निदेशक )



ཞུ་སྒྲིང་།

༡། །ཁངས་ཅན་ཆོས་ལྷན་ཞིང་གི་སྤྱོད་འགྲོ་ནམས་ཀྱི་བསོད་ནམས་ཀྱི་  
 བགོ་སྐྱལ་དུ་ཉེ་བར་ཐོབ་པའི་སྤྱོད་ཅན་མེད་པའི་ཁྱད་ཅོར། འབྱོར་ལྷན་གྲགས་ཅན་  
 རྒྱལ་ཁབ་གཞན་གྱིས་འབྲུག་དུ་མེད་ཅིང་། སྤོན་བྱོན་རྒྱལ་སྤོན་ལོ་བཅ་བཀའ་དྲིན་  
 ཅན་ནམས་ཀྱིས་ཕབ་བསྐྱར་དག་ཐེར་གཅེས་སྤྱོད་ལེགས་པར་མཛད་པའི་རྒྱལ་བའི་  
 བཀའ་མདོ་རྒྱུད་གཉིས་དང་། དེ་དག་གི་དགོངས་འགྲེལ་འཕགས་བོད་མཁས་  
 པའི་བཞེད་གཞུང་ཟབ་མོ། ཤིན་དུ་གཅེས་ཤིང་ཕངས་པ་འཛམ་གླིང་ཡོངས་ཀྱི་  
 སྤྱི་ནོར་ནང་པ་སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་དང་རིག་གཞུང་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བ་ཇི་སྟེད་ཅིག་  
 ཡོད་པ་དེ་དག་ལ། ཐོས་བསམ་སློབ་གཉེར་སོགས་ཀྱི་སྒྲོ་ནས་མི་ཉམས་གོང་  
 འཕེལ་དང་། ཉམས་པ་སོར་ཆུད་སོགས་འབྱུང་བུལ་པའི་དགོངས་གཞི་དགོས་པ་  
 རྒྱ་ཆེ་སྤྱོད་ལ་གཞིགས་ནས། ལྷན་བཅས་འགྲོ་བའི་འདྲན་པ་སྤྱི་ནོར་ ༡ གོང་  
 ས་སྤྱོད་མཁོན་ཆེན་པོ་མཆོག་དང་། རྒྱ་གར་གྱི་སྤྱི་ལྷན་ཞིང་གཤེགས་པའི་  
 བཅུ་ལྷན་ནམ་གཉིས་དགོངས་བཞེད་ཅེ་མཐུན་གྱི་སྒྲོ་ནས་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོ་འི་  
 གཞུགས་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་འདི་བཞེན་གསར་འཛུགས་བཀའ་དྲིན་ཆེ་དོན་བཞིན།  
 འདི་གའི་སློབ་གཞི་དམིགས་ལྷལ་གལ་ཆེད་ནང་ཆོན་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བཀའ་དང་།  
 དེའི་དགོངས་འགྲེལ་གྱི་གསུང་རབ་ནམས་ཀྱི་ཅ་བའི་ས་སྤྱོད་ལེགས་སྐྱར་གྱི་རྒྱ་.....  
 དཔེ་ཉམས་བསྐྱུགས་སུ་སྤོན་པ་རང་རེ་གངས་ཅན་པའི་སྤྱོད་ཐོག་དུ་ཡོད་པ་ནམས་  
 ཉམས་གསོ་ཕབ་བསྐྱར་བྱད་དགོས་ཀྱི་ལས་དོན་གལ་ཆེ་འདི་དག་ལེགས་པར་.....  
 འབྲུག་པའི་ཆེད་དུ། གཞུགས་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་སྤྱོད་ཆེད་དུ་འཁྲིད་



མཚུངས་སྒྲིམ་མཆིས་པ་སྐབས་ཇི་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་ནས་གལ་འགངས་  
 ཅི་ཆར་ཅིས་དེ། ལས་དན་འདིའི་ཐོག་ཐུགས་འགན་ཀྱང་བཞེས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཕབ་  
 བརྒྱུར་ཅོམ་བསྐྱབས་སོགས་ཀྱི་ལས་འགུལ་གོ་སྐབས་གསར་འཛུགས་དང་འབྲེལ་  
 གཟིགས་དོག་ལམ་སྟོན་གྱི་ཆེ་གནང་བའི་བཀའ་དྲིན་ལ་བརྟེན་ནས། ད་ལས་གོང་  
 གསལ་དམིགས་ཡུལ་ལ་སྒྲན་པའི་ཆ་ཀྱིན་མཆོན་བྱེད་ཅམ་དུ། བོད་གངས་ཅན་གྱི་  
 རྒྱུངས་སུ་དངོས་སུ་ཞབས་ཀྱིས་བཅག་པ། འཕའ་ཡུལ་གྱི་སློབ་དཔོན་གསེར་གྱི་  
 རི་བོ་ཆར་དུ་དངར་བ་ལྟ་བུ་ཇི་སྟེད་ཅིག་བྱོན་པའི་ནང་ནས། མཁྱེན་རབ་ནམ་དཔྱིད་  
 ཀྱི་གཤོག་ཅལ་རབ་དུ་ཇོགས་པའི་མཁས་མཆོག་ཀམལ་ཤྱིལ་སྟེ་བརྒྱའི་ངང་ཚུལ་  
 དེ་ཉིད་ཀྱི་གསུང་གི་མཛད་པའི་ཐུག་ཇིས་ཀྱི་སྐྱེས་བཟང་། རྒྱལ་གསུང་བདུད་  
 ཅིའི་དགོངས་དོན་ནམས་ཇི་ལྟར་བསྐྱོམ་ཞིང་རྒྱུད་ལ་སྟེ་བའི་རིམ་པ་རབ་དུ་གསལ་  
 ཞིང་མད་དུ་བྱུང་བའི་ཐབས་བཟང་པོ་དབྱ་མའི་བསྐྱོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་  
 ཞེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཅ་བའི་མ་སྟེ་ལེགས་སྒྲར་གྱི་དཔེ་མ་ཆང་བ་  
 ནམས་ཉམས་གསོ་ཕབ་བརྒྱུར་དང་འབྲེལ་ཁ་བསྐྱང་གུངས་ཆང་བཟོ་བྱ་དང་།  
 བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་ཀ་ཉིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བརྒྱུར་བྱས་དེ། དེང་དུས་ཀྱི་ལམ་སྟེལ་  
 དང་མཐུན་པའི་དཔེ་དབུ་དབར་སྒྲན་ཏུ་རྒྱའི་གོ་སྐབས་ཐོབ་ཐུབ་པ་འདི་ནི་དགའ་  
 སྟོ་སྟེ་གཞིའི་རང་བཞིན་དུ་གྱུར།

འོན་ཀྱང་གཞི་ཅ་ངོས་རང་ལེགས་སྒྲར་གྱི་སྐད་ཡིག་སོགས་ལ་གོམས་.....  
 འདྲིས་དང་སྦྱངས་པ་དམན་པའི་དབང་གིས་གལ་ཆེའི་ལས་དོན་འདི་དག་རང་.....  
 ལྟུངས་རང་དབང་གི་སྒོ་ནས་བྱེད་ཀྱས་གདན་ནས་མ་མཆིས་ཀྱང་། མཐོ་རིམ་  
 གཞུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་སྐབས་ཆེའི་དབྱ་འབྱིད་བཀྱིན་གཞལ་དུ་མ་མཆིས་



བ་སྐྱབས་མེ་ཟམ་གདོང་རིན་པོ་ཆེ་མཆོག་དང་། ལེགས་སྦྱར་སྟོབ་དཔོན་ཆེན་པོ་  
 བཞུགས་ཀྱིས་ལྷན་སྐྱེས་པའི་སྐྱེས་པ་ལས་དོན་འདིའི་མགོ་མཛུགས་བར་གསུམ་ཆོང་  
 མར་གཟུགས་དྲིག་ལས་སྟོན་ཆོད་མེད་གནང་བ་ལ་བཀྲིན་ཆེས་དྲན་དང་འབྲེལ་སྟོང་  
 ཐག་བ་ནས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་བྱུ་དང་། ལས་དོན་འདི་དག་གི་ཐོག་ལ་རང་གི་འབྲོན་  
 ཐང་ལ་གཞིགས་པའི་དོགས་པ་ཟབ་ནན་ཅི་ཆེ་བྱེད་ཁྲུལ་ལགས་ཀྱང་། མི་ཤེས་  
 མྱོངས་པའི་དབང་གིས་འགལ་འཁྲུལ་མྱོངས་པའི་ཚོགས་མཆིས་སོ་ཅོག་སྤྱ་.....  
 ཞིང་མཛོངས་ལ་རྒྱ་ཆེ་བའི་ནམ་དཔྱོད་དང་ལྷན་པའི་མཆུན་ལྷན་ནམས་ལ་བཟོད་.....  
 གསོལ་ཞུ་བྱུ་བཅས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༤༥ ཕྱི་ཟླ་ ༡ ཚེས་ ༢༡ ལྷན་བཤུངས་དག་པར་  
 རྒྱུགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བདེན་བཞི་ཆོས་འཁོར་བསྐྱོར་བའི་གནས་ཁྱད་པར་ཅན་  
 རྒྱུ་ཆུང་། རྟེན་ཆོས་ཁྱད་པར་ཅན་གྱི་སྤངས་ལྷན་བ་ ༦ ཚེས་ ༧ ལ་རྒྱུགས་  
 པར་བྱས་སོ། །

སངས་རྒྱས་འདས་ལོ། ༣༥༣༩  
 བདེ་གྲུལ་ལོ། ༣༧༧༣

ལྷ་ཅད་གྲུལ་མཆོན་ནས་གྲོལ།  
 (ལྷ་ཆ་མཐོ་སྟོབ།)



1870  
The first of the year was a very dry one  
and the crops were much injured  
by the drought. The wheat was  
very poor and the corn was  
also much injured. The  
cattle and sheep were  
also much injured by the  
drought. The people were  
very poor and the  
country was very dry.  
The first of the year was a very dry one  
and the crops were much injured  
by the drought. The wheat was  
very poor and the corn was  
also much injured. The  
cattle and sheep were  
also much injured by the  
drought. The people were  
very poor and the  
country was very dry.

(1870-1871)

1871



## प्राक्कथन

हिमाच्छादित भोट देश में बुद्धवचन की विशालभूत विद्याराशि भोट-भाषा में सुरक्षित है। इसके अन्तर्गत सूत्र एवं तन्त्र ग्रन्थ भी सम्मिलित है। उनकी अनेक टीकाएँ हैं, जिनका प्रणयन भारतीय आचार्यों द्वारा हुआ है। प्राचीन भोट राजा, मन्त्री, लोचवा ( महान् अनुवादक ) और भारतीय पण्डितों के सम्मिलित प्रयास से इस विपुल ज्ञानराशि का भोट अर्थात् तिब्बती भाषा में अनुवाद, संशोधन तथा संरक्षण आदि महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए हैं। भोटदेशीय विद्वानों ने भी अपनी भाषा में इनकी अनेक टीकाएँ प्रस्तुत की हैं। बुद्धवचनस्वरूप यह अनुपम सम्पदा और उससे सम्बन्धित शास्त्र बहुमूल्य रत्न की भाँति भोटवासियों को अपने भाग्य से प्राप्त हुए हैं तथा उन्होंने प्राणप्रण से इनकी सुरक्षा भी की है। इस क्षेत्र में इस प्रकार के उदाहरण सम्पूर्ण विश्व में अनुपलब्ध हैं और भोट देश में अतीत में विद्या के क्षेत्र में सम्पन्न हुआ यह कार्य अपने में अनुपम है।

बौद्ध वाङ्मय अखिल जगत् के कल्याणार्थ एक बहुमूल्य एवं प्रेरणाप्रद सम्पत्ति-स्वरूप है। अतः इसके श्रवण, चिन्तन तथा मनन के द्वारा पुनः इस अध्ययन-परम्परा को विकसित करते हुए इसे संरक्षण एवं संवर्धन प्राप्त कराना हमारा पुनीत कर्तव्य है। इस क्रम में यह विशेष उल्लेखनीय है कि भोट भाषा में इसके ऐसे अनेक भाग तथा अंश सुरक्षित हैं, जिनका मूल लुप्तप्राय है और उन लुप्तांशों का पुनरुद्धार करके इस परम्परा तथा वाङ्मय को विश्व के समक्ष अवश्य प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे जिज्ञासु इसके अध्ययन में प्रवृत्त हो सकें। इसी महत्त्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति-हेतु परमपावन दलाई लामा जी एवं स्वर्गीय प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के सत्परामर्श के फलस्वरूप इस 'केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान' की स्थापना हुई थी।

अतः इस संस्थान की व्यापक योजनाओं में से एक अन्यतम कार्य है उन बुद्ध-वचनों तथा उन पर आधारित शास्त्रों का पुनरुद्धार तथा अनुवाद प्रस्तुत करना, जिनके मूल संस्कृत भाषा में प्राप्त नहीं हैं और लुप्त हो चुके हैं; किन्तु भोट-भाषा में उनके अनुवाद सुरक्षित हैं। इस मूलभूत उद्देश्य की पूर्ति-हेतु संस्थान के वर्तमान प्राचार्य/निदेशक प्रो० समदोङ् रिन्पोछे ने यथोचित व्यवस्था की है और उनके कुशल कार्यसंचालन-द्वारा इस कार्य में विशेष प्रगति हो रही है।



इसी योजना के अन्तर्गत भारतीय आचार्य कमलशील के विश्रुत ग्रन्थ 'भावनाक्रम' को लिया गया है। इसके प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमों में से प्रथम तथा तृतीय के मूल तो प्रायः संस्कृत में उपलब्ध हैं, किन्तु द्वितीय भावनाक्रम अपने मूल रूप संस्कृत भाषा में सम्प्रति अनुपलब्ध है। अतः 'भावनाक्रम' ग्रन्थ को पूर्ण करने के उद्देश्य से इस लुप्तांश के पुनरुद्धार का कार्य मुझे सौंपा गया; साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि संस्कृत में प्राप्तांशों को भी उनके भोट भाषा में प्राप्त अनुवाद से मिलाने हुए प्राप्त पाठभेदों को टिप्पणी-स्वरूप दे दिया जाय और मूल का ऐसी वैज्ञानिक पद्धति से सम्पादन प्रस्तुत किया जाय कि यह ग्रन्थ अपने यथार्थ रूप में जिज्ञासुओं को प्राप्त हो सके। इसके साथ ही इन तीन भावनाक्रमों का हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत करने एवं भूमिका तथा अनेक उपयोगी परिशिष्टों से संवलित करने का कार्य भी मुझे सौंपा गया।

आचार्य कमलशील द्वारा प्रणीत इन तीन भावनाक्रमों में समस्त बुद्धवचनों से सन्दर्भित गूढस्थलों का संग्रह कर सर्वज्ञता की शीघ्र प्राप्ति करने के इच्छुक प्रेक्षावानों को किस क्रम से भावना करनी चाहिए, इसकी विधि एवं क्रम क्या होने चाहिए, इस पर विशद तथा स्पष्ट प्रकाश डाला गया है। आचार्य कमलशील उन भारतीय आचार्यों में से अन्यतम आचार्य हैं जो भोट देश गये थे और वे अपार ज्ञानशक्ति से सम्पन्न थे। भोट देश में बुद्ध-शासन के सन्दर्भ में महत्त्वाकांक्षी चीनी भिक्षु ह्वशङ् द्वारा प्रस्तुत विपरीत दृष्टिमालाओं को उन्मूलित करते हुए इन्होंने भगवान् बुद्ध की यथार्थ सिद्धान्तभूत अभिप्राय-निष्ठाओं को सुस्पष्ट रूप से प्रतिष्ठापित किया था। यह अत्यन्त गौरव एवं हर्ष का विषय है कि बौद्ध भावनाविधि के आधार पर भोट देश में बुद्धशासन को प्रतिष्ठापित करने वाले महान् सुधारक आचार्य कमलशील का यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अपने पूर्णरूप में प्रकाशित हो रहा है।

मैंने इस कार्य को अपनी क्षमतानुसार यथाशक्ति पूर्ण करने का प्रयास किया है, फिर भी अज्ञानतावश हुई त्रुटियों और असंगतियों को विद्वज्जन मेरी असमर्थता समझकर क्षमा करने का अनुग्रह करेंगे।

अपने परम-पूज्य गुरु तथा इस संस्थान को कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले प्राचार्य प्रो० सम्दोङ् रिन्पोछे का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य में अपना अमूल्य निर्देशन एवं कठिन स्थलों का अर्थबोध प्रदान करते हुए इसके प्रकाशन की व्यवस्था कर सदैव ही मुझे उत्साहित किया है। प्रस्तुत रूप में यह ग्रन्थ-रत्न उनके आशीर्वाद तथा महानुकम्पा का ही फल है। मैं उनके प्रति सदा ही श्रद्धावन्त एवं कृतज्ञ हूँ।



( ज )

संस्थान के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर डॉ० कामेश्वरनाथ मिश्र के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के संस्कृत में पुनरुद्धार कार्य तथा हिन्दी अनुवाद आदि कार्यों में अपना बहुमूल्य समय देकर हमारी सहायता की है।

मैं डॉ० जानकीप्रसाद द्विवेदी, प्राध्यापक संस्कृत विभाग, केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान का भी अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के सम्पादन तथा संशोधन कार्य में यथोचित मार्गदर्शन देकर मुझे लाभान्वित किया है।

इस कार्य से प्राप्त समस्त पुण्य जगत् के कल्याणार्थ हों तथा इसके अभ्यास से विश्व के सभी सत्त्व शीघ्रतापूर्वक सर्वज्ञता-प्राप्ति की ओर उन्मुख हों, यही कामना है।

भवतु सर्वमङ्गलम्।

बुद्धाब्द २५२९

सन् १९८५ ई०

आ० जलछेन् नमडोल

( तिब्बती-संस्थान )







ཞི་གློང་བཟློང་།

༡༡། རྩོམ་པ་གཉིས་ཡོན་དན་ནོར་བུས་ཡངས་གདམས་

ཀྱུ་བ་ཀྱན་གྱི་མཁུན་བཙེ་ནུས་བའི་རྩ་གདོར་ལས།

ལེགས་འབྱུངས་འདབ་སྟོང་མཚོ་སྒྲིམ་དབུས་ན་

བད་དཀར་ལྗར་བསྐྱེད་འགྲོ་དོན་མཛད་ལ་མཚོག་དཔའ་བ།

འདྲན་བ་ཉིན་བྱེད་བྱེ་བའི་དབུས་ན་འཕྲིན་ལས་

འོད་སྟོང་དུས་ཀྱི་མཐར་ཡང་ལྷན་མེ་བ།

སྒྲིགས་དུས་འགྲོ་བའི་སྒྲིག་བསྐྱེད་སྒྲིག་བསྐྱེད་ཡོངས་

སྒྲིག་སེལ་མཛད་ཀྱི་ཀྱུ་བ་ལོར་གྲུས་ཕྱག་འཛུགས་།

མཁུན་རབ་རབ་གསལ་འཇམ་དབལ་སྒྲི་བའི་ལྷ།

ཐུགས་རྩི་རྩི་བཙུན་བཙེ་ཆེན་སྒྲིང་རྩི་གདོར།

གསང་བདག་བདག་ཉིད་མཐུ་སྟོབས་རིགས་གསུམ་གར།

ཀྱུ་ཀྱན་ཀྱན་ཀྱན་འདུས་འཇམ་མགོན་ཀྱུ་བར་འདུད།

ཕན་དང་བདེ་བའི་དབལ་དང་གཞིར་གྱུར་བ།

ཡོངས་རྩོགས་ཀྱུ་བ་བསྐྱེད་རིན་ཆེན་ལྷན་པོའི་ཁྱུར།

གང་གི་ལྷག་བསམ་དབྱུང་བས་ཡོངས་བརྒྱུད་བ།

གངས་ཅན་ལྷ་གཅིག་ཕྱག་ན་བསྐྱེད་འདུད།



མི་ཤེས་སྒོངས་པའི་ཚ་གདུང་ཀུན་སེལ་

ཉ་རྒྱས་ཁྲི་ལྟར་མངོན་པར་འཕགས་པའི་སྒྲུ།

རབ་འབྱས་ས་རྒྱལ་པའི་མཛད་པའི་ཡང་སྟིང་

གསུང་གི་མཛད་པར་དབང་བསྐྱར་བསྟན་པའི་གསུང་།

ཟབ་རྒྱས་ཚེས་ཚུལ་དམ་པའི་དོན་ལ་

དྲི་མེད་མཁྱེན་རབ་ཉི་ལྟར་གསལ་པའི་བྱགས།

རྒྱག་པའི་རྩ་མཚོག་འཇམ་པའི་དབྱངས་ཞེས་

སྟེན་བཅས་རྒྱལ་བས་མཚོག་དུ་བསྟགས་ལ་འདུད།

ནམ་བཀྲའི་གཞུགས་ལ་འོད་ཆུབས་འཁྱུག་བ་བཞིན།

ནམ་མང་ཤེས་བྱའི་དཀྱིལ་འཁོར་མཐའ་དག་ལ།

ནམ་དབྱེད་མཁྱེན་རབ་ཐོགས་བ་མེད་པའི་དབལ།

དབལ་ལྟན་བརྒྱའི་ངང་ཚུལ་ལ་བྱག་འཛལ།

གང་གི་ནམ་དབྱེད་མཚོན་ནོན་འོད་ཆུབས་ཀྱིས།

ལྟ་ངན་ཚང་ཚིང་དུ་བ་སྟུག་པོ་ཀུན།

ཅད་ནས་ཕྱང་ཞིང་ལམ་བཟང་གསལ་མཛད་བ།

ཁྱེད་ནི་གངས་ཅན་འགྲོ་བའི་ས་མཁན་མཚོག།

ཐབས་མཚོག་བྱང་ཆུབ་སེམས་དང་སྟིང་ཇི་ཇི་ཆུས།

ཡོངས་སུ་བརྒྱན་པའི་ཞེ་རྒྱག་ཁྲི་ལྟར་།

མཛད་བྱང་སྒྲོམ་རིམ་གསུམ་གྱིས་ཁམས་གསུམ་དུ།

འཆར་མཛད་མཁས་མཚོག་ལྟན་པོ་གཙུག་ན་རྒྱལ།



ཅེས་ཤིས་པ་བཟོད་པའི་དགེ་ལེགས་ཀྱི་སྒོ་འཕར་ཡངས་པོར་བྱེ་བྲེ། སྐབས་  
 དེན་གང་སྒྲིང་བར་བྱ་བ་ནི། དེ་ཡང་མཐའ་དང་མཉམ་པའི་ཕྱོགས་བཅུ་འཛིག་  
 ཉེན་གྱི་ཁྱོན་འདིར། གངས་དང་ཚད་མེད་པའི་བདེ་འགྲོ་དང་ངན་འགྲོ་འི་སེམས་  
 ཅན་རྣམས་ནས། ཐོག་མ་དང་མཐའ་མ་མེད་པའི་དུས་དང་གནས་སྐབས་ཀུན་དུ།  
 བསལ་གསུང་གིང་གསོལ་བར་འགྱུར་བའི་བསོད་ནམས་དང་བསོད་ནམས་མིན་པའི་  
 ལས་ཀྱི་བྱེད་བ་ལ་བརྟེན་ནས། བྱང་ཞིང་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་སྒྲོན་བསྐལ་དང་  
 མུན་བསྐལ་གྱི་རིམ་བ་ཟམ་མ་ཆད་པའི་ནང་ཚན་མི་མཆེད་འཛིག་ཉེན་གྱི་ཁས་ས་.....  
 འདིར། རྩ་རྣམས་ཀྱིས་བསྐལ་བ་བཟང་པོར་བསྒྲགས་པའི་སྒྲོན་མེད་བསྐལ་  
 པ་འདིའི་ཆོ་ལོ་བཞི་ཁྲིའི་དུས་སྟེ་སངས་བྱུས་འཁོར་བ་འཛིག་གསུམ་ཁྲིའི་  
 དུས་སྟེ་སངས་བྱུས་གསེར་བུལ། ཉིས་ཁྲིའི་དུས་སྟེ་སངས་བྱུས་འོད་སྒྲུང་།  
 བརྒྱ་པའི་དུས་སྟེ་འཛིག་ཉེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲ་མ། རྩ་བ་བར་སྒྲིགས་པའི་བྱེད་  
 ཚོགས་ཀྱིས་མནར་བའི་འགྲོ་བ་རྣམས་ལ་གཅིག་དུ་བུགས་བརྩེ་ཆེ་བ། བྱལ་བ་  
 ཀུན་གྱིས་བད་དཀར་ལྟར་རབ་དུ་བསྒྲགས་པ། འདྲན་བ་མཉམ་མེད་ཤུགས་  
 བྱལ་བོ་དེ་ཉིད། འཕགས་ཡུལ་ནི་རྩེ་གདན་གྱི་སྒོ་ལ་མངོན་པར་རྒྱགས་པར་  
 སངས་བྱུས་པའི་མཆེད་བ་བསྟན་ཅིང་། ཟབ་བ་དང་བྱ་ཆེ་བའི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་  
 ལོ་རིམ་བ་གསུམ་བསྐོར་ནས། བྱ་གར་འཕགས་པའི་ཡུལ་དུ་མངོན་པར་རྒྱགས་ཆུང་  
 འབྲེལ་གྱི་བསྟན་པའི་འོད་སྒྲུང་ཐོག་མར་བྱུང་ངོ་། །

དེ་ནས་བྱང་ཕྱོགས་ཤམ་བླལ་བ་བྱལ་བོ་སྒྲ་བ་བཟང་པོས་བསྟན་པ་སྤེལ་ཞིང་།  
 བོད་གངས་ཅན་གྱི་ཁྱོངས་སུ་བྱལ་བ་རིགས་གསུམ་མགོན་པོ་འུ་ཡུལ་བ་ཆོས་བྱལ་  
 རིམ་བྱོན་རྣམས་ནས། དང་པོར་བསྟན་པའི་དབུ་བརྟེས། བར་དུ་བསྟན་



མཛད་ཅིང་ཡོད་པའི་ཆོ་བོད་དུ་གདན་འདྲེན་གྱིས་པ་ཡིན་ལ། དེའི་ཚུལ་ནི། མཁན་  
 ཆེན་ཞི་བ་འཚོ་ཞིང་ལ་གཤེགས་ཚུལ་བསྟན་ཟེས་སུ་གྱུ་ནག་ནས་དུ་ཤང་མ་དུ་ཡུན་  
 ཞེས་བྱ་བ་བོད་དུ་འོངས་ཏེ། ལུས་ངག་གི་དགེ་སྦྱོར་བྱས་པས་འཚང་མི་གྱུ།  
 ཅི་ཡང་ཡོད་ལ་མི་བྱེད་པས་འཚང་གྱུ་ཟེར་ནས་སྒྲིམ་བསྐྱབ་པས། བོད་འབངས་  
 མང་བོ་དེའི་ཟེས་སུ་གྱུགས་ནས། བསྐྱབ་པ་སྒྲོབ་གཉིས་དང་། ལུས་ངག་གི་  
 དགེ་སྦྱོར་གྱི་རྒྱུན་ཆད། ཅེས་དང་། བེར་ཚུན་སོགས་ཉུང་ཤས་ཤིག་མཁན་  
 ཡོ་འཛིན་སུ་འབྱུང་ནས་ཡོད་པ་ལ། དེ་དག་ཕན་ཚུན་ལྟ་བ་མ་མཐུན་པར་ཅོད་  
 ཅིང་འབྱུགས་པས། བཅན་བོ་ཡང་བཀས་བཅད་དཀའ་བར་གྱུར་ཏེ། རྫོང་བྱག་  
 ཁ་ཚུན་ནས་ནན་དན་ཆེན་བོས་ཡེ་ཤེས་དབང་བོ་འབོད་ནས། རྫོན་གྱི་བྱུང་ཚུལ་  
 རྣམས་གསུངས་ཤིང་། ད་ཅི་ལྟར་བྱས་ན་ཡེགས་གསུངས་པས། ཡེ་ཤེས་  
 དབང་བོ་ན་རེ། མཁན་བོ་སྐྱ་ངན་འདུལ་ཁར་འདི་སྐད་གསུངས་ཏེ། “སངས་  
 རྒྱུས་ཀྱི་བཟུན་པ་གང་དུ་བྱུང་སར་སུ་སྟེགས་ཀྱི་གྲོལ་བ་རེ་འགྲན་རྒྱར་འོང་བ་ཡིན་  
 ན་ཡང་། བོད་ཡུལ་དུ་བཟུན་པ་ལྟ་བུ་བརྒྱུ་ཐ་མ་ལ་བྱུང་སྟེ། རྒྱང་ཟད་རྒྱས་པར་  
 འགྱུར་བ་ལ་སུ་སྟེགས་དངོས་ཀྱི་གྲོལ་བ་ནི་མི་འབྱུང་མོད། སངས་རྒྱུས་བ་ཉིད་  
 ལྟ་བ་མ་མཐུན་དེ་ཅོད་པར་འགྱུར་གྱི། དེ་ཅན་ངའི་སྒྲོབ་མ་ཀམལ་ཤིལ་བྱ་བ་  
 ཞིག་བལ་ཡུལ་ན་ཡོད་པ་དེ་སྟེན་ངོངས་ལ། དེ་དང་ཅོད་པ་བྱེད་དུ་བཅུག་ལ།  
 རྒྱལ་བོས་བསྐྱམ་པར་གྱིས་ཤིག ཅོད་པ་ཆོས་སྟོགས་སུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ།” །  
 ཞེས་གསུངས་པས། དེ་ལྟར་མཛད་དུ་གསོལ་ཞེས་གྱུས་པས། རྒྱས་བོས་དེ་མ་  
 ཐག་སྒྲོབ་དཔོན་ཀམལ་ཤིལ་གདན་འདྲེན་པའི་སོ་ཉ་བདང་བས། མི་རིང་བར་གདན་  
 འདྲོངས་ཏེ། བྱག་དམར་དུ་ཕེབས་པ་ན། རྫོང་ཆེན་ནམས་ཀྱིས་མདན་བསྐྱས་སོ།



(2) གྱུ་ནག་ཏུ་ཤང་ཚར་བཅད་ཚུལ།

དེ་ནས་བྱང་ཆུབ་སྒྲིང་དུ་གྲོལ་བའི་དགྲིལ་འཁོར་ག་ཤམས་ཤིང་། སེང་  
 བའི་ཁྲི་བཅས་དེ། བཅེན་པོ་གྲང་ལ་བཞུགས། ཏུ་ཤང་གཡས་གྱི་སེང་ཁྲིར་  
 བཞུགས་ནས། དེའི་རྗེས་འབྲངས་སྟོན་མིན་དེ་ཅིག་ཅར་བའི་སྟོབ་མ་མང་དུ་ཡོད་  
 བ་ནམས་གྲལ་རིང་པོ་བསྒྲིགས་དེ་བཞག། གཡོན་གྱི་སེང་ཁྲི་ལ་སྟོབ་དཔོན་ཀམ  
 ལ་ཤྲིལ་བཞུགས་སུ་གསོལ་ནས། དེའི་རྗེས་ལ་ཅེན་མིན་དེ་རིམ་གྱིས་པའི་སྟོབ་མ་  
 ཡེ་ཤིས་དབང་པོ་དང་། དབལ་དབྱངས་དང་། བེར་ཅན་སོགས་ཉུང་ཤས་  
 ཤིག་ལས་མ་བྱུང་། དེ་ནས་བཅེན་པོས་སྟོན་གྱི་བྱུང་བ་ནམས་ཞིབ་དུ་གསུངས་  
 ནས་གཉིས་ཀའི་ལག་དུ་མེ་དོག་དཀར་པོ་འི་སྤྱང་བ་རེ་གཏད་དེ། ཁྱེད་གཉིས་  
 ག་ཤགས་གྱིས་ལ། གང་གཏན་ཆོག་བཟང་བ་དེ་ལ་ཅིག་ཤོས་གྱིས་ང་གྲལ་མ་བྱེད་  
 བར་ཆོས་བཞིན་དུ་མེ་དོག་གི་སྤྱང་བ་སྐྱལ་ཅིག། སམ་བ་དེ་འདྲིར་མ་སྟོད་ཅིག་ཅས་  
 བཀའ་བཅུལ་བ་དང་། ཏུ་ཤང་ན་རེ། ང་གཞིས་ལ་སྐྱབས་ངས་འདྲི་འམ་ལན་  
 འདེབས་གསུངས་བས། ཀམ་ལ་ཤྲིལ་འི་ཞལ་ནས། ཁྱེད་ཀྱི་དགོངས་པའི་ལྟ་  
 བ་ལ་ཤགས་ཐོབ་ཅིག་གསུངས་བ་ན། ཏུ་ཤང་ན་རེ།

“ཐམས་ཅད་སེམས་ཀྱི་ནམ་པར་དོག་པས་བསྐྱེད་པའི་ལས་དགོ་མི་དགོས་  
 མཐོ་རིམ་དང་། ངན་སོང་གི་འབྲས་བུ་སྤྱང་ཞིང་འཁོར་བ་ན་འཁོར་ངོ། ནམ་  
 དོག་ཡིན་ཕྱིན་ཆད་ངན་དོག་ལྟ་ཅི་སྟོས་བཟང་དོག་ཡིན་ན་ཡང་འཁོར་བར་འཆིང་……  
 བས་དེའི་འབྲས་བུ་འཁོར་བ་ལས་མི་འདའ་ལྟེ། དཔེར་ན་སྟོན་དཀར་ནག་གང་  
 གིས་ཀྱང་ནམ་མཁའ་སྒྲིབ། གསེར་སྟོག་དང་ལྷགས་སྟོག་གང་གིས་ཀྱང་ཀྱང་བ་



འཛིང་། ཁྱི་དཀར་ནག་གང་གིས་ཀྱང་ཀྱང་བ་ལ་ཐུག་ན། ཐུག་བཟུལ་བསྐྱེད་བ་  
 དང་འདྲའོ། དེས་ན་བྱ་བྱེད་ཀྱི་ཚོས་ཀྱི་འཛིང་མི་རྒྱ་བས། གང་ཞིག་ཅི་ཡང་  
 མི་སེམས་མི་རྟོག་ཅིང་། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་བར་བཞག་བ་ཉིད་ཀྱིས་འཛིང་  
 རྒྱ་བ་ཡིན་ལ། སྤྱིན་བ་དང་ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་སོགས་བ་ཚོས་སྤྱོད་བཅུ་ལ་སྤྱོད་བའི་  
 སྤྱོས་བཅས་ནམས་ནི། དེས་དོན་སྒྲོམ་མི་ཉུས་བའི་སྤྱོ་བོ་སྤྱན་བོ་འི་དོན་དུ་  
 གསུངས་བས། དེས་དོན་རྟེན་ནས་སྤྱོད་བ་དེ་དག་ལ་འཇུག་བ་ནི། རྒྱལ་བོ་  
 དམངས་སུ་བབས་བའམ། སྤྱང་བོ་ཆེ་རྟེན་ནས་སྤྱང་བོ་ཆེ་འི་རྗེས་འཛོལ་བ་དང་  
 འདྲའོ། །དེས་ན་དེད་ཀྱི་འདྲ་ན། ཁྱུང་ནམ་མཁའ་ནས་གིང་ཅེར་འབབ་བ་  
 དང་འདྲ་བ་ཡས་བབས་ཅིག་ཅར་བའི་ཚོས་ཡིན། གཞན་ནམས་སྤྱེུ་གིང་ཅེར་  
 མས་ནས་ཡར་འཛོགས་བ་དང་འདྲ་བར་མས་འཛོགས་རིམ་གྱིས་བའི་ཆས་ཡིན་  
 ཞེས་སྒྲུབ་སོ།།

དེའི་ལན་དུ་སྤྱོ་བ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྱི་ལས་གསུངས་བ། “ཁྱོད་ཀྱི་དཔེ་མི་འཐད་དེ།  
 ཁྱུང་ནམ་མཁའ་ལ་སྤྱོ་བྱར་དུ་འདབ་ཤོག་ཞོགས་བར་སྤྱེས་ནས་གིང་ཅེར་འབབ་  
 བས། འོན་ཏེ་བྲག་ལ་ཚངས་བཅས་ནས་རིམ་གྱིས་འདབ་གཤོག་རྒྱས་ནས་གིང་  
 ཅེར་འབབ། དང་བོ་མི་སྤྱིད་ལ། ཕྱི་མ་ལྟར་ན་རིམ་གྱིས་བའི་དཔེར་འགྱུར་དོ།  
 ཁྱོད་ཀྱི་དཔེ་ནོར་བར་མ་ཟད་དོན་ཡང་ནོར་དེ། མི་རྟོག་བ་སྒྲོམ་བ་དེ་ཅི། ནམ་  
 རྟོག་གི་སྤྱོགས་གཅིག་བཀག་བ་ཅམ་ཡིན་ནས། མཐའ་དག་བཀག་བ་ཡིན།  
 དང་བོ་ལྟར་ན་གཉིད་དང་བརྒྱལ་བ་ལ་སོགས་བ་ཡང་མི་རྟོག་བར་ཐལ་ཡོ། ཕྱི་མ་  
 ལྟར་ན་མི་རྟོག་བ་བསྒྲོམ་བའི་ཆོ། མི་རྟོག་བ་བསྒྲོམ་སྒྲུབ་བའི་སྤྱོ་སྤྱན་དུ་གཏོང་  
 དགོས་སམ་མི་དགོས། དགོས་ན་དེ་ཉིད་རྟོག་བ་ཡིན་བས། རྟོག་བ་མཐའ་



དག་འགོགས་པའི་དམ་བཅའ་ཉམས་ཏེ། དཔེར་ན་སྤྱི་བ་བཅད་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་  
 བཟུང་ན་སྤྱི་བཅད་ཤོར་བའམ། ཅ་ཅོ་མ་བྱེད་ཅེས་པ་ཅ་ཅོར་འགྲུ་བ་བཞིན་ནོ། །  
 སྤྱི་སྤྱན་དུ་གཏོང་མི་དགོས་ན། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱོམ་སྤྱི་བར་ཐལ་ཡོ།  
 འདི་ལྟར་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱ་བར་སྤྱི་བས་ནི། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་  
 པའི་ཤེས་རབ་སྤངས་པ་ཡིན། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་ལུགས་ཆོས་དབྱིངས་  
 རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་དེ་ནི། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྟོགས་པ་ཡིན་ན།  
 དེ་སྤངས་པས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་སུ་ཤེས་རབ་ཀྱང་སྤང་བར་  
 འགྱུར་རོ། །སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་མེད་པར་ནལ་འབྱེད་པས་ཐབས་གང་  
 གིས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ལ་གནས་པར་འགྱུར། གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དྲན་པ་  
 མེད་པ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་འཇུག་གོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་མི་རིགས་ཏེ། ཡང་  
 དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་ཉམས་སུ་སྤྱོད་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་དྲན་པར་  
 བྱ་བ་དང་། ཡིད་ལ་མི་བྱ་བར་བྱེད་མི་ལུས་སོ།

གལ་ཏེ་བདག་གིས་ཆོས་འདི་དག་དྲན་པར་མི་བྱའོ། །ཅི་ཡང་མི་བསམས་  
 ཞིང་ཡིད་ལ་མི་བྱའོ་སྟུང་དུ་བསམས་ཞིང་སྒྲོམ་པར་བྱེད་པ་དེའི་ཆོ། དེས་དེ་དག་  
 ཤིན་དུ་དྲན་པ་དང་ཡིད་ལ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་སྟེ་དྲན་པ་མེད་པ་དང་ཡིད་ལ་  
 བྱེད་པ་མེད་པ་ཅམ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་རྒྱར་འདོད་པ་སྐད་དུ་བྱ་ན། དེ་ནི་རྣམ་  
 པ་ཐམས་ཅད་དུ་མི་རུང་སྟེ། མེད་པ་རྒྱར་རུང་བའི་སྐབས་མི་སྤྱི་བའི་ཕྱིར་རོ། །  
 དེ་ལས་གཞན་དུ་དྲན་པ་མེད་པ་ཅམ་གྱིས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་འགྱུར་དུ་ཟིན་ན་ནི་  
 བརྒྱལ་བའི་ཆོ་དྲན་པ་དང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་དུ་  
 འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྤྱོད་པར་གནས་པ་ཁོ་ན་



ཡིན་ཏུ་ཟིན་ཀྱང་སོ་སོར་དོག་པ་དེ་མེད་ན། དེ་དག་གི་སྤོང་བ་ཉིད་དོགས་པར་མི་  
འགྱུར་རོ། །སྤོང་བ་ཉིད་དོགས་པ་མེད་པས་ནི་སྦྱོབ་པ་སྤོང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །  
སྤོང་བ་ཉིད་དོགས་པ་ལ་མི་ལྟོས་པར་དེ་ལྟར་གྱུར་ཏུ་ཟིན་ནི། ཐམས་ཅད་ཀྱང་  
དུས་ཐམས་ཅད་ཏུ་རང་ཐར་བར་འགྱུར་རོ། །ཆོས་གང་ལ་ཡང་དཔ་བ་དང་ཡིད་  
ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་ཤིན་ཏུ་སྤོངས་པ་བསྒྲུམ་ནས་སྤོང་བ་ནི། ཡང་དག་པའི་ནལ་  
འབྱུང་ཏུ་ཇི་ལྟར་འགྱུར། དཔ་བ་ཉམས་པའམ་སྤོངས་པའི་ངང་ཚུལ་ཁོ་ན་བསྒྲུམ་  
པས་ནི་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱང་བ་རྒྱང་རིང་ཏུ་བསྤོངས་པར་འགྱུར་རོ། །

ཅི་སྟེ་དཔ་བ་ཉམས་པ་དང་། སྤོངས་པ་མ་ཡིན་ན་ནི། དེའི་ཆོ་ཡང་  
དག་པར་སོ་སོར་དོག་པ་མེད་པར་ཇི་ལྟར་དཔ་བ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་  
མེད་པར་བྱེད་ཀྱས་པར་འགྱུར། དཔ་བ་ཞིན་ཏུ་ཡང་མི་དཔ། མཐོང་བ་ཞིན་ཏུ་  
ཡང་མི་མཐོང་ཞེས་མངོན་སུམ་ལ་བསྒྲུན་ཏུ་མི་བྱུང་ངོ་། །དེ་ལྟ་བུས་ན་ནལ་  
འབྱུང་པས་ཡང་དག་པར་དོགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ཤིང་དབྱེད་ན།  
དུས་གསུམ་ཏུ་གདོགས་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་སྤོང་བར་དོགས་ཤིང་ལྟ་བ་ངན་བ་...  
ཐམས་ཅད་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཐམས་དང་ཤེས་རབ་རྒྱང་ཏུ་འབྲེལ་བའི་ལས་  
བསྒྲུམས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་སྦྱོབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཕུན་...  
སུམ་ཚོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །” ཞེས་གསུངས་པས་ཏུ་ཤང་  
གི་ལན་མ་བྱུང་ངོ་། །

དེ་ནས་བཙན་བོས་འཁོར་ཀྱན་གྱིས་ཡང་མཆིད་ཤགས་ཐོབ་ཅིག་ཅེས་  
གསུངས་པས་ཡེ་ཤེས་དབང་བོས་སྦྱས་པ། “ཅིག་ཅར་བ་དང་རིམ་གྱིས་

1. ལྟ་བུ་ཐ་ཐ་བཞིན་ཏུ་རྩོད་པ་ལྟར་བྱེད་པ་ལོ་དཔལ་དཔྱངས་ཞེན་པར་གསུངས་ཞོད་ཀྱང་། ལོ་

ལྟམ་གཞན་ལལ་ཆེ་བའི་ནང་གོང་གསལ་ལྟར་བཞེད་ཞོད་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།



འཇུག་ཅེས་བྱ་བ་གཉིས་དབྱེད་དགོས་དེ། རིས་གྱིས་འཇུག་ན་ཙོད་རྒྱ་མ་མཆིས་  
 དེ་ངེད་དང་འབྲེལ། ཁྱིལ་ཅན་འཇུག་ན་ཁྱེད་ད་དྲུང་ཅི་བྱེད། དང་པོ་ནས་  
 སངས་རྒྱས་ན་ཅི་ཉེས། དེ་བས་ན་རི་ལ་འཛེགས་པ་ཡང་གོས་པ་རེ་རེ་ནས་འཛེག་  
 དགོས་དེ། གོས་པ་གཅིག་གིས་བགྱོད་མི་རྒྱས་པ་ལྟར་ས་དང་པོ་ཐོབ་པ་ཡང་  
 རབ་དུ་དཀའ་ན། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཐོབ་པ་ལྟ་ཅི་སྟེས། ངེད་བཅེན་མིན་  
 གྱི་ལྷགས་ལ། གསུང་རབ་ཀུན་ལ་བསྐྱབ། ཤེས་རབ་གསུམ་ལ་བདེན་ནས་  
 དོན་མ་ནོར་བར་ཤེས། ཆོས་སྟོན་བཅུ་ལ་བསྐྱབ་དེ་བསྐྱོམས་པས་བཟོད་པ་ཐོབ།  
 ས་དང་པོ་སྟོན་མེད་པ་ལ་ལྷགས་དེ། ས་བཅུ་རིས་གྱིས་སྤངས་པས་ཆོགས་གཉིས་  
 ཛོགས་ནས་འཆང་རྒྱ་བ་ཡིན་པས། ཁྱེད་ལྟར་ཆོགས་མ་བསགས། གློ་  
 མ་སྤངས། འཛེག་དེན་གྱི་བྱ་བ་ཡང་མི་ཤེས་ན་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཤེས་པར་རི་  
 ལྟར་འགྱུར། ཅི་ཡང་མ་བྱས་པར་ཉལ་ནས་བསྐྱེད་པས་ཟན་ཡང་མི་སྤྱོད་བར་  
 ལྟོགས་དེ་འཆི་ན། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཐོབ་པ་དང་། །སེམས་ཅན་  
 གྱི་དོན་དབག་དུ་མེད་པ་མཛད་པ་སོགས་ཇི་ལྟར་རྒྱས་པར་འགྱུར།” ཞེས་སོགས་  
 རྒྱས་པར་གསུངས་པས། ལྟོན་ལྟན་པས་ལན་སྟེ་མ་རྒྱས་པར་མེ་དོག་གི་སྤེང་བ་  
 སྤུལ་ནས་པམ་ཁ་སྤངས་སོ།།

དེ་ནས་བཅེན་བོས་དང་སྟོན་ཆད་ལྟ་བ་ལྟ་སྟབ་ཀྱི་ལྷགས་བཟུང་། སྟོན་པ་མ་  
 རིལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ལ་བགྱིས་ལ་ཆོས་སྟོན་བཅུ་ཉམས་སུ་ཡོངས། བསྐྱོམ་པ་  
 ཤེས་རབ་གསུམ་ལ་གློ་སྟོངས་ལ། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་རྒྱང་དུ་འབྲེལ་བའི་ཞི་  
 གནས་དང་ལྟག་མཐོང་སྐྱོམས་ཤིག་ཅེས་སོགས་བཀའ་ནན་དག་དུ་བསྐུལ་དེ་དུ་  
 ཤང་རྒྱུ་ལྟེ་ལྟེ་བཟུངས་སོ།།



དེ་ནས་ཀྱལ་བོས་སྒྲོབ་དཔོན་ཀམ་ལའཤེལ་ར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐོས་བསམ་གྱིས་  
 བདག་མེད་པར་གཏན་ལ་ཐབ་པའི་ཆོས་དེ་ཆེ་ལྟར་ལགས་ཡི་གེར་འགོད་པར་ཁྱས་  
 པས། སྒྲོམ་རིམ་དང་པོ་བཅུ་མས་ནས་གནང་། ཀྱལ་བོས་གཟིགས་པས་དོན་  
 དགོངས་ནས་ཐུགས་དགུས་དེ། དེའི་དོན་ལྟན་ཐོག་གཅིག་ཏུ་སྒྲོམ་ན་ཆེ་ལྟར་སྒྲོམ་  
 ཁྱས་པས། སྒྲོམ་རིམ་པར་པ་བཅུ་མས་ནས་གནང་། དེ་ལྟར་བསྒྲོམས་པས་  
 དེ་ལ་འབྲས་བུ་ཆེ་ལྟ་བུ་མཆིས་ཁྱས་པས། སྒྲོམ་རིམ་ཐ་མ་འབྲས་བུ་བཅུ་ན་པའི་  
 ཞར་ལ་ནུ་ཤང་གི་ལྟ་བ་ནོར་བ་དེ་སྒྲུན་ཕྱངས་ནས་གནང་བས་བཅན་པོ་ཤིན་ཏུ་……  
 དགུས་སོ། །དེ་ནས་སྒྲོ་རྟོན་དེ་དགོངས་པ་ལ་གྲོལ་བ་འབྱུང་གི་དྲུགས་ནས།  
 དེའི་དོན་ཏུ་ལྷང་དང་རིགས་པའི་བཅུ་ན་བཅོས་དབྱ་མ་སྤང་བ་<sup>1</sup>བཅུ་མས་ནས་གནང་  
 བ་སོགས་སངས་རྒྱུ་ཀྱི་བཅུ་ན་པ་ལ་དག་ཐེར་རྒྱབས་པོ་ཆེ་མཛད་པའི་བཀའ་རྒྱན་  
 གཞལ་དུ་མ་མཆིས་སོ། །

(3) བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འདིའི་ནམ་ཐར་དང་འབྲེལ་བའི་བསྐྱར་ཞིབ་དྲུགས་གཙོད།

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འདིའི་ནམ་ཐར་གྱི་སྒོར་ལ་དབྱེད་གཞི་ཆེ་བའི་བཤད་ཚུལ་  
 མི་མཐུན་པ་ཆེ་སྟེད་ཅིག་སྤང་སྟེ། དེ་ཡང་པར་ཆེན་ཤུག་མཆོག་ལྟེན་གྱིས་མཛད་  
 བའི་རིང་ལྟན་གྱི་ནམ་ཐར་ལས།<sup>2</sup> “ཅོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་མཁས་  
 པ་ཆེན་པོ་ཀམ་ལའཤེལ་མཆོན་ཉི་ཁྱེ་ལྟར་གྲགས་པ་དེ་ལྟ་བུ་སྤྱོད་ལྟེ་བཅན་གྱིས་……  
 བོད་ལྷ་པ་དུ་སྒྲུན་དངས། ལྟ་བ་ངན་པ་སྒྲུན་ཕྱང་། དབྱ་མའི་བཅུ་ན་བཅོས་

1. ལྟེན་པམས་ཐུ་བཞེད་སོགས་ཐུ་དབྱ་མ་སྤང་བ་བསྒྲོམ་རིམ་གྱི་དོན་འབྲེལ་དུ་གསུངས་པ་དཔྱད་

བར་བྱའོ། 2. བོད་མ་” 302 (ཐེ་ལི་-དེ་བ་གཞུགས་)



མང་དུ་མཛད། སྤྱི་མཐུན་ལྷན་དུ་གཤེགས་པའི་ལམ་ཁར་གྲུབ་ཆེན་དམ་པ་  
 རྒྱ་ལར་དང་མཇུག། དུས་རེར་སྤྱི་ན་པའི་རོ་ཆེན་པོ་ཞིག་གིས་ལམ་པོ་ཆེ་བཅད་  
 ཅས། རོ་དེ་ལ་རེས་འགའ་འབྱུང་བོ་དག་ཞུགས་ནས་སྤྱོད་ཀྱི་འགྲོན་པོ་ནམས་  
 ལ་ཉེ་བར་འཛོལ་བར་གཞིགས་ནས། སློབ་དཔོན་དེས་རོ་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་  
 ཅས་ཐག་རིང་པོར་བསྐྱེད་བཤུགས་གཤེགས་སོ། དེའི་ཤུལ་དུ་སློབ་དཔོན་དེའི་སྐུ་  
 ལུས་ཤིན་དུ་མཛེས་ཤིང་ཡིད་དུ་འོང་བར་གཞིགས་ནས། སྐུ་ལུས་དེ་ལ་དམ་པ་  
 རྒྱ་ལར་གྱིས་ཞུགས་ནས་རང་གི་ལུས་མི་མཛེས་པ་དེ་ཤུལ་དུ་བཞག་གོ། སློབ་  
 དཔོན་སྤྱིར་འཁོར་བ་ན་རང་གི་སྐུ་ལུས་གཞན་གྱིས་འཁྱེར་བར་གཞིགས་ནས་ཇི་...  
 བཅུན་དམ་པ་རྒྱ་ལར་གྱི་སྐུ་ལུས་དེ་ཉིད་ལ་ཞུགས་སོ། །དེའི་སྤྱིར་བོད་ལུལ་དུ་  
 སྤྱོན་པའི་ཇི་བཅུན་དམ་པ་རྒྱ་ལར་ཞེས་མཚན་ཉི་མ་ལྟར་གྲགས་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་.....  
 ཐུགས་ནས་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་ནི་མཁས་པའི་དབང་པོ་ཀམལ་གྱི་ལ་  
 ཡིན་ནོ། ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་ལྟར་ན་བྱ་སྤྱོད་ཆོས་འབྱུང་དང་། དབང་པོ་གཙུག་ལག་སྤེང་བའི་ཆོས་  
 འབྱུང་མཁས་པའི་དགའ་སྟོན། རྒྱལ་རབ་སྤྱོད་བཞེད། བད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་།  
 ངོར་ཆོས་འབྱུང་། སུམ་པ་མཁན་པོ་འེ་ཆོས་འབྱུང་། བདུང་འཛེས་  
 རིན་པོ་ཆེའི་རྒྱལ་རབ་དངས་ཤེས་འབྱུང་གི་མེ་ཡོང་སོགས་རྒྱལ་རབས་ཆོས་.....  
 འབྱུང་ཕལ་ཆེ་བའི་ནང་སློབ་དཔོན་ཀམལ་གྱི་ལས་རྒྱ་ནག་ཏུ་ཤང་ཚར་བཅད་ཇིས་...  
 སུ་མི་རིང་བ་ཞིག་ན་ཏུ་ཤང་གིས་བདང་བའི་རྒྱུད་བཤུན་པ་མི་བཞིས་སློབ་དཔོན་  
 ཏུ་བཅོས་སྐྱུར་ཁང་དུ་གཞིམ་མལ་དུ་མཁས་མ་མཉེས་ནས་བཀྲོང་བར་གསུང་བ་  
 དང་འགལ་བར་འབྱུང་ལ། གཞན་ཡང་། ཤུག་མཚོག་ལྟར་རང་ཉིད་ཀྱི་གསུང་



རོང་སྟོན་གྱི་གསང་བའི་ནམ་མཐར་དུ། “ཇི་བཙན་དམ་བ་རྒྱ་གར་གྱིས་འཛམ་གཤི-  
 སྲིང་འདིར་མིའི་སྤྱེ་བ་བདུན་བར་མ་ཆད་པར་བཞེས་པའི་ཐ་མ་ལ་བུམ་ཟེའི་རིགས་  
 ཤིག་དུ་འབྱུངས་དེ། དེའི་མིང་ལ་སྦྱ་བའི་མིང་གི་དང་། མི་པམ་མགོན་པོ་དང་།  
 ལས་ཀྱི་དོ་ཇི་ཞེས་བྱ་བ་གསུམ་བདགས་སོ། །དེ་དུས་རེ་ཞིག་གི་ཆོ་གྲུ་ལྟེན་  
 གཙུག་ལག་ཁང་ཆེན་པོ་ལྷོ་ཁྱམ་ཤིལ་ཞེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པ་དེར་རྟམ་ཤིལ་……  
 དང་། སློབ་དཔོན་ཀམ་ལར་ཀློང་ཞེས་བྱ་བ་གཉིས་ཀྱི་བྱུང་དུ་རབ་དུ་བྱུང་བར་  
 མཛད་པའི་མཚན་ནི། ཀམ་ལ་ཤིལ་ཞེས་བདགས་སོ། དེ་ནས་རིམ་གྱིས་རིགས་  
 བའི་གནས་ལྷ་ལ་མཁས་པའི་བརྟེན་ཆེན་པོར་གྱུར་དེ་འཕགས་ལྷ་ལ་དུ་བསྟན་བ་……  
 ལ་བྱ་བ་མང་དུ་མཛད། བསམ་ལས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་འི་དུས་སུ་བོད་དུ་བྱོན། རྒྱ-  
 ཅིག་མཁན་པོ་འི་ཆོས་ཁྲགས་སུན་བྱུང་། ཡར་ཕྱིན་ཐེག་པའི་བསྟན་བཅོས་མང་  
 དུ་བཅུམས། དུས་དེར་སློབ་དཔོན་དེས་གསང་སྒྲགས་ཀྱི་ཆོས་མ་བསྟན།” ཞེས་  
 སོད་གསུངས་པ་དང་། ཡང་ཀུན་མཁྱེན་པད་དཀར་གྱིས་མཛད་པའི་ཆོས་འབྱུང་<sup>3</sup>  
 དུ། “དམ་བ་སངས་རྒྱས་ནི་སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤིལ་བོད་དུ་སྐྱེ་གཤེགས་ནས་སྤྱི-  
 བ་རྒྱ་གར་ལྷོ་ཕྱོགས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ཙར་སིང་ཞེས་བྱ་བར་ཆོང་དཔོན་གྱི་རིགས་སུ་……  
 འབྱུངས། ལྷོ་ཁྱམ་ཤིལ་ར་མཁན་པོ་དགེ་བའི་རྩ་ལས་རབ་དུ་བྱུང་།” ཞེས་  
 གསུངས་པས། སྤུ་མ་ལྟར་ན། ཇི་བཙན་དམ་བ་རྒྱ་གར་དང་། སློབ་དཔོན་  
 ཀམ་ལ་ཤིལ་གཉིས་ཡོགས་སུ་མེད་པར་སློབ་དཔོན་གཅིག་ཉིད་འཕགས་ལྷ་ལ་ནས་

1. བོད་—མ་ ༡༩༩ (ལྷོ་ཁྱེ་—དེ་བ་གཟུགས་) 2. ལྷོ་ཁྱེ་དང་། ལྷོ་ཁྱམ་ཤིལ་གཟུགས་ཡོངས་སུ་གྲགས་  
 རུ་གཙུག་ལག་ཁང་ཆེན་པོ་ལྷོ་ཁྱམ་ཤིལ་ཞེས་ཡོངས་སུ་གྲགས་པར་བཅད་པོ་ཡོད་  
 བ་དངོས་མཐོང་ཡོང་། འདིར་གཅིག་དུ་མཛད་པ་འདུག་པ་མཁས་པ་ཕྱགས་མ་གཉིད་བའི་གཟུང་  
 ཡོན་ལྷོ་དེ། གཞན་དུ་ན་དཔྱད་བཅོད་དགའོ། 3. བོད་དཀར་ཁ་ ༡༠༠ (ལྷོ་ཁྱེ་—དེ་བ་)



བསམ་ཡས་ཀྱི་པོ་འི་དུང་དུ་བོད་ལ་བྱོན་ནས་ཀྱི་ནག་མཁན་པོ་འི་ཆོས་ལུགས་...  
 སྤྱི་མ་བད་དཀར་ཆོས་འབྱུང་དུ། སློབ་དཔོན་  
 ཀམ་ལ་ཤྱི་ལ་བོད་དུ་ཞིང་ལ་གཤེགས་ནས་སྤྱི་བ་ཀྱི་གར་དུ་བཞུགས་པ་དེ་དམ་པ་ཀྱི་  
 གར་རམ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུ་ཡིན་པར་གསུངས་པས་ཁྱད་པར་ཤིན་དུ་ཆེད།

གཞན་ཡང་སྤངས་དངས་པའི་ཤུ་མཆོག་ལྷན་གྱི་རོང་ལྷོན་གྱི་རྣམ་ཐར་སྤྱི་བྱངས་  
 རྣམ་བཤད་པ་དང་། གསང་བའི་རྣམ་ཐར་དུ་བཤད་པ་གཉིས་ཀྱང་མི་མཐུན་དེ།  
 གསང་བའི་རྣམ་ཐར་དུ་ཆེ་བཅུན་དམ་པ་ཀྱི་གར་འཛམ་སྤྱིང་འདྲར་མའི་སྤྱི་བ་བདུན་  
 བར་མ་ཆད་པར་བཞུགས་པའི་ཐ་མ་དེ་རབ་དུ་བྱུང་བའི་མཆོན་ལ་ཀམ་ལ་ཤྱི་ལ་ཞེས་...  
 བདགས་པ་དེ་རྟེན་བསམ་ཡས་ཀྱི་པོ་འི་དུས་སུ་བོད་ལ་བྱོན་ནས་ཀྱི་ནག་པ་དུ་ཤང་  
 ཆར་བཅད་པར་བཤད་པས། སློབ་དཔོན་གྱི་མཆོན་ལ་དམ་པ་ཀྱི་གར་རམ་  
 ཀམ་ལ་ཤྱི་ལ་གང་བཞེད་ཀྱང་གང་ཟེག་རྒྱུད་གཅིག་ཡིན་པ་ལས་རྒྱུད་ཐ་དད་པའི་...  
 བཤད་ཚུལ་མེད་ལ། འོན་ཀྱང་རྣམ་ཐར་སྤྱི་བྱངས་བཤད་པའི་སྐབས། ཆོས་འབྱུང་  
 རྣམ་ཐར་གཞན་དང་མི་མཐུན་པ་སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྱི་ལས་ཀྱི་ནག་མཁན་པོ་འི་...  
 ལྷ་བ་སྤྱི་མ་བད་ནས་འཕགས་ལྷལ་དུ་ཕྱིར་ཐེབས་མཛད་སྐབས་ལས་ཁར་པ་དམ་པ་  
 སངས་རྒྱུ་པས་དམ་པ་ཀྱི་གར་མཇལ་བ་དང་། གཅིག་གི་སྤྱི་ལས་ལ་གཅིག་  
 གྲོང་མཚུག་མཛད་པར་བཤད་པས། དུས་གཅིག་དུ་ཡོད་པའི་གང་ཟེག་རྒྱུད་ཐ་  
 དད་པ་གཉིས་ཡོད་པ་གསལ་བར་བཤད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

སྤྱིར་རྣམ་ཐར་ཐུན་མོང་བ་དང་། གསང་བའི་རྣམ་ཐར་གཉིས་ལ་ཁྱད་པར་  
 ཆེན་པོ་ཡོད་པ་ཅི་མེད་ཡོངས་གྲགས་ཡིན་ཡང་། འདྲར་རོང་ལྷོན་གྱི་གསང་རྣམ་  
 བཤད་པའི་སྐབས་ཡིན་པ་ལས། དམ་པ་ཀྱི་གར་དང་སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤྱི་ལའི་



གསང་ནས་བཤད་པའི་སྐབས་ཀྱང་མིན་ལ། བྱན་མོང་དང་བྱན་མོང་མ་ཡིན་པའི་  
 སྐབས་གང་དུ་ཡང་དམ་བ་རྒྱ་གར་དང་། ཀམལ་ཤྱིལ་གཉིས་གང་ཟག་གཅིག་  
 ཡིན་ནས་ཐ་དད་ཡིན་འདིའི་གནད་ལ་མི་མཐུན་པ་ཡོང་བའི་གནས་མི་སྤང་ངོ་། །

གོང་གི་གསང་ནས་དུ་དམ་བ་རྒྱ་གར་མིའི་སྦྱོར་བ་བདུན་པར་མ་ཆད་དུ་བཞེས་  
 པའི་ཐ་མ་ཀམལ་ཤྱིལ་ཞུ་བ་བོད་དུ་བསམ་ཡས་རྒྱལ་པ་འི་དུང་དུ་བྱོན་པར་གསུང་  
 པ་དེ། ཞི་བྱེད་ཀྱི་ཆོས་འབྱུང་ཁྱད་ས་ནམས་སུ་དམ་བ་རྒྱ་གར་བོད་ལ་ལན་ལྔ་  
 བྱོན་པར་བཤད་པའི་བྱོན་ཐེང་གང་ཡང་མིན་པར་མ་ཟད། ཆོ་བདེན་ཞབས་དུང་གི་  
 བསྟན་ཅིས་ཀྱན་བདུས་སུ་༥ རབ་བྱུང་དང་བོ་འེ་ཤིང་༥། སྤྱི་ལོ་ ༡༠༥༥ མཉམ་  
 མེད་ཇོ་བོ་ཇེ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པའི་ལོ་དེར་དམ་བ་རྒྱ་གར་བོད་ལ་བྱོན་པར་  
 གསུངས་པས་དུས་མི་འགྲིག་ཅིང་། ལྷག་པར་དུ་བསམ་ཡས་རྒྱལ་བོ་འི་དུས་སུ་  
 བོད་ལ་བྱོན་ནས་རྒྱ་ནག་དུ་ཤང་གི་ལྟ་བ་སུན་ཕྱངས་ཤིང་། སར་ཕྱིན་ཐེག་པའི་  
 བསྟན་བཅོས་མང་དུ་མཇེད་ཅིས་གསུངས་ཚུལ་འདིའི་ཤུགས་ཀྱིས་ཞི་འཚོ་འི་སློབ་  
 མ་ཀམལ་ཤྱིལ་ལས་མ་འདས་པར་ཆེས་གསལ་ཡོ། །

ཆོས་འབྱུང་ནས་ཐར་པལ་ཆེ་བའི་ནང་པ་དམ་བ་སངས་རྒྱས་ནི། རྒྱ་གར་  
 རྩོ་ཕྱོགས་ཅན་སངས་ཞེས་བྱ་བར་སྐྱེ་འབྱུངས། རྒྱུ་མ་ཤྱིལ་འི་མཁན་བོ་དག་  
 བའི་ལྟ་ལས་རབ་དུ་བྱུང་། ལྷ་མ་གསེར་སྤྱིང་བ་ལས་སེམས་བསྐྱེད། མཁན་བོ་  
 དག་བའི་ལྟ་དང་། བྱམ་ཟེ་ཞུ་དེ་བ་སོགས་ལ་བདེན་ནས་རིག་པའི་གནས་ལྟ་  
 ལ་མཁས་པར་སྐྱུངས། རྒྱ་རོ་དང་མི་དེ་ལ་སོགས་པའི་ལྷ་མ་ལྟ་ཅ་ཅ་བཞི་  
 བསྟན་བ་སོགས་གསུང་ཚུལ་མཐུན་པར་སྤང་ཡང་། ཤུ་མཚོག་ལྟ་བུ་རིང་།



སྟོན་ནས་ཐར་དུ། རྗེ་བཙུན་དམ་པ་རྒྱ་གར་གྱིས་འཛམ་གྱི་འདིར་མའི་སྟེ་  
 བ་བདུན་བར་མ་ཆད་པར་བཞེས་པའི་ཐ་མ་བྲམ་ཟེའི་རིགས་ཤིག་དུ་འབྱུངས་དེ།  
 དེའི་མིང་ལ་སྦྱ་བའི་སེང་གེ་དང་། མི་པམ་མགོན་པོ་དང་། ལས་ཀྱི་དོ་རྗེ་ཞེས་  
 བྱ་བ་གསུམ་བདགས་པ་སོགས་དང་། ཡང་པ་དམ་པས་སྟོབ་དཔོན་ཀམལ་ཤྱིལ་འི་  
 སྦྱ་ལུས་ཤིན་དུ་མཛེས་ཤིང་ཡིད་དུ་འོང་བར་གྲོང་འཆུག་མཛད་པ་སོགས་གསུང་།  
 ཚུལ་གཞན་དང་མི་མཐུན་པ་འདི་དག་ལ་ངས་པ་ཐོབ་དཀའ་བ་མ་ཟད། དོན་  
 འདི་ལ། ཀྱན་མཁྱེན་པད་དཀར་གྱིས་མཛད་པའི་ཆོས་འབྱུང་བཙུན་པའི་བསྟོ་  
 རྒྱས་པའི་ཉིན་བྱེད་ལས་། “འདི་ལ་གཞན་གྱིས་དགྲུང་ལོ་མང་པོ་བར་བྱས་  
 བ་དང་། ཀམལ་ཤྱིལས་གྲོང་འཆུག་བྱས་པར་བཤད་པ་ནམས་ལ་གཏམ་ཆད་  
 མ་གཞོད་བྱེད་དུ་སྒྲུང་ངོ་།” །ཞེས་གསུངས་སོ།

གལ་དེ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་དང་། སྟོབ་དཔོན་ཀམལ་ཤྱིལ་གཉིས་ཐུགས་  
 རྒྱུད་ཐ་དད་ཡིན་པའི་དབང་དུ་བྱས་ནས་ཞི་བྱེད་སྟོལ་མ་དགུ་སྟོར་མཛད་པ་པོ་དང་།  
 བོད་དུ་ལན་ལྔ་བྱོན་པ་པོ་དེ་པ་དམ་པའི་སྦྱ་ལུས་ལ་གྲོང་འཆུག་མཛད་པའི་སྟོབ་  
 དཔོན་ཀམལ་ཤྱིལ་ཡིན་པར་འདོད་ན། པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་ཞི་བྱེད་སྟོལ་  
 མ་དགུ་སྟོར་མ་མཛད་པ་དང་། བོད་ལ་ལན་ལྔ་མ་བྱོན་པར་འགྱུར་ལ། དེ་  
 ལྟར་ན། ཆོས་འབྱུང་ནས་ཐར་པལ་ཆེ་བའི་གསུང་ཚུལ་དང་ཡང་འགལ་བར་  
 འགྱུར་རོ། །གལ་དེ་གྲོང་འཆུག་གང་དུ་མཛད་སའི་སྦྱ་ལུས་དེ་པ་དམ་པ་སངས་  
 རྒྱས་ཀྱི་ཡིན་པས་སྦྱ་ལུས་ཙམ་གྱིས་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གོ་ཆོད་དོ་སྟུམ་ན་ནི་  
 ཉ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ།



མདོར་ན་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུ་གི་མཚན་ལ་ཀམལ་ཤིལ་དང་། ཀམལ་ཤིལ་  
 ཞེས་འབྲུང་བ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤིལ་བོད་དུ་ཞིང་ལ་གཤེགས་  
 ཅས་སྟེ་བ་རྒྱ་གར་དུ་བཞེས་པ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུ་ཡིན་པར་གསུངས་པ་དང་།  
 ཡང་། “འདི་<sup>1</sup>རྒྱ་གར་དུ་བཞུགས་ཀམལ་ཤིལ་དུ་གྲགས། བོད་དུ་དམ་པ་རྒྱ་གར་རྩེ་”  
 ཞེས་སོགས་དང་། ཡང་སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤིལ་བོད་ནས་རྒྱ་གར་ལ་ཕྱིར་ཕེབས་  
 མཛད་སྐབས་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུ་གི་སྐུ་ལུས་ལ་གྲོང་འཇུག་མཛད་དགོས་བྱུང་།  
 བ་སོགས་གསུངས་ཚུལ་འདྲ་མིན་སྒྲ་ཚོགས་པ་འདི་དག་ལ་གཞིགས་ན་གཞི་རྩ་ཅན་  
 གྱི་འབྲེལ་བ་ཞིག་ཡོད་པ་གཤོག་མི་ཟ་བ་ཡིན་མོད། འོན་ཀྱང་དངོས་ཡོད་གནས་  
 ཚུལ་ལ་མཐའ་གཅིག་དུ་འདི་འཐད་དང་འདི་མི་འཐད་ཅེས་བཞུགས་དགའ་བས།  
 ཁ་ཚོན་བཅད་མ་སྒྲ་བར་དབྱུང་གཞིར་བཞུགས་པ་འདི་དག་ལ་རྣམ་དབྱེད་ཀྱི་རྩལ་.....  
 གཞན་ལས་ཁྱད་ཉེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་དབྱུང་བར་འཚལ་ཡོ།  
 (༧) ཚུམ་པ་ལེགས་བཤད་ཀྱི་ཕྱིང་བ་ཇི་ལྟ་བུ་ཚུལ་དང་། དེའི་བསྐྱར་ཞིབ་

### དུགས་གཅོད།

བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འདིའི་གསུང་གི་མཛད་པའི་ཕྱག་རྒྱེས་ཚུམ་པ་ལེགས་.....  
 བཤད་<sup>2</sup>ཀྱི་ཕྱིང་བ་ཇི་ལྟ་བུ་ཡོད་སྟེ་ན། འདི་ལྟར་།—

1. གཅོད་ལུག་ཉིད་མོངས་ཞེ་བྱེད་ཀྱི་བཀའ་གཉིད་སྒྲ་མ་རྒྱུད་བའི་རྣམ་ཐར་— ༡༩

(ཇེ་ལོ་—དེ་བ་གཞུགས་)

2. གཤམ་གསལ་གསུང་རྩོམ་ཕྱག་དཔེ་དེ་དག་གི་བོད་དང་། བོག་གྲངས་ནི་ཇེ་དགེ་བཅུན་འབྱུང་  
 གཞིར་བཞུང་ངོ་།



## (ཀ) འདུལ་བ།

(1) 1-དག་སྤོང་གི་ཀུན་གྱི་ལྷ་ཅུ་པའི་ཚོག་གི་བཞེད་བྱང་དུ་བྱས་པ།

(སྟེ་ ༧-34)

## (ཁ) ཤེར་ཕྱིན།

(2) 1-འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་བདུན་བརྒྱ་བ་རྒྱ་ཆེར་བཤད་་  
བ་('མ' 10-114)(3) 2-འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ནི་ཇི་གཅོད་པའི་རོན་བདུན་་  
གྱི་རྒྱ་ཆེར་འབྲེལ་བ། ('མ' 300-357)

## (ག) དབྱ་མ།

(4) 1-དབྱ་མ་རྒྱན་གྱི་དཀར་འབྲེལ་ ('མ' 10-133)

(5) 2-དབྱ་མ་སྤང་བ། ('མ' 133-300)

(6) 3-དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྤང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རབ་དུ་བྱེད་པ། ('མ' 300-373)

(7) 4-ཚོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་མེད་པར་སྤྱུབ་པ། ('མ' 373-387)

(8) 5-བྱང་ཅུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་པ། ('ཀྱི' 16-18)

(9) 6-བསྐྱེད་རིམ་དང་བོ། ('ཀྱི' 33-47)

(10) 7-བསྐྱེད་རིམ་བར་བ། ('ཀྱི' 47-55)

(11) 8-བསྐྱེད་རིམ་ཐ་མ། ('ཀྱི' 55-64)

(12) 9-ཆལ་འབྱོར་བསྐྱེད་པ་ལ་འཇུག་པ། ('ཀྱི' 64-70)

## (ང) མདོ་འབྲེལ།

(13) 1-འཕགས་པ་ནམ་པར་མི་དོག་པར་འཇུག་པའི་གཞུངས་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་



འབྲེལ་བ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(༡༣) ༣-འཕགས་པ་སྤྲུལ་ལྷུང་པའི་ཀྱི་ཆེར་འབྲེལ་བ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(ཅ) སྤྲུལ་ཡིག

(༡༣) ༡-སྒྲིམ་མོ་ཆངས་དབྱངས་ལ་སྤྲུག་བསྐྱེད་བརྒྱུད་ཀྱི་བྱེ་བྲག་བསྐྱེད་པ་

ཞེས་བྱ་བ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(༡༤) ༣-དད་སྤྱོད་སྤྱོད་མ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(ཆ) ཆད་མ།

(༡༥) ༡-རིགས་པའི་ཐིག་པའི་ཕྱོགས་སྤྲུལ་མ་མཐོང་བསྐྱེད་པ། ('ཇི' ༡༣༣-༡༣༣)

(༡༤) ༣-ཆད་མའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྐྱེད་པའི་དཀའ་འབྲེལ། ('ཇི' 'ཇི' ༡༣༣-

༣༤༣, ༡-༣༣༣)

(ཇ) སྤྲུལ་མཐོང་མ།

(༡༥) ༡-སྤྱོད་ལམ་སྤྱོད་ཀྱི་མཐོང་མ། ('ཇི' ༣༣༣) བཅས་སོ། །

འདིར་དབྱུང་ཞིབ་བྱེད་དགོས་པ་ཞིག་ལ་སྤྲུལ་པའི་བསྐྱེད་འགྱུར་རྒྱུད་འབྲེལ་

('ཇི' ༣༤༠-༣༥༠) བཅས་ལ་ལྟར་གྱི་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུས་ཀྱིས་མཛད་པའི་

བསྐྱེད་བཅོས་ (༡) མན་ངག་སྤྱོད་མཐོང་མ། (༢) ཐིག་པ་གསུང་གི་སྤྱོད་མཐོང་མ།

(༣) ཡང་དག་ལྟ་བུའི་སྤྱོད་མཐོང་མ། (༤) རིན་པོ་ཆེའི་སྤྱོད་མཐོང་མ། (༥) མཉམ་ཉིད་གཞིའི་

སྤྱོད་མཐོང་མ། (༦) མཐར་ཐུག་འབྲས་བུའི་སྤྱོད་མཐོང་མ། (༧) བྱང་ཆུབ་སྤྱོད་པའི་སྤྱོད་མཐོང་མ།

(༨) རྣམ་འབྱོར་ལམ་གྱི་སྤྱོད་མཐོང་མ། (༩) གསང་བ་ཐུགས་ཀྱི་སྤྱོད་མཐོང་མ། (༡༠) མཚུལ་

གྱི་ཆོག་དང་། (༡༡) དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཐུག་ཀྱི་ཆེན་པོ་ཡི་གེ་མཛད་པའི་མན་ངག་

བཅས་ཞི་བྱེད་ཀྱི་མན་ངག་སྤྱོད་མཐོང་མ་དག་སྤྱོད་དང་། (༡༢) ཞེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་



དུ་ཕྱིན་པའི་སྐྱབ་ཐབས། (23) རྩེ་བཙུན་མ་འཕགས་མ་སྒྲོལ་མའི་སྐྱབ་ཐབས།  
 (24) རྩེ་རྩེ་འཕགས་མའི་སྐྱབ་ཐབས་དང་། (25) འཇམ་དཔལ་ཁྲོ་བོར་སྐྱབ་  
 པ་བཅས་བསྐྱེད་རིམ་གྱི་ཆོས་སྒོར་དེ། གོང་གསལ་ཞི་བྱེད་ཀྱི་གཞུང་དེ་དག་  
 ལས་མཛད་བྱང་དངོས་སུ་གསལ་བ་ནམས། ཉི་ཉོང་ནས་དངར་བསྐྱེད་ཞུས་པའི་  
 སྡེ་དགོ་དགའ་བསྟན་དཀར་ཆག་དེབ་གཞུགས་ནང་བསྒྲོམ་རིམ་མཛད་པོའི་ཀམལ་  
 ཤྱིལས་མཛད་པ་གཞི་བཞག་གི་ཐོག་ནས་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་གཞུང་གི་ཁྲིངས་  
 སུ་གྲངས་འདྲིན་བྱས་འདུག་ཅིང་།

སྡེ་དགོ་བསྟན་འཕྱར་བོད་དཔར་དཀར་ཆག་ནང་། ཕྱག་དཔེ་ངོ་མའི་  
 མཆུག་དུ་མཛད་བྱང་དངོས་སུ་གསལ་ལ་མིན་ལ་མ་ཁྲོམ་པར། དང་པོ་བཅུ་གཅིག་  
 ནྤལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱག་ཆེན་པོ་ཀམལ་ཤྱིལས་མཛད་ཅེས་དང་། ཕྱི་མ་བཞི་  
 རྩེ་བཙུན་ཀམལ་ཤྱིལས་མཛད་ཅེས་བཀོད་འདུག་ཀྱང་། ཕྱག་དཔེ་ངོ་མའི་ནང་  
 དང་པོ་ལྔ་ལ་མཛད་བྱང་མེད་ཅིང་། དགུ་པ་དང་བཅུ་གཅིག་གཉིས་ནྤལ་འབྱོར་  
 གྱི་དབང་ཕྱག་ཆེན་པོ་ཀམལ་ཤྱིལས་མཛད་ཅེས་དང་། དེ་བྱིངས་ནམས་རྩེ་བཙུན་  
 ཀམལ་ཤྱིལས་མཛད་ཅེས་བཀོད་ཡོད་ལ།

ཕྱི་ཀོང་དཔར་མའི་དཀར་ཆག་དང་ཕྱག་དཔེ་ངོ་མ་གཉིས་ཀའི་ནང་མཛད་བྱང་  
 དངོས་སུ་གསལ་བ་ནམས་ཀམལ་ཤྱིལས་མཛད་ཅེས་བཀོད་འདུག་པས། ‘ཀམལ་ཤྱི་’  
 དང་‘ཀམལ་ཤྱིལ་’གཉིས་མཚན་རྒྱུ་མི་འདྲ་བའི་ཁྲུང་བར་ཆེན་པོ་ཡོད་ལ། བྱ་  
 སྟོན་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པས་མཛད་པའི་སྐར་ཐང་བསྟན་འཕྱར་གྱི་དཀར་ཆག་ཡིད་  
 བཞིན་ནོར་བུ་དབང་གི་བྱལ་བོའི་སྤྱང་བའི་ནང་།<sup>1</sup> “དེ་ནམས་ཐམས་ཅད་རྩེ་

1. བཙུན་-‘མ’ ༩༩ (སྡེ་ག-དེབ་གཞུགས་) (འཕྲིན་ལྷོ་གྲོ་མོ་དང་འཕྲིན་ལྷོ་གྲོ་མོ་)



བཙན་ཀམལ་ཤེས་མཛད།” ཅེས་བཀོད་ཡོད་དོ།

དེས་ན་གཞུང་དེ་དག་ཀམལ་ཤེས་པའི་མཚན་ཅན་ཞིག་གིས་མཛད་དུ་ཚུགས་ཀྱང་།  
བསྐྱོམ་རིམ་མཛད་པ་བོ་དང་གཅིག་ཡིན་མིན་དང་། སློབ་དཔོན་ཀམལ་ཤེས་དང་།  
ནལ་འབྱོར་གྱི་དབང་ཕྱག་ཆེན་པོ་ཀམལ་ཤེས་དང་། རྗེ་བཙན་ཀམལ་ཤེས་གསུམ་  
གཅིག་ཡིན་མིན་དང་། །ཡང་ན་དེ་དག་ལས་གཞན་པའི་ཀམལ་ཤེས་མཛད་  
སྟུང་བའི་དྲོགས་གཞི་ཆེ་ཞིང་། དབར་མ་འདྲ་མིན་གྱི་དཀར་ཆག་ནང་པན་ཚུན་མི་  
མཐུན་པ་དང་། དཀར་ཆག་དང་ཕྱག་དཔེ་ངོ་མ་གཉིས་མི་མཐུན་པ་སོགས་མི་  
མཐུན་པ་ཆེས་མང་ཞིང་། ཡིད་བདུན་འཕེར་བའི་གནས་སུ་མི་སྤང་བས་དབྱེད་པ་  
ཞིབ་དུ་བྱེད་དགོས་པར་སྤང་ངོ་།

དེ་ལ་བྱ་སྟོན་ཐམས་ཅད་མཐུན་པས་མཛད་པའི་ཆོས་འབྱུང་གསུང་རབ་རིན་  
བོ་ཆེད་མཛད་པ་དང་། ཞི་བྱེད་སློལ་མ་དགུ་སྟོར་མཛད་པ་བོ་འི་ཀམལ་ཤེས་  
ཞེས་པ་དམ་པ་རྒྱ་གར་བ་ལྟེ། པ་དམ་པ་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་མཚན་ཡིན་པར་གསུངས་  
པ་དང་། དེ་བཞིན་དུ་ཀོང་སྤལ་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོས་མཛད་པའི་ཤེས་བྱ་ཀུན་ཁུབ་  
ཙ་འབྲེལ་ལས།<sup>2</sup>

“གྲུབ་ཐོབ་ང་བཞི་མཁའ་སྤྱོད་སོ་དུག་གི།

བཙན་བརྟེས་དམ་པ་བོད་དུ་ལན་ལྔ་ཐེབས།

ནམ་ཐར་ཚུལ་མཐུན་འགྲོ་མང་བསྐྱལ་མཛད་པའི།

དམ་ཆོས་སྤྱག་བསྐྱལ་ཞི་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ། ཞེས་པ་ལྟེ། རྗེ་

1. བྱ་སྟོན་—‘ལ’ ༡༠༩༠ (སློ་ཐོ་—དེབ་གཟུགས་)

2. ཀོང་སྤལ་—‘ཆེ’ ༡༩༠ (སློ་ཐོ་—དེབ་ཐུང་)



བཙུན་ཀམལ་ཤྲིལ་ས་གྲུབ་ཐོབ་པོ་མོ་ལྟ་བུ་ཙུ་ཙ་བཞི་བཞེན། བཙུན་ལེན་སོགས་  
 ཐུན་མོང་གི་གྲུབ་པ་བརྟུན་བཞེས་པས་དགྲུང་ལོ་ལྟ་བུ་བརྟུན་དང་བདུན་ཙུ་བཞུགས།”  
 ཞེས་པ་དམ་པའི་མཚན་དུ་ཇི་བཙུན་ཀམལ་ཤྲིལ་ཞེས་གསུངས་པ་དང་། དེ་བཞིན་  
 དུ་འགོས་ལོ་རྒྱ་བ་བཞིན་ཏུ་དབལ་གྱིས་མཛད་པའི་དེབ་ཐེར་སྟོན་པོ་ལས།<sup>1</sup>  
 “བར་དུ་བྱུང་བའི་རྒྱུད་ཐུན་ལ། གྲུ་བ་དང་། རྩེ་དང་། ལྷུང་ལུགས་གསུམ་ལས།  
 གཉིས་པ་བཟང་ཡུལ་གྱི་དགོ་བཤེས་རྩེ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཡབ་སྲས་གཉིས་ལས། སྲས་  
 རྩེ་བ་གྲགས་པ་སྤངས་པའི་ཡོན་ཏན་དང་ལྷན་ཞིང་། སྤགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཡང་སྤུན་  
 སྲས་ཚོགས་པ་ཡོད་པ་ལ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་མ་མཇུག་པས་ཡོད་གདུངས་དེ།  
 གང་ན་བཞུགས་ཙུད་བཅད་པས། ཡེར་བ་ན་བཞུགས་པ་ཐོས་ཤིང་། ཅམ་  
 མཁའ་ནས་མཁའ་འགོ་མས་ཀྱང་ལུང་བསྟན་དེ། རིགས་ཀྱི་བྱ་ཇི་བཙུན་  
 ཀམལ་ཤྲི་ནི་སྟོམ་པ་གསུམ་ལྷན་གྱི་ནལ་འབྱོར་བ་ཡིན་དེ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་  
 དགོངས་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་མཐུན་པ། སྟོབ་དཔོན་འཕགས་པ་ཁྱུ་སྟུབ་ཡབ་  
 སྲས་ནས་བརྟུན་པའི་སྟུབ་བརྟུན་གྱི་གདམས་པ་བར་མ་ཆད་པ་ཡིན་པས། ཇི་  
 བཙུན་དེ་ལ་ཆོས་ཀྱིས་ཤིག།” ཅེས་བྱ་བའི་ལུང་བསྟན་བྱུང་བར་གསུངས་སོ།  
 དེས་ན་ལུང་བསྟན་གྱི་ཆོག་ཟིན་ལ་ཡང་པ་དམ་པའི་མཚན་ལ་ཇི་བཙུན་ཀམལ་  
 ཤྲི་གསུངས་པ་ནམས་དགོངས་པ་གཅིག་དུ་མཐུན་ཞིང་། དེ་ཅམ་དུ་མ་ཟད་  
 ཆོས་འབྱུང་ལོ་རྒྱས་ནམས་སུ་ཞི་བྱེད་སྟུ་ཕྱི་བར་གསུམ་ལས། སྤུ་མར་པ་དམ་  
 པས་ཁ་ཆེ་རྒྱན་གྲུ་ལ་ཞི་བྱེད་སྟོལ་མ་སྟོར་གསུམ་སོགས་གསུངས་པ་དང་།  
 དེ་གཉིས་ཀ་ལས་ཨོང་བོ་ལོ་ཙུ་བས་གསུན་པར་གསུངས་པ་དང་། གཞུང་དེ་

1. དགོས་པོ་རྒྱ་བ་— ༤༠༩ (སྟོ་པོ་—དེབ་གཞུགས་)



དག་གི་འགྱུར་བྱང་དུ་གྱུ་གར་གྱི་མཁན་པོ་རྣམས་ཀྱི་དང་། མོང་པོ་ལོ་ཙཱ་  
 བས་བསྐྱར་ཅེས་བཀོད་པ་དང་འབྲེལ་ཆེ་ཞིང་མཐུན་པར་སྤང་བ་དང་། དེ་བཞིན་  
 དུ་གྱུར་པ་བར་མའི་རྒྱུད་ཕྱན་གྱི་པ་མངོན་གྱིས་ལ་པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་གོང་  
 དུ་བཀོད་པའི་ཞི་བྱེད་སྒྲོལ་མ་དགུ་སྟེར་གྱི་གདམས་པ་གནང་ཞེས་ཤིན་དུ་གསལ་...  
 བར་བཀོད་འདུག་པས། ཆོས་འབྱུང་ལོ་རྒྱུས་པལ་ཆེ་བའི་གསུང་ཚུལ་ལ་གཞིགས་  
 ན་གཞུང་དེ་དག་གི་མཛད་པ་པོ་བསྟོམ་ཅི་མ་མཛད་པོ་འི་ཀམལ་ཤིལ་མིན་པར་.....  
 མངོན་ནོ།

གོང་གསལ་ཞི་བྱེད་ཀྱི་གཞུང་དེ་དག་གི་སྟོན་ཐམས་ཅད་མཐུན་པས་མཛད་  
 པའི་སྤྱར་ཐང་དཀར་ཆག་དུ། “དེ་ནམས་ཐམས་ཅད་རྩི་བཅུན་ཀམལ་ཤིས་མཛད་”  
 ཅེས་གསུངས་པ་བཞིན་གཞུང་དེ་ནམས་ཀྱི་མཆུག་དུ་མཛད་བྱང་དངོས་སུ་གསལ་...  
 མིན་ལ་མ་ལྟོས་པར་རྩི་བ་པོ་སྟོབ་དཔོན་གཅིག་ཡིན་པ་ནི་གཞུང་དེ་ནམས་ཀྱི་...  
 རྩི་བ་འགྲོས་དང་། ཆོག་སྟོར་སོགས་ལ་གཞིགས་ནའང་མཐུན་པར་འགྱུར་རོ།

པ་དམ་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཚན་གྱི་རྣམ་གྲངས་སུ་རྩི་བཅུན་ཀམལ་ཤི་དང་།  
 ‘ཀམལ་ཤིལ་’ཞེས་མཚན་རྩེར་མི་མཐུན་པ་གཉིས་འབྱུང་བ་ལས་གང་འཐད་མཐའ་  
 གཅིག་དུ་ཁ་ཚོན་བཅད་དཀར་ནའང་། འགོས་ལོ་རྒྱུ་བ་དང་། རྩི་བཅུན་  
 ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་གསུངས་ནམས་ཁྲངས་ཐུབ་ཆེ་བས་དེར་གསུངས་པ་ལྟར་...  
 འཐད་ཕྱོགས་སུ་བརྒྱུད་དགོས་པར་སྤང་ངོ་།



བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འདི་དེ་གསུང་ཚུལ་ལ་འབྲེལ་བ་དང་འབྲེལ་བ་ཤར་སོགས་  
 རི་ལྷ་བྱ་མཆིས་ཤིང་། དེ་ཡང་དབྱ་མའི་བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་ལ་རོང་ལྷོན་ཤེས་བྱ་  
 ཀྱན་རིག་གས་ཤུག་གི་ཀྱུ་མཆོན་གྱིས་མཛད་པའི་འབྲེལ་བ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པ་ཞིག་  
 ཡོད་པ་ནི། བཀ་ཆེན་ཤུག་མཆོག་ལྷན་གྱིས་མཛད་པའི་རོང་ལྷོན་གྱི་ནམ་ཐར་  
 དད་པའི་རོལ་མཚོ་ལས་༢། “སྤྱིར་དབྱ་མ་རང་རྒྱུད་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་དང་། རྒྱ་  
 བར་ཀམ་ལ་གྱི་ལའི་གསུང་རབ་ལ་ལྷ་དཔེ་བྱ་བ་དྲིན་མཛད་། བསྐྱོམ་བ་ཉམས་སུ་  
 ལེན་པའི་རིམ་བཤམ་པ་ཡང་བསྐྱོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་གྱི་ལུགས་དང་མཐུན་  
 བར་ཉམས་སུ་བཞེས་ཤིང་གཞན་ལ་འདོམས་པར་མཛད་། དེ་གསུམ་གྱི་ནམ་  
 བཤད་རྒྱས་པ་མཛད་པ་པོ་སྤྱོན་མ་བྱུང་ཡང་། རི་འདི་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་  
 དེ་ལྷ་བྱའི་ནམ་བཤད་ངོ་མཚར་ཅན་དེ་ནི་རི་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་གསུང་རབ་ནམས་  
 ཀྱི་ནང་ནས་རྒྱུད་བར་དུ་འཕགས་པ་ཞིག་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །  
 ཡང་བསྟན་དར་སྤྲུལ་རམ་གྱིས་མཛད་པའི་དབྱ་མ་སྤྲང་བའི་གཞུང་དོན་ནམས་  
 ཚོད་ལན་གྱི་སྒྲིལ་ནས་བསྟན་བཤམ་པ་དབྱ་མ་སྤྲང་བའི་བཞིན་ཐོ་ཞེས་པ་དང་། འཇམ་  
 དབྱངས་མཁུན་བཙུང་གསུང་འབུམ་ཆ་བར་བསྐྱོམ་རིམ་བར་པའི་ས་བཅད་ཞིག་  
 ཀྱང་མཆིས་སོ། །

དབྱ་མ་རྒྱན་གྱི་དཀའ་འབྲེལ་འདི་སྟོབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་གསུང་ཚུལ་ཡིན་མིན་  
 ལ་དྲོགས་གཞི་ཆེ་ལྟོ། དེ་ཡང་བཀའ་འབྲེལ་དེའི་བསྟན་དོན་དང་དབྱ་མ་སྤྲང་བ་

1. ཆོས་འབྱུང་པོ་ལྷན་མང་བོར་རོང་ལྷོན་སྤྱོད་པའི་མེད་པོ་འདི་ཉིད་ཞེས་ཀྱི་གསུངས་པ་དང་།

སྤྱོམ་རིམ་ལ་ཐུགས་ཁུག་པར་མོས་ཤིང་། མ་དམ་བ་མངས་རྒྱས་དང་སྟོབ་དཔོན་ཀམ་ལ་ཤེས་སྤྱོད་

སྤྱོད་པའི་གསུངས་སོ། 2. བོད་—མ་ ༣༠༤ (ལྷོ་པོ་—དེ་མ་)



གཉིས་མི་མཐུན་པར་གསུངས་ཏེ། རྗེ་བདག་ཅིང་ཆེན་པོ་འི་དབུ་མ་རྒྱན་གྱི་ཟིན་  
 གྱིས་ལས།༥ “དེས་ན་དཀར་འབྲེལ་ལས་སྤར་ལྷར་བཤད་པ་འདི་དབུ་མ་རྒྱང་  
 བ་དང་མི་མཐུན་ནོ། །དཀར་འབྲེལ་འདི་ཀམལ་གྱི་ལའི་ཡིན་པར་ཆོས་ཀྱི་བཤེས་  
 གཉིན་ཡང་བཞེད་པས། འདི་ནི་སློབ་དབོན་གྲགས་མ་རྒྱུ་གས་པའི་སྐབས་གཅིག་དུ་  
 མཛད་དམ་བདེ་ག་གོ།” ཞེས་དང་། ཡང་མཁས་གྲུབ་རྗེའི་རྒྱུ་རྩེ་སྤྱི་ནམ་ལས།༦  
 “སློབ་དབོན་ཞི་བ་འཆོས་དབུ་མ་རྒྱན་རང་འབྲེལ་དང་བཅས་པ་མཛད་ཅིང་།  
 དེའི་འབྲེལ་བཤད་སློབ་དབོན་ཀམལ་གྱི་ལས་མཛད་ཟེར་བ་ནི་རྒྱན་མ་ཡིན་ནོ།”  
 ཞེས་དང་། ལྷ་རྒྱུ་གྲུབ་མཐར་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།  
 ཞོ་གཉིས་པ། གསུང་རབ་ལ་དང་བ་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་བལྟན་བཅས་ཀྱི་བཞིན་  
 གྱུ་ཆེ་བ་མདོར་བསྡུས་པའི་སློན་མ་བལྟན་པ་ལ་བཞི་ཏེ། (༡) སྤྱིར་སློམ་གྱི་ནམ་  
 བཞག་དང་། (༢) གང་བསློམ་པར་བྱ་རྒྱུའི་ཆོས་ཀྱི་ནམ་གྲངས་བཤད་པ།  
 (༣) འདིར་བལྟན་བསློམ་གྱུ་འདི་གཙོ་བོ་ཞི་ལྷག་གི་ནམ་བཞག་བཤད་པ།  
 (༤) བསློམ་རིམ་གྱི་བཞིན་གྱུ་འདི་ཆེ་བ་མདོར་བསྡུས་ནས་བལྟན་པ་དངོས་སོ།  
དང་པོ་སྤྱིར་སློམ་གྱི་ནམ་བཞག་བལྟན་པ་ནི།

དེ་ཡང་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་དགོངས་འབྲེལ་དང་བཅས་པའི་བཞིན་གྱི་ཟེབ་  
 ཅིང་བསྐྱང་ལ་རྒྱ་ཆེ་བ་དེ་དག་ནི་ཐོས་བསམ་ཅམ་དང་། ཕྱིའི་གོ་རྒྱ་གཅིད་པ་  
 ཅམ་གྱི་ཆེད་དུ་མ་ཡིན་པར། ཐོས་བསམ་སློམ་གསུམ་གྱི་ཤེས་རབ་རིམ་གྱིས་  
 བསྐྱེད་པའི་སློན་མ་སློབ་པ་སྤྱིར་བ་དང་། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་དུ་

1. རྗེ་བ་སྤྱད་ཆ་ ༤༢༤ (བཟ་རྒྱན་—དེབ་)
2. མཁས་གྲུབ་ཉ་ ༤༩༩ (སྤྱི་ག་—དེབ་གཞུགས་)
3. གང་གཞིས་པ་ ༩༡༡ (སྤྱི་ག་—དེབ་གཞུགས་)



གསུང་པ་ཤ་སྟག་ཡིན་དེ། དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སྐབ་པ་ལ་གཞིལ་བ། སྐབ་  
པ་ལ་འབབ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་པའི་སྤྱིར་རོ།

འོན་འདྲིར་ཚུལ་དེ་ཇི་ལྟར་འཆད་པར་བྱེད་ཅེ་ན། སློབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་  
མཛད་པའི་བསྒྲམ་རིམ་བར་པ་ལས།<sup>1</sup> “འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་མཁུན་པ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱ་  
དང་རྒྱན་དེ་དག་གང་ཞེ་ན། སྒྲུལ་པ། བདག་ལྷ་བྱ་དཔུང་ལོང་དང་འབྲ་བས་དེ་  
དག་བསྟན་པར་མི་རྒྱས་མེད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་པར་  
ཇོགས་པར་སངས་རྒྱས་ནས་གདུལ་བྱ་ནམས་ལ་ཇི་སྐད་བཤད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་  
གིས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཉིད་ཀྱི་བཀའ་ཉིད་ཀྱིས་བཤད་དོ།” ཞེས་མཁུན་རབ་ནམ་  
དབྱེད་ཀྱི་དཔལ་ལ་མཐུ་སྤུལ་དུ་བྱིན་པ། ཚད་མེད་ཡོངས་གྲགས་ཀྱི་མཁས་པའི་  
དབང་བོ་དེས་ཀྱང་དེ་ལྟར་གསུངས་པར་མཛད་ན། ཟབ་རྒྱས་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་  
ལ་སྒྲུལ་སྤངས་ཡོན་ཏན་གྱིས་ཤིན་དུ་ཡོངས་ཤིང་། མོངས་པ་བས་ཀྱང་ཆེས་  
མོངས་པ་བདག་ལྷ་བྱས་ཚུལ་དེ་ཇི་ལྟར་བཞིན་བསྟན་མི་རྒྱས་པ་ལྟ་བུ་སྟོས། འོན་  
ཀྱང་རྒྱལ་བའི་བཀའ་དང་། དེའི་དགོངས་འགྲེལ་འཕགས་བོད་མཁས་པའི་གཞུང་  
ལྷགས་ཚད་ལྷན་ནམས་ཁྲངས་སུ་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོན་པ་བཤད་པར་བྱའོ།

(༡) ཐོས་བསམ་སྒྲོམ་གསུམ་ལ་རིམ་གྱིས་སློབ་དགོས་ཚུལ།

དེ་ཡང་བསྒྲམ་བྱ་ས་ལས་གྱི་ནམ་བཞག་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་བ་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་  
པ་ནམས་ཐོག་མར་ཐོས་བསམ་གྱིས་གདན་ལ་པལ་སྟེ་སྒྲོམ་པ་གནད་ཆེ་བས་ཐོག་...

1. ཐེ་—བསྟན་ (དབྱ་མ་ 'ཀེ' ༤༢)



མར་ཐོས་པ་གཡ་ཆེ་ལྟེ། དེ་ཡང་རི་རྒྱུད་དུ།

ཐོས་ཏུང་དཔུང་ཡང་སྒྲིམ་པའི་ཚུལ་མི་ཤེས།

དེ་མེད་དེས་གོ་ཅི་ཞིག་བསམ་པར་བྱ།

དེ་བས་ཐོས་ལ་བཙན་བྱ་དེ་རྒྱུ་ལས།

བསམ་བཞིན་བསྒྲིམས་ལས་ཤེས་རབ་ཡངས་པ་འབྱུང་།

ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དེ་བཞིན་དུ་མངོ་སྤེལ་བྱེད་ལས།

འདིན་དང་པོ་ཐོས་ལ་བཙན་ནས་ཚུལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་འབྱུང་།

ཚུལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་གོམས་ལས་ཡང་དག་དོན་ཡུལ་ཡི་ཤེས་འབྱུང་།

ཞེས་ཐོས་པའི་དོན་རྣམས་བསམ་བྱུང་གི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཚུལ་བཞིན་དུ་ཡིད་ལ་བྱས་

པ་ལས་ཡང་དག་པའི་དོན་མངོན་སུམ་དུ་དོགས་པའི་སྒྲིམ་བྱུང་འབྱུང་བར་གསུངས་

པའི་ཕྱིར་པོ། དེས་ན་གང་ཉིས་སུ་སྒྲུང་བྱུ་དེ་དང་པོར་གཞན་ལས་མཉན་ནས་གཞན་

སྟོབས་ཀྱིས་ངེས་པར་བྱེད། དེ་ནས་ཐོས་པའི་དོན་ད་རང་གིས་ལྷང་དང་རིང་བས་

ཚུལ་བཞིན་དུ་བསམས་དེ་རང་སྟོབས་ཀྱིས་ངེས་པར་བྱེད། དེ་ལྟར་ཐོས་བསམ་གྱིས་

ངེས་པར་བྱས་དེ། ཐེ་ཚོམ་དང་བྲམ་བ་ན་ཡང་དང་ཡང་དུ་འདིས་པར་བྱེད་པ་ལ་

སྒྲིམ་པ་ཞེས་བྱའོ། དེ་ལྟར་ཐོས་བསམ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཆོས་རྣམས་

ཀྱི་རང་དང་སྤྱིའི་མཚན་ཉིད་དང་། ཟབ་མོ་འི་ལྟ་བའི་གནད་ལ་སྒྲིམ་འདོགས་ཆོད་

ཅིང་ངེས་པ་རྙེད་པའི་དོན་དེ་ཉིད་སྒྲིམ་པས་རྒྱུད་ལ་སྦྱོར་ཞིང་ཉམས་སུ་སྒྲུང་བར་……

- 
1. བྱང་འཕྲིན་འདི་གཞུང་འགའ་ཞིག་དུ་‘མར་ཐོས་བསྒྲིམ་པ་ལས་’ཞེས་དང་། འགའ་ཞིག་དུ་  
‘སྒྲིམ་དབན་དཔུང་པོ་འི་གསུང་ལས་’ ཞེས་གསལ་ཡང་དངོས་དོན་གཞུང་གང་གི་ཆོག་ཡོན་ཆོན་  
ཞེས་ངེས་རྙེད་པ་བྱུང་བས་དཔྱད་པར་བྱའོ། 2. རྟེ་—བཙན (ཞེས་པ་ཙམ་‘ཐེ’ 2)



བྱ་དགོས་ཀྱི། སྒོམ་པ་དང་བྲལ་བའི་ཐོས་བསམ་ཇི་ལྟར་ཟབ་ཀྱང་ཉེན་མེད་ས་པའི་  
འཆིང་བ་ལས་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར་དེ། དཔེར་ན། ཉན་པ་གཏོར་སྟེག་སོགས་  
སྒྲན་དབྱུང་དང་། སྒྲན་སྒྲོར་ལ་ཇི་ལྟར་མཁས་ཀྱང་ཉན་གསོ་བའི་སྒྲན་ཡོངས་སུ་  
མ་སྒྲུད་ན་ནད་ཀྱི་ཆུག་རྩ་སེལ་མི་ཉུས་པ་བཞིན་ནོ།

### ༡) སྒོམ་དང་སྒོམ་བྱུང་གི་ཁྱད་པར།

དེ་ལ་སྒོམ་དང་སྒོམ་བྱུང་གཉིས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། དང་པོ་སྒོམ་  
གྱི་ངོ་བོ་ནི།<sup>1</sup> ཐོས་བསམ་གྱི་དོན་ལ་ཆད་མས་སྒོ་འདོགས་པཅད་དེ། དེས་  
པའི་དོན་ལ་དབྱུང་འཛུགས་ཅི་རིགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཡིད་དོན་དེ་ལས་གཞན་དུ་མི་གཡེང་  
བར་ཁ་ནད་དུ་སྟོགས་དེ། དོན་དེ་ཉིད་བཟན་དེ་ཡིད་ལ་འདྲིས་པར་བྱེད་པ་ལ་བྱའོ།  
དེ་ཡང་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས་<sup>2</sup> “དེ་ལྟར་ཐོས་བསམ་གྱིས་དེས་པར་བྱས་དེ།  
ཐེ་ཚོམ་དང་བྲལ་བ་ན་ཡང་དང་ཡང་དུ་འདྲིས་པར་བྱེད་པ་ལ་སྒོམ་པ་ཞེས་ཟེར་……  
བས།” ཞེས་གསུངས་སོ།

གཉིས་པ་སྒོམ་བྱུང་གི་ངོ་བོ་ནི། བསམ་བྱུང་གིས་དེས་པའི་དོན་ལ་དབྱུང་  
འཛུགས་ཅི་རིགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་ཅེ་གཅིག་དུ་དམིགས་དེ་གོམས་པ་ལས་བྱུང་བ་དེ་ཡིན་  
པའི་ཕྱིར་དེ། ལེགས་བཤད་གསེར་པུང་ལས་<sup>3</sup> “དེས་པ་རྒྱེད་པ་དེ་ཉིད་ཅེ་  
གཅིག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱིས་བསྒོམས་པ་ལས་བྱུང་བ་ནི་སྒོམ་བྱུང་གི་ཤེས་རབ་  
དུ་འདོད་པར་བྱའོ” ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

1. འཇམ་དབྱངས་བཞུགས་པའི་གསུངས་ཐོས་བསམ་སྒོམ་གསུམ་གྱི་ནམ་བཞུག་ལས་སོ།

(གསུང་ན་ ༤༩༢ ཐེ་ལེ་—དེ་པ་གཟུགས་) 2. ཇི་པ་ ༤༢ (བཟ་ལྟ་ན་—དེ་པ་)

3. ཇི་པ་ ༡༡ (བཟ་ལྟ་ན་—དེ་པ་)



(2) གློ་ལ་དབྱུང་གློ་དང་འཛོལ་གློ་གཉིས་འཕྲད་པའི་རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་གསུང་རབ་ཀྱི་དོན་ལ་དབྱུང་གྱིན་གློ་པ་དང་། མི་དབྱེད་པའི་  
འཛོལ་གློ་གཉིས་ཀ་དགོས་དེ། ཐོས་བསམ་གྱིས་གདན་ལ་ཕབ་པ་དེ་ལ་མི་  
དབྱེད་པར་འཛོལ་པ་དང་། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱུང་ནས་གློ་  
པ་གཉིས་ཀ་སྤང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གློ་ཞེས་པ་རྒྱ་རྒྱུང་ཞིག་ལ་མི་བརྟུང་དེ།  
དང་པ་གློ་པ་དང་། ཚད་མེད་བཞི་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་གློ་པ་དང་།  
མི་རྟག་པ་དང་རྒྱལ་བསྐལ་གློ་པ་ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་ཡང་དང་ཡང་དུ་དབྱུང་།  
ནས་སྦྱོང་དགོས་པ་ལ་གློ་དུ་གསུངས་པ་མཐའ་ལས་པ་ཞིག་སྤང་བའི་ཕྱིར་རོ། །

དེས་ན་ཐེག་པ་ཆེ་རྒྱུ་གི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་  
ཀྱིས་དབྱུང་ནས་སྦྱོང་བ་དང་། མི་དབྱེད་པར་དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་  
པ་གཉིས་ཀྱིས་བསྐྱབ་དགོས་པ་ཡིན་གྱི། དབྱུང་འཛོལ་ཕྱོགས་རེ་བས་བསྐྱབ་པ་  
མིན་ནོ། །དོན་དེ་ལ་དགོངས་ནས་ཇི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས། དག་སྦྱོར་གྱི་གནད་ཀྱི་  
དྲི་བ་སྟན་བསྐལ་ལྟག་བསམ་རབ་དཀར་ལས།<sup>1</sup> “གཞན་ཡང་གློ་ལ་དབྱུང་གློ་  
དང་འཛོལ་གློ་གཉིས་འོང་ངམ་མི་འོང་། མི་འོང་ན་རྒྱ་གར་བའི་ཚད་ལྡན་ནམས་  
ཀྱིས་གསུངས་པ་འདི་འགོག་གས། འོང་ན་གློ་ལ་དེ་གཉིས་སུ་འབྱེད་པའི་རྒྱ་  
མཚན་ཅི་ཡིན། ཡང་དབྱུང་གློ་གློ་ཡིན་ནས་ས་ཡིན། མ་ཡིན་ན་རྒྱ་གར་སེམས་  
པ་ནམས་ཀྱིས་གློ་དུ་གསུངས་འདུག་པ་དེ་ནོར་རམ།” ཞེས་གསུངས་ཞིང་།  
དོན་དེ་ཉིད་ཆ་ཁོ་དབོན་པོ་སེམས་ཆེན་ངག་དབང་གྲགས་པས་མཛད་པའི་དྲི་བ་……  
ལྟག་བསམ་རབ་དཀར་དེ་ཉིད་ཀྱི་ལྟ་གློ་དྲི་ལན་ལས།<sup>2</sup> “གློ་ལ་དབྱུང་གློ་

1 ཇི་ཁྱེད་ཐོར་བྱ་ ༡༤༩ (བཟ་ལྟར་དེ་བ་)

2 ཐོར་ཁྱེད་ ༡༧༤ (ཐོ་ཐོ་དེ་བ་)



འཛིག་སྒྲོམ་གཉིས་ངེས་པར་ཡོད་ལ། དང་པོ་སྒྲོམ་མཚན་ཉིད་པ་ཡིན་དེ། དེ་  
ལྟ་མཉན་ན་གྲུ་གར་བའི་མཁས་པས་དེ་སྒྲོམ་དུ་གསུངས་པ་དང་འགལ་བ་མ་ཟད།  
ལྷག་མཐོང་སྒྲོམ་མིན་པར་ཐལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །སྒྲོམ་ལ་དེ་གཉིས་སུ་འབྱེད་པའི་  
གྲུ་མཚན་ཡང་། ལྷོ་འཛིན་སྤངས་ཤུགས་དྲག་གཏོ་བོར་སྐྱབ་པ་དང་། དམིཌ་  
བའི་གསལ་སྤང་གཏོ་བོར་སྐྱབ་པའི་དབང་གིས་ཡིན་དེ། བཤེས་གཉིན་ལ་དད་པ་  
སྒྲོམ་པ་དང་། འཁོར་བའི་སྐྱག་བསྐྱེད་དང་། ལས་གྲུ་འབྲས་སེམས་པ་སོགས་  
ལ་སྒྲུ་མ་གཏོ་ཆེ། ཞི་གནས་ལྟ་བུའི་འཛིག་སྒྲོམ་ལ་སྤྱི་མ་གཏོ་བོར་དགོས་པའི་  
ཕྱིར་” ཞེས་གསུང་། དེ་བཞིན་དུ་པཎ་ཆེན་སྒོ་བཟང་ཆོས་རྒྱན་གྱིས་མཛད་པའི་  
ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་གྱི་བྲི་ལན་སྒོ་བཟང་བཞུད་པའི་སྒྲུ་དབྱངས་ལས་ཀྱང་།

དེས་ན་སྒྲོམ་ལ་དབྱེད་འཛིག་གཉིས། །

བྱེད་ཅིང་བྱེད་པའི་གྲུ་མཚན་ཡང་། །

ཐར་པ་འདོད་པས་ཞི་གནས་དང་།

ལྷག་མཐོང་ངེས་པར་བསྐྱབ་དགོས་ཕྱིར། ཁེས་སྒྲོམ་ལ་དབྱེད་

འཛིག་གཉིས་འཐད་པའི་སྐྱབ་བྱེད་གྲུ་མཚན་དང་བཅས་དེ་གསུངས་སོ། །

དེ་ཡང་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་འཛིག་སྒྲོམ་དུ་འདོད་པ་ནི། སྒྲོམ་གྱི་ངོས་འཛིན་ཅུལ་  
ཁུབ་ཅུང་བ་ཡིན་དེ། ལས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> “དེས་ན་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་འཛིག་  
སྒྲོམ་དུ་འདོད་པ་ནི། དཔེར་ན། བས་རྟོག་གཅིག་བརྒྱུད་ནས་འབྱུང་ཐམས་ཅད་  
འདི་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་དང་འདྲ་བ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །  
དེས་ན་དབྱེད་འཛིག་སྤྱོད་པའི་བས་ཆོསས་པར་མ་བྱས་པར་མཁས་པའི་དབང་པོ་

1. བོད་ལ་ ༥ (བོད་ལོག་—དཔེ་རིང་) 2. ཆེ་མ་ ༤ (བཀ་ལྷན་—དཔེ་གཞན་པ་)



ཀམ་ལ་གྱི་ལས་སྒྲིམ་རིམ་དུ་གསུངས་པ་བཞིན་དབྱེད་སྒྲིམ་དགོས་པ་ལ་དབྱེད་སྒྲིམ་...  
 དང་། འཛོལ་སྒྲིམ་དགོས་པ་ལ་འཛོལ་སྒྲིམ། དབྱེད་འཛོལ་སྒྲིམ་ལ་དགོས་པ་  
 ལ་དེ་བཞིན་དུ་སྒྲིམ་པའི་སྒྲིམ་ནས་དྲིང་ངེ་འཛོལ་སྒྲིམ་མེད་པ་བརྒྱུ་དགོས་སོ།

(=) དབྱེད་སྒྲིམ་དང་འཛོལ་སྒྲིམ་གྱི་ཁྱད་པར།

དབྱེད་སྒྲིམ་ནི་—དབྱེད་བྱའི་གཞི་གང་ཡིན་བསམ་བྱུང་གིས་ཐེ་ཚོམ་ཚད་པར་  
 བྱས་པ་དེ་ལ། འཕྲོ་ཆོད་ཀྱིས་བར་མ་ཚད་ཅིང་བྱིང་སྒྲུགས་ཀྱི་གཞན་དབང་དུ་མ་  
 སོང་བར་བྱན་ཤེས་ངར་ལྷན་གྱུན་དུ་བཞུགས་པའི་སྒྲིམ་གྱི་མཚན་རྣམས་སོ་སོར་...  
 རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདེ་ཤིང་དབྱེད་པའི་སྒྲིམ་ངས་ཤེས་ཡང་ཡང་འདྲན་...  
 བར་བྱེད་ཅིང་སྒྲིམ་པའོ། འཛོལ་སྒྲིམ་ནི་—དམིགས་དེན་ངས་ཟིན་པ་དེ་གཅིག་  
 ལྷ་ལ་འཕྲོ་ཆོད་ཀྱིས་བར་དུ་མ་ཚད་ཅིང་། བྱིང་སྒྲུགས་ཀྱི་གཞན་དབང་དུ་མ་སོང་  
 བར་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་པའོ། དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ཡང་སྒྲུན་ལྷ་སྒྲིམ་གྱིས་ལྷ་མཚན་  
 གྱིས་མཛད་པའི་སྒྲིམ་གཞན་པན་དོན་གཉེར་ལས།

བསམ་བྱུང་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྟོགས་པའི།

ཐེ་ཚོམ་བྲལ་བའི་དོན་ཉིད་ལ།

སྒྲར་ཡང་བདགས་ཤིང་དབྱེད་བྱས་ནས།

བདན་བར་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ལ།

དབྱེད་སྒྲིམ་ཞེས་བྱར་བཤད་པ་ཡིན།

མི་དབྱེད་ཅེ་གཅིག་འཛོལ་པ་ནི།

འཛོལ་སྒྲིམ་ཞེས་བྱར་མཁས་རྣམས་བཞེད། ཅེས་གསུངས་པའི་



ཕྱིར་རོ། །འདི་ལ་ཁ་ཅིག་གིས་དང་པོ་ནས་མི་དབྱེད་པ་མི་འདོད་ཀྱང་། ཐོས་  
 བསམ་གྱིས་གཏན་ལ་ཕབ་ཟིན་ནས་སྒྲོམ་པའི་ཆོ་དབྱེད་སྒྲོམ་མི་དགོས་སོ་སྒྲུམ་ན།  
 དེ་ལྟ་ན་མཐོང་ལས་དུ་བདག་མེད་པ་མངོན་སུམ་དུ་རྟོགས་པ་ཡིན་པས། དེ་ནས་  
 བདག་མེད་མཐོང་ཟིན་སྒྲོམ་པ་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །གལ་ཏེ་དེ་ནི་དགོས་  
 ཏེ། སྒྲོམ་སྤངས་ནམས་སྒྲོམ་པས་སྤོང་གི། མཐོང་བ་ཅམ་གྱིས་མི་སྤོང་ངོ་སྒྲུམ་ན།  
 འདིར་ཡང་མཚུངས་ཏེ། སྤར་ཐོས་བསམ་གྱིས་གཏན་ལ་ཕབ་དེ་ངེས་ཟིན་ཀྱང་།  
 བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདག་པ་ཤིང་དབྱེད་པའི་  
 སྒྲོ་ནས་སྒྲོམ་པར་མ་བྱས་ན། བསྒྲོམ་བྱའི་དོན་ལ་ངེས་ཤེས་གྲགས་དྲག་པ་  
 དང་། རྒྱུན་རིང་བ་དང་། རྣམ་པར་གསལ་བ་དང་བརྟན་པར་འགྱུར་བ་སོགས་  
 མི་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ།

### (༡) བྱེ་བྲག་དུ་དབྱེད་སྒྲོམ་འཐད་པའི་སྒྲུབ་བྱེད་བསྟན་པ།

དེ་ལ་དང་པོ་ཁྱང་གི་སྒྲུབ་བྱེད་ནི།— དེ་ཡང་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་སོ་  
 སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱེད་ནས་སྤོང་ཚལ་འདི་ལ་རྒྱལ་བའི་བཀའ་དང་།  
 དེའི་དགོངས་འགྲུལ་འཕགས་བོད་མཁས་པའི་གཞུང་ལུགས་ཆད་ལྡན་གྱི་ཁྱད་སྤངས་...  
 རི་ལྟར་ཡོད་ཅེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། འཕགས་པ་ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་བོའི་མདོ་ལས།

གལ་ཏེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་རྟོག་།

སོ་སོར་དེ་བདག་པ་གལ་ཏེ་བསྒྲོམ་པ་ནི། །

དེ་ཉིད་བྱ་ངན་འདས་ཐོབ་འབྲས་བྱའི་རྒྱ།



ལྷ་གཞན་གང་ཡིན་དེས་ནི་ཞི་མི་འགྱུར། །ཞེས་བདག་མེད་པའི་  
 དོན་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདག་ས་ཤིང་དབྱུང་བའི་སྒྲོ་ནས་སྒྲོས་.....  
 ན་ཐོབ་བྱའི་འབྲས་བྱ་ཐུང་འདས་ཐོབ་བྱས་ཀྱི། ལྷ་གཞན་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་པར་  
 བསྐྱེད་སྤྱོད་སོ།།

འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལས་༥། “དེ་ལྟར་དྲིང་ངེ་འཛིན་  
 གྱི་སྒྲོད་ལྷ་གཞན་སྒྲོན་དེ་དག་ལ་ཤེས་བྱའི་དོན་དེ་ནས་བར་འབྱེད་པ་དང་།  
 རབ་དྲུ་ནས་བར་འབྱེད་པ་དང་། ཡོངས་སྤྱོད་ཀྱི་པ་དང་། ཡོངས་སྤྱོད་པ་  
 དང་། བཟོད་པ་དང་། འདོད་པ་དང་། བྱེད་པ་འབྱེད་པ་དང་། ལྷ་བ་  
 དང་རྟོག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལྷ་གཞན་མཐོང་ཞེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དཔའ་ལྷ་གཞན་མཐོང་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་ཇི་ལྟ་ཇི་སྟེད་ཀྱི་ཆོས་ནམས་ཀྱི་  
 བཞུགས་སྐྱོད་དེ་དག་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རབ་དྲུ་ནས་བར་འབྱེད་  
 པ་དང་། བྱེད་པ་འབྱེད་པར་བྱེད་པ་ལ་ལྷ་གཞན་མཐོང་དུ་བསྐྱེད་སྤྱོད་པས་སོ། །དེ་  
 བཞིན་དུ་ཇི་བཙན་བྱམས་པའི་མངོན་རྟོགས་རྒྱན་ལས་༥།

ངེས་འབྱེད་ཡན་ལག་དང་མཐོང་བའི། །

ལས་དང་སྒྲོས་པའི་ལས་ཉིད་ལ། །

ཡང་དང་ཡང་དུ་སེམས་པ་དང་། །

འཇམ་དང་ངེས་རྟོག་སྒྲོས་པའི་ལས། །ཞེས་བསྐྱེད་སྤྱོད་ཞེང་།

ཇི་ལྟ་ལས་རིས་ཆེན་མོར་འཕྲུང་དེ་དྲངས་མ་ཐག་དུ་འདི་ལྟར་བསྐྱེད་སྤྱོད་ཏེ། “ཐོག་

1. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་ 'ཅ' 25) 2. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་ལྷ་ 'ཀ' 2)

3. ཇི་- 'བ' 28 (བཀའ་ལྷ་-དེ་བ་)



ཆེན་འཕགས་པའི་སྒྲོམ་ལས་ཡིན་པའི་ཡང་ཡང་སེམས་པ་དང་། འཇལ་བ་དང་།  
ངེས་པར་དྲི་བ་ཡོད་པར་གསུངས་པ་ལ། དབྱུང་ནས་སྤང་བ་དང་སྒྲོམ་གཉིས་  
འགལ་བར་འདོད་པ་ནི་བཞུགས་ཀྱི་གནས་སོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །

རེན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བས་མཛད་པའི་ཤེར་ཕྱིན་མན་ངག་ལས།<sup>1</sup> “ཇི་  
སྤྱིད་གཟུགས་ཀྱི་ཁམས་ནས་ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་བར་ལ་མང་དུ་རྣམ་པར་དབྱེ་བར་བྱ།  
ཡོངས་སུ་རྣམ་པར་བརྟག་པར་བྱ། ཡོངས་སུ་དབྱོད་པའི་ཡིད་ཀྱིས་ལྷག་མཐོང་  
ཇོགས་པར་བྱའོ།” །ཞེས་དང་། མདོ་སྤྱི་རྒྱན་ལས།<sup>2</sup>

ཡང་དག་གནས་པ་ལ་བརྟེན་ནས། །

སེམས་ལ་སེམས་ནི་འཇོག་ཕྱིར་དང་། །

ཆོས་རབ་རྣམ་པར་འབྱེད་པའི་ཕྱིར། །

ཞི་གནས་དང་ནི་ལྷག་མཐོང་ཡིན། །

ཞེས་ཆོས་རབ་དུ་རྣམ་  
པར་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ལ་ལྷག་མཐོང་དུ་གསུངས་སོ། །དུས་འཁོར་འགྲེལ་

ཆེན་འི་མེད་འདྲ་ལས་<sup>3</sup> ཀྱང་། “དེའི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་བརྟག་པ་དང་བྲལ་བ་འདི་

ནི་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་དུ་མི་འགྱུར་དེ། བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་ནི་

ཐོག་མར་དགེ་བ་བར་དུ་དགེ་བ་ཐ་མར་དགེ་བའོ།” །ཞེས་དང་། འཕགས་

པ་དགའ་བོ་མངལ་ན་གནས་པར་བསྟན་པའི་མདོ་ལས།<sup>4</sup> “འདི་སྐད་དུ། དགེ་

སྤྱོད་གྲོ་ཏ་མ་ནི་བདག་གི་སྟོན་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནི་ཞེས་མ་ཟེར་བར། ངས་མངོན་

པར་ཇོགས་པར་སངས་རྒྱས་པའི་ཆོས་གང་ཡིན་པ་དེ་གཅིག་གི་ཕྱི་དབུན་པར་སང་...

1. ཐཱ་ཤཱ་འཕྲུག་(སེམས་ཅམ་ ‘དེ’ ༡༣༢) 2. ཐཱ་ཤཱ་འཕྲུག་(སེམས་ཅམ་ ‘ཐོ’ ༣༡)

3. ཐཱ་ཤཱ་འཕྲུག་(ཐཱ་ཤཱ་འཕྲུག་ ‘ཐོ’ ༤༠༤) 4. ཐཱ་ཤཱ་འཕྲུག་(དཀོན་པ་ཕྱི་གས་ ‘གྲ’ ༢༢༦)



ཡི་ཡིད་ལ་བསམས་དེ། འཇལ་བར་གྱིས་ཤིག། སོ་སོར་དྲིགས་ཤིག། །  
 དྲིག་བར་མང་དུ་སྒྲོམས་ཤིག། །སེམས་ཅེ་གཅིག་དུ་ཆོས་རྣམས་སོ་སོར་བདར་དེ།  
 ཆོས་དེ་དག་ལས་སྒྲོམ་བའི་འདུ་ཤེས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་བར་བྱས་དེ། ཡང་  
 དག་བའི་དྲན་བ་ལ་གནས་ནས་བདག་ཉིད་ཀྱི་སྒྲིང་བྱས་ཤིག། བདག་ཉིད་ཀྱི་  
 གནས་དང་སྦྱབས་བྱས་ཤིག།” ཞེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་  
 དག་སྒྲིང་དག་གས་མཁས་རྣམས་ཀྱིས། །  
 བསྐྱེད་པས་བཅད་བདར་བའི་གསེར་བཞིན་དུ། །  
 ལེགས་བར་བདགས་ལ་ང་ཡི་བཀའ། །  
 སྒྲུང་བར་བྱ་ཡི་གུས་ཕྱིར་མེན། ཞེས་གང་ཟག་ལ་མི་དྲོན་བར་

1. དེང་དུས་ཀྱི་མཁས་པ་མང་པོས་ཁྱང་ལྟ་མཐོ་ཆོག་མ་ཡིན་ཞིང་བརྟན་བཅོས་ཞིག་གི་ཆོག་ཡོན་  
 བར་དྲིགས་ཀྱང་། རྒྱུ་ལྟར་འགྲེལ་ཆེན་མེད་འོད་ (ཁྱུང་ལྷོ་ ༩༠༩) དང་། འཇགས་པ་  
 ལྷན་ཡེ་ཤེས་རྒྱུང་པོ་ཀྱན་ལས་བདུན་པ་ (དབུ་མ་ཚུ་ ༢༠) དེའི་བཤད་སྟུང་སྒྲོམ་དབྱེད་ཐང་  
 རྩལ་བཟང་པོས་མཛད་པ་ (དབུ་མ་ཚུ་ ༩༩) མཁན་ཆེན་ཞེ་བ་འཆོའི་ཆོད་མའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་  
 བསྐྱེད་པ་ (ཆོད་མ་ཟེ་ ༡༣༠) དེའི་དཀའ་འགྲེལ་སྒྲོམ་དབྱེད་ཀམ་ལུ་ལས་མཛད་པ་ (ཆོད་མ་  
 'འེ' ༣༢༣) ཡང་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་དྲིགས་པའི་ཐོག་པའི་ཕྱགས་སྒྲུ་མ་མཛད་པའི་བསྐྱེད་པ་  
 (ཆོད་མ་ལྷོ་ ༩༢) བཅས་སུ་ཁྱང་ལྟ་མཐོ་ཆོག་གྲུང་གི་དྲུག་སྟུང་ནས་རྒྱུང་པ་དང་། དེ་  
 དག་གི་ཐོད་ཀྱི་འགྲེལ་པ་དང་། ཐོད་ཀྱི་ཁྱང་ལྟ་མཛད་པ་བཅས་ཆོང་མར་མཐོ་ཆོག་ཡོན་  
 ཤག་གིས་རྒྱུང་པ་འདུག་པ་མ་ཟད། ལྷན་ཡེ་སྒྲུང་དུ་ཡོད་པའང་མཐོ་ཆོག་དུ་འདོད་པར་སྤང་བས།  
 བརྟན་བཅོས་ཀྱི་ཆོག་ཡོན་པའི་དྲིགས་གཞི་རྩ་བ་ནས་མེད། འོན་ཀྱང་མཐོ་ཆོག་གི་ཆོག་ཡོན་པ་  
 གང་ལྟར་ཁྱེད་ཀྱི་ཁྱང་ལྟ་མཛད་པ་དུ་འདུག་ལ་ཁ་མེད་མེད་ཀྱང་། ལྷོ་སྒྲིང་སངས་རྒྱལ་གྱི་  
 མཆོའི་བུ་སྒྲོན་པོར་ (པོད་ཀྱི་ ༥ དེ་བ་གཟུགས་) “མཐོ་སྒྲོན་པོ་མཐོ་པོ་ལས་” ཞེས་  
 རྒྱུང་པ་འདུག་པ་བཀའ་འགྲུང་སྒྲེ་དགེ་དཔལ་མར་“རྒྱན་སྒྲུག་པོ་མཐོ་པོ་པའི་མཐོ་” ཞེས་པ་ཞིག་  
 བཞུགས་པ་དེར་ནི་ཁྱང་ཆོག་འདོད་མེད་ཅེང་། དེ་མཉམ་པའི་འགྲུང་གི་མཐོ་ཆོག་ཀྱང་ཡང་མ་རྟོག་  
 བས་སྒྲུང་རྟོག་ཆོག་ལས་ཁ་འགྲོད་ཤིང་ས།



ཆོས་ལ་དོན་བའི་སྒོ་ནས་བཅོས་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ལེགས་བར་གསུངས་པའི་ཆོས་...  
ལ་སོ་སོར་དོག་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་སྒོས་བས་ཉམས་སྲུ་  
ལེན་དགོས་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་གསུངས་སོ། །

དོན་དེ་ནི་འཕགས་པ་གོ་ཆའི་བཀོད་པ་བསྟན་པ་ལས།<sup>1</sup>

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་སྒོ་ལྷན་དག །

ཐམས་ཅད་ཆོས་ནི་རབ་བདགས་ན། །

སྒྲེ་ཞིང་ཞི་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར། །

གསལ་བར་མཐོང་ནས་གཞིལ་བར་འགྱུར། ། ཞེས་དང་། ཡང་  
དེ་ཉིད་ལས།<sup>2</sup> “ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་སོ་སོར་བདགས་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལྟས་  
གསལ་བར་གྱུར་བས། འོད་ཟེར་ཆེན་པོ་བཀྱེན་སྒྲུ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་བར་  
ཐོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ལ་རབ་ཏུ་གཞིལ་བར་བྱེད་དོ།” ཞེས་གནས་ལུགས་ཀྱི་  
དོན་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་སོ་སོར་བདགས་ནས་ཡང་དག་བར་ཐོགས་པའི་...  
བྱང་ཆུབ་ལ་གཞིལ་དགོས་པར་གསུངས་སོ། །

དེས་ན་གཞུང་དེ་དག་གི་བསྟན་དོན་གཙོ་བོ་ནི། སོ་སོར་དོག་བའི་  
ཤེས་རབ་དོར་ནས་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ཟབ་མོ་འི་དོན་སྒོས་བར་འདོད་པ་རྒྱ་  
ནག་མཁན་པོ་འི་ལྟགས་འགོག་པ་ལ་དམིགས་སྤྱོད་པའི་དགག་པ་གནད་ཆེ་.....  
ཤོས་སྲུ་སྒྲུང་ངོ་། །དེ་ལྟར་ཡིན་པ་རྒྱ་མཚན་གང་ལས་ཤེས་ཞེ་ན། དེ་དག་གི་  
འདོད་ཚུལ་གྱི་བྱང་བ་ཆོས་འབྱུང་ཡོ་རྒྱས་ནམས་སྲུ་གསལ་བ་བཞིན་རྒྱ་ནག་གི་...  
མཁན་པོ་ཏུ་ཤང་གིས། མདོ་སྤེ་དགོངས་འབྱུང་ཏུ་སྒྲུག་མཐོང་སོ་སོར་དོག་བའི་

1. ཐུ་-བཀའ་ (དཀོན་བསྟེན་པ་ལ་ ༩༩) 2. ཐུ་-བཀའ་ (དཀོན་བསྟེན་པ་ལ་ ༩༩)



ཤེས་རབ་ལ་བཤད་པ་དེ་ཉིད་རང་གི་རྩ་བའི་བྱུང་མཐུན་དང་ཆེས་མི་མཐུན་པར་...  
 མཐོང་ནས། མདོ་སྡེ་དགོངས་འགྲེལ་དོག་པས་བྲིལ་ནས་འདི་ནམས་བཀའ་མིན་  
 བར་འདུག་ཅེས་ཟེར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་འདི་ནི་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས། །གོང་  
 ཏུ་བཀོད་པའི་དགོངས་འགྲེལ་གྱི་ལུང་དེ་བྲངས་མ་ཐག་ཏུ་འདི་སྐད་ཅེས་གསུངས་  
 ཏེ། “མདོ་འདིས་ལྷག་མཐོང་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ལ་བསྟོན་ས་མེད་པར་  
 ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་བཤད་པ་འདི་མཐོང་ནས། རྒྱ་ནག་གི་མཁན་པོ་ཏུ་ཤང་  
 གིས་འདི་མདོ་སྡེ་ཨེ་ཡིན་མི་ཤེས་ཞེས་སྒྲིམ་ནས་ཀང་བས་བྲིལ་ཞེས་གྲུ་དེ།  
 དེས་ནི་དོག་པ་གང་ཡིན་ཐམས་ཅད་མཆན་འཛིན་ཏུ་བརྒྱུད་ནས་སོ་སོར་དོག་པའི་  
 ཤེས་རབ་དོར་དེ། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ཟབ་མོ་དེ་དོན་སྒྲིམ་པར་འདོད་  
 པ་དང་མ་མཐུན་པས་དེ་ལྟར་བྱས་པའོ།” །ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །  
 དབྱུང་སྒྲིམ་གྱི་ཚལ་ལྷགས་འདི་ནི། ཞི་གནས་མ་བྱུང་བའི་སྔོན་ཏུ་སྦྱོང་  
 དགོས་པར་མ་ཟད། བསམ་གཏན་གྱི་འོག་ཤེས་རབ་ཀྱི་སྐབས་སུ་ལྟ་བའི་དབྱུང་  
 པ་ནམས་གསུངས་པས། དེའི་རིམ་པའི་གནད་ཀྱིས་བསམ་གཏན་གྱི་ངོ་བོ་ཞི་  
 གནས་བསྐྱབས་པའི་ཇེས་སུ་ཡང་། བདག་མེད་པ་གཉིས་ཀྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་དོག་  
 པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱུང་ནས་སྦྱོང་དགོས་པ་ཡིན་དེ། སྤྱོད་དཔོན་ལེགས་ལྷན་  
 འབྱེད་ཀྱི་དབྱུང་མ་སྦྱོང་པོ་ལས།<sup>2</sup>

སྒྲོ་གྲོས་མཉམ་བཞག་འོག་ཏུ་ནི།

ཐ་སྙད་སྒྲོ་ནས་གཟུང་བྱ་ཡི།

ཆོས་ནམས་དངོས་པོ་འདི་དག་ལ།

1. ཇི་“བ་སྐད་ཆ” 3 (བཏ་ལྷན་-དེབ་) 2. ཐེ་-བཏན་(དབྱ་མ་ཇ་ 6 )



ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་འདི་ལྟར་བདག་། ཅེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །  
 དེ་བཞིན་དུ་ཆེད་ལས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> “སྟོན་འཇུག་ལས་ཀྱང་ཞི་གནས་  
 བསམ་གཏན་ལེན་འབྱུང་བ་བཞིན་བསྐྱབས་ནས། དེ་ནས་ཤེས་རབ་སྒྲོམ་བ་  
 ན་རིགས་པའི་དབྱེད་བས་སྒྲོམ་པར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེས་ན་མར་སྟོན་  
 བ་མ་གཉིས་ཀྱི་རིམ་བ་དང་། བསྐྱབ་བ་སྟོན་གཉིས་ཀྱི་རིམ་བ་ཐམས་ཅད་དྲིང་  
 རེ་འཛིན་སྟོན་དུ་བསྐྱབས་ནས་ཤེས་རབ་བསྒྲོམ་པའི་རིམ་བ་ཡིན་ལ། ཤེས་རབ་  
 དེའི་བསྒྲོམ་ཚུལ་ལ་ཇི་ལྟ་བ་དང་། ཇི་སྟེད་བ་ལ་དབྱེད་པའི་སྟོན་གསུངས་པ་  
 ཐམས་ཅད་བསྒྲོམ་པའི་རིམ་བ་ཡིན་པས་ལོག་བར་བདག་པར་མི་བྱའོ།” །ཞེས་  
 གསུངས་པས་སོ། །

མདོར་ན་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་མཐའ་དག་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་གཞིལ་ཞིང་དེ་  
 བཞིན་ཉིད་ལ་བབས་བ་ཤ་སྟག་ཡིན་པས། ཞི་གནས་ཙམ་གྱིས་མི་ཆོག་བར་དེ་  
 ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་རོན་ལ་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནམ་པར་དབྱེད་དེ་སྒྲོམ་.....  
 དགོས་བ་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་སྟོབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྒྲོམ་རིམ་བར་བ་ལས།<sup>2</sup>  
 “བཅོས་ལྷན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཐམས་ཅད་ནི་ལེགས་པར་གསུངས་བ་སྟེ། མངོན་  
 སུམ་མས་བརྒྱད་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་གསལ་བར་བྱེད་བ་དང་། དེ་  
 ཁོ་ན་ལ་གཞིལ་བ་ཉིད་དོ། །དེ་ཁོ་ན་ཤེས་ན་སྤང་བ་བྱུང་བས་སུན་བ་བསལ་བ་  
 བཞིན་དུ་ལྟ་བའི་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བར་འགྱུར་རོ། །ཞི་གནས་ཙམ་གྱིས་  
 ནི་ཡེ་ཤེས་དག་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་། སྒྲིབ་པའི་སུན་བ་ཡང་སེལ་བར་མི་འགྱུར་གྱི།  
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་དེ་ཁོ་ན་ལྟར་བར་བསྒྲོམས་ན་ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པར་འགྱུར།

1. ཇི་ལྟ་སྟེད་ཆ་ ༥༤ (བཟ་སྟོན་-དེབ་) 2. ཇི་ལྟ་སྟེད་ (དཔ་མ་ཀོ་ ༤༤)



ཤེས་རབ་ཁོ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པར་འགྱུར། ཤེས་རབ་ཁོ་ནས་སྒྲིབ་པ་ཡང་  
 དག་པར་སྤོང་བར་འགྱུར་དེ། དེ་ལྟ་བུས་ན་བདག་གིས་ཞི་གནས་ལ་གནས་དེ།  
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཡོངས་སུ་བཅལ་བར་བྱའི། ཞི་གན་སེམས་གྱིས་ནི་ཆོག་  
 བར་འཛིན་པར་མི་བྱའོ།” །ཞེས་དང་། ཡང་བསྒྲོམ་རིམ་དང་པོ་ལས་  
 ཀྱང་།<sup>1</sup> “དེ་ལྟར་དཔགས་པ་དེ་ལ་སེམས་བདུན་པར་བྱས་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནམ་  
 བར་དབྱེད་པར་བྱ་སྟེ་འདི་ལྟར་ཤེས་པའི་སྤང་བ་བྱུང་བས་ཀྱན་དུ་སྤོངས་པའི་ས་  
 བོན་ཤིན་དུ་སྤོང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་སྟེ་གསུམ་ཅན་ནམས་ཀྱི་བཞིན་  
 དུ་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཅམ་གྱིས་ཉན་མོངས་པ་སྤོང་བར་མི་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་དང་།  
 ཡང་བསྒྲོམ་རིམ་བར་པ་ལས།<sup>2</sup> “གང་ཞིག་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དངོས་པོ་འདི་ལོ་ཉིད་  
 སོ་སོར་བདགས་ནས་མི་སྒྲོམ་གྱི། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤོང་བ་ཅམ་འབའ་  
 ཞིག་སྒྲོམ་པར་བྱེད་པ་དེའི་ནམ་པར་རྟོག་པ་ནས་ཡང་མི་སྒྲོག་ཅིང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་  
 པ་ཉིད་རྟོགས་པར་ཡང་མི་འགྱུར་དེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་སྤང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་  
 ལྟར་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཉིད་ལས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཤེས་  
 པའི་མེ་བྱུང་ན་གཙུབ་ཤིང་གཙུབས་པའི་མེ་བཞིན་དུ་རྟོག་པའི་ཤིང་བསྟེན་གོ་ཞེས་  
 བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་བསྩལ་དོ།” །ཞེས་ཤིན་དུ་གསལ་ཞིང་ཟབ་པའི་  
 གསུང་ཚུལ་མད་དུ་བྱུང་བ་འདི་དག་ལ་ངས་བ་དྲང་བར་བྱའོ།

གཉིས་པ་རིགས་པའི་སྒྲུབ་བྱེད་ནི་— དེ་ཡང་ཤེས་བྱའི་ནམ་བཞག་གི་ཁྱོན་  
 སྤྱི་དང་། ལྟག་པར་ཟབ་ཅིང་སྤྲ་ལ་གདིང་དཔོག་པར་དཀའ་བའི་ནང་དོན་རིག་  
 པའི་ཆོས་ཚུལ་ལ་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱི་འཇུག་པ་ཐོགས་པ་མེད་པར་བྱེད་པ་ལ་དེ་དག་གི་

1. ལྟེ་—བཟུན་ (དཔྱ་མ་ཀེ་ 32 ) 2. ལྟེ་—བཟུན་ (དཔྱ་མ་ཀེ་ 36 )



ཚུལ་རྟོགས་དགོས་ཤིང་། དེ་རྟོགས་པ་ལ་རིགས་པ་ཡང་དག་གི་ལམ་ནས་བདེ་  
 ཤིང་དབྱེད་པར་བྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་བསྐྱེད་པ་ལ་སློབ་དགོས་སོ། །ཚུལ་དེ་  
 ལས་ཐོག་དེ་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པར་སྒྲིངས་གཉིད་ཀྱི་གཞན་དབང་ཁོ་ནས་དུས་  
 འདུག་པར་བྱེད་པ་ནི། སློན་ཞིང་གཏི་ཐུག་པ་དུད་འགྲོ་འི་ངང་ཚུལ་ལས་ཁྱད་  
 བར་འབྱེད་བྱེད་ཀྱི་ཤེས་རིག་རབ་དུ་བྱ་བ་དང་། ལེགས་ཉེས་སྤང་དོར་གྱི་  
 གནས་ནས་མཆོད་པའི་འབྱེད་པའི་ནམ་དབྱེད་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱི་གཤམ་ཅུལ་དང་ཐུན་པའི་  
 དགོས་པ་ཡོངས་སུ་སྤོར་བ་ཡིན་ནོ། །

དེས་ན་དེ་མ་མེད་པའི་རིགས་པས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་སྒྲོམ་པའི་ལམ་  
 སྤལ་འདི་ནི་ཤིན་དུ་གཅེས་པའི་གནས་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་ཚད་མའི་གཞུང་ལུགས་  
 ཀྱི་ཉིན་བྱེད་ཆེན་པོ་ཕྱོགས་སྤང་ཡབ་སྐས་སོགས་ཀྱིས་ཕྱི་ནང་གི་གུལ་མཐའ་བྱ་  
 མཚེ་ལྟ་བུའི་གནས་ལ་བདགས་ཤིང་དབྱེད་པར་བྱེད་པའི་རིགས་པ་ཡང་དག་གི་  
 ལམ་པོ་ཆེ་ལ་བརྟེན་ནས། གཞན་ལུགས་མི་འཐད་པ་དང་། རང་ལུགས་འཐད་  
 ཐུན་དུ་བསྐྱེད་པའི་སྐྱེ་བྱེད་ཚད་མ་ལ་ཚོས་མཐུན་གྱི་གྲོལ་བས་ནས་ཡང་བཞི་.....  
 བར་མི་ཉུས་པའི་རིགས་པའི་སྤྱི་ཆེན་འཇིག་རྟེན་གསུམ་ན་རབ་དུ་བསྐྱེད་པར་  
 མཛད་ཅིང་། ཐུག་པར་དུ་ཟབ་དོན་གྱི་ཚུལ་ལ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་སྐྱེ་བའོ་  
 སྐས་ཀྱི་དབྱེད་པ་རིགས་ཚོགས་སོགས་སུ་ཞིབ་ཅིང་སྤོར་བའི་རིགས་པའི་ནམ་གངས་  
 མཐའ་ལས་པའི་སྤྱི་ནས་ལན་གཅིག་མ་ཡིན་པར་ཡང་དང་ཡང་དུ་དབྱེད་ཅིང་གཏན་  
 ལ་པམ་དེ། འདོམས་པར་མཛད་པའི་ཕྱིར་རོ། །

སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་སྒྲོང་པའི་ངང་ཚུལ་  
 དེ་ལས་ཐོག་དེ་ཆོས་གང་ལའང་འདི་ཡིན་འདི་མིན་སོགས་གང་ཡང་ངོས་བརྒྱུང་བུ་



ས་མེད་པར། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་བྱས་མེད་ཀྱི་ངང་དུ་སྡོད་པ་ཁོ་ནས་ཅི་ཡང་མི་མཆེན་  
 པ་མེད་པའི་ཀྱན་མཆེན་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བ་ནི་གནས་མ་ཡིན་ནོ། །དོན་དེ་ལ་  
 དགོངས་དེ་མཁས་གྲུབ་སྤྱོད་པའི་ཉི་མའི་སྒོམ་གསུམ་གྱི་ནམ་བཞག་ཐུབ་བཞུན་བྱི་...  
 དོར་ལས།<sup>1</sup> “གང་ཡང་ཡིད་ལ་མ་བྱས་པར་བསྐྱད་པས་གང་ཡང་མི་མཆེན་པ་  
 མེད་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་རྒྱུད་ལ་སྦྱེ་འོང་ན། མི་མཐུན་པའི་རྒྱ་ལས་མི་  
 མཐུན་པའི་འབྲས་བུ་འབྱུང་བས་མཚང་དེ་ལས་ཆེ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད།” ཅེས་དང་།  
 དེ་བཞིན་དུ་རྩི་བདག་ཉིད་ཆོན་པོ་འདི་དྲི་བ་སྒྲུན་སྤྱོད་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་ལས།<sup>2</sup>  
 “གང་ཡང་ཡིད་ལ་མ་བྱས་པར་ཉེད་དེ་བསྐྱད་པ་རང་གིས་དུས་གསུམ་ཅིག་ཅར་...  
 དུ་མཆེན་པའི་ཀྱན་མཆེན་ཐོབ་འོང་ན་ཡིགས་ཀྱི། །ཁོ་བོས་ནི་དེ་ལྟའི་སྒོམ་དེ་ལྟ་  
 ཤང་གི་ལུགས་ལས་ཁྱད་པར་གདན་ནས་མ་བྱེད་དོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ།

དོན་དེ་ནི་སྤྱན་རྒྱ་སྒོ་གྲོས་རྒྱལ་མཆོན་གྱི་ཐེག་ཆེན་སྒོ་སྤྱོད་གི་ལྷན་ཐབས་...  
 མན་ངག་རབ་གསལ་ལས།<sup>3</sup>

འཛོམས་སྒོམ་ཙམ་ལ་ཐོས་པ་ཡི། །

དགོས་པ་མེད་པ་ཁྱོད་བདེན་ཡང་། །

འཛོམས་སྒོམ་ཙམ་གྱིས་གྲོལ་བྱུར་ན། །

སྒོམ་ཆེན་འཕྱི་བའང་གྲོལ་འགྱུར་ཞིང་། །

འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སེམས་ཅན་དང་། །

གཞུགས་མེད་ཁམས་པའི་སེམས་ཅན་ཀྱན། །

1. མཁས་'ཉ' ༤༢༠ (ཐུ་ཤེ-དཔེ་གཞུགས་) 2. རྩི་'ཁ'ཐོད་བྱ' ༡༤༤ (བཀྲ་སྤྱན་-དེབ་)

3. སྤྱན་རྒྱ་'ཀ' ༣༤༡ (ཐུ་ཤེ-དཔེ་གཞུགས་)



གྲོལ་བར་རིགས་ཀྱང་མི་གྲོལ་བས། །

གྲོལ་བའི་ཐར་བ་ཐོབ་བ་ལ། །

དབྱུང་སྒྲོམ་ངེས་པར་དགོས་མཐོང་ཞིང་། །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་གཞུང་།  
དེ་དག་གིས་ཟབ་དོན་གྱི་གནས་ལ་སོ་སོར་དོག་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་དབྱུང་བ་དོར་.....  
ནས་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ཟབ་མོའི་དོན་སྒྲོམ་པར་འདོད་པ་རྒྱ་ནག་ཏུ་ཤང་.....  
གི་འདོད་པ་འགོག་པ་ལ་དམིགས་སྤྲུལ་པའི་རིགས་པའི་གནོད་བྱེད་གནད་ཆེ་ཤེས་  
སྤྲུང་ངོ་། །

### (༩) དབྱུང་སྒྲོམ་ངེས་པར་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་ནལ་འབྱོར་བས་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་ཞི་གནས་ཀྱི་མཐུས་གནས་  
སྐབས་སེམས་མི་གཡོ་བའི་གནས་ཆ་འབྲུབ་པ་ཅམ་གྱིས་མི་ཆོག་པར་ལྟ་བ་ངན་བ་  
གཞན་གྱི་དྲང་དྲུ་མེད་པའི་ངེས་པ་བདེན་པོ་རྟེན་པ་སོ་སོར་དོག་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་  
དབྱུང་བའི་མཐུ་ལས་འབྱུང་དགོས་ཤིང་། ཤེས་རབ་དེ་དང་ལྡན་པའི་སྒྲོ་ནས་སྤྱིད་  
པའི་ཅ་བ་བདག་འཛིན་མ་རིག་པའི་དམིགས་གཏད་ཐམས་ཅད་དྲུང་ནས་ཕྱང་བ་ལ་  
དངོས་སྤྱུ་བདག་འཛིན་ལ་གནོད་པ་འབྱོལ་བ་ཞིག་ངེས་པར་དྲུ་དགོས་ཤིང་། དོན་  
དེ་ལ་དགོངས་ནས་ཇི་གྲུང་ཐང་བསྟན་པའི་སྒྲོན་མའི་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མའི་རྒྱ་.....  
ཆར་འབྲུལ་བསྟན་པའི་དེ་ཉིད་སྤྲང་བ་ལས།<sup>1</sup> “བདག་དྲུ་འཛིན་པའི་དབྲུ་བོ་  
གཞེས་པ་ལ་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱི་མིག་ཕྱེ་སྟེ། རྒྱལ་བཞིན་དབྱོད་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་  
ཆས་པར་བསྟན་པ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་མིག་བཙུམ་ནས་

1. ཀྱང་ཀ་ ༥༠ (སྒྲ་ཐེ་དེབ་)



དེ་གི་མ་མཐོང་བར་བྱས་པ་ཙམ་གྱིས་པ་རེལ་ལ་ཅི་ཡང་མི་གནོད་ཅིང་རང་ཉིད་……  
 ཉམས་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་དང་། ཇི་རིན་པོ་ཆེས་བཤེས་གཉིས་ཆེན་  
 བོ་བྱང་ཐུབ་སྒྲ་མ་ལ་གནང་བའི་འཕྱིན་ཡིག་ལས།<sup>1</sup> “ཐོག་མར་ལྟ་བ་བཙལ་བའི་  
 དགོས་པ་ཡང་ངེས་བའི་དོན་སྒྲུབ་པའི་དོན་དུ་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་བདག་འཛིན་ལྷོག་  
 བའི་ཆེད་ཡིན་པས་སྒྲུབ་པའི་དུས་སུ་ཡང་བདག་དུ་འཛིན་པ་གཉིས་ཀྱི་ཡུལ་ལ་སོ་  
 སོར་དོག་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལེགས་པར་དབྱུང་བ། བདག་གཉིས་ཀྱི་མཚན་མ་ཅི་  
 ཡང་མ་གྲུབ་བའི་ངེས་པ་རྙེད་པའི་ཆོ་ལྟ་ཐོག་དེར་བཞག་ནས་ངེས་པའི་རྒྱན་སྦྱང་……  
 དགོས་ཀྱི། ལྟ་བའི་ངེས་པ་དོར་བའི་ཞི་གནས་ཙམ་བསྐྱངས་ཀྱང་འཁོར་བའི་  
 ཙམ་བ་བདག་འཛིན་ལ་ཅི་ཡང་མི་གནོད་དོ།” །ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དེ་  
 བཞིན་དུ་ལས་རིམ་ཆེན་མོར་ཡང་།<sup>2</sup> “གཞན་ཡང་བདག་གཉིས་སུ་མཚན་མར་  
 བརྒྱང་བའི་སྒྲོས་ཇི་ལྟར་བརྒྱང་བ་དེ་ཇི་འདྲ་བ་ཞིག་ཡིན་པ་དེ་ལེགས་པར་དབྱུང་……  
 ནས། རྣམ་པར་དག་པའི་ལུང་རིགས་ཀྱིས་ཁོ་བོས་བརྒྱང་བ་ལྟར་མེད་པ་ལ་ངེས་  
 པ་དངས་པའི་སྒྲོ་ནས་འབྲུལ་བའི་རྒྱན་སྦྱགས་དེའི་པ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། དེ་འདྲ་  
 བའི་ངེས་པ་ཅི་ཡང་མ་རྙེད་པར་སེམས་བརྒྱང་བ་ཙམ་ནི། དེའི་ཆོ་བདག་གཉིས་  
 ཀྱི་ཡུལ་ལ་མི་འཕྲོ་བ་ཡིན་དུ་ཆག་ཀྱང་། དེ་ཙམ་གྱིས་བདག་མེད་པའི་དོན་  
 ཉོགས་པ་མ་ཡིན་དེ། དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་གཉིད་འཐུག་བོ་ལོག་པ་དང་། བརྒྱལ་བ་  
 ལ་སོགས་པའི་ཆོ་ཡང་། དེ་དག་ལ་སེམས་འཕྲོ་བ་མེད་པས་དེ་དག་གིས་ཀྱང་  
 བདག་མེད་ཉོགས་པར་ཏུ་ཅང་ཐལ་བར་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །

1. ཇི་ཁ་ཐོར་བྱ་ ༣༠༦ (བཏ་ལྷན་-དེབ་) 2. ཇི་ཁ་སྒྲུང་ ༣༠༦ (བཏ་ལྷན་-དེབ་)



མདོར་ན་སྒྲོབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་བསྐྱོམ་རིམ་མཐའ་མ་ལས།<sup>1</sup> “དེ་ལྟ་བུ་ན་ནལ་  
 འབྱོར་བས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མིག་ཕྱེ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་གྱིས་ཉན་མོངས་པའི་དགྲ་  
 རྣམས་པམ་བར་བྱས་དེ་འཇིགས་པ་མེད་བར་གནས་བར་བྱ་ཡི། མི་སྒྲར་མ་  
 བཞིན་མིག་བཙུམ་བར་མི་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་བདག་ལེགས་སུ་འདོད་  
 པའི་དབྱེད་ལྷན་རྣམས་ཀྱིས་སྒྲོ་གྲོས་གི་མིག་ལེགས་བར་ཕྱེ་སྟེ། བདག་དང་བདག་  
 མེད་པའི་ཚལ་ལ་ལུང་རིགས་རྣམ་དག་ཀྱི་ལམ་ནས་དྲངས་པའི་ཡིན་ཚལ་དབྱེད་……  
 པའི་རིགས་པས་ལེགས་བར་དབྱེད་པའི་སྒྲོ་ནས་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་ངེས་ཐག་  
 ཚོད་བར་བྱེད་པའི་ཐབ་གསལ་སྒྱུར་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་ནོན་ཐོགས་དེ།  
 བདག་དུ་འཇོན་པའི་དགྲ་བོ་དེ་ཉིད་ཅད་ནས་འབྱིན་བ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། ཅི་ཡང་  
 ཡིད་ལ་མི་བྱེད་བར་མིག་བཙུམ་ནས་སྒྲོད་པས་ནི། བདག་དུ་འཇོན་པའི་སྒྲོ་  
 མཁར་བདེན་དུ་གཏོང་བ་ལས་མ་འདས་བར་མངོན་ནོ། །

དེས་ན་བསྐྱོམ་བྱའི་དོན་ལ་ངེས་ཤེས་ཀྱི་སྒྲོ་སྒྲུ་ཤུགས་དྲག་པ་དང་། རྒྱན་  
 རིང་བ་དང་། རྣམ་བར་གསལ་བ་དང་། བདེན་བར་འབྱུང་བ་སོགས་འབྱུང་  
 བ་དང་། སྤང་བྱ་བྱིན་ཅི་ལོག་གི་སྒྲོ་སྒྲུ་རྣམས་འགོག་པ་ལ་གཉིན་བོ་ནུས་པ་  
 མཐུ་ཅན་དུ་གྱུར་བ་སོགས་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྒྱ་མཚན་སྒྲོ་དུ་མ་……  
 རྣམ་དབྱེད་ཅིང་བསྐྱོམས་པ་ལས་འབྱུང་དགོས་པས་དབྱེད་སྒྲོམ་མེད་དུ་མི་རུང་བ་  
 ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ཡང་སྒྲུན་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱིས་མཚན་ཀྱི་ཐེག་ཆེན་སྒྲོ་སྒྲོང་  
 གི་ལྷན་ཐབས་མན་ངག་རབ་གསལ་ལས།<sup>2</sup>

ཤུགས་དྲག་རྒྱན་རིང་འབྱུང་བ་ལ། །

1. ལྷོ་-བཙན་(དབ་མ་ཀེ་ཅཱ) 2. ལྷན་སྒྲུ་ཀ་ ༤༠༩ (ལྷོ་ལོ་-དཔེ་གཟགས་)



དབྱད་ནས་སྒྲོམ་བ་ཉིད་དགོས་ཏེ།  
 དགྲ་ཡིས་གནོད་བ་བྱས་བ་ཡི།  
 རྒྱ་མཚན་ཡང་དང་ཡང་བསམ་ན།  
 ཞེ་སྤང་ཤུགས་དྲག་སྤྱེ་བ་བཞིན།     ཞེས་དཔེ་དང་བཅས་ད་  
 གསལ་བར་གསུངས་སོ།།

དོན་གྱི་གནད་འདི་ལ་ཁ་ཅིག་གིས། བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་སོ་སོར་དབྱེད་  
 བ་རྟོག་བ་ཡིན་པས།     དེ་ལས་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་སྤྱེ་བ་འགལ་ཏེ།  
 འབྲས་བྱ་དང་རྒྱ་གཉིས་རྗེས་སུ་མི་མཐུན་པའི་ཕྱིར་རོ་སྒྲུམ་ན།     སྤྱོད་མེད་དེ།  
 འོད་སྤང་གི་ལེན་ལས།<sup>1</sup>     “འོད་སྤངས།     འདི་ལྟ་སྟེ།     དཔེར་ན་ཤིང་གཉིས་  
 རྒྱང་གིས་དྲུད་བ་དེ་ལས་མི་བྱུང་སྟེ།     བྱུང་ནས་ཤིང་དེ་གཉིས་སྟེག་བ་དེ་བཞིན་  
 དུ།     འོད་སྤངས།     ཡང་དག་བར་སོ་སོར་རྟོག་བ་ཡོད་ན་འཕགས་པའི་ཤེས་  
 རབ་ཀྱི་དབང་པོ་སྤྱེ་ལྟ།     དེ་སྤྱེས་པས་ཡང་དག་བར་སོ་སོར་རྟོག་བ་དེ་ཉིད་  
 སྟེག་བར་བྱེད་དོ།”     ཞེས་ཤིང་དང་འདྲ་བའི་རྟོག་བ་སྤྲོ་ཚྭས་པན་ཚུན་དྲུད་  
 བ་ལྟར་དབྱད་པས།     མི་ལྟ་བུའི་འཕགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་དབང་པོ་སྤྱེས་ནས།  
 ནམ་པར་རྟོག་པའི་ཤིང་མ་ལུས་བ་སྟེག་བར་བྱེད་དོ་ཞེས་དཔེ་དང་བཅས་དེ་……  
 གསུངས་སོ།     དེ་བཞིན་དུ་བསྒྲོམ་རིམ་མཐའ་མ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་།     “དེ་ནམ་པར་  
 རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་།     ཚུལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 ཡིན་པའི་ཕྱིར་དེ་ལས་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བར་འབྱུང་བས་ན།  
 ཡེ་ཤེས་དེ་འདྲོད་པས་དེ་ལ་བརྟེན་པར་བྱའོ།”     ཞེས་གསུངས་པས་སོ་སོར་

1. མྱི་-བཀའ་(དཀོན་བརྟེན་མ་ཆ་ ༡༣༩)     2. མྱི་-བཀའ་(དབྱ་མ་ཀུ་ ༩༩)



རྟོག་པས་དབྱང་ནས་སྒྲིང་བ་འདི་ནས་པར་རྟོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་།  
 ཚུལ་བཞིན་ཡིད་བྱེད་ཀྱི་སྒྲོ་ཡིན་པས། མི་རྟོག་ཡེ་ཤེས་དང་ཤིན་དུ་ཇིས་སུ་  
 མཐུན་ཞིང་དེའི་རྒྱ་ཡིན་པས། རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་འདོད་པ་དག་  
 གིས་སོ་སོར་རྟོག་པས་དབྱང་ནས་སྒྲིང་བ་དེ་ལ་ངེས་པར་དུ་བརྟེན་དགོས་སོ། །  
 དེ་ལྟར་མ་ཡིན་ན་ལས་ཟག་བཅས་ལས་ཟག་མེད་ཀྱི་ལས་འབྱུང་བ་ཡང་མི་སྲིད་...  
 པས། སོ་སོ་སྒྲིབ་སོ་སྒྲིབ་འཕགས་ལས་ཐོབ་པ་མེད་པར་འགྱུར་དེ། རྒྱ་འབྲས་  
 གཉིས་མི་འདྲ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་ས་བོན་སྒྲིབ་པ་ལས་སྒྲིབ་ཀྱི་ལྷུང་ཁྲ་སྒྲིབ་  
 དང་། མེ་ལས་དུ་བ་སྒྲིབ་དང་བྱང་མེད་ལས་སྒྲིབ་པ་སྒྲིབ་སོགས་རྣམ་པ་མི་འདྲ་  
 བའི་རྒྱ་འབྲས་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་ཡོད་པ་དེ་དག་བཞག་དུ་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །

(ཕ) དབྱང་སྒྲིང་དང་འཕྲོ་བ་དོན་གཅིག་དུ་འདོད་པ་དགག་པ།

དེ་ཡང་བསྒྲིང་བའི་དོན་ལ་སྒྲོ་འི་འཛིན་སྣངས་ཤུགས་དྲག་པ་དང་། གསལ་  
 པ་དང་། ངེས་ཤེས་བརྟན་པོ་འདྲིན་པར་བྱེད་པའི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་དབྱང་སྒྲིང་  
 དང་། སེམས་གང་ལ་གཏད་པའི་ཕྱོགས་དེར་འགྲོ་མི་ཉན་པར་ཡུལ་གཞན་ལ་  
 རྒྱང་ལྟར་འཕྱོ་བའི་འཕྲོ་བ་གཉིས་གཏན་མི་འདྲ་སྟེ། དེ་ཡང་བཏ་ཆེན་སྒྲོ་བཟང་  
 ཆོས་རྒྱན་གྱིས་མཛད་པའི་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་གྱི་དྲི་ལན་སྒྲོ་བཟང་བཞད་པའི་  
 སྒྲ་དབྱངས་ལས།<sup>1</sup>

སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས། །

ཡང་ཡང་དབྱང་ཅིང་སྒྲིང་བ་དང་། །

1. བོད་པ་ (བོད་ཤིག་-དཔེ་དེད་) (མཐུན་པའི་དཔེ་དེད་) བཅུ་ལྔ་པའི་པྱི་།



དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་དགུར་གྱུར་བའི།

འཕྱོ་ཁོད་གཅིག་པར་མི་འགྱུར་ལགས། །ཞེས་གསུངས་

བའི་ཕྱིར་ལོ།

ལྷག་མཐོང་སྒོམ་པ་སོགས་སྒོམ་ནས་དག་ལ་དབྱད་སྒོམ་ངེས་པར་དགོས་  
ཀྱང་། དབྱད་སྒོམ་དང་འཕྱོ་ཁོད་ཀྱི་ཁྱད་པར་ལེགས་པར་མ་ཕྱིད་པ་དག་གིས་  
འཕྱོ་ཁོད་སྒོམ་གྱི་བགའ་སློབ་ཕྱིད་པ་དེ་བཞིན་དུ། དབྱད་སྒོམ་དང་ཐོས་བསམ་སོཏ་  
ཀྱང་སྒོམ་གྱི་བགའ་སློབ་ལྟ་འདྲོད་པ་ཆེས་མི་འཕྱད་དེ། དེ་ཡང་མཁན་ཆེན་པོ་གི་  
དབང་གཤམ་པའི་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་གྱི་ལྟ་སྒོམ་དྲི་ལན་ལས།<sup>1</sup> “དབྱད་སྒོམ་  
དང་འཕྱོ་ཁོད་གཅིག་པོ་གཅིག་དུ་བརྒྱུད་ན། རི་ལྷར་མཁས་པ་ཅམ་གྱིས་དབྱད་  
སྒོམ་མང་། དེ་མང་བ་ཅམ་གྱིས་འཕྱོ་ཁོད་མང་། དེ་མང་བ་ཅམ་གྱིས་གཏེ་  
ཕྱིད་མང་བས། མཁས་པ་བས་ལྷན་པོ་དབྱད་སྒོམ་ཉུང་བའི་ཕྱིར་སྒོམ་གྱི་བགའ་  
སློབ་ཕྱིད་ཉུང་བས། སྒོམ་སྒྲེ་བ་ལ་ལྷན་པོ་སྒྲུར་སྒྲུབ་དུ་བརྒྱུད་ནས། ཐོས་བསམ་  
སྒོམ་གྱི་བགའ་སློབ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཆོས་སྤོང་བའི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་སྒོམ་མི་འཁྱུད་པ་……  
ནམས་སོག་པ་སོགས་འབྱུང་བ་ཡིན་པས། འཕྱོ་བ་དང་དབྱད་སྒོམ་གཅིག་ཀྱི་  
ཁྱད་པར་ཕྱིད་པ་གཤམ་ཆེདོ།” ཞེས་གསུངས་། དེ་བཞིན་དུ་པཎ་ཆེན་སྒོ་བཟང་  
ཆོས་རྒྱལ་གྱི་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་གྱི་དྲི་ལན་དེ་ཉིད་ལས།<sup>2</sup>

རི་ལྷར་མཁས་པ་ཅམ་གྱིས་ཀྱང་།

ཁྱད་དང་རིགས་པའི་དབྱེད་པ་མང་།

དེ་འདྲ་རི་ཅམ་མང་བས་ཀྱང་།

1. བོད་ཀྱི་འཕྱོ་ཁོད་ (ཕྱོ་ཁོད་དེ་བཞིན་གྱི་ལྷག་བསམ་) 2. བོད་ཀྱི་འཕྱོ་ཁོད་ (བོད་ཀྱི་ལྷག་བསམ་དེ་བཞིན་གྱི་ལྷག་བསམ་)



འཕྲོ་ཁོད་མང་ཕྱིར་མཁས་བ་ལས།

སྒྱུ་བོ་དྲོགས་བ་སྤེ་བྱར་ཞེས།

ཐོས་བསམ་སྒྲོམ་བའི་གོགས་བྱེད་བ།

དམ་ཚུལ་སྤོང་བའི་ནམ་ཐར་ལགས། ཞེས་གསུངས་བའི་

ཕྱིར་རོ།

དེས་ན་སྤྱིར་འཕྲོ་ཁོད་གཉིས་མི་གཅིག་སྟེ། དེ་གཉིས་ཀྱི་ཁྱད་པར་བཞ་  
ཆེན་གྱི་དྲི་ལན་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup>

འཕྲོ་ཁོད་མི་གཅིག་ཁོད་བ་ནི།

འདོད་ཆགས་ཆར་གཏོགས་མ་ཞི་བར།

ཀུན་ལས་བདུས་སུ་གསུངས་བ་ཡིན།

འཕྲོ་བ་དེ་ལས་གྱུ་ཆེ་སྟེ།

ཞེ་སྤང་སོགས་ཀྱི་འཕྲོ་བའང་ཡོད།

གཉིས་ཀྱིས་འཛོལ་སྒྲོམ་མ་ཟད་ཀྱི།

དབྱེད་སྒྲོམ་ལ་ཡང་བར་དུ་གཅོད། ཁེས་ཁོད་བ་ནི་སྤྱི་

བའི་མཚན་མ་ལ་ཇེས་སུ་འཇུག་པའི་འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཆར་གཏོགས་བ་ཡིན་པས་

འཕྲོ་བ་ལ་དེས་མ་ཁྱབ་ཅིང་། དེ་གཉིས་ཀྱིས་འཛོལ་སྒྲོམ་མ་ཟད་དབྱེད་སྒྲོམ་

ལ་ཡང་གོགས་བྱེད་བ་ཡིན་ནོ།

འདི་ལ་ཁ་ཅིག་གིས་དབྱེད་སྒྲོམ་སྤྱིར་སྒྲོམ་གྱི་གོགས་མ་ཡིན་དུ་རྒྱུག་ཀྱང་།

འཕྲོ་ཁོད་གཉིས་བཞིན་དུ་གནས་ཆ་བསྐྱབ་པར་བྱེད་པའི་འཛོལ་སྒྲོམ་གྱི་གོགས་

1. ཐོད་-འང་ ༩ (ཐོད་ཐོག་-དཔེ་རིང་)



ཡིན་ནོ་སྒྲུལ་ན། དེ་ཡང་མི་འཐད་དེ། འཛོལ་སྒྲོམ་གྱི་སྐབས་སུ་སེམས་དམིགས་  
 བ་ལ་གདན་ཆགས་བར་གནས་པའི་འགལ་ཁྱེན་གྱི་གཙོ་བོ་ནི་གཉིས་དེ། བྱིང་  
 བ་དང་ཁྱོད་བཞི། །དེ་ལ་དབྱུང་སྒྲོམ་གྱི་མཐུས་དཀོན་མཆོག་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་  
 དན་མཐོང་བའི་སྒྲོ་བྱགས་དྲག་ལ་རྒྱན་རིང་བ་ཡོད་ན་བྱིང་བ་གཙོད་བ་ཤིན་དུ་སྒྲོ་  
 ཟླ། བྱིང་བ་ནི་གདོ་སྒྲག་གི་ཆར་གདོགས་པ་སེམས་ལས་སུ་མི་རུང་བ་ཡིན་པས།  
 དེའི་གཉེན་བོ་ཡོན་དན་མཐོང་བའི་སྒྲོ་ནས་སེམས་གཟེངས་བསྟོད་བ་ཡོད་པའི་.....  
 ཕྱིར་རོ། །དེ་བཞིན་དུ་དབྱུང་སྒྲོམ་གྱི་མཐུས་མི་དྲག་བ་དང་སྒྲག་བསྐལ་ལ་སོགས་  
 པའི་ཉེས་དམིགས་མཐོང་བའི་སྒྲོ་བྱགས་དྲག་ལ་རྒྱན་རིང་བ་ཡོད་ན་ཁྱོད་བ་གཙོད་  
 བ་ཡང་ཤིན་དུ་སྒྲོ་ཟླ། ཁྱོད་བ་ནི་འདོད་ཆགས་ཀྱི་ཆར་གདོགས་པའི་སེམས་  
 གཡེང་བ་ཡིན་པས། དེའི་གཉེན་བོ་སྒྲོ་ཤས་བྱགས་དྲག་དང་ལྷན་པའི་ཕྱིར་རོ།  
 དེ་ལྟར་ཡིན་པ་ཡང་སྒྲོ་བ་དཔོན་ལེགས་ལྷན་འབྱེད་ཀྱི་དབྱུང་སྒྲིང་གོ་ལས།

ཁྱོད་བ་མི་དྲག་ལ་སོགས་པ།

ཡོད་ལ་བྱེད་པས་ཞི་བར་བྱ།

ཞུས་པ་དམིགས་པ་གྱུ་ཆེན་དག །

བསྒྲོམས་པས་སྤངས་པ་ཉིད་དུ་བྱ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །རྒྱ་

མཚན་དེ་དག་ལ་བདེན་ནས་འཛོལ་སྒྲོམ་གྱི་དག་མཐར་ཐུག་པ་བྱིང་ཁྱོད་གཙོད་བ་  
 ལ་དབྱུང་སྒྲོམ་གྱོགས་སུ་འགྲོ་བའི་ཚལ་ཤེས་པར་བྱའོ།



(༤) ཡིད་བྱེད་ཐམས་ཅད་འགོག་པ་དང་། དབྱེད་སྒྲོམ་མི་འདོད་པའི་

ཐྱོགས་ལ་གནོད་བྱེད་བསྟན་པ།

དེ་ཡང་སྤྱིར་མི་དགེ་བ་དང་ལུང་མ་བསྟན་གྱི་ནམ་བུར་དོག་པ་ལྟ་ཞིག །  
 དགེ་བའི་ནམ་བུར་དོག་པ་ཡང་འཁོར་བར་འཛིང་བྱེད་ཡིན་ཏེ། དཔེར་ན། གསེར་  
 སྒོག་དང་ལྷགས་སྒོག་གང་གིས་བཅིངས་ཀྱང་བཅིངས་པ་མཚུངས་པས་ཅི་ཡང་.....  
 ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ཁོ་ནས་གོལ་བར་འདོད་པ་དང་། ལྷག་པར་བདག་མེད་པའི་  
 ལྷ་བ་སྒྲོམ་པ་སོགས་ཀྱི་ཆེ་ཡང་། སོ་སོར་དོག་པས་དབྱེད་ནས་སྒྲིང་བ་ལ་སྒྲིན་  
 ཏུ་བརྒྱུང་ནས། བཟང་དོག་དང་ངན་དོག་ཐམས་ཅད་མཚན་འཛིན་ཡིན་པས་འཚང་  
 གྱུ་བ་ལ་གོགས་སུ་འགྱུར་ར་ཟེར་ནས། གནས་ལྷགས་ཀྱི་དོན་ལ་སྤྱ་ཐག་ཆོད་  
 པའི་ངེས་པ་འདྲན་པ་ལ་སྒྲོ་འགོགས་པར་བྱེད་པ་ནི་ཆེས་མི་འཐད་དོ། །

ཚུལ་འདི་ལ་སྒྲོ་བ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་བསྒྲོམ་ངེས་པ་མ་ལས།<sup>1</sup> “འདི་ལྟར་

ཅི་ཡང་མི་བསམ་མོ་ཞེས་སྒྲུབ་ནི། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དོག་པའི་མཚན་  
 ཉིད་ཀྱི་ཤེས་རབ་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཙ་བ་ནི་  
 ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དོག་པ་ཡིན་པས་ན། དེ་སྤངས་ན་ཙ་བ་བཅད་པའི་ཕྱིར་  
 འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་སྤངས་པར་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་དང་། “དེ་  
 ལྟར་མས་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྒྲིང་བ། ཐོས་པ་ཉུང་བ། བདག་གི་ལྷ་བ་མཚན་གྱི་  
 ཏུ་འཇིན་པ། སྒྲི་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྟེན་བཀུར་མ་བྱས་པ། དེ་བཞིན་གཤེགས་  
 པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་མ་དོགས་པ། བདག་སྤང་བར་བྱས་ནས། གཞན་

1. ཐུ་བ་ལྟན་ (དབྱ་མ་ཀྱི་ ༩ )



ཡང་སྤང་བར་བྱེད་པ། རིགས་པ་དང་ལྷང་དང་འགལ་བའི་དྲུག་གིས་བདབ་པའི་  
 ཆོག་ནི་མཁས་པ་བདག་ལེགས་སུ་འདོད་པས་ཟས་དྲུག་ཅན་བཞིན་དུ་རྒྱང་རིང་དུ་  
 ཡོངས་སུ་སྤང་བར་བྱུངོ།” །ཞེས་སོགས་དམིགས་སྤྲུག་པའི་དགག་པ་རྒྱས་  
 བར་མཛད་དོ། །

དེར་ས་ཟད་ཇི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འི་ལམ་རིམ་ཆེན་མོར་ཡང་གིན་དུ་ཉེས་་་་  
 ཚབ་ཆེ་བའི་གནས་སུ་གཟིགས་ནས་དགག་པ་མཛད་པ་འདི་ལྟ་སྟེ།<sup>1</sup> “གཞན་  
 ཡང་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་མཚན་འཛིན་ཡིན་པས། འཚང་བྱ་བའི་གོགས་སུ་བརྒྱང་  
 བས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་འདོར་བའི་ཡོག་རྟོག་གི་ཐ་ཆད་འདི་ནི་རྒྱ་  
 བྱ་གི་མཁན་བོ་ཏུ་ཤང་གི་ལྷགས་ཡིན་ལ། དེ་དགག་པ་ནི་ཞི་གནས་དང་རྒྱལ་  
 མཐོང་གི་སྒྲུབས་སུ་བཤད་པར་བྱུངོ། །གཞུང་ཆེན་མོ་རྣམས་ལ་གྲུས་པ་ཆེན་པོ་  
 སྟེ་བའི་གོགས་ཀྱང་ཡོག་རྟོག་འདིས་བྱེད་དེ། གཞུང་དེ་དག་གི་དོན་ནི་ཕལ་སོ་  
 ཆེ་སོ་སོར་རྟོག་པས་དབྱུད་དགོས་པ་ཁོ་ནར་སྤང་ལ། དབྱུད་པ་རྣམས་ཀྱང་ཉམས་  
 ལེན་གྱི་ཆོ་དགོས་པ་མེད་པར་མཐོང་བས་སོ། །བསྟན་པ་རྒྱབ་པའི་རྒྱུན་དུ་འང་  
 འདི་ཆེ་སྟེ། གསུང་རབ་དགོངས་འབྱེད་ཆེན་མོ་རྣམས་གདམས་ངག་དུ་མི་འགྲོ་  
 བར་མཐོང་ནས་ཞེ་ཅིགས་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བཞིན་དུ་ཇི་གྲང་ཐང་གིས་མཛད་པའི་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མའི་རྒྱ་ཆེར་འབྱེད་  
 བསྟན་པའི་དེ་ཉིད་སྤང་བ་ལས།<sup>2</sup> “མདོར་ན་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་ལྟ་བུའི་སྒྲོམ་  
 གྱི་ཡང་ཅེར་བརྒྱང་བ་འདི་རྣམ་གྲོལ་སྒྲུབ་པའི་དོན་དུ་ངལ་བ་བྱས་ཆད་ཅུད་ཟེས་་་་  
 སུ་གཏོང་བའི་ཡོག་རྟོག་ཆེན་པོ་ཡིན་དེ།” །ཞེས་སོགས་དང་། མཁས་གྲུབ་

1. ཇི་བ་ ༥ (བཏ་ལྟན་-དེབ་) 2. ཀྱང་ཐང་ཀ་ ༩༠ (སྟེ་ལ་-དེབ་)

176



ཆེན་དབང་མ་སྟོང་ཕུན་བསྐལ་བཟང་མིག་འབྱེད་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “འདི་ལྟར་གཞུང་  
 བས་སྒྲིན་པ་ཚུལ་བྱིས་ས་ཕྱག་དང་མཆོད་པ་སོགས་ཐམས་ཅད་རྟོགས་པས་བྱ་……  
 དགོས་པས་སྤང་བྱར་འཛིན་པ་དང་། སྒྲགས་ཀྱི་སྐབས་སུ་བསྐྱེད་རིམ་སངས་  
 རྒྱས་ཀྱི་རྒྱ་མ་ཡིན་པར་བལྟ་བ་སོགས་ཐམས་ཀྱི་ཆ་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱར་བ་……  
 འདེབས་པ་ནམས་བྱང་བ་ཡིན་པས། གང་དུ་ཡང་གཞུང་དུ་མི་བྱང་བར་བལྟ་བ་  
 འདི་ལས་ཐ་ཆད་པའི་གནས་གཞན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།” །གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

དེས་ན་ཅི་ཡང་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པའི་འདོད་ཚུལ་ཐ་ཆད་འདྲིས་ནི་ཐམས་ཀྱི་ཆ་  
 ཐམས་ཅད་དང་། རྒྱལ་བའི་བཟུན་པའི་སྟིང་པོ་གནས་ལྷགས་སྟོང་པ་ཉིད་རྟོགས་  
 པར་བྱེད་པའི་ལམ་གྱི་སྒོག་དམ་པ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་འགོག་པར་བྱེད་……  
 པ་ཕྱགས་ཀྱིས་མ་བཟོད་ནས་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ཀམལ་ཤྱིལ་ས་ཚུལ་འདི་ཅད་ནས་……  
 འབྱིན་པར་མཆོད་པ་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་མཁས་གྲུབ་སྤྱོད་པའི་ཉི་མའི་གསུང་ཕུབ་  
 བཟུན་བྱེད་པར་ལས།<sup>2</sup> “འདྲིས་ནི་ཐམས་ཀྱི་ཆ་ཐམས་ཅད་སངས་ཀྱི་ལམ་ནལ་མ་  
 མ་ཡིན་ཞེས་སྐར་བ་ཆེན་པོ་བདེ་བ་ཅིང་། རྒྱལ་བའི་བཟུན་པའི་སྟིང་པོ་བདག་  
 མེད་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གནས་ལྷགས་ཀྱི་དོན་ལ་ནམ་པར་དབྱེད་པ་བཀག་  
 པས་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་གཉིས་ཀ་ལྷག་མ་མེད་པར་བྱང་རིང་དུ་  
 སྤངས་པ་དེ་ཉིད་ཀམལ་ཤྱིལ་ས་སུན་བྱང་མེ། རྒྱལ་བ་དབྱེས་པའི་ལམ་རྒྱུ་མེད་  
 པ་རྒྱས་པར་མཆོད།” ཅེས་སོགས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

གལ་དེ་ཡིད་བྱེད་ཐམས་ཅད་འགོག་པ་མིན་ཡང་ཟེབ་དོན་བསྐྱོམ་པའི་ཆོ་སོ་  
 སོར་རྟོག་པས་དབྱེད་ནས་སྟོང་པ་ལ་སྟོན་དུ་བརྒྱང་ནས། རྟོག་པས་གང་བརྒྱང་ཤིས་

1. མཁས་—‘ཀ’ 202 (ཐེ་མེ—དཔེ་གཞུགས་) 2. མཁས་—‘ཉ’ 070 (ཐེ་མེ—དཔེ་གཞུགས་)



ཅད་དགག་བྱར་འཛིན་པ་ནི། ཚལ་མིན་ཡིད་བྱེད་ཀྱི་བདེན་འཛིན་གྱི་ནམ་རྟེན་དང་།  
 ཚལ་བཞིན་ཡིད་བྱེད་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་དབྱེད་སྒྲོམ་གཉིས་ཀྱི་ཁྱད་...  
 པར་ལེགས་པར་མ་བྱེད་པའི་སྒྲོན་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་ལམ་རིམ་རྒྱུ་ལས།<sup>1</sup> “རྟོག་  
 པ་ཐམས་ཅད་མཚན་མར་འཛིན་པ་ཡིན་པས་འཚང་བྱ་བ་ལ་གོགས་བྱེད་པའི་སྒྲོམ་  
 ཏུ་འཛིན་པ་ནི། ཚལ་མིན་ཡིད་བྱེད་བདེན་འཛིན་གྱི་རྟོག་པ་དང་། ཚལ་བཞིན་  
 ཡིད་བྱེད་ཡང་དག་པའི་རྟོག་པ་གཉིས་མ་བྱེད་པའི་སྒྲོན་ནི།” །ཞེས་གསུངས་སོ།  
 དེས་ན་དགག་བྱའི་མཚན་མ་འཛིན་ལེགས་པར་ངོས་མ་ཟིན་པར་ཏེ་ཅད་ཐལ་ཆེས་...  
 ནས་དགག་པར་བྱ་བའི་ཚད་མ་ཟིན་པར་བཀག་ན་ནི་རྒྱ་འབྲས་རྟོན་འབྲེལ་གྱི་རིམ་  
 པ་མཐའ་དག་སྒྲུན་ཕྱང་བས་ཆད་ལྷའི་ཉེན་ཤིན་ཏུ་ཆེའོ། །དོན་དེ་ལ་དགོངས་ནས་  
 རྩེད་སྲུགས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>2</sup> “རིགས་པའི་དགག་བྱའི་ཚད་མ་ཟིན་པར་འདོད་  
 སྒྲོམ་ཏུ་གང་བརྒྱུད་ཐམས་ཅད་བདེན་འཛིན་ཡིན་པས། དབུ་མའི་གཞུང་ནས་ཀྱང་  
 དེ་དག་ཐམས་ཅད་བཀག་འདུག་གོ་སྒྲོམ་ཏུ་བསམ་ནས། སོ་སོར་རྟོག་པའི་  
 དབྱེད་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་འཚང་བྱ་བའི་གོགས་སུ་འཛིན་པ་བྱ་ནག་གི་མཁན་པོ་འི་...  
 ལུགས་ཀྱང་མི་བརྒྱུད་ངོ་།” །ཞེས་གསུངས་སོ།

འདི་ལྟར་རྟོག་པས་གང་བརྒྱུད་ཐམས་ཅད་དགག་བྱར་འདོད་པ་དེས་ནི་གནས་  
 ལུགས་གཏན་ལ་འབེབས་པའི་ཆོ་བདུན་མེད་དུ་འང་གཏན་ལ་འབེབས་མི་རྒྱུ་བར་...  
 འདོད་དགོས་ལ། དེ་ལྟ་ན་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདུགས་ཤིང་དབྱེད་  
 པའི་སྒྲོན་ནས་གཏན་ལ་དབབ་ཏུ་ཡང་མི་རྒྱུད་པར་ཁས་སྐྱེད་དགོས་ཤིང་། ཉེས་  
 པ་མཐའ་ལས་པའི་འབྱུང་ཁྱད་པ་ཡིན་དེ། སྒྲུན་སྒྲོ་གྲོས་ཀྱིས་མཚན་གྱི་ཐེག་

1. རྩེ་མ་ ro (བཀྲ་སྒྲུན་-དེམ་) 2. རྩེ་ག་ ro (བཀྲ་སྒྲུན་-དེམ་)



ཆེན་མོ་སྤྱོད་གི་ལྷན་ཐབས་མན་ངག་རབ་གསལ་ལས།<sup>1</sup> “དབྱང་སྒོམ་མི་འདོད་  
 བ་དག་ལ་རིགས་པའི་གནོད་བྱེད་ཉེར་གཉིས་བསྟན་བ་འདི་ལྟ་སྟེ། (༡) སྒོ་  
 འདོགས་ནས་ཡང་སེལ་མི་ཉུས་པའི་སྒྲོན་བསྟན་བ། (༢) གཉིད་འབྲུག་གིས་  
 ཀྱང་ཉན་མེད་སྤྱོད་ཉུས་པར་ཐལ་བ། (༣) མངོན་སུམ་དང་སྤྱོད་བས་གནོད་  
 བར་བསྟན་བ་དང་། (༤) ཡང་དག་པའི་དོན་སྒོམ་བ་མི་སྤྱོད་པར་ཐལ་བ།”  
 ཞེས་སོགས་ཞིབ་ཅིང་བྱས་པར་གསུངས་པ་ལ་གཞིགས་ན་མཆོད་པར་འབྱུང་རོ།  
 མདོར་ན་རི་ལྷ་རི་སྟེང་གི་ཆོས་ནམས་མ་འདྲེས་པར་འབྱེད་བ་ཤེས་རབ་ལ་  
 རག་ལུས་ཤིང་། དེ་ཡང་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ཤིང་  
 དབྱང་པའི་སྒོམ་བ་མེད་པའས། ཉུང་ན་ལམ་གྱི་སྟོག་དམ་བ་དྲི་མ་མེད་པའི་ཤེས་  
 རབ་མི་སྟེ་སྟེ། དེ་ཡང་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>2</sup> “ཚུལ་དེས་སྒོམ་བ་མེད་  
 པའས། ཉུང་ན་ལམ་གྱི་སྟོག་དམ་བ་དྲི་མ་མེད་པའི་ཤེས་རབ་མི་སྟེ་བ་དང་།  
 ཅུང་ཟད་སྒྲིམ་ཀྱང་ཤེས་རབ་རིམ་ཆེན་མོ་འཕེལ་བས། ལམ་ལ་ས་ཆོད་ཅི་ཡང་མི་  
 འབྱུང་སྟེ། ལམ་གྱི་བསྐྱབ་བྱ་མཐར་ཐུག་པ་ནི། ཤེས་རབ་ནང་ན་ཀྱན་མཆོད་  
 ལྷར། ཞེས་སྟོབ་དབོན་མ་ཁོལ་གྱིས་གསུངས་པ་ལྷར། རི་ལྷ་རི་སྟེང་ཐམས་  
 ཅད་མ་འདྲེས་པར་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་དུ་འབྲུག་པའི་ཕྱིར་རོ།” ཞེས་གསུངས་  
 པའི་ཕྱིར་རོ།

1. ལྷན་ཆེ་—‘ཀ’ ༣༩ (སྒྲིམ་པའི་དཔེ་གཞིགས་) 2. རི་ལྷ་—‘ཀ’ (བྲམ་ལྷན་—དེས་)



(ཅ) དབྱང་རྒྱུ་གྱི་ཕན་ཡོན་བསྟན་པ།

དེ་ཡང་སྤྱིར་བཙམ་ཐུན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ལ་བྱང་ངེས་ཀྱི་ཁྱད་པར་དང་།  
འདྲོད་ཡོན་ལ་ཐེག་པ་ཆེ་རྒྱུ་གི་གནང་བཀལ་གི་ཁྱད་ཆེ་བ་དང་། བྱང་སེམས་  
ལ་དགོས་དབང་གིས་ལྷན་ངག་གི་ཉེས་པ་སྟོག་གཅོད་སོགས་གནང་བའི་སྐབས་...  
ཡོད་པ་སོགས་ཆོས་ཀྱི་གནད་གསང་མང་པོ་ཞིག་ལ་མི་སྤོངས་བར་བྱེད་པ་ཡང་།  
བདག་ས་ཤིང་དབྱེད་བར་བྱེད་བའི་རྣམ་དབྱེད་ཐུན་སྦྱར་ཆོག་ས་པ་འདྲོད་མེད་ལ་  
རག་ལས་བར་མཐོང་སྟེ། དེ་ཡང་སྤྱིར་སྤྱོད་སྟོང་གྲུ་མཚན་གྱི་སྟོང་རིགས་  
བའི་རྒྱ་གཉེར་ལས་¹ “སྤྱ་ཞིང་མཛངས་བའི་རྣམ་དབྱེད་ཡོད་ན། འདྲོད་ཡོན་  
གྱིས་མི་གཞོད་ཅིང་ཕན་འདོགས་བས། སྤྱལ་གྱི་ཐེག་པར་འདྲོད་ཡོན་ལ་ཅི་  
དགར་རྟེན་བས་ཆོ་གཅིག་ལ་སངས་རྒྱ་བ་གསུངས་ཀྱི། ཉོག་དབྱེད་བྲལ་བའི་  
རྒྱན་པོ་ལ་ཡང་འདྲོད་ཡོན་ཅི་དགར་རྟེན་བ་གནང་ན། ལྷེབ་འདྲེ་ས་ཡང་མེ་ལ་  
ཅི་དགར་རྟེན་བས་ཉེས་སྟོན་མེད་བའི་སྟེང་དུ་གནས་སྐབས་དང་མཐར་ཐུག་གི་...  
དོན་ཐམས་ཅད་འགྲུབ་པ་ཞིག་ཅིའི་དོན་ལ་མི་འོང་། རྒྱལ་འདི་ལྟ་བུའི་དབྱེད་བ་  
ནི་འདྲོད་ཡོན་ལ་ཐེག་པ་ཆེ་རྒྱུ་གི་གནང་བཀལ་ཁྱད་ཆེ་བར་བྱང་བ་གོ་བའི་གནད་  
ཁྱད་པར་ཅན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་བའི་སྤྱིར་རོ།

ཁྱད་པར་དུ་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སོགས་པ་ཟབ་པ་དང་གྲུ་ཆེ་བའི་ཆོས་  
 ཚུལ་ལ་སོ་སོར་དོག་པས་དབྱེད་ནས་བསྐྱོམ་པས་ནི།      བསྐྱོམ་བྱའི་དོན་ལ་ངེས་  
 གྲུ་མ་ཡི་ས་འདྲོངས་པ་འདས་ལ་བདེབ་པའི་སྤར་པ་ལྟ་བུའི་ངང་ཚུལ་ས་ཡིན་པར་

1. ཡུན་མུག་ཀྱི་ལྷ་མོ་ (ཡུན་མུག་ཀྱི་ལྷ་མོ་)



ལོག་དུ་མེད་པའི་ངེས་ཤེས་ནལ་མ་འདྲིན་ཐུབ་པའི་དགོས་པ་ཁྱད་པར་ཅན་དང་...  
 ལྷན་པ་ཡིན་དེ། རྒྱུ་བཟུང་གི་ཆེན་པོ་འི་ལས་རིས་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> “གཞན་  
 ཡང་དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཡོན་ཏན་གྱི་ཁྱད་པར་མང་པོ་ཤེས་...  
 ནས་དེ་ལ་བརྟེན་པའི་དད་པའང་མང་པོར་འཕེལ་བ་དང་། འཁོར་བའི་ཉེས་  
 དམིགས་དུ་མ་ཁོང་དུ་ཆུད་ནས་ཡིད་འབྱུང་ཞིང་སྒྲོ་བ་མང་བ་དང་། ཐར་པའི་  
 སུན་ཡོན་ཡང་སྒྲོ་དུ་མ་ནས་མཐོང་བས་དེ་ལ་དོན་གཉིས་དྲག་པོ་དང་། བྱང་ཆུབ་  
 གྱི་སེམས་དང་ཕྱིན་དྲག་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོད་པ་ངོ་མཚར་བའང་དུ་མ་ཁོང་དུ་ཆུད་  
 ནས། དེ་དག་ལས་བརྒྱུག་དུ་མེད་པའི་དད་པ་དང་འདུན་པ་དང་བརྟོན་པ་ནམས་  
 རྒྱུ་སྒྲུ་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གསུང་རབ་...  
 གྱི་དོན་ལ་དབྱུད་ནས་བརྒྱུས་པ་ཁོན་ལ་རག་ལས་པས། རྒྱོད་པ་ལྷན་པ་ནམས་  
 ཀྱིས་ཚུལ་འདི་ལ་གཞན་གྱིས་བཀྱི་བར་མི་རྒྱས་པའི་ངེས་པ་དྲང་བར་བྱའོ།”  
 ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

དེ་ཡང་སྤང་བྱ་ཉེས་སྒྲོན་གྱི་རིགས་ལོག་པ་དང་། ཐོབ་བྱའི་ཡོན་ཏན་སྐྱབ་  
 པ་སོགས་གང་བྱེད་ཀྱང་དབྱུད་སྒྲོམ་གཙོ་ཆེ་ཞེ། སྐྱུན་སྒྲོ་གྲོས་བྱལ་མཚན་གྱི་  
 རྒྱོ་སྒྲོང་རིགས་པའི་ཆུ་གཏེར་ལས།<sup>2</sup> “སྐྱུར་སྒྲོམ་ཐམས་ཅད་དབྱུད་སྒྲོམ་དང་  
 འཛོག་སྒྲོམ་གཉིས་སྒྲུ་འདུས་ལ། དེ་གཉིས་ལས་ཀྱང་དབྱུད་སྒྲོམ་གཙོ་བོ་དང་།  
 མཚོག་དང་། དངོས་གཞི་ཡིན་ཞིང་། འཛོག་སྒྲོམ་ནི་དཔེ་གོགས་ཙམ་ཡིན་ནོ།  
 དེ་ཡང་ཅི་ཡིན་ཞེ་ན། སྐྱུན་སྒྲོང་བ་དང་ཡོན་ཏན་སྐྱབ་པ་གང་བྱེད་ཀྱང་དབྱུད་  
 སྒྲོམ་གཙོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། ཆགས་པ་དང་འཛོན་སྤངས་དངོས་སྒྲུ་འགལ་

1. རྒྱུ་བཟུང་ (པལ་ལྷན་-དེབ་) 2. སྐྱུན་སྒྲོ་-ཀྱ་ ༡༠༠ (སྒྲེ་ལོ་-དཔེ་གཞུགས་)



བའི་དངོས་གཉིན་ནི་མ་ཆགས་པ་དང་། ཞེ་སྤང་ལ་བྱམས་པ། གདི་སྤྱག་ལ་  
གཉིན་པོ་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཡིན་ལ། དེ་ནམས་འབྱུང་བའི་རྒྱུ་ལཱ་པོ་  
ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱེད་པ་ཡིན་པའི་སྤྱིར་དང་། ཅིར་ཡང་མི་རྟོག་པ་ཙམ་གྱིས་མ་  
ཆགས་པ་དང་། བྱམས་པ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱིས་པར་ཅན་འོངས་ས་མེད་པའི་  
སྤྱིར་རོ།” ཞེས་སོ།

དེས་ན་དབྱེད་སྒྲོམ་དྲུག་གི་དབང་པོ་དེ་ཉིད་འཛོལ་སྒྲོམ་རི་རབ་ཀྱི་ལྷན་  
བོ་ལས་ཀྱང་པར་ཇི་ལྟར་འཕགས་ཤེ་ན། གཞུང་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup> “གཞན་ཡང་།  
ཡང་དག་པའི་དབྱེད་སྒྲོམ་ནི་འཛོལ་སྒྲོམ་ཙམ་ལས་ཀྱང་པར་ནམ་པ་བཅུས་ཀྱང་...  
པར་དྲུ་འཕགས་པར་ཤེས་པར་བྱ་སྟེ། ཆོ་འདེའི་དོན་དང་། ཕྱི་མའི་དོན་དང་།  
འབྲུལ་དང་། སྤྱགས་དང་། གནས་སྐབས་དང་། མཐར་ཐུག་དང་། མངོན་  
པར་མཐོ་བ་དང་། དེས་པར་ལེགས་པ་དང་། སྒྲིན་སྒྲོང་བ་དང་། ཡོན་དན་  
སྐབ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་མི་རྟོག་པའི་འཛོལ་སྒྲོམ་ཙམ་གྱིས་དབེར་མི་ཐོད་པའི་ཡོན་...  
དན་སྒྲི་རྒྱས་པ་སྟེ། གོང་འོག་དྲུ་བཤད་པ་ནམས་ཀྱིས་ཤེས་པར་རྒྱས་ཤིང་།”  
ཞེས་སོགས་ཞིབ་ཅིང་བྱས་པ་གཞུང་དེ་ཉིད་ལ་གཟིགས་ན་མཁྱེན་པར་འབྱུར་རོ།

མདར་ན་མདོ་རྒྱུད་དགོངས་འགྲེལ་གྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་...  
ཀྱིས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་པའི་སྒྲོ་ནས་གདམས་ངག་དྲུ་འཆར་ཞིང་སྒྲོམ་པར་བྱེད་...  
པ་ནི་སྤྱན་སྤྱུང་ཆོགས་པ་ཐམས་ཅད་འབྱུང་བའི་སྒྲོ་ཡིན་པས་ཚུལ་ལྷགས་འདི་ལ་...  
ཅིས་སྤྱིར་བཤད་པ་གལ་ཆེ་སྟེ། དེ་ཡང་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>2</sup> “གསུང་རབ་  
ཐམས་ཅད་གདམས་ངག་དྲུ་འཆར་མི་འཆར་ནི་སྒྲོང་ཚུལ་འདི་ལ་དེས་པ་རྟེན་མ་...”

1. སྤྱན་སྤྱུང་-‘ཀ’ 107 (ཐུ་ཤེ་-དཔེ་གཞུགས་) 2. ཇི་‘པ’ 82 (བཀྲ་སྤྱན་-དཔེ་)



ཉིད་ཁོ་ནའི་ཆེས་སུ་བྱེད་པར་སྒྲུང་ཞིང་།” ཞེས་སོགས་གསུངས་ཤིང་། དེ་  
བཞིན་དུ་སྤྱན་རློབ་གྲོས་རྒྱལ་མཚན་གྱི་ཐེག་ཆེན་ཆོ་སྤྱོད་གི་ལྷན་ཐབས་མན་ངག་  
རབ་གསལ་ལས།<sup>1</sup>

ཚུལ་ལྷགས་འདི་ནི་མཚོག་ཡིན་པས།

མདོ་རྒྱུད་བསྟན་བཅོས་ཀྱན་དུ་ཡང་།

རིགས་པའི་ནམ་གྲངས་མཐའ་ཡས་ཀྱིས།

དབྱུང་ནས་སྒྲོམ་བ་ཉིད་གསུངས་ཤིང་། ཞེས་གསུངས་པའི་

ཕྱིར་དོ།

(༡༠) ལྷུ་ལ་གང་ལ་ཚུལ་ཇི་ལྟར་དབྱུང་སྒྲོམ་བྱེད་ཚུལ་དང་། དེ་དགོས་པའི་

རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་བསྒྲོམ་བྱའི་གཞི་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་འཕྲོ་གོད་ཀྱིས་བར་མ་ཆོད་ཅིང་  
བྱིང་སྤྲུགས་ཀྱི་གཞན་དབང་དུ་མ་སོང་བར་དེ་ཉིད་ཀྱིས་རྒྱན་ལྷན་དུ་བསྟན་པའི་སྒྲོ་  
ནས་རྒྱ་མཚན་ནམས་དེ་ལ་བྱེད་ཅིང་། ལྷགས་པར་དབྱུང་དེ་ངེས་ཤེས་ནལ་མ་  
འདྲིན་པ་ཞིག་བྱེད་དགོས་པ་ཡིན་དེ། དེ་ཡང་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་གི་སྒྲོ་སྒྲུ་ནམས་འགོག་  
པར་བྱེད་པ་ལ་དེའི་གཉེན་པོ་དམིགས་ནས་བྱས་པ་མཐུ་ཅན་འབྱུང་དགོས་པའི་  
ཕྱིར་དོ། །དེ་ལྟར་ཡང་ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>2</sup> “དེ་ལྟར་ན་ལམ་སྒྲོམ་བ་ལ་  
དབྱུང་ནས་སྒྲོམ་བ་དང་། མི་དབྱེད་པར་འཛོག་པའི་སྒྲོམ་གཉིས་ཡོད་ན། ལམ་  
ཇི་འདྲ་བ་ནི་དབྱུང་སྒྲོམ་ཡིན་ལ། ཇི་འདྲ་བ་ཞིག་ནི་འཛོག་སྒྲོམ་ཡིན་ཞེ་ན།

1. སྤྱན་རློབ་—‘ཀ’ ༤༠༤ (སྒྲོ་བོ་—དཔེ་གཟུགས་) 2. ཇི་‘པ’ ༤༩ (བཟུ་སྤྱན་—དེ་བ་)



བཤད་པར་བྱ་ཞི། བཤེས་གཉིན་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་པ་དང་། དལ་འབྱོར་དོན་  
 ཆེ་ཞིང་རྟེན་དཀའ་བ་དང་། འཛི་བ་མི་དྲག་པ་དང་། ལས་འབྲས་དང་།  
 འཁོར་བའི་ཉེས་དམིགས་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་པ་ལྟ་བུ་ལ་ནི་དབྱེད་  
 སྐྱོམ་དགོས་སོ། །འདི་ལྟར་དེ་དག་ལ་ནི་སློབ་ཤུགས་དྲག་ལ་རྒྱན་རིང་བའི་ཡིད་  
 འབྲལ་རྒྱས་པ་རེ་དགོས་དེ། དེ་མེད་ན་དེ་དག་གི་ཐོག་ཕྱོགས་མ་གྲུས་པ་སོར་  
 འགོག་མི་རྒྱས་པའི་ཕྱིར་དང་། སློབ་དེ་ལྟ་བུ་བསྐྱེད་པ་ནི་ཡང་དང་ཡང་དུ་སོ་  
 སོར་དྲིག་བས་དབྱེད་ནས་བསྐྱེད་པ་ཁོ་ན་ལ་རག་ལས་པའི་ཕྱིར་དོ། །དཔེར་ན་  
 ཆགས་ཡུལ་ལ་སྤྱུག་པའི་མཚན་མ་སློབ་འདོགས་པ་མང་ན་འདྲོད་ཆགས་དྲག་པོ་སྐྱེ་  
 བ་དང་། དག་ལ་ཡིད་དུ་མི་འོང་བའི་མཚན་མ་མང་དུ་བསམས་ན་ཞེ་སྤང་དྲག་  
 པོ་སྐྱེ་བ་བཞིན་ནོ། །དེས་ན་ལམ་དེ་དག་བསྐྱེད་པ་ལ་ནི་ཡུལ་གྱི་རྣམ་པ་གསལ་  
 མི་གསལ་འདྲ་ཡི། སློབ་འཛིན་སྤངས་ཤུགས་དྲག་ལ་རྒྱན་རིང་བ་དགོས་པས་  
 དབྱེད་སྐྱོམ་བྱའོ། །ཞེས་གསུངས་པས་སོ། །

དེ་ཡང་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་དབྱེད་སྐྱོམ་ཇི་ལྟར་བྱ་ཞེ་ན། རྒྱལ་བའི་སྤྱུང་  
 པོ་ཞི་བ་ལྷའི་སྤྱོད་འཇུག་ལས།

བདགས་པའི་དངོས་ལ་མ་རེག་པར།

དེ་ཡི་དངོས་མེད་འཛིན་མ་ཡིན། །ཞེས་ཇི་སྟན་གསུངས་པ་

བཞིན། དཔེར་ན་བྱུང་བས་དག་པའི་ས་ཕྱོགས་སུ་བྱུང་བ་མེད་པར་ངེས་པ་ལ།  
 དེར་བྱུང་བ་ཡོད་ན་འདི་ལྟ་བུ་ཞིག་ཡོད་དགོས་སྟུང་དེས་དགོས་པ་བཞིན་དུ།  
 བདེན་གྲུབ་བས་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་བཀག་པའི་སྤོང་ཉིད་ངེས་པ་ལ་ཡང་རང་...



བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པའི་དོན་སྤྱོད་ལྟུང་དུ་འཆར་དགོས་པས། ཐོག་མར་དོན་དམ་  
 དབྱེད་བྱེད་ཀྱི་དྲགས་ཀྱི་དགག་བྱའི་ཚད་ངོས་བརྒྱུད་། དེ་ངོས་ཟིན་ནས་རིགས་  
 ཚོགས་ནས་བཤད་པའི་ནམ་ལྔའམ། འཇུག་པ་ནས་བཤད་པའི་ནམ་བདུན།  
 གཞན་ཡང་མཐའ་བཞི་སྟེ་འགོག་ ཡོད་མེད་སྟེ་འགོག་གི་རིགས་པ། གཅིག་  
 ཏུ་བྲལ་དང་རྟེན་འབྲེལ་གྱི་རིགས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་དགག་བྱ་དེ་ལེགས་པར་བཀག་  
 ཟུ། རང་བཞིན་མེད་པའི་དོན་ལ་ངོས་བ་དང་ས་བའི་ངོས་ཤེས་དེའི་རྒྱན་བསྐྱངས་  
 བ་ལ་སྟོང་ཉིད་སྒྲིམ་པའི་ཐ་སྙད་བྱེད་ཅིང་། ངོས་ཤེས་ཚུང་དུ་སྟོང་ན་སྒྲར་རིགས་  
 པས་དབྱེད་པ་བྱེད་ཅིང་ངོས་བ་དང་ས་ནས་དབྱེད་སྒྲིམ་བྱེད་དགོས་པས། དབྱེད་  
 སྒྲིམ་མེད་པར་སྟོང་ཉིད་མི་དྲགས་པའི་དོན་ཡང་དེ་ལྟར་ཡིན་པར་གསུངས་སོ། །

(༡༡) ལྟུང་གང་ལ་ཚུལ་ཇི་ལྟར་འཇོག་སྒྲིམ་བྱེད་ཚུལ་དང་། དེ་དགོས་

པའི་རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་སེམས་དགེ་བའི་དམིགས་པ་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་འདོད་དུ་བཞག་པས་  
 ཚོག་པའི་ལས་ཅུང་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་དུ་དམིགས་རྟེན་ངོས་ཟིན་པ་དེ་གཅིག་སྟུང་ལ་...  
 འཕྲོ་གོད་ཀྱིས་བར་མ་ཚོད་ཅིང་བྱིང་སྟུགས་ཀྱི་གཞན་དབང་དུ་མ་སོང་ཞིང་། མི་  
 ཉིག་མི་དབྱེད་པའི་ངང་ནས་དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་འཇོག་པ་ཞིག་དགོས་ཏེ།  
 དེ་ཡང་ལས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས།<sup>1</sup> “སེམས་དམིགས་པ་གཅིག་ལ་གནས་སུ་མི་  
 བདུབ་པ་དམིགས་པ་གཅིག་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་འདོད་དུ་བཞག་པས་ཚོག་པའི་ལས་  
 ཅུང་དུ་བྱེད་པའི་ཞི་གནས་བསྐྱབ་པ་ལ་སོགས་པའི་སྐབས་སུ་ནི། ཡང་དང་ཡང་

1. ཇི་“པ” ༥༦ (བཟ་རྒྱན་—དེབ)



དུ་དབྱུང་ན་སེམས་གནས་པ་སྒྲེར་མི་ཉན་པས། དེ་ལ་ནི་འཛོལ་སྒྲོམ་བྱ་དགོས་པ་  
ཡིན་དེ། འདྲ་ནི་ཞི་ལྷག་གི་སྒྲུབས་སུ་བཤད་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་པས་སོ།

དེ་ཡང་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་འཛོལ་སྒྲོམ་བྱེད་པའི་ཆོ་དབྱུང་སྒྲོམ་གྱི་དུས་  
སུ་བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་ཡིན་ཚུལ་དབྱེད་པའི་རིགས་པས་ངེས་ཐག་ཆོད་པ་……  
བཞིན་དུ་འཛོལ་སྒྲོམ་གྱི་དུས་སུ་ཡང་བདག་རང་བཞིན་གྱིས་གྲུབ་པ་མེད་པ་ལས་…  
གཞན་དུ་མི་རྟོག་པའི་ཆེ་གཙོག་དུ་མཉམ་པར་བཞག་པ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། དབྱེད་  
པའི་ཆོ་བདག་མེད་པའི་དོན་དང་། འཛོལ་པའི་ཆོ་མི་རྟོག་པ་ཙམ་དང་ལྷ་སྒྲུབ་  
ལྷ་བྱར་འཛོལ་པ་སོགས་གང་དྲན་དྲན་གྱིས་མི་ཆོག་ལྟེ། ཐུལ་བ་ལྷ་བ་ཆེན་པོ་འི་  
ལས་ཁྲིད་འཇམ་དབལ་ཞལ་ལྷང་ལས།<sup>1</sup> “སྒྲོམ་ཆེན་དུ་སྒྲོམ་པ་སང་པོ་ཞིག་གིས་  
རིགས་པས་དབྱུང་ནས་ལྷ་བ་གདན་ལ་ཐག། སྒྲོམ་པའི་དུས་སུ་མི་རྟོག་པ་འབའ་  
ཞིག་སྒྲོམ་ཟེར་བ་ནི། གཞིས་ལ་སྒྲོད་དུས་དྲ་ལེགས་པར་གསོས་ནས་བྱས་  
ལ་འགྲོ་དུས་ཀྱང་ཐང་ལ་འགྲོ་ཟེར་བ་དང་ཁྱད་པར་ཅི་ཡང་མེད་པས། ཞི་གནས་  
ལ་བརྟེན་ནས་ལྷག་མཐོང་སྒྲུབ་ཚུལ་གྱི་གནད་ཅུང་ཟད་ཀྱང་མ་གོ་བའི་རང་མཆང་དུ་  
ཟད་དོ།” །ཞེས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་སོ།

དེས་ན་འཛོལ་སྒྲོམ་བྱེད་པའི་ཆོ་མི་རྟོག་པ་གལ་ཆེ་ཞིང་རྟོག་པ་དགག་ཅེས་  
པའི་དོན་ཡང་། སྒྲུབ་ལྷགས་ལྷ་བྱ་གང་ལ་དམིགས་པ་གཏོད་པའི་ཡུལ་དེ་ག་ལས་  
གཞན་པའི་རྟོག་པ་གཞན་དུ་མི་འགྲོ་བའི་དོན་ཡིན་གྱི། རྟོག་པ་ཡིན་ཆད་དགག་  
དགོས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྒྲུའི་ནམ་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དེ་ག་རྟོག་པ་ཡིན་……  
པས། དེ་ཡང་བཀག་ན་དམིགས་པ་སྒྲེར་བར་འགྱུར་བས་མི་འཐད་དོ།

1. བོད་—‘ན’ ༥༦ (བོད་ཤོག་—དཔེ་དང་)



(༡༩) ཟུང་དོན་ཉམས་སུ་ཡོན་པ་ལ་དབྱུང་འཛོལ་རྒྱང་འབྲེལ་

གྱི་ལམ་མེད་མི་རྒྱང་བར་བསྟན་པ།

དེ་ཡང་ངེས་དོན་གྱི་ལམ་ནས་དག་གྱུར་ལ་བསྐྱེད་པར་འདོད་པ་དག་གིས་  
 བདག་དུ་འཛིན་པ་གང་ལ་སྐྱེ་བའི་གཞི་ཤིན་ཀྱང་གི་ཆོས་ཉམས་རང་བཞིན་མེད་པའི་  
 རྒྱལ་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་མང་དུ་དབྱུང་ནས་མཐར་དེད་དོན་ལ་ངེས་  
 བའི་ཤུགས་བསྐྱེད་དེ་མི་འབྲོ་བར་འཛིན་པའི་འཛོལ་སྒྲིམ་དང་། སོ་སོར་རྟོག་  
 བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱུང་པ་སྤེལ་མར་བྱེད་པ་གཤམ་ཆེ་ཤི། སྤྱོད་དངོན་ཡེ་ཤེས་  
 སྤྱིང་བོ་འདི་གསུང་ནས་འབྱོར་བསྒྲིམ་པའི་ལམ་ལས་<sup>1</sup> “གང་གི་ཆོ་གཉིད་ཀྱི་སྟུན་  
 བས་ནོན་དེ་དམིགས་པ་ལས་ཐོག་བར་བྱེད་པ་སེམས་ལས་སྐྱེ་བ་དེའི་ཆོ། ཆོས་  
 ལ་དབྱུང་བའི་མཚན་ཉིད་ལྟག་མཐོང་གི་སེམས་གཟིངས་བསྟོད་ལ། སྤྱོད་པ་ཉིད་  
 ལ་མཉམ་པར་བཞག་པར་བྱའོ། །འོན་དེ་ཡུལ་ཉམས་ཀྱི་ཉམ་པར་དབྱུང་བས་གློད་  
 བར་གྱུར་ན། དེ་ཡང་དོན་དམ་པ་ལ་དབྱུང་བས་དེ་ལ་དམིགས་པ་བོར་དེ་ཞི་གནས་  
 དང་ཐུན་པས་གནས་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་ན་ཅང་དབྱུང་ཆེས་པས་ཤེས་རབ་  
 ཤེས་ཆེ་བར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ། ཡང་དབྱུང་བའི་དུས་དེ་མ་ཡིན་དེ། ཞི་གནས་ཀྱི་  
 དུས་ཡིན་པས་དུས་དང་དུས་མ་ཡིན་པ་བདང་སྒྲིམས་སུ་བྱ་བ་ཚད་མར་བྱས་ནས།  
 ཡང་ཞི་གནས་ལ་གནས་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་ཞིང་། ལམ་རིམ་ཆེན་མོ་  
 ལས་<sup>2</sup>གྲང་། “དབྱུང་སྒྲིམ་མང་པས་གནས་ཆ་རྒྱང་དུ་སོང་ན་འཛོལ་སྒྲིམ་མང་

1. རྟོ་བསྟན་(དཔྱད་མ་ཀ་ ༡) 2. རྟོ་བསྟན་ཆ་-༣༠༠ (བཟུ་སྟན་-དེབ་)



ཏུ་བྱས་ལ་གནས་ཆ་སོར་གཞུགས། འཛོག་སྒྲོམ་མང་ཏུ་བྱས་པའི་སྐབས་གནས་  
 ཆ་ཆེ་བར་སོང་ནས་དབྱེད་སྤྱིང་མི་འདོད་པས་མ་དབྱེད་ན་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་ངེས་པ་……  
 བཏན་ལ་བྱགས་དྲག་པ་མི་འོང་ཞིང་། དེ་མ་བྱུང་ན་ངེས་པའི་ཁྲོག་ཕྱོགས་བདག་  
 གཉིས་ཡོད་པར་འཛིན་པའི་སྒྲོ་འདོགས་ལ་དེ་ཅས་ཏུ་མི་གནོད་པས་དབྱེད་སྒྲོམ་……  
 མང་ཏུ་བྱས་པའི་སྒྲོ་ནས་ཞི་ལྷག་གཉིས་ཆ་མཉམ་ལ་སྒྲོམ་སྟེ།” ཞེས་སོགས་  
 དང་། སྐབས་རིམ་ཆེན་མོ་ལས་ཀྱང་། “བདག་མེད་པའི་ལྷ་བས་ཉ་ཅང་དབྱེད་  
 དྲགས་ན་གོད་པ་སྒྲེ་ནས་གཡོ་བར་བྱེད་པས་བདག་མེད་ཀྱི་དོན་ལ་ངེས་པ་དྲངས་……  
 པའི་ངེས་པ་དེ་ཉིད་ཅེ་གཅིག་ཏུ་བསྐྱུང་ཞིང་ཉ་ཅང་མི་དབྱེད་དོ། དེ་ལྷར་འཛོག་  
 སྒྲོམ་བྱས་པ་ན་ཉ་ཅང་བཞག་དྲགས་པས་ཆོས་སོ་སོར་འབྱེད་པར་མི་སྒྲོ་ཞིང་ཕར་……  
 སྒྲོས་པ་ན་འཕྱོ་མི་ཉན་པར་མི་དོག་པར་བྱིལ་བྱིལ་འགྲོ་ན་ཞི་གནས་ཤས་ཆེ་བས་ཞི་  
 ལྷག་ཆ་མ་སྒྲོམས་པ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་བཞག་དྲགས་ན་ཞུམ་བཤམ་བྱིང་བ་དང་  
 སྐབས་པ་འདྲིན་པས་དེ་དག་ཏུ་འགྱུར་དེ། དཔེར་ན་དབྱེད་དྲགས་ནས་ལྷག་  
 མཐོང་ཤས་ཆེ་ན་དེའི་མཐར་གོད་པ་སྒྲེ་བ་བཞིན་ནོ། །དེས་ན་སོ་སོར་དོག་པའི་  
 ཤེས་རབ་ཀྱི་ཅལ་སྤྱོད་པའི་དབྱེད་པ་དང་། ཅེ་གཅིག་ཏུ་འཛོག་པ་གཉིས་ཀ་བྱ་  
 སྟེ།” ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་བཞིན་ཏུ་སྒྲོ་བ་དཔོན་ཉིད་ཀྱིས་མཛད་པའི་བསྒྲོམ་རིམ་གྲ་མ་ལས་<sup>2</sup> “ཡང་  
 གང་གི་ཆོ་ལྷག་མཐོང་བསྒྲོམས་པས་ཤེས་རབ་ཤིན་ཏུ་ཤས་ཆེ་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ།  
 ཞི་གནས་རྒྱང་བའི་ཕྱིར་མར་མེ་རྒྱང་ལ་བཞག་པ་བཞིན་ཏུ་སེམས་གཡོ་བས་དེ་ཁོ་  
 ན་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་མི་མཐོང་བར་འགྱུར་དེ། དེའི་ཕྱིར་དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་བསྒྲོམ་

1. ཆེ་ག་ ༡༤ (བཟ་ལྷན་-དེཔ) 2. ལྷ་-བཟན་ (དབུམ་-ཀོ་ ༡༩)



བར་བྱའོ། །ཞི་གནས་ཀྱི་ཤས་ཆེན་ཡང་གཉིད་ཀྱིས་ལོག་པའི་མི་བཞིན་དུ་དེ་ཁོ་  
ན་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་དེ། དེ་ལྟ་བུས་ན་དེའི་ཆོ་ཡང་ཤེས་  
རབ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ།” །ཞེས་དབྱུང་འཛིག་སྤེལ་མའི་ལམ་སྒྲོམ་དགོས་པའི་གྲུ་  
མཚན་དཔེ་དང་བཅས་པ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་གསུངས་སོ། །

འདི་ལྟར་འཛིག་སྒྲོམ་གྱིས་གནས་ཆ་བསྐྱབ་པ་དང་། དབྱུང་སྒྲོམ་གྱིས་སྒྲོ་  
འདོགས་གཅིད་པ་གཉིས་སྒྲ་མ་སེམས་སྤྱད་བྱེད་དང་། བྱི་མ་སེམས་འཕྲོ་བྱེད་  
ཡིན་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་སྒྲོམ་པ་ལ་འགལ་ཁྲར་སྒྲུ་བ་ནི་ཆེས་མི་དུགས་དེ།  
བསྒྲོམ་རིམ་དང་བོ་ལས།<sup>1</sup> “འདི་ལྟར་གང་གི་ཆོ་ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ་  
སེམས་བདུན་པར་བྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རབ་དུ་བདུགས་ན་ཡང་དག་པའི་  
ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུང་བ་འབྱུང་ཤི། དེའི་ཆོ་སྒྲུང་བ་འབྱུང་བས་སྒྲུན་པ་བསལ་བ་བཞིན་  
དུ་སྒྲིབ་པ་མི་འབྱུང་ངོ་། །དེ་གཉིས་ཀ་ཡང་མིག་དང་སྒྲུང་བ་བཞིན་དུ་ཡང་དག་  
པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བ་ལ་ཕན་ཚུན་མཐུན་པར་གནས་པ་ཡིན་གྱི། སྒྲུང་བ་དང་  
སྒྲུན་པ་བཞིན་དུ་མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་ཆེ་བདག་  
ཉིད་ཆེན་པོ་འི་གསུང་ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་དཀའ་གནད་རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་བཞིན་...  
བཤད་པ་ལས།<sup>2</sup> “དེ་བས་ན་ཞི་གནས་བསྒྲོམས་པས་སེམས་བདུན་པོ་རྟེན་པ་  
ནི་སྒྲུང་བ་དང་འདྲ། ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དབྱོད་པ་ནི་མིག་དང་འདྲ་  
བར་ཤེས་པར་བྱ་ཡི། ཞི་གནས་ནི་སེམས་མི་གཡོ་བར་ཅེ་གཅིག་དུ་གནས་  
པ་ཡིན་ལ། ལྷག་མཐོང་ནི་ཡུལ་ལ་དབྱོད་པ་ཡིན་པས་གཅིག་གིས་གཅིག་  
ལ་གནོད་པ་ཡིན་ནོ་སྒྲུམ་དུ་མི་བརྒྱུང་ངོ་།” །ཞེས་ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ་

1. ཐེ་—བཅུན་ (དབྱ་མ་—‘ཀེ’ 36) 2. ཆེ་—‘མ’ 477 (བཟ་ལྷན་—དེབ་)



སེམས་བདེན་པར་བྱས་པ་དང་། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁ་ན་ཉིད་ལ་  
བདེགས་ཤིང་དབྱེད་པ་གཉིས་གཅིག་གྲོགས་སུ་གཅིག་འགྲོ་བའི་ཚུལ་གསལ་བར་  
གསུངས་སོ། །

དེ་ཡང་སེམས་ལ་གནས་ཆ་བདེན་པོ་མེད་པར་དབྱེད་པ་ཤུགས་ཚུང་བ་དང་།  
མི་དབྱེད་པར་གྲོད་ནས་འཇོག་པ་ཙམ་གྱིས་གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སྒྲོ་འདོགས་...  
ཚུང་ཟད་ཀྱང་མི་ཆོད་པའི་ཕྱིར་དེ། དཔེར་ན་ལག་པ་བདེན་པོ་འི་ཤུགས་མེད་  
པར་སྙ་རེ་གཏོང་དུ་བསྐྱུན་མི་ཐུབ་ལ། སྙ་རེ་བདེན་པོར་བྱས་དེ་བཟུང་བསྐྱེད་པ་ཁོ་  
ནས་ཀྱང་ཤིང་སྤོང་ཆོད་མི་ཐུབ་པ་བཞིན་དུ། དོན་གྱི་སྐབས་འདྲིར་ཡང་ཇི་གྱང་  
ཐང་བསྐྱུན་པའི་སྒྲོན་མེས་མཛད་པའི་འཇམ་མགོན་གྲུལ་བ་གཉིས་པ་ལ་བསྐྱུན་པའི་  
སྤྱིང་པོ་གསལ་བར་མཛད་པའི་ཚུལ་ལས་བཅམས་དེ་བསྐྱེད་པའི་བསྐྱེད་པ་དོན་...  
ལྷན་ས་ལས།<sup>1</sup>

ཉོན་མོངས་འཆིང་གཅོད་ཁྱུ་སྐྱབ་ཀྱི། །

ལྷ་བའི་རལ་གྱི་འཇོན་བྱེད་བ། །

སྒྲོམ་པའི་དབྱེད་པ་བདེན་པོ་འི་ཐབས། །

མཐའ་ལས་ས་སྤེ་བཞིན་དུ་གསུངས། །ཞེས་དང་། དེའི་ཐང་  
ཀྱི་བསྐྱེད་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱ་ཆེར་འགྲེལ་བསྐྱུན་པའི་དེ་ཉིད་སྤང་བ་ལས་ཀྱང་། “ཉོན་  
མོངས་པའི་འཆིང་བ་གཅོད་པ་ལ་གཅོད་བྱེད་དངོས་ཁྱུ་སྐྱབ་ལུགས་ཀྱི་ཟབ་མོ་ལྷ་...  
བའི་རལ་གྱི་ཡིན་ཡང་། དེ་འཇོན་པའི་ཐབས་སུ་ཞི་གནས་སྐྱབ་ཚུལ་སོགས་བསྒྲོམ་  
པའི་རིམ་བ་ནམས་ས་སྤེ་ནས་འབྱུང་བ་ལྷར་ཉམས་སུ་ལེན་དགོས་པའི་ཕྱིར།”

1. ཀྱང་ཐང་ ‘ཀ’ ༩ (སྤེ་མོ་—དེ་བ་) 2. ཀྱང་ཐང་ ‘ཀ’ ༧༦ (སྤེ་མོ་—དེ་བ་)



ཞེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པ་བཞིན་སྤྱི་ཞིའི་གྲུང་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཅ་བ་བདག་འཛིན་...  
 མ་རིག་པ་ཅད་ནས་སྤོང་བ་ལ་དེ་དང་འཛིན་སྤངས་དངོས་སུ་འགལ་བ་བརྟན་པའི་  
 སྤྱིང་བོ་གནས་ལྷགས་སྤོང་བ་ཉིད་ཀྱི་དོན་དེ་ཉིད་ལེགས་པར་དབྱེད་ནས་ཚུལ་བཞིན་  
 གློམ་པ་ལ་རག་ལས་བས། དེ་ཡང་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་བཀའ་བབ་ཚུལ་མི་འདྲ་བའི་  
 དབང་གིས་རྗེ་བཙུན་འཇམ་དབལ་དབྱངས་ནས་མགོན་པོ་སྐུ་སྦྱབ་ལ་བརྒྱད་པའི་...  
 ཟབ་མེད་ལྷ་བའི་མཚན་རྟོན་དེ་ཉིད་ལེགས་པར་འཛིན་པ་ལ། རྒྱལ་བ་བྱམས་པ་  
 མགོན་པོ་ནས་འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་ལ་བརྒྱད་པའི་བསྒྲོམ་པའི་མན་ངག་ལ་ངེས་  
 པར་བརྟེན་དགོས་ཤིང་། དེ་དག་པན་ཚུན་འགལ་བ་མེད་པར་གྲོགས་སུ་བྱེད་  
 དགོས་ཚུལ་ཆེས་གསལ་པར་གསུངས་པའི་གནད་ནི། ཞི་ལྷག་རྒྱང་འབྲེལ་ལམ་  
 དབྱེད་འཛིག་རྒྱང་འབྲེལ་དགོས་ཚུལ་དེ་ཉིད་ཡིན་ནོ།

དེས་ན་འཛིག་གློམ་གྱིས་སེམས་དམིགས་པ་ལ་བརྟན་ཆགས་པར་སྤོང་བའི་  
 གནས་ཆ་སྐྱབ་པ་དང་། སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བརྟགས་ཤིང་དབྱེད་  
 པ་གཉིས་དང་ལྷན་ན་སྤང་བུ་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་འཛོམས་པ་ལ་སྤོབས་དང་ལྷན་  
 པར་འགྱུར་དེ། ཇི་ལྟར་ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་དཀའ་གནད་ལས།<sup>1</sup> “དབུ་ན་  
 ལག་པས་སྤྱ་རེ་བརྒྱངས་ནས་ཤིང་སྤོང་གཅོད་པ་ན། ལག་པ་ཤིན་དུ་འདར་ན་སྤྱ་རེ་  
 ཤིང་སྤོང་ལ་ཇི་ཅམ་བརྒྱབ་ཀྱང་ཤིང་སྤོང་གཅོད་མི་རྒྱས་པ་བཞིན་དུ། ཞི་གནས་  
 སྤོན་དུ་མ་བསྐྱབས་ན། དཔྱོད་པའི་སེམས་ལ་གནས་པའི་ཅི་འབྱར་གྱི་མེད་པས་ཇི་  
 ཅམ་དབྱེད་ཀྱང་མི་མཐུན་ཕྱོགས་འཛོམས་པའི་སྤོབས་མི་འཇུང་ངོ། །སྤོབས་ལྷན་  
 གྱི་ལག་པ་ཤིན་དུ་བརྟན་པས་ནོ་བའི་སྤྱ་རེ་བརྒྱངས་ནས་བཅད་ན་ཤིང་སྤོང་སྐར་དུ་

1. ཇི་ལྷག་ ༤༠༩ (གཟུ་རྒྱན་-དེལ་)



གཅོད་ཀྱས་པ་བཞིན་དུ། ཞི་གནས་ཀྱི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཤིན་དུ་བརྟན་པའི་ལག་པས་  
 བརྒྱང་བའི་སེམས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་རྟོན་བོ་བོགས་དེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་  
 དབྱུང་བ་གོམས་ན། མི་མཐུན་ཕྱོགས་འཇམས་པའི་སྟོབས་དང་ལྷན་པར་འགྱུར་  
 རོ།” །ཞེས་དང་། དེ་བཞིན་དུ་བསྒྲུབ་རིམ་དང་བོ་ལས།¹ “དེ་ལྟ་བུ་ན་དྲིང་  
 ངེ་འཛིན་གྱི་ལག་གིས་སེམས་བརྒྱང་སྟེ། ཤིན་དུ་ཆ་ཕྱ་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་  
 གྱིས་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་ལོག་པར་ནམ་པར་རྟོག་པའི་ས་བོན་གྱི་རྒྱལ་རྒྱ་……  
 སེམས་དེ་ལ་ཡོད་པ་བསལ་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བྱས་ན་རྩ་བ་ནས་རྒྱང་བའི་ཤིང་  
 དག་ས་ལས་མི་སྦྱེ་བ་བཞིན་དུ་རྩ་བ་མེད་པས་ན་ལོག་པར་ནམ་པར་རྟོག་པའི་……  
 སེམས་ཀྱང་སྦྱེ་བར་མི་འགྱུར་རོ”། ཞེས་ཤིན་དུ་གསལ་བར་གསུངས་པའི་སྤྱིར་རོ།

མདོར་བསྡུས་ན་ཇི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འི་ལམ་རིམ་བསྡུས་དོན་ལས།³

ཆེ་གཅིག་བསམ་གཏན་ཅམ་ལ་འཁོར་བ་ཡི། །

རྩ་བ་གཅོད་པའི་ཀྱས་པ་མ་མཐོང་ཞིང་། །

ཞི་གནས་ལམ་དང་བྲལ་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས། །

ཇི་ཅམ་དབྱུང་ཀྱང་ཉོན་མོངས་མི་ལྡོག་བས། །

ཡིན་ལྷགས་སྤྱུ་ཐག་ཆོད་པའི་ཤེས་རབ་དེ། །

གཡོ་མེད་ཞི་གནས་ཏྲ་ལ་བསྒྱུན་ནས་ནི། །

མཐའ་བྲལ་དབྱུང་མའི་རིགས་པའི་མཚན་རྟོན་གྱིས། །

མཐར་འཛིན་དམིགས་གཏད་ཐམས་ཅད་འཇིག་བྱེད་པའི། །

1. ཟླ་བ་ལྷན་ (དབྱུང་མ་ཀེ་ ༣༤) 2. ཇི་ལ་ ༡༣༤ (བཟླ་ལྷན་-དེབ་)



ཚུལ་བཞིན་དབྱེད་པའི་ཡངས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས། །

དེ་ཉིད་དོགས་པའི་སྒྲ་བྲིས་བྱས་པར་མཛད། །ཅེས་སེམས་  
དམིགས་པ་ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་བའི་ཞི་གནས་ཅམ་ཤིས་འཁོར་བའི་ཅ་བ་……  
བདག་འཛིན་སྤོང་མི་བྱས་ལ། དེ་བཞིན་དུ་ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་སོ་སོར་དོག་  
པའི་ཤེས་རབ་ཅམ་ཤིས་ཀྱང་ཉན་མོངས་པ་ལྡོག་མི་བྱས་སོ། །དེས་ན་གནས་  
ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སྤྱུ་ཐག་ཆོད་པའི་ཤེས་རབ་དེ་ཉིད་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་བའི་ཞི་……  
གནས་ཀྱི་དྲ་ལ་བསྐྱོན་ནས་སྤེ་དེ་གཉིས་རྒྱུ་དུ་སྤྱེལ་དོ། །དྲིལ་ཆད་ཀྱི་མཐའ་དང་  
བྲལ་བའི་དབྱ་མའི་རིགས་པའི་མཚོན་རྟོན་ལ་བདེན་ནས་བདག་དུ་འཛིན་པའི་ཞེན་  
ལྷལ་ཅད་ནས་འབྱེད་པར་བྱེད་པའི་ཚུལ་བཞིན་དབྱེད་པའི་ཡངས་པའི་ཤེས་རབ་……  
འབྱུང་ལ། ཤེས་རབ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དོགས་པའི་སྒྲ་བྲིས་བྱས་པར་མཛད་  
ཅེས་ཇི་སྐད་གསུངས་པའི་དོན་ལ་ངས་བ་དྲང་བར་བྱུངོ། །

གཉིས་པ་གང་བསྐྱོས་པར་བྱ་བྱའི་ཆོས་ཀྱི་ནམ་གངས་བཤད་པ།

དེ་ཡང་རང་རྒྱུད་ལ་གང་མངོན་དུ་གྱུར་སྒྲ་ཞིང་གོམས་འདྲིས་ཆེ་བའི་ཉན་མོངས་  
དེ་དག་གི་གཉེན་པོ་དེ་ཆོས་སྤྱུ་གང་ཞིག་བསྐྱོས་པར་བྱ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་འཕགས་  
བ་ཐོགས་མེད་ཀྱིས་མཛད་པའི་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ས་ལས།<sup>1</sup> “གལ་དེ་འདྲོད་ཆགས་  
སྤྱད་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི། མི་རྒྱལ་པ་ལ་སེམས་ཉེ་བར་གཏོད་པར་བྱེད་དོ། །ཞེ་  
སྤང་སྤྱད་པ་ཞིག་ཡིན་ན་ནི་བྱམས་པ་ལའོ། །ནམ་པར་དོག་པའི་བར་དུ་སྤྱད་པ་  
ཞིག་ཡིན་ན་ནི། དབྱུགས་རྒྱུ་བ་དང་། དབྱུགས་འབྱུང་བ་དྲན་པའི་བར་ལའོ། །

1. ཐེ་—བཟུན་ (ཁམས་ཅམ་—ཐོ་ ༡༩༢)



ཚ་མཉམ་པར་སྤྲད་པ་དང་། ཉེན་མེད་པ་རྒྱུད་པའི་རང་བཞིན་ཅན་ཞིག་ཡིན་ན་ནི།  
དམེད་པ་གང་ལ་དགའ་བ་སྤྱི་བར་འགྱུར་བ་དེར་རབ་དུ་བརྩོན་པར་བྱེད་པ་ལྟེ།”  
ཞེས་སོགས་གསུངས་པ་བཞིན་འདོད་ཆགས་ཀྱི་གཉེན་པོར་མི་སྤྲུག་པ་དང་། ཞེ་  
སྤང་གི་གཉེན་པོར་བྱམས་པ་སྒྲོམ་པ་སོགས་གསུངས་སོ།།

སྤྱིར་བསྒྲོམ་བྱའི་ཚེས་ལ་དེན་འབྲེལ་ལྷགས་འབྱུང་ལྟོག་དང་། དལ་འབྱུར་  
ཆེད་དགའ་དང་འཆི་བ་མི་དྲག་པ། བྱམས་སྤྱིང་ཇི་བྱང་ཐུབ་ཀྱི་སེམས་དང་།  
ཡང་དག་པའི་ལྷ་བ་དང་ཞི་ལྷག་སོགས་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་ཡོད་པས་བཞེད་ཀྱི་  
མི་ལང་མོད། འོན་ཀྱང་འདྲིར་སྐབས་འབྲེལ་གཞུང་འདྲིའི་བཞེད་བྱའི་གཙོ་བོ་  
དང་། དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱིའི་ཆེད་སེམས་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྲད་བྱེད་ཞི་  
གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ནམ་བཞག་ཅུང་ཟུང་བཤད་པར་བྱའོ།

གསུམ་པ་འདྲིར་བསྐྱར་བསྒྲོམ་བྱའི་གཙོ་བོ་ཞི་ལྷག་གི་ནམ་བཞག་བཤད་པ།

### (༡) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ཕན་ཡོན།

ཐེག་པ་ཆེ་རྒྱུད་གི་ཡོན་ཏན་འཛིན་དེན་དང་འཛིན་དེན་ལས་འདས་པ་ཇི་སྟེད་  
ཅིག་གསུངས་པ་ཐམས་ཅད་བསམ་གཏན་གྱི་ངོ་བོ་ཞི་གནས་དང་། ཤེས་རབ་  
གྱི་ངོ་བོ་ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བྱ་ཡིན་པར་དགོངས་འབྲེལ་ལས་<sup>1</sup>གསུངས་དེ།  
“བྱམས་པ། ཡང་ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱི་འཇམ། བྱང་ཐུབ་སེམས་དབའ་ནམས་  
ཀྱི་འཇམ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཀྱི་དགའ་བའི་ཚེས་འཛིན་དེན་པ་དང་།  
འཛིན་དེན་ལ་འདས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བྱ་……

1. ཐྱི་—བཀའ་ (མདོ་ཅ་ ༣༤)



ཡིན་པར་རིག་བྱའོ།” ཞེས་དང་། ཡང་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup>

སྟེ་བ་བོ་ཡི་ལྷག་མཐོང་དང་།

ཞི་གནས་གོམས་པར་བྱས་ན་ནི།

གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཛིང་བ་དང་།

མཚན་མའི་འཛིང་ལས་ནྟེ་གྲོལ་འགྱུར། ཞེས་གསུངས་

ཤིང་དོན་དེ་ཉིད་ཤུན་ཏི་བ་སྟེ། རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བས་མཛད་པའི་ཤེས་

རབ་ཀྱི་པ་རྣམ་དུ་སྤྱིན་པ་བསྒྲོམ་པའི་མན་ངག་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་།

ཞི་གནས་དང་ནི་ལྷག་མཐོང་དག།

བསྒྲོམས་པས་གནས་ངན་ལེན་དང་ནི།

མཚན་མ་ཡི་ནི་འཛིང་བ་ལས།

ནྟེ་འབྱུང་བ་ནི་གྲོལ་བར་འགྱུར། ཞེས་གསུངས་པ་བཞེན་

ཡུལ་ཅན་སྤྱིན་ཅི་ལོག་གོང་ནས་གོང་དུ་བསྐྱེད་པའི་རྣམ་པ་སེམས་རྒྱུད་ལ་གནས་

པའི་བག་ཆགས་གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཛིང་བ་དང་། དེ་གསོ་བར་བྱེད་པ་ཡུལ་

སྤྱིན་ཅི་ལོག་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་བག་ཆགས་མཚན་མའི་འཛིང་བ་གཉིས་ལས་

སྡུ་མ་ལྷག་མཐོང་དང་། སྤྱི་མ་ཞི་གནས་ཀྱིས་སྤོང་བ་བཀྲུང་དེ་ཉིད་ཀྱི་རྣམ་

བཤད་དུ་ཡང་གསལ་བར་གསུངས་སོ།

དེ་དག་ནི་ཞི་ལྷག་གི་ཐ་སྙད་བདགས་པའི་ཕན་ཡོན་ཡིན་གྱི། ཐ་སྙད་དེ་མ་

བདགས་ཀྱང་དོན་འདྲ་བས་བསམ་གཏན་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕན་ཡོན་གང་གསུངས་

པ་ནམས་ཀྱང་འདི་གཉིས་ཀྱི་ཕན་ཡོན་དུ་ཤེས་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

1. ཟླ་བཀའ་ (མདོ་ཅེ་ ༩) 2. ཟླ་བཀའ་ (སེམས་ཅམ་ཏེ་ ༡༣༠)



(2) དེ་གཉིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བསྐྱེད་བྱེད་དུ་བསྟན་པ།

དེ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་གི་དྲིང་ངེ་འཛིན་མཐའ་ཡས་པ་ཞིག་བཀའ་སྤྱུལ་བ་  
 ཐམས་ཅད་ཀྱང་གང་དུ་འདུས་པའི་གནད་རམ་པ་ནི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་...  
 ཡིན་དེ། དགོངས་འགྲུལ་ལས།<sup>1</sup> “བྱམས་པ། ངས་ཉན་ཐོས་ནམས་དང་། བྱང་  
 རྩལ་སེམས་དཔའ་ནམས་དང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཀྱི་དྲིང་ངེ་འཛིན་  
 རྣམ་པ་དུ་མ་བསྟན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ཞི་གནས་དང་། ལྷག་  
 མཐོང་གིས་བསྐྱེད་པར་རིག་པར་བྱའོ།” ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་བསྐྱེད་  
 རིམ་བར་པ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་། “དེ་གཉིས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་པའི་  
 ཕྱིར་ནལ་འབྱོར་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ངེས་པར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་  
 མཐོང་བསྟེན་པར་བྱ་སྟེ།” ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དོན་དེ་ཉིད་ཀྱི་སྤྱུལ་ཡོན་  
 དན་གྱི་མཚོ་འི་ཤེས་བྱ་ཀྱན་ཁུབ་ལས།<sup>3</sup>

ཐེག་པ་ཆེ་ཆུང་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་མཚོ་འི་ཆིངས།

ཞི་གནས་ལྷག་མཐོང་གཉིས་ཀྱིས་ངེས་པར་བཅའ། ཞེས་སོགས་  
 གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

(3) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ངོ་བོ།

དེ་ཡང་བསྐྱེད་རིམ་བར་པ་ལས།<sup>4</sup> “ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་ནམ་པར་གཡེང་  
 བ་ཞི་ནས་ནང་དུ་དམིགས་པ་ལ་རྒྱན་དུ་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པ་ལ་དགའ་བ་...”

1. ཐེ་-བཀའ་ (མདོ་ཙ་ 30) 2. ཐེ་-བསྟན་ (དབུ་མ་ཀྱི་ 100)

3. ཀོང་སྤྱུལ་མ་ 333 (ཐེ་ལེ་-དཔེ་ཤུང་) 4. ཐེ་-བསྟན་ (དབུ་མ་ཀྱི་ 100)



དང་ཤིན་ཏུ་སྤངས་པ་དང་ལྷན་པའི་སེམས་ཉིད་ལ་གནས་པ་ནི་ཞི་གནས་ཞེས་བྱའོ།  
 ༡ ཞི་གནས་དེ་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་ཆོ་དེ་ཁོ་ན་ལ་ནམ་པར་དབྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་  
 ནི་ལྷག་མཐོང་ཡིན་ཏེ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྷན་སེམས་ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་ནམ་  
 བར་གཡང་བ་ཞི་ནས་ནང་དུ་དམིགས་པ་ལ་ཚེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་བའི་དགའ་བ་དང་  
 ཤིན་སྤང་གིས་ཟིན་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཞི་གནས་ཀྱི་དོན་དང་། ཞི་གནས་ཀྱི་ངང་  
 ནས་རང་གི་དམིགས་པ་ལ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱེད་པ་བྱས་སྟོབས་  
 ཀྱིས་དྲངས་པའི་ཤིན་སྤང་གིས་ཟིན་པའི་ཤེས་རབ་ལྷག་མཐོང་གི་དོན་ཡིན་ཏེ།  
 འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་གྲིན་ལས།<sup>1</sup> “ཞི་གནས་ནི་སེམས་ཚེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ།  
 ལྷག་མཐོང་ནི་སོ་སོར་རྟོག་པའོ།” ཞེས་གསུངས་ཤིང་། མདོ་སྡེ་བུན་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་།

ཆོས་ཀྱི་མིང་ནི་བསྟོམས་པའང་འདི།

ཞི་གནས་ལས་དུ་ཤེས་པར་བྱ།

ལྷག་མཐོང་ལས་ནི་དེའི་དོན་རྟོགས།

ནམ་པར་དབྱེད་པར་ཤེས་པར་བྱ། ཞེས་ཡང་དག་པའི་

དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་བརྟེན་ནས་སེམས་ཚེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་བ་ཞི་གནས་དང་། ཆོས་  
 རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པའི་ཤེས་རབ་ལ་ལྷག་མཐོང་དུ་གསུངས་སོ། །ཤུན་  
 པའི་ཤེས་ཕྱིན་མན་ངག་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་མདོ་སྡེ་དགོངས་འབྱེད་ཁྱད་སྤངས་སྟུ་མཛད་ནས།  
 རི་ལྷ་བ་དང་། རི་སྟེང་པའི་དོན་ལ་མི་རྟོག་པར་ཚེ་གཅིག་དུ་འཛོལ་བ་ཞི་གནས་  
 དང་། ཡུལ་དེ་གཉིས་ལ་ནམ་པར་དབྱེད་པ་ལྷག་མཐོང་དུ་གསུངས་སོ། །

1. ལྷ་-བཀའ་ (མདོ་ལྷ་ ༡༢) 2. ལྷ་-བཀའ་ (ཞེས་པ་ཚམ་ལོ་ ༡༠)

3. ལྷ་-བཀའ་ (ཞེས་པ་ཚམ་ལོ་ ༡༢༤)



(༡) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གཉིས་ཀྱི་སྒྲིབ་དགོས་པའི་སྒྲིབ་མཚན།

དེ་ཡང་མར་མེ་ཆེས་གསལ་བ་དང་། རྒྱུད་གིས་མི་གཡོ་བ་གཉིས་དང་  
ལྷན་ན། གང་བལྟ་བུའི་གཞུགས་ནས་གསལ་བར་མཐོང་ནས་བ་དེ་བཞིན་དུ།  
དོན་གྱི་སྒྲིབ་པ་འདྲིར་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལ་བལྟ་བའི་ཆོན་པ་དང་། ཡང་དག་པའི་  
དོན་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པར་ངེས་པའི་ཤེས་རབ་དང་། དམིགས་པ་ལ་ཇི་ལྟར་འདོད་  
པ་བཞིན་དུ་གནས་པའི་བསམ་གཏན་གཉིས་དང་ལྷན་ན། གནས་ལྷགས་སྒྲིབ་པ་  
ཉིད་ཀྱི་དོན་ཇི་ལྟར་བཞིན་གསལ་བར་མཐོང་བའི་སྒྲིབ་པ་། ཁོན་དེ་ལ་དགོངས་  
ནས་སྒྲིབ་དཔོན་ཉིད་ཀྱི་བསྒྲིབ་རིམ་བར་བ་ལས།<sup>1</sup> “ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་  
ལྷག་མཐོང་འབྲལ་ཞིག་གིས་ནི་ནྟེ་འགྱུར་བའི་སེམས་ཡུལ་ལ་ནམ་བར་གཡོང་...  
བར་འགྱུར་གྱི། རྒྱུད་གི་ནང་ན་འདུག་པའི་མར་མེ་བཞིན་དུ་བདན་པར་མི་འགྱུར་  
པོ། ཁོ་བས་ན་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་འགྱུར་སྟེ། དེ་ལྟ་  
བས་ན་གཉི་ཀ་འདྲ་བར་བཞེན་པར་བྱའོ” ཞེས་གསུངས་ཤིང་། དེ་བཞིན་  
དུ་ཀོང་སྒྲུལ་གྱི་ཤེས་བྱ་ཀུན་ཁྲབ་ལས།<sup>2</sup>

རྒྱུད་གིས་མི་གཡོ་མར་མེ་གསལ་བ་བཞིན།

གཉིས་ཀྱི་ཆོགས་པས་གནས་ལྷགས་དེ་ཉིད་དོགས། ཞེས་དང་།

ཟླ་བ་སྒྲིན་མའི་མདོ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་ཇི་སྟེད་དུ།

1. ཟླ་བ་སྒྲིན་ (དབུ་མ་ཀྱི་ ༤༦) 2. ཀོང་སྒྲུལ་—‘སྒྲུ’ ༣༣༦ (སྒྲེ་གི་—དཔེ་ཐུང་)

3. ཟླ་བ་སྒྲིན་ (མདོ་དུ་ ༢༠) ཟླ་བ་སྒྲིན་མའི་མདོ་དུང་དྲུང་དེ་འཛིན་ལྷག་པོ་འི་མདོ་ཞེས་པ་མཚན་

ཐ་དང་དུ་བཞུགས་པ་ལས་མདོ་ཐ་དང་པ་ནི་མ་ཡོན་ནོ།



ཞི་གནས་སྟོབས་ཀྱིས་གཡོ་བ་མེད་པར་འགྱུར།།

ལྷག་མཐོང་གིས་ནི་རི་དང་འདྲ་བར་འགྱུར། །ཞེས་ཟབ་བྱས་

ཀྱི་དོན་སྒྲོམ་པའི་ཆོ་སེམས་དམིགས་པ་ལ་མི་གཡོ་བར་གར་བཞག་དུ་བཏན་པར་...  
གནས་པའི་ཞི་གནས་ཀྱི་ལག་རྒྱུས་དང་། བདག་དུ་ལྷ་བ་ལ་སོགས་པ་ལྷ་བ་ངན་  
པའི་པས་ཀྱི་གྲོལ་བས་བསྐྱེད་མི་རྣམས་པ་རི་དང་འདྲ་བའི་ལྷག་མཐོང་གི་ལག་རྒྱུས་  
དང་ལྷན་དགོས་པའི་ཕྱིར་རོ།

(༡) ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་གོ་རིམ་ངེས་ཚུལ།

བྱུང་བའི་སྐབས་པོ་ཞི་བ་ལྷའི་སྟོན་འཇུག་ལས།<sup>1</sup>

ཞི་གནས་རབ་དུ་ལྷན་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས།

ཉོན་མོངས་རྣམ་པར་འཛོམས་པ་ཤེས་བྱས་ནས།

ཐོག་མར་ཞི་གནས་བཅའ་བྱ་.....། །ཞེས་གསུངས་པ་ལྷར་སྟོན་

ལ་ཞི་གནས་བསྐྱབས་ནས། དེ་ལ་བཏེན་ནས་ལྷག་མཐོང་བསྒྲོམ་དགོས་པ་ཡིན་ནོ།།  
དེ་ཡང་གཞུང་འདིའི་ཐད་ཀྱི་བྱུང་ཚབ་རྒྱུད་འཇུག་འབྲེལ་པར།<sup>2</sup> “དགོ་བའི་  
དམིགས་པ་གང་ལ་རྩེ་གཅིག་པ་གོམས་པར་བྱས་པས་བྱིང་གོད་དང་བྲལ་དེ།

ལུས་སེམས་ཤིན་དུ་སྦྱངས་པའི་བདེ་བ་འདྲེན་པའི་ཞི་གནས་ཀྱི་དྲ་དང་རབ་དུ་ལྷན་  
པའི་སྟོང་ཉིད་དོགས་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས་ཁམས་གསུམ་གྱི་ཉོན་མོངས་པ་ས་བོན་  
དང་བཅས་པ་རྣམ་པར་འཛོམས་པར་ཤེས་པར་བྱས་ནས། གནས་ལྷགས་ཀྱི་  
དོན་ལ་དབྱུང་བ་བྱས་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་ཤིན་སྦྱངས་འདྲེན་རྣམས་པའི་ལྷག་མཐོང་.....

1. ལྷ་-བཟུན་ (དབྱ་མ་ལ་ ༢༩) 2. ལྷ་ཚབ་པ་ ༡༤༡ (སྟོན་པོ་-དབྱ་གཞུགས་)



བུ་སྐྱུ་བ་པ་བྱ་ལ། དེ་ལ་ཡང་ཐོག་མར་ཞི་གནས་བཅའ་བར་བྱ་སྟེ། ཞི་གནས་  
 སྡོན་ལ་མ་བསྐྱུ་བས་བར་ལྷག་མཐོང་སྟེ་མི་སྤྲོད་བའི་ཕྱིར་དོ།” །ཞེས་དང་།  
 མཁས་གྲུབ་ཆེད་ཀྱི་གསུང་ལྟ་བུར་སྟོན་སེལ་སྟོན་མེ་ལས།<sup>1</sup> “དེ་ལ་ཞི་གནས་ནི་ལྷག་  
 མཐོང་ཐོག་མར་རྒྱུད་ལ་སྟེ་བའི་ཐབས་དང་། སྟེས་ནས་ལྷག་མཐོང་གིས་སྤང་  
 བྱ་སྟོང་བ་དང་། ཡོན་དན་སྐྱུ་བ་བའི་གྲོགས་སུ་རྒྱུད་ཏུ་འབྲེལ་དགོས་པ་ཡིན་  
 གྱི། དེ་གཉིས་ལས་ཀྱང་གཙོ་བོ་ནི་ལྷག་མཐོང་ཡིན་ཞིང་།” ཞེས་ལྷག་མཐོང་  
 རྒྱུད་ལ་སྟེ་བ་ལ་ཞི་གནས་སྡོན་ཏུ་འགྲོ་དགོས་དེ་དའི་ཐབས་སམ་རྒྱུར་གསུངས་མོ།  
 བའི་ཕྱིར་དོ།

དོན་དེ་ལ་དགོངས་ནས་ཆེ་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་འི་དགེ་སྦྱོར་གྱི་གནད་ཀྱི་དེ་བ་  
 ལྷན་བསྐྱུ་བ་ལྷག་བསམ་རབ་དཀར་ལས།<sup>2</sup> “ད་འོན་སྟོམ་ཆེན་ནམས་ལྟ་སྟོམ་  
 ལ་གཙོ་བོར་འབད་བ་ལགས་ན། ལྷ་བ་སྟོང་ཉིད་དྲགས་བའི་སྟོ་དེ་སྟོམ་པ་ཞི་  
 གནས་དང་མ་བྲལ་བ་ཞིག་དགོས་དེ། དེ་བྱུང་ན་ལྟ་སྟོམ་རྒྱུད་འབྲེལ། ཞི་ལྷག་  
 རྒྱུད་འཇུག་ཏུ་འགྲོ་བ་ཡིན་ལ། དེ་ལ་ཡང་དང་པོར་འབྱར་ཅི་དང་འདྲ་བའི་ཞི་  
 གནས་བདེན་པོ་མེད་ན་སྟོང་བ་ཉིད་ལ་སེམས་བཅར་དེ་སྟོད་མི་ཉུས་ལ། སྟོང་ཉིད་  
 ལ་སེམས་བཅར་གནས་བའི་མཉམ་བཞག་བཟང་པོ་མེད་ན་ཆེས་ཐོབ་དུ་སྤང་བ་མོ།  
 རྣམས་སྐྱུ་མ་ལྟ་བུར་འཆར་ས་མེད་པས་ན། ལྷག་མཐོང་ངམ་ངམ་དོན་སྟོམ་བའི་  
 སྡོན་ལ་ཞི་གནས་གཤམ་ཆེ་ཞིང་།” ཞེས་གསུངས་སོ།

དེས་ན་གསུང་རབ་དགོངས་འབྲེལ་རྣམས་སུ་པར་ཕྱིན་དུག་གི་ནང་ཚན་བསམ་  
 གཏན་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་ཀྱི་རིམ་པ་དང་། ལྷག་པ་དྲིང་འཛིན་གྱི་བསྐྱུ་བ་

1. མཁས་གྲུབ་‘ད’ ༤༢༠ (སྟོ་མེ་—དཔེ་གཞུགས་) 2. ཆེ་ཀུན་ལོ་ཐུ་ ༡༢༠ (བཟུ་ལྷན་—དེ་བ)



ལ་བདེན་ནས་ལྷག་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་བསྐྱབ་བ་སྟེ་བའི་རིམ་པ་ནམས་ཀྱང་། ཞི་  
གནས་སྤྱན་ལ་བསྒྲུབས་ནས་ལྷག་མཐོང་ཕྱིས་སྒྲུབ་བའི་རིམ་པ་དང་གནད་པ་ཞིག་  
གོ།

(༦) ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་བསྒྲུབ་ཚུལ་དངོས་བཤད་པ།

དང་པ་ཞི་གནས་བསྒྲུབ་ཚུལ་ནི།— དེ་ཡང་བསྒྲུབ་རིམ་ནས་གསུངས་པ་  
ལྟར་གྱི་ཚུལ་བྲིམས་ནས་བར་དག་པ་སོགས་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་ནམས་ལ་ལེགས་  
བར་གནས་ནས། ཡིད་དང་མཐུན་བའི་གནས་སུ་དྲན་པ་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ། ལུས་  
ཀྱི་འདུག་ལུགས་ལུས་ནམ་སྤང་ཆོས་བདུན་ལྷན་གྱི་སྒྲོན་སྒྲོམ་དགོས་ལ། དེ་  
ཡང་སེམས་དམིགས་པ་ལ་གཏོད་པའི་སྤྲོན་དུ་ཇི་ལྟར་བྱ་བ་དང་། དམིགས་པ་  
ལ་སེམས་གཏོད་པའི་དུས་སུ་སེམས་གང་ལ་འཛོལ་བའི་གཞི་དམིགས་པ་ངོས་...  
བརྒྱང་བ་དང་། དེ་ལ་སེམས་ཇི་ལྟར་གཏོད་པའི་ཚུལ་དང་། གཏོད་པའི་འོག་  
དུ་བྱིང་ཚོད་བྱང་བའི་དུས་སུ་དེའི་རྒྱ་ངོས་བརྒྱང་ནས་དེ་མི་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་གཉེན་  
པོ་བསྐྱེན་ཚུལ་དང་། བྱིང་ཚོད་བྱལ་བའི་དུས་སུ་ཇི་ལྟར་བྱ་བ་དང་། དེ་ལ་  
བདེན་ནས་སེམས་གནས་དབྱ་སྟེ་བའི་ཚུལ་དང་། དེ་དག་སྟོབས་དུག་གིས་འགྱུ་  
ལུགས་དང་། ཡིད་བྱེད་བཞིས་སྤྲད་ཚུལ་ནམས་ལེགས་བར་ཤེས་ནས་སྒྲུབ་ན་  
ཏིང་ངེ་འཛིན་སྟོན་མེད་པ་བདེ་ཆེག་དུ་འགྱུ་བར་འགྱུར་རོ། །

གཉིས་པ་ལྷག་མཐོང་བསྒྲུབ་ཚུལ་ནི།— དེ་ཡང་ལྷག་མཐོང་གི་རྒྱ་ཚོགས་  
གསུམ་བསྒྲུབ་རིམ་ལས་གསུངས་པ་ལྟར། གསུང་རབ་ཀྱི་གནད་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་  
བར་མཐུན་བའི་མཁས་པ་ལ་བདེན་ནས། སྤྱི་མ་མེད་པའི་གཞུང་ལུགས་ལ་ཐོས་



བསམ་གྱི་སྒྲོ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དྲེ་བའི་ལྷ་བ་བསྐྱེད་པ་ནི་ལྷག་མཐོང་གི་རྒྱ་ཚོགས་  
མེད་དུ་མི་རུང་བ་ཡིན་དུ། ཡིན་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་སྤྱུ་ཐག་ཚད་བའི་ལྷ་བ་མེད་པར་  
ཇི་ལྷ་བ་དོགས་པའི་ལྷག་མཐོང་གི་དོགས་པ་སྐྱེ་མི་སྤྱིད་པའི་སྤྱིར་རོ།

དེ་འདྲ་བའི་ལྷ་བ་དེ་ཡང་རྒྱུད་དོན་ལ་མི་དོན་ངེས་དོན་ལ་དོན་པ་ཞིག་གིས་  
བཅའ་དགོས་པས་རྒྱུད་ངེས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཤེས་ནས། ངེས་དོན་སྤྱོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ལྷ་  
བ་དེ་ཉིད་གཏན་ལ་འབེབས་དགོས་སོ། །དེ་ལ་ཡང་རིགས་པའི་དགག་བྱ་ལེགས་  
པར་ངོས་ཟིན་པར་བྱས་ནས། དེ་འགོག་པ་ཐལ་རང་གང་གི་བྱེད་པ་ལ་བརྟེན་ཚུལ་  
དང་། བྱེད་པ་དེ་ལ་བརྟེན་ནས་ལྷ་བ་རྒྱུད་ལ་བསྐྱེད་ཚུལ་ལ། ཚེས་དང་གང་  
ཟག་གི་བདག་མེད་པ་གཏན་ལ་འབེབས་ཚུལ་དང་། བདག་མེད་པའི་ལྷ་བ་དེ་  
བསྐྱེམས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་སྤྱིབ་པ་སྤྱོད་ཚུལ་ནམས་གཞུང་ཆེན་པོ་འི་དགོངས་པ་……  
བཞིན་ལེགས་པར་ཤེས་པར་བྱས་ནས། བདག་མེད་པའི་དོན་ལ་རིགས་པའི་  
ནམ་གངས་མཐའ་ཡས་པའི་སྒྲོ་ནས་བཏགས་ཤིང་དབྱེད་པར་བྱེད་པའི་སོ་སོར་དོག་  
པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ལེག་པར་དབྱེད་ནས་སྤྱོད་པའི་བདག་མེད་པའི་ནམ་པ་ཅན་གྱི་  
ལྷག་མཐོང་སྒྲོམ་པ་ནི། ཇི་ལྷ་བ་ལ་དམིགས་པའི་ལྷག་མཐོང་བསྐྱེམ་ཚུལ་ཡིན་ནོ།

ཉོན་མེངས་མངོན་འགྱུར་བ་སྤྱོད་པའི་སྤྱིར་ཞི་རགས་ནམ་ཅན་དུ་སྒྲོམ་པ་དང་།  
ཤེར་སྤྱིན་མན་ངག་སོགས་སྤྱུ་གསུངས་པ་ལྟར་ཁམས་བཅོ་བརྒྱད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་……  
ནམ་པར་འབྱེད་པ་སོགས་ཇི་སྟེད་པའི་དོན་ནམས་ནམ་པར་སྤྱེ་ནས་སྒྲོམ་པའི་ལྷག་  
མཐོང་ནི། ཇི་སྟེད་པ་ལ་དམིགས་པའི་ལྷག་མཐོང་བསྐྱེམ་ཚུལ་དུ་གསུངས་སོ། །



དེ་བཞིན་དུ་བརྒྱུ་མ་མི་ཐ་མ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་། “ཆེ་ཕྱེ་གང་གི་ཆེ་བྱིང་བ་དང་

1. ལྷོ་-བུལ་(ཁེམ་ཙམ་ཁོ་ ༡༩༤ )    2. ལྷོ་-བུལ་(རུ་མ་ཀ་ ༡༩ )



གོད་པ་ལས་དབེན་པའི་ཕྱིར་མཉམ་པར་ལྷགས་ཤིང་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པས་  
 དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་ཤིན་དུ་གསལ་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ། ཚུལ་བ་སྟོད་ལ་བདང་  
 རྟོམས་སུ་བྱ་སྟེ། དེའི་ཚེ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་འབྲེལ་བའི་ལས་གྲུབ་  
 པ་ཡིན་པར་རེག་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །དེས་ན་ཞི་ལྷག་མཚན་ཉིད་  
 པ་མ་ཐོབ་པའི་གོང་དུ་སོ་སོར་རྟོག་པའི་དབྱེད་སྒོམ་གྱི་རང་སྟོབས་ཀྱིས་མི་རྟོག་...  
 པའི་གནས་ཆ་འདྲེན་མི་རྒྱས་པས་དབྱེད་སྒོམ་དང་འཇོག་སྒོམ་གཉིས་ཚུལ་བ་སོ་...  
 སོ་སོ་སོར་བསྒོམ་དགོས་པ་ལ། དེ་གཉིས་ཐོབ་ནས་ལྷག་མཐོང་གི་ངོ་བོར་གྱུར་  
 པའི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་དབྱེད་སྒོམ་བྱས་པ་ཉིད་ཀྱིས་གནས་ཆ་བདེན་པོའི་ཞི་གནས་  
 འདྲེན་པར་རྒྱས་པས་ན་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་འབྲེལ་བར་གསུངས་སོ། །

དེ་ལྟར་བསམ་གཏན་གྱི་ངོ་བོ་ཞི་གནས་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ལྷག་མཐོང་  
 གི་ནམ་བཞག་དང་། རི་ལྟར་བསྒོམ་ཚུལ་སོགས་ཞིབ་ཅིང་གྲུས་པ་ས་སྟེ་ལྟ་དང་།  
 རྟོམ་ནམ་གཉིས། རེགས་ཚོགས་དུག །བྱམས་ཆོས་སྟེ་ལྟ། དབྱ་མ་སྟིང་བོ།  
 སྟོད་འཇུག་དང་བསྒོམ་རིམ་གསུམ་སོགས་ཤིང་དྲ་ཆེན་པོ་དག་དང་། མཁས་  
 པའི་དབང་བོ་རྣམས་ཀྱི་གཞུང་ལྷགས་ལ་ངེས་པར་བདེན་པར་བྱའོ། །དོན་དེ་ལ་  
 དགོངས་ནས་རྗེ་གྲུང་ཐང་གི་གསུང་བསྟོད་པ་དོན་ལྡན་མའི་རྒྱ་ཆེར་འབྲེལ་ལས།<sup>1</sup>  
 “དེ་སོ་སོར་ཤིང་དྲ་ཆེན་པོ་གཉིས་ལ་གཙོ་བོར་བདེན་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་ནི།  
 སྦྱིར་གཉིས་ཀས་གཉིས་ཀ་གསུངས་མོད་ཀྱང་། རང་རང་ལ་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་གདམས་  
 པའི་བཀའ་བབ་ཚུལ་མི་འདྲ་བ་ཡོད་པས་གདམས་པའི་གནད་ཡོངས་སུ་རྗེགས་...  
 པར་འབྱུང་བ་དེ་དང་དེར་མེད་མི་རྒྱུ་དུ་བདེན་དགོས་པ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་ཟབ་མོའི་

1. གྲུང་ཐང་ ‘ཀ’ 722 (ཕྱི་ཁྱེ་-དེ་ལ་)



ལྟ་བུ་དང་དེ་བསྐྱོས་པའི་ཐབས་ཀྱི་ཆེ་བའི་ལམ་གྱི་རིམ་པ་ནམས་ཤིང་དྲ་ཆེན་པོ་སོ་  
 སོ་འི་གཞུང་ལ་གཙོ་བོར་བདེན་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་ནི། སྤྱིར་ཤིང་དྲ་ཆེན་པོ་  
 གཉིས་ཀྱིས་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་ལམ་གྱི་རིམ་པ་གཉིས་ཀྱི་གསུངས་ཡོད་ཀྱང་། རྩི་བཙུན་  
 འཇམ་པའི་དབྱངས་ནས་ཁྱུ་སྐྱབ་ལ་བརྒྱད་པའི་ཟབ་མོ་འི་ལྟ་བུ་དང་། རྒྱལ་བ་  
 དྲམས་པ་ནས་འཕགས་པ་ཐོགས་མེད་ལ་བརྒྱད་པའི་རྒྱ་ཆེ་བའི་ལམ་གྱི་རིམ་པ་...  
 ལྟེ། ཤིང་དྲ་ཆེན་པོ་གཉིས་རང་རང་ལ་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་གདམས་པའི་བཀའ་བབ་ཚུལ་  
 མི་འདྲ་བ་ཡོད་པའི་དབང་གིས་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་གདམས་པའི་གནད་ཡོངས་  
 སུ་ཚོགས་པ་ཚང་བ་ལ་དེ་གཉིས་ཀའི་གཞུང་ལ་ངེས་པར་དུ་བདེན་དགོས་པར་.....  
 གསུངས་སོ།།

དེས་ན་གཞུང་ལུགས་སྤྱི་དང་། རྒྱད་པར་དུ་ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་ལམ་གྱི་རིམ་པ་  
 ཡོངས་སུ་ཚོགས་པ་ལ་ཕྱུ་ཐག་ཆོད་པའི་ངེས་པ་འདྲན་པའི་སྒོ་ནས་ཉམས་སུ་ལེན་  
 པ་ལ། ཤིང་དྲ་ཆེན་པོ་གཉིས་སོགས་མཁས་པའི་གཞུང་ལུགས་ཀྱི་མཚོ་ལྟ་བུ་  
 ཉམས་བཞག་ནས་མན་ངག་དུ་གྲགས་པ་ཐན་ཕུན་རེ་ལ་ངལ་བ་བྱེད་པ་ནི། ས་སྤྱི་  
 བརྟེ་དཔ།<sup>1</sup>

ཡན་ལག་བརྒྱད་ལྟ་ཆུང་འགྲམ་དུ།

བ་ཚཱི་ཁྲོན་པ་བཞོ་བ་བཞིན། །ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་ནོ།

རོན་དེ་ལ་དགོངས་ནས་རྩི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོས་ལམ་རིམ་ཞི་གནས་ཀྱི་མཐུག་  
 དུ་འདི་ལྟར་གསུངས་<sup>2</sup>།

1. ས་བཏ་ཤ' 276 (ས་སྤྱི་བཀའ་འཕྲུལ་-དབ་-r) 2. རྩི་-བ་སྤྱི་ཆ' 772 (བཏ་ལྟ་-དེབ་)



1. མཁས་གྲུབ་ '3' རྒྱུ་ (སྒྲིག་-དཔེ་གཞུགས་)



ལ་ཐེབས་པའི་ལྷ་བ་ལས་གཞན་བ་མཁས་སྤོངས་གང་གིས་བཞག་པའི་ལྷ་བ་ཡིན་  
 ཀྱང་ལྷ་བ་ནོར། མདོ་འི་དོན་བྱམས་ཆོས་དང་ས་སྤེ་དང་དབྱ་མ་སྒྲོམ་རིམས་སོར་  
 ཀྱིས་རྒྱས་བར་བཀྲལ་བ་ལྷར་ཞི་ལྷག་སོ་སོ་འི་ཆོགས་བཞེན་བ་དང་། དམིགས་  
 ཉིན་གྱི་ཁྱད་པར་དང་། དབྱད་སྒྲོམ་དང་འཛོག་སྒྲོམ་གྱི་ནམ་དབྱེ་དང་། སེམས་  
 གནས་པའི་ཐབས་དགུ་དང་སྤོང་བའི་འདུ་བྱེད་བརྒྱད་དང་ལྷན་བར་བྱས་ནས་.....  
 བསྒྲུམས་པས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཆེས་མཐུན་གྲུབ་པའི་ཚད། དེ་ནས་ཞི་  
 ལྷག་མཆོན་ཉིད་ཚང་བ་ཐོག་མར་སོ་སོར་གྲུབ་པའི་ཚད། དེ་དག་གི་གོ་རིམ།  
 དེ་ནས་ཞི་ལྷག་རྩེད་འབྲེལ་གྱི་དྲིང་ངེ་འཛོན་མཆོན་ཉིད་ཚང་བར་གྱུར་པའི་ཚད།  
 དེ་དག་གི་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་དུ་བྱོང་བ་ཇི་ལྷར་སྒྲེ་བའི་ཚུལ། ལུས་སེམས་  
 ལ་བྱུང་བའི་དྲགས་ཀྱི་ཁྱད་པར། བྱིང་སྒྲུགས་གཉིས་ཀྱི་ངོས་འཛོན་དང་ཁྱད་པར།  
 འཕྲོ་ཁོད་གཉིས་ཀྱི་ངོས་འཛོན་དང་ཁྱད་པར། དེ་དག་གཉིས་པོ་གང་གིས་ཇི་ལྷར་  
 སེལ་ཚུལ། དན་ཤེས་བཞིན་གཉིས་ཀྱི་ངོས་འཛོན་དང་ཁྱད་པར། དེ་གཉིས་སྐབས་  
 གང་དུ་ཚུལ་ཇི་ལྷར་བཞེན་ཚུལ་སོགས་མཐའ་དག་པར་གྲིང་དྲ་ཆེན་པོ་དེ་དག་གི་...  
 དགོངས་པ་ཇི་ལྷ་བ་བཞིན་དུ་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པར་ཤེས་ནས་གདན་ལ་འབེབས་པ་...  
 ཞིག་མེད་པའི་ཐོས་བསམ་པ་དག་གིས་ཞི་ལྷག་གི་བཤད་པ་དང་། བསམ་གདན་  
 པ་དག་གིས་མན་ངག་ཟབ་མོར་མིང་བདགས་པའི་དྲིང་ངེ་འཛོན་བསྒྲུབ་པའི་ནམ་...  
 བཞག་ཇི་ཅམ་ཞིག་བྱས་ཀྱང་ཡལ་ཆེར་ནོར་བ་ལས་མ་འདས།” ཞེས་སོགས་  
 གསུངས་སོ། །

དེ་དག་གི་དོན་གྱི་སྒྲིང་པོ་མདོར་བསྟུན། ཞི་ལྷག་གི་བསྒྲུམ་ཚུལ་དང་  
 དའི་གནད་ནམས་ལ་ནང་བྱན་དུ་ཆུད་པར་བྱས་ནས། ཞི་གནས་དང་འབྲེལ་



བའི་སྒྲོམ་པ་ནས་དག་ཇི་ལྟ་བུ་ཞིག་དགོས་སྟེན་ན། ཇི་བཙན་དཀོན་མཆོག་  
 འཇིག་མེད་དབང་པོ་འི་གསུང་ཆོས་འབྱུང་ལོར་བུའི་སྤེང་བ་ལས།<sup>1</sup> “འཕགས་  
 པ་ཐོགས་མེད་སྐུ་མཆེད་ཀྱི་གཞུང་གི་རྒྱུ་ལྟ་བུ་འབྱུངས་ཏེ། ཉིང་ངེ་འཇིན་གསར་  
 ཏུ་སྐྱབ་པའི་ཆོ་གནས་ཆ་ཙམ་གྱིས་མི་ཆོག་པར་གསལ་ཆའི་ངར་དང་ལྷན་པ་……  
 དགོས་ལ། དེ་ཡང་སེམས་གནས་པ་དགུ་ལྟོས་ཏུ་གཡོ་ཡིད་བྱེད་བཞིའི་སྒོ་ནས་  
 ཉིང་ངེ་འཇིན་གསར་ཏུ་བསྐྱབ་ཚུལ་དང་། དན་པ་དང་ཤེས་བཞིན་གྱིས་བོགས་  
 འདོན་ཚུལ་དང་། བྱིང་གོད་ཕྱ་རགས་ཀྱི་ངོས་འཇིན། ཞི་ལྷག་རྩེང་འབྲེལ་གྱི་  
 རྣམ་འབྱོར་བསྐྱབ་ཚུལ་སོགས་གྲུལ་བའི་དགོངས་པ་བཞིན་ལེགས་པར་གཏན་ལ……  
 སྐབ་པས། ལྷག་པ་ཉིང་ངེ་འཇིན་གྱི་ཡོན་ཏན་ཁྱད་པར་ཏུ་འཕགས་པ་དང་ལྷན་  
 བས་སོ།” །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ།

དེ་ལ་བརྟེན་ནས་ལྷག་མཐོང་དང་འབྲེལ་བའི་ལྷ་བ་ནས་བར་དག་པ་ཇི་ལྟ་  
 བུ་ཞིག་དགོས་སྟེན་ན། དེ་ཉིད་ལས།<sup>2</sup> “དབལ་མགོན་འཕགས་པ་ཁྲུ་སྐྱབ་  
 ཀྱི་གཞུང་གི་རྒྱུ་ལྟ་བུ་འབྱུངས་ཏེ། འཁོར་འདས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་རང་གི་  
 གདགས་གཞིའི་ངོས་ནས་དོན་དམ་པར་གྲུབ་པ་དུལ་ཙམ་ཡང་མི་དམིགས་ཀྱང་།  
 གདགས་གཞིའི་སྤེང་བུ་མིང་དང་དོག་པས་པར་བཞག་ཙམ་དེ་ཐ་སྐྱད་ཏུ་ཚད་མས་  
 གྲུབ་ལ། ཆོས་རྣམས་རང་རང་གི་ངོ་བོས་སྤོང་བའི་སྐུ་མཚན་གྱིས་ཐ་སྐྱད་ཏུ་  
 ཆོས་དེ་དང་དེར་གྲུབ་ཅིང་བྱ་བྱེད་སོགས་འཐད་ལྷན་ཏུ་འཇིག་ཤེས་པ་དང་། ཉིན་  
 འབྲེལ་གྱི་ཆོས་ལ་ངེས་པ་དྲངས་པ་ཉིད་གྱིས་རང་བཞིན་མེད་པ་ལ་ངེས་པ་ཆེར་……  
 འགྲོ་བས་སྤོང་བ་དང་ཉིན་འབྱུང་གཅིག་གྲོགས་སུ་གཅིག་ཁྱེར་ཤེས་པའི་ཟབ་མོ་འི་

1. གཞུང་ 'ཅ' རྩེ་ཐེ་—དེབ་ 2. གཞུང་ 'ཅ' རྩེ་ཐེ་—དེབ་



གདམ་འདི་ནི།” ཞེས་དང་། “སྒྲོམ་བྱས་དང་ཉི་ཆོ་བའི་སྒྲོང་བ་ཙམ་མ་ཡིན་པར་  
གཟུང་ནས་ནམ་མཁུན་གྱི་བར་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱིང་དུ་དགག་བྱ་རང་བཞིན་...  
གྱིས་གྱུབ་བ་བཀག་པའི་སྒྲོང་བ་ཉིད་རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་མཐར་ཐུག་པ་ཟབ་མོ་...  
དབུ་མའི་ལྟ་བ་ཐུན་སྒྲུབ་ཆོགས་པ་དང་ལྟན་པས་སོ།” །ཞེས་ཇི་སྒྲོང་གསུངས་  
པ་བཞིན་སྒྲོམ་པ་ནམ་དག་བྱིང་སྒྲུབ་ཀྱི་ཐུན་པ་དང་བྲལ་བའི་ཞི་གནས་ལ་བརྟེན་  
ནས། ལྟ་བ་ནམ་དག་དག་ཆད་ཀྱི་མཐའ་ཀྱན་དང་བྲལ་བ་དོགས་པའི་ལྟ་ག་མཐོང་  
སྒྲོམ་པ་ལ་འབད་པར་བྱའོ།

བཞི་བ་བསྒྲོམ་རིམ་གསུམ་གྱི་བཟོད་བྱའི་ཆེ་བ་མདོར་བསྒྲུས་ནས་བསྟན་པ།

### (༡) བསྒྲོམ་རིམ་དང་བོ།

འདིར་རྒྱལ་བའི་གསུང་རབ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱིང་བོ་འདི་དོན་ཇི་ལྟར་བསྒྲོམ་...  
པའི་རིམ་པ། ཤིང་རྩ་ཆེན་པོ་ནམ་གཉིས་ཀྱིས་ལེགས་པར་ཕྱེ་བའི་ལམ་གྱི་  
གནད་བསྒྲུས་པ། བསྒྲུབ་ལྟན་གྱི་གདུལ་བྱ་ནམས་སྤྱར་དུ་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་  
མཁུན་པའི་སར་བབྱོད་པར་བྱེད་པའི་ཐེག་པ་མཆོག་གི་དམ་པའི་ཚལ་ལུགས།  
དབུ་མའི་བསྒྲོམ་རིམ་གསུམ་སོ་སོའི་བཟོད་བྱ་མདོར་བསྒྲུས་ན། བསྒྲོམ་རིམ་དང་  
པོར། རྟེན་གྱི་གང་ཟག་གང་ཞིག་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ལམ་ལ་ཐོག་མར་འཇུག་པར་  
འདོད་པའི་ལས་དང་པོ་བ་དེས། ཐམས་ཅད་མཁུན་པ་ཉིད་སྤྱར་དུ་ཐོབ་པར་འདོད་  
པས་མདོར་ན། སྤྱིང་ཇི་དང་། བྱང་ཚུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། སྒྱུབ་བ་སྟེ་གནས་  
འདི་གསུམ་ལ་འབད་པར་བྱའོ། །ཞེས་གསུངས་པའི་དང་པོ་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་ནི།  
སངས་རྒྱུས་ཀྱི་ཆོས་མ་ལུས་པའི་རྒྱའི་ཅ་བ་ཡིན་པ་སོགས་སྤྱིང་ཇིའི་ཆེ་བ་དང་...



དེའི་ཡན་ཡན་བསམ་གྱི་མི་ཁྱབ་པ་དག་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་བསྐྱད་པ་  
 བའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་སྒྲོ་གྲས་མི་ཟད་པའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་  
 ག་ཡུ་མགོ་རིའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་དད་པའི་སྟོབས་བསྐྱེད་པའི་མདོ་ནམས་  
 རྒྱངས་སུ་བྱངས་པའི་སྒྲོ་ནས་གསལ་བར་མཛད་ཅིང་། དེ་ཉིད་ཐོག་མ་ཁོ་ནར་  
 བསྒྲུབ་དགོས་པར་བསྟན་དོ། །

དེ་འདྲ་བའི་རྒྱབས་པོ་ཆེའི་རྒྱ་ཚགས་དེ་ཉིད་ཇི་ལྟར་བསྒྲུབ་པའི་ཚུལ་ནི།  
 སྦྱིར་ཁམས་གསུམ་ན་སྦྱོད་པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་སྦྱག་བསྐྱེད་གསུམ་གྱིས་  
 ཇི་ལྟར་མཐུན་པར་མནར་བའི་ཚུལ་དང་། རྒྱད་པར་དུ་རིགས་དུག་སོ་སོའི་  
 སྦྱག་བསྐྱེད་ཤུགས་དུག་ཅིང་ཚུལ་ལ་རྒྱན་རིང་བ་སོགས་ཆོས་བཟོད་པར་དཀའ་  
 བའི་ངང་ཚུལ་བསམ་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྦྱིང་བཅེ་བ་ཁོ་ན་སྒྲུབ་པ་  
 དགོས་པ་དང་། དེ་ཡང་ཐོག་མར་མཛད་བཤེས་ཀྱི་ཕྱོགས་ནས་བརྩམས་དེ་རིམ་  
 གྱིས་དགྲ་དང་པལ་པ་ནམས་ལ་ཡང་སྦྱིང་ཇི་མཚངས་པར་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ་ཕྱོགས་  
 བཅུའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྒྲུབ་དགོས་པ་དང་། གང་གི་ཆོ་ཤིན་དུ་གཅེས་  
 བའི་བྱ་མི་བདེ་བའི་མ་བཞིན་དུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྦྱག་བསྐྱེད་གསུམ་ནས་  
 དབྱུང་བར་འདོད་པའི་ནམ་པའི་སྦྱིང་ཇི་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ། དེ་  
 ཇིགས་པ་ཡན་བས་སྦྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་འི་མིང་ཐོབ་པོ་ཞེས་སྦྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་འབྱུང་བའི་  
 ཆོད་བསྟན་པར་མཛད་དོ། །

གཉིས་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་ཚུལ་ནི། དེ་ལྟར་སྦྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་  
 བསྒྲུབ་པའི་སྟོབས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་མ་ཁྱུས་པ་སྒྲོ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་ཇོ་  
 བའི་བྱང་ཆུབ་དུ་འགོད་པར་དམ་བཅའ་བའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་དགོས་པ་



དང་། དེ་བསྐྱེད་པའི་ཚལ་ལ་ཡང་། གཞན་གྱིས་ཡང་དག་པར་འཛིན་དུ་  
བཅུག་པ་ལས་དང་། བདག་ཉིད་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་དུ་སེམས་བསྐྱེད་པ་གཉིས་ལས་  
ཕྱི་མ་ཁྱད་ཆེ་བར་བཅོམ་ཐུན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་  
ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་བཀའ་བསྟུལ་དོ་ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་འདྲ་བའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་སྐྱབ་པ་དང་མི་ཐུན་པ་དང་། སྐྱབ་པ་  
ཡོངས་སུ་ཚོགས་པ་དང་མི་ཐུན་ན་ཡང་འཁོར་བ་ན་འབྲས་བྱ་ཆེ་བར་བཅོམ་ཐུན་  
འདས་ཀྱིས་བྱམས་པའི་ནམ་པར་ཐར་པ་དང་འཕགས་པ་རྒྱལ་བོ་ལ་གདམས་པའི་  
མདོ་བྲངས་སུ་བྲངས་ནས་བསྟན་པར་མཛད་ཅིང་། སྐྱབ་པ་སྤྱིང་བོར་བྱེད་པའི་  
བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་འབྲས་བྱ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཤིན་དུ་རྒྱ་ཆེན་པོ་དང་ཐུན་པ་  
འཕགས་པ་དབལ་སྤྱིན་གྱིས་ཉུས་པ་དང་། སྤྱིང་བོ་བཀོད་པའི་མདོས་བསྐྱབས་  
པར་མཛད་དོ།

གསུམ་པ་སྐྱབ་པ་ལ་སྤྱོར་ཚལ་ནི། དེ་ལྟར་སེམས་བསྐྱེད་པའི་བྱང་ཆུབ་  
སེམས་དབའ་བདག་ཉིད་མ་དུལ་ན་གཞན་མི་དུལ་བར་ཤེས་ནས་བདག་ཉིད་སྤྱིན་  
པ་ལ་སོགས་པ་སྐྱབ་པ་ལ་སྤྱོར་དགོས་པ་དང་། སྐྱབ་པ་མེད་པར་བྱང་ཆུབ་མི་  
ཐོབ་པའི་ཚལ་འཕགས་པ་གཡུ་མགོ་རིའི་མདོ་དང་། དྲིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་བོ་འི་  
མདོ་བྲངས་སུ་མཛད་ནས་བསྟན་དོ།

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་སྐྱབ་པ་དེ་ཡང་ཕ་སྟོན་དུ་བྱིན་པ་དང་། ཚད་མེད་  
པ་དང་། བསྐྱེད་པའི་དངོས་པོ་སོགས་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་པ་ལས། མདོར་བསྐྱེད་  
ན་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་གཉིས་ཡིན་ལ། དེ་ཡང་ཐབས་ཤེས་སྤོགས་རེ་བས་མི་  
ཚོག་པར་གཉིས་ཀ་བསྟེན་དགོས་པ་དང་། གང་ཐབས་སུ་འཛོག་རྒྱའི་ཚོས་དང་།



ཤེས་རབ་དུ་འཛོལ་རྒྱུ་འོས་ཀྱི་ངོས་འཛིན་དང་། དེ་གཉིས་ཀྱི་བྱེད་ལས་དང་།  
 དེ་གཉིས་བྱང་སེམས་སོ་སྦྱེའི་གནས་སྐབས་སུ་མ་ཟད་སར་ཆུད་བ་ནམས་ཀྱིས་...  
 ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་བསྟན་དགོས་པར་གསུངས་ལ། རོན་དེ་དག་སྐྱབ་པའི་  
 ཕྱིར་འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་བ་དང་། འཕགས་པ་གཡུ་  
 མགོ་རིའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་དད་པའི་ལྟོབས་བསྐྱེད་པའི་མདོ་དང་།  
 འཕགས་པ་ས་བཅུ་པའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་དུ་རྒྱས་  
 བར་བསྐྱས་པའི་མདོ་ནམས་བྱང་སེམས་སུ་མཛོད་ནས་རྒྱས་པར་བསྟན་ཏོ། །  
 དེ་དག་གི་ཞར་ལ་འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པའི་མདོ་ལས་ཐབས་...  
 ཤེས་བྱུགས་རེ་ལས་མ་བསྟན་བ་འཆིང་བར་གསུང་པའི་བྱགས་ཀྱིས་ཐབས་ཤེས་...  
 གཉིས་ཀ་ལ་བདེན་དགོས་བ་དང་། འཕགས་པ་དད་པའི་ལྟོབས་བསྐྱེད་པ་ལས་  
 ཐབས་ཤེས་གཉིས་སར་ཆུད་བ་ནམས་ཀྱིས་ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་བསྟན་དགོས་...  
 བར་གསུངས་བ་དང་། འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་དུ་རྒྱས་པར་བསྐྱས་  
 བ་ལས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་སྦྱད་བ་སྦྱོད་བ་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་བ་...  
 ཁོ་ན་ལ་བསྐྱབ་པས་མི་ཆོག་པར་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་བ་དུག་དང་ལྷན་པའི་དགོ་པའི་...  
 ཅ་བ་བསགས་དགོས་པར་གསུངས་བ་དེ་དག་དང་། ས་བཅུ་པའི་མདོ་ལས།  
 “གལ་དེ་སངས་རྒྱས་བཙུགས་ལྷན་འདས་དེ་དག་གིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་དེ།  
 དེ་ལྟར་ཐམས་ཅད་མཆོད་པའི་ཡེ་ཤེས་མངོན་པར་སྐྱབ་པའི་སྒོ་དག་ལ་ཉུགས་པར་  
 མ་མཛོད་དུ་ཟིན་ན། དེ་ནི་དེ་ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བྱ་ངན་ལས་འདའ་བར་འགྱུར་དེ།  
 སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་བྱ་བ་ཡང་རྒྱུ་ཆད་པར་འགྱུར་དེ།” ཞེས་བྱང་  
 སེམས་ས་བརྒྱད་པ་བ་ཞི་བར་སྦྱོར་བར་འཇུག་པ་ལ་རྒྱལ་བ་ནམས་ཀྱིས་སྒྲོང་བར་



མཛད་དགོས་པར་གསུངས་པ་དང་འགལ་བ་ཡིན་ཡང་། སྤྱི་མ་ནམས་སྤྱིར་  
བཤད་པ་དང་། འདྲིར་དམིགས་ཀྱིས་བསལ་བ་ཡིན་པས་སྤྱིར་བཏང་དང་དམིག་  
བསལ་གྱི་དགོས་པ་ཅན་དུ་བསྟན་དོ། །

དེ་ལྟར་ལས་ཐབས་ཤེས་གཉིས་སམ་རྒྱ་ཚོགས་གཉིས་ལ་བདེན་ནས་འབྲས་  
དུས་སུ་ཐབས་ཀྱི་ལག་རྩིས་གཞུགས་སྤྱོད་པ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ལག་རྩིས་  
ཚོས་སྤྱོད་པ་ལྟེ་དམ་པ་སྤྱོད་པ་གཉིས་ཐོབ་པར་བྱེད་པ་ལ། ལས་དུས་སུ་ཐབས་ལ་  
བདེན་ནས་ཞི་མཐའ་དང་། ཤེས་རབ་ལ་བདེན་ནས་སྤྱོད་མཐའ་སྟེ་སྤྱོད་ཞིའི་མཐའ་  
གཉིས་ལ་མི་གནས་པ་ཞིག་དགོས་སོ། །དེ་ཡང་གཞི་དུས་སུ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་སྤྱོད་  
འདོགས་ཀྱི་མཐའ་དང་། ཐབས་ཀྱིས་སྤྱོད་འདོགས་ཀྱི་མཐའ་སྟེ་མཐའ་གཉིས་  
སྤངས་པའི་དབྱ་མའི་ལས་ལ་བདེན་དགོས་སོ། །ཚུལ་འདི་འཕགས་པ་ཚོས་  
ཡང་དག་པར་སྤྱད་པའི་མདོ་དང་། རྣམ་པར་སྤྱང་མཛད་མཛོན་པར་བྱང་ཆུབ་པའི་  
རྒྱུད་ཁྲངས་སུ་མཛད་ནས་བསྟན་ཅིང་། དེའི་ཞར་ལ་མདོ་དོན་འབྲུལ་གཞི་འབྲུང་  
ཉི་བ་རྣམས་ལ་དགོངས་གཞི་དགོས་པ་སོགས་བསྟན་པའི་སྒོ་ནས་འགལ་སྤོང་.....  
གསལ་བཤད་ཀྱང་མཛད་དོ། །

དེ་ལ་སྤྱིན་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་། ས་རོལ་དུ་སྤྱིན་པའི་མིང་  
ཐོབ་པ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་རྩིན་པ་ཞིག་དགོས་ཀྱི། གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ། །  
ཤེས་རབ་དེ་བསྐྱེད་པ་ལ། ལྷང་གི་དོན་ཀྱན་དུ་འཛིན་པར་བྱེད་པ་ཐོས་པ་ལས་  
བྱུང་པའི་ཤེས་རབ་དང་། དེས་པ་དང་བྱང་པའི་དོན་རྣམ་པར་འབྱེད་པ་བསམ་  
པ་ལས་བྱུང་པའི་ཤེས་རབ་དང་། ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དོན་སྒྲིམ་པར་བྱེད་པའི་  
སྒྲིམ་བྱུང་གི་ཤེས་རབ་གསུམ་རིམ་གྱིས་བསྐྱེད་དགོས་པ་སྤྱིར་བསྟན་ནས། བྱེ་



བྲག་དུ་བསམ་བློང་གི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་རིགས་པ་དང་ལུང་...  
གིས་བདགས་ནས་གདན་ལ་ཐབ་དེ་བསྒྲོམ་ཚུལ་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ། །

དེ་ལ་ལུང་གི་སྐབས་སུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ...  
སྐྱེས་པ་དང་། དུས་གསུམ་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཉམ་པ་  
སོགས་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་བྱགས་ཆེ་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པས་  
འཇིག་རྟེན་གྱི་སྐྱབ་པའི་གནས་བསལ་བའི་ཕྱིར་ཐ་སྙད་ཀྱི་དབང་གིས་སྐྱེའོ། །  
འགག་གོ། །ཞེས་སོགས་གསུངས་པའི་དོན་དེ་དག་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་  
པར་སྤྱད་པའི་མདོ་དང་། བདན་པ་གཉིས་ནས་པར་འབྱེད་པ་དང་། ཤེར་ཕྱིན་  
གྱི་མདོ་དང་། སྤང་བོ་ཅུལ་གྱི་མདོ་དང་། ཡབ་སྐུ་མཇུག་པའི་མདོ་ནས་  
ཁྲུངས་སུ་དྲངས་ནས་ལུང་གིས་བདག་ཚུལ་བསྟན་དོ། །

དེ་ལྟ་བུའི་ལུང་གི་དོན་དེ་ཉིད་རིགས་པས་བདག་པར་བྱས་ན་ལུང་གི་དོན་གྱི་  
དུ་བཀྱི་མི་རྒྱས་སོ། །དེ་བས་ན་རིགས་པས་སོ་སོར་བདག་པར་བྱའོ། །དེའི་  
ཚུལ་ནི་ཕྱི་མང་གི་དངོས་པོ་ཀྱན་རྒྱ་མེད་དང་། སྤྱོད་པ་དང་། དུས་མཉམ་  
པ་དང་། བར་དུ་མ་ཆད་པ་ལས་ཇི་ལྟར་མི་སྐྱེ་བའི་ཚུལ་རྒྱས་པར་བདགས་ནས་  
དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་མ་སྐྱེས་པ་དང་། ཀྱན་ཇེ་བ་དུ་སྐྱེ་བ་ཡོད་པར་  
བསྐྱབས་པའི་སྒོ་ནས་ལུང་དང་མི་འགལ་བར་བསྟན་དོ། །

ཡང་ནས་པ་གཅིག་དུ་ན་འདི་ལྟར་རིགས་པས་ནས་པར་དབྱེད་པར་བྱ་སྟེ།  
གཞུགས་ཅན་དང་གཞུགས་ཅན་མ་ཡིན་པའི་དངོས་པ་འདི་དག་ཕྱི་རྒྱལ་དོན་དུ་བྱུབ་  
པས་སྟོང་ཞིང་ནས་པར་རིག་པ་ཅམ་དུ་དོན་དམ་པར་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་  
ཀྱིས་སྟོང་པར་བསྐྱབས་པའི་སྒོ་ནས་ནལ་འབྱོར་སྟོན་པའི་དབྱེད་པར་རྒྱད་པའི་ཐུན་



མང་མ་ཡིན་པའི་བཞེད་པ་གསལ་བར་བསྟན་ཅིང་། དོན་དེ་འཕགས་པ་ལང་  
 ཀར་གཤེགས་པའི་མདོ་ཚན་ཅི་སྟེད་ཅིག་གིས་བསྐྱབས་པར་མཛད་པོ། །དེ་ལྟར་  
 བསམ་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་བདགས་ཤིང་དབྱད་པའི་སྒྲོ་ནས་  
 སྒྲོ་འདོགས་ཚད་པའི་དོན་དེ་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་བའི་ཕྱིར་སྒྲོམ་པའི་ཤེས་རབ་  
 བསྐྱེད་དགོས་པ་དང་། དེ་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་དང་བཅས་འཕགས་པ་དཀོན་  
 མཆོག་སྟོན་དང་། ཉིང་ཇེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོ་ཁྲངས་སུ་བྲངས་ནས་བསྟན་པར་  
 མཛད་པོ། །

ཐོས་བསམ་ཙམ་གྱིས་མི་ཆོག་པར་སྒྲོམ་པ་ལ་འཕྱག་པའི་ཚུལ་ནི། རྣལ་  
 འབྱེད་པས་ཐོག་མར་སེམས་གནས་པར་བའི་ཕྱིར་ཞི་གནས་བསྐྱབ་དགོས་ལ།  
 དེ་ཡང་ཚུལ་ཁྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་སོང་ཞི་གནས་ཀྱི་ཆོགས་ནམས་ལ་གནས་ཏེ།  
 ཡིད་དང་མཐུན་པའི་གནས་སུ་ལུས་བྲང་བོར་བསྐྱངས་ལ་བྲན་པ་མངོན་དུ་བྱས་ཏེ་  
 རྣམ་པ་ཅི་སྟེད་ཀྱིས་ནམ་པར་དབྱད་པར་བའི་ཆོས་འདུ་བར་གྱུར་པ་དང་རྒྱས་  
 བར་བྱེ་བ་རྣམས་ལ་རེས་གྱིས་དམིགས་ཏེ་ཞི་གནས་སྒྲོམ་དགོས་པར་བསྟན་ནོ། །

ཞི་གནས་སྒྲོམ་པ་ལ་བར་དུ་གཅོད་པ་འགོག་ཚུལ་ནི། ཆགས་སོགས་  
 ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་ནམ་པར་གཡེང་བའི་ཆོ་མི་སྤྲུག་པ་དང་། ཞི་གནས་སྒྲོམ་  
 པ་ལ་མི་དགའ་བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དྲིང་ཇེ་འཛིན་ལ་ཡོན་ཏན་དུ་ལྷས་ནས་དགའ་  
 བ་སྒྲོམ་པ་དང་། སྤྲུགས་པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་གནོན་པའི་ཆོ་སྤང་བའི་འདུ་ཤེས་  
 སོགས་དང་། ཁྱོད་པའི་ཆོ་མི་དྲག་པ་སོགས་ཡིད་འབྱུང་བར་འབྱུར་བའི་དངོས་  
 པོ་ཡིད་ལ་བྱས་ནས་ཁྱོད་པ་ཞི་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བྱིང་ཁྱོད་ལ་སོགས་པའི་  
 སྒྲོན་དང་བྲལ་བའི་སྒྲོ་ནས་དམིགས་པ་གང་ལ་སེམས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་



པར་ཇི་མྱོད་འདོད་ཀྱི་བར་དུ་སེམས་འཇུག་པར་འགྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་ཇོགས་  
པར་གསུངས་སོ།

ཞི་གནས་བསྒོམ་ཚུལ་པར་ཕྱིན་སོགས་ལས་བསྐྱན་བ་ལྟར་གྱི་སེམས་གནས་  
དགུ་ཇི་ལྟར་བསྒོམ་ཚུལ། དེ་སྒོམ་བ་ལ་བར་དུ་གཙོད་བའི་ཉེས་བ་དུག་དང་།  
དེ་དག་གི་གཉེན་པོ་སྤོང་བའི་འདུ་བྱེད་བརྒྱད་ཀྱིས་སྤོང་གཉེན་བྱེད་ཚུལ་དང་།  
ཅེ་གཅིག་པའི་སེམས་དེ་ཉིད་ལས་སྤྱ་རྩུང་བ་ཉིད་དང་ལྷན་བ་ལས་ཡོན་དན་གྱི་……  
ཁྱད་པར་བསམ་གཏན་བཞི་དང་། གཞུགས་མེད་པའི་སྒོམ་པར་འཇུག་བ་སོར་  
ཇི་ལྟར་བསྐྱེད་ཚུལ་རྒྱས་པར་གསུངས་སོ།

འདི་ལྟར་ཞི་གནས་ཀྱི་སྒྲོབས་ཀྱིས་སེམས་བདན་པར་བྱས་པའི་འོག་དུ་ཤེས་  
རབ་ཀྱིས་རྣམ་པར་དབྱུང་བར་བྱ་སྟེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་སྤྲང་བ་མེད་པར་ཀུན་དུ་  
སྤོངས་པའི་ས་བོན་ཅད་ནས་སྤོང་མི་རྒྱས་སོ། །དེས་ན་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་  
རབ་ཀྱིས་གནས་ལྷགས་ཀྱི་དོན་ལ་ཇི་ལྟར་བདགས་ཚུལ་ནི། ལང་ག་ཤེགས་ལས་  
གསུངས་བ་ལྟར།

སེམས་ཅམ་ལ་ནི་རབ་བདེན་ནས།

ཕྱི་རོལ་དོན་ལ་མི་བདག་གོ། ཞེས་སོགས་ཀྱི་བསྐྱན་དོན་

ལ་གཙོ་བོར་ཁྱད་སྤྲངས་སྤྱ་མཛད་ནས། ཆོས་གཞུགས་ཅན་རྣམས་ཆ་ཤས་ཀྱིས་སོ་  
སོར་བདགས་ནས་ཤེས་བ་ལས་དོན་གཞན་དུ་མེད་པས། ཆོས་གཞུགས་ཅན་ལ་  
དམིགས་པའི་རྣམ་པར་རྟོག་བ་སྤྲང་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་གཞུང་བ་མེད་པར་འཇོག་



བ་མི་འཕྲད་པས་འཛིན་པའི་ནམ་པ་ལས་ཤིན་དུ་འདས་ཏེ། གཉིས་སུ་སྒྲུང་བ་  
 མེད་པའི་ཤེས་པ་ལ་གནས་པར་བྱ་གྲིང་། དེ་ལྟར་གཞུང་འཛིན་གཉིས་སུ་སྒྲུང་བ་  
 མེད་པའི་ཤེས་པ་དེ་ལ་ཡང་མངོན་པར་ཞེན་པ་དོར་ནས། དེ་ལས་ཀྱང་འདས་ཏེ།  
 གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྒྲུང་བ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ཁོ་ན་ལ་གནས་པར་གྱུར་པ་དེའི་  
 ཆོ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་རྟོགས་པ་ལ་གནས་པ། ཡང་དག་  
 པ་ཉིད་ཀྱི་མཆོག་ལ་བྱུགས་པ་ཡིན་པས་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་.....  
 ལྷུང་བ། མཐོང་བའི་ལས་ལ་གནས་པས་ཐེག་པོ་མཐོང་བར་གསུངས་སོ།  
 གང་གི་ཆོ་ནལ་འབྱེད་པས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ལྷག་མཐོང་གིས་རབ་དུ་.....  
 བདེ་ནས་ནམ་པར་རྟོག་པའི་སྒྲོས་པའི་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་ཞི་བ་དེའི་ཆོ།  
 ཉིན་མངས་པ་དང་ཤེས་བྱའི་སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྒྲོང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་སྒྲུངས་ན་  
 གོགས་མེད་པའི་ཕྱིར་སྒྲིན་དང་བྲལ་བའི་ནམ་མཁའ་ལ་ཉི་མའི་འོད་ཐོགས་པ་མེད་  
 པར་སྒྲུང་བ་བཞིན་དུ། དངོས་པོ་འི་ངོ་བོ་ཉིད་རྟོགས་པ་ལ་མཐུན་ཁྱད་པར་  
 བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དག་ཐོབ་ནས། ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་པའི་ཚུལ་གྱི་དངོས་  
 པོ་མཐའ་དག་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་ཤེས་པས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་.....  
 འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ནམ་པར་རིག་པ་ཅམ་གྱི་ཚུལ་ལ་བདེན་པའི་ནམ་པར་མི་རྟོག་

1. 'མེམས་ཅམ་ལས་ནི་འདས་ནས་ཀྱ།' །ཞེས་པའི་ལང་ག་ཤེགས་ཀྱི་མདོ་ཆོག་འདྲིའི་ཐུང་བཀའ་  
 འགྱུར་སྐར་མ་ལ་ཆེ་བའི་ནང་། "མེམས་ཅམ་ལས་ནི་བཞུས་ནས་ཀྱ།" །ཞེས་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་འཕྲད་  
 པར་མི་ལྟང་ཞུ། 'བཞུས་ཀྱིས་མ་བླགས་སོགས་བཞུས་པའི་དོན་ཡིན་ལ། འདྲིའི་ཐུང་ཀྱི་ཤེགས་  
 ཐུང་གྱི་དཔེར་'མཐིམ་མེད་ཀྱི་ཐུང་ཐུང་ལ། 'མཐིམ་མེད་ཀྱི་ཐུང་ཐུང་ལ། མཐིམ་མེད་ཀྱི་ཐུང་ཐུང་ལ།  
 བ་མ་མེད་འདྲིའི་ཐུང་ཀྱི་སྒྲིབ་དཔེན་ཡི་ཤེས་རྟོ་ཆེ་འི་ལང་ག་ཤེགས་ཀྱི་འགྲེལ་བར་ཡང་། (མདོ་འགྲེལ་  
 'བེ' 200) མེམས་ཅམ་ལས་འདྲད་པར་བྱ་དང་འདྲས་ནས་ཀྱིས་གསལ་བའི་ཐུང་རོ།



པའི་ནལ་འབྱོར་དམ་པ་འདི་ནི། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཐོབ་པར་འགྱུར་བའི་  
ལམ་གྱི་མཚོག་ཡིན་པར་གསུངས་ཤིང་། ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་ལམ་གྱིས་ནི་  
སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤོང་མི་ལྷན་པ་ལང་ག་ཤེགས་ཀྱི་ཁྲངས་དང་བཅས་མཐར་ཐུག་  
ཐེག་པ་གཅིག་དུ་ངེས་པར་གསུངས་སོ།།

གལ་ཏེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་གྲུབ་པ་མེད་དུ་ཟེན་ན།  
ལྷན་གྱིས་གྲུབ་ཅིང་ཞི་བའི་ཡེ་ཤེས་དམ་པ། གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྒྲུབ་  
མེད་པའི་ཤེས་པས་མཐོང་བར་འགྱུར་བའི་ནལ་འབྱོར་པ་དེ་ཐེ་ལྷར་འཐད་ཅེ་ན།  
བདེན་དེ། དོན་དམ་པར་བདག་ལ་སོགས་པ་རང་དབང་བའི་ངོ་བོ་མེད་དུ་ཟེན་  
ཀྱང་། ཀྱན་རྫོབ་དུ་ནལ་འབྱོར་པའི་ཤེས་པ་དང་། སོ་སོ་སྒྲེ་བའི་ཤེས་པ་  
དག་མི་འདོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྷར་གང་ལ་ཀྱན་རྫོབ་དུ་ཡང་རྒྱ་མེད་པ་དེ་ནི་  
ཀྱན་རྫོབ་དུ་ཡང་མི་སྒྲེ་སྟེ། རི་བོང་གི་རུ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །གང་ལ་རྒྱ་  
རྒྱུན་དེན་འབྲེལ་ཡོད་པ་དེ་དོན་དམ་པར་བརྟན་པ་ཡིན་ཡང་སྒྲེ་བ་ཁོན་སྟེ། རྒྱ་  
མ་དང་། གཞུགས་བརྟན་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །ཞེས་བདེན་གཉིས་ཀྱི་ཚུལ་  
ལ་བཏགས་ཤིང་དབྱེད་པའི་སྒྲོ་ནས་ཐེ་ལྷར་བསྒྲོམ་པའི་ཚུལ་དང་། གང་གི་ཆོ་  
ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་དམིགས་པ་ལ་བྱིང་གོད་ལ་སོགས་པའི་སྒྲོན་  
དང་བུལ་ཞིང་། མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་ཤེས་པ་འཇུག་པར་གྱུར་པ་དེའི་  
ཆོ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་རྫོགས་པ་ཡིན་.....  
པར་གསུངས་སོ།།

དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་ལྷང་ཞིང་ཐོབ་ཀྱི་གནས་སྐབས་སུ་ཆོགས་གཉིས་ཀྱི་  
བསྐྱུབ་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ་དག་ལ་འཇུག་ཚུལ་ནི། སེམས་ཅན་གྱིས་པའི་སྒྲོ་ཅན་འདི་



དག་པོ་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་ཆོས་རྣམས་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དབང་  
 གིས་འཁོར་བ་ན་ཀུན་དུ་འཇུག་ཞིང་། སྤྱག་བསྐྱེད་སྒྲ་ཚོགས་པ་དག་ཉམས་སྤྱི་  
 ཟུང་ངོ་སྤྱི་དུ་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་བྱས་ལ། བདག་གིས་ཅི་ནས་ཀྱང་  
 ཐམས་ཅད་མཆོད་པ་ཉིད་ཐོབ་ནས། འདི་དག་ཆོས་ཉིད་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་གྱུར་བ་  
 དེ་ལྟར་བྱའོ་སྤྱི་དུ་བསམ་ཞིང་། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་  
 ཐམས་ཅད་ལ་མཆོད་པ་དང་བསྐྱོད་པ་གསལ་དེ། འཕགས་པ་བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་  
 ལ་སོགས་པའི་སྤྱོད་ལམ་གྱི་ཆེན་པོ་གདབ་པ་དང་། ཟུང་བ་ཉིད་དང་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་  
 པོ་ཅན་གྱི་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་མཐའ་དག་...  
 སྤྱི་བ་པ་ལ་འཇུག་དགོས་པ་དང་། ཚུལ་དེ་དག་འཕགས་པ་ཚོས་ཡང་དག་པར་  
 བསྐྱོད་པ་དང་། དཀོན་མཆོག་སྤྱོད་དང་། རྒྱུ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྐྱོད་པའི་  
 མདོ་རྣམས་ཁྱེད་སྤྱི་མཇོད་ནས་རྒྱས་པར་བསྐྱོད་ནོ།

དེ་ལྟར་རྒྱ་ཚོགས་གཉིས་སམ་ཐབས་ཤེས་རྒྱུ་འབྲེལ་གྱི་ལམ་ལྷན་རིང་དུ་  
 རྒྱུ་པར་བྱེད་པའི་གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་བཅུ་གཉིས་སྤྱི་འཇུག་དེ། མོས་  
 བས་སྤྱོད་པའི་ས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་བར་དུ་འོ། །གནས་སྐབས་དེ་དག་ནི་  
 ཁོང་མ་ཁོང་མའི་ཡོན་ཏན་ལ་གནས་པའི་ཕྱིར་སར་རྣམ་པར་བཞག་གོ། དེ་  
 ཡང་མོས་སྤྱོད་ཀྱི་ས་ལ་གནས་པའི་བྱང་སེམས་དེས་ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་  
 མཐུན་པ་ཤོད་སོགས་བཞི་རིམ་གྱིས་བབྱོད་དེ། ཆོས་ཉིད་མངོན་སྤྱི་དུ་དོགས་  
 པ་ཐོག་མར་བྱང་བ་དེའི་ཆོ་བྱང་སེམས་དེ་ཡང་དག་པ་ཉིད་སྤྱོད་མེད་པ་ལ་ཞུགས་  
 པ་ཡིན་པས་འཕགས་པའི་ལམ་ཐོབ་ཅིང་ས་དང་པོར་ཆུད་པ་ཡིན་ནོ། །ས་དེར་  
 མཐོང་བས་སྤང་བར་བྱ་བའི་ཉོན་མོངས་པ་གྱི་ཅ་བཅུ་གཉིས་སྤྱོད་ཞིང་། ས་རྣམ་



ས་ནམས་ནི་བསྐྱོམ་བའི་ལམ་གྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པས་དེ་དག་དུ་སྒྲིམ་པས་སྤང་.....  
 བར་བྱ་བ་ཁམས་གསུམ་བའི་ཉོན་མོངས་པ་བཅུ་དྲུག་སྤྱོད་ངོ་། །ས་བཅུ་པོ་དེ་  
 དག་གི་གནས་སྐབས་སུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱན་དུ་འགྲོ་བ་  
 ཉིད་རྟོགས་པས་བདག་གི་དོན་དང་འདྲ་བ་གཞན་གྱི་དོན་ལ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་སྦྱོན་  
 བ་ལ་སོགས་པ་ཡ་པོལ་དུ་ཕྱིན་པ་བཅུ་ཇི་ལྟར་སྟག་ཚུལ་དང་། ས་སོ་སོ་འི་ངོ་  
 སྐལ་གྱི་སྤང་བྱ་སྤྱོད་ཆུལ་སོགས་ཞིབ་ཅིང་རྒྱས་པ་གསུངས་ཡོད་ཀྱང་འདྲིར་ཡི་  
 གོ་མངས་ཀྱིས་དྲོགས་ནས་མ་བྲིས་སོ།

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་འདྲེ་ནི་ཕྱན་སྒྲིམ་ཆོགས་པ་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་མཐའ་དག་  
 རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པའི་ཕྱིར་འདྲི་ལས་གོང་ན་ནམ་པ་གཞན་མེད་པས་དེ་ཕན་ཆད་  
 ས་ནམ་པར་བཞག་པ་མེད་ཅིང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་དེའི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཕྱོད་རབ་དུ་  
 དབྱེ་བ་དབག་དུ་མེད་པས་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་སྒྲིམ་ཀྱང་བཟོད་མེ་ནུས་སོ། །མདོར་  
 བསྟུས་ན་བདག་དང་གཞན་གྱི་དོན་ཕྱན་སྒྲིམ་ཆོགས་པ་མཐའ་དག་རབ་ཀྱི་མཐར་  
 ཕྱིན་པ། ཉེས་པ་ས་ལུས་པ་བསལ་བའི་མཐར་ཐུག་པ་བརྟེས་ནས་སངས་རྒྱས་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་བཞུགས་དེ། ཡོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་  
 སྐུ་ལ་བའི་སྐུས་འགྲོ་བ་ས་ལུས་པའི་དོན་ལྷན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཆུལ་གྱིས་མཛོད་.....  
 ཅིང་འཁོར་བ་ཇི་སྤྱད་པར་བཞུགས་སོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་དོག་པ་དང་ལྷན་པ་ནམས་  
 ཀྱིས་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྱུང་གནས་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ལ་  
 དད་པ་བསྐྱེད་ལ། དེ་དག་གི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར་ནམ་པ་ཐམས་  
 ཅད་དུ་འབད་དགོས་པར་གདམས་པའི་སྒོ་ནས་བསྐྱོམ་རིམ་དང་བོའི་མཇུག་བསྐྱ་  
 བར་མཛོད་དོ།



(2) བསྐྱེས་རིམ་བར་བ།

ནི་གྲི་གང་ཟག་གང་ཞིག་ཐོག་པ་ཆེན་པོ་འཛིན་པའི་ཆུང་གྲི་རིམ་སྲུ་འཇུག་  
 བཞིན་པ། ཐམས་ཅད་མཁུན་པ་ཉིད་ཤིན་ཏུ་སྒྱུར་བྱ་བྱོབ་བར་འདོད་པ་དོག་པ་དང་  
 ལྷན་པ་དེས་དེ་བྱོབ་བར་བྱེད་པའི་སྒྱུ་ནམས་དང་རྒྱུན་ནམས་ལ་མངོན་བར་བཅོན་པ་  
 བར་བྱ་དགོས་ཤིང་། དེ་ཡང་སྒྱུ་མེད་པ་དང་། སྒྱུ་ལ་མ་ལྟོས་པ་དང་། སྒྱུ་རྒྱུན་  
 རྟོར་བ་དང་མ་ཆང་བ་ལས་མི་འབྱུང་བར་སྒྱུ་མ་རྟོར་བ་དང་། མཐའ་དག་པ་བསྟེན་  
 པ་ལ་ངེས་པར་ལྟོས་དགོས་ན། དེ་འདྲ་བའི་འབྲས་བྱ་ཐམས་ཅད་མཁུན་པ་ཉིད་  
 གྲི་སྒྱུ་དང་རྒྱུན་དེ་དག་གང་ཞེ་ན། དེ་ནི་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་རྗེ་སྐད་བསྟན་  
 པ་བཞིན་བྱ་སྟོང་རྗེ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། ཐབས་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་  
 པ་གསུམ་པོ་འདི་དག་ལ་བསྐྱབ་དགོས་པར་གསུངས་སོ།།

དེ་ལ་དང་པོ་སྟོང་རྗེ་བསྐྱེས་ཆུང་ནི། ཐོག་མར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་  
 རིམ་སྲུ་ཆགས་པ་དང་། ཁོང་ཁོ་བ་བསལ་དེ། སེམས་སྟོམས་པ་ཉིད་སྒྱུ་བ་  
 པའི་ཕྱིར་བཤད་སྟོམ་སྟོམ་དགོས་ཤིང་། དེ་ནས་བྱམས་པ་བསྐྱེས་བར་བྱ་སྟེ།  
 བྱམས་པའི་ཆུས་སེམས་ཀྱི་སྒྱུད་བརྒྱན་དེ། གསེར་ཡོད་པའི་ས་གཞི་བཞིན་བྱ་  
 བྱས་ལ། སྟོང་རྗེའི་ས་བོན་བདེ་ན་བདེ་ལྷག་ཏུ་ཤིན་ཏུ་ཡོངས་སྲུ་བྱས་པར་འགྱུར་  
 བས་སེམས་སྒྱུད་བྱམས་པས་སྟོས་ནས་སྟོང་རྗེ་བསྐྱེས་དགོས་པར་གསུངས་སོ། །  
 སྟོང་རྗེ་བསྐྱེས་པའི་རིམ་པ་དངོས་དང་། དེ་རྗེས་པའི་ཆད་སོགས་བསྐྱེས་རིམ་  
 དང་པོ་ལྟར་རོ།

གཞིས་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེས་ཆུང་ནི། དེ་ཡང་ཙ་པའི་སྟོང་རྗེ་ཆེན་



བོ་གོམས་པར་བྱས་ནས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་དགོས་ལ། དེ་ལ་ཡང་ཀུན་  
 རྫོབ་པ་དང་། དེས་དམ་པ་གཉིས་ཀྱི་དང་པོ་འོ་བོ་ངོས་བཞིན་དང་། ཇི་ལྟར་  
 བསྐྱེད་ཆུང་པལ་ཆེར་བསྐྱེད་རིམ་དང་པོ་དང་འདྲ་ཞིང་། ཕྱི་མ་དོན་དམ་པའི་བྱང་  
 ཆུབ་ཀྱི་སེམས། འཛིག་དེན་ལས་འདས་པ། སྒྲིམ་པ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་བ།  
 དོན་དམ་པའི་སྒྲོད་ཡུལ་དུ་གྱུར་པ་དེ་འབྱུང་བ་ལ་དྲག་དུ་གྱུས་པས་ཡུན་རིང་དུ་ཞི་  
 གནས་དང་། ལྷག་མཐོང་གི་ནལ་འབྱུང་སྒྲིམ་དགོས་པ་འཕགས་པ་དགོངས་  
 བ་ངེས་པར་འབྲེལ་བའི་མདོ་ཁྲུངས་སུ་མཛད་ནས་བསྟན་ནོ། །དེ་ཡང་ཞི་ལྷག་  
 གཉིས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་ཤིང་། སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤངས་པ་  
 དང་། ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བ་ལ་ནལ་འབྱུང་པ་ནམས་ཀྱིས་བསམ་  
 བཤན་གྱི་ངོ་བོ་ཞི་གནས་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་ངོ་བོ་ལྷག་མཐོང་གཉིས་ཀྱི་ལ་  
 འབད་དེ། དེ་གཉིས་རྩེད་དུ་འབྲེལ་བའི་ལས་བསྐྱེད་པ་ལ་འཇུག་པ་ནི་གནད་  
 ཀྱི་དམ་པའོ། །དོན་དེ་དག་དགོངས་པ་ངེས་འབྲེལ་དང་། དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱུལ་  
 བོ་འི་མདོ་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྡེ་སྒྲོད་དང་། དཀོན་བརྟེན་འོད་  
 སྤང་གི་ལེའུ་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་པའི་མདོ་དང་། ཡོངས་  
 སུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཆེན་པོ་འི་མདོ་ནམས་ཁྲུངས་སུ་མཛད་ནས་བྱས་པར་.....  
 བསྟན་ནོ།

ཞི་ལྷག་གཉིས་བདེ་ལྷག་དུ་འབྱུང་བ་ལ་དེ་གཉིས་ཀྱི་རྒྱ་ཚྭ་གསལ་ལ་ངེས་པར་  
 ལྟོས་དགོས་པས། དེ་ལ་ཞི་གནས་ཀྱི་རྒྱ་ཚྭ་གསལ་གང་ཞེ་ན། ཡོན་ཏན་ལྔ་དང་  
 ལྷན་པའི་མཐུན་པའི་ཡུལ་དང་། འདོད་པ་རྩེད་པ་དང་། ཚོག་ཤེས་པ་དང་།  
 བྱ་བ་མང་བོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་དང་། ཆུང་ཁྲིམས་ནས་པར་དག་པ་དང་།



འདོད་པ་ལ་སོགས་པའི་ནམ་པར་དོག་པ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའོ། །ལྷག་མཐོང་  
གི་རྒྱ་ཚོགས་གང་ཞེ་ན། སྤྱི་བུ་དམ་པ་ལ་བདེན་པ་དང་། མང་དུ་བློས་  
པ་ཡོངས་སུ་བཅའ་བ་དང་། ཚུལ་བཞིན་སེམས་པའོ། །ཞེས་དེ་དག་གི་  
ངོས་འཛིན་ཆེས་གསལ་ཞིང་གནད་བསྟུས་པ་རེ་གསུངས་པའི་སྒོ་ནས་ནལ་འབྱེར་...  
པ་ཞི་ལྷག་གི་རྒྱ་ཚོགས་མཐའ་དག་དང་ལྷན་པ་དེས་བསྒོམ་པ་ལ་འཇུག་དགོས་...  
པར་བཞུན་ནོ།

དེ་ལ་ཞི་གནས་བསྒོམ་ཚུལ་ནི། དེའི་སྒྲོར་བའི་བྱ་བར་སྤྱིང་ཇེ་དང་སེམས་  
བསྐྱེད་མངོན་དུ་བྱས་ནས། བྱོགས་བཅུའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་  
ཐམས་ཅད་ལ་མཆོད་པ་དང་བསྟོད་པ་སོགས་བྱས་ལ། སྟན་ཤིན་དུ་བདེ་བ་ལ་  
ལུས་ནམ་སྤང་ཆོས་བདུན་ལྷན་དུ་བྱས་ནས། དངོས་གཞི་ཞི་གནས་ཀྱི་དམིགས་  
པ་ལ་སེམས་གནས་པར་བྱེད་པ་ལ། ཐོག་མར་ཞི་ལྷག་གི་ངོ་བོ་མདོར་བཞུན་  
ནས། ངོ་བོ་དེ་ལྷན་གྱི་ཞི་གནས་ཀྱི་དམིགས་པ་དེ་ཡང་དགོངས་འགྲུལ་ནས་  
གསུང་བ་ལྟར་གྱི་གསུང་རབ་ཀྱི་དོན་བསྟུས་དེ་དེ་ལ་སེམས་ཉེ་བར་བཞག་པ་དང་།  
ནམ་པ་གཅིག་དུ་ན་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རྒྱ་གཟུང་སོགས་གང་ལ་འདོད་པའི་དམིགས་...  
པ་དེ་ལ་ཕྱི་ཕྱིར་ཞིང་རྒྱན་དུ་སེམས་བཞག་དགོས་པར་གསུངས་ཤིང་། ཞི་གནས་  
སྒོམ་པ་ལ་བར་དུ་གཅོད་པ་འགོག་ཚུལ་དང་དེ་གྲུབ་པའི་ཚད་བཅས་པལ་ཆེར་...  
བསྒོམ་རིམ་དང་པོ་ལྟར་གསུངས་སོ།

ལྷག་མཐོང་བསྒོམ་པའི་ཚུལ་ལ། དེ་སྒོམ་དགོས་པའི་འཕྲད་པ་ནི།  
བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཐམས་ཅད་དངོས་སམ་རྒྱུད་པས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསལ་...  
པར་བྱེད་པ་དང་། དེ་ཁོ་ན་ལ་གཞིལ་བ་ཡིན་པས། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དོགས་ན་སྤང་



བ་བྱང་བས་སྒྲིན་པ་བསལ་བ་བཞིན་དུ་ལྟ་བ་ངན་པའི་དྲ་བ་ཐམས་ཅད་བྲལ་བར་...  
 འབྱུར་དོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་ཞི་གནས་ལ་གནས་ནས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་  
 ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཡོངས་སུ་བཅའ་བར་བྱ་ཡི། ཞི་གནས་ཅན་གྱིས་ཚོགས་པར་  
 འཛིན་མི་རིགས་པར་བསྐྱན་ནོ།

རྣམ་མཐོང་སྒྲོམ་པ་དངོས་ནི། ཚོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་གང་ཟག་  
 དང་ཚོས་ཀྱི་བདག་དུ་མ་གྲུབ་པ་སྒྲོམ་དགོས་ཤིང་། དེ་ཡང་དགོངས་འགྲེལ་  
 ལས་གསུངས་པ་ལྟར་བདག་དུ་མ་གྲུབ་པའི་ཚུལ་འདི། ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་  
 ལྷན་པ་ཁོ་ནས་རྟོགས་པར་འབྱུར་གྱི། གཞན་གྱིས་མ་ཡིན་པས། རྣལ་འབྱུར་  
 པ་རྣམས་ཀྱིས་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་འདི་ལྟར་དབྱད་པར་བྱ་སྟེ། གང་  
 ཟག་ནི་སྤང་བོ་དང་གཅིག་ཐ་དད་གང་དུ་འང་མ་གྲུབ་པ་དང་། རྟག་པ་བ་དང་།  
 གཅིག་ཕྱ་བ་དང་བཟོད་དུ་མེད་པ་སོགས་སུ་མི་རུང་པའི་ཚུལ་ལེགས་པར་བདགས་  
 རས་གང་ཟག་གི་བདག་མེད་སྒྲོམ་པ་དང་། ཚོས་ཞེས་བྱ་བ་སྤང་ཁམས་སྒྲེ་  
 མཆེད་རྣམས་ལས་གང་དག་གཞུགས་ཅན་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི། དོན་དམ་པར་  
 སེམས་ལས་གྲུད་ན་མེད་ཅིང་། སེམས་དེ་ཡང་དོན་དམ་པར་གཅིག་དང་དུ་མའི་  
 ངོ་བོ་ཉིད་དུ་མེད་ཅིང་། སྒྱུ་མ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་དང་འདྲ་བ་ཁོ་ནའི་ཞེས་  
 དབྱེད་དོ། །དེ་ལྟར་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྣམ་པར་དབྱད་དེ། ཚོས་  
 ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངེས་པར་མི་འཛིན་པ་དེའི་ཚེ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་དྲིང་  
 འཛིན་ལ་འཇུག་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

དེ་ཡང་འདིར་གནད་དུ་ཆེ་བ་ནི། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དངོས་  
 པོའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་བདགས་ཤིང་དབྱད་ནས་མི་སྒྲོམ་པར་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་...



ཅམ་ཞིག་སྒྲིམ་པར་བྱེད་པས་ནི་བདེན་འཛིན་གྱི་ནམ་པར་དོག་པ་ནམ་ཡང་མི་.....  
 ལྷོག་ཅིང་། ང་པོ་ཉིད་མེད་པ་ཡང་དོགས་པར་མི་འགྱུར་རོ། དེས་ན་གནས་  
 ལྷགས་ཀྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་དོག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དབྱེད་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཡེ་.....  
 ཤས་ཀྱི་མེས་ནམ་པར་དོག་པའི་བྱེད་ཤིང་མཐའ་དག་སྟེག་པར་བྱ་ཞིང་། ཤེས་  
 རབ་ཀྱིས་དངོས་པོ་མཐའ་དག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བདགས་ནས་མི་དམིགས་  
 བར་བསམ་གཏན་བྱེད་པ་དེའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་མཆོག་གི་བསམ་གཏན་ཞེས་བྱ་སྟེ།  
 དོན་འདྲི་དག་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྒྲིན་དང་། ནམ་མཁའ་མཛེད་དང་།  
 གཞུག་ན་རིན་པོ་ཆེས་ཞུས་པ་སོགས་ཀྱི་མདོ་ཆོག་དངོས་སུ་ལུང་འདྲན་མཛེད་པ་  
 དང་། ཞལ་འཕངས་མཛེད་པ་ཅི་རིགས་ཀྱི་སྒོ་ནས་བསྟན་ནོ།

དེ་ལྟར་བདག་མེད་པ་གཉིས་ཀྱི་དོན་སྒྲིམ་ཞིང་འདུག་པའི་ཆོ། བར་སྐབས་  
 སུ་ཆགས་སོགས་ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་ཕྱི་རྒྱ་དུ་ནམ་པར་གཡེང་བ་སོགས་.....  
 འགལ་ཀྱིན་ཇི་ལྟར་བྱུང་ཚུལ་དང་། དེ་དག་སེལ་ཚུལ་ཕལ་ཆེར་བསྒྲོམ་རིམ་རང་  
 བོ་དང་འདྲ་ལ། འདྲིར་སེམས་མཉམ་པར་ཞུགས་པ་ལ་བརྩམས་པར་བྱས་ན་ནམ་  
 བར་གཡེང་བ་དང་། བྱིང་བར་གྱུར་བ་ལ་བརྩམས་པར་མ་བྱས་ན་ཤིན་དུ་བྱིང་བས་  
 ལྷག་མཐོང་མེད་པར་སེམས་དབྱས་ཡོང་བཞིན་དུ་འགྱུར་རོ། དེས་ན་བྱིང་གོད་ཀྱི་  
 དབང་དུ་གྱུར་ན་གཉིན་པོ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་དང་། མཉམ་པར་ཞུགས་པ་  
 ལ་གཉིན་པོ་མངོན་པར་འདུ་མི་བྱེད་པའས་བརྩམས་པར་མི་བྱ་བ་དང་། ལྷག་མཐོང་  
 སྒྲིམ་པས་ཤེས་རབ་ཤས་ཆེ་བའི་ཆོ་ཞི་གནས་བསྒྲོམ་པ་དང་། ཞི་གནས་ཤས་  
 ཆེ་བའི་ཆོ་ཤས་རབ་སྒྲོམ་པ་དང་། ལུས་ལ་གནོད་པར་གྱུར་པའི་ཆོ་འཛིག་  
 དོན་མཐའ་དག་སྒྲིམ་མ་ཉུ་བྱར་ཉུ་བ་སོགས་ནམ་པར་དོག་པ་དང་བཅས་པ་དང་།



ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་ལ་དམིགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་རིམ་པ་འདི་ལྟར་  
 སྒྲིམ་པ་ནི། “དོན་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པའི་བསམ་གཏན་དེ།” འཕགས་  
 ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་གསུངས་སོ། །ཞེས་ཞལ་འཕངས་མཛད་པའི་སྒྲོ་ནས་  
 བསྟན་ན།

རྗེས་ཐོབ་དུ་བསམ་པ་ཇི་ལྟ་བུས་ཚོགས་གཉིས་ཀྱི་བསྐྱབ་པ་བྱ་ཆེན་པོ་དག་  
 ལ་བསྐྱབ་ཚུལ་པལ་ཆེར་བསྒྲོམ་རིམ་དང་པོ་དང་འདྲ་ལ། འདིར་སྤྱོད་པ་ཉིད་  
 དང་སྤྱོད་ཇི་ཆེན་པོ་འདི་སྤྱོད་པོ་ཅན་གྱི་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་……  
 ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་མཐའ་དག་བསྐྱབ་པ་ལ་མངོན་པར་བཙོན་པའི་བསམ་གཏན་དེས།  
 ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚོག་དང་ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་མངོན་པར་བསྐྱབས་པ་……  
 ཡིན་པ་འཕགས་པ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེས་ཞུས་པའི་མདོ་ཁྲངས་སུ་དྲངས་ནས་……  
 བསྟན་པར་མཛད་དོ།

གསུམ་པ་ཐམས་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པར་བྱ་བ་ནི། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་  
 ཡངས་སུ་སྦྱིན་པར་བྱེད་པ་དང་། སངས་རྒྱུ་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་།  
 ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚོག་དང་ལྷན་པའི་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་ཡེ་ཤེས་སོགས་

1. འདིར་“ནམ་ཀུན་མཚོག་ལྷན་གྱི་སྤྱོད་པ་ཉིད་”ཅེས་པ། སྤྱོད་ཇི་ཆེན་པོ་དང་། ཐང་ཟུབ་ཀྱི་  
 སེམས་དང་། སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཐུན་བྱས་ཚོགས་པའི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་ནམ་པ་མཚོག་དུ་  
 བྱུང་བ་ཀུན་དང་ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་མངོན་པར་བསྐྱབ་པ་ལ་ཐ་མེ། འཕགས་པ་གཙུག་ན་  
 “དོན་པོ་ཆེས་ཞུས་པའི་མདོ་ལས། “དེ་ལ་ནམ་པ་ཀུན་གྱི་མཚོག་དང་ལྷན་པའི་སྤྱོད་པ་ཉིད་”  
 གང་ཞེ་ན། སྤྱིན་པ་མ་ཚང་བ་མེད་པ། ཚུལ་ཁྲམས་མ་ཚང་བ་མེད་པ།” ཞེས་སོགས་པ་  
 “ལོ་དུ་བྱེད་པ་ནམས་དང་། ཚད་མེད་པ་ཞེ་དང་། ཐང་ཟུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། བསྐྱབ་པའི་  
 དངོས་པོ་པེ་དང་། ཐང་བྱོགས་སོ་བདུན་སོགས་ལ་སྤྱད་ནས་བྱུང་བར་གྱུངས་སོ།།—

(རྩི་—བཀའ་—དཀོན་བརྟེན་ཆ་ 220 )



ཡུན་སྤྱི་མཆོག་གི་པ་ཤང་བཀའ་བསྟུན་པ་ཐམས་ཅད་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཐབས་...  
 ཀྱིས་མཐར་ཐུན་པ་ལས་འབྱུང་ངོ། ། །དེའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབས་ཐབས་  
 དང་ཤེས་རབ་གཉིས་ཀྱི་ལ་བསྟུན་པར་བྱ་དགོས་ཏེ། དཔེར་ན་སྒྲོན་པོས་ཟིན་  
 བའི་རྒྱལ་བོ་རྣམས་དགོས་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཐབས་ལ་མཁས་པས་  
 ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛོད་...  
 པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་ཀྱས་ཀྱིས། ཐབས་ཤེས་སྟོགས་རེ་བའི་ལམ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་རྣམས་ཀྱིས་འཛིང་བའི་གནས་སུ་གཟེགས་པ་དང་། སྤྱོད་ཞི་གང་རྒྱུ་གི་  
 མཐར་ཐུང་བ་ལས་མ་འདས་པར་གསུངས་ཤིང་། དེ་ལྟ་བུས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབས་ཐབས་དང་ལྡན་པའི་ཤེས་རབ་ལ་བསྟུན་ན་ཐོབ་བྱ་མཐར་ཐུག་མི་གནས་...  
 བའི་བྱང་འདས་ཐོབ་ཀྱས་ཏེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་ནི་འཁོར་བར་མི་ལྷུང་ལ།  
 ཐབས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་ནི་བྱ་ངན་ལས་འདས་པར་མི་ལྷུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་དེ་  
 དག་གི་ཤེས་བྱེད་དུ་འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་བསྟུས་པ་དང་།  
 དཀོན་བཅེགས་འོད་སྤང་གི་ལེན། གཡལ་མགོ་འི་རིས་ཞུས་པ། དབལ་མཆོག་  
 དང་བོ། གྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པའི་མདོ། ཆོས་བཅུ་བའི་མདོ།  
 རྣམ་མཁའ་མཛོད་དང་དགོངས་པ་ངེས་འགྲེལ་བཅས་ཀྱི་ཁྱད་སྤངས་ནས་རྒྱས་...  
 པར་བསྟན་ཏེ།

གོམས་པས་ཐབས་ཤེས་རྒྱུ་འབྲེལ་དུ་འགྲོ་ཆུང་ནི། བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ལྟ་བའི་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་སྒྲོ་...  
 རྣམ་འཛིག་དེན་ལས་འདས་པ། སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་དོན་དམ་པའི་  
 སྤྱོད་ཡུལ་གྱི་ལམ་བཞུན་པ་དང་། ཇིས་ཐོབ་ཀྱི་གནས་སྐབས་སུ་ཐབས་བཞུན་



པའི་དུས་ན་ཡང་སྐྱུ་མ་མཁན་བཞིན་དུ་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་ཁོ་ནའི་སྤྱིན་པ་ལ་སོར་པ་  
ལ་བཞེན་པ་སྟེ། དེ་ཡང་འཕགས་པ་སྒོ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པའི་མདོ་དང་།  
བདུན་བདུལ་བའི་ལུ་དང་། ཆོས་ཡང་དག་པར་སྤྱད་པའི་མདོ་ནམས་བྲངས་  
སྤྱད་སུ་ནས་བསྟན་པར་མཛད་དོ།

ཐབས་ཤེས་རྒྱུ་འབྲེལ་གྱི་ལམ་ཡུན་རིང་དུ་བསྐྱོམས་པ་ལས་འབྲས་བྱ་.....  
འགྲུབ་ཚུལ་སྤྱིར་བཏན་པ་ནི། དེ་ལྟར་སྤྱིང་ཆེ་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་  
ཐབས་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པ་ལ་གོམས་པར་བྱས་པས། ཆོ་འདི་ལ་གདོན་མི་ཟ་བར་  
བྱུང་པར་དུ་འགྱུར་དེ། མི་ལམ་ན་དག་དུ་སངས་བྱུས་དང་བྱང་སེམས་མཐོང་  
བར་འགྱུར་བ་དང་། ཉོན་མོངས་པའི་སྤྱིབ་པ་དང་དེའི་གནས་ངན་ལེན་བྱང་བ་དང་།  
ལྷས་སེམས་ལས་སྤྱ་རྒྱུང་བ་དང་། མངོན་ཤེས་དང་རྒྱུ་ལ་ལ་སོགས་པའི་  
ཡོན་དན་བྱུང་པར་ཅན་ཐོབ་པ་དང་། འབད་མི་དགོས་པར་བསོད་ནམས་དང་  
ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཡོངས་སྤྱ་རྒྱུས་པ་སོགས་ཡན་ཡོན་ཆད་མེད་པ་མདོ་ལས་.....  
གསུངས་པ་ཁོང་དུ་ཆུད་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

བྱུང་པར་དུ་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་གོམས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་གྱུར་...  
པའི་འབྲས་བྱའི་བྱུང་པར་ཆེ་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་  
རྟོག་པའི་བྱ་བ་མཐར་དག་དང་བྲལ་བ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སྤྱོད་པ་མེད་པར་ཤིན་  
དུ་གསལ་པར་རྟོགས་པ། རྒྱ་མ་མེད་ཅིང་མི་གཡོ་ལ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་  
བདག་མེད་པའི་ངོ་བོ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་མངོན་དུ་བྱེད་པ། མཐོང་བའི་ལམ་གྱིས་  
བསྐྱུས་པ་དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ངོ་ཉིད་འབྱུང་བས་དངོས་པ་འི་.....  
མཐར་ལ་དམིགས་པ་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་སྤྱ་སྤྱེས་



བ་ཡིན། བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་སྒྲོན་མེད་པ་ལ་ཁྱལ་ས་བ་ཡིན། འཛིག་རྟེན་  
 གྱི་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལས་འོག་བ་ཡིན། བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའི་ཆོས་ཉིད་དང་  
 ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྟོགས་བ་ལ་གནས་བ་དང་། ས་དང་བོ་ཐོབ་པ་སོགས་ཕན་  
 ཡོན་མཐའ་ལས་སོ། །འདི་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་བསམ་གཏན་'དེ།  
 འཕགས་བ་ལང་ཀར་གཤེགས་བ་ལས་བསྐྱེད་ནོ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་ལྟར་ས་དང་བོར་བྱུང་བ་དེས་ཕྱིས་སྒྲོམ་པའི་ལམ་འཛིག་རྟེན་ལས་འདས་  
 བ་ལ་བརྟེན་ནས། སྒྲོམ་བས་སྤང་བར་བྱ་བའི་སྒྲིབ་བ་བསགས་བ་སྤྲོ་བ་བས་  
 ཀྱང་ཆེས་སྤྲོ་བ་རྣམས་སྤངས་ནས། ཡོན་ཏན་བྱུང་བར་ཅན་གོང་མ་གོང་མ་རྣམས་  
 ཐོབ་པའི་ཕྱིར་ས་འོག་མ་རྣམས་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་  
 ཤེས་ཀྱི་བར་ལ་ཁྱལ་ས་ནས་ཐམས་ཅད་མཆུན་བ་ཉིད་ཀྱི་གྱ་མཚར་འཇུག་ཅིང་.....  
 དགོས་བ་ཡོངས་སུ་འགྱུབ་པའི་དམིགས་བ་ཐོབ་པར་གསུངས་སོ། །

ཆོགས་གཉིས་བསྒྲོམས་བ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་  
 འབྲས་བུའི་བྱུང་བར་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། རྒྱ་ཕུན་སུམ་ཆོགས་བ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་  
 ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་ཡོངས་སུ་རྫོང་བ་ལ་བརྟེན་ནས། འབྲས་བུ་ཕུན་སུམ་རྫོང་བ་སྤྲོ་  
 བཞི་ཡེ་ཤེས་ལྡན་གྱི་དབལ་ལ་མངའ་བརྟེན་གྱིང་། ཐམས་ཅད་མཆུན་བ་ཉིད་  
 ཀྱི་གྱ་མཚར་ཁྱལ་ས་བ་ན། ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་བུར་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་  
 ཉེ་བར་འཛོལ་བའི་ཡོན་ཏན་གྱི་སྤང་བོ་དང་ནི་ལྡན། སྤོན་གྱི་སྒྲོན་ལམ་གྱི་འབྲས་  
 བུ་ཡོད་པར་ནི་མཛད། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོའི་རང་བཞིན་དུ་ནི་བྱུང། ལྟན་གྱིས་  
 བྱུབ་པའི་ཐབས་སྤྲོ་ཆོགས་དག་དང་ལྡན། སྤྱུལ་བ་དབག་དུ་མེད་པ་དག་གིས་  
 འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་རྣམ་བ་ཐམས་ཅད་དུ་ནི་མཛད། ཡོན་ཏན་ཕུན་སུམ་



ཚོགས་པ་མ་ལུས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་ནི་གྲུང་། བག་ཆགས་དང་བཅས་  
 བའི་ཉེས་པའི་དྲི་མ་མཐའ་དག་བསལ་ནས། སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་ཀྱི་མཐར་  
 གཏུགས་པར་བཞུགས་པར་མཛད་པ་ཡིན་པས། རྟོག་པ་དང་ལྷན་པ་དག་གིས་  
 སངས་རྒྱས་བཙུངས་ལྷན་འདས་ཡོན་ཏན་མཐའ་དག་གི་འབྱུང་གནས་ལ་དད་པ་.....  
 བསྐྱེད་ལ། ཡོན་ཏན་དེ་དག་ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་  
 ཀྱིས་འབད་དགོས་པར་གདམས་པའི་སྒོ་ནས་བསྐྱོམ་རིམ་བར་པའི་མཚུག་བསྟུ་...  
 བར་མཛད་དོ།

### (3) བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མ།

འདིར་རྟོག་གྱི་གང་ཟག་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འི་མདོ་སྡེའི་རྒྱལ་ལ་ཞུགས་ཟིན་པ་  
 རྣམས་ཀྱི་ཕྱིར་བསྐྱོམ་པའི་རིམ་པ་བསྟན་པར་མཛད་དེ། དེ་ལ་བཙུངས་ལྷན་འདས་  
 ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐ་དད་པ་དབག་དུ་མེད་པ་ཞིག་བསྟན་པར་མཛད་པ་ལས། ཞི་  
 ལྷག་གཉིས་ཀྱས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ལ་བྱུང་པ་དང་། ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིཌ་  
 པ་ལས་སེམས་མི་གཡོ་བ་དང་། ལྷག་མཐོང་གིས་ཆོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཇི་ལྟ་བ་  
 བཞིན་རབ་དུ་རྟོགས་པའི་སྒོ་ནས་སྐྱབ་པ་མཐའ་དག་སྤྱོད་བར་བྱེད་པས་ཞི་གནས་  
 དང་ལྷག་མཐོང་སྒོམ་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

དེ་ལ་བཙུངས་ལྷན་འདས་ཀྱིས་རྣལ་འབྱོར་པ་རྣམས་ཀྱི་དམིགས་པའི་དངོས་...  
 བོ་བཞི་བསྟན་དེ། རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་  
 པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་བརྟན་དང་། དངོས་པོ་འི་མཐའ་དང་། དགོས་  
 པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པའོ། །དང་པོ་ནི། ཞི་གནས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཞུང་



བརྟན་དང་། སངས་རྒྱུ་གྱི་སྤྱོད་པ་ལྟེན་པ་སོགས་ལ་དམིགས་ཀྱང་། ཡང་དག་  
 པའི་དོན་ལ་ནམ་པར་དོག་པ་མེད་པས་ན་ནམ་པར་མི་དོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་.....  
 ཞེས་བྱའོ། །གཉིས་པ་ནི། ལྷག་མཐོང་གིས་གཞུགས་བརྟན་དེ་ཉིད་ལ་དབྱེད་པ་  
 དེའི་ཚོ། ལྷག་མཐོང་གི་མཚན་ཉིད་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དབྱེད་པའི་ནམ་པར་དོག་པ་  
 དེ་ན་ཡོད་པས་ན། ནམ་པར་དོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་བརྟན་ཞེས་བྱའོ། །  
 གསུམ་པ་ནི། གཞུགས་བརྟན་དང་འདྲ་བའི་ཚས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 རིལ་བ་བཞིན་དུ་དོགས་པ་ནི། དངོས་པོ་འི་མཐའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དེ་བཞིན་ཉིད་  
 དོགས་པ་ཡིན་པས། དེའི་ཚོ་དངོས་པའི་མཐའ་ཁོང་དུ་ཆུད་པས་ན་ས་དང་པོ་  
 ལ་དངོས་པོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་པ་ཞེས་བྱའོ། །བཞི་པ་ནི། སྒྲོམ་པའི་  
 ལས་གྱིས་བསྐྱུས་པའི་ས་ལྷག་མ་ནམས་རིས་གྱིས་བབྱོད་དེ། གང་གི་ཚོ་སྒྲིབ་པ་  
 མ་ལུས་པ་སྤངས་པའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཚོ།  
 སངས་རྒྱུ་གྱི་སའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ཉིད་ལ་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པ་ལ་དམིགས་པ་  
 ཞེས་བྱའོ།

དམིགས་པ་བཞི་པོ་འདིས་ཅི་བསྟན་པ་ཡིན་ཞེ་ན། ཞི་ལྷག་གཉིས་བསྒྲོམས་  
 པ་ལས་དངོས་པོ་འི་མཐའ་ལྟེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་རིལ་བ་བཞིན་དུ་དོགས་པ་  
 དང་། དེ་བསྒྲོམས་པ་ལས་སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤོང་བའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་ཡོངས་  
 སུ་གྱུབ་པ་ལྟེ། ལྷན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྒྱུགས་པའི་སངས་རྒྱུ་གྱི་གོ་འཕང་  
 ཐོབ་པར་བསྟན་ནོ།

འབྲས་བུ་དེ་ཐོབ་པར་འདོད་པ་དག་གིས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་སྒྲོམ་  
 དགོས་ལ། དེ་ཡང་ཚུལ་བྱིས་ནམ་པར་དག་པ་སོགས་ཞི་ལྷག་གི་རྒྱ་ཚོགས་



ནམས་ཚང་བའི་སྒོ་ནས་སྤྱིང་ཆེ་དང་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་ནས་ཐོས་བསམ་སྒོམ་  
 བ་ལ་སྦྱར་དགོས་ཤིང་། དེ་ཡང་བསྒོམ་རིམ་བར་བ་སོགས་སྤྱི་བསྐྱེད་བ་བཞིན་  
 སྒོམ་པའི་ཆེ་ལུས་ནས་སྤྱིང་ཆེས་བདུན་ལྟ་གྱི་སྒོ་ནས། རྒྱས་བར་བྱེ་བ་དང་།  
 བསྐྱེད་བར་བྱུང་བའི་ཆེས་དག་ལ་དམིགས་ནས་ཞི་གནས་དང་། རིགས་  
 བའི་ནམ་གངས་མཐའ་ཡས་པའི་སྒོ་ནས་ཆོས་དང་གང་ཟག་གི་བདག་མེད་གཏན་  
 ལ་ཕབ་དེ། ལྷག་མཐོང་བསྒོམ་ཚུལ་དང་། བྱིང་གོད་ལ་སོགས་པའི་འགལ་  
 རྒྱུ་སེལ་ཚུལ་དང་། ཞི་ལྷག་འགྲུབ་པའི་ཚད་དང་། བྱིང་གོད་དང་བྲལ་ཞིང་  
 མཉམ་བར་ཞུགས་ན་རང་གི་ངང་གིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་གསལ་བར་འཇུག་  
 པ་དེའི་ཆོ། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་འབྱེལ་བའི་ལས་གྲུབ་པ་ཡིན་པ་  
 སོགས་གསུངས་སོ། །

ཞི་ལྷག་གཉིས་གང་གས་ཆེ་བ་དེའི་ཆོ་ཅིག་ཤོས་བསྒོམ་བར་བྱ་ཞིང་། གཉིས་  
 ཀ་མཉམ་བར་ཞུགས་པར་བྱུང་བ་དེའི་ཆོ་ཆེ་སྤྱིད་ཏུ་ལུས་སེམས་ལ་གནོད་བར་མ་  
 བྱུང་བ་དེ་སྤྱིད་ཏུ་མངོན་བར་འདུ་བྱེད་བ་མེད་བར་གནས་བར་བྱ་བ་དང་། ཉིང་  
 ཇེ་འཇོན་ལ་བར་གཅོད་པའི་ཉེས་བ་དུག་དང་། དེ་དག་གི་གཉེན་པོ་སྤོང་བའི་  
 འདུ་བྱེད་བརྒྱུད་བསྒོམ་ཚུལ་དང་། ལུས་སེམས་ལ་གནོད་བར་བྱུང་བ་དེའི་ཆོ་ཆེ་  
 ལྟར་བྱ་བ་དང་། ཉིང་ཇེ་འཇོན་ལས་ལྷང་བའི་ཆོ་དང་། ཇེས་ཐོབ་ཀྱི་གནས་  
 སྐབས་སྤྱི་བསམ་བ་ཆེ་ལྟར་སྤྱིང་བ་དང་། ཆོགས་གཉིས་ཀྱི་སྦྱོད་པ་རྒྱ་ཆེན་པོ་  
 ལ་ཆེ་ལྟར་སྦོལ་ཚུལ་སོགས་ཕལ་ཆེར་བསྒོམ་རིམ་དང་པོ་དང་། བར་བ་བཞིན་  
 བསྐྱེད་ཅིང་། འདྲིར་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ལ་ཕན་བ་དང་བདེ་བ་བསྐྱེད་པའི་  
 ཐབས་སྒྲིན་མེད་པ། སྤྱིད་ཞིའི་མཐའ་ལས་འདས་པའི་མི་གནས་པའི་བྱང་



འདས་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་གས་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཇི་ལྟར་……  
སློབ་ཚུལ་འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་བའི་མདོ་དང་། དེ་བཞིན་  
གཤེགས་པ་སྐྱེ་བ་འབྱུང་བའི་མདོ་དང་། གྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་  
ནམས་ཁྱུངས་སུ་དྲངས་ནས་བསྟན་ནོ། །

དེ་ལྟར་ཇིས་ཐོབ་དུ་ཚྭ་གས་གཉིས་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཇི་ལྟར་གསོག་ཚུལ་ལས་……  
འབྲེས་དེ། ‘གང་ཞིག་སེམས་ཀྱི་ནམ་པར་རྟོག་པས་བསྐྱེད་པའི་དགེ་བ་དང་མི་  
དགེ་བའི་ལས་ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་ཅན་ནམས་མཐོ་རིས་ལ་སོགས་པའི་འབྲས་’  
བྱ་སྐྱོང་ཞིང་འཁོར་བ་ན་འཁོར་རོ། །གང་དག་ཅི་ཡང་མི་སེམས་ཞིང་ཅི་ཡང་  
ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་འཁོར་བ་ལས་ཡོངས་སུ་ཐར་བར་འབྱུར་རོ།’ ཞེས་  
སོགས་ཡོག་པའི་ལས་ལ་ཡོངས་སུ་འབྱན་པ་རྒྱ་ནག་ཏུ་གང་གིས་སྐྱེལ་བའི་ལྟ་བ་  
ངན་པའི་ཚང་ཚོང་སྒྲུག་པོ་མཐའ་དག་གྲི་མ་མེད་པའི་ཁྱུང་དང་རིགས་པའི་མཚོན་……  
ནོན་གྱིས་ཇི་ལྟར་སྒྲུན་དབྱང་ཚུལ་ཟབ་ཅིང་གྲས་པར་གསུངས་ཡོད་པ་ལས་ཕྱོགས་  
ཅས་གོང་དུ་སློས་ཟིན་པས་འདིར་མ་སློས་སོ། །

དེ་ཡང་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྩ་བ་ནི་སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཤེས་རབ་ཡིན་  
པས། དེ་སྤངས་ན་རྩ་བ་བཅད་པ་ཡིན་པས། ཚོས་རབ་དུ་ནམ་པར་འབྱེད་པ་  
ཞེས་བྱ་བ་ཡང་དག་པར་ཇོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་དམ་པ། འཇིག་རྟེན་  
དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་མཐའ་དག་སྤངས་པར་འབྱུར་རོ། །  
དེ་ལྟ་བུས་ན། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤྱོད་པ། ཐོས་བ་ལྟུང་བ། བདག་གི་ལྟ་བ་  
མཚོག་དུ་འཇིན་པ། སྐྱེ་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྟེན་བཀུར་མ་བྱས་པ། དེ་བཞིན་  
གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཚུལ་མ་རྟོགས་པ། བདག་སྤྱང་བར་བྱས་ནས་



གཞན་ཡང་སྤང་བར་བྱེད་པ། རིགས་པ་དང་ལྷང་དང་འགལ་བའི་དྲག་གིས་  
བདབ་བའི་ཆོག་ནི། མཁས་པ་བདག་ལེགས་སུ་འདོད་པས་ཟས་དྲག་ཅན་བཞིན་  
དྲ་རྒྱུང་རིང་དྲ་ཡོངས་སུ་སྤང་དགོས་པར་གསུངས་སོ།

དེ་བཞིན་གཤེགས་བའི་གསུང་རབ་ཀྱི་རྗེས་སུ་སློབ་པ་དག་གིས་ཐབས་དང་  
ལུན་བའི་ཤེས་རབ་བསྟེན་པས། ཀུན་རྫོབ་དང་དོན་དམ་བའི་བདེན་པ་ལ་ཤིན་དུ་  
མཁས་ཤིང་། སློབ་པ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་ཞི་བ་སྒྲིབ་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཐོབ་  
བའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལས་གཞན་  
དྲ་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་བའི་ཤེས་རབ་སྤངས་ན་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་……  
འགྱུར་བར་མི་འགྱུར་ལ། ཉོན་མོངས་བའི་སྒྲིབ་པ་ཡང་སྤོང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །  
དེ་ལྟ་བུས་ན་ཆོས་ནམས་ཀྱི་གནས་ལུགས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་དོན་ལ་སོ་སོར་རྟོག་……  
བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ཤིང་དབྱེད་ནས་སྒྲོམ་པ་དེ་ཉིད་གནད་ཀྱི་དམ་པར་……  
བརྒྱུད་ནས། གནས་ལུགས་ཀྱི་དོན་ལ་དབྱེད་པ་ནི་ཚུལ་བཞིན་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དང་།  
སྒྲོ་འདོགས་དང་བསྐྱར་འདེབས་ཀྱི་མཐའ་གཉིས་སྤོང་བར་བྱེད་ཅིང་། རྣམ་པར་  
མི་རྟོག་བའི་ཡེ་ཤེས་འགྱུར་བར་འགྱུར་བས། ཡེ་ཤེས་དེ་འདོད་པས་སོ་སོར་  
རྟོག་བའི་ཤེས་རབ་ལ་བདེན་པར་བྱའོ། །ཞེས་ལུགས་འགྱུར་ལྡོག་གི་སྒྲོ་ནས་བདག་  
མེད་བའི་དོན་ལ་སྒྲོ་ཁ་རྒྱས་བའི་ཐབས་ལན་གཅིག་མ་ཡིན་པར་གསུངས་སོ། །དེ་  
དག་གི་ཤེས་བྱེད་དྲ་འཕགས་པ་འཇམ་དབལ་རྣམ་པར་རིལ་པ་དང་། ཉིང་ངེ་  
འཇིན་རྒྱལ་པོ་འི་མདོ་དང་། མདོ་ཀུན་ལས་བདུས་པ་དང་། དཀོན་མཆོག་  
སྒྲིན་དང་། ལང་ཀར་གཤེགས་པ་དང་ཚངས་པས་བྱས་པ་མདོ་ཚན་རྣམས་ཉིད་ཅིག་  
ཁྱེད་སུ་དྲངས་ནས་རྒྱས་པར་བསྟན་ནོ།



ཡང་དགེ་བ་ལ་སོགས་པ་ཅི་ཡང་མི་བྱ་ཟེར་བ་དེ་ནི་ལས་ཟད་ནས་གྲོལ་བར་  
 སྦྱོར་བའི་སྤྱུ་ལྟེགས་པ་ཀུན་དུ་འཛོལ་བའི་ལྷ་བ་འདོད་པར་འདུག་པས་དེ་མི་འཐད་དེ།  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ལ་ཉོན་མངས་ཟད་ནས་གྲོལ་བ་ལས། ལས་ཟད་  
 ནས་གྲོལ་བ་མེད་དེ། ཐོགས་མ་མེད་པ་ནས་བསགས་པའི་ལས་མཐའ་ཡས་ཤིང་།  
 ལས་མི་དགེ་བ་དགག་པའི་ཆོད་གེ་བའི་ལས་ཅིའི་ཕྱིར་དགག་དགོས་དེ་མི་དགོས་  
 པའི་ཕྱིར་དང་། འཁོར་བའི་རྒྱ་བྱེད་བས་དགག་པ་སྐད་དུ་བྱས་ན་ཡང་མི་ཅད་དེ།  
 བདག་འཛིན་སོགས་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་གིས་བསྐྱད་པའི་ཟག་བཅས་ཀྱི་དགེ་བའི་ལས་...  
 འཁོར་བའི་རྒྱ་བྱེད་དུ་རྒྱག་ཀྱང་། བྱང་རྒྱབ་སེམས་དབང་རྣམས་ཀྱི་དགེ་བའི་  
 ལས་སྤྱིང་ཇེ་ཆེན་བོས་ཀུན་ནས་སྤང་བ། ཟག་པ་མེད་པ་ཡང་དག་པར་ཇོགས་  
 པའི་བྱང་རྒྱབ་དུ་ཡོངས་སུ་བསྐྱོས་པ་དེ་དག་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་འཁོར་བའི་རྒྱ་...  
 མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དོན་དེ་ས་བཅུ་པའི་མདོ་དང་དཀོན་བཅེགས་འོད་སྤང་གི་  
 ལེབ་ཁྲངས་སུ་མཛད་ནས་བསྟན་ནོ།

གཤམ་དེ་གྲོལ་བའི་འབྲས་བྱ་ཐོབ་པ་ལ་ལས་ཟད་དགོས་ན། སངས་རྒྱས་  
 དང་བྱང་རྒྱབ་སེམས་པའི་གཞུགས་ཀྱི་སྦྱུ་དང་། འཁོར་དང་ཡོངས་སྤྱོད་ཆེན་པོ་  
 སོགས་སྤྱན་སྦྱར་ཆོགས་པ་ཐམས་ཅད་སྤྱིན་པ་ལ་སོང་བའི་ལས་ཀྱི་འབྲས་བྱ་ཉིད་དུ་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་མདོ་སྤེད་གཤམ་གསུངས་པ་དང་འགལ་ཞིང་། དགེ་བའི་  
 ལས་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱ་བ་ལ་ཀུན་དུ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་། ཡང་དག་པའི་  
 བྱང་རྒྱབ་ཀྱང་བྱང་རིང་དུ་བསྐྱོངས་པར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །རྒྱལ་དེ་ནི། མདོ་སྤེད་  
 དགོངས་འགྲེལ་དང་། ཉེ་བར་འཁོར་གྱིས་ཁྱུས་པ་དང་། སྤྱི་མ་མེད་པར་གྲགས་  
 པས་བསྟན་པ་དང་། རྣམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱིས་ཁྱུས་པ་དང་། མདོ་ཀུན་ལས་བདུས་



བ་དང་། སྤང་བོ་གསུམ་ཡོངས་སུ་བསྡོས་བ་དང་། ཚངས་པ་ཁྱད་པར་སེམས་  
 ཀྱིས་ལྷན་པ་མདོ་ཚན་རྩེད་ཅིག་དང་ས་བཅུ་པའི་མདོ་སོགས་དྲངས་ནས་རྒྱས་  
 བར་བསྟན་དོ།

མདོ་སྡེ་དེ་དག་གི་ཚིག་ཟིན་ལ་འདྲ་ཤེས་ཅན་གྱི་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་  
 བདུད་ཀྱི་ལས་སོ། ། ཞེས་སོང་གསུངས་པ་ནི། ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པས་  
 ཀྱན་ནས་བསྐྱང་བའི་ཡོངས་སུ་མ་དག་སྤྱིན་པ་ཅམ་ལ་དགོངས་ཀྱི། སྤྱིན་པ་ཐམས་  
 ཅད་དགག་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། དེ་ལས་གཞན་དུ་ན་བཅོམ་ཐུན་འདས་སྤོན་སྤོབ་  
 བ་ལས་གྱི་གནས་སྐབས་སུ་སངས་རྒྱས་གྲངས་མེད་པ་ལ་བསྟེན་བཀྱར་བ་སོགས་  
 རྒྱལ་སྤྱོད་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ནམས་སངས་རྒྱས་མར་མེ་མཛད་སོགས་ཀྱིས་དགག་དགོས་  
 བ་ལ་ཅིའི་ཕྱིར་དགག་པར་མ་མཛད་ཅེས་སོགས་ལྟར་དོན་གྲུབ་དུ་མི་བཀྱི་བའི་ཕྱིར་  
 ཡང་དག་པའི་རིགས་པའི་དགག་བཞག་གིས་མཐའ་བཅན་པར་མཛད་དོ།

དེ་ལྟར་འབྲས་བུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་གྲོང་ཁྱིམ་དུ་འཇུག་པར་བྱེད་པ་ལ་ས་  
 དང་པ་རྩེ་དུ་ཕྱིན་པའི་ལམ་མ་གཏོགས་པའི་འཇུག་སྒོ་གཞན་མེད་<sup>1</sup>ལས། བ་  
 རྩེ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ཡོངས་སུ་ཐོགས་པར་བྱ་ཞིང་། གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་  
 དུ་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་རྒྱུད་དུ་འབྲེལ་བའི་ལམ་སྒོམ་པ་ལས། གཅིག་ཁོ་ནས་  
 ཚིག་པར་འཛིན་པ་ཆེས་མི་འཐད་པའི་ཚུལ་འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་དུ་  
 རྒྱས་པ་དང་། མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་པ་དང་། གཙུག་པོ་ན་རིན་པོ་ཆེས་ལྷན་  
 པ་དང་། དཀོན་བཅེགས་འོད་སྤྲེང་ལེའུ་དང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་བའི་  
 མདོ་སོགས་ཀྱིས་བསྐྱབས་པར་མཛད་དོ།

1. བར་ཕྱིན་ཐིག་པའི་དང་ལམ་གྱི་དབང་དུ་ཐམས་ཅད་གསུངས་པ་དོ།



དེ་ལྟར་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ལ་དྲག་དྲུག་གིས་བས་ཡུན་རིང་དུ་གོས་ས་པར་...  
 བྱས་པས་སེམས་ཀྱི་རྒྱ་རིམ་གྱིས་དག་ནས་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་བསྒྲུབས་པ་...  
 རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་གྱུར་ནས་འཛིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་རྟོག་པའི་བྲ་  
 བ་མཐའ་དག་དང་བྲལ་བ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་དུ་གསལ་བར་རྟོགས་པ་དངོས་  
 པོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་པ་སྟེ་ས་དང་པོ་ཐོབ་པར་འགྱུར་ཞིང་། དེ་ནས་ས་  
 གོང་མ་ནམས་རིམ་གྱིས་སྦྱངས་ནས། བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སྒྲིབ་པ་མཐའ་  
 དག་ཟད་དེ། ཆགས་ཐོགས་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་པའི་ཡེ་ཤེས་གང་ལ་མངའ་བ།  
 ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པའི་གཞི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་སྟེ་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའི་...  
 དམིགས་པ་ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་ཐོབ་  
 པར་འདོད་པ་སྤྱོད་མཛུངས་ལ་རྒྱ་ཆེ་བའི་ནམ་དབྱེད་དང་ལྷན་པ་ནམས་ཀྱིས་...  
 ཟབ་མོ་དབྱ་མའི་ལས་ལ་མངོན་པར་བརྟེན་དགོས་པར་གདམས་པ་དང་། དག་  
 བ་བསྐྱེད་པ་བཅས་ཀྱི་བསྒྲུབ་པ་སྒྲུབ་རིམ་ཐ་མའི་མཆུག་བསྟུ་བར་མཛད་དོ།

༼ གསུམ་པ། ཞར་བྱང་འཕྲོས་དོན་ཚུང་ཟད་བཤད་པ།

(༡) བསྒྲུབ་རིམ་གསུམ་མཛད་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན།

དེ་ཡང་ཆོས་འབྱུང་ལོ་རྒྱས་ཀྱི་བཤད་ཚུལ་ལྟར་བྱས་ན། ཆོས་རྒྱལ་ཁྲི་  
 སྟོང་ལྟེ་བཙན་གྱིས་མཁས་མཆོག་ཀམལ་ཤིལར། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཐོས་བསམ་  
 གྱིས་བདག་མེད་པར་གདན་ལ་འབེབ་ཚུལ་དང་། དོན་དེ་ཉིད་སྟན་ཐོག་གཅིག་  
 དུ་ཇི་ལྟར་བསྒྲུབ་ཚུལ་དང་། དེ་ལྟར་བསྒྲུབས་པས་འབྲས་བུ་ཇི་ལྟར་བཙུགས་ཤིང་  
 སྤྱི་བ་གསུམ་གྱིས་པའི་ལན་དུ་བསྒྲུབ་རིམ་གསུམ་རིམ་བ་བཞིན་མཛད་པར་གསུངས་



སོ། །དེ་ལྟར་ན་བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མར་དང་པོ་གཉིས་ལ་ལྟོས་དེ་འབྲས་བུའི་ནམ་  
 བཞག་རྒྱས་ཅམ་ཞིག་བསྟན་དགོས་པ་ལ་དེ་མ་བསྟན་པར་འདུག་པའི་ཕྱིར་རོ་ཞེ་  
 བ། བདེན་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བསྐྱོམ་རིམ་གསུམ་བསྟན་བཅས་གཅིག་གི་ཆ་  
 འས་སུ་གྱུར་པའི་ལེའུ་ལམ་རབ་བྱེད་དང་གཉིས་ལྟ་བུ་མ་ཡིན་པར། གཞུང་རང་  
 མཚན་པ་ཤ་སྟག་ཡིན་པས་གདུལ་བྱ་ལས་ལ་བཀྱི་བའི་རིམ་པ་ལ་གཟེགས་ནས།  
 རྒྱས་བསྐྱུས་དང་། གཏོ་ཆེ་ཆུང་ཅམ་ལས་གསུམ་ཀར་ལས་བསྐྱོམ་པའི་རིམ་པ་  
 ཆ་ཆང་པ་རེ་བསྟན་པར་མཛད་དོ།

གལ་དེ་བསྐྱོམ་རིམ་ཐ་མ་ལྟ་བུ་གཞུང་རང་མཚན་པ་ཞིག་གི་ནང་སློང་གཞི་རྒྱ་  
 རྒྱན་སོགས་འབྲེལ་བ་ཆེ་བའི་ལས་གྱི་ནམ་བཞག་གང་ཡང་མ་བསྟན་པར་འབྲས་བུ་  
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་བསམ་གྱིས་མི་བྱལ་བ་ཁོ་ན་ཐོལ་བུང་བཞིན་པར་བསྟན་ན།  
 རྒྱུ་བོ་བསོད་ནམས་ཀྱི་བསམགས་རྒྱབ་ཤིན་ཏུ་ཆུང་ཞིང་། མདུན་གྱི་ལྟོ་སྟོང་སོར་  
 མངོན་སུམ་གྱི་སྟོན་ཡུལ་དུ་གྱུར་བ་ནམས་ལས་སྟོག་དུ་གྱུར་པའི་གནས་ཚུལ་ཇི་  
 འདྲ་བ་ཞིག་ལ་ཡང་ཡིད་ཆེས་རྒྱ་བཞག་ནས། འདི་འདྲ་བའང་ཡོད་སྟེད་སྟམ་  
 པའི་དྲོགས་པ་ཅམ་ཡང་སྟེ་བའི་སྒོ་གྲོས་ཀྱི་མཐུ་མེད་པ་དག་ཇི་ལྟར་ཇིས་སུ་  
 འཛིན་རྒྱས་སམ། དོན་དེ་འདྲ་བ་དག་ལ་དགོངས་ནས་གཞུང་རང་ཚན་པ་མང་པོར་  
 གཞི་ལས་འབྲས་གསུམ་གྱི་ནམ་བཞག་ཆ་ཆང་བ་སྟོན་པ་ལས་གཅིག་ཁོ་ན་ཐོལ་  
 བུང་དུ་བསྟན་པ་མེད་ལ། སངས་རྒྱས་འཛིག་དེན་དུ་བྱོན་པའི་ཆོན་ཡང་། རྒྱ་  
 འབྲུང་མ་ཐག་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛད་པ་ཤ་སྟག་མི་སྟོན་པར། ཐོག་མར་ཡིག་  
 ཅིས་སྟོབ་པ་དང་། ཁྱིམ་ལས་རབ་དུ་བུང་བ་དང་། དཀའ་བ་སྟེད་པ་སོགས་  
 མཛད་ནས་རིམ་གྱིས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛད་པ་བསྟན་པའི་གནད་གང་ལ་ཐུག། དེ་



བཞིན་དུ་སྒྲེས་བྱ་དཔེ་བ་བསམ་བཞིན་དུ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ་བྱོན་བ་ཐམས་ཅད་...  
 ཀྱང་། སྒྲོན་བྱོན་སྒྲོན་བའི་ནམ་ཐར་དང་། ཇེས་འཇུག་གདུལ་བྱའི་ཉམས་ལེན་  
 བྱེད་ཚུལ་གྱི་ལམ་བཟང་པོ་དེ་ཉིད་བསྟན་བའི་ཆེད་དུ་བྱུལ་བསྟན་ཡོངས་རྫོགས་ལ་  
 རིམ་གྱིས་བསྐྱབས་ནས་མཁས་ཚུལ་བཞེས་བ་ལས། རྒྱ་མེད་རང་བྱུང་ལྟ་བུ་  
 མི་མཛད་བ་འདི་དག་རབ་འབྱིང་པ་མའི་སློབ་ཅན་གྱི་གདུལ་བྱ་ལས་ལ་བགྱི་བའི་.....  
 ཐབས་མཁས་བ་ཆེན་པོར་མངོན་ནོ།

གཞུང་དོན་བསྟན་ཚུལ་གྱི་ཆ་ནས་བདག་ས་ན་བསྒྲོམ་རིམ་གསུམ་མཛད་.....  
 དགོས་བའི་རྒྱ་མཚན་འདི་ལྟར་སྤང་སྟེ། དེ་ཡང་ཐེག་བ་ཆེན་པོའི་ལམ་ལ་འཇུག་  
 བའི་དྲན་གྱི་གང་ཟག་ལས་དང་པོ་བ་དང་། ལམ་ལ་འཇུག་བཞིན་བ་དང་།  
 རྒྱགས་ཟིན་བ་གསུམ་གྱི་སྒོ་ཁ་མཐོ་དམན་དང་བསྟན་ནས་གསུངས་བ་ཞིག་དུ་.....  
 མངོན་དེ། བསྒྲོམ་རིམ་དང་པོ་ནི་སྐབས་སུ་འདི་ལྟར་གསུངས་སྟེ།

ཐེག་བ་ཆེན་པོའི་མདོ་སྟེ་ཡི།

ཚུལ་དབྱེད་ལས་ནི་དང་པོ་བ།

དེ་ལས་བརྩམས་དེ་བསྒྲོམ་བ་ཡི།

རིམ་བ་མདོ་ཙམ་བཛེད་བར་བྱ། ཞེས་གདུལ་བྱ་ལས་དང་

པོ་བ་དེ་དག་གི་དོན་དུ་ཐོག་མར་སྒྲིང་རྩི་དང་སེམས་བསྐྱེད་སྒྲོམ་ཚུལ་གྱིས་བར་.....  
 བསྟན་ནས། དེ་ནས་གཙོ་བོ་ཐོས་བསམ་གྱི་སྒྲོན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བདག་  
 མེད་བའི་ལྟ་བ་གདན་ལ་དབབ་ཚུལ་དང་། དེ་རི་ལྟར་བསྒྲོམ་ཚུལ་ས་ལམ་གྱི་  
 རིམ་བ་དང་བཅས་བ་གྱུས་བར་བསྟན་ནོ།

བསྒྲོམ་རིམ་བར་བའི་སྐབས་སུ་“ཐེག་བ་ཆེན་པོ་མདོ་སྟེ་ཡི་ཚུལ་གྱི་རིམ་སུ་



འཇུག་པ་ནམས་ཀྱི་བསྐོམ་པའི་རིམ་པ་མདོར་བཤད་དོ།” །ཞེས་ཐེག་པ་ཆེན་  
 པོའི་ལམ་ལ་འཇུག་བཞིན་པ་དེ་དག་གི་ཕྱིར་དུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཐོབ་པའི་  
 རྒྱ་ཁྱེན་ངོས་བརྒྱུད་ཚུལ་དང་། སེམས་བསྐྱེད་ལ་གཉིས་ཀྱི་ཕྱི་མ་དོན་དམ་སེམས་  
 བསྐྱེད་གཙོ་བོར་བསྐོམ་དགོས་པ་དང་། དེ་བསྐོམ་པའི་ཚུལ་ཡང་། ཞི་ལྷག་  
 གི་རྒྱ་ཚོགས་མཐའ་དག་ལེགས་པར་ཆང་བའི་སྒོ་ནས་དེ་གཉིས་སྟན་ཐོག་གཅིག་  
 ལ་ཅེ་གཅིག་དུ་བསྐོམ་ཚུལ་རྒྱས་པར་བསྟན་ནོ།

བསྐོམ་རིམ་ཐ་མའི་སྐབས་“ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་སྤེའི་ཚུལ་ལ་ཞུགས་པ་  
 ནམས་ཀྱི་ཕྱིར་བསྐོམ་པའི་རིམ་པ་མདོར་བཤད་པར་བྱའོ།” །ཞེས་ཐེག་པ་ཆེན་  
 པོའི་ལམ་ལ་ཞུགས་ཟིན་པ་སྒོ་ཁ་མཐོ་བ་ནམས་ཀྱི་ཕྱིར་དུ་ཕྱིན་འགྲོ་སྤྱིང་རྩེ་དང་  
 སེམས་བསྐྱེད་སོགས་ཀྱི་བཤད་པ་མ་མཛད་པར། རྒྱལ་བས་དྲིང་ངེ་འཛིན་མཐའ་  
 ཡས་པ་ཞིག་བསྟན་པ་ཐམས་ཅད་ཞི་ལྷག་གཉིས་སུ་འདུས་པས་དེ་གཉིས་བསྐོམ་  
 དགོས་པ་དང་། དེ་ཡང་དགོངས་འགྲེལ་ལས་གསུངས་པ་ལྟར་དམིགས་པའི་  
 དངོས་པོ་བཞི་ལྟེ། ནམ་པར་མི་དོག་པ་དང་། ནམ་པར་དོག་པ་དང་བཅས་  
 པའི་དམིགས་པ་དང་ལྷན་པའི་ཞི་ལྷག་གཉིས་གོམས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་དངོས་པོའི་  
 མཐའ་སྟེ་ཆོས་ཉིད་མངོན་སུམ་དུ་དོགས་པའི་འཕགས་ལམ་ཐོབ་ཚུལ་དང་། དེ་  
 ལ་བརྟེན་ནས་སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྤང་བའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་  
 སྒྲ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་རིམ་ལྟར་ཐོབ་ཚུལ་བསྟན་པར་  
 མཛད་དོ།

དེ་ལྟར་བསྐོམ་རིམ་གསུམ་ཀའི་ནང་བཤད་བྱ་མཚུངས་པ་རིམ་སྟེད་ཅིག་བསྟན་  
 པ་ལ་ལ་མཚན་དང་། མི་འོས་པ་སྟེ་གཞི་གང་ཡང་མེད་དེ། དུམ་གྱི་མདོ་



ནམས་སྲུ་འགྲིས་ཀྱང་བརྒྱུ་ཅ་བརྒྱུད་ཡང་དང་ཡང་དུ་བསྟན་པའི་ཕྱིར་དང་། འཛིག་  
 ཉེན་གྱི་ཁ་སྐད་ལ་ཡང་གལ་བོ་ཆེ་ལ་ནན་དན་དང་། དམ་པའི་ཆོས་ལ་བརྒྱ་ཆར་  
 གྱི་དཔེ་ལྷན་དགོས་པ་མད་དུ་བྱུང་བ་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ།

(༢) བསྐྱེད་རིམ་དང་བོ་དང་ཐ་མ་གཉིས་ཀྱི་ལེགས་སྦྱར་མ་དཔེ་རྟེན་ཚུལ།

མཁས་མཆོག་ཀམལ་ཤིལས་མཛད་པའི་བསྐྱེད་རིམ་ཐོག་མཐའ་བར་གསུམ་  
 ལས་དང་བོ་དང་ཐ་མ་གཉིས་དང་གི་དུས་སྲུ་ཡང་ལེ་སྦྱར་སྐད་ཐོག་ལ་པལ་ཆར་  
 ཉམས་མེད་རྟེན་སོན་བྱུང་ཡོད་པ་ལས། བསྐྱེད་རིམ་དང་བོ་ནི་ཨི་ཏེ་ལའི་མཁས་  
 པ་ཏུ་ཅི་ཞེས་བ་དེ་རྟེན། ཕྱི་ལོ་༡༩༣༩ ལར་བོད་ནང་བསྐྱེད་སྐབས་སྟོས་ཁང་དགོན་  
 བར་བཞུགས་པའི་ཀྱི་དཔེ་ཤིང་ལོ་འི་ཐོག་གིས་བ་ཞིག་ལག་སོན་བྱུང་ཡོད་ཅིང་།  
 དེའི་དབྱ་ཤོག་མ་ཆང་ཡང་ངོས་གཉིས་བར་དབྱ་མའི་བསྐྱེད་རིམ་ཞེས་ཡིག་ཆང་  
 འཁོད་ཡོད་པས་དེ་ཉིད་བོད་དཔེ་སྦྱར་མ་དང་ཞིབ་བརྒྱར་བྱེད་སྐབས་བསྐྱེད་རིམ་  
 དང་བོ་ཡིན་པར་ར་འཕྲོད་བྱུང་ནས་ཕྱིས་སྲུ་མཁས་བ་དེས་སྤྱོད་དང་བཅས་  
 རོ་མན་ཡིག་ཐོག་དུ་སྦྱར་འདེབས་བྱས་ཡོད། རོ་མན་ཡིག་ཐོག་དུ་ཡོད་པའི་ཀྱི་  
 དཔེ་དེ་དང་བོད་པའི་སྦྱར་མ་གཉིས་བསྦྱར་ནས་སྦྱར་ཞིབ་བྱེད་སྐབས་དབྱ་ཤོག་.....  
 གཅིག་མ་ཆང་བ་ཅས་དུ་མ་ཟད། ཞབས་ནའང་ངོས་ཤོག་བྱེད་ཅས་ཆང་མེད་ལ།  
 དེ་བཞིན་དུ་ལྷང་འདྲན་མཛད་མཚམས་མི་མཐུན་བ་དང་། ངོས་ཤོག་རེ་ཆང་གི་  
 གཞུང་དོན་བསྟན་མཚམས་མི་མཐུན་བ་སོགས་ཁྱད་པར་ཇི་སྟེད་ཅིག་མཛིས་སོ།

བསྐྱེད་རིམ་ཐ་མ་ཡང་གོང་སྟོས་མཁས་བ་དེ་ཉིད་ལ་ཏུ་སྦྱར་ནས་རྟེན་སོན་.....  
 བྱུང་རྗེས་རོ་མན་ཡིག་ཐོག་དུ་སྦྱར་བསྦྱར་བྱས་ཡོད་ཅིང་། ངོས་ནས་རོ་མན་



ཡིག་ཐོག་དུ་ཡོད་པའི་རྒྱ་དཔེ་དེ་གཉིས་ལེགས་སྤྱར་གྱི་ཡིག་ཐོག་དུ་ཕབ་བཤུས་  
 དང་འབྲེལ་བོད་པའི་སྤྱར་མ་ཁག་དང་བསྐྱར་ནས་སྤྱར་ཞིབ་བྱེད་སྐབས། གཞུང་  
 འདི་དག་གི་ཐོག་མའི་ལེགས་སྤྱར་མ་དཔེ་གིང་ཡོད་པའི་ཐོག་གིས་བ་དེ་དག་གི་ཡིག་  
 གཞུགས་ཆེས་རྩིང་པའི་དབང་གིས་ཡིག་ངོ་གཤིས་དཀའ་བ་དང་། གིང་ཡོར་  
 ཆག་སྟོན་དང་། རྩལ་བ་དང་། འབྲས་ཟོས་བ་སོགས་ལ་བརྟེན་ནས།  
 གསར་དུ་ཕབ་བཤུས་སྤྱར་འདེབས་བྱས་བ་དེ་དག་ལ་ཡང་། མགོ་མཇུག་མ་ཆང་  
 བ་དང་། ཆོག་དོད་ཆད་བ་དང་། ཆོག་གི་གཅོད་མཚམས་དང་ལྷང་འདྲན་  
 འཛོག་མཚམས་མི་མཐུན་བ་སོགས་ཁྱད་པར་ཆེན་པོ་ཡོད་ཅིང་། རྒྱ་མཚན་དེ་དག་  
 ལ་བརྟེན་ནས་སྐབས་མང་པོར་རྒྱ་དཔེ་ལས་བོད་དཔེ་དག་བ་དང་འཕད་ཆེ་བ་ཡོད་  
 ཅིང་། སྤྱིར་རྒྱ་དཔེ་དང་བོད་དཔེའི་དབར་ཁྱད་པར་མང་དག་ཡོད་པ་གཞུང་འདི་  
 ཅུམ་མིན་པ་ནི། ད་ཡོད་ཀྱི་ལེགས་སྤྱར་གྱི་རྒྱ་དཔེ་མ་ཉམས་བ་ཁག་དང་བོད་དཔེ་  
 བསྐྱར་ནས་དངོས་སུ་བཏག་པ་བགྱིས་ན་མཁྱེན་པར་འགྱུར་རོ།

### (3) བསྐྱོམ་རིམ་བར་བ་ཉམས་གསོ་དང་ཕབ་བསྐྱར་བྱེད་ཚུལ།

དེ་ཡང་ཐོག་མར་བསྐྱོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་གཉིས་དང་མཐུན་པའི་གཞུང་ཆན་  
 རིམ་ཡོད་དང་། བར་བ་དེ་ཉིད་དུ་ལྷང་འདྲན་མཛད་པ་ལེགས་སྤྱར་སྐད་ཐོག་དུ་  
 ཡོད་པ་ནམས་ཚལ་ཞིབ་བྱས་གིང་། དེ་ནས་གསར་དུ་ཉམས་གསོ་བྱེད་  
 དགོས་པ་ནམས་བསྐྱོམ་རིམ་ཐོག་མཐའ་གཉིས་ཀྱི་གསུང་རྩིས་ངོ་མའི་འགྲེམ་དང་  
 གང་མཐུན་ཅི་མཐུན་འགྱུར་ཐབས་སུ། བར་བ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཆོག་གལ་ཆེ་ཁག་  
 གོ་སྐད་དོད་ནམས། ཐོག་མཐའ་གཉིས་ཀྱི་ཆོས་ཆོག་གི་ཆོག་མཛོད་བཟོས་བ་



དང་ཞིབ་བསྐྱར་བྱས་ཇེས་སུ་བྱིངས་ནས་ས་ཕབ་བསྐྱར་དང་འབྲེལ་བྱ་བོད་ཀྱི་མཁས་  
པ་ཁག་གི་སྤྱན་ལས་དུ་ཞུས་དག་སྤྱི་ཇེས་བཏང་ཇེས་སུ་གཏན་འབེབ་བྱས་སོ།

དེའི་ཇེས་སུ་བསྒྲོམ་ཅིས་གསུམ་ཀ་ཉིན་སྐད་ཐོག་ཕབ་བསྐྱར་དང་འབྲེལ་.....  
ཆོས་ཆོག་གལ་ཆེ་ཁག་གི་སྐད་དོད་ནས་ས་ལེགས་སྐྱར་སོར་བཞག་བྱས་ཤིང་།  
བྱ་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་བསྐྱར་ནས་མི་མཐུན་པ་ཡོད་སར་གཞུང་གི་སྐབས་དོན་དང་...  
གང་རན་ཞིང་འཆོས་པ་དེ་ཉིད་གཙོ་བཟུང་གི་ཐོག་ནས་གཏན་འབེབས་བྱས་སོ།

### (༧) འགོར་གཞི་ཆེ་བའི་ལུང་འདྲན་ཆོལ་ཞིབ་བྱས་པའི་དགོས་པ།

ལས་དོན་འདི་དག་དང་འབྲེལ་བ་ཆེ་ཞིང་། དུས་རབས་གསར་པའི་དཔེ་དབ་  
བཟོ་སྒྲངས་ཀྱི་གོས་འགྲོས་དང་མཐུན་པ་ཞིག་བྱེད་དགོས་དུས། ལུང་འདྲན་ཆོལ་  
ཞིབ་དང་། སྤར་ས་ཁག་བསྐྱར་བྱ། ཟུར་མཆན་འགོད་བྱ། མིང་ཆོག་གལ་  
ཆེའི་ཆོག་མཛོད་དང་། འབྲེལ་ཡོད་དཔེ་ཐོ་བཀོད་བྱ་སོགས་ཁ་སྐོང་ངས་ཟུར་  
བཀོལ་ཁག་གིས་མཆོན་ལས་དོན་མང་དག་ཅིག་ཡོད་པ་ལས། ལུང་འདྲན་འཆོལ་  
ཞིབ་བྱེད་སྐྱའི་ལས་དོན་འདིའི་ཐད་མཆན་ཅིག་གི་འཕྲིལ་དང་མཐུན་པའི་ཆ་.....  
ཀྱིན་དགོས་ངས་ཅན་མ་ཆང་བའི་དབང་གིས་འགོར་གཞི་ཆེ་ཞིང་། ལུང་པར་དུ་  
གཞུང་འདི་ཡང་ལུང་འདྲན་ཆོས་མང་པོ་ཡོད་པའི་གྲས་ཤིས་ཡིན་པས་ད་དུང་....  
དཀའ་ཆོགས་སུ་གྱུར་དོ།

དེ་ལྟར་འགོར་གཞི་ཆེ་བའི་ལུང་འདྲན་ཆོལ་ཞིབ་ཀྱི་ལས་དོན་འདིར་འབད་  
བས་འཇུག་པ་ལ་དགོས་པ་ཅི་ཡོད་ཅེ་ན། གང་གི་ཤེས་བྱེད་དུ་བྲངས་སྐྱའི་ལུང་  
ཆོག་དེ་དག་ཁྱངས་མེད་ཟུན་བཟོས་དང་། རང་གི་འདོད་གཏས་བྱང་བྱལ་དུ་སྦྱོར་



བ་དང་། ངག་རྒྱན་དང་ཟེར་སྒྲོམ་ཙམ་ལས་བྱུང་བ་དང་། བཀའ་གདེར་བཙུག་  
 མ་སོགས་ལས་བདེན་པ་ལྟ་བུ་མ་ཡིན་པར། བཀའ་བསྟན་བཙུག་གི་ཁྲུངས་ཚད་  
 ལྷན་དངོས་སུ་བསྟན་རྒྱ་ཡོད་པ་ལ་ངེས་པ་བདེན་པོ་རྟེན་བྱུང་བ་དང་། ལུང་འདྲིན་  
 དེ་ལྷན་གྱི་བསྟན་བཙུག་དེ་ཡང་ཁྲུངས་བྱུང་ཚད་ལྷན་ཞིག་ཡིན་པ་ལ་ངེས་པ་འདྲིན་  
 བྱུང་བ་དང་། ལྷག་པར་དུ་ནང་ཚོས་ལ་དད་མོས་མེད་མཁན་དང་། བསམ་  
 ཚུལ་འདྲ་མིན་ཅན་གྱི་ཕྱི་མི་ནམས་གྱི་ངོར་ཁྲུངས་སྒྲེལ་ར་འབྲོད་གསལ་པོ་མེད་  
 པར་སྒྲོམ་འཛོག་བྱས་པ་ཁོ་ནས་ཁྲུངས་འཁྱུལ་ཐབས་མེད་པས་དེ་ལྟར་བྱས་སོ། །

ལུང་འདྲིན་ཚལ་ཞིབ་གྱི་སྒྲོ་ནས་ལུང་ཚོག་ཡིན་པར་ར་འབྲོད་ཇི་བཞིན་ས་  
 བྱུང་ཆོ། མཚམས་རེ་སམས་ཕུའི་རྒྱུད་གྱི་ཚོག་<sup>1</sup>:- “ནམ་དྲིག་ས་རིག་ཆེན་པོ་ལྟེ།  
 འཁོར་བའི་རྒྱ་མཚོར་ལྷུང་བྱེད་ཡིན།” །ཞེས་པ་ལྟ་བུ་བཙུག་ལྷན་འདས་གྱི་  
 བཀའ་དངོས་ཡིན་ཀྱང་། དེ་ཁ་ཅིག་གི་འདོད་པར་བཀོད་ནས་ཐད་ཀར་དགག་  
 བ་བྱེད་པའི་མཁས་པ་དག་ཀྱང་སྤང་མོད། གཤམ་དེ་དེ་ལུང་འདྲིན་ཚལ་ཞིབ་གྱི་  
 ལས་ནས་སངས་རྒྱས་གྱི་བཀའ་ཡིན་པར་ངེས་ན། ལྷས་ཟེན་ལྟར་ཁས་སྤང་བ་ལ་  
 མི་བདེ་བ་ཡོད་རིགས་ཀྱང་། དགོངས་གཞི་དགོས་པ་སོགས་གྱི་སྒྲོ་ནས་དྲང་དོན་  
 དུ་འབྱེལ་བ་ལས། ཐད་ཀར་དགག་པ་དེ་ལྟར་མི་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །སྐབས་  
 འགར་གང་དྲངས་རྒྱུའི་ལུང་ཚོག་དང་། གང་ནས་དྲངས་སའི་བྱུག་དཔེའི་མཚན་  
 བྱང་གཉིས་མི་མཐུན་པ་དང་། ལྷས་ཆེན་དམ་པ་ནམས་ཚད་མའི་ལྷས་བྱུངས།  
 ཅ་ཆེན་པོ་ཞིག་ཡིན་པར་བསྐྱབ་པ་ལ་སྐྱབ་བྱེད་དག་ཤོས་ལྟ་བུར་མདོ་རྒྱུད་ནམས་  
 སུ་ལུང་བསྟན་པའི་ཚོག་ཞིག་ཨེ་རྟེན་གཟིགས་རྒྱ་ལ་ཤིན་དུ་དབྱེས་ཚོར་ཆེན་པོ་

1. ལྟེ་-བཀའ་ (རྒྱུད་ཀྱི་ ༡༤༤)



བྱེད་པ་དག་ནས། མདོ་རྒྱུད་ཀྱི་ཚིག་ལ་འཕྲི་བསྟོན་བྱས་མིན་དང་། སྤར་མེད་  
གསར་བཟོ་བྱས་མིན་སོགས་ཀྱང་ལུང་འདྲིན་ཚུལ་ཞིབ་ཀྱིས་བཏྲགས་པ་བྱས་ན་.....  
གཤོན་མི་ཟ་བར་དངོས་ར་འཕྲོད་ཐུབ་པ་འབྱུང་ངེས་སོ།།

སྤྱིར་ན་སྦྱོར་ཆེན་དམ་པ་རྣམས་ཚད་མའི་སྦྱོར་བྱ་ཡིན་པར་བསྐྱབ་པ་ལ་ཐོག་  
མར་དེ་དག་གིས་གང་བསྟན་པའི་ལུང་རྟོགས་ཀྱི་བསྟན་པ་དེ་ཉིད་སྦྱོན་མེད་དུ་ཚད་  
མས་ངེས་པར་བྱས། དེ་ལ་བཞེན་ནས་དེ་སྟོན་པ་པོ་ཡང་ཚད་མའི་སྦྱོར་བྱ་ཡིན་  
པ་ལ་ངེས་པ་རང་སྟོབས་ཀྱིས་འདྲིན་པར་བྱེད་པའི་དམ་པའི་ཚུལ་ལུགས། ཡང་  
དག་པའི་རིགས་པའི་གཞུང་ལམ་ཆེན་པ་དག་དོར་ནས། ལུང་བསྟན་ཙམ་ལ་  
སྐབས་སུ་རེ་བའི་ངང་ཚུལ་འདི་ནི། གློ་གྲོས་ཀྱི་འཇུག་པ་ཆེས་དོག་པར་  
མངོན་ནོ།།

དེ་ལྟ་བུའི་ངང་ཚུལ་ལ་བཞེན་མ་དགོས་པའི་དབུར་མཚོན་ཞིག་བཞེད་ན།  
གངས་ཅན་གྱིང་དེའི་སྟོལ་འབྱེད་ཇི་བདག་ཉིད་ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་ཚད་མའི་སྦྱོར་བྱ་འཕྲུ་  
སྦྱོར་ཆེན་དམ་པ་ཞིག་ཡིན་པར་བསྐྱབ་པ་ལ། ཆོས་ལ་མ་རྟོན་པར་གང་ཟག་ལ་  
རྟོན་པའི་ངང་ཚུལ་ལོག་པ་བསྐྱང་བ་དང་། ལུང་བསྟན་ཙམ་ལ་སྐབས་སུ་རེ་བའི་  
ཐབས་ལམ་ཁོ་ན་ལ་རེ་ལྟོས་བྱ་མ་དགོས་པར་རང་ལ་རྣམ་དབྱེད་གློ་གྲོས་ཀྱི་ཅུལ་  
ཡོད་ན། དམ་པ་དེའི་སྐྱེ་གསུང་ཐུགས་གསུམ་གྱི་མཛོད་པ་རྣམ་ཐར་སྤྱི་དང་།  
ཁྱེད་པར་དུ་མཛོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་སྤྱིང་གསུང་གི་མཛོད་པའི་བྱུག་རྗེས་ལྷན་  
མེད་པ། རྒྱལ་བ་སྤྲུལ་དང་བཅས་པའི་དགོངས་པའི་གནད་ཡོངས་སུ་རྟོགས་པའི་  
ཟབ་རྒྱས་ཀྱི་གསུང་རབ་རྣམས་ལ་གཞུང་བོར་གནས་པའི་གློ་གྲོས་ཀྱིས་འཇུག་ན་དེ་  
གས་འཕྲུས་པར་མངོན་ཞིང་། ཚུལ་འདིས་མཁས་པའི་དབང་པོ་གཞན་རྣམས་ལ་



ཡང་རིགས་བསྐྱེ་བར་བྱའོ། །མདོར་ན་ཇི་བདག་ཉིད་ཆེན་བོས།<sup>1</sup>

བསྟན་བའི་ངང་ཚུལ་གྱིས་ནས་སྟོན་པ་ལ།

ཡིད་ཆེས་ཆེད་པས་དྲིལ་བྱ་གང་བར་ཤོག། །ཅེས་གསུངས་པའི་  
གནད་ཀྱང་འདི་ཡིན་ནོ།

(༥) ལུང་འདྲན་ཇི་ལྟར་མཛད་ཚུལ་ལ་དབྱེད་པ།

ཀྱི་བོད་ཀྱི་མཁས་གྲུབ་རྣམས་ནས་རང་རང་གི་བསྟན་བཅོས་སུ་ལུང་འདྲན་  
མཛད་ཚུལ་སྣ་ཚོགས་ཤིག་སྤངས་ཤིང་། འདི་ལྟར་ཀྱུལ་བའི་བཀའ་མདོ་རྒྱད་གཉིས་  
དང་། དེའི་དགོངས་འབྱེད་རྣམས་ལས་བཀའ་ཁྲིམ་གཏོགས་བསྟན་བཅོས་  
ཀྱི་ལུང་འདྲན་གཏན་ནས་མ་མཛད་པ་དང་། སྐབས་དོན་གྱི་སྒྲུབ་བྱེད་དུ་འབྲོག་  
བཀའ་བསྟན་བཅོས་སོགས་འཕགས་བོད་ཀྱི་མཁས་བ་སུའི་གསུངས་ཡིན་ཡང་……  
ལུང་འདྲན་མཛད་ཀྱང་གནང་བ་དང་། གང་དངས་རྒྱུའི་གཞུང་དེའི་མཚན་ཅམ་  
ལས་མཛད་པ་བོ་འི་མཚན་མ་བཀོད་པ་དང་། མཛད་པ་བོ་འི་མཚན་ཅམ་ལས་  
གཞུང་གི་མཚན་མ་བཀོད་པ་དང་། མཛད་པ་བོ་དང་གཞུང་མཚན་གང་ཡང་མ་  
བཀོད་པར་ཇི་སྟེན་དུ་ཞེས་སོགས་ཀྱིས་དབྱ་བཅམས་དེ་ལུང་འདྲན་མཛད་པ་……  
དང་། གང་དངས་རྒྱུའི་གཞུང་དེའི་ཚིག་སྣ་བསྐྱུས་ནས་བཀོད་པ་དང་། སྐབས་  
འགར་གཞུང་དེའི་ཚིག་མགོ་ཅམ་སྟོས་ནས་ ‘ཞེས་སོགས་ནས་ཞེས་པའི་བར་དོ།  
ཞེས་པ་དང་། ཡང་དེར་བཀོད་པ་རྣམས་འདིའི་ཡང་སྒྲུབ་བྱེད་དོ།’ ཞེས་  
ཞུལ་འཕངས་མཛད་པ་དང་། ལུང་འདྲན་དངས་སའི་གཞུང་མཚན་དངོས་སུ་

1. ཇི་ཁྱེད་ཐོད་ཐུ་ ༣༥ (བཟན་ལྷན་—དེབ་)



བཀོད་ཇེས་སུ་གང་དངས་རྒྱུ་ལྷུ་ཚིག་དངས་སུ་མ་བཀོད་བར་ལྷུ་དེའི་དོན་.....  
 ཐོབ་ཅས་རང་ཚིག་གི་ལས་ནས་བཀོད་བ་དང་། ཡང་སྐབས་དོན་དང་གང་འབྲེལ་  
 ཆེ་བའི་གཞུང་ཚིག་ནས་མ་སྤྱོད་ནས་དང་བ་ལས་དེའི་བར་ན་ཡོད་པའི་འབྲེལ་བ་  
 རྒྱུ་བའི་ཚིག་ནས་མ་དངས་བར་འཛོལ་བ་དང་། ཡང་གཞུང་མང་པོར་མཛོད་  
 ལས་ཀྱི་རྒྱུ་ལས་ཀྱི་བསྟན་བཅོས་ལས་ཀྱི་ཞེས་པ་ལྟ་བུ་སྤྱོད་ཀྱི་ཐུབ་ཅས་ལས་གཞུང་.....  
 ཚན་བྱེ་བྲག་གི་མཚན་མ་བཀོད་བ་དང་། ‘འོད་སྤང་གི་ལེའུ་ལས་’ ‘བདུན་བདུལ་  
 བའི་ལེའུ་ལས་’ ‘ཤེས་རབ་ལེའུ་ལས་’ ཞེས་པ་ལྟ་བུ་ཆ་ཤས་ཉི་ཆེ་བའི་མཚན་.....  
 ཅས་ལས་གཞུང་ངོ་མའི་མཚན་མ་སྤྱོད་བ་སོགས་མཁས་པ་ནམས་ཀྱི་བྲག་བཞེས་  
 མི་འདྲ་བ་མཐའ་ལས་པ་ཞིག་སྤང་ཡང་འདྲིར་བཀོད་བ་ནི་མཚན་བ་ཅས་སོ།

སྐབས་འབྲེལ་བསྐྱོར་རིམ་དུ་དངས་པའི་ལྷུ་འདྲེན་ནམས་གོང་གསལ་.....  
 དང་ཚུལ་དེ་དག་ལས་གང་དང་མཐུན་ཞེ་ན། གཞུང་འདྲིར་དངས་པའི་ལྷུ་  
 འདྲེན་དེ་དག་ནི། རྒྱལ་བའི་བཀའ་མདོ་རྒྱུད་གཉིས་ཁོ་ན་ལ་ཁྲུངས་སུ་མཛད་པ་  
 ལས་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ལྷུ་འདྲེན་གཏན་ནས་མ་མཛད་པ་ཞིག་སྟེ། དེ་ཡང་བསྐྱོར་  
 རིམ་བར་བ་ལས།<sup>1</sup> “འབྲས་བུ་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུ་དང་རྒྱུན་དེ་དག་  
 གང་ཞེ་ན། སྤྱི་བཤུ་བདག་ལྟ་བུ་དཔྱད་ཡོང་དང་འདྲ་བས་དེ་དག་བསྟན་  
 བར་མི་རྒྱས་མོད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བཅོས་ལྡན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་བར་ཐོགས་  
 བར་སངས་རྒྱས་ནས། གཏུལ་བྱ་ནམས་ལ་ཇི་སྐད་བསྟན་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་  
 གིས་བཅོས་ལྡན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཉིད་ཀྱིས་བཤད་དོ།” ཞེས་གསུངས་པའི་  
 ཕྱིར་རོ།

1. ཟླ་བ་ལྷན་ (དབུ་མ་ཀྱི་ ༤༢)



གཤམ་དེ་གཞུང་འདིར་བཟུན་བཅས་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་གཏན་ནས་མེད་པ་མི་འཐད་  
 དེ། སློབ་དཔོན་ཁྱུ་ལྔ་བ་ཀྱིས་མཛད་པའི་མདོ་ཀུན་བདུས་ཁྱུངས་སུ་དྲངས་པའི་  
 ལྷོ་རོ། ཞེས། སློན་མེད་དེ། འདིར་དྲངས་པའི་མདོ་ཀུན་བདུས་ཀྱི་ལུང་ཚིག་དེ་  
 དག་མདོ་ཀུན་བདུས་དེ་ཉིད་དྲངས་པའི་འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་  
 བཟུན་པའི་མདོ་དང་། འཕགས་པ་འཇམ་དབལ་ནས་པར་འཕྲུལ་བ་སོགས་ཀྱི་  
 མདོ་ཚིག་ཡིན་པ་ལས་སློབ་དཔོན་ཁྱུ་ལྔ་བ་ཉིད་ཀྱི་གསུང་མིན་པ་ནི་ཆེས་གསལ་པོ་  
 བར་གསུངས་སྟེ། བསྐྱེད་རིམ་ཐ་མ་ལས།<sup>1</sup> “འདིར་ཡང་འཕགས་པ་དྲི་མ་  
 མེད་པར་གྲགས་པས་བཟུན་པ་ལ་སོགས་པ་ཁྱུངས་བཟུན་ཅིང་བཤད་ཀྱི། དེ་  
 ཡང་སློབ་དཔོན་ཁྱུ་ལྔ་བ་ཀྱི་ཞལ་སྒྲ་ནས་ཀྱི་བཀའ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་སོགས་  
 གསུངས་པའི་ལྷོ་རོ།

སློབ་དཔོན་ཀམ་ལ་གྱི་ལའི་གཞུང་གཞན་ནམས་སུ་མདོ་བཟུན་བཅས་གཉིས་  
 ཀའི་ལུང་འདྲེན་མཛད་ཡོད་ཀྱང་། འདིར་བཟུན་བཅས་ཀྱི་ལུང་འདྲེན་གཏན་ནས་  
 མ་མཛད་པའི་རྒྱ་མཚན་ནི། སྐབས་དེར་ཡོག་པའི་ལམ་ལ་གཅིག་དུ་ཞེན་པ་རྒྱ་  
 ཅག་དུ་ཤང་ཆེས་འབྲངས་དང་བཅས་པས་ཆོས་བྱ་མི་དགོས་ཉལ་བས་ཆོག་ཅེས་  
 ལྷོན་པ་བསམ་གཏན་ཉལ་བའི་འཁོར་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་བཅུ་མས་ནས། དེ་རིགས་  
 བས་སྐྱབ་པ་ལྟ་བུའི་རྒྱ་བ་ཤ་དང་། ལུང་གིས་སྐྱབ་པ་མདོ་སྟེ་བརྒྱད་ཅུའི་  
 ཁྱུངས་ཞེས་བྱ་བ་ནམས་བཅུ་མས་པ་ལས། བཟུན་བཅས་ལ་ཁྱུངས་དང་ཡིད་ཆེས་  
 ཀྱིས་ཁས་ལེན་དེ་ཅམ་མི་བྱེད་པའི་གནད་འདི་གཟིགས་ཤིང་། དེ་དག་གི་ཁམས་  
 དབང་བསམ་པ་ལ་ལྷོས་ནས། སློབ་དཔོན་གྱིས་ཀྱང་དེ་དག་གི་ལྟ་བ་ནོར་བ་དེ་

1. ལྷོ་རོ་བཟུན་ (དབུ་མ་ཀྱི་ ༩༩)



སྤྱན་འབྱིན་པར་བྱེད་པའི་བསྟན་བཅས་འདིར། རྒྱལ་བའི་བཀའ་ཉིད་ཁྲུངས་སུ་  
མཛོད་ནས་བསྟན་པར་མཛོད་དོ།

(༩) ལུང་འདྲེན་ཁྲུངས་གདུགས་བྱེད་དགོས་པའི་རྒྱ་མཚན་དང་དགོས་པ།

དེ་ཡང་རྒྱལ་བའི་བཀའ་མདོ་རྒྱད་གཉིས་ཀྱི་དགོངས་འགྲེལ་དུ་བཅུ་མས་པའི་  
བསྟན་བཅས་ཚད་ལྡན་ནམས་སུ། རྒྱལ་གསུང་བདུད་ཅིའི་དགོངས་དོན་ནམས་  
མི་དགྲུག་ཅང་། དེ་དང་མི་འགལ་བའི་ཕྱིར་དུ་དེ་ལ་ཁྲུངས་སུ་མཛོད་དགོས་  
པའི་རྒྱ་མཚན་ནི། དེ་ཡང་རྒྱད་གླེ་མ་ལས།<sup>1</sup>

གང་ཕྱིར་རྒྱལ་ལས་ཆེས་མཁས་འགའ་ཡང་འཇིག་རྟེན་འདི་ན་ཡོད་མི་ནོ།

མ་ལུས་དེ་ཉིད་མཚོག་ནི་ཚུལ་བཞིན་ཀུན་མཁྱེན་གྱིས་མཁྱེན་གཞན་མིན་པ།

དེ་ཕྱིར་དང་སྤྱོད་རང་ཉིད་ཀྱིས་གཞག་མདོ་སྤེལ་ཡོན་དེ་མི་དགྲུག་།

ཐུབ་ཚུལ་བཞིག་ཕྱིར་དེ་ཡང་དམ་ཚིས་ལ་ནི་གཞོད་པ་བྱེད་པར་འགྱུར། །

ཞེས་གསུངས་པ་བཞིན་རྒྱལ་བ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ལས་ཆས་

མཁས་པའི་གང་ཟག་འགའ་ཡང་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་འདི་ན་ཡོད་པ་མ་ཡིན་དེ།

རྒྱ་ཆེ་བ་ཤེས་བྱ་ཇི་སྟེད་པའི་དོན་མ་ལུས་པ་དང་། ཟབ་པ་ཇི་ལྟ་བུའི་དོན་མཐའ་

དག་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པར་ནམ་བུ་ཀུན་མངོན་སུམ་དུ་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཉིད་ཀྱིས་

མཁྱེན་གྱི། གཞན་གྱིས་མིན་པ་དེའི་ཕྱིར་དང་སྤྱོད་ཆེན་པོ་རྒྱལ་བ་ཉིད་ཀྱིས་གསུངས་

པའི་དང་བ་དང་ངས་པའི་དོན་དུ་ནམ་བུ་བཞག་པའི་མདོ་སྤེལ་དོན་ནམས་རང་

བཟོས་མི་དགྲུག་ཅང་། དེ་ཉིད་ལ་ཁྲུངས་སུ་བྱེད་དགོས་པ་ཡིན་ནོ།

1. ལྟེ་—བསྟན་ (ཐམས་ཚིས་ 'མེ' ༡༢)



དེ་བཞིན་དུ་བཀའ་དེ་དགོངས་འབྱེད་དུ་བཅས་པའི་འཕགས་བོད་མཁས་་་་  
 བའི་བསྟན་བཅོས་ཚད་ལྡན་ནམས་ཀྱང་རྒྱལ་བའི་བཀའ་བཞིན་ཁྲུངས་སུ་བྱེད་དགོས་  
 བའི་རྒྱ་མཚན་ནི། དེ་ཡང་རྒྱུད་སྤྱོད་མ་ལས།<sup>1</sup>

གང་ཞིག་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་འབའ་ཞིག་གི།

དབང་བྱས་ནས་གཡེང་མེད་ཡིད་ཅན་གྱིས་བཤད།

ཐར་བ་ཐོབ་པའི་ལམ་དང་རྗེས་མཐུན་བ།

དེ་ཡང་དྲང་སྤོང་བཀའ་བཞིན་སྤྱི་བོས་སྤྱང་། ཞེས་གསུངས་  
 བ་བཞིན་སྟོན་པ་ཚད་མ་རྒྱལ་བ་ཡང་དག་པར་རྗེགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་།  
 དེའི་བསྟན་པ་ཚད་མ་འབའ་ཞིག་གི་དགོངས་དོན་བརྗོད་བྱ་ལྟར་ལན་བའི་དབང་་་་  
 དུ་བྱས་ཏེ། ཚུམ་བ་པོ་འི་ཀྱན་སྤོང་གི་ཁྱད་པར་རྟེན་པ་དང་བཀྱར་སྟོན་དང་།  
 གྲགས་པ་ལ་བལྟ་བ་སོགས་འཁོར་བའི་འདུ་འཛིན་ནམ་གཡེང་མེད་པའི་ཡིད་་་་  
 ཅན་གྱིས་བཤད་ཅིང་། བརྗོད་བྱའི་ཁྱད་པར་འབྲས་བུ་ཐར་བ་ཐོབ་པའི་ལམ་དང་  
 རྗེས་སུ་མཐུན་པ་སྟོན་པའི་བསྟན་བཅོས་དེ་ཡང་དྲང་སྤོང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བཀའ་་་་  
 བཞིན་དུ་སྤྱི་བོས་སྤྱང་དགོས་པར་གསུངས་པའི་སྤྱིར་དོ།

རྒྱ་མཚན་དེ་དག་ལ་བརྟེན་ནས་རང་ལུགས་འཐད་ལྡན་གཏན་སོ་ཡོད་པ་ཞིག་  
 འཛོག་ཐུབ་པའི་དགོས་པ་ཡོད་དེ། དེ་ཡང་དོན་མེད་དོན་ལོག་སོགས་ཀྱི་འཁྲུལ་  
 བའི་བྱིས་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་ཚད་ལྡན་གྱི་གཞུང་ལུགས་ཅེ་ཁྲུངས་དང་གཞི་  
 ཅུར་ངེས་བརྒྱུད་བྱས་ནས། གཞུང་གཞན་ནམས་དེ་དང་སྦྱར་དེ་ལྷང་རིགས་ཀྱི་སྦྱབ་  
 བྱེད་དང་ལྡན་པའི་དབྱེད་པའི་ལམ་ནས་དགག་བཞག་བྱེད་ཅིང་རང་ལུགས་འཛོག་



བ་ལས། གང་བྱང་གི་དཔེ་ལ་བལྟ་ཞིང་རྗེས་སུ་འབྲང་བར་མི་རིགས་དེ། རྗེ་གུང་  
ཐང་གི་གསུང་སློབ་གཉེར་བསྐྱབ་བྱ་ལས།<sup>1</sup>

འཁྱལ་བྲལ་གཞུང་རེ་ངེས་བཟུང་གཞིར་བྱས་ནས།

གཞན་ནམས་དེ་དང་སྦྲར་དེ་དབྱོན་བ་ལས།

གང་བྱང་དཔེ་ལ་ལྟ་ཞིང་ཐམས་ཅད་ཀྱི།

རྗེས་སུ་འབྲངས་བ་ཤེས་རབ་འཆལ་འགྱུར་བས།

རང་ལུགས་གདད་སོ་ཡོད་བར་གྱིས་ཤིག་ཨང་། །ཞེས་གསུངས་

པའི་ཕྱིར་རོ།

དེ་བཞིན་དུ་ཟབ་དོན་གྱི་གནས་ལ་དབྱད་བ་མི་ཐལ་བའི་དགོས་པ་ཡོད་དེ།

དེ་ཡང་གོ་རིགས་ཐན་ཐུན་གྱི་དབྱད་པས་ངེས་བ་ལས་ཅམ་རྟེན་ན་ཡང་། ཆོས་

ཚུལ་གིན་དུ་ཟབ་པའི་གནས་ནམས་ལ་རང་དགར་ཐག་གཅོད་བྱེད་སྟེ་ན། ཉན་དང་

གོལ་ས་གཞན་ལས་ཆེ་བས། ཆོས་ས་མ་སྤྱོད་བར་ཆོད་ལྟན་ཁྲུངས་གདུགས་བྱེད་

འོས་ཀྱི་གཞུང་ལ་འཁྱལ་བཞིན་དུ་བདགས་ན། དབྱད་བ་བྱེད་ཚུལ་ཐལ་ཆ་མེད་བ་

ཞིག་འབྱུང་མེ། དེ་ཡང་རྗེ་གུང་ཐང་གི་གསུང་སློབ་གཉེར་བསྐྱབ་བྱ་ལས།<sup>2</sup>

དབྱད་པས་ངེས་བ་ལས་ཅམ་རྟེན་ན་ཡང་།

ཆོས་ཚུལ་ཟབ་པས་ཐག་ཆོད་མི་སྟེ་ཞིང་།

འགྲིག་འགྲིག་མང་པོས་ནམ་དོག་བྱ་སྦྱེད་བས།

དབྱད་བ་མ་ཐལ་གཞུང་ལ་འཁྱལ་བཞིན་དུ།

གྱིས་བསྐྱུས་འཆོས་པའི་དབྱད་ཚུལ་གྱིས་ཤིག་ཨང་། །ཞེས་

1. གུང་ཐང་ 'ང' rs (མྱོ་ཐོ་-དེ་བ་) 2. གུང་ཐང་ 'ང' rs (མྱོ་ཐོ་-དེ་བ་)



གསུངས་པ་ལྟར་རོ།

མདོར་ན་བསྐྱབ་བྱའི་དོན་གང་ཞིག་སློ་ངོར་མ་གྲུབ་པ་དེའི་སྐྱབ་བྱེད་བཟུན་  
བའི་ཕྱིར་དང་། བསྐྱབ་བྱ་གང་ཞིག་ཆེས་ཁྱད་སྤངས་ཐུབ་དང་། ཚད་ལྡན་ཡིན་པ་  
བཟུན་བའི་ཕྱིར་དང་། བརྗོད་དོན་གང་ཞིག་རང་བཟོ་ཁོ་ན་མ་ཡིན་པའི་ཁྱད་སྤངས་  
ཡོད་པར་བཟུན་བའི་ཕྱིར་དང་། དོན་གྱི་བཟུན་ཚུལ་གང་ཞིག་གཞུང་འདྲི་དང་  
མཚུངས་པ་གཞན་ལ་ཡང་གསལ་ཡོད་པ་རྒྱས་པར་བཟུན་འདྲོད་པ་སོགས་ཀྱི་.....  
དགོས་པ་ཡོད་པའི་ཕྱིར་རོ།

(ལ) སྤར་མ་འདྲ་མིན་བསྐྱར་ཚུལ།

གཞུང་འདྲིའི་མ་ཕྱི་སྤེད་གོ་སྤར་མ་གཞི་ཅན་བརྒྱུད་བའི་ཐོག་། ཅོ་ནེ་དང་།  
སྤར་ཐང་དང་། བེ་ཀིང་སྤར་མ་གསུམ་དང་བསྐྱར་བའི་ཚོ། སྤེད་གོ་དང་ཅོ་ནེ་  
གཉིས་ཀྱི་དབར་ཁྱད་པར་ཐུན་ཆོགས་རེ་རྒྱུད་ལས་ཁྱད་ཆེ་བ་མེད་པས་ཕྱོགས་.....  
གཅིག་ཅིང་། དེ་བཞིན་དུ་སྤར་ཐང་དང་བེ་ཀིང་སྤར་མ་གཉིས་ཀྱང་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་  
བཞག་ན་མི་འཕྱས་པ་མེད་པས། སྤར་མ་སྤར་མ་གཉིས་དང་ཕྱི་མ་གཉིས་ཀྱི་དབར་  
ཞིབ་བསྐྱར་བྱེད་སྐབས། བསྐྱོམ་རིམ་སྤར་མའི་ཐད་སྤར་ཐང་དང་བེ་ཀིང་གི་སྤར་  
མ་དེ་གཉིས་ཆོག་དོན་གཉིས་ཀྱི་ཆ་ལ་མ་དག་པ་དང་ཆད་སྐྱོན་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་  
པས། དེ་དག་ངོས་ཤོག་སོ་སོའི་གཤམ་དུ་མཆན་བྱར་བདེ་བ་ཅིང་། སྐབས་  
འགར་སྤར་མ་སྤར་མ་གཉིས་ལས་ཕྱི་མ་གཉིས་ཀྱི་གཞུང་ཆོག་སྐབས་དོན་དང་རན་  
ཞིང་། རྒྱ་དབེ་དང་མཐུན་ཚབ་ཆེ་བ་ཡོད་སར་སྤར་མའི་ཆོག་ནམས་མཆན་བྱར་  
བདེ་བ་གོ། །ཡང་སྐབས་མང་པོར་གཞུང་གི་བཟུན་དོན་དང་གིན་དུ་མཐུན་ཞིང་རྒྱ་



དབེར་དངོས་སུ་གསལ་བ་ལ་བོད་པའི་སྤར་མ་བཞི་ཀའི་ནང་མི་གསལ་བ་དང་།  
 དེ་ལས་ཐོག་དེ་གཞུང་གི་སྐབས་དོན་དང་འཆོམ་ཞིང་བོད་དབེར་ཡོད་པ་ལ་གྱི་.....  
 དབེར་མི་གསལ་བ་ཡང་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་པ་དེ་དག་གཞུང་ངོ་མར་ཤད་གྲག་གི་  
 ནང་དུ་བཅུག་ནས་བཀོད་དོ།

དེ་དང་ཕྱོགས་མཚུངས་བསྟན་བཅོས་ཀྱི་ནང་དུ་དངས་པའི་ཁྱད་ཚིག་དང་།  
 མདོ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་རིས་དབར་དོན་མཐུན་ཡང་། ཚིག་སྦྱར་གྱི་འགྲུལ་ལ་མི་འདྲ་  
 བའི་ཁྱད་པར་ཇི་སྟེད་ཅིག་ཡོད་ལ། དེ་ལྟར་འབྱུང་བའི་གྱུ་མཚན་ནི། ཁྱད་  
 འདེན་ལེན་ཡུལ་གྱི་མདོ་རྒྱད་བསྟན་བཅོས་བསྐྱར་བ་བོ་དང་། དེ་ལས་དངས་  
 བའི་ཁྱད་འདེན་དེ་ལྟན་གྱི་བསྟན་བཅོས་བསྐྱར་བ་བོ་གཉིས་མི་འདྲ་བའི་དབང་.....  
 གིས་འབྱར་གྱི་ཁྱད་པར་ལས་བྱུང་བ་དང་། སྐབས་འགར་ཁྱད་འདེན་ལེན་ཡུལ་  
 གྱི་མདོ་རྒྱད་མ་བསྐྱར་གོང་དེ་ལས་དངས་པའི་ཁྱད་འདེན་དེ་ལྟན་གྱི་བསྟན་བཅོས་  
 བསྐྱར་ཟིན་བ་ཡང་ཡོད་ལ། གལ་དེ་ཁྱད་འདེན་ལེན་ཡུལ་གྱི་མདོ་རྒྱད་སྟེན་ལ་  
 བསྐྱར་ཟིན་དུ་ཆུག་ཀྱང་། དེ་ལས་དངས་པའི་ཁྱད་འདེན་དེ་ལྟན་གྱི་བསྟན་བཅོས་  
 བསྐྱར་བའི་ཚོ། དེར་དངས་པའི་ཁྱད་འདེན་ནམས་ཐད་ཀར་ཐབ་བསྐྱར་བྱེད་པ་  
 ལས། དངས་ཡུལ་གྱི་མདོ་རྒྱད་བསྐྱར་ཟིན་བ་དེ་དང་དེའི་ཤོག་ངོས་གང་དུ་ཡོད་  
 མེད་འཆོལ་ཞིབ་བྱེད་སྒྲིའི་དེད་དུས་ཀྱི་ལམ་སྟོལ་དེ་འདྲ་མེད་ཚོད་དུ་སྤང་ངོ་། །

སྤར་བཅས་སྒྲུལ་ཀུན་གཤེགས་པའི་གཞུང་ལམ་མཚོག་།

ཟབ་དང་གྱུ་ཚེའི་གསུང་རབ་སྟོང་པོ་འི་དོན།

གཅིག་དུ་བསྒྲོམ་པའི་མདོ་བྱང་ཐབས་བཟང་པོ།

སྟོན་མཛད་མཁས་མཚོག་ཀམལ་ཤིལ་སྒྲུལ།



སྒྲིབ་པའི་ཁྱུ་མཆོག་ནམ་དཔྱོད་ལུས་སྒྲོབས་ཀྱི།

གཤེག་ཅུལ་རབ་ཆོགས་ཤེས་བྱའི་མཁའ་དབྱངས་སུ།

སྒྲིབ་ཀྱི་བྱ་ལས་རྒྱ་བ་ཡོངས་ཀྱི་ཁྱོད།

འདབ་བཟང་དབང་པོ་བཞིན་དུ་མངོན་པར་འཕགས།

གང་དེའི་མཁའ་རབ་དྲ་བུན་དབང་པོས་གངས་ཅན་ལོག་སྒྲིབ་སྒྲིབ་སྒྲིབ་ཀྱི།

བསལ་བྱེད་བཅོས་ལྡན་སྒྲིབ་པའི་སང་གའི་དྲི་མེད་བཀའ་ལུང་ཁྱོད་ཀྱི་དང་།

རྣོང་ར་ཆ་ཟེར་རིགས་ལས་སྒྲོང་གིས་དྲུང་ནས་ཕྱང་དང་ལྷན་གཅིག་དུ།

སྒྲིབ་ལྡན་གདུལ་བྱའི་ནམ་དཔྱོད་འཛིན་མར་ཡང་དག་ལྟ་བུ་བའི་འོད་ཆུབས་འཕྱོ།

ཅུལ་འདྲིར་འབད་ལས་བྱུང་བའི་དགེ་བ་ཡིས།

འགྲོ་ཀྱན་ཟབ་རྒྱས་ལས་གྱི་ཅུལ་དོགས་ནས།

ཉིན་མཆོག་ཀྱན་དུ་སྒྲིབ་བ་ལྟར་ལེན་བ།

དག་དུ་རྒྱལ་བ་སྤྲས་བཅས་མཉེས་བྱེད་ཤོག །

སངས་རྒྱས་འདས་ལོ་ ༡༧༢༠

ཡུ་ཅུར་རྒྱལ་མཆོག་ནམ་གྲོལ།

བོད་རྒྱལ་ལོ་ ༡༧༧༢

( ལྷ་ཁ་མཐོ་སྒྲོབ། )

ཞོ་རྒྱལ་བཟུན་དབྱར་གྱི་མཆོ་བཞིན་འཕེལ་ཞིང་རྒྱས།

བཟུན་འཛིན་བད་དཀར་ཚལ་བཞིན་ནམ་ཐར་གཙང་།

བདེ་སྦྱིད་ཉི་མའི་འོད་བཞིན་ཕྱོགས་བཅུ་བ།

འགྲན་བཞིན་ཁུབ་བ་ཆོགས་ལྡན་དུས་བཞིན་ཤོག །

( རྟུན་རྒྱུ་མཆོ་མཆོ་ ༡༠༠ )

དགེ་ལེགས་འཕེལ།



## भूमिका

अन्त तथा कोटि से रहित दशदिशाओं वाले इस विशाल लोक में, असंख्य तथा अपरिमित सत्त्व सुखगति तथा दुर्गति प्राप्त करते रहते हैं, उनके द्वारा अनादि तथा अनन्त काल एवं अवस्थाओं में पुण्य तथा पाप कर्म संचित होते रहते हैं। उन कर्मों से प्राप्त तथा प्राप्तव्य फलरूपी प्रदीप-कल्प तथा अन्धकार-कल्पों के क्रम यहाँ निरन्तर ही चलते रहते हैं।

इनमें से इस लोक में सम्प्रति 'भद्रकल्प' के नाम से सुप्रसिद्ध प्रदीप-कल्प में मनुष्यों की चालीस हजार वर्षों की आयु में क्रकुच्छन्दबुद्ध, तीस हजार वर्षों की आयु में कनकमुनिबुद्ध, बीस हजार वर्षों की आयु में काश्यपबुद्ध तथा सौ वर्षों की आयु में महामुनि गौतमबुद्ध का आगमन हुआ। इन्होंने बोधगया में बुद्धत्व प्राप्त किया और विनेयजनों के लिए तीन धर्मचक्र-प्रवर्तन करके भारतवर्ष में सर्वप्रथम सूत्र तथा तन्त्र से युगनद्ध बुद्ध-शासन का उदय किया है।

इसके बाद शम्भल में 'धा-वा-सङ्-पो' ( चन्द्रभद्र ) नामक राजा ने बुद्धशासन का विकास किया। तिब्बत में त्रिकुल-बुद्धों के अवतार माने जाने वाले महाधर्मराजाओं ने क्रमशः बुद्धशासन का विकास किया। इसमें काल की दृष्टि से उसे दो भागों में विभक्त किया जाता है। पूर्वकालीन विकास को 'पूर्वोदय-शासन' तथा पश्चात् कालीन विकास को 'परोदय-शासन' कहते हैं।

### ग्रन्थकार का सामान्य परिचय

आचार्य कमलशील पूर्वोदय-शासन के अन्तर्गत सम्राट् ठिसोङ्-देऊचन ( ७४२-७९८ ई० ) के शासनकाल ( ७५४-७९८ ) में लगभग ७९२ ई० के आसपास भोट देश में पहुँचे थे। उस समय आर्यदेश से सुवर्ण पर्वतों की पङ्क्ति के सदृश अनेक महान् आचार्यों का आगमन हुआ था। इनमें से आचार्य कमलशील भोटदेशीय बुद्धशासन में बड़ी प्रतिष्ठा वाले महान् सुधारक माने जाते हैं, क्योंकि इन्होंने बुद्धशासन पर महत्त्वाकाङ्क्षी चीनदेशीय भिक्षु 'ह्वुशङ्' आदि के द्वारा उपदिष्ट विपरीत दृष्टियों का उन्मूलन करके यथार्थ सिद्धान्तभूत भगवान् बुद्ध की अभिप्राय-निष्ठाओं पर अत्यन्त सुस्पष्ट प्रकाश डाला। जिसके आधार पर उन्होंने तीन भावनाक्रमों की रचना की। जिनमें समस्त धर्मों का श्रवण तथा चिन्तन के माध्यम से नैरात्म्य-दृष्टि की व्यवस्था का प्रति-



पादन किया, तथा उस अर्थ की एकासन में किस प्रकार भावना करनी चाहिए, और उससे प्राप्त होने वाले फल के विषय में भी समुचित प्रकाश डाला ।

इसमें विक्रमशील महाविश्वविद्यालय के विद्वान् प्रवचनों की व्याख्या करते समय धर्म की प्रामाणिकता के स्रोत को प्रकट करने के लिए (१) धर्मग्रन्थकारों की विशेषता, (२) धर्म की विशेषता तथा (३) किस प्रकार से देशना देना तथा श्रवण करना चाहिए, ये तीन प्राथमिक आवश्यकताएँ मानने लगे । इस प्रकार यहाँ पर भी सर्वप्रथम धर्म की प्रामाणिकता के स्रोत को प्रकट करने के लिए प्रकृत ग्रन्थ 'भावना-क्रम' के रचयिता आचार्य कमलशील का संक्षेप में जीवन-वृत्तान्त देना आवश्यक है ।

यद्यपि आचार्य जी का जन्म स्थान, जन्मकाल, अल्प वय में ही जिस प्रकार गम्भीर एवं विस्तृत प्रवचनों में बहुश्रुत होने के कारण आगम-गुणों की प्राप्ति, विधि-पूर्वक साधन होने से अधिगम-गुणों की प्राप्ति तथा तदाश्रित बुद्धशासन के विषय में जिस प्रकार जितने विशाल कार्य भारतवर्ष में किये गये हैं, उन सभी के विषय में पर्याप्त परिचय मिलना तो अत्यन्त दुर्लभ है, फिर भी वे लाखों विद्वानों के आश्रयभूत श्रीनालन्दा की विद्वन्मण्डली में से अद्भुत प्रतिभासम्पन्न तथा प्रकाण्ड विद्वान् रहे हैं । यह सिद्ध करना भविष्यवाणी या किंवदन्ती आदि अन्य उपायों पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि महापुरुषों के द्वारा शरीर, मन तथा वाणी से किए जाने वाले कर्मों में से वाणी का ही कर्म सर्वश्रेष्ठभूत एवं प्रधान है । जिसके फलस्वरूप निम्नलिखित इनकी प्रामाणिक तथा विद्वत्तापूर्ण अनेक अद्भुत महान् कृतियाँ हैं । जिनसे उनकी विद्वत्ता सुस्पष्टरूप में ज्ञात हो सकती है ।

आचार्य कमलशील के जीवन-वृत्तान्त के संदर्भ में तिब्बत के विद्वान् 'शक्य-म्छोग्-ल्दन्' द्वारा विरचित 'रोङ्-स्तोन्' के जीवन-वृत्तान्त 'ङो-म्छर-दद्-पई-रोल्-म्छो' (पृ० ३०२) में आचार्य कमलशील ने चीनी भिक्षु 'ह्वशङ्' की विपरीत दृष्टि का उन्मूलन करने के बाद भारत वापस आते समय मार्ग में 'दम्-पा-ग्य-गर' अथवा 'फा-दम-पा-सङ्-ग्यस्' का मुलाकात होकर एक दूसरे के शरीर में परकायप्रवेश किया । वास्तव में परकायप्रवेश के बाद तिब्बत में आए हुए आचार्य कमलशील का शरीर तो सुप्रसिद्ध महासिद्ध 'दम्-पा-ग्या-गर' का था और चित्त अविकल्प-ज्ञान के स्वरूप तो उन्हीं महाविद्वान् कमलशील का अपना ही था । ऐसा कहा गया है ।

'कुन्-म्ख्येन्-पद-मा-दक्-पो' द्वारा विरचित 'छोस्-ब्युङ्-ब्तन्-पई-पद्-मा-ग्यस्-पई-जिन्-व्येद्' नामक धर्म-इतिहास ('ख' पृ० ३०४) में आचार्य कमलशील का तिब्बत



में देहान्त होने के बाद भारत में अगले जन्म में वे उत्पन्न हुए और उनका नाम 'दम-पा-न्य-गर' था, ऐसा कहा गया है।

शि-व्येद् (शान्तिकर) सम्प्रदाय की गुरुपरम्परा के धर्म-इतिहास 'गोद्-युल-ओन्-मोड्-शि-व्येद्-क्यी-व्का-न्तेर-ज्जा-मा-न्युत-पई-रुन्-थर' (पृ० १९) में आचार्य कमलशील को भारत में रहते समय 'पण्डित कमलशील' तथा तिब्बत में रहते समय 'दम-पा-न्या-गर' कहे जाने का उल्लेख मिलता है। इतना ही नहीं, अनेक धर्म-इतिहासों में 'दम-पा-न्या-गर' को कमलशील, महायोगीन्द्र कमलशील, भट्टारक कमलशील, कमलश्री, भट्टारक कमलश्री तथा फा-दम्-पा-सङ्-ग्यस् इन पर्यायवची नामों का उल्लेख किया गया है। इन विभिन्न विचारणीय मतान्तरों के विषय पर मैंने भोट-भाषा वाली भूमिका में विस्तार से कहा है।

### आचार्य कमलशील जी की कृतियाँ

सभी कर्मों में वाणी का ही कर्म परम एवं श्रेष्ठ माना जाता है। अतः आचार्य कमलशील के श्रेष्ठ-कर्म सूचित करने वाले ग्रन्थरत्न इस प्रकार हैं।

#### 'विनय के विषय में'

- (१) ४१२८<sup>१</sup>—श्रमणपञ्चाशत्कारिकापदाभिस्मरण।

#### 'प्रज्ञापारमिता'

- (२) ३८१५—आर्यसप्तशतिकाप्रज्ञापारमिताटीका।  
(३) ३८१७—आर्यप्रज्ञापारमितावज्रच्छेदिकाटीका।

#### 'मध्यमक'

- (४) ३८८६—मध्यमकालंकारपञ्जिका।  
(५) ३८८७—मध्यमकालोकनाम।  
(६) ३८८८—तत्त्वालोकनामप्रकरण।  
(७) ३८८९—सर्वधर्मनिःस्वभावसिद्धि।  
(८) ३९१३—बोधिचित्तभावना।  
(९) ३९१५-१७—भावनाक्रम (तीन ग्रन्थ)।  
(१०) ३९१८—भावनायोगावतार।

१. ऊपर लिखित ग्रन्थों की संख्या देगे तन-ग्युर संस्करण के सूचीपत्र के अनुसार है।



### ‘सूत्रवृत्ति’

- (११) ४०००—आर्याविकल्पप्रवेशधारणीटीका ।  
 (१२) ४००१—आर्यशालिस्तम्भटीका ।

### ‘लेख’

- (१३) ४१९३—ब्राह्मणीदक्षिणाम्बायै अष्टदुःखविशेषनिर्देशनाम ।  
 (१४) ४१९५—श्रद्धोत्पादप्रदीप ।

### ‘प्रमाण’

- (१५) ४२३२—न्यायबिन्दुपूर्वपक्षसंक्षिप्त ।  
 (१६) ४२६७—तत्त्वसंग्रहपञ्जिका ( यह ग्रन्थ मूल संस्कृत में भी सुरक्षित है ) ।

### ‘नाना वर्ग’

- (१७) ४३९३—प्रणिधानद्वयविधा ।

## ग्रन्थ का सामान्य परिचय

भावनाक्रम बौद्धसाधना का एक अतीव महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। भोट-देश के साधकों में इसका बहुत सम्मान है। इसकी रचना भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य शान्तरक्षित के अप्रतिम प्रतिभासंपन्न मेधावी शिष्य आचार्य कमलशील ने की है। वे सम्राट् ‘ठि-सोङ्-देउ-चन’ के शासनकाल में लगभग ७९२ ई० के आस-पास भोट देश पहुँचे थे। उस समय इन भारतीय आचार्यों ने बौद्ध धर्म के मूल स्रोत भारत वर्ष की विशाल विद्याराशि को भोट-भाषा में अनुवाद कराने की समुचित प्रणाली का विस्तार किया।

आचार्य कमलशील ने ‘ब्सम्-यस्’ नामक महाविहार में तत्कालीन सम्राट् की प्रार्थना पर तीन भावनाक्रमों की रचना की। यह मूलतः संस्कृतभाषा में लिखा गया था, जिसका भारतीय पण्डित प्रज्ञावर्म तथा तिब्बत के लोचवा ‘ये-शेस्-स्दे’ ( ज्ञान-सेन ) ने मिलकर संस्कृत से भोटभाषा में अनुवाद किया। आज भी यह ग्रन्थ भोट-भाषा में प्राप्त संस्करण “स्दे-द्गे-स्तन्-ग्युर” संस्करण ( मध्यमक ‘कि’ पत्र सं० २२-६८, ग्रन्थ सं० ३९१५-१७ ), “स्तर्-थङ्-स्तन्-ग्युर” संस्करण ( ‘अ’ पत्र सं० २२-७४ ) ‘पिकिङ्ग-स्तन्-ग्युर’ संस्करण ( मध्यमक ‘अ’ पत्र सं० २२-७४, ग्रन्थ सं० ५३१०, खण्ड १०२ ) आदि में सुरक्षित है।



यह ग्रन्थ आचार्य कमलशील ने मूलतः संस्कृत भाषा में लिखा था, किन्तु सम्प्रति यह ग्रन्थ अपनी मूल संस्कृतभाषा में पूर्णतः प्राप्त नहीं होता। प्रो० टूची (G. Tucci) ने सन् १९३९ ई० में तिब्बत जाकर 'पोस्-खङ्' मठ से प्रथम भावनाक्रम की मूल संस्कृत पाण्डुलिपि तथा रूस से तृतीय भावनाक्रम की मूल संस्कृत पाण्डुलिपि को प्राप्त करके रोमन लिपि में उसे छपवाया है।

इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की उपयोगिता तथा महत्त्व को देखते हुये मैंने इस रोमनलिपि से देवनागरी लिपि में लिप्यन्तर किया। इसके बाद भोट-संस्करणों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर मालुम हुआ कि प्रथम भावनाक्रम का पहला पृष्ठ तथा अन्तिम आधा पृष्ठ भी अनुपलब्ध है। एक-दो सूत्रों के उद्धरणों में भी भोट-भाषा और संस्कृत में स्थान-भिन्नता दिखाई देती है। कई पृष्ठों के अनुच्छेदों में भी अन्तर दिखाई पड़ता है। इतना ही नहीं, शब्दावली में भी काफी अन्तर देखने को मिलता है। पाण्डुलिपि बहुत पुरानी, अस्पष्ट तथा जीर्ण-शीर्ण होने के कारण प्रथम तथा तृतीय भावनाक्रम के कई स्थलों पर अपूर्ण वाक्य तथा कुछ शब्द छुटे हुए हैं। जिनको भोट-भाषा से मिलाकर पूर्ण किया गया है। जो शब्द और वाक्य भोट-भाषा से लिये गये हैं, वे सब बृहत कोष्ठक [ ] के भीतर रखे गए हैं। कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जो संस्कृत मूल ग्रन्थ में उपलब्ध हैं और अनूदित भोट-पाठ में नहीं हैं। वहाँ पर भी जो शब्द अतिसंगत लगते हैं वे सब भोट-पाठ में लघु कोष्ठक ( ) के भीतर रखने की चेष्टा की गयी है।

भोट-भाषा में प्राप्त देगे-संस्करण को आदर्श बनाकर स्नर-थङ्, पेकिङ्ग तथा 'चो-ने' संस्करणों के साथ मिलाने पर उनमें जितने पाठान्तर मिले, वे सब टिप्पणी के रूप में रखे गए हैं। देगे-संस्करण के अलावा अन्य तीन तिब्बती संस्करणों में जो शब्द मूल संस्कृत-पाठ में भी उपलब्ध हैं और अर्थ आदि की दृष्टि से अतिसंगत लगते हैं, वे सब आदर्श पाठ में रखकर देगे-संस्करण वाले शब्दों को टिप्पणी में रखा गया है। इस ग्रन्थ में उद्धृत जो सूत्र-वचन चाहे संस्कृत में उपलब्ध हों या भोट-भाषा में, उन्हें यथा-सम्भव खोज करके उन मूल ग्रन्थों के संस्करणनाम, पृष्ठसंख्या आदि सन्दर्भ टिप्पणी में राखा गया है।

### द्वितीय भावनाक्रम का पुनरुद्धार

सर्वप्रथम द्वितीय भावनाक्रम के जो अंश प्रथम तथा तृतीय भावनाक्रम में भी पूर्णतया समान हैं या प्रायः समान हैं, उन अंशों की खोज की और वे सब भिन्न अक्षर



( १४ काला ) में छापे गए हैं। तत्पश्चात् द्वितीय भावनाक्रम में उद्धृत लङ्कावतार आदि कुछ सूत्रग्रन्थ ऐसे हैं, जो संस्कृत में भी उपलब्ध होते हैं, उन ग्रन्थों के अन्तर्गत अपेक्षित सूत्रवचनों की खोज की और प्राप्त पाठान्तरों को टिप्पणी के रूप में प्रस्तुत किया। वर्तमान समय में जितना पुनरुद्धार करने की आवश्यकता पड़ती है, उसको यथासम्भव प्रथम तथा तृतीय भावनाक्रमों के साथ भाषा की अनुकूलता बनाए रखने के लिये द्वितीय भावनाक्रम के जितने भी परिभाषिक शब्द हैं, उन्हें प्रथम तथा तृतीय भावनाक्रम के पारिभाषिक शब्दों से मिलाकर तब पुनरुद्धार किया गया है। साथ ही भोट भारतीय विद्वानों के समक्ष इसे उपस्थापित करके ही कोई निर्णय लिया गया है।

इसके बाद तीनों भावनाक्रमों का हिन्दी में अनुवाद किया गया है, इनमें मुख्य पारिभाषिक शब्दों को संस्कृत के अनुसार रखा है। संस्कृत और भोट-पाठों को मिलाकर उनका तुलनात्मक अध्ययन करते समय जहाँ किसी एक पाठ में कुछ शब्द बिल्कुल नहीं मिले उन्हें प्राप्त पाठ के अनुसार तथा जो भिन्न रूप में मिले वहाँ जो शब्द अर्थ आदि की दृष्टि से अधिक संगत लगे; उन्हीं को प्रधानता देकर रखा गया है।

### तीनों भावनाक्रमों का संक्षिप्त अभिधेय

सभी बुद्धवचनों के मुख्य अभिधेय की एक आसन में किस प्रकार भावना करनी चाहिए, उसके आधार पर दो महारथियों द्वारा सुविभाजित विशाल मार्ग-व्यवस्था की गई है। जिसका सम्पूर्ण रहस्य संगृहीत करने वाले, सौभाग्यशाली विनेयजनों को शीघ्रता से सर्वज्ञता-पद प्राप्त कराने वाले तथा परमयान के सदन्यरूप तीन भावनाक्रमों का संक्षिप्त अभिधेय यहाँ कहा जा रहा है -

सर्वज्ञता की प्राप्ति अतिशीघ्र ही करने के इच्छुक प्रेक्षावानों को उसे प्राप्त कराने वाले हेतुओं तथा प्रत्ययों में प्रयत्नशील होना चाहिए। उसमें भी अहेतुक, अपूर्ण हेतु, हेतु पर निरपेक्ष, और भ्रान्त तथा विकल हेतुओं से न होकर अभ्रान्त तथा अविकल सकल हेतु-प्रत्ययों पर ही अपेक्षित रहना परम आवश्यक है। इस फलरूपी सर्वज्ञता के हेतु तथा प्रत्यय कौन हैं? वे भगवान् बुद्ध के वचनानुसार महाकरुणा, बोधिचित्त तथा प्रतिपत्ति इन तीनों की शिक्षा होनी चाहिए।

**महाकरुणा की भावना**—सामान्यतया त्रिधातु में आचरण करने वाले, तीन दुःखों से यथायोग्य ग्रस्त सभी सत्त्वों की और विशेषकर षड्गतियों में होने वाले अतिदुःसह, अविच्छिन्न, दीर्घकालिक तथा तीव्र दुःखों से दुःखित प्राणियों की स्थिति को सोचकर समस्त सत्त्वों के प्रति सभी दुःखों से मुक्त करने की इच्छावाली महाकरुणा की भावना करनी चाहिए।



वह भी पहले मित्रपक्ष से आरम्भ करके क्रमशः शत्रुपक्ष तथा सामान्य प्राणियों के प्रति भावना करे, इसके बाद समानरूप से करुणा की प्रवृत्ति हो सके, एतदर्थ दश दिशाओं के सभी सत्त्वों पर उसकी भावना करनी चाहिए। जब अत्यन्त दुःखित प्रिय पुत्र के प्रति माता की भाँति समस्त सत्त्वों को सर्वदा के लिए सभी दुःखों से मुक्त कराने की इच्छा वाली करुणा अनायास रूप से प्रवृत्त होती है, तब जिसकी निष्पत्ति होती है, उसे ही महाकरुणा का नाम प्राप्त होता है।

**बोधिचित्त की उत्पत्ति**—इस प्रकार महाकरुणा की भावना के बल से अनुत्तर-सम्यक्सम्बोधि में समस्त प्राणियों को स्थापित करने की प्रतिज्ञा वाले बोधिचित्त को उत्पन्न करना चाहिए। उसमें भी दूसरे के द्वारा सम्यग् ग्रहण कराना तथा स्वयं अपने द्वारा बोधिचित्त को उत्पन्न करना, इन दो में से बाद वाला अतिविशिष्ट है, ऐसा भगवान् बुद्ध ने 'आर्यतथागतज्ञानमुद्रासमाधि' में कहा है। वह बोधिचित्त प्रतिपत्ति के बिना तथा सम्पूर्ण प्रतिपत्ति से युक्त न होने पर भी संसार में महाफल से युक्त होता है और जो बोधिचित्त प्रतिपत्तिसार से युक्त होता है, उस फल की अतिविपुलता का कहना ही क्या। जैसा कि भगवान् बुद्ध ने 'आर्यवीर्यदत्तपरिपृच्छा' में कहा है<sup>१</sup>—

बोधिचित्ताद् वै यत् पुण्यं तच्च रूपि भवेद् यदि।

आकाशघातुं सम्पूर्णं भूयश्चोत्तरितं भवेत् ॥ इत्यादि।

**प्रतिपत्ति (साधना) में प्रवृत्ति**—इस प्रकार बोधिचित्त को उत्पन्न किये हुये बोधिसत्त्व स्वयं विनीत हुए बिना दूसरों को विनीत नहीं कर सकते हैं। इसलिए सर्वप्रथम उन्हें ही स्वयं दानादि प्रतिपत्तियों में प्रवृत्त होना है। उनके बिना अनुत्तर-सम्यक्सम्बोधि प्राप्त नहीं होती है। बोधिसत्त्वों की प्रतिपत्ति पारमिता, अप्रमाण, संग्रह-वस्तु आदि अनेक प्रकार की हैं, ये सभी प्रतिपत्तियाँ संक्षेपतः उपाय तथा प्रज्ञा में अन्तर्भूत हो जाती हैं। इन दोनों में से किसी एक से ही संतुष्ट न रहकर दोनों का सेवन करना अत्यावश्यक है।

प्रज्ञा के द्वारा परिगृहीत होने पर दानादि की परिशुद्धि तथा 'पारमिता' का नाम प्राप्त करते हैं, अन्यथा नहीं हो सकता है। अतः उस प्रज्ञा की उत्पत्ति के लिए

१. देखे—का० सूत्र—'ब' ०३०-२५३)।

२. देखे—का० (रत्नकूट—'ब' २०२।



सर्वप्रथम आगम के अर्थ की अवधारणा करने वाली श्रुतमयीप्रज्ञा को उत्पन्न करना चाहिए। तदनुचात् नीतार्थ तथा नेयार्थों का विभाजन करने वाली चिन्तामयी प्रज्ञा तथा सम्यक् अर्थ की भावना करने वाली भावनामयी प्रज्ञा को उत्पन्न करना है।

**शमथ की भावना**—श्रुतमयी तथा चिन्तामयी प्रज्ञा के द्वारा भूतार्थ का परीक्षण करके निश्चय किये जाने पर, उसी अर्थ को प्रत्यक्ष करने के लिये भावनामयी प्रज्ञा को उत्पन्न करना चाहिये। बहुश्रुत होने मात्र से अर्थप्रत्यक्ष नहीं हो सकता है। अतः तत्त्व-साक्षात् करने के इच्छुक लोगों का श्रवण तथा चिन्तन मात्र से सन्तुष्ट न रहकर भावना में प्रवृत्त होना चाहिये। इसमें सर्वप्रथम ही योगी को चित्त स्थिर करने के लिए शमथ सिद्ध करना आवश्यक होता है।

इसमें पञ्चगुणों से युक्त अनुकूल देश, अल्प इच्छा, बहुक्रियाओं का परित्याग, शीलविशुद्धि आदि शमथ के सम्भारों में स्थित रहकर मन के अनुकूल स्थान में सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को प्रणाम करके सकल जगत् के उद्धार के आशय से महाकरुणा को अभिमुख करना चाहिए। तदनु शरीर सीधा करके स्मरण सहित जितने प्रकार से विचार करने का जो रूपी तथा अरूपी धर्म संगृहीत किया गया उस पर और स्कन्ध, आयतन, धातु आदि विस्तार से विभाजित किये गये धर्मों पर क्रमशः आलम्बित होकर शमथ की भावना करनी चाहिये।

**शमथ-भावना के विघ्नों का निवारण**—राग आदि के कारण चित्त के बाहर विक्षिप्त हो जाते समय अशुभ आदि की भावना हो तथा समाधि में चित्त को अनभिरत देखें, तब समाधि के गुणों को देखकर अभिरति की भावना करे। स्त्यान तथा मिद्ध से अभिभूत होते समय अलोकसंज्ञा आदि की भावना तथा औद्धत्य दिखलाई पड़ने पर अनित्यता आदि संवेग-वस्तुओं पर मनसिकार से औद्धत्य को प्रशान्त करना चाहिए। जब लय और औद्धत्य आदि दोषों से रहित होकर जिस आलम्बन में अनभिसंस्कार से चित्त जब तक इच्छानुसार प्रवृत्त रहने में समर्थ हो जाता है, तब शमथ की निष्पत्ति कही गयी है।

**विपश्यना की भावना**—शमथ के बल से आलम्बन पर चित्त स्थिर करने के बाद प्रज्ञा के द्वारा यथास्थिति को जानने के लिए परीक्षण करना चाहिए। प्रज्ञा का आलोक न होने से सम्मोह के बीज का उन्मूलन नहीं हो सकता है। अतः प्रत्यवेक्षण-प्रज्ञारूपी विपश्यना की भावना करनी चाहिए। वह भी सत्पुरुषों का आश्रय, बहुश्रुतों का अन्वेषण तथा योनिशोमनस्कार इन तीन विपश्यना-सम्भारों से युक्त होकर, परमार्थतः



सभी धर्मों के पुद्गल तथा धर्म आत्माओं से शून्य हैं, ऐसी भावना करनी चाहिये। वह भी आर्यसन्धिनिर्मोचन में जैसा कहा गया है, वैसी ही प्रज्ञा के द्वारा जाना जा सकता है, अन्य से नहीं। इसलिए योगियों को प्रत्यवेक्षण प्रज्ञा के द्वारा इस प्रकार परीक्षण करना है। पुद्गल तो स्कन्ध आदि से एक तथा अनेक कहीं पर भी सिद्ध नहीं होता है। नित्यता, एकरूपता तथा अनिर्वचनीयता न होना आदि का समुचित रूप से परीक्षण करके पुद्गल-नैरात्म्य की भावना करनी चाहिए।

धर्म, संक्षेप में पञ्च स्कन्ध, बारह आयतन तथा अठारह धातुयें हैं। इनमें जो रूपी अंश हैं वे परमार्थतः चित्त के आकार से भिन्न नहीं हैं और जो चित्त है, वह भी परमार्थतः एक तथा अनेक स्वभाववाला नहीं है। इसलिए वह तो माया आदि के स्वभाव की भाँति है, ऐसा विचार करना चाहिए। इस प्रकार प्रत्यवेक्षणप्रज्ञा के द्वारा परीक्षण किये जाने पर सभी धर्मों में परमार्थतः स्वभावसत्ता का ग्रहण नहीं होता। तब निर्विकल्प-समाधि में प्रवेश करना चाहिये।

नैरात्म्य की भावना करते समय प्रत्यवेक्षण-प्रज्ञा के द्वारा वस्तुओं के स्वभाव का अनेक युक्तियों तथा आगमों के द्वारा परीक्षण करके यथार्थ-तत्त्व की भावना करनी होती है। परन्तु चोनीभिक्षु 'ह्रुशङ्' आदि इस सम्यक् मार्ग से हटकर कुछ भी नहीं सोचकर अमनसिकार-मात्र की भावना करने पर संसार से मुक्त होना मानते हैं। इस कुदृष्टि का आचार्य कमलशील ने सम्यक् युक्ति तथा आगमों के द्वारा जड़ से उन्मूलन किया है। सम्यक्ज्ञान का मूल तो भूतप्रत्यवेक्षण है, अतः उसके प्रतिक्षेप से धर्मप्रविचय नामक सम्यक्संबुद्ध का परम-अवयव, लोक तथा लोकोत्तर वाली समस्त प्रज्ञाओं का ग्रहण हो जायेगा। इसलिए महायान का प्रतिक्षेप करने वाले, अल्प श्रवण वाले, आत्मदृष्टि परामर्श वाले, विद्वज्जनों की सेवा न करने वाले, तथागत के प्रवचन की नीतियों को धारण न करने वाले, स्वयं विनष्ट होकर और दूसरों को भी नष्ट करने वाले, युक्ति तथा आगम के आधार पर दूषित होने के कारण विष से मिले हुये वचनों का सविष भोजन की भाँति, अपना हित चाहने वाले बुद्धिमान् व्यक्तियों के द्वारा दूर से ही परित्याग करना कहा है।

जब सभी धर्मों का निःस्वभावता के रूप में आलम्बन करने पर लय तथा औद्धत्य आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और अनभिसंस्कार ज्ञान अनायास प्रवृत्त होता है, तब शमथ तथा विपश्यना का युगनद्धवाही मार्ग निष्पन्न होता है।

समाधि से व्युत्थान होने पर पृष्ठलङ्घ की अवस्था में दो सम्भारों की विशाल प्रतिपत्ति—सभी धर्म परमार्थतः निःस्वभाव होने पर भी संवृति में विद्यमान



हो हैं। ये बालबुद्धि वाले इस प्रकार निःस्वभाव वस्तुओं में विपरीत अभिनिवेश के कारण संसार में परिभ्रमण करते हुए विविध दुःखों का अनुभव करते हैं, ऐसा समझकर महाकरुणा के अभिमुख होकर इस प्रकार सोचना चाहिए कि—मैं वैसा ही करूँगा जिससे सर्वज्ञता प्राप्त करके इन सत्त्वों को धर्मता का ज्ञान करा सकूँ। सभी बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों की पूजा, स्तुति तथा सत्कार करके आर्यभद्राचार्य आदि के अनुसार महा-प्रणिधान करना, शून्यता और करुणा-गर्भ वाले दान आदि सभी पुण्य तथा ज्ञान-सम्भार के अर्जन के माध्यम से सर्वाकारवरोपेतशून्यता का अभिनिर्हार करना चाहिए।

**उपाय से निष्ठागत होना**—सभी सत्त्वों का परिपाक करना, बुद्धक्षेत्र की परिशुद्धि, सर्वाकारवरोपेत सर्वज्ञज्ञान आदि जो संपत्तियाँ कहीं गई हैं, वे सभी दान आदि उपायों के निष्ठागत होने से प्राप्त होती हैं। इसलिए बोधिसत्त्वों को उपाय तथा प्रज्ञा दोनों में शिक्षित करना चाहिए। मात्र प्रज्ञा या उपाय से नहीं हो सकता है। जैसे मन्त्रिसहित राजा सभी आवश्यक कार्य करता है, उसी प्रकार उपायकौशल से युक्त बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा सभी बुद्धकार्य कर सकती है। एकाकी प्रज्ञा या उपाय वाले मार्ग तो बोधिसत्त्वों के बन्धनस्थल देखते हैं, और इस प्रकार उनका संसार में या हीननिर्वाण में पतन होना कहा गया है। इसलिए बोधिसत्त्व उपायसहित प्रज्ञा की शिक्षा करने पर निष्ठा-प्राप्य अप्रतिष्ठित निर्वाण प्राप्त कर सकता है, क्योंकि प्रज्ञा के बल से संसार में पतन नहीं होता है, और उपाय के बल से हीन-निर्वाण में पतन नहीं होता है।

**दीर्घकालतक उपाय-प्रज्ञा युगनद्ध-मार्ग की भावना करने पर फलप्राप्ति की व्यवस्था**—इस प्रकार महाकरुणा, बोधिचित्त तथा उपायनिष्ठा का अभ्यास करने से इस जन्म में अवश्य विशिष्ट होता है, और उसे स्वप्न में भी सदा बुद्ध तथा बोधिसत्त्व का दर्शन होगा, प्रतिक्षण में भी विपुलपुण्य तथा ज्ञान-सम्भारों का संचय हो सकेगा। क्लेश-आवरण तथा दौष्टुल्य का भी क्षय हो जायेगा। अभिज्ञता, ऋद्धि आदि विशिष्ट गुणों की प्राप्ति हो जायेगी। अनायास ही पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों का परिपूर्ण हो जाना आदि अपरिमित अनुशंसाएँ सूत्र-ग्रन्थों में कही गयी हैं।

विशेषकर सम्यक् अर्थ का अभ्यास प्रकर्षपर्यन्त होने पर लोकान्तर-ज्ञान, समस्त विकल्प जालों की अपगति, निष्प्रपञ्च-धर्मधातु का अतिस्फुट अवगमन, सभी धर्मों के नैरात्म्य-तत्त्व का साक्षात्कार तथा दर्शन-मार्ग द्वारा संगृहीत परमार्थ बोधिचित्त के उत्पन्न होने से वस्तुपर्यन्तता में प्रविष्ट हो जाता है। तथागत गोत्र में उत्पन्न होता है। बोधिसत्त्वों की निर्दोषता में प्रवृत्ति होती है, जगत् की सभी गतियों से निवृत्ति



होती है, बोधिसत्त्व की धर्मता तथा धर्मधातु की अवगति में स्थिति होती है। बोधिसत्त्वों की प्रथम भूमि की प्राप्ति होती है। इस प्रकार की अनुशंसाओं को विस्तार से दशभूमिसूत्र आदि से जानना चाहिए।

इस प्रकार प्रथम भूमि में प्रविष्ट होकर वह बाद में भावनामार्ग में लोकोत्तर समाहित तथा इसके पृष्ठलब्ध-ज्ञान दोनों के द्वारा प्रज्ञा तथा उपाय की भावना करे, तब क्रमशः भावना-प्रहेय जो संचित आवरण उनका सूक्ष्म से भी अतिसूक्ष्म व्यवदान होगा। इस प्रकार वह उत्तरोत्तर विशिष्ट गुणों को प्राप्त करने के लिए अधोभूमियों का परिशोधन करता है और तथागत के ज्ञानपर्यन्त में प्रवेश करके सर्वज्ञता के सागर में प्रविष्ट होकर कार्यपरिनिष्पत्ति का आलम्बन भी प्राप्त करता है।

सर्वज्ञता के सागर में प्रवेश हो जाने पर चिन्तामणि की भाँति समस्त सत्त्वों के उपजीव्य गुण-स्कन्ध से युक्त, पूर्वप्रणिधान के फल से सत्कृत, महाकरुणा के स्वभाव-भूत, अनाभोग से ही नाना उपायों से युक्त, अपरिमित निर्माणों से अशेष जगत् के सभी अर्थकारों से सम्पन्न, सारी गुणसम्पत्तियों के प्रकर्षपर्यन्तता में पहुँचा हुआ, वासना सहित समस्त दोषमालाओं का निरास करके, सत्त्व-धातु की अन्तपर्यन्तता में सत्त्वहित के लिए विहार करने वाले हैं, ऐसा समझकर प्रेक्षावान् बुद्धिमान् पुरुष उस भगवान् बुद्ध के समस्त गुणों के आकार में श्रद्धा उत्पन्न करके उन गुणों की परिनिष्पत्ति के लिए स्वयं सभी तरह के प्रयत्न करे।

भवतु सर्वमङ्गलम्









༡༡། ཁྱོལ་དཔོན་ཀམལ་གྱི་ལས་མཛད་པའི་བསྐོས་རིམ་ཐོག་  
མཐའ་བར་གསུམ་བརྒྱལ་སོ།







བསྒྲུབ་རིམ།

༡། །ཀྱུ་གར་སྒྲོད་དུ། རྒྱལ་པོ་ལྷ་མོ། བོད་སྒྲོད་དུ། བསྒྲུབ་པའི་

རིམ་པ། འཇམ་དཔལ་གཞིན་རྒྱུ་ལྷ་མོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་སྡེ་ཡི།

ཚུལ་སྤྱོད་ལས་ནི་དང་བོ་པ།

དེ་ལས་བཅུ་མའི་དེ་བསྒྲུབ་པ་ཡི།

རིམ་པ་མདོ་ཅམ་བཞིན་པར་བྱ།

ཐམས་ཅད་མཁུན་པ་ཉིད་སྒྲུབ་དུ་ཐོབ་པར་འདོད་པས་མདོར་ན་སྤྱིར་ཆེ་རང་།

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དང་། རྒྱལ་པོ་དང་། གནས་འདི་གསུམ་ལ་འབད་པར་

བྱའོ།

དེ་ལ་སངས་རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་མ་ལུས་པའི་རྒྱུ་ཅ་བ་ནི་སྤྱིར་ཆེ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་

ཤེས་པར་བྱས་ལ། དེ་ཉིད་ལ་ཐོག་མ་<sup>2</sup>ཁོ་ནར་བསྒྲུབ་སོ། །དེ་སྒྲོད་དུ།

འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྒྲུད་པ་ལས་<sup>3</sup>གསུངས་དེ། “དེ་ནས་བཅོམ་ལྷན་

འདས་ལ་འཕགས་པ་སྒྲུན་རས་གཟིང་དབང་ཕྱག་གིས་འདི་སྒྲོད་ཅེས་གསོའ་དོ། །

བཅོམ་ལྷན་འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་<sup>4</sup>ཆོས་རབ་དུ་མང་བོ་ལ་བསྐྱབ་པར་མི་

བགྱིའོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔས་<sup>5</sup>ཆོས་གཅིག་རབ་དུ་གཟུང་

ཞིང་རབ་དུ་རྟོགས་པར་བགྱིས་ན་སངས་རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དེའི་ལག་མཛུལ་

དུ་མཆིས་པ་ལགས་སོ། །ཆོས་གཅིག་པོ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྟེ། སྤྱིར་

1. ལྟ་མེ་སྒྲོམ་ 2. ལྟ་མེ་མར་བསྒྲུབ་ 3. ལྟ་མེ་བཀའ་(མདོ་ཞ' ༤༤)

4. ལྟ་མེ་དཔལ་ 5. ལྟ་མེ་དཔལ་



ཇི་ཆེན་པོ་ལོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་སྟིང་ཇི་ཆེན་པོས་ནི། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་  
 ཐམས་ཅད་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་ལག་མཐིལ་དུ་མཆིས་པ་ལགས་སོ། །  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་དཔའ་བགྱིས་ན་འཁོར་ལོས་བསྐྱར་བའི་བྱུང་པོ་འི་འཁོར་ལོ་  
 རིན་པོ་ཆེ་གང་དུ་མཆིས་པ་དེར་དབྱང་གི་ཚོགས་ཐམས་ཅད་མཆིའོ། །བཅོམ་  
 ལྷན་འདས་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྟིང་ཇི་ཆེན་པོ་གང་དུ་མཆིས་པ་  
 དེར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མཆིའོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་དཔའ་བགྱིས་  
 ན་སྟོག་གི་དབང་པོ་མཆིས་ན་དབང་པོ་གཞན་ནམས་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ། །  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་བཞིན་དུ་སྟིང་ཇི་ཆེན་པོ་མཆིས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཆོས་  
 གཞན་ནམས་ཀྱང་འབྱུང་བར་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

འཕགས་པ་ལྷོ་གྲོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་གསུངས་དེ།

“བཙན་པ་ཤར་དུ་འདྲི་བྱ་གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་སྟིང་ཇི་ཆེན་པོ་  
 ཡང་མི་<sup>2</sup>ཟད་དོ། དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། སྟོན་དུ་འགྲོ་བའི་ཕྱིར་རོ། །བཙན་པ་  
 ཤར་དུ་འདྲི་བྱ། འདི་ལྟ་<sup>3</sup>སྟེ། དཔའ་ན་དབྱུགས་ཕྱི་ནང་དུ་རྒྱ་བ་ནི་མིའི་སྟོག་  
 གི་དབང་པོ་སྟོན་དུ་འགྲོ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྟིང་  
 ཇི་ཆེན་པོ་ནི་ཐོག་པ་ཆེན་པོ་འི་(ཚོགས་<sup>4</sup>)ཡང་དག་པར་འགྱུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་  
 སྟོན་དུ་འགྲོ་བ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་བཤད་དོ། །

འཕགས་པ་ག་ཡ་མགོ་འི་རིའི་མངོ་ལས་ཀྱང་གསུངས་དེ། “འཇམ་དཔལ་

1. སྟེ་—བཀའ་(མདོ་མ་༡༣༢) 2. སྟེ་—“ནི་ཟད་དོ།” ཅེས་གསལ་ཡང་ཆུ་དཔེ་དང་མདོ་ངོ་མ་  
 གཉིས་ཀར་སྟིང་ཇི་ཆེན་པོ་ཡང་མི་ཟད་དོ། ཅེས་གསལ་བ་བཞིན་འཐད་པར་སྟངས་ངོ་།
3. ཅི་—འདི་སྟེ་(ཆད་—འདི་སྟེ་སྟེ་) 4. རྒྱ་བེད་—महायान सम्भार = ཐོག་པ་ཆེན་པོ་འི་ཚོགས་
5. སྟེ་—བཀའ་(མདོ་མ་༢༤༥)



བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་སྒྲོན་པའི་ཚུམ་པ་ནི་ཅི། གནས་ནི་གང་།  
 འཇམ་དཔལ་གྱིས་སྦྱས་པ། ལྷའི་བྱ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་སྒྲོན་པའི་  
 ཚུམ་པ་ནི་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་ལོ། །གནས་ནི་སེམས་ཅན་ནོ།” །ཞེས་དེ་ལ་སོགས་  
 བ་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་།

དེ་ལྟར་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོས་བསྒྲོན་པས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་<sup>2</sup>ནམས་བདག་  
 ཉིད་ལ་མི་ལྷ་བར་གཞན་ལ་ཤིན་དུ་ཕན་པ་དོན་དུ་གཉེར་བའི་ཕྱིར་ཚོགས་བསཏ་  
 བ་ཤིན་དུ་<sup>3</sup>བྱ་དཀའ་ཞིང་ཡུན་རིང་ལ་དུབ་བར་འགྱུར་བ་ལ་འཇུག་གོ། །འཕགས་  
 བ་དང་བའི་སྒྲོབས་སྒྲིད་པ་ལས་<sup>4</sup>གསུངས་པ་ལྷ་བྱ་སྤྱེ། “དེ་ལ་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་  
 ཉི་གང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྦྱོན་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རྒྱལ་བཟའ་སྤྱེ་<sup>5</sup>  
 བ་མེ་ལེན་པ་ཅི་ཡང་མེད་དོ།<sup>6</sup> །དེས་བདེ་བ་སྦྱེ་བ་མི་འདོར་བ་ཅི་ཡང་མེད་དོ།”  
 ཞེས། །དེ་ལྟར་ཤིན་དུ་<sup>7</sup>བྱ་དཀའ་བ་ལ་ཞུགས་ནས་རིང་པོར་<sup>8</sup>མི་སྦྱོགས་བར་  
 ཚོགས་ཡོངས་སུ་ཇོགས་དེ་གཤོན་མི་ཟ་བར་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་གོ་འཕང་ཐོབ་  
 བར་འགྱུར་ངོ། །དེ་བས་ན་སངས་བྱུས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་<sup>9</sup>ཅ་བ་ནི་སྤྱིང་ཇི་  
 ཆེན་པོ་ཁོ་ནའོ། །སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོས་ཡོངས་སུ་ཇི་ན་བས་ན་རངས་བྱས་བཅོམ་  
 ལྷན་འདས་ཀྱིས་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་ཡེ་ཤེས་<sup>10</sup>ཀྱི་གོ་འཕང་བརྟེན་ནས་འགྲོ་

1. བྱ་དཔའ་ནམས་ ཇི་ཆེན་པོ་

2. ལྷ་མེ་—དཔའ་བདག་ 3. ལྷ་མེ་—དུ་དཀའ་(ཆད་—དུ་ཐ་དཀའ་)

4. ལྷ་མེ་—བཟའ་(མདོ་ཆ་ཀྱི་) 5. ལྷ་མེ་—བསྒྲོན་པ་ 6. ‘རྒྱལ་བཟའ་སྤྱེ་བ་མེ་ལེན་པ་ཅི་’

ཡང་མེད་དོ། ཞེས་བ་བྱ་དཔའ་ནམས་ 7. ལྷ་མེ་—དུ་དཀའ་(ཆད་—དུ་ཐ་དཀའ་)

8. ལྷ་མེ་—མོ་ 9. ལྷ་མེ་—ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་ཅ་བ་ 10. ‘ཡེ་ཤེས་ཀྱི་’—བྱ་དཔའ་ནམས་



བ་མ་ལུས་བའི་དོན་མཛད་ཅིང་བཞུགསོ། །མི་<sup>1</sup>གནས་བའི་བྱ་ངན་ལས་འདས་  
བ་<sup>2</sup>ལྷ་བྱ་ཡང་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་བྱགས་ཇི་ཆོན་པོ་འི་རྒྱས་བྱ་ངན་ལས་འདས་  
བ་ལ་མི་གནས་སོ།

དེ་ཡང་སྤྱག་བསྐྱེད་བའི་སེམས་ཅན་ལ་དམིགས་ཤིང་ཡིད་ལ་<sup>3</sup>བྱ་བ་མང་དུ་  
བྱས་པས་སྤྱི་བར་<sup>4</sup>འགྱུར་དེ། སེམས་ཅན་འཛིན་ཏེན་གསུམ་ན་སྤྱོད་བ་ཐམས་  
ཅད་སྤྱག་བསྐྱེད་ནམ་པ་གསུམ་གྱིས་ཇི་ལྷར་མཐུན་བ་བཞིན་དུ་(ཤིན་དུ་<sup>5</sup>)སྤྱག་  
བསྐྱེད་ལོ། ཞེས་དེ་ལྷར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱོམ་མོ། །དེ་ལ་སེམས་  
ཅན་དཔྱལ་བ་<sup>6</sup>པ་དེ་དག་ནི་རྒྱན་མི་ཆད་ཅིང་ཡུན་རིང་ལ་ཆ་བ་ལ་སོགས་བའི་  
སྤྱག་བསྐྱེད་སྒྲ་ཚོགས་ཀྱི་ཆུ་<sup>7</sup>བོར་བྱེད་ངོ་། ཞེས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་  
སྤྱུལ་དེ། །དེ་བཞིན་དུ་ཡི་དྲགས་ནམས་ཀྱང་པལ་<sup>8</sup>ཆེར་ཤིན་དུ་མི་བཟད་བའི་  
བཀྲེས་<sup>9</sup>པ་དང་སྐྱོམ་བའི་སྤྱག་བསྐྱེད་གྱི་མེས་<sup>10</sup>སྐམས་བའི་ལུས་ཤིན་དུ་སྤྱག་  
བསྐྱེད་མང་པོ་བྱོང་སྟེ། ལོ་བརྒྱར་ཡང་ལ་ལས་མཆིལ་མའི་ཐལ་བ་དང་།  
མི་གཙང་བ་ཅམ་<sup>11</sup>ཡང་བཟར་མི་རྙེད་དོ། །ཞེས་<sup>12</sup>བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་  
བཀའ་སྤྱུལ་དེ། །དུད་འགོ་ནམས་ཀྱང་གཅིག་ལ་གཅིག་ཟེ་<sup>13</sup>པ་<sup>14</sup>དང་། ཁྱོ་  
བ་དང་། རྣམ་པར་འཛོལ་དང་། གསོད་བ་ལ་སོགས་པས་སྤྱག་བསྐྱེད་མང་  
པོ་བྱོང་བ་ཁོ་ནར་སྟེ། འདི་ལྷར་ཁ་ཅིག་སྒྲ་འབྲུགས་བ་དང་། བརྟེན་

1. 'མི་གནས་བའི་བྱ་ངན་ལས་འདས་བ་ལྷ་བྱ་ཡང་'ཞེས་བ་རྒྱ་དཔེར་མེད།

2. ལྷ་བེ་—བ་དེ་ལྷ་བྱ་ 3. ལྷ་བེ་—ལ་བྱས་པས་ 4. ལྷ་དཔེར་—ཐུན་ཐུན་ལྷ་བེ་ལྷ་བེ་

5. ལྷ་དཔེར་—འཕྲུག་ཐུན་ཐུན་ལྷ་བེ་ལྷ་བེ་ 6. ལྷ་བེ་—བ་དེ་དག་

7. 'ཆུ་བོར་'—ལྷ་དཔེར་མེད། 8. 'མཐུན་ཏེན་'—ལྷ་དཔེར་མེད། 9. ཅོ་—བཀྲེས་སྐྱོམ་

10. 'མེས་'—ལྷ་དཔེར་མེད། 11. 'ཅམ་'—ལྷ་དཔེར་མེད། 12. ལྷ་དཔེར་—ཐུན་ཐུན་ལྷ་བེ་ལྷ་བེ་

13. 'ཟེ་བ་'—ལྷ་དཔེར་མེད། 14. ལྷ་བེ་—ཟེ་བ་ཁྱོ་བ་(ཆད་—ཟེ་བ་དང་ཁྱོ་བ་)



པ་དང་། བཅིང་བ་དང་། གདགས་<sup>1</sup>པ་ལ་སོགས་པ་བདག་<sup>2</sup>ལ་དབང་ཅིང་  
 བར་<sup>3</sup>ཀྱན་གྱིས་བདའ་བ་ཡིན་དེ། མི་འདོད་བཞིན་དུ་ཁལ་ཆེན་པོ་ལྷོ་བ་བསྐྱར་  
 བས་སྒྲོ་ཞིང་<sup>4</sup>ལ་ཡོ། །དེ་བཞིན་དུ་དགོན་པ་ན་འཁོད་པ་ཡང་ཉེས་པ་  
 མེད་པར་ཁ་ཅིག་ཆེད་<sup>5</sup>དུ་ཆོལ་ཞིང་གསོད་དེ། ཏྲག་དུ་འཛིགས་པས་ཡིད་  
 འབྱུགས་དེ་པན་ཚུན་འཁོད་<sup>6</sup>ཅིང་འབྲོས་པ་ཡང་གྲངས་<sup>7</sup>མེད་པའི་སྤྱུག་བསྐྱལ་...  
 དཔག་དུ་མེད་པ་<sup>8</sup>ཕྱོང་བ་<sup>9</sup>ཁོ་ནར་སྤང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་མི་ལ་ཡང་སེམས་ཅན་  
 དབྱལ་བའི་སྤྱུག་བསྐྱལ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པ་ཁོ་ན་སྟེ། འདི་ན་ཀྱན་པོ་ལ་སོར་  
 བ་གང་དག་ཡན་ལག་གདུབ་པ་དང་། གསལ་ཤིང་ལ་བསྒྲོན་པ་དང་།  
 དབྱངས་དེ་<sup>10</sup>བདགས་པ་ལ་སོགས་པས་ཉིན་<sup>11</sup>མོངས་པ་དེ་དག་ནི་སེམས་ཅན་...  
 དབྱལ་བའི་སྤྱུག་བསྐྱལ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །གང་དག་དབྱལ་ཞིང་མོངས་པ་<sup>12</sup>དེ་  
 དག་ནི་ཡི་དྲུགས་དང་འབྲ་བར་བཀུས་ཤིང་སྒྲིམ་པ་ལ་སོགས་པས་རྒྱལ་བསྐྱལ་...  
 ཡོ། །བྲན་པ་སོགས་པ་གང་དག་གཞན་གྱིས་ལྷུས་ལ་དབང་བྱས་པ་དང་། གང་  
 དག་<sup>13</sup>མཐུས་མནན་དེ་གཞོད་པར་བྱེད་པ་དེ་དག་ནི་དུད་འགྲོ་དང་འབྲ་བར་བརྟེན་  
 པ་དང་། གདགས་པ་ལ་སོགས་པས་རྒྱལ་བསྐྱལ་ཡོ། །དེ་བཞིན་དུ་བཅའ་བར་  
 བྱ་བ་དང་། གཅིག་ལ་གཅིག་གཞོད་པ་<sup>14</sup>བྱེད་པ་ལ་སོགས་པ་དང་། རྒྱལ་བ་

1. 'གདགས་པ་'—ཀྱ་དཔེར་མེད་ 2. ཀྱ་དཔེར་—अतन्त्रीकृतशरीराः = ལྷུས་ལ་དབང་མེད་པར་བྱེད་པ།  
 3. ལྷོ་བེ་—མེད་པ་ 4. ཀྱ་དཔེར་—परिखिल्लवपुष = ལྷུས་ཡོངས་སྤྱང་ལ་ལོ་  
 5. ལྷོ་བེ་—ཕྱིར་དུ་ཞེས་དང་། འདི་ནི་ཐད་ཀྱི་གཏེ་སྤྱད་ཀྱ་དཔེར་གསལ་ཁ་མེད། 6. ལྷོ་བེ་—ལྷུ་རྩ་ཅིང་།  
 7. 'གྲངས་མེད་'—ཀྱ་དཔེར་མེད། 8. ལྷོ་བེ་—བཞོན་པ། 9. 'ཕྱོང་བ་'—ཀྱ་དཔེར་མེད།  
 10. ལྷོ་བེ་—སྤྱངས། 11. 'ཉིན་མོངས་'—ཀྱ་དཔེར་མེད། 12. ཀྱ་དཔེར་—द्वारिद्रयादि = དབྱལ་ཞིང་  
 མོངས་པ་སོགས། 13. ཅོ་—དག་ལ་ 14. ཀྱ་དཔེར་—द्वीहीपघात = གཞོད་པ་དང་བརྟེན་པ།



དང་བུལ་བ་དང་། མི་སྤྱུག་བ་དང་ཕྱད་བ་ལ་སོགས་<sup>1</sup>པ་དེ་དག་ལ་སྤྱུག་བསྐྱེལ་  
 དབག་དུ་མེད་དོ། །གང་དག་ཁ་ཅིག་སྤྱུག་ཅིང་སྦྱོད་བ་དང་འདྲ་བར་སྤྲོད་<sup>2</sup>པ་དེ་  
 དག་ཀྱང་འགྱོར་བའི་མཐའ་ནི་གྲུང་བ་སྟེ། ལྷ་བ་ངན་བ་སྤྲོ་ཆོགས་གཞིང་གཞིང་  
 བར་རྒྱབ་ཅིང་སེམས་ཅན་དབྱེལ་བ་ལ་སོར་བའི་སྤྱུག་བསྐྱེལ་སྤྱིང་བར་འགྱུར་བའི་  
 རྒྱུ་ལས་དང་ཉོན་མོངས་བ་<sup>3</sup>བསམ་པ་བས་གད་ཀ་ན་འདུག་བའི་(ཤིང་<sup>4</sup>)དང་འདྲ་  
 བར་སྤྱུག་བསྐྱེལ་གྱི་རྒྱར་གྱུར་བ་ཡང་<sup>5</sup>ཡང་དག་བར་སྤྱུག་བསྐྱེལ་བ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ།

ལྷ་ལ་ཡང་གང་དག་འདོད་བའི་ཁམས་ན་སྦྱོད་བ་དེ་དག་ནི་འདོད་བའི་  
 མེས་ཡིད་རབ་དུ་འབར་ཞིང་སེམས་འཁྲུགས་བ་དང་འདྲ་བར་<sup>6</sup>ག་ཤེས་མར་མི་  
 འདུག་ལ། སྤྲོ་ཅིག་ཀྱང་སེམས་མཉམ་བར་འཛོག་བར་མི་འགྱུར་དེ།  
 རབ་<sup>7</sup>དུ་ཞི་བ་བདེ་བའི་ནོར་གྱིས་དབྱེལ་བ་དེ་དག་ལ་བདེ་བ་ཅི་ཞིག་ཡོད། དྲག་  
 དུ་འཆི་འཕོ་བ་དང་ལྷུང་བ་ལ་སོགས་བའི་འཛོགས་བའི་སྤྲོ་ངན་གྱིས་ནོན་བ་དག་  
 སྟེ། དེ་དག་ཇི་ལྟར་བདེ། གང་དག་མཁུལ་ས་དང་གཟུགས་མེད་བ་ན་སྦྱོད་  
 པ་དེ་དག་ཀྱང་<sup>8</sup>སྤྲོ་ཅིག་སྤྱུག་བསྐྱེལ་གྱིས་སྤྱུག་བསྐྱེལ་བ་ལས་འདས་མེད་ཀྱེ།  
 འོན་ཀྱང་དེ་དག་འདོད་བ་ན་སྦྱོད་བའི་བག་ལ་ཉལ་ནམས་ཤིན་དུ་མ་སྦྲངས་བས་  
 ཡང་སེམས་ཅན་དབྱེལ་བ་ལ་སོགས་བར་ལྷུང་བ་ཡོད་པས་<sup>10</sup>འགྱུར་བའི་སྤྱུག་  
 བསྐྱེལ་ཡོད་བ་ཉིད་དོ། །ལྷ་དང་མི་འདོད་དག་ཐམས་ཅད་ནི་ལས་དང་ཉོན་མོངས་

1. 'སོགས་བ་'—རྒྱ་དཔེར་མེད། 2. རྒྱ་དཔེར་—ཐུབ་ལའཔའི = འདྲ་བར་བསྐྱོད་པ།

3. རྒྱ་དཔེར་—འཁྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 4. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 5. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 6. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 7. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 8. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 9. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 10. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་

7. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ (ཆད་རབ་དུ་ཞི་བ། 8. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 9. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་ 10. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་

9. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ (ཆད་རབ་དུ་ཞི་བ། 10. རྒྱ་དཔེར་—འཕྲུག་པོ་ = ལྷ་ཆོགས་



པ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུས་<sup>1</sup>གཞན་གྱི་དབང་དུ་གྱུར་པས་ན་འདྲ་བྱེད་གྱི་རྒྱུ་བ་བསྐྱེད་པ་  
གྱིས་རྒྱུ་བ་བསྐྱེད་པ་ཉིད་དོ།

དེ་ལྟར་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་བ་བསྐྱེད་པ་གྱི་མེ་ཁྱུའི་ཕྱིང་བའི་ས་<sup>2</sup>ཡོན་པར་  
བསྐྱེད་པ་ལ། རི་ལྟར་བདག་ཉིད་གྱི་རྒྱུ་བ་བསྐྱེད་པ་མི་རྒྱུ་བ་ལྟར་གཞན་དག་གི་  
ཡང་<sup>3</sup>དེ་དང་འདྲ་བ་སེམས་ཤིང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྒྲིང་བཅི་བ་ཁོ་ན་.....  
བསྒྲུབ་པར་བྱ་སྟེ། ཐོག་མ་ཁོ་ནར་མཛའ་བཤེས་གྱི་ཕྱོགས་ལ་གོང་དུ་སྒྲོམ་  
པའི་རྒྱུ་བ་བསྐྱེད་པ་སྒྲུབ་པ་མཚུགས་ཀྱིང་བར་ལྟ་ཞིང་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ།

དེ་ནས་སེམས་མཉམ་པས་བྱེ་བྲག་མེད་པར་ལྟ་སྟེ། ཐོག་མ་མེད་<sup>4</sup>པ་  
ཅན་གྱི་འཁོར་བ་<sup>5</sup>ན་ལན་བརྒྱར་ཡང་བདག་གི་གཉེན་དུ་མ་གྱུར་པའི་སེམས་ཅན་  
གང་ཡང་མེད་དོ་སྟུང་དུ་སེམས་<sup>6</sup>པས་པལ་བ་ལ་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །གང་  
གི་ཆོ་མཛའ་བཤེས་གྱི་ཕྱོགས་དང་འདྲ་བར་པལ་<sup>7</sup>པ་ནམས་ལ་ཡང་<sup>8</sup>སྒྲིང་རྒྱུ་ཆེ་.....  
མཚུངས་པར་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ་དགའི་ཕྱོགས་ལ་ཡང་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་མཉམ་.....  
བ་ཉིད་ལ་སོགས་པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་མཛའ་  
བཤེས་གྱི་ཕྱོགས་དང་འདྲ་བར་དགའ་ལ་ཡང་མཉམ་པར་འཇུག་པ་དེའི་<sup>9</sup>ཆོ་རིམ་...  
གྱིས་ཕྱོགས་བཅུའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་<sup>10</sup>བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །

གང་གི་ཆོ་ཡིད་དུ་འོང་བའི་བྱ་མི་བདེ་བ་བཞིན་དུ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་...  
རྒྱུ་བ་བསྐྱེད་པ་གཏན་ནས་<sup>11</sup>དབྱུང་བར་འདོད་པའི་ནམ་པའི་སྒྲིང་རྒྱུ་རང་གི་ངང་གིས་

1. 'རྒྱུས་'—རྒྱ་དཔེར་མེད། 2. རྒྱ་དཔེར་—अग्निज्वालीकृतम् = མེ་ཁྱུའི་འཕར་བ་ཡོན་པར།

3. རྒྱ་དཔེར་—अन्येषामप्रियामिति = གཞན་དག་ལ་མེ་རྒྱུ་བ་འོ་ཞེས། 4. རྒྱ་མི་—མེད་ཅན་

(ཆད་—མེད་པ་ཅན་གྱི་) 5. རྒྱ་མི་ཆོ་—འཁོར་བ་ལན་(ཆད་—འཁོར་བ་ན་ལན་) 6. རྒྱ་དཔེར་—

परिचिन्तयता = ཡོངས་སུ་སེམས་པས། 7. རྒྱ་མི་—འཕེལ་ 8. 'ཡང་'—རྒྱ་དཔེར་མེད། 9. རྒྱ་མི་—

དེའི་རིམ་(ཆད་—དེའི་ཆོ་རིམ་གྱིས་) 10. 'ཡང་'—རྒྱ་དཔེར་མེད། 11. 'གཏན་ནས་'—རྒྱ་དཔེར་མེད།











ཕྱིན་པ་ལ་བསྐྱབ་པ་ནས། ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྒྱུ་ཕྱིན་པའི་བར་ལ་སྒྲོབ་མི་བཟོད་  
 ན་འདི་ལྟར་རྒྱལ་བོ་ཆེན་པོ་<sup>1</sup> རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ལ་འདུན་པ་དང་། དད་པ་  
 དང་། དོན་དུ་གཉིས་པ་དང་། སྒྲོན་པ་འདི་འགྲོ་ཡང་ཅང་། འགྲོང་ཡང་  
 ཅང་། འདུག་ཀྱང་ཅང་། ཉལ་ཡང་ཅང་། སད་ཀྱང་ཅང་། ཟ་ཡང་ཅང་།  
 འཐུང་ཡང་ཅང་། དྲི་དུ་རྒྱན་མི་ཆད་པར་དྲན་པར་གྱིས་ཤིག །ཡིད་ལ་  
 གྱིས་ཤིག །སྒྲོམས་ཤིག །སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་དང་།  
 (འཕགས་པ་<sup>2</sup>) ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དང་། སོ་སོ་<sup>3</sup> ཐོ་བོ་ཐམས་ཅད་  
 དང་། བདག་གི་<sup>4</sup> འདས་པ་དང་། མ་འོངས་པ་དང་། ད་ལྟར་བྱང་པའི་དགོ་  
 བའི་ཅ་བ་ཐམས་ཅད་བསྐྱུས་དེ། རྗེས་སུ་ཡི་རང་བའི་མཆོག་གིས་རྗེས་སུ་ཡི་  
 རང་བར་གྱིས་ཤིག །རྗེས་སུ་ཡི་རང་ནས་ཀྱང་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དབའ་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དང་། (འཕགས་པ་<sup>5</sup>) ཉན་ཐོས་རྣམས་<sup>6</sup>  
 ལ་མཆོད་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དབུལ་ལོ། །ལྷུལ་ནས་ཀྱང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་  
 དང་ཐུན་མོང་དུ་གྱིས་ཤིག །དེ་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པ་  
 ཉིད་ཀྱི་བར་དུ་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་དང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་  
 ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ཉིན་གཅིག་བཞིན་དུ་དུས་གསུམ་དུ་སྒྲིན་མེད་  
 པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་སྤྲོས་<sup>7</sup> ཤིག །རྒྱལ་བོ་ཆེན་  
 པོ་ཁྱེད་དེ་ལྟར་ཞུགས་ལ་རྒྱལ་བོ་གྱིས་ཤིག །རྒྱལ་བོ་འདི་སྤྱིད་ཀྱང་མི་ཉམས་སོ།།

1. ལྷ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་ = ལྷ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་

2. ལྷ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་ = ལྷ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་ 3. ཐོ་ཐོ་ཐོ་ཐོ་ 4. ཐོ་ཐོ་ཐོ་ཐོ་

5. ལྷ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་ = ལྷ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་ 6. ཐོ་ཐོ་ཐོ་ཐོ་

7. ཐོ་ཐོ་ཐོ་ཐོ་



བྱང་<sup>1</sup>ཆུབ་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་ཚོགས་པར་འགྱུར་རོ།” །ཞེས་དེ་ལ་སོར་  
བ་ཀྱས་<sup>2</sup>པར་བཤད་ནས། ཡང་བཀའ་སྤྱུལ་བ། “ཆུལ་པོ་ཆེན་པོ་ཁྱེད་  
ཡང་དག་པར་ཚོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་དག་བའི་ཅ་བ་དེའི་ནམ་པར་……  
སྒྲིན་པས་ལན་དུ་མར་ལྷ་དང་མིར་སྒྲི་<sup>3</sup>པར་གྱུར་དོ། ལྷ་དང་མིར་སྒྲིས་པ་ཐམས་  
ཅད་ན་ཡང་དབང་པོར་གྱུར་དུ།” །ཞེས་ཀྱས་པར་བཀའ་སྤྱུལ་བ་བཞིན་ནོ།

སྐབ་པ་སྒྲིང་བོར་བྱེད་པའི་བྱང་ཆུབ་<sup>4</sup>ཀྱི་སེམས་ཀྱི་འབྲས་བུ་གང་ཡིན་པ་དེ་  
ཤིན་དུ་ཀྱ་ཆེ་བར་གྱུབ་སྟེ། འཕགས་པ་དབས་སྒྲིན་གྱིས་ཉུས་པ་ལས།<sup>5</sup>

བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་བསོད་ནམས་གང་།

དེ་ལ་གལ་དེ་གཟུགས་མཆིས་ན།

ནམ་མཁའི་ཁམས་ནི་ཀྱན་གང་སྟེ།

དེ་ནི་དེ་བས་ལྷག་པར་འགྱུར་།

(<sup>6</sup>གཏྱའི་བྱེ་མའི་གངས་སྟེང་གྱི།

སངས་རྒྱས་ཞིང་ནམས་མི་གང་གིས།

དེན་ཆེན་དག་གིས་རབ་བཀང་སྟེ།

འཇིག་རྟེན་མགོན་ལ་ཐུལ་བ་བས།

གང་གིས་ཐལ་མོ་སྐར་བགྱིས་དེ།

བྱང་ཆུབ་དུ་ནི་སེམས་བདུད་ན།

1. “བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་ཚོགས་པར་འགྱུར་རོ།”ཞེས་པ་ཀྱ་དཔེར་མེད།

2. ‘ཀྱས་པར’—ཀྱ་དཔེར་མེད་ 3. སྒྲི་ཙོ་སྒྲིས་པར་ 4. ལྷ་པོ་—ཆུབ་སེམས་ 5. སྒྲི་—བཀའ་

(དཀོན་མཆོག་ལ་‘ཅ’ ༢༠༢) 6. ཚོགས་པ་ཅད་ཕྱི་མ་གཟིན་པོར་དཔེ་ནམས་སུ་མི་གསལ་ཡང་ཀྱ་  
དཔེར་ཡོད་པ་བཞིན་བཀོད་དོ།



མཆོད་པ་འདི་ནི་བྱད་པར་འཕགས།

དེ་ལ་མཐའ་ནི་མ་མཆིས་སོ།) ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་ལྟོ།

སྒོང་བོ་བཀོད་པ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་བསྐྱགས་དེ། “རིགས་ཀྱི་བྱ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ནི་  
སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ས་བོན་ལྟ་བུ་ལྟོ།” ཞེས་རྒྱས་པར་བཤད་དོ།

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ཡང་ནམ་པ་གཉིས་དེ། སྒྲོན་པའི་སེམས་དང་།

ཞུགས་པའི་སེམས་དེ། འཕགས་པ་སྒོང་བོ་བཀོད་པའི་མདོ་ལས་<sup>2</sup>གསུངས་པ།

“རིགས་ཀྱི་བྱ་སེམས་ཅན་ཀྱི་འཛིག་དེན་ན་གང་དག་སྒྲ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་...

ཞིགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་སེམས་ཀྱིས་སྒྲོན་པའི་སེམས་ཅན་དེ་<sup>3</sup>དང་དེ་དག་ནི་ཆེད་

པར་དགའོ། །སེམས་ཅན་གང་དག་སྒྲ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་ཞིགས་པའི་

བྱང་ཆུབ་དུ་ཡང་དག་པར་ཞུ་བ་དེ་དག་ནི་དེ་བས་ཀྱང་ཤིན་དུ་ཆེད་པར་དགའོ།”

ཞེས་འབྱུང་ངོ་། དེ་ལ་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་ལ་ཕན་པའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་སུ་

གྱུར་ཅིག་ཅེས་གང་ཐོག་མར་དོན་དུ་གཉེར་བ་<sup>4</sup>དེ་ནི་སྒྲོན་པའི་སེམས་སོ། །

གང་ཕན་ཆད་སྒྲོམ་པ་བརྒྱུད་སྒྲོམ་ཆོགས་ནམས་ལ་ཞུགས་པ་<sup>5</sup>པ་དེ་ནི་ཞུགས་པའི་.....

སེམས་སོ།

སྒྲོམ་པ་ནི་པ་རོལ་བོ་མཁས་པ་མཐུ་དང་ལྷན་པ་སྒྲོམ་པ་ལ་གནས་(པའི་

དག་པའི་བཤེས་གཉེན་<sup>6</sup>)ལས་ནོད་<sup>7</sup>དོ། །མཐུན་པའི་(ནོད་པ་བོ་<sup>8</sup>)མེད་ན་

1. སྒྲོང་བཀོད་(ལལ་ཆེན་-‘ང་’མ་ཆེ་)

2. སྒྲོང་བཀོད་(ལལ་ཆེན་-‘ང་’མ་ཆེ་) 3. སྒྲོ་བེ་-དེ་དག་ 4. སྒྲོ་བེ་-བའི་ན་

5. སྒྲོ་དཔེ་དང་-འཕྲུལ་ལྡོག་= མཐོང་པ་ 6. སྒྲོ་དཔེ་དང་-མཐོང་པ་ལྡོག་པ་ལྟར་ལྟ་བུ་ལྟོ། 7. སྒྲོ་བེ་-མཐོང་དོ།

8. སྒྲོ་དཔེ་དང་-འཕྲུལ་ལྡོག་པ་ལྟར་ལྟ་བུ་ལྟོ། 9. སྒྲོ་བེ་-མཐོང་དོ།



སངས་རྒྱུ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་མངོན་དུ་བྱས་ལ། འཕགས་པ་<sup>1</sup>  
འཇམ་དཔལ་རྒྱལ་བོ་ནམ་མཁའ་ཞེས་བྱ་བར་གྱུར་པ་ན་བྱང་ཆུབ་དུ་སེམས་.....  
བསྐྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ།

དེ་ལྟར་སེམས་བསྐྱེད་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བདག་མ་དུལ་ན་གཞན་  
མི་དུལ་བར་ཤེས་ནས་བདག་ཉིད་སྦྱིན་པ་(བྱིན་པ་<sup>2</sup>)ལ་སོགས་པ་སྐྱབ་པ་ལ་རབ་  
དུ་སྦྱར་རོ། །སྐྱབ་པ་མེད་པར་བྱང་ཆུབ་མི་བོལ་བོ། འདི་ལྟ་སྟེ། འཕགས་  
པ་གཡུ་མགོ་དེ་རི་ལས་<sup>3</sup>གསུངས་པ། “བྱང་ཆུབ་ནི་སྐྱབ་པ་སྦྱིང་བོར་བྱེད་  
པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ནམས་ཀྱི་ཡིན་དེ། ཡོག་པར་  
སྐྱབ་པ་སྦྱིང་བོར་བྱེད་པ་ནམས་ཀྱི་ནི་མ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་པ། འཕགས་པ་དྲིང་  
ང་འཇིན་རྒྱལ་བོ་ལས་<sup>4</sup>གསུངས་དེ། “དེ་ལྟར་བས་ན་སྐྱབ་པ་སྦྱིང་བོར་བྱེད་  
ཞེས་གཞིན་ཀྱ་ཁྱེད་ཀྱིས་བསྐྱབ་པར་བྱའོ། །དེ་ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། གཞིན་ཀྱ་  
སྐྱབ་པ་སྦྱིང་བོར་བྱེད་པ་ལ་ཁྲ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཆེད་  
དཀའ་བ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་པ།

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྐྱབ་པ་དེ་ཡང་པ་རོལ་དུ་བྱིན་པ་དང་། ཆད་  
མེད་པ་དང་། བསྐྱབ་པའི་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པའི་བྱེད་བྱ་ཡིན་པར་འཕགས་པ་  
ཆོ་གོས་མི་ཟད་པས་བསྟན་པ་དང་། དཀོན་མཆོག་སྦྱིན་ལ་སོགས་པའི་མདོ་  
ལས་རྒྱུ་པར་བཤད་པ་ཡིན་ནོ། །འདི་ལྟར་འཇིག་རྟེན་གྱི་བཟོ་ལ་སོགས་པའི་  
གནས་ཀྱི་བར་དག་ལ་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་བསྐྱབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་ན་.....

1. ‘འཕགས་པ’—ཀྱ་དཔེར་མེད་ 2. ཀྱ་དཔེར་—स्वयमेव दानादि ददाति = བདག་ཉིད་ཀྱིས་སྦྱིན་པ་  
བྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ 3. སྟེ—བཀའ (མདོ་‘ཅ’ 267) 4. སྟེ—བཀའ (མདོ་‘ད’ 22)  
5. ‘བསྐྱབ་པ’—ཀྱ་དཔེར་མེད་ 6. སྟེ་མེ—དཔེར་ (ཀྱ་དཔེར་མེད་) བསྐྱབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་ན་.....







པའི་དགེ་བ་ཐམས་ཅད་ནི་ཐབས་ཞེས་བྱའོ། །ཤེས་རབ་ནི་ཐབས་དེའི་ངོ་བོ་  
 ཉིད་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པར་དྲིལ་བའི་རྒྱ་ཡིན་དེ། དེས་ཡང་དག་པར་ཐབས་ཀྱི་  
 བྱེད་པ་ཕྱིན་ནས་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་མེད་པས་བདག་དང་གཞན་གྱི་རྟོན་ཇི་ལྟ་བུ་བ་བཞིན་དུ་  
 བསྐྱབས་པས་སྒྲགས་ཀྱིས་བདེ་བའི་དུག་ཟ་བ་དང་འདྲ་ཟླ། ཀྱན་ནས་ཉིན་  
 མོངས་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་མདོ་སྡེ་དེ་ཉིད་ལས་<sup>1</sup>བཀའ་སྤྱུལ་དེ།  
 “ཐབས་ནི་བསྐྱབ་ཤེས་པའོ། །ཤེས་རབ་ནི་ཡོངས་སུ་གཅོད་པ་<sup>2</sup>ཤེས་པའོ།”  
 ཞེས་པའོ། །འཕགས་པ་དང་པའི་སྟོབས་བསྐྱེད་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་གསུངས་དེ།  
 “ཐབས་ལ་མཁས་པ་(གང་ཞེ་ན།<sup>4</sup>) ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པར་རྟོན་པ་གང་  
 ཡིན་པའོ། །ཤེས་རབ་གང་ཞེ་ན། གང་ཆོས་ཐམས་ཅད་མ་འདྲེས་པ་ལ་མཁས་  
 པའོ།” (ཞེས་སོ།<sup>5</sup>) ཐབས་དང་ཤེས་རབ་འདྲི་གཉིས་ནི་སར་རྒྱད་པ་ནམས་ཀྱིས་  
 ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་<sup>6</sup>དུ་བསྟེན་པར་བྱ་ཟླ། ཤེས་རབ་འབའ་ཞིག་(དང་ཐབས་  
 འབའ་ཞིག་<sup>7</sup>) ནི་མ་ཡིན་ནོ། །འདྲི་ལྟར་བྱང་རྒྱུ་སེམས་དཔའི་ས་བཅུ་པོ་ཐམས་  
 ཅད་ལ་ཡང་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱན་དུ་སྦྱོད་དེ། ས་བཅུ་པའི་མདོ་ལ་  
 སོགས་<sup>8</sup>པ་ལས་<sup>9</sup>ཀྱང་“སྒྲགས་མ་ནམས་ཀྱང་ཀྱན་དུ་མི་སྦྱོད་པ་མ་ཡིན་ནོ།”  
 ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

1. ཟླ་བཀའ (མདོ་ཙ་ 240) 2. ཟློམ་རིམ་པོན་དཔེར་ཡོངས་ཀྱི་སྦྱོད་ཅེས་ཡོད་ཀྱང་མདོ་ཉིད་  
 དུ་ཡོངས་སུ་གཅོད་ཅེས་གསལ་བ་རྒྱ་དཔེ་དང་མཐུན་པས་དེ་ལྟར་བཀོད་དོ།
3. ཟླ་བཀའ (མདོ་ཙ་ 24) 4 རྒྱ་དཔེར་—उपायकीशालं कृतमम्? = ཐབས་ལ་མཁས་པ་གང་ཞེ་ན།
5. རྒྱ་དཔེར་—इति = ‘ཞེས་སོ།’ ཡང་ན་‘ཞེན་ཞེས་ཡོད་པས་ཀྱང་འདྲིན་ལྟགས་མཚམས་ཀྱི་ཆོག་  
 འདྲིའི་གྲས་ངོས་པར་དུ་དགོས་པར་སྤང་ངོ་། 6. ཟླ་བེ་—ཅད་བསྟེན་(ཅད་—ཅད་དུ་བསྟེན་) 7. རྒྱ་དཔེར་—  
 न तु प्रज्ञामात्रं नोपायमात्रम् = ཤེས་རབ་འབའ་ཞིག་དང་ཐབས་འབའ་ཞིག་ནི་མ་ཡིན་ནོ།
8. ཟླ་བེ་—སོགས་པས་(ཅད་—སོར་པ་ལས་) 9. ཟླ་བཀའ (མལ་ཆེན་ཁ་ཤེས་སོགས་ཅིག་པ་—722)



ས་བརྒྱུད་པ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཞི་བར་གནས་པ་ལ། སངས་  
 རྒྱུ་བཙུམ་ལྷན་འདས་<sup>1</sup>ནམས་ཀྱིས་བསྐྱང་བ་དང་ཡང་འགལ་དེ། འདི་ལྟར་  
 དེ་ལས་<sup>2</sup>གསུངས་པ་ནི། “ཀྱི་<sup>3</sup>ཀྱལ་བའི་སྤྲུལ་<sup>4</sup>དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་  
 ས་མི་གཡོ་བ་འདི་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྤོན་གྱི་སྤོན་ལས་གྱི་……  
 ལྷོ་བས་བསྐྱེད་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་སྤོན་ལྷན་དེ་ལ་གནས་པ་དེ་ལ་སངས་རྒྱུ་  
 བཙུམ་ལྷན་འདས་ནམས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཉི་ཤུ་བར་སྐྱབ་པར་མཛད་  
 དོ། །དེ་ལ་འདི་སྐད་ཅེས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །རིགས་ཀྱི་བྱ་ལེགས་སོ་ཡེ་མོ་སོ།  
 སངས་རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྗེས་སུ་དོགས་པར་བྱ་བ་ལ་འདི་ནི་དོན་དམ་བའི་  
 བཟོད་པ་ཡང་ཡིན་ན། འོན་ཀྱང་<sup>5</sup>གང་ངེད་ཀྱི་ལྷོ་བས་བཅུ་དང་མི་འཛིགས་པ་  
 ལ་སོགས་པ་སངས་རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་ཐུན་སྤྲུལ་ཆོགས་པ་དེ་ཁྱེད་ལ་མེད་ཀྱི། སངས་  
 རྒྱུ་ཀྱི་ཆོས་ཐུན་སྤྲུལ་ཆོགས་པ་དེ་ཡོངས་སུ་བཙུམ་པའི་ཕྱིར་<sup>6</sup>བཙོན་འགྲུས་……  
 ཆོས་མཁས་ཤིག །བཟོད་པའི་སྤོན་འདི་ཉིད་ཀྱང་མ་དོར་ཅིག་<sup>7</sup> །རིགས་ཀྱི་བྱ་ཁྱེད་  
 ཀྱིས་དེ་ལྟར་ཞི་བ་ནམ་པར་ཐར་པ་ཐོབ་ཀྱང་བྱིས་པ་སོ་སོའི་སྤྱི་བོ་མ་ཞི་བ།  
 རབ་དུ་མ་ཞི་བ། ཉན་མོངས་པ་སྤྲོ་ཆོགས་ཀྱན་<sup>8</sup>ཏུ་འབྱུང་<sup>9</sup>པར་འགྱུར་བ།

1. ‘བཙུམ་ལྷན་འདས་’—ཀྱི་དཔེར་མེད། 2. ལྷོ་—བཀའ (ལམ་ཆེན་ཁ་ལྟ་ལོག་ཅིག་པ་ 20)

3. ཀྱི་ཀྱལ་བའི་སྤྲུལ་ཞེས་སོགས་ས་བཙུམ་པའི་མདོ་དུང་འདེན་དོང་པོ་འདི། ལོགས་སྤྱད་ཀྱི་དཔེར་  
 ‘དེ་ནི་གཞུང་དེ་ཉིད་ལས་ཤིས་པར་བྱུང་’ཞེས་ཞུས་འཛད་པ་ལས་དངོས་ཀྱི་བཀོད་མེད།

4. ལྷོ་ལྷོ་—སྤྲུལ་བྱང་ 5. ཀྱི་དཔེར་—ཀུལ་ཕུན་ཡཱ་= རིགས་ཀྱི་བྱ། གང་

6. ཀྱི་དཔེར་—པའོ་ཤེས་ཀྱི་མཚན་ཀྱང་= ཡོངས་སུ་བཙུམ་པའི་ཕྱིར་མཛད་པར་སྤྱོད་ཤིག་

7. ལྷོ་—ཤིག་ 8. ལྷོ་ལྷོ་—ཀྱན་འབྱུང་ 9. ཀྱི་དཔེར་—མཐུན་པར་འགྱུར་བ་

མ་འབྱུང་བའམ་སྤོབ་པར་འགྱུར་བ།



ནམ་པར་རྟོག་པ་ནམ་པ་སྒྲ་ཚོགས་ཀྱིས་གཡན་<sup>1</sup>སྒྲོ་བ་འདི་དག་ལ་སོམས་ཤིག །  
 ཡང་རིགས་ཀྱི་བྱ་སྒྲོན་གྱི་སྒྲོན་ལས་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་ཐོབ་པར་བྱ་བ་  
 དང་། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲོ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྱབ་པ་དྲན་པར་གྱིས་ཤིག །ཡང་རིན་  
 ཀྱི་བྱ་འདི་ནི་ཚོས་ནམས་ཀྱི་ཚོས་ཉིད་དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་བྱུང་ཡང་  
 ཅུང་། མ་བྱུང་ཡང་ཅུང་། ཚོས་<sup>2</sup>ཀྱི་དབྱིངས་འདི་ནི་གནས་པ་ཉིད་དེ།  
 འདི་<sup>3</sup>ལྟར་ཚོས་ཐམས་ཅད་སྤོང་བ་ཉིད་དང་། ཚོས་ཐམས་ཅད་དམིགས་སྤྱོད་  
 མེད་པའོ། །འདིས་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཉི་ཚེ་<sup>4</sup>ལ་རབ་དྲུ་དབྱེ་བར་  
 བྱ་བ་མ་ཡིན་གྱི། །ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ནམ་པར་མི་  
 རྟོག་པའི་ཚོས་ཉིད་འདི་ཐོབ་བོ།

ཡང་རིགས་ཀྱི་བྱ་ངེད་ཀྱི་ལུས་ཚད་མེད་པ་དང་། ཡེ་ཤེས་ཚད་མེད་པ་  
 དང་། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཚད་མེད་པ་དང་། ཡེ་ཤེས་མངོན་པར་སྒྲུབ་པ་  
 ཚད་མེད་པ་དང་། འོད་ཀྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཚད་མེད་པ་དང་། དབྱིངས་ཀྱི་ཡན་  
 ལག་ནམ་པར་དག་པ་ཚད་མེད་པ་ལ་ལྟོས་དེ། ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་དེ་བཞིན་དུ་མངོན་  
 པར་སྒྲུབ་པ་བསྐྱེད་ཅིག །རིགས་ཀྱི་བྱ་གང་ཁྱོད་ཀྱི་ཚོས་ཐམས་ཅད་ལ་ནམ་  
 པར་མི་རྟོག་པའི་སྤང་བ་འདི་ནི་སྤང་བ་གཅིག་ཤུར་ཟད་དོ། རིགས་ཀྱི་བྱ་དེ་  
 བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ལ་ནི་ཚོས་སྤང་བ་འདི་འདྲ་བ་མཐའ་ཡས་པར་འགྱུར་དེ།

1. ལྷ་དཔེར་—‘उपहत’ཞེས་མ་མདོ་ཉིད་དུ་‘ཡོངས་སུ་མནར་བ་’ཞེས་ཡོད།

2. ལྷ་དཔེར་—स्थितैर्विषा धर्मता धर्मधातुस्थिति = ཚོས་ཉིད་དང་ཚོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་གནས་ཉིད་  
 འདི་ནི་གནས་པ་ཉིད་དོ། (འདི་ནི་མདོ་ཉིད་ལས་ཚོས་ཀྱི་དབྱིངས་དང་ཚོས་ཀྱི་གནས་ཉིད་འདི་  
 བེ་དེ་བཞིན་དུ་འདྲག་པ་ཞུ། ཞེས་གསལ། 3. ‘འདི་ལྟར་ཚོས་ཐམས་ཅད་སྤོང་བ་’ཉིད་དང་།  
 ཚོས་ཐམས་ཅད་དམིགས་སྤྱོད་མེད་པའོ། ཞེས་མ་མདོ་འདི་ནི་ལྷ་དཔེར་གསལ་ཡང་། བོད་དཔེ་བཀའ་  
 འགྱུར་ནང་མི་གསལ་བས་ཆད་པར་མངོན་ནོ། 4. ལྷ་པེ་—ཚོ་རབ་(ཆད་—ཉི་ཚེ་ལ་རབ་དྲུ་)



མཛད་<sup>1</sup>པ་མཐའ་ཡས་ཤིང་འབྲེལ་བ་མཐའ་ཡས་པར་འགྱུར་དེ། གང་དག་  
 གངས་དང་། བགང་བ་དང་། ཚད་དང་། དཔེ་དང་། རྒྱ་ཡང་མེད་པ་  
 དེ་དག་ཐོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་མངོན་པར་སྐྱབ་བ་སྦྱེད་ཅིག །རིགས་ཀྱི་བྱ་རེ་  
 ཞིག་ཕྱོགས་བཅུ་ཞིང་ཚད་མེད་པ་དང་། སེམས་ཅན་ཚད་མེད་པ་དང་།  
 ཚོས་ནམ་པར་བྱེ་བ་ཚད་མེད་པ་ལ་ལྟོས་དེ། ཇི་<sup>2</sup>ལྟ་བ་བཞིན་བགང་བར་གྱིས་  
 ཤིག་<sup>3</sup>ཅེས་དེ་སྐད་ཅེས་བཀའ་སྩལ་དོ། །ཀྱི་<sup>4</sup>ཀྱལ་བའི་སྐས་དག་དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དཔའ་དེ་ལྟ་བུ་ལ་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་དག་ཡེ་ཤེས་མངོན་  
 བར་སྐྱབ་བའི་(སྒྲོ་<sup>5</sup>)ཚད་མེད་པ་དེ་དག་ལ་སཤམ་པ་གང་དག་གིས་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དཔའ་ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་བྱེ་བ་ཚད་མེད་པ་མངོན་པར་སྐྱབ་བའི་ལམ་<sup>6</sup>  
 མངོན་པར་སྐྱབ་པ་དག་ཉི་པར་སྐྱབ་པར་མཛད་དོ། །ཀྱི་ཀྱལ་བའི་སྐས་ཁྱེད་  
 མོས་པར་བྱའོ། །ཁྱེད་ཀྱིས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །གལ་དེ་སངས་རྒྱས་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་དག་གིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་དེ་ལྟར་ཐམས་ཅད་.....

1. 'མཛད་པ་ཞེས་པ་ནས་འགྱུར་དེ་'ཞེས་པའི་བར་ཀྱི་དཔེར་གསལ་ཡང་བོད་དཔེ་བཀའ་འགྱུར་ནང་མེད།
2. ཀྱི་དཔེར་—'तत्सर्वमनुगणय'ཞེས་པའི་ཐད་མདོ་ཉིད་དུ་'མ་ནོར་བར་བགང་བར་གྱིས་ཤིག་ཅེས་ཡོད།
3. ཀྱི་དཔེར་—'यथावत्ताया अभिनिर्हारामुत्पादय = ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་མངོན་པར་སྐྱབ་བ་སྦྱེད་ཅིག་ཅེས་པ་མདོ་འདིའི་ཀྱི་དཔེར་གསལ་ཡང་། བོད་དཔེ་བཀའ་འགྱུར་དང་། བྱང་འདྲན་འདྲིར་ཡང་མེ་གསལ་བས་བརྟགས་དགོས་སོ།
4. ཀྱི་ཀྱལ་བའི་སྐས་ཞེས་སོགས་ནས་ཉི་པར་སྐྱབ་པར་མཛད་དོ། ཅེས་པའི་བར་གྱི་མདོ་ཚོག་འདི། མདོ་འདིའི་ཀྱི་དཔེ་དང་། བོད་དཔེ་བཀའ་འགྱུར་དང་། བྱང་འདྲན་བོད་དཔེ་བཅས་གསུམ་གར་ཁྱད་པར་ཆེ་བས་བརྟགས་པར་འཇུག།
5. མངོན་པར་སྐྱབ་པའི་(སྒྲོ་<sup>5</sup>) ཅེས་པ་མདོ་འདིའི་ཀྱི་དཔེ་དང་། བོད་དཔེ་གཉིས་ཀར་ཡོད་པ་བཞིན་གསལ་བས་འདྲིར་ཡང་བཀོད་དོ།
6. མདོ་འདིའི་ཀྱི་དཔེ་དང་བོད་དཔེ་གཉིས་ཀར་ཡས་མངོན་པར་ཞེས་ཡོད།







[illegible]

7. **ཟེགས་ཐུང་གྱི་དཔེ་ཁྱད་འདི་མཇུག་ཏུ་གསུངས་པའི་རྣམ་ཐད་མངོན་པུང་གི་ཁྱད་པམས་**  
**ཅད་མཐུན་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་གི་ཐོང་ཆེན་མོ་ཙམ་ཞེས་སྐུ་པོ་ལོང་པའི་དཔེ་ཁྱད་པམས་ཀྱི་ཁྱད་པམས་**



ལྷ་བས་ན་གཉི་ག 1 དུས་ཐམས་དུ་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབས་2 བསྐྱོན་པར་བྱ་བ་  
ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྷར་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་མི་གནས་པའི་ཐུང་ན་ལས་  
འདས་པ་ཡང་3 འགྲུབ་བོ།

འདི་ལྷར་སྦྱོན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཐབས་ཀྱིས་གཞུགས་ཀྱི་སྐྱེ་དང་། ཞིང་  
དང་། གཤེགས་འཁོར་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སྤྱོད་ཆན་པོ་ནི་འབྲས་བུ་སྦྱན་སྦྱར་  
ཆོགས་པ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པས་བཅོས་ཐུན་འདས་4 ཡོངས་སུ་ཐུང་ན་ལས་འདས་  
པ་ལ་ཡང་མི་གནས། ཤེས་རབ་ཀྱིས་སྦྱོན་ཅི་ཡོག་(མཐའ་དག་5) ཡང་དག་པར་  
སྤངས་པས་འཁོར་པ་ལ་ཡང་མི་གནས་དེ། འཁོར་བའི་ཙ་བ་ན་སྦྱོན་ཅི་ཡོག་  
ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །(གཞན་ཡང་6) ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་ལས་  
འདིས་སྦྱོར་འདོགས་པ་དང་། སྐྱར་བའི་མཐའ་ནས་པར་སྤངས་ནས་དབྱ་མའི་  
ལས་བསྟན་དེ། ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་སྦྱོར་འདོགས་པའི་མཐའ་སྤྱོད་ལ། ཐབས་  
ཀྱིས་ནི་སྐྱར་བའི་མཐའ་སྤྱོད་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་བས་ན་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་  
དག་པར་བསྐྱེད་པ་ལས་7 ཀྱང་བཀའ་སྦྱུལ་དེ། “སེམས་དང་དཔེ་བྱད་བཟང་པོ་ནི་  
གཞུགས་ཀྱི་སྐྱེ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ་ཡིན་གྱི། ཆོས་ཀྱི་སྐྱེ་  
མངོན་པར་དོགས་པ་ཅུང་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ་ནི་ས་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་སོ།  
ཡང་བཀའ་སྦྱུལ་པ། “དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱིས་བསྐྱེད་  
པ་སྟེ། གཞན་གྱི་དྲིང་ལ་འཛོམས་པ་ཡང་སྤྱིད་པར་ཤེས་པར་བྱའོ།” །ཞེས་།

1. ལྷ་པོ་—གཉིས་ཀ 2. ལྷ་པོ་—དཔའ་བསྐྱོན་ 3. ‘ཡང་’—ཀྱི་དཔེ་དཔྱད་ 4. ལྷ་པོ་—འདས་ཐུ་  
5. ཀྱི་དཔེ་དཔྱད་—सकलविपर्ययास = ཐུན་ཅི་ཞོག་མཐའ་དག་ 6. ཀྱི་དཔེ་དཔྱད་—अन्या च प्रज्ञा = གཞན་  
ཡང་ཤེས་རབ་ 7. ལྷ་པོ་—ཐུ་(མདོ་ཞ’—༡༤)



ནས་པར་སྒྲུང་མཛད་མཛོན་པར་རྒྱལ་ས་པར་བྱང་ཆུབ་པ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “ཐམས་  
ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྤྱིང་རྗེའི་ཅ་པ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་  
སེམས་ཀྱི་རྒྱ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། ཐབས་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་  
གསུངས་སོ།།

“<sup>2</sup>གང་ཆོས་གཟུངས་དང་འདྲ་བར་ཤེས་པ་ནམས་ཀྱིས་ཆོས་<sup>3</sup>ཉིད་ཀྱང་སྤང་  
བར་བྱ་ན། ཆོས་མ་ཡིན་པ་ལྟ་<sup>4</sup>ཅི་སྟོས།” ཞེས་གསུངས་པ་དེ་ཡང་ཕྱིན་ཅི་ལོག་  
དུ་མངན་པར་ཞེན་པ་སྤང་བའི་ཕྱིར་དེ་ལ་དགོངས་དེ་སྤང་ངོ་ཞེས་བཀའ་སྤྲུལ་གྱི་  
དགོས་པ་སྟུབ་པའི་ཕྱིར་མི་བརྟེན་<sup>5</sup>པ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ། །ཡང་འདྲི་སྐད་དུ་  
གསུངས་དེ། “ཆོས་ཡོངས་སུ་གཟུང་མཛོད་ཀྱི་ལོག་པར་མི་གཟུང་ངོ་།” །ཞེས་<sup>6</sup>  
བྱ་བ་ནི་ལས་ལོག་པར་གཟུང་བར་མི་བྱ་བའི་དོན་དོ། །ཁ་ཅིག་ལས་སྟོན་པ་ལ་  
སོགས་པ་འཁོར་བའི་འབྲས་བུ་བཛོད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཤེས་རབ་དང་བྲལ་……  
བའི་སྟོན་པ་ལ་སོགས་པ་སྤར་བཛོད་པ་དང་། དེ་ཙམ་གྱི་དག་བའི་ཅ་པས་  
ཆོག་པར་འཛིན་པ་ནམས་ཀྱི་དབང་དུ་མཛད་ནས། གོང་ནས་གོང་<sup>7</sup>དུ་དག་བའི་  
ཅ་པ་ལ་སྟོབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་དུ་ཟིན་ན་འཕགས་<sup>8</sup>པ་དྲི་མ་  
མཛད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་ལ་སོགས་<sup>9</sup>པ་སྤར་སྟོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་ཡང་……

- 
1. ལྟེ་—བཀའ (ལྟེ་‘མ’ ༡༠༩) 2. ལྟ་དཔེར་—‘यत् पुनरुक्तम् = ཡང་བཀའ་སྤྲུལ་པ་’ཞེས་ཡོད་ལ།  
ཁྱེད་འཛིན་འདི་དང་དོན་མཐུན་པ་ཞིག་ནོ་ཆེ་གཙོད་པ་ (ཤིན་ཕུན་སྒྲ་ཆོགས་‘ཀ’ ༡༢༩) ལ་ཡང་ཡོད།
  3. འདྲི་ཐད་ནོ་ཆེ་གཙོད་པར་ཆོས་རྣམས་ཀྱང་སྤང་བར་ཞེས་གསལ།
  4. ལྟ་དཔེར་—प्रण एवाधर्माः = ཆོས་མ་ཡིན་པ་སྟོན་ཉིད་ལ། 5. ལྟེ་ཙེ་—བརྟེན་
  6. ལྟ་པ་—ཞེས་འབྱུང་བའི་ལོག་པར་མི་བཟུང་ངོ་ཞེས་བྱ་བ་ 7. ལྟ་དཔེར་—གོང་ཞེས་པ་གཙོག་  
ལས་མཛད། 8. ‘འཕགས་པ་’—ལྟ་དཔེར་མཛད་
  9. ལྟ་དཔེར་—‘སོགས་སྤར་སྟོས་པ་’ཞེས་པ་མཛད།



འགལ་བ་ཁོ་ནར་འགྱུར་དོ། །དེ་ལྟ་བུ་བས་ན་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་ཀ་བསྟེན་  
དགོས་པ་ཁོ་ནར་གནས་སོ། །

དེ་ལ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་ཟིན་བའི་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་པ་རོལ་དུ་...  
སྤྱིན་པའི་མིང་ཐོབ་ཟྱེ། གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་  
པ་ཡོངས་སུ་དག་བར་བྱ་བའི་སྤྱིར་མཉམ་བར་གཞག་པ་ལ་གནས་བར་བྱས་ལ།  
ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པ་ལ་ཇི་འབད་བར་བྱའོ།

དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་ཐོས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་བར་བྱ་ཟྱེ།  
དེས་རེ་ཞིག་ལྷང་གི་དོན་ཀྱན་དུ་འཛིན་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་བསམས་པ་ལས་  
བྱུང་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ངས་པ་དང་དྲང་བའི་དོན་ནམ་བར་འབྱེད་བར་བྱེད་དོ། །  
དེ་ནས་དེས་བྱེ་བྲག་བྱེད་པའི་དོན་ལ་བདེན་ནས་ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དོན་བསྐྱེམ་...  
བར་བྱའི། ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་དུ་ཟིན་ན་  
སྤྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་བསྐྱེམས་ཤིང་ཐེ་ཆོས་ཡང་མ་བསལ་<sup>1</sup>བས་ཡང་དག་པའི་ཤེས་པ་  
ཡང་འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་དེ། དེའི་སྤྱིར་བསྐྱེམ་པ་དོན་མེད་བར་འགྱུར་བས་སྤྱི་  
སྟེགས་ཅན་ནམས་ཀྱིས་བསྐྱེམ་<sup>2</sup>པ་དང་འདྲའོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་  
འཛིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལས་<sup>3</sup>བྱུང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ།

གལ་དེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་དོག་།

སོ་སོར་དེ་བདགས་གལ་དེ་བསྐྱེམ་པ་ནི།

དེ་ཉིད་སྤྱི་ངན་འདས་ཐོབ་འབྲས་བྱའི་རྒྱ།

རྒྱ་གཞན་གང་ཡིན་དེ་ནི་ཞི་མི་འགྱུར། ། ཞེའོ།

1. ཐེ་ཆོ་—བསྐྱེམ་(གནད་པོ་ནི་ཐོས་སྟོན་) 2. 'བསྐྱེམ་པ'—རྒྱ་དཔེར་མེད།

3. ཐེ་—བཀའ་(མདོ་—'5'20)



དེ་ལྟ་བུ་ན་བསམས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རིག་པ་དང་ལུང་གིས་བདགས་  
 ལ་ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་བསྐྱོན་པར་བྱའོ། །ཡང་དག་  
 པའི་དངོས་པོའི་རང་གི་ངོ་བོ་ནི་དོན་དམ་པར་<sup>1</sup>ན་སྐྱེ་བ་མེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ།  
 རིགས་པ་དང་ལུང་གིས་གཏན་ལ་དབབ་བོ། དེ་ལ་ལུང་ནི་འཕགས་པ་ཆོས་  
 ཡང་དག་དག་པར་བསྐྱེད་པ་ལས།<sup>2</sup> “སྐྱེ་བ་མེད་པ་ནི་བདེན་ནོ། སྐྱེ་བ་<sup>3</sup>ལ་  
 སོགས་པའི་ཆོས་གཞན་ནི་མི་བདེན་ནོ།” ཞེས་ཇི་སྒྲིབ་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེ་  
 ཡང་དོན་དམ་པ་དང་མཐུན་པའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བ་མེད་པ་བདེན་ནོ་ཞེས་གསུངས་ཀྱི།  
 དོན་དམ་པར་ནི་སྐྱེ་བ་ཡང་ས་ཡིན། མི་སྐྱེ་བ་ཡང་ས་ཡིན་དེ། དེ་ཐ་སྐྱེད་ཐམས་  
 ཅད་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར་ངོ། །ཡང་དེ་ཉིད་<sup>4</sup>ལས་བཀའ་སྤྱུལ་པ། “རིགས་  
 ཀྱི་བྱ་འཇུག་དེན་<sup>5</sup>ལ་གནས་པ་ནི་འཇུག་པ་དང་འབྱུང་བ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་དེ།  
 དེའི་ཕྱིར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐུགས་ཇི་ཆེན་པོ་དང་ལྷན་པས་འཇུག་དེན་གྱི་……  
 སྐྱུག་<sup>6</sup>པའི་གནས་བསལ་བའི་ཕྱིར་ཐ་སྐྱེད་ཀྱི་དབང་གིས་སྐྱེའོ། །འགག་གོ་  
 ཞེས་གསུངས་ཀྱི། འདི་ལ་ནི་ཆོས་གང་ཡང་སྐྱེ་བ་མེད་དོ།” །ཞེའོ། །འཕགས་<sup>7</sup>  
 པ་སངས་རྒྱས་བགོ་བ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། ཚུལ་བཞིན་<sup>8</sup>འདྲི་བ་ནི་གང་  
 ལགས། ཚུལ་བཞིན་ནི་གང་ལགས། བཀའ་སྤྱུལ་པ། སྐྱེ་བ་མེད་པ་ནི་ཚུལ་

1. ལྟ་བུ་—བར་སྐྱེ་ 2. ལྟ་བུ་—བཀའ་(མདོ་‘ཞ’ ༩) 3. ལྟ་བུ་—‘སྐྱེ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆོས་’ཞེས་  
 པ་མེད། 4. ལྟ་བུ་—བཀའ་(མདོ་‘ཞ’ ༩༩) 5. ལྟ་བུ་—དེ་ནི་གནས་ 6. ལྟ་བུ་—བསྐྱེད་པ་གནས་  
 (ཆད་—བསྐྱེད་པ་འདི་གནས་) 7. ལྟ་བུ་—‘འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྐྱེད་པ་  
 ལས་’ཞེས་གསལ་ཡང་། ལྟ་བུ་དང་། ལྟ་བུ་ཐང་པོ་ཀོང་གི་སྐར་མད་པལོར་པ་ལྟར་གྱི་ལུང་འདིན་  
 འདི་‘འཕགས་པ་སངས་རྒྱས་’པའོ་བ་ཞེས་པའི་མདོར་གསལ་ཡོད་པས་དེ་ཉིད་འཕགས་ལྗོངས་ལྟ་བུ་སོ། །  
 (ལྟ་བུ་—བཀའ་—མདོ་‘ཇ’ 222) 8. ལྟ་བུ་—བཞིན་དུ་



བཞིན་ནོ། །དེ་འདྲི་བ་ནི་ཚུལ་བཞིན་པའོ།” །ཞེས། །ཡང་དེ་ཉིད་  
 ལས་ཀྱི་གཞུང་སྤྱུང་བ། “ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་ཅའི་སྒྲོ་ཟླ། །འཛི་འཕོ་བ་

1. ཟླ་བཀའ་(མདོ་ཇ་ 202) 2. ཐུང་ཐང་དང་པེ་ཀིང་སྤྱང་མར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཅའི་སྒྲོ་ཟླ།  
 ཞེས་གསལ་ཡང་དེ་ནི་མདོ་ཇ་མར་མེད་ཅེང་། །འདྲི་ཐང་གི་ཐུང་པེར་མཁའ་མུལ་མ་མེད་པ་།  
 ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་ཅའི་སྒྲོ་ཟླ་ཞེས་པ་དང་། །བཟུང་བཅོས་འདྲི་ཐང་པེར་ཟླ་དག་སྤྱང་མར་  
 ‘ཆོས་ཐམས་ཅད་ནི་ཅའི་སྒྲོ་ཟླ་’ཞེས་སོགས་གསལ་བ་ལ་གཞིགས་ན་ཡང་འདྲི་ཐང་ལེན་ཡུལ་གྱི་མདོ་  
 ཉིད་ཀྱི་ཡང་“ཡི་གེ་ནི་རྣམ་པའི་སྒྲོར་འདུག་པ་གང་ཞེ་ན། ཅའི་སྒྲོ་ནི་”ཞེས་སོགས་ཅའ་ར་པ་ཅ་  
 ན་སོར་ལ་སྤྱང་ནས་གསུངས་པ་དང་ཆོས་མཐུན་ནོ། །དེ་ལྟར་ན་ཡང་སྒྲོ་མ་རིམ་གྱི་དཔེར་“མཁའ་མུལ་མ་  
 སེལ་མེད་པའི་ཐུང་པེར་མཁའ་མུལ་མ་མེད་པའི་ཆོག་མེད་པས་མེད་པའི་དཔེར་ཉི།  
 མདོ་ཉིད་ཀྱི་ཡང་ཡིག་མཆན་ཐུབ་པའི་ཡི་གེ་ནི་རྣམས་པའི་སྒྲོར་“ཅའི་སྒྲོ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མེ་སྒྲོ་བ་  
 དང་། རྒྱ་མཆོད་མེ་དཔག་པའི་ཕྱིར་དོ།” ཞེས་གསལ་བ་བཞིན་མེ་སྒྲོ་པའི་སྒྲོ་དོད་“འཕུལ་པའི་  
 ཞེས་དང་། རྒྱ་མཆོད་ཀྱི་སྒྲོ་དོད་“འཕུལ་པའི་ཞེས་པའི་མེད་ཡིག་དང་པོར་ཅའ་ཡིག་དངོས་ཀྱི་ཡོད་  
 ཅེང་། ཡང་འདྲི་ཐང་འདྲི་ཐང་སྒྲོ་མ་རིམ་པོར་དཔེར་གསལ་བ་བཞིན་“ཆོས་ཐམས་ཅད་ཅའི་སྒྲོ་ཟླ།  
 །འཛི་འཕོ་བ་དང་”ཞེས་སོགས་གསལ་བ་བཞིན་མེད་ཡིག་དང་པོར་ཅ་ཡིག་མཆན་ཐུབ་པའི་ཆོག་  
 ‘འཛི་འཕོ་བའི་སྒྲོ་དོད་ཀྱི་ཡུལ་’ཞེས་གསལ་བ་བཞིན་དེ་ཉིད་འཕྱད་པར་མཐོང་དོ། །འདྲི་ཐང་ཅ་  
 ཡིག་གི་ཡི་གེ་ནི་རྣམ་པའི་སྒྲོར་འདུག་པ་པུད་པའི་སྒྲོ་ཐང་པས་ཐུང་པེར་ཅའ་ཡིག་དང་ཅ་  
 ཡིག་གཉིས་པའི་པུས་ཕྱིར་སྒྲོ་ཐང་ནོར་པ་མེན་ནམ་སྒྲོ་མ་མོ། །འདྲི་ཐང་དཔེ་ལས་པོར་དཔེ་འཕྱད་  
 ཅས་པའི་དགོས་དོན་ནི། རྒྱ་ཐུལ་པའི་པཀའ་དང་དེ་དེ་དགོངས་འདུལ་ལེགས་སྤྱང་གི་ཐུང་པེར་  
 ཐུང་པེར་མ་རྒྱུ་པའི་སྒྲོ་དོད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་པོར་དཔེ་ལེགས་ཞེས་པའི་ཆོས་མེད་པའི་ཐོས་པ་  
 ཞེས་ཀྱི་འཕྱར་སྒྲོ་ན་པེར་། དེ་དེ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོ་ཟླ་ཐུང་པེར་ཡོད་པའི་ཐོག་ཐོས་པ་སྤྱང་གི་ཡིག་  
 གཞུགས་སྒྲོ་པའི་ཐོས་པཀའ་པེར་། ཐོང་ལོར་ཆག་སྒྲོ་དང་། རུལ་པ་དང་། འཕུས་ཐང་  
 པ་སོགས་ལ་པར་ན་ནས་གསུང་དུ་ཐབ་པུས་སྤྱང་འདྲི་ཐང་ཐང་པ་རྣམས་ལ་མ་དག་པ་མེ་སྒྲོ་ཅིག་  
 ཡོད་པ་མངོན་སྲུང་མཐོང་ཆོས་ཀྱི་ཡུལ་པ་ལ་པར་ན་ནས་སྤྱང་འཕྱར་གྱི་དཔེ་ལས་པོར་དཔེ་འཕྱད་ཅེང་  
 ལེགས་པ་ཡོད་པས་དེ་ལྟར་པཀའ་དོ།



དང་<sup>1</sup>སྐྱེ་བ་དང་བྲལ་བ་དག་གོ། ཚེས་ཐམས་ཅད་ནི་ངོ་<sup>2</sup>བོ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོ་སྒྲེ།  
 ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྤོང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་། འཕགས་པ་  
 བདེན་པ་གཉིས་ནས་བར་འབྱེད་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་། “སྐྱེ་བ་མེད་པར་མཉམ་པ་ཉིད་  
 ཀྱིས་ཚེས་ཐམས་ཅད་མཉམ་པ་ཉིད་རོ།” ཞེས་བཞེད་རོ། ཤེས་རབ་ཀྱི་  
 ས་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་། “རབ་འབྱོར་གཟུགས་ནི་གཟུགས་ཀྱི་ངོ་བོ་  
 ཉིད་ཀྱིས་སྤོང་ངོ་། རྣམ་པར་ཤེས་པའི་བར་དུ་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 ཀྱིས་སྤོང་སྒྲེ། རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སྤོང་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།” ཞེས་བཀའ་  
 ལྷན་ནོ། སྤང་བོའི་ཅལ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་།

མདོ་འདི་དང་། འཇམ་དཔལ་མཚན་བཞེད་སྟགས་ཀྱི་དཔེ་མང་པོར་‘ཨ་རུ་ཕ་ལ་ན’ = ཨ་ར་བ་  
 ཅ་ན་ནི་’ ཅ་ཤས་ཀྱི་ལྟགས་སྤྱད་‘ལ’ = ཅ་ཡིག་གི་ཐད་དུ་བོད་ཡིག་ལ་‘ཅ’ཡིག་ཉིད་ཐོབ་ནི་ལྟགས་  
 སྤྱད་ལ་’ ཅ་ཅ་སྟགས་མེད་པར་བཞེད་པའི་དཔང་དུ་བྱས་པར་མངོན་ཞིང་། གང་ལྟར་ལྟགས་སྤྱད་  
 ལ་‘ཅ་ཅ’སྟགས་མེད་པ་ལས་‘ཅ་ཅ’སྟོའི་མེད་པར་འདོད་པ་ལ་དཔྱད་པ་ཞིབ་དུ་བྱེད་དགོས་པར་  
 སྤང་ཡང་ཚོག་མངས་སྟེ་དྲགས་ནས་མ་སྤྱོད་སོ།

1. ལྟེ་པེ་—དང་བྲལ་བ་(ཆད་—འཛོལ་དང་སྐྱེ་བ་’བྲལ་བ་) 2. ‘ཅ’ཡིག་ལ་སྤྱད་པའི་ཡིག་ནི་  
 རྣམ་པའི་སྒྲོ་འི་ཚོག་དེ་བཞེད་མ་ཐག་དུ་སྒྲོ་མ་རིམ་བོད་དཔེར་ཚོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོ་སྒྲེ་  
 ཞེས་གསལ་ཞིང་། དེའི་ཐད་ཀྱི་ལྟེ་དཔེར་‘ཨ་མ་འབྱུང་། སུའོ་མ་མེད་པེ་ = ཚོས་ཐམས་ཅད་མེད་པའི་སྒྲོ་  
 སྒྲེ་’ཞེས་གསལ་ཡང་ཡང་མདོ་ཉིད་དུ་ཨ་ར་བ་ ཅ་ན་སྟགས་ཡིག་ནི་རྣམ་པའི་སྒྲོ་འི་རིམ་པ་དང་བསྟུན་ན་  
 ‘ཅ’ཡིག་གི་འོག་དུ་‘ན’ཡིག་གི་རྣམ་པའི་སྒྲོ་འི་ཚོག་“ནའི་སྒྲོ་ན་ཚོས་ཐམས་ཅད་མེད་དང་བྲལ་  
 པའོ།” ཞེས་སྟགས་འབྱུང་དགོས་ཚེ་དུ་སྤང་ཡང་དེ་མེད་ལ། མདོར་ན་ལྟེ་དཔེ་དང་བོད་དཔེར་  
 སངས་པའི་ལྟངས་ཚོག་དང་། མདོ་ཉིད་ཀྱི་ཚོག་རིམ་པ་ཅས་གཟུགས་ཀྱི་མཐུན་མེ་མཐུན་ལྟ་ཚོགས་  
 ཤོག་ཡོད་པས་དཔྱད་ལྟར་རྣམས་ཀྱིས་ཞིབ་དུ་དཔྱད་པར་བྱའོ།
3. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་’མ་ 200) 4. ཚོས་ཞེས་ངོས་ནི་དམ་བུང་།
5. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་’ཅ་ 708)



གང་ལ་སྐྱེ་བ་སྤྱིན་པ་ཡི།

དངོས་པོ་གང་ཡང་མི་དམིགས་དེ།

འབྱུང་བ་མེད་པའི་དངོས་ལྟམས་ལ།

བྱིས་པ་དག་ནི་འབྱུང་བར་འདོད། །ཅེས་གསུངས་སོ། །

ཡབ་དང་སྲས་མཇལ་བ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “ཆོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་དུས་གསུམ་  
དུ་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཉམ་པ་དག་སྟེ། འདས་པའི་དུས་ནི་ཡང་ཆོས་ཐམས་  
ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མད་པ་ནས་<sup>2</sup>དེ་ལྟར་བྱུང་བའི་དུས་ཀྱི་བར་དུ་ངོ་བོ་ཉིད་དང་བྲལ་  
བའོ།” །ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་<sup>3</sup>ལྟངས་ཤིག་བརྟག་པར་བྱའོ།

རིགས་པས་བརྟག་པར་བྱས་ནི་ལྟངས་ཤིག་དེ་ཉིད་ཀྱི་བྱེད་པ་ལྟར་དེ། དེ་  
བས་ནི་རིགས་པས་(ཀྱང་<sup>4</sup>)སོ་སོར་བརྟག་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་རིགས་པ་མདོར་  
བཞེད་པར་བྱ་སྟེ། དངོས་པོ་ལྟམས་ཀྱི་སྐྱེ་བ་སྐྱེ་བའི་པ་ལས་འབྱུང་བ་ཞིག་གས།  
སྐྱེ་ཡོད་པ་ལས་འབྱུང་བ་ཞིག་དུ་འབྱུང་གྲང་ན། རེས་འགའ་བ་ཡིན་པར་  
སྤང་བའི་ཕྱིར་སྐྱེ་བའི་པ་ལས་འབྱུང་བ་མ་ཡིན་དེ། སྐྱེ་ལ་མི་ལྟོས་པར་བྱེ་  
བྲག་མེད་པའི་ཕྱར་སྐྱེ་བའི་དུས་བཞིན་དུ་དེ་ལྟར་ཐམས་ཅད་དུ་དངས་པོ་……  
ལྟམས་ཅིའི་ཕྱིར་མི་འབྱུང་། དངོས་པོ་མེད་པའི་དུས་དང་ཡང་བྱེ་བྲག་མེད་  
པས་སྐྱེ་བའི་དུས་ནི་ཡང་འབྱུང་བར་<sup>5</sup>མ་རགས་སོ། །དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་སྐྱེ་བའི་པ་  
ལས་འབྱུང་དུ་མི་ཅང་ངོ། སྐྱེ་ཡོད་པ་ལས་འབྱུང་བའང་<sup>6</sup>མ་ཡིན་དེ། འདྲ་

1. ཕྱི་བཀའ་(དཀོན་བཅུ་གས་-ང་ 762) 2. ཕྱི་ན་5 (ཆད་-བ་ནས་ད་ལྟར་)

3. ཕྱི་མི་ཤིག་ 4. སྐྱེ་དཔེར་-ཡུལ་ལྟམས་ཀྱི་དཔེར་པ་ལས་ཀྱང་ 5. ཕྱི་མི་-དུ་ཐམས་ཅད་

6. ཕྱི་ཚོ་-ཅད་དངོས་(ཆད་-ཐམས་ཅད་དུ་དངོས་པོ་ 7. ཕྱི་མི་-འབྱུང་བའི་

8. ཕྱི་མི་-བ་མ་ཡིན་(ཆད་-འབྱུང་བའང་མ་)



ལྷན་སྒྲིག་པ་ཅན་ནམས་ཀྱིས་དབང་སྐྱུལ་ལ་སོགས་པ་དྲག་པ་རྒྱུ་བདག་ས་པ་  
 དེ་ལས་ཀྱང་དངོས་པོ་ནམས་མི་སྒྲིལ། རིམ་གྱིས་འབྱུང་བར་རྒྱུ་བའི་ཕྱིར་རོ།  
 རྒྱུ་མ་ཚང་བ་མེད་པའི་འབྲས་<sup>1</sup>ལྟ་ནི་རིམ་གྱིས་འབྱུང་བ་མི་རིགས་ཏེ། ལྷོས་<sup>2</sup>  
 པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དབང་སྐྱུལ་ལ་སོགས་པ་བདག་ཉིད་ལ་མཐུ་ཡོད་པ་ནི་  
 གཞན་ལ་ལྷོས་<sup>3</sup>པ་མེད་ད། དྲག་པ་ཡིན་པས་དེ་ལ་གཞན་དག་གིས་མན་གདེ་  
 མི་དགོས་པའི་ཕྱིར་རོ། །མན་མི་འདོགས་པ་ལ་ལྷོས་བར་ཡང་མི་རུང་ངོ་། །  
 དེ་བས་ན་དབང་སྐྱུལ་ལ་སོགས་པ་རྣམས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་སྤོང་པའི་ཕྱིར་མོ་……  
 གཤམ་གྱི་བྱ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་ང་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དངོས་  
 པོ་ནི་དོན་བྱེད་རྣམས་པའི་མཚན་ཉིད་ཡིན་ན་དེ་དག་ནི་གང་དུ་ཡང་འབྲས་བྱ་རིམ་……  
 གྱིས་སྒྲིལ་<sup>4</sup>ཀྱང་མི་རྣམས་ཏེ། གོང་དུ་བདག་ས་པ་ཡིན་ནོ། །ཅིག་ཅར་ཡང་མི་  
 སྒྲིལ། འདི་ལྷན་འབྲས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཅིག་ཅར་བསྐྱེད་ནས། ཕྱིན་ཆད་ཀྱང་  
 གཤམ་དེ་དེ་ཁོ་ན་བཞིན་དུ་དེ་ཉིད་བསྐྱེད་རྣམས་ནི་དེའི་ཆ་རྣམས་པའི་རང་བཞིན་རྗེས་……  
 སྐྱུ་འཇུག་པས་སྐྱུ་མ་བཞིན་དུ་འབྲས་བྱ་སྒྲིལ་བར་འགྱུར་རོ། །རྗེས་སྐྱུ་མི་འཇུག་  
 ན་ནི་སྐྱུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་བོར་བས་མི་དྲག་པར་འགྱུར་རོ།

དེ་བས་ན་དྲག་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དངོས་པོ་གང་ཡང་མེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྐྱུལ་བ། “སྒྲིལ་ཆེན་པོ་འདི་ལྟ་སྟེ། ནམ་  
 མཁའ་དང་། འགོག་པ་དང་། སྤང་ན་ལས་འདས་པ་ལ་སོགས་པ་<sup>7</sup>པ་མ་  
 བྱས་པའི་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་སྒྲོ་འདོགས་པ་ནི་མེད་པ་ལས་སྒྲོ་འདོད་

1. 'འབྲས་བྱ'—ཀྱི་དཔེར་མེད་ 2. ལྷོ་མེ—བཞུགས་ 3. ལྷོ་མེ—བཞུགས་

4. ལྷོ་མེ—བསྐྱེད་ 5. ལྷོ་མེ—ཅད་བསྐྱེད་(ཆད་—ཅད་ཅིག་ཅར་བསྐྱེད་)

6. ལྷོ་མེ—མཁའ་(མདོ་ཅེ་ཡང་གཤམ་གས་—ལཱ་) 7. 'ཐམས་ཅད'—ཀྱི་དཔེར་མེད་



པ་ཡིན་ནོ།” །ཞུས་པ་མོ། །དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་དེ་དག་ནི་དྲག་པ་ལས་སྒྲེར་མི་  
 རུང་ངོ་། །མི་དྲག་པ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་དེ། །དེ་ལས་འདས་པ་དང་མ་འོངས་  
 པ་ནི་དངོས་པོ་མེད་པས་དེ་ལས་སྒྲེ་ཞེས་བྱར་མི་རུང་སྟེ། །རྒྱ་མེད་པ་ལས་སྒྲེ་<sup>2</sup>  
 བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །དུས་མཉམ་པ་དང་མི་མཉམ་པ་དེ་ལས་མི་སྒྲེ་བའི་  
 ཕྱིར་དེ་ལྟར་གྱི་ལས་ཀྱང་མི་སྒྲེ་འོ། །འདི་ལྟར་རེ་ཞིག་དུས་མཉམ་པ་ལས་མ་ཡིན་  
 པ་ནི་རྒྱུ་འོ་པོ་ཉིད་དང་འདྲ་བར་འབྲས་བུ་ཡང་དེ་དང་དུས་གཅིག་དུ་འབྱུང་སྟེ།  
 གྲུབ་བའི་ཕྱིར་རོ། །དུས་ཐ་དད་པ་ལས་ཀྱང་མི་སྒྲེ་སྟེ། །དུས་གཞན་གྱིས་  
 ཆོད་<sup>3</sup>དེ་སྒྲེ་ན་ནི་འདས་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་སྒྲེ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །པར་  
 དུ་མ་ཆོད་པར་སྒྲེ་ན་གཤམ་དེ་བདག་ཉིད་ཐམས་ཀྱིས་བར་དུ་མ་ཆོད་ན་ནི་སྐད་ཅིག་  
 གཅིག་དུ་སྐད་ཅིག་ཐམས་ཅད་ཆུད་པས་བསྐལ་པ་ཡང་སྐད་ཅིག་ཅམ་དུ་འགྱུར་དེ།  
 དཔེར་ན་རྒྱལ་ཕྱ་རབ་ནམས་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འདྲེས་ནས་གོང་བུ་རྒྱལ་...  
 ཕྱ་མོ་ཅམ་ཉིད་དུ་འགྱུར་བ་བཞིན་ནོ། །ཇི་སྟེ་ཕྱོགས་གཅིག་གིས་ཕྱད་<sup>4</sup>ན་ནི་དེའི་  
 ཆོ་སྐད་ཅིག་ལ་ཆ་ཤས་ཡོད་པར་འགྱུར་རོ། །བདག་ཉིད་ཀྱང་མི་སྒྲེ་སྟེ། །རྒྱ་  
 མེད་པ་ལས་བྱུང་བ་ཁོ་<sup>5</sup>ནའོ། །ཕྱོགས་ཀྱི་ནང་དུ་ཕྱོགས་འདི་འདྲུས་བའི་ཕྱིར་དེ།  
 བདག་ཉིད་ལ་བྱེད་པ་འགལ་བའི་ཕྱིར་རོ། །གཉིས་ཀ་ལས་ཀྱང་མ་ཡིན་དེ།  
 ཕྱོགས་གཉིས་ཀའི་སྒྲིན་<sup>6</sup>འདྲུ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །

དེ་ལྟར་བས་ན་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་འདི་དག་ཐམས་ཅད་ནི་མ་སྒྲེས་པ་  
 ཁོ་ན་ཡིན་ལ། །ཀྱན་རྫོབ་དུ་ནི་སྒྲེ་བ་ཡོད་པས་ལྷང་འ་སོགས་པ་དང་ཡང་མ་

1. ལྟ་པ་—ཞེས་པ། 2. ‘སྒྲེ་བར་’—རྒྱ་དཔེར་མེད་  
 3. ལྟ་པ་—མཆོད་ 4. ‘ཕྱད་ན་’—རྒྱ་དཔེར་མེད་ 5. ལྟ་པ་—ཁོ་ན་ནི་ཕྱོགས་  
 6. ལྟ་པ་—ཐོག་ཐོག་ = སྒྲིན་གཉིས་ཀ་ 7. ལྟ་པ་—ཅན་མ་











ཇི་ལྟར་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་འདི་དག་རྩལ་པ་ཉིད་དུ་སྒྲུང་བར་...  
 ཁས་ལེན་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པའང་མི་བདེན་པར་འགྱུར་དེ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་  
 དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་ཐ་དད་པ་མ་ཡིན་པའི་རོ། །བདག་ཉིད་རྟོགས་པའི་ངོ་  
 བོ་ལས་གྲུད་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་ངོ་བོ་མེད་ལ། གཞུགས་ལ་སོགས་པའང་  
 བདག་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲུང་། བར་བྱེད་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་རང་གི་ངོ་བོར་གྱུར་བ་...  
 རྣམས་རྩལ་པ་ཉིད་ཡིན་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་རྩལ་པ་<sup>2</sup>ཡིན་པར་...  
 ཁས་སྒྲུངས་པར་གྱུར་དོ། །(དེའི་ཕྱིར་<sup>3</sup>)རྣམ་པར་ཤེས་པ་ནི་སྒྱུ་མ་དང་འདྲའོ་  
 ཞེས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །

དེ་ལྟར་བས་ན་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་རྟོང་བའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་  
 འདི་དག་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་བདེན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་དེ་ངོས་སོ། །  
 དེའི་དོན་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།<sup>4</sup>

ཇི་ལྟར་གཞུགས་རྣམས་མི་ཡོང་ལ།

གཅིག་དང་གཞན་རྣམས་རྣམ་སྒྲུངས་པར།

སྒྲུང་ཡང་དེ་ནི་ཡོད་མ་ཡིན།

དེ་བཞིན་དངོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད། ཅེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ།

(<sup>5</sup>གཅིག་དང་གཞན་རྣམས་རྣམ་སྒྲུངས་པ་ཞེས་པ་) གཅིག་པ་ཉིད་དང་དུ་མ་ཉིད་...

1. ལྟ་དཔེར་—न निर्मासन्ते = མི་སྒྲུང་བར་མི་བྱེད་ན་ (དོན་ཅན་)

2. ལྟ་བུ་—(ལྟག) —བ་ཉིད་ཡིན་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་འཕྲུག་པ་

3. ལྟ་དཔེར་—तस्मात् = དེའི་ཕྱིར་ 4. ལྟ་—བཀའ་(མདོ་འུ་—༡༢༩)

5. ལྟ་དཔེར་—“एकत्वान्यत्वेवजितम् इति एकत्वान्यत्वेरहितम् इत्यर्थः = གཅིག་དང་གཞན་

རྣམས་རྣམ་སྒྲུངས་པ་ཞེས་པ་གཅིག་དང་དུ་མ་ཉིད་ཐམས་ཅད་ཞེས་བྱ་བའི་སྤོངས་ཀྱི།” ཞེས་གསལ།



བྲལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་<sup>1</sup>ཚོག་གོ། །ཡང་བཀའ་སྤྱུལ་<sup>2</sup>།  
 སྒྲོ་ཡིས་ནམ་བར་གཞིགས་ན་གོ།  
 ངོ་བོ་ཉིད་ནི་གཟུང་དུ་མེད། །  
 དེ་ཕྱིར་དེ་དག་བཞིན་མེད་ཅིང་། །  
 ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མེད་པར་བཤད།། ཅེའོ།།

དེ་ལྟར་བསམས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡང་དག་པའི་དོན་བྱེ་བྲག་བྱེད་པར་<sup>3</sup>  
 བྱས་ལ་དེ་མངོན་སྲུང་<sup>4</sup>དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་བསྒྲིམས་པའི་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་དོ། །  
 ཐོས་<sup>5</sup>པ་ལ་སོགས་པ་ཅས་ཀྱིས་དོན་མངོན་སྲུང་དུ་མི་འབྱུང་རོ། །ཞེས་འཕེ་  
 པ་དགོན་མཆོག་སྤྱིན་ལ་སོགས་པ་ལས་བལྟན་པ་ཡིན་ནོ། །སྐྱབ་བ་བོ་ནམས་  
 ལ་ཡང་ཉམས་ཡོད་དེ། ཤེས་བའི་སྤང་བ་ནམས་ཤིན་དུ་གསལ་བ་འབྱུང་བ་  
 མེད་པ་ཡང་དག་པར་སྐྱབ་པའི་སྤྱན་པ་མི་སྤོངས་སོ། །བསྒྲིམ་པ་ལན་མང་དུ་  
 བྱས་ན་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་དོན་ལ་<sup>6</sup>ཡང་ཤེས་པ་ཤིན་དུ་གསལ་བ་འབྱུང་སྟེ།  
 དཔེར་ན་མི་སྐྱུག་པ་<sup>7</sup>དང་ཟད་པར་ས་ལ་སོང་བ་ལ་སྒྲིམས་པར་ཞུགས་པ་ནམས་  
 ཀྱི་ཤེས་<sup>8</sup>པ་འབྱུང་བ་ལྟ་བུ་ཡིན་ན་ཡང་དག་པའི་དོན་<sup>9</sup>ལ་ལྟ་ཅི་སྟོན། དེ་ལྟར་  
 བསྒྲིམས་<sup>10</sup>པའི་འབྲས་བྱ་ནི་ཡོངས་སུ་གསལ་བའི་ཤེས་པ་ཡིན་པས་འབྲས་བྱ་  
 དང་བཅས་པའི་དོན་<sup>11</sup>ཡིན་པར་བཅོས་ལྟན་འདས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་གྲུལ་པོ་  
 ལས་<sup>12</sup>བཀའ་སྤྱུལ་དེ།

- 
1. ཐུ་ཚོ་—བའི་ཚོག་གོ། 2. ཐུ་—བཀའ་(མདོ་’ཅ’—༡༩༤)  
 3. ཐུ་མེ་—བ་ཐུས་ 4. ཐུ་—ཐུས་ཐ་ 5. ཐུ་དཔེར་—ཐུ་ཐུ་ཐུ་=མང་དུ་ཐོས་པ་  
 6. ཐུ་མེ་—དོན་ལ་ཤེས་ 7. ཐུ་དཔེར་—ཐུ་ཐུ་ཐུ་=མི་སྐྱུག་པ་སོགས་ 8. ‘ཤེས་པ་འབྱུང་བ་  
 ཐུ་མེ་ཡིན་ན་’ཞེས་པ་ཐུ་དཔེར་མེད། 9. ཐུ་ཚོ་—དོན་ལྟ་ 10. ཐུ་མེ་—བསྒྲིམ་  
 11. ‘དོན་’—ཐུ་དཔེར་མེད་ 12. ཐུ་—བཀའ་(མདོ་—‘ད’—༡༩)







འདི་དེ་བ་ལ་མེ་ལྷ་ཞིང་ཚུལ་<sup>1</sup>ཁྲིམས་ལ་ལེགས་པར་གནས་ལ་སྤྱད་བསྐྱེད་ལ་.....  
 སོགས་པ་དང་དུ་ལེན་པའི་ངང་ཚུལ་ཅན་དུ་གྱུར་ལ་བཙོན་འགྲུས་བཙམས་ན་གིན་  
 དུ་གྱུར་དུ་འགྱུར་བོ། །དེ་བས་ན་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་  
 ལ་སོགས་པ་ལས་ཀྱང་<sup>2</sup>སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་གོང་མའི་ཡང་གོང་མའི་སྤྱི་<sup>3</sup>ཉེད་.....  
 ཡིན་པར་བསྟན་ཏོ། །

དེ་ལྟར་ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་སོགས་པ་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་ནམས་ལ་གནས་ཏེ།  
 ཡིད་དུ་འོང་བའི་<sup>4</sup>ས་ཕྱོགས་སུ་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔལ་ཐམས་...  
 ཅན་ལ་ཕྱག་ལ་སོགས་པ་བྱ་ཞིང་། སྤྱི་གུ་བ་བཤགས་པ་དང་། བསོད་ནམས་  
 ཀྱི་རྗེས་སུ་ཡི་རང་བ་ཡང་བྱས་ནས། སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁོ་ན་མངོན་སུམ་དུ་བྱས་  
 བས་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་གཏོན་པའི་བསམ་པ་ཅན་དུ་གྱུར་ནས་ལྷན་དྲུང་བོར་.....  
 བསྐྱེད་པ་ལ་སྤྱན་བཞེས་པའི་སྤྱིང་དུ་འདུག་སྟེ། སྤྱི་ལ་<sup>6</sup>མོ་ཀྱང་བཅས་ལ་དྲིང་ངེ་  
 འཛིན་མངོན་པར་སྤྱད་བོ། །

དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་མདོར་བསྟུན་ན་ནམ་པ་རྗེ་སྤྱིང་གྱིས་ནམ་པར་དབྱེད་  
 བར་བྱ་བ་དངོས་པོ་མཐའ་དག་འདུ་བར་འགྱུར་བའི་དངོས་པོ་གང་ཡིན་པ་དེ་ལ་  
 སེམས་གཞག་པར་བྱའོ། །དངོས་པོ་འདུས་པ་ནི་གཞུགས་ཅན་དང་། གཞུང་  
 ཅན་མ་ཡིན་པའི་བྱ་བྱུག་གིས་ནམ་པ་གཉིས་ཏེ། ལས་དང་པོ་བའི་ནམ་པར་  
 གཡེང་བའི་ཉེས་པ་བསལ་བའི་ཕྱིར་རེ་ཞིག་འདུས་པ་དེ་ལ་ནི་དམིགས་པའི་རིུ་  
 སོ། །གང་གི་ཆོ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཁྲུགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་<sup>7</sup>ཆོ་སྤང་བོ་དང་ཁམས་

1. ལྷ་དཔེར་—सम्यक्प्रवृत्ती = ཡང་དག་པར་འདུག་པ་  
 2. 'ཀྱང་'—ལྷ་དཔེར་མེད་ 3. 'སྤྱི'—ལྷ་དཔེར་མེད་ 4. ལྷ་མོ་—བའི་ཕྱོགས་ 5. ལྷ་མོ་—སྤངས་  
 6. ལྷ་མོ་—དཀྱིལ་ 7. ལྷ་མོ་—དེའི་སྤང་



ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་<sup>1</sup>རྒྱས་པར་ཡང་དམིགས་པར་བྱེད་པ་ཁོ་ན་སྟེ།  
འདི་སྐད་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཀྱང་ནལ་འབྱོར་བ་...  
ནམས་ཀྱི་སྟོང་པ་ཉིད་<sup>2</sup>ནམ་པ་བཙོ་བརྒྱད་ལ་དམིགས་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་  
གིས་དམིགས་པའི་ནམ་པ་<sup>3</sup>ཀྱན་དུ་བཀའ་སྤྱུལ་དོ།

དེ་བས་ན་བཙོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་<sup>4</sup>སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་པན་གདགས་  
པའི་ཕྱིར་གཞུགས་ཅན་དང་གཞུང་ཅན་མ་ཡིན་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གིས་...  
མདོར་བསྡུས་པ་དང་། བར་མ་དང་། རྒྱས་པ་དག་གིས་དངོས་པོར་བ་དུ་དབྱེ་བ་  
ཆོས་མངོན་པ་ལ་སོགས་པ་ལས་བསྟན་དོ། །དེ་ཡང་དངོས་པོ་ལ་སྟོ་<sup>5</sup>འདོགས་པ་  
དང་སྒྱར་བ་སྒྲུང་པའི་ཕྱིར་སྒྲུང་བོ་དང་ཁམས་ལ་སོགས་པར་བསྡུས་པའི་སྟོ་ནས་  
བགྲང་ངོ་། །དེ་ནས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་བསྡུས་པའི་བྱེ་བྲག་ཕྱིར་ནས་དེ་ཉིད་  
ལ་སེམས་ཡང་དང་ཡང་རྒྱན་དུ་འཇུག་པར་བྱའོ།

གང་གི་ཆོ་བར་སྐབས་སུ་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པས་སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་  
ནམ་པར་གཡེང་བར་བྱེད་པ་དེའི་ཆོ་ནམ་པར་གཡེང་བར་ཤེས་པར་བྱས་ལ་མི་...  
རྒྱལ་པ་ལ་སོགས་པ་བསྒྲོམས་པས་ནམ་པར་གཡེང་བ་ཞི་བར་བྱས་ཤིང་རྒྱར་དུ་  
དེ་ཉིད་ལ་སེམས་ཕྱི་ཕྱིར་གཞུག་པར་བྱའོ། །མི་རྒྱལ་པ་ལ་སོགས་པ་བསྒྲོམ་  
པའི་གོ་རིམས་འདིར་ཡི་<sup>6</sup>གོ་མངས་ཀྱིས་<sup>7</sup>དྲོགས་དེ་མ་བྲིས་སོ། །གང་གི་

- 
1. རྒྱ་དཔེར་—विशोध्य विस्तार = རྣམ་པར་དག་པ་རྒྱས་པར་ 2. ལྷ་པོ་—ཉིད་པཙོ་  
3. རྒྱ་དཔེར་—नानाप्रकारम् = རྣམ་པ་ལྷ་ཆོར་པ་ 4. ལྷ་པོ་—ཀྱིས་ཐམས་(ཆད་—ཀྱིས་སེམས་  
ཅན་ཐམས་ཅད་) 5. རྒྱ་དཔེར་—अध्यासोप = ལྷག་པར་སྟོ་འདོགས་  
6. རྒྱ་དཔེར་—विस्तारमयान् = རྒྱས་པས་འཇུག་ནས་ 7. ལྷ་པོ་—ཀྱི་



ཆོ་<sup>1</sup>དེ་ལ་(སེམས་<sup>2</sup>)མི་དགའ་བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་ལ་...  
 ལྟ་བུ་དེ་ལ་དགའ་བ་བསྒྲུབ་ཞིང་། རྣམ་པར་གཤེད་བ་ལ་ཉེས་པར་ལྟ་བུ་བས་  
 མི་དགའ་བ་རབ་དུ་ཞི་བར་བྱའོ། །ཇི་ལྟེ་གང་གི་ཆོ་སྤྲུགས་པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་  
 རོན་དེ། དམིགས་པ་འཛིན་བ་ལ་མི་གསལ་ཞིང་སེམས་བྱིང་བར་གྱུར་བ་དེའི་  
 ཆོ་སྤྲུང་བའི་འདུ་ཤེས་བསྒྲུབ་<sup>3</sup>པ་འཇམ་<sup>4</sup> མཆོག་དུ་དགའ་བའི་དངོས་པོ་སངས་  
 གྱུས་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་བྱིང་བ་བསལ་ལ་དམིགས་པ་དེ་...  
 ཉིད་དམ་དུ་བརྒྱུང་ངོ་། །ཇི་ལྟེ་གང་གི་ཆོ་དེ་སྤྲོན་དགོད་<sup>5</sup>པ་དང་ཅེ་བ་ལ་སོགས་  
 པ་བྲན་ཞིང་བར་བར་དུ་སེམས་གོད་པར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་མི་དགའ་བ་ལ་སོགས་པ་  
 ཡིད་འབྱུང་བར་འགྱུར་བའི་དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱེད་པས་གོད་པ་ཞི་བར་བྱའོ། །  
 དེ་ནས་ཡང་དམིགས་པ་དེ་ཉིད་ལ་སེམས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་འཇུག་  
 པ་ལ་འབད་བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་བྱིང་བ་དང་གོད་པ་གཉིས་<sup>7</sup>ཀ་དང་བྲལ་དེ་  
 མཉམ་པར་འཇུག་ཅིང་སེམས་རང་གི་ངང་གིས་འབྱུང་བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་རྩོལ་  
 བ་སྤོང་དེ་བདང་སྒྲོམས་སུ་བྱའོ། །གལ་དེ་མཉམ་པར་འཇུག་པ་ལ་རྩོལ་བ་བྱས་  
 ན་སེམས་རྣམ་པར་གཤེད་པར་འགྱུར་ངོ་། །

གང་གི་ཆོ་དམིགས་པ་དེ་ཉིད་ལ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་ཇི་སྤྲོད་  
 འདོད་པའི་བར་དུ་སེམས་འཇུག་པར་འགྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་ཇོགས་པ་ཡིན་  
 བར་རིགས་པར་བྱ་ལྟེ། ཞི་གནས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ནི་སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ཅམ་དུ་  
 ཟད་པའི་ཕྱིར་འདི་ནི་ཞི་གནས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྲིད་མཚན་ཉིད་ཡིན་ནོ། །དེའི་

1. ལྟ་ཆོ་—ཆོ་ལ་(ཆད་—ཆོ་དེ་ལ་) 2. ལྟ་དཔེར་—འཛིན་འགྲུལ་འཛིན་= དེ་ལ་སེམས་མ་

དགའ་བར་ 3. ལྟ་ཆོ་—བསྒྲུབས་ 4. 'འཇམ་'—ལྟ་དཔེར་མེད་

5. ལྟ་པེ་—གོད་ 6. 'དངོས་པོ་'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 7. ལྟ་པེ་—གཉི་ཀ་







མདོར་ན་དྲིང་ཅེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཉེས་པ་དྲུག་ཡོད་དེ། ལེ་ལོ་དང་།  
 དམིགས་པ་བཞེད་པ་དང་། བྱིང་བ་དང་། ཁྱོད་པ་དང་། མི་རྩལ་པ་དང་།  
 རྩལ་བའོ། །དེ་ནམས་ཀྱི་གཉིན་པོར་<sup>1</sup>སྤྱོད་བའི་འདུ་བྱེད་བརྒྱད་བསྒྲུབ་མོ། །  
 འདི་ལྟ་སྟེ། དད་པ་དང་། འདུན་པ་དང་། རྩལ་པ་དང་། ཤིན་དུ་སྤྱངས་  
 པ་དང་། དྲན་པ་དང་། ཤེས་བཞིན་དང་། སེམས་པ་དང་། བདང་  
 སྒྲུབས་མོ། །དེ་ལ་གོང་མ་བཞི་ནི་ལེ་ལོ་འི་གཉིན་པོ་སྟེ། འདི་ལྟར་དྲིང་ཅེ་  
 འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་དག་ལ་མངོན་པར་ཡིད་ཆེས་བའི་མཚན་ཉིད་དང་ལྡན་པའི་དད་  
 (བས་<sup>2</sup>)ནལ་འབྱོར་པ་ནམས་དེ་ལ་འདོད་པ་སྤྱེའོ། དེ་ནམས་འདོད་པས་བརྩོན་  
 འགྲུས་རྩལ་མོ། །དེ་བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་ལྷན་དང་སེམས་ལས་སྤྱང་  
 བ་ཉིད་བྱེད་དོ། །དེ་ནས་ལྷན་དང་སེམས་ཤིན་དུ་སྤྱངས་པར་གྱུར་པས་ལེ་ལོ་  
 ལྡོག་སྟེ། དེ་བས་ན་དད་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་ལེ་ལོ་སྤྱོད་<sup>3</sup>བའི་ཕྱིར་བསྒྲུབ་མོ། །  
 དྲན་པ་ནི་དམིགས་པ་བཞེད་པའི་གཉིན་པོ་འོ། །ཤེས་བཞིན་ནི་བྱིང་བ་དང་ཁྱོད་  
 པའི་གཉིན་པོ་སྟེ། དེས་བྱིང་བ་དང་ཁྱོད་པ་ཡང་དག་པར་རྟོགས་པའི་ཕྱིར་རོ།  
 བྱིང་བ་དང་ཁྱོད་པ་རབ་དུ་<sup>4</sup>མ་ཞི་བའི་དུས་ན་མི་རྩལ་པ་ཉེས་པ་སྟེ། དེའི་  
 གཉིན་པོར་སེམས་པ་བསྒྲུབ་མོ། །བྱིང་བ་དང་ཁྱོད་པ་རབ་དུ་ཞི་སྟེ། གང་  
 གི་ཆོ་སེམས་ནལ་དུ་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ་རྩལ་པ་ཉེས་པ་ཡིན་དེ། དེའི་གཉིན་པོར་  
 དེའི་ཆོ་བདང་སྒྲུབས་བསྒྲུབ་མོ།

སྤྱོད་བའི་འདུ་བྱེད་བརྒྱད་པོ་དེ་དག་དང་ལྡན་ན་དྲིང་ཅེ་འཛིན་ཤིན་དུ་.....

1. ལྟ་པོ་—པོ་ 2. ལྟ་པོ་—ཐུག་པ་ = དད་པས་

3. ལྟ་པོ་—སྤྱོད་བའི་ 4. ལྟ་པོ་—རབ་དུ་ཞི་(ཆད་ཐུག་—རབ་དུ་མ་ཞི་བའི་)



ཁྱེད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུ་ལ་སོགས་པ་ཡོན་ཏན་རྣམས་སྐྱབ་པར་བྱེད་དོ།  
 དེ་ལྟར་མཐོང་སྟེ་ལམ་སྟོན་བཞི་འདྲུ་<sup>1</sup>བྱེད་བརྒྱུད་དང་ལྟན་པའི་རྩ་འབྲུལ་...  
 གྱི་ཀྱང་པ་བསྐྱོམ་སོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྱད་དོ། སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་དེ་ཕྱི་  
 ཕྱིར་ལས་སུ་རུང་བ་ཉིད་དང་ལྟན་ཞིང་དམིགས་པ་ལ་སོགས་པའི་ཡོན་ཏན་གྱི་...  
 བྱེད་པར་ཐོབ་པས་བསམ་གཏན་དང་། གཞུགས་མེད་པའི་སྒྲོམས་པར་འཇུག་  
 པ་དང་། རྣམ་པར་ཐར་པ་<sup>2</sup>ལ་སོགས་པའི་མིང་ཐོབ་བོ།

འདི་ལྟར་གང་གི་ཆོ་བདེ་སྒྲོམས་ཀྱི་ཆོར་བ་དང་ལྟན་ཞིང་རྟོག་པ་དང་བཅས་  
 པ་དང་། དཔྱོད་པ་དང་བཅས་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་མི་སྒྲོགས་པ་མེད་པ་ཞེས་  
 བྱ་ཏེ། <sup>3</sup>བསམ་གཏན་དང་བོ་འདི་སྒྱུར་བའི་སེམས་སོ། གང་གི་ཆོ་འདྲི་  
 པའི་སྟེང་པ་དང་། སྟེག་<sup>4</sup>པའི་ཆོས་རྣམས་དང་བྲལ་ཞིང་རྟོག་<sup>5</sup>པ་དང་། དཔྱོད་  
 པ་དང་། དགའ་བ་དང་། བདེ་བ་དང་། (<sup>6</sup>ནང་ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་)ལྟན་  
 པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་བསམ་གཏན་དང་བོ་ཞེས་བྱའོ། བསམ་གཏན་དང་བོ་དེ་  
 ཉིད་ལས་རྟོག་པ་ཅམ་མེད་པ་དེ་ནི་བསམ་གཏན་བྱེད་པར་ཅན་ཞེས་བྱའོ། གང་  
 གི་ཆོ་རྟོག་པ་དང་དཔྱོད་པ་དང་བྲལ་དེ་བསམ་གཏན་དང་བོ་འདི་སྟེང་པ་དང་...  
 བྲལ་པར་གྱུར་ནས་དགའ་བ་དང་བདེ་བ་དང་། ནང་ཡོངས་སུ་དང་བ་དག་དང་  
 ལྟན་པར་གྱུར་བ་དེའི་<sup>7</sup>ཆོ་བསམ་གཏན་གཉིས་པ་ཞེས་བྱའོ། གང་གི་ཆོ་བསམ་

1. 'འདྲུ་བྱེད་བརྒྱུད་'—ཐུ་དཔེར་མེད་ 2. ལྟ་བུ་—པ་དང་སོགས་ 3. 'བསམ་གཏན་དང་བོ་འདི་སྒྱུར་  
 པའི་སེམས་སོ།' ཞེས་པ་ཐུ་དཔེར་མེད་ 4. 'སྟེག་པའི་ཆོས་རྣམས་དང་'ཞེས་པ་ཐུ་དཔེར་མེད་ 5.  
 'རྟོག་པ་དང་' དཔྱོད་པ་ཞེས་པ་ཐུ་དཔེར་མེད་ 6. ནང་ཡོངས་སུ་དང་བ་དག་དང་ 7. ལྟ་བུ་—དེའི་བསམ་(ཆད་—དེའི་ཆོ་བསམ་གཏན་)



གཏན་གཉིས་པའི་སའི་སྟེད་པ་དང་བུལ་བར་གྱུར་དེ་བདེ་བ་དང་། བདང་སྟོམས་  
 དང་། དུན་པ་དང་། ཤེས་བཞིན་<sup>1</sup>དག་དང་ལྷན་པར་གྱུར་བ་དེའི་<sup>2</sup>ཆོ་བསམ་  
 གཏན་གསུམ་པ་ཞེས་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་བསམ་གཏན་གསུམ་པའི་སའི་སྟེད་པ་  
 དང་བུལ་དེ་རྒྱལ་བསྐལ་ཡང་མ་ཡིན་བདེ་བ་ཡང་མ་ཡིན་ཞིང་། བདང་སྟོམས་  
 དང་། དུན་པ་དག་དང་ལྷན་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་བསམ་གཏན་བཞི་པ་ཞེས་བྱའོ།  
 དེ་བཞིན་དུ་གཟུགས་སེད་པའི་སྟོམས་པར་འཇུག་པ་དང་། རྣམ་པར་ཐར་པ་དང་།  
 རིམ་གྱིས་གཞོན་པའི་སྐྱེ་མཆེད་ལ་སོགས་པ་ཡང་དམིགས་པ་དང་རྣམ་པ་ལ་སོགས་  
 པའི་བྱེ་བྲག་གིས་སྐྱར་བར་བྱའོ།

དེ་ལྟར་དམིགས་པ་དེ་ལ་སེམས་བདུན་པར་བྱས་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རྣམ་  
 པར་དབྱེད་པར་བྱ་ཏེ། འདི་ལྟར་ཤེས་པའི་རྣང་བ་བྱང་བས་ཀྱུན་དུ་མེངས་པའི་  
 ས་བོན་ཤིན་དུ་སྟོང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་སྐྱེ་བྱེད་ལ་ཅན་རྣམས་ཀྱི་  
 བཞིན་དུ་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཅམ་གྱིས་ཉོན་མེངས་པ་སྟོང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །མདོ་  
 སྟེ་ལས་<sup>3</sup>ཇི་སྟེད་དུ།

དྲིང་ངེ་འཛིན་དེ་སྟོམ་པར་བྱེད་མེད་གྱི།

དེ་ནི་བདག་དུ་འདྲ་ཤེས་འཇིག་<sup>4</sup>མི་བྱེད།

དེ་ཡི་ཉོན་མེངས་ཕྱིར་ཞིང་རབ་འབྱུག་ཏེ།

ལྷག་སྟོང་འདི་ན་དྲིང་འཛིན་བསྐྱེམ་པ་བཞིན། ཞེས་གསུངས་

པ་ལྟ་བུའོ།

1. ལྟ་བུ་—བཞིན་དང་ 2. ལྟ་བུ་—དེའི་བསམ་(ཆད་—དེའི་ཆོ་བསམ)

3. ལྟ་བུ་—བཀའ་(མདོ་—དྲིང་ངེ་འཛིན་ཀྱིས་ལོ་ 20) 4. 'འཇིག་མི་བྱེད་ཅེས་བ་སྟོམ་རིམ་གྱི་

དཔེར་མེད་ཀྱང་མདོ་ངོ་མཐེན་ལྟ་བུ་དཔེར་ཡོད་དོ།



དེ་ལ་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས།<sup>1</sup> ཤེས་རབ་བསྒྲུལ་པའི་  
རིམ་པ་མདོར་བཀའ་སྒྲུལ་དེ།

སེམས་ཚུལ་ནི་རབ་བདེན་ནས།

ཕྱི་རོལ་དོན་ལ་མི་བདག་གོ།

དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དམིགས་གནས་ནས།

སེམས་ཚུལ་ལས་ཀྱང་འདྲ་བར་བྱ།

སེམས་ཚུལ་ལས་ནི་འདས་ནས་སུ།

སྒྲུང་བ་མེད་ལས་འདྲ་བར་བྱ།

སྒྲུང་མེད་གནས་པའི་ནལ་འབྱོར་བ།

དེ་ཡིས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མཐོང་།

ཞི་བ་ལྷན་གྱིས་བྱུང་བའི་གནས།

སྒྲུལ་ལས་དག་གིས་ནམ་པར་སྒྲུངས།

ཡེ་ཤེས་དམ་པ་བདག་མེད་བ།<sup>2</sup>

སྒྲུང་བ་མེད་པས་མཐོང་བར་འགྱུར།

དེ་ལ་དོན་ནི་འདི་ཡིན་དེ། ཐོག་མར་ནལ་འབྱོར་པས་ཆོས་གཞུགས་ཅན་གང་

དག་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ཕྱི་རོལ་གྱི་དོན་དུ་གཞན་དག་གིས་བདགས་པ་དེ་དག་

ལ་ཅི་འདི་དག་ནམ་པར་ཤེས་པ་ལས་གཞན་ཞིག་ཡིན་ནས། འོན་དེ་ནམ་པར་

ཤེས་པ་དེ་ཉིད་དེ་ལྟར་སྒྲུང་སྟེ། མི་<sup>3</sup>ལས་གྱི་གནས་སྐབས་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ནས་

1. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘ཅ’ ༡༥༤) 2. ལྟེ་མི་—བར་ 3. ལྟེ་དཔེ་ལྟར་ར་ན་—यथा स्वप्नावस्थया-

यामिति । तत्र विज्ञानाद बहिः परमाणुसो विचारयेत् = དཔེར་ན་མི་གས་ཀྱི་གནས་སྐབས་

བཞིན་ནོ། དེ་ལ་ནམ་པར་ཤེས་པ་ལས་ཕྱི་རོལ་བ་དྲུག་པ་དམ་པ་ལ་ནམ་པར་འདྲ་བར་བྱ།



ཞེས་དབྱང་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ནམ་པར་ཤེས་པ་ལས་ཕྱི་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་ཕྱར་བ་དུ་...  
གཤེགས་ཏེ། རྒྱལ་ཕྱར་བ་ནམས་ཀྱང་ཆ་ཤས་ཀྱིས་སོ་སོར་བརྟགས་ན་ནལ་འབྱོར་  
པས་དོན་དེ་དག་མི་མཐོང་ང་། །དེས་དེ་དག་མ་མཐོང་བས་འདྲི་རྒྱུ་དུ་འདྲི་  
དག་ཐམས་ཅད་ནི་སེམས་ཅམ་ཕྱི་ཕྱི་རྒྱལ་གྱི་དོན་མེད་དོ་རྒྱུ་དུ་སེམས་སོ། །  
འདྲི་ལྟར།

སེམས་ཅམ་ལ་ནི་རབ་བརྟན་ནས།

ཕྱི་རྒྱལ་དོན་ལ་མི་བརྟག་གོ། །ཞེས་དེ་སྐད་འབྱུང་བ་ནི་ཆོས་  
གཞུགས་ཅན་ལ་ནམ་པར་དོག་པ་སྤོང་བའོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཆོག་གོ།

དམིགས་སུ་བྱང་བའི་མཚན་ཉིད་དུ་གྱུར་པ་དེ་དག་<sup>1</sup>ནམ་པར་དབྱང་ན་མི་  
དམིགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་ཆོས་གཞུགས་ཅན་<sup>2</sup>ནམས་ནམ་པར་བཤེགས་ནས་  
གཞུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་ནམ་པར་བཤེགས་པར་བྱ་ཏེ། དེ་ལ་སེམས་ཅམ་གང་  
ཡིན་པ་དེ་ཡང་གཞུང་<sup>3</sup>པ་མེད་ན་འཛིན་པར་མི་བྱང་ཏེ། འཛིན་པ་ནི་གཞུང་བ་  
ལ་ལྟོས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་སེམས་ནི་གཞུང་བ་དང་འཛིན་པ་ལས་  
དཔེན་ཞིང་གཉིས་སུ་མེད་པ་ཁོ་ན་<sup>4</sup>ཡིན་པར་ནམ་པར་དབྱང་ནས་གཉིས་སུ་མེད་...  
པའི་མཚན་ཉིད།

དེ་བཞིན་ཉིད་ཀྱི་དམིགས་<sup>5</sup>གནས་ནས།

སེམས་ཅམ་ལས་ཀྱང་འདྲའ་བར་བྱ།

- 
1. ལྟ་བུ་—དག་ལ་ནམ་ 2. ལྟ་བུ་—ཅན་ནམ་པར་(ཅད་—ཅན་'ནམས་'ནམ་པར་)  
3. ལྟ་བུ་—གཞུང་ས་ 4. གྱུ་དཔེན་—अद्वयमेव चित्तानिमित्त = གཉིས་སུ་མེད་པ་ཁོ་ན་'སེམས་'ཀྱི་  
ཆད་མ་འཕམ་མཚན་ཉིད། 5. ལྟ་བུ་—དམིགས་ནས་(ཆད་—དམིགས་'གནས་'ནས་)



འཛིན་པའི་ནམ་པ་ལས་ཤིན་ཏུ་འདྲ་བར་བྱ་སྟེ། གཉིས་སྤྱང་བ་མེད་པ་<sup>1</sup>  
གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་ལ་གནས་པར་བྱ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ།

དེ་ལྟར་སེམས་ཅམ་ལས་<sup>2</sup>འདས་ནས་<sup>3</sup>གཉིས་སྤྱང་བ་མེད་པའི་ཤེས་<sup>4</sup>པ་...  
ལས་ཀྱང་འདྲ་བར་བྱ་སྟེ། བདག་དང་གཞན་ལས་དངོས་པོ་ནམས་སྤྱང་བ་མ་  
འཐད་པའི་ཕྱར་གཞུང་བ་དང་འཛིན་པ་བརྟུན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ལ། དེ་དག་ལས་  
དེ་ཡང་གཏུན་མེད་པའི་ཕྱར་དེ་ཡང་བདེན་པ་ཉིད་མ་ཡིན་པར་བདག་ས་ལ་གཉིས་  
མེད་པའི་ཤེས་པ་དེ་ལ་ཡང་དངོས་པོར་<sup>5</sup>མངོན་པར་ཞེན་པ་དར་བར་བྱ་སྟེ།  
གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྤྱང་བ་མེད་པའི་ཤེས་པ་ཁོ་ན་ལ་གནས་པར་བྱ་ཞེས་བྱ་...  
བའི་ཐ་ཚིག་གོ། དེ་ལྟར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ང་བོ་ཉིད་མེད་པར་དོགས་པ་ལ་  
གནས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་གནས་པས་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་མཚོག་<sup>6</sup>ལ་ཞུགས་  
བས་ནས་པར་མི་དོག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན་ནོ། །

དེ་ལྟར་ནལ་འབྱོར་པ་གང་གི་ཆོ་གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་སྤྱང་བ་མེད་པའི་  
ཤེས་པ་ལ་གནས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ། (7དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཀྱི་མཚོག་ལ་)གནས་  
པས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མཐོང་ངོ་། །དེ་ཁོ་ན་དམ་པ་མཐོང་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་  
ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱའོ། །དེ་ཁོ་ན་དམ་པ་མཐོང་བ་དེ་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤེས་  
རབ་ཀྱི་མིག་གིས་བདག་ས་དེ་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྤྱང་བ་ཤར་ན་(བདེན་པ་...

1. ལྷ་དཔེར་—ཐུགས་ཀྱི་འཕྲིན་ལྷ་མོ་གྲོལ་བ་ལྟར་ཤིན་ཏུ་འདྲ་བར་བྱ་སྟེ། 2. ལྷ་མོ་—ཙམ་ལ་  
3. ལྷ་དཔེར་—ཐུགས་ཀྱི་འཕྲིན་ལྷ་མོ་གྲོལ་བ་ལྟར་ཤིན་ཏུ་འདྲ་བར་བྱ་སྟེ། 4. ལྷ་དཔེར་—ཐུགས་ཀྱི་འཕྲིན་ལྷ་མོ་གྲོལ་བ་ལྟར་ཤིན་ཏུ་འདྲ་བར་བྱ་སྟེ།  
ཐུགས་ཀྱི་འཕྲིན་ལྷ་མོ་གྲོལ་བ་ལྟར་ཤིན་ཏུ་འདྲ་བར་བྱ་སྟེ། 5. ལྷ་མོ་—ཐོན་ཞེན་(ཆད་—ཐོན་  
'མངོན་པར་ཞེན') 6. ལྷ་མོ་—ཀྱི་ཆོས་ལ་ 7. ལྷ་མོ་—མཐོང་བའི་ཙམ་ལ་ཞེས་དང་།  
ལྷ་མོ་—མཐོང་བའི་དམ་པ་ཞེས་གསལ་ཡང་ལྷ་དཔེར་པར་མཐོང་བ་དེ་ཉིད་ཀྱི་མཚོག་ལ་གནས་  
པས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་མཐོང་བ་ལྟར་ཤིན་ཏུ་འདྲ་བར་བྱ་སྟེ།



མཐོང་བ་<sup>1)</sup>གང་ཡིན་པའོ། །དེ་སྐད་མདོ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་གསུངས་ཏེ། “དོན་དམ་པ་  
མཐོང་བ་གང་ཞིན། ཚེས་ཐམས་ཅད་མཐོང་བ་མེད་པ་གང་ཡིན་པའོ།” ཞེས་  
འབྱུང་ངོ་། །འདིར་དེ་ལྟ་བུའི་མཐོང་བ་མེད་པ་ལ་དགོངས་ཏེ། མི་མཐོང་བ་  
ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་བྱ། མིག་བཅུ་མས་བ་དང་། དཔྱུས་ངོ་ལ་སོགས་པ་ལྟ་བུ་  
ཀྱིན་མ་ཚང་བ་དང་། ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་མི་མཐོང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

དེ་བས་ན་དངོས་པོར་མངོན་པར་ཞེན་པ་ལ་སཤགས་<sup>3</sup>པ་ཕྱིན་ཅི་འོག་གི་བག་  
ཆགས་མ་སྤངས་པས་འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་ལ་སོགས་པ་……  
ལས་ལངས་པ་བཞིན་ཀྱང་སྤངས་པ་ལ་སོགས་པ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཅུ་བ་ཅན་……  
འདྲོད་ཆགས་ལ་སོགས་པ་ཉིན་མོངས་པའི་ཚེ་ཡང་འབྱུང་བའི་བྱིར་ནལ་འབྱེར་  
བ་མ་གྲོལ་བ་ཉིད་ཀྱང་འབྱུར་རོ། །འདྲོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི་ཅུ་བ་ནི་<sup>4</sup>དངོས་  
པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ་  
(སོགས་<sup>5</sup>)ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་ཏོ། །ནམ་པར་མི་དྲིག་པ་ལ་འཇུག་པའི་གཞུང་  
ལས།<sup>7</sup> “ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པས་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་མཚན་མ་སྤོང་ངོ་།”  
ཞེས་གསུངས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ན་མི་དམིགས་པ་……  
གང་ཡིན་པ་<sup>8</sup>དེ། དེར་ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པར་དགོངས་ཀྱིས། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་  
མེད་པ་ཅུ་མ་ནི་མ་ཡིན་དེ། འདྲ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་ལ་སོགས་

- 
1. བོད་སྐད་པའི་ཀར་ཅི་ཡང་མཐོང་བ་མེད་པ་ཞེས་གསལ་ཡང་། རྒྱ་དཔེར་‘सत्यदर्शनम्’ = བདེན་  
པ་མཐོང་བ་ཞེས་གསལ་པ་བཞིན་བཀོད་དོ། 2. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘པ’ ཚངས་པ་བྱུང་བར་སེམས་  
ཀྱིས་ཀྱས་པ། ༤༥ ) 3. ལྟ་བུ་—སོགས་བྱིན་ 4. ལྟ་བུ་—ནི་དངོན་པར་(ཆད་—ནི་དངོས་  
པོ་ལ་མངོན་པར་) 5. རྒྱ་དཔེར་—निर्दोषादौ = བཅུན་པ་སོགས། 6. ‘ཀྱང་’—རྒྱ་དཔེར་མད་  
7. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘པ’ ༣) 8. ལྟ་བུ་—བ་དེར་ཡིད་



པ་ལྟར་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ནས་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་  
ཡིད་ལ་བྱེད་པ་སྤངས་པ་ཙམ་གྱིས་སྤོང་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

ཐེ་ཚོམ་མ་སྤངས་པར་ནི་སྤོན་དམིགས་པའི་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་མངོན་  
པར་ཞེན་པའི་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤང་བར་མི་རུས་ཏེ། མེ་མ་སྤངས་པར་  
ཆ་བ་སྤང་དུ་མི་རུང་བ་བཞིན་ནོ། །འདི་ལྟར་གཞུགས་ལ་སོགས་པར་རྣམ་པར་  
རྟོག་པ་(1ཡོག་པ་)འདི་དག་ཆོར་མ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་སེམས་ལས་ལག་.....  
པས་དབྱང་ཞིང་བསལ་དུ་མི་རུང་སྟེ། (2ཅི་ཞེན་) ཐེ་ཚོམ་གྱིས་བོན་སྤང་དགོས་  
པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐེ་ཚོམ་གྱིས་བོན་དེ་ཡང་རྣལ་འབྱོར་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྤང་  
བ་བྱུང་སྟེ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་བརྟགས་ན་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་སྤང་  
དམིགས་པ་དམིགས་སུ་རུང་བའི་མཚན་ཉིད་དུ་གྱུར་བ་དེ་དག་མི་དམིགས་པའི་...  
ཕྱིར་ཐག་པ་ལ་3སྤྱལ་དུ་ཤེས་པ་བཞིན་དུ་སྤང་གི། །གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ། །  
དེའི་4ཆེ་ཐེ་ཚོམ་གྱིས་བོན་དང་བྲལ་བས་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་མཚན་མ་ཡིད་  
ལ་བྱེད་པ་སྤོང་རུས་པར་འགྱུར་ཏེ། །གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ཏེ།  
དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྤང་བ་མ་བྱུང་། །ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་མ་བརྟགས་ན་ཐུན་ཁུང་  
ན་འདུག་པའི་མི་ལྟར་བྱིས་གྱི་ནང་ན་ཡོད་པའི་བྱམ་པ་ལ་སོགས་པ་སོམ་ཉི་ཟ་.....  
བར་གྱུར་པ་བཞིན་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ་ཡང་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པར་སོམ་.....

- 
1. ཐེ་ཚོ་—པ་འདི་དག་ (ཆད་—རྟོག་པ་ལོག་པ་འདི་དག་) གྱི་དཔེར་ཡང་ 'मिथ्याकल्प = རྣམ་  
པར་རྟོག་པ་ལོག་པ་' ཞེས་གསལ། 2. གྱི་དཔེར་—किं तर्हि = ཅ་ཞེན་ 3. ལྟ་བུ་—པ་ལས་  
4. གྱི་དཔེར་—तथा = དེ་ལྟར་



ཉི་ཟླ་བ་ལྷོ་ག་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་མ་ལོ་ག་ན་མི་ག་<sup>1</sup>ར་བ་རིབ་ཀྱི་སྒྲིན་མ་བསལ་  
བ་བཞིན་དུ་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་མི་བདེན་<sup>2</sup>ལ། མངོན་པར་ཞེན་པ་འབྱུང་སྟེ་  
ཅིས་ཀྱང་མི་སྒྲིགས་སོ། །

དེ་ལྟར་བས་ན་དྲིང་ངེ་འཇིན་གྱི་ལག་གིས་སེམས་བརྒྱང་དེ་ཤིན་དུ་ཆ་སྤྱོད་བའི་  
ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་གྱིས་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལོ་ག་པར་<sup>3</sup>ན་མ་བར་རྟོག་པའི་  
ས་བོན་གྱི་<sup>4</sup>ཐུག་<sup>5</sup>ཏུ་སེམས་དེ་ལ་ཡོད་པ་བསལ་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་  
ཅ་བ་ནས་སྤྱང་བའི་ཤིང་དག་ས་ལས་མི་སྒྲིབ་བ་བཞིན་<sup>6</sup>ཏུ་ཅ་བ་མེད་པས་ན་ལོ་ག་  
པར་ན་མ་བར་རྟོག་པའི་སེམས་ཀྱང་སྒྲིབ་པ་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་སྒྲིབ་པ་  
སྤྱང་བའི་ཕྱིར་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱང་དུ་འབྱེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་  
བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། དེ་གཉིས་ནི་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ན་མ་  
བར་མི་རྟོག་པའི་རྒྱ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་<sup>8</sup>ཏུ།

ཚུལ་བྲིམས་ལ་ནི་གནས་ནས་དྲིང་ངེ་འཇིན་འཐོབ་སྟེ།

དྲིང་ངེ་འཇིན་ཐོབ་ནས་ཀྱང་ཤེས་རབ་སྒྲིམ་<sup>9</sup>པར་བྱེད།

ཤེས་རབ་ཀྱིས་<sup>10</sup>ནི་ཡེ་ཤེས་ན་མ་བར་དག་པ་ཐོབ།

ཡེ་ཤེས་ན་མ་བར་དག་པས་ཚུལ་བྲིམས་སྤུན་སྤུམ་ཚོགས།

ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །

འདི་ལྟར་གང་གི་ཚོ་ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ་སེམས་བདེན་པར་བྱས་

- 
1. 'མེག་'—ཐུ་དཔེ་ར་མེད། 2. ཐུ་དཔེ་ར་—अयुक्तोऽलीकरूपादय = མི་བདེན་ཅིང་བརྟན་པའི་  
གཞུགས་ལ་སོགས་པ། 3. ཐུ་པེ་—པར་རྟོག་པའི་ 4. ཐུ་པེ་—གྲིས་  
5. 'ཐུག་ཏུ་'—ཐུ་དཔེ་ར་མེད་ 6. ཐུ་པེ་—བཞིན་ཅ་ 7. ཐུ་པེ་—སྤངས་ 8. ཐུ་པེ་—བཀའ་(དཔེ་ན་  
པུ་ལྷན་—ཆ་ལོ་སྤྱང་གི་ཡེ་ཏུ་—༡༩༩) 9. ཐུ་པེ་—བསྒྲིམ་ 10. ཐུ་པེ་—ཀྱི་



བ་དེའི་ཚེ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་རབ་དུ་བདགས་ན་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུང་བ་.....  
 འབྱུང་མེ། དེའི་ཚེ་སྒྲུང་བ་འབྱུང་བས་ཐུན་པ་བསམ་པ་བཞིན་དུ་སྒྲིབ་པ་དབྱུང་<sup>1</sup>  
 རོ། །དེ་གཉིས་ཀ་ཡང་མིག་དང་སྒྲུང་བ་བཞིན་དུ་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་  
 བ་ལ་ཕན་ཚུན་མཐུན་པར་གནས་པ་ཡིན་གྱི། སྒྲུང་བ་དང་ཐུན་པ་བཞིན་དུ་མི་  
 མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དྲིང་ངེ་འཛིན་ནི་ཐུན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་དེ། ཅི་ཞེ་ན།  
 སེམས་ཚུ་གཅིག་པའི་མཚན་ཉིད་དོ། །དེ་ནི་མཉམ་པར་བཞག་ན་ཡང་དག་པ་ཇི་  
 ལྟ་བ་བཞིན་དུ་<sup>2</sup>རབ་དུ་ཤེས་སོ། །ཞེས་བཀའ་སྩལ་བའི་ཕྱིར་དེ་ཤེས་རབ་དང་  
 ཤིན་དུ་མཐུན་པ་ཡིན་གྱི། མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བས་<sup>3</sup>ན་མཉམ་པར་  
 བཞག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་དམིགས་པ་གང་ཡིན་....  
 བ་དེ་ཉིད་<sup>4</sup>མི་དམིགས་པའི་དམ་པའོ། །ནལ་འབྱུང་བ་ནམས་ཀྱི་<sup>5</sup>གནས་  
 སྐབས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དེ་འདྲ་བ་དེ་ནི་ལྟན་གྱིས་གྲུབ་པ་ཡིན་དེ། དེའི་པ་རེ་ལ་དུ་  
 བལྟ་བར་བྱ་བ་གཞན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཞི་བ་ནི་ཡོད་པ་དང་མེད་པ་ལ་སོགས་  
 བ་ནམ་པར་དོག་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་ཞི་བའི་ཕྱིར་རོ། །

འདི་ལྟར་གང་གི་ཆོ་ནལ་འབྱུང་བས་ཤེས་རབ་ཀྱིས་བདགས་ན་དངོས་པོ་འི་  
 ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡང་མི་དམིགས་པ་དེའི་ཚེ་དེ་ལ་དངོས་པོར་ཆོས་པར་དོག་པ་མི་...  
 འབྱུང་བ་ཉིད་དོ། །དངོས་པོ་མེད་པ་ནམ་པར་དོག་པ་ཡང་དེ་ལ་མེད་པ་ཉིད་དོ། །

1. ལྟ་དཔེ་ར་—འབརྟུག་མུ་འཕྱུག་པེ་ཞེས་མཇུག་སྒྲིབ་པ་འབྱུང་རོ། ། ཞེས་གསལ་  
 ཡང་བོད་པའི་ཐུན་པ་བཞི་ཀའི་ནང་ལྟ་བ་པ་འབྱུང་རོ། ། ཞེས་པ་ཀོད་ཡོད་པ་དེ་ནི་གཞུང་གི་  
 བཙུན་དོན་དང་འགལ་བས་མི་འཐད་དོ། 2. ལྟ་བེ་—དུ་ཤེས་ 3. ལྟ་བེ་—བས་མཉམ་  
 (ཆད་—བས་ན་མཉམ་) 4. ལྟ་བེ་—ཉིད་དམིགས་(ཆད་སྒྲིབ་—ཉིད་མེ་དམིགས་)  
 5. ལྟ་ཆོ་—ཀྱི་ཞེ་གནས་སྐབས་ཞེས་གསལ་ཡང་ཞེ་གནས་ཞེས་པ་ལྟ་དཔེ་ར་མེད་  
 6. ལྟ་བེ་—བོ་ནམ་ 7. ལྟ་བེ་—ཉིད་དེ་



གཤམ་ཏེ་བརྒྱུ་ལ་དངོས་པོ་འགའ་ཞིག་མཐོང་བར་གྱུར་ན་ནི་དེ་ལྟ་ན་ནི་བཀའ་བས་  
 དངོས་པོ་མེད་པར་ནམ་པར་རྟོག་པ་འབྱུང་ངོ་། །ཁང་གི་ཆོ་ནལ་འབྱུར་བས་  
 ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་གིས་བརྟགས་ན་དུས་གསུམ་དུ་ཡང་དངོས་པོ་མི་དམིགས་པ་...  
 དེའི་ཆོ་ཅི་ཞིག་བཀའ་བས་དངོས་པོ་མེད་པར་ནམ་པར་རྟོག་པར་བྱེད། དེ་བཞིན་  
 དུ་ནམ་པར་རྟོག་པ་བཞུགས་དག་ཀྱང་དེའི་ཆོ་དེ་ལ་མི་འབྱུང་བ་ཉིད་དེ། ཡོད་པ་  
 དང་མེད་པ་ནམ་པར་རྟོག་པ་བཞུགས་ཀྱིས་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྱབ་པའི་  
 ཕྱིར་དེ། ཁྱབ་པར་བྱེད་པ་མེད་པས་ཁྱབ་པར་བྱ་བ་ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་དོ། །  
 དེ་ནི་ནམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ནལ་འབྱུར་དམ་པ་ཡིན་དེ། དེ་ལ་གནས་པའི་ནལ་  
 འབྱུར་བ་ནི་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ལྱུང་བས། ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པ་<sup>1</sup>  
 དང་ཤེས་བྱའི་སྒྲིབ་པ་ཡང་དག་པར་སྤོང་ངོ་། །འདི་ལྟར་ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་  
 པ་ནི་མ་སྒྲིབ་པ་དང་མ་འགགས་པའི་དངོས་པོ་ནམས་ལ་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པར་  
 ཕྱིན་ཅི་ཡོག་པའི་ཙ་བ་སྟེ་རྒྱ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་འཕགས་པ་བདེན་པ་བཞུགས་བསྟན་པ་  
 ལ་སོགས་པ་ལས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །

ནལ་འབྱུར་གོམས་པ་འདིས་དངོས་པོ་ལ་སོགས་པ་ནམ་པར་རྟོག་པ་ཐམས་  
 ཅད་སྤངས་པའི་ཕྱིར་དངོས་<sup>2</sup>པོ་ལ་སོགས་པར་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་པ་མ་རིག་པའི་ངོ་...  
 བོ་ཉིད་ཉོན་མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་སྤོང་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཙ་བ་བཅད་པས་ཉོན་  
 མོངས་པའི་སྒྲིབ་པའི་ཙ་བ་<sup>3</sup>ཡང་དག་པར་སྤོང་ངོ་། །ཇི་སྐད་དུ་ཡང་འཕགས་  
 པ་བདེན་པ་བཞུགས་བསྟན་པ་ལས་<sup>4</sup>གསུངས་དེ། “འཇམ་དབལ་ཇི་ལྟར་ཉོན་

1. ལྟ་བུ་—བཞུགས་པའི་(ཆད་—བཞུགས་པའི་ཕྱིར་སྒྲིབ་པ་ཡང་དག་) 2. ལྟ་བུ་—མཁའ་མཁའ་=  
 དངོས་པོ་མཐུན་པའི་ 3. ‘ཙ་བ་’—ལྟ་བུ་ལྟར་མེད་ 4. ལྟ་བུ་—བཀའ་(མདོ་—‘མ་’ 2r3)



མོངས་པ་ནམས་འདུལ་བར་འགྱུར། ཇི་ལྟར་ཉོན་མོངས་པ་ནམས་ཡོངས་སུ་ཤེས་  
 པ་ཡིན། འཇམ་དབལ་གྱིས་སྦྱས་པ། དོན་དམ་པར་ཤིན་དུ་མ་སྦྱིས་པ་དང་།  
 མ་བྱུང་བ་དང་། དངོས་པོ་མེད་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡང་དག་  
 པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གོ། །ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་དེ་ལས་  
 ཀུན་དུ་རྟོག་པ་དང་། རྣམ་པར་རྟོག་པའོ། །ཀུན་དུ་རྟོག་པ་དང་། རྣམ་པར་  
 རྟོག་པ་དེ་ལས་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པ་<sup>1</sup>ཉིད་ཡིད་ལ་བྱེད་པའོ། །ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་  
 པ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་དེ་ལས་བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པའོ། །བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པ་  
 དེ་ལས་ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་ལྟང་ལོ། །ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་ལྟང་བ་དེ་ལས་ཉོན་མོངས་པ་  
 རྣམས་འབྱུང་ངོ། །ལྟའི་བྱ་དོན་དམ་པར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་དུ་མ་སྦྱིས་པ་དང་།  
 མ་བྱུང་བ་དང་། དངོས་པོ་མེད་པར་རབ་དུ་ཤེས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་དོན་དམ་  
 པར་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པའོ། །གང་དོན་དམ་པར་ཕྱིན་ཅི་མ་ལོག་པ་དེ་མི་རྟོག་།  
 རྣམ་པར་མི་རྟོག་གོ། གང་མི་<sup>2</sup>རྟོག་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་དེ་ཚུལ་བཞིན་ལ་  
 བཞུགས་<sup>3</sup>པའོ། །གང་ཚུལ་བཞིན་ལ་ཞུགས་པ་དེ་བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པར་  
 མི་འགྱུར་རོ། །གང་བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པར་མི་འགྱུར་བ་དེ་ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་  
 ལྟང་བར་མི་འགྱུར་ཏེ། དོན་དམ་པར་བྱ་ངན་ལས་འདས་པར་ལྟ་བའི་བར་  
 གྱི་ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་ལྟང་<sup>4</sup>པ་ཡང་<sup>5</sup>འབྱུང་བར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་སྦྱི་བ་མེད་  
 པར་གནས་པ་དེའི་ཉོན་མོངས་པ་རྣམས་ཤིན་དུ་བྱུལ་བར་བལྟ་<sup>6</sup>བར་བྱ་སྟེ། དེ་ནི་

1. ལྟ་བུ་—པ་ཡིད་ 2. 'མི་རྟོག་'—ཕྱི་དཔེར་མེད་ 3. ལྟ་བུ་—ཞུགས་ 4. ལྟ་བུ་—(ལྟ་བུ་—ལྟང་  
 'བའི་བར་གྱི་ཀུན་ནས་ལྟང་བ་') 5. ཕྱི་དཔེར་—མཐོང་ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་ = ལྟ་བུ་ཀུན་ནས་ལྟང་བ་  
 ཐམས་ཅད་ 6. ལྟ་བུ་—ལྟ་བ་



ཉོན་མོངས་པ་འདུལ་བ་ཞེས་བྱའོ། །ལྷའི་བྱ་གང་གི་ཆེ་ཉོན་མོངས་པ་ནམས་  
 རྣམ་པ་མེད་པའི་ཡེ་<sup>1</sup>ཤེས་ཀྱིས་དོན་དམ་པར་ཤིན་དུ་སྤྱོད་པ་དང་། །ཤིན་དུ་  
 མཚན་མ་མེད་པ་དང་། ཤིན་དུ་དངོས་པོ་མེད་པ་རབ་དུ་ཤེས་པ་དེའི་ཆེ་ལྷའི་བྱ་  
 ཉོན་མོངས་པ་ནམས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ལྷའི་བྱ་འདི་ལྟ་སྟེ། དཔེར་ན་  
 གང་སྐྱུལ་གདུག་པའི་རིགས་རབ་དུ་ཤེས་པ་དེས་སྐྱུལ་གདུག་པ་དེའི་དུག་ཞི་བར་  
 བྱེད་དོ། །ལྷའི་བྱ་དེ་བཞིན་དུ་ཉོན་མོངས་པ་ནམས་ཀྱི་རིགས་རབ་དུ་ཤེས་པ་དེའི་  
 ཉོན་མོངས་པ་ནམས་རབ་དུ་ཞི་བར་འགྱུར་རོ། །ལྷས་བྱས་སྦྱས་པ། འཇམ་  
 དཔལ་ཉོན་མོངས་པར་<sup>2</sup>གྱུར་པ་ནམས་ཀྱི་རིགས་<sup>3</sup>གང་། འཇམ་དཔལ་གྱིས་  
 སྦྱས་པ། ལྷའི་<sup>4</sup>བྱ་དོན་དམ་པར་ཤིན་དུ་མ་སྦྱོས་པ་དང་། མ་བྱུང་བ་དང་།  
 དངོས་པོ་མེད་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ཀྱན་དུ་དོག་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཉོན་མོངས་  
 པ་ནམས་ཀྱི་རིགས་ཡིན་ནོ།” ཞེས་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་།

དངོས་པོ་ལ་སོགས་པར་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་པས་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་པ་མཐའ་དག་ལ་  
 ཁུབ་པའི་ཕྱིར། དེ་སྤངས་ན་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་ཐམས་ཅད་སྤོང་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་  
 ཤེས་བྱའི་སྦྱིབ་པ་ཡང་འདིས་ཡང་དག་པར་སྤོང་བར་འགྱུར་དེ། སྦྱིབ་པ་ནི་  
 ཕྱིན་ཅི་ཡོག་གི་མཚན་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཤེས་བྱའི་སྦྱིབ་པ་སྤངས་ན་གོཏ་  
 མེད་པའི་ཕྱིར་ཉི་མའི་འོད་སྤྲིན་(ཉལ་སོགས་པའི་སྦྱིབ་པ་) དང་བུལ་བའི་ནམ་.....  
 མཁའ་ལ་ཐམས་ཅད་དུ་ཐོགས་པ་མེད་པར་རྣང་བ་བཞིན་དུ་(ཆེ་ལྷའི་འབྱོར་མཛོན་...  
 སྦྱས་བྱི་) ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྣང་བ་འབྱུང་ངོ། །འདི་ལྟར་ནམ་པར་ཤེས་པ་ནི་དངོས་

1. ལྷ་མེ་—ཤེས་རབ་ 2. ལྷ་མེ་—བ་བྱུར་ 3. ལྷ་མེ་—རྟེན་འཇམ (ཆད་—རིགས་‘གང་’ འཇམ་དཔལ་)  
 4. ‘ལྷའི་བྱ་’—ལྷ་དཔེར་མེད། 5. ལྷ་དཔེར་—ཤེས་པ་ལྟ་བུ་འཇམ་པའི་སྦྱིབ་པ་  
 6. ལྷ་དཔེར་—ཡོག་གི་འཇམ་པའི་སྦྱིབ་པ་ = ལྷ་ལྟ་བུ་འཇམ་པའི་སྦྱིབ་པ་



བོ་འི་ང་བོ་ཉིད་རྟོགས་པ་ཡིན་ན། དེ་ཡང་དངོས་པོ་ཉི་པར་གནས་སུ་ཟླ་  
 ཀྱང་གོགས་ཡོད་པས་གསལ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །གོགས་མེད་པར་གྱུར་ན་ནི་  
 མཐུན་ཁྱད་པར་བསམ་གྱིས་མི་ཁུབ་པ་ཐོབ་པས་ཅིའི་ཕྱིར་དངོས་པོ་མཐུན་དག་...  
 རི་ལྟ་བུ་བཞུགས་ཏུ་གསལ་བར་མི་འགྱུར། དེ་བས་ན་ཀུན་རྫོབ་<sup>1</sup>དང་རོན་དམ་  
 བའི་ཚུལ་གྱིས་དངོས་པོ་མཐུན་དག་རི་ལྟ་བུ་བཞུགས་ཏུ་ཤེས་པས་ཐམས་ཅད་མཁྱེན་  
 པ་ཉིད་ཐོབ་བོ། །དེའི་ཕྱིར་འདི་ཉིད་སྒྲིབ་པ་སྤྱོད་<sup>2</sup>པ་དང་། ཐམས་ཅད་མཁྱེན་  
 པ་ཉིད་ཐོབ་པར་འགྱུར་བའི་ལམ་<sup>3</sup>ཀྱི་མཆོག་ཡིན་ནོ།

ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་པའི་ལམ་གང་ཡིན་པ་དེས་ནི་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་ཐམས་<sup>4</sup>ཅད་  
 སྤྱོད་བར་མི་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་སྒྲིབ་པ་གཉིས་ལོགས་པར་མི་<sup>5</sup>སྤྱོད་སོ། །དེ་  
 སྐད་འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་<sup>6</sup>ཀྱང་བཀའ་སྣུལ་ཏེ། “གཞན་  
 དག་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྒྱུན་ལ་རག་ལས་པར་མཐོང་ནས་བྱ་ངན་ལས་<sup>(7)</sup>མ་འདས་  
 བར་ཡང་བྱ་ངན་ལས་) འདས་པའི་སྒྲོར་འགྱུར་ཏེ། ཆོས་ལ་བདག་མེད་པར་  
 མཐོང་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་སྒྲོ་གྲོས་ཆེན་པོ། དེ་དག་ལ་ཐར་པ་མེད་དོ། །སྒོ་གྲོས་  
 ཆེན་པོ་ཉན་ཐོས་ཀྱི་ཐེག་པ་མངོན་པར་རྟོགས་པའི་རིགས་ཅན་ནི་ངེས་པར་འབྱུང་...  
 བ་ས་ཡིན་པ་ལ་ངེས་པར་འབྱུང་བའི་སྒྲོར་འགྱུར་ཏེ། སྒོ་གྲོས་ཆེན་པོ་འདི་ལ་  
 ལྟ་བུ་ངན་པ་ལས་བསྒྲོག་པའི་ཕྱིར་བཙོན་པར་བྱའོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ། །དེ་  
 ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ལམ་གཞན་གྱིས་ཐར་བར་འགྱུར་བ་མེད་པས་ཐེག་པ་གཅིག་ཁོ་ནར་...

1. ལྟ་བུ་—ཀུན་རྫོབ་པ་དང་ 2. ལྟ་བུ་—སྤྱོད་པ་ 3. ལྟ་བུ་—ལམ་མཆོག་(ཆད་—ལམ་‘ཀྱི་  
 མཆོག་) 4. ‘ཐམས་ཅད་’—བྱ་དཔེ་མེད་ 5. ལྟ་བུ་—མ་སྤྱོད་ 6. ལྟ་བུ་—བཀའ་(མདོ་‘ཅ’ ༢༠)  
 7. བྱ་དཔེ་—अनिर्वाणोऽपि निर्वाणम् इति बुद्ध्यो = བྱ་ངན་ལས་མ་འདས་པར་ཡང་བྱ་ངན་ལས་  
 འདས་པའི་སྒྲོར་



ཞེས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱད་དོ།

ཉན་ཐོས་ལ་སོགས་བའི་ལས་བསྟན་པ་ལས་ནི་གཞུག་པ་<sup>1</sup>ལ་ལྷེས་པོར་.....  
 དགོངས་ནས་ཁྱེད་ཀྱི་ཁྱེད་དབྱེད་པ་བཞིན་དུ་བསྟན་པར་ཟད་དོ། །འདི་ལྟར་འདི་  
 དག་ནི་ཐུང་བོ་ལ་སོགས་<sup>2</sup>པའི་ཆོས་ཅམ་དུ་ཟད་དོ། (4བདག་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་)  
 བསྐྱེད་པའི་ནས་ཉན་ཐོས་གང་ཟག་བདག་མེད་པ་ལ་འཇུག་གོ། །ཁམས་གསུམ་  
 རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཅམ་དུ་བསྐྱེད་པས་རྣམ་པར་ཤེས་པར་སྦྱོར་བའི་སྤྱི་རྒྱུ་གྱི་.....  
 དན་བདག་མེད་པ་ལ་འཇུག་གོ། །ཚུལ་འདྲིས་ནི་གཉིས་<sup>3</sup>སྤྱི་མེད་པའི་ཤེས་པ་  
 དེ་ཡང་བདག་མེད་པ་ཉིད་དུ་འཇུག་པས་བདག་མེད་པ་ཉིད་མཆོག་ལ་ཞུགས་པ་..  
 ཡིན་ནོ། །རྣམ་པར་རྒྱལ་པ་ཅམ་ལ་འཇུག་པ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ལ་འཇུག་པ་མ་ཡིན་དེ།  
 སྤྱར་བཤད་པ་བཞིན་ནོ། །འཕགས་པ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ལུང་ལས་<sup>4</sup>  
 ཀྱང་གསུངས་དེ། “ཀྱི་རྒྱལ་བའི་སྤྱི་མེད་ལ་འཕགས་པ་སྤྱི་མེད་ན་སེམས་  
 ཅམ་དུ་རྟོགས་དེ། སེམས་དེ་ཡང་མཐའ་དང་དབྱུངས་མེད་པར་རྟོགས་སོ།” །  
 ཞེས་འབྱུང་ལྟར། སྤྱི་བ་དང་འཇིག་པའི་མཆོན་ཉིད་མཐའ་གཉིས་དང་། གནས་  
 པའི་མཆོན་ཉིད་དབྱུངས་མེད་པའི་སྤྱི་མེད་མཐའ་དང་དབྱུངས་མེད་དོ། །དེ་ལྟ་  
 བས་ན་གཉིས་མེད་པའི་ཤེས་པ་ལ་ཞུགས་<sup>5</sup>པ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ལ་ཞུགས་པ་ཉིད་ཡིན་ནོ།  
 རྣམ་འབྱུང་པ་རྣམས་ཀྱི་གནས་སྐབས་དེ་ཅིས་རྣམ་པར་དག་ཅེ་ན། “སྤྱི་ན་

1. ལྷ་པོ་—ལ་ལ་ལ་ 2. ‘ཁྱེད་ཀྱི་ཁྱེད་’—ཀྱི་དཔེར་མེད་ 3. ‘སོགས་པའི་ཆོས་’—ཀྱི་དཔེར་མེད་
4. ཀྱི་དཔེར་—“न तु आत्म अस्ति इति भावयन् = བདག་ནི་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བསྐྱེད་པའི་ནས་” ཞེས་
- དགོས་མེད་ཀྱང་པོད་དཔེར་...བདག་མེད་པར་བསྐྱེད་པས་ཞེས་ཞུགས་པ་གོ།
5. ལྷ་པོ་—གཉིས་མེད་པའི་ 6. ལྷ་པོ་—བཀའ་(མཁའ་ཆེན་—ག་ལྟ་—༤༤ ཤོག་—702)
7. ལྷ་པོ་—ཞུགས་པས་དེ་



ལམ་དག་གིས་ནམ་པར་སྤངས།” །ཞེས་གསུངས་ཏེ། སྤྱིང་ཇི་ཆེན་བོས་སེམས་  
 ཅན་མཐའ་དག་གི་དོན་(1ཤ་བའི་ཕྱིར་) ཤང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྒྲོན་ལམ་བདུབ་  
 བ་གང་ཡིན་པའི་སྒྲོན་ལམ་དེའི་སྒྲོབས་ཀྱིས་ཕྱི་ཕྱིར་ཞིང་སྒྲིན་བ་ལ་སོགས་བ་……  
 དག་བ་ལ་གོམས་པར་བྱས་པས་གནས་2སྐབས་དེ་དེ་ལྟར་ཡོངས་སུ་དག་པར་……  
 འགྱུར་ཏེ། དེས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཏུ་ཤེས་ཀྱང་སེམས་  
 ཅན་མཐའ་དག་(3གི་བཞུས་པ་མ་བཞུག་གི་བར་) འཁོར་བའི་ཉེས་བ་ནམས་……  
 ཀྱིས་མི་གོས་པར་འཁོར་བ་ཇི་སྤྱིད་པར་གནས་བ་ཡིན་ནོ།

ཇི་4ལྟར་སྒྲོན་གྱིས་གྲུབ་ཅིང་ཞི་བ་ཡིན་ཞེ་ན།

ཡོ་ཤེས་དམ་པ་བདག་མེད་པར། ।

སྤང་བ་མེད་པས་མཐོང་བར་འགྱུར། །ཞེས་འདྲིར་5རྒྱ་བཀའ་  
 སྤུལ་དོ། །འདི་ལྟར་ནང་6གི་ཤེས་བྱ་སྤྱོད་བ་ནམས་ཀྱི་7གཉིས་མེད་པའི་མཆན་ཉིད་  
 ཀྱི་ཤེས་བ་དམ་པ་མཆོག་ཡིན་པར་འདྲོད་བ་གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་བདག་མེད་དོ། །  
 ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ནལ་འབྱོར་པས་གཉིས་མེད་པར་སྤང་བ་མེད་པའི་ཡོ་ཤེས་……  
 ཀྱིས་མཐོང་ངོ་། །དེ་པན་ཆད་བཟླ་8བར་བྱ་བ་མེད་པས་ན་སྒྲོན་གྱིས་གྲུབ་པའོ། །  
 ནམ་པར་དོག་པ་སྤྱོད་ཆོགས་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བས་ཞི་བའོ།

གཤམ་ཏེ་ཇི་སྤྱིད་དེའི་ཆོག་དང་དེ་ལྟར་མཐོང་བའི་ནམ་འབྱོར་པ་དེ་སུ་ཡིད་ཅེ་ན།

1. ལྟ་དཔེར་—‘सर्वसत्त्वार्थकरणाय = གེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་བའི་བྱེད་’ ཞེས་གསལ་  
 ཡང་། བོད་དཔེར་—‘དོན་ལ་ལྟ་བར་’ ཞེས་གསལ། 2. ‘གནས་སྐབས་’—ལྟ་དཔེར་མེད་
3. ལྟ་དཔེར་—‘सकलसत्त्वापेक्षा न व्यावर्तते यावत् = གེམས་ཅན་མཐའ་དག་གི་བཞུས་པ་མ་བཞུག་  
 གི་བར་’ ཞེས་གསལ་ཡང་། བོད་དཔེར་‘མཐའ་དག་ལྟ་བ་གོ་བཞུག་ཅིང་’ ཞེས་གསལ།
4. ལྟ་དཔེར་—‘ཉིད་ལྟར་’ 5. ལྟ་དཔེར་—‘འདྲིར་བཀའ་’ 6. ལྟ་དཔེར་—‘अद्वयवादिनां = གཉིས་མེད་  
 བར་སྤྱོད་བ་ནམས་’ 7. ལྟ་དཔེར་—‘ཉེས་’ 8. ལྟ་དཔེར་—‘ལྟ་བར་’ 9. ‘ལྟ་ཆོགས་’—ལྟ་དཔེར་མེད་



བདེན་<sup>1</sup>དེ། དོན་དམ་པར་ན་བདག་ལ་སོགས་པ་རང་དབང་ཡོད་པའི་ནལ་འབྱོར་  
 བ་གང་ཡང་མེད་དོ། །མཐོང་བ་ཅི་ཡང་མེད་དོ། །དེ་ལྟ་མེད་ཀྱི་ཀུན་རྫོབ་དུ་རྩི་  
 ལྟར་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ཡུལ་གྱི་ནམ་<sup>2</sup>པའི་ཤེས་པ་འབྱུང་བ་ཙམ་གྱིས་ནམ་...  
 བར་ཤེས་པ་ཉིད་ལ་དེ་ལྟ་དེ་ལྟར་འཇིག་རྟེན་ན་ལྟ་སྤྱོད་ནམ་མཆོད་སྤྱོད་གྱི་ཤེས་...  
 བས་མཐོང་ངོ་ཞེས་པ་སྤྲད་འདོགས་དེ། བདག་ལ་སོགས་པ་ནི་གང་ཡང་མེད་  
 དོ། །དེ་བཞིན་དུ་འདིར་ཡང་གཉིས་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་སྤང་བ་མེད་པའི་ཤེས་<sup>3</sup>  
 བ་ཁོ་ན་འབྱུང་བ་ན།<sup>4</sup> སྤང་བ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་མཐོང་ངོ་ཞེས་དེ་ལྟར་མང་  
 འདོགས་སོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་མེད་ཀྱི། ཀུན་  
 རྫོབ་དུ་ནལ་འབྱོར་བའི་ཤེས་པ་འཇམ། སོ་སོ་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཤེས་པ་གཞན་ཡང་  
 རྩེད་སྟེ། མི་འདོད་པ་མ་ཡིན་ནོ། །ད་སྐད་<sup>5</sup>དུ་འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་  
 བསྟན་པ་ལས་<sup>6</sup>བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “དོན་<sup>7</sup>དམ་པར་ཤིན་དུ་དངོས་བོ་མེད་ཀྱང་  
 ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡང་ལམ་སྒྲོས་བར་བྱེད་དོ།” ཞེས་<sup>8</sup>བཤད་པ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་ངོ་།

དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་ཉན་ཐོས་དང་། རང་སངས་རྒྱས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་དང་། སངས་<sup>9</sup>རྒྱས་དང་། སོ་སོ་འཇིག་རྟེན་གྱི་སོགས་པའི་བྱེད་<sup>10</sup>བྱུག་  
 ཀྱང་ཅིས་དབྱེ། འདི་ལྟར་གང་ལ་ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡང་རྒྱ་མེད་པ་དེ་ནི་ཀུན་རྫོབ་དུ་  
 ཡང་མི་སྤྱེ་སྟེ། དེ་བོང་གི་རྩ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །གང་ལ་རྒྱ་<sup>11</sup>ཡོད་པ་  
 དེ་དོན་དམ་པར་བརྟན་པ་ཡིན་ཀྱང་སྤྱེ་བ་ཁོ་ན་སྟེ། སྤྱེ་མ་དང་། གཞུགས་

1. ‘བདེན་དེ’—ཐུ་དཔེར་མེད་ 2. ལྟ་ཅི་ལྟ་—བར་ཤིས་ 3. ‘ཤེས་པ’—ཐུ་དཔེར་མེད་

4. ལྟ་ཅི་—ནམ་ 5. ལྟ་པེ—དེ་སྐད་འཕགས་ 6. ལྟ་—བཀའ་ (མདོ་—མ་ 2r)

7. ལྟ་པེ—དེ་དོན་ 8. ‘ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་’—ཐུ་དཔེར་མེད་ 9. ‘སངས་རྒྱས་དང་’—ཐུ་

དཔེར་མེད་ 10. ཐུ་དཔེར་—ཡུལ་སྤྱུལ་= རྩེད་པའི་གཞུག་ 11. ‘རྒྱ’—ཐུ་དཔེར་མེད་



བརྟན་དང་། བྲག་<sup>1</sup>ཅ་ལ་སོགས་པ་བཞིན་ནོ། །སྐྱུ་མ་ལ་སོགས་པ་ཀུན་རྒྱུ་  
 ཏུ་དེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྲུང་བ་ཡིན་ཡང་དེ་དག་བདག་མི་བཟོད་བས་དེན་དམ་  
 བར་དངོས་པོ་ཡོད་པ་ཉིད་ཏུ་མི་འབྱུང་རོ། །དེ་བས་ན་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་སྐྱུ་  
 མ་ལྟ་བུ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ལ་འདི་ལྟར་ཉོན་མོངས་པ་དང་ལས་སྐྱུ་  
 མའི་དབང་གིས་སེམས་ཅན་གྱི་སྐྱེ་བ་སྐྱུ་མ་འབྱུང་ངོ་། །དེ་བཞིན་ཏུ་ནལ་འབྱོར་  
 པ་ནམས་ཀྱི་<sup>2</sup>ཐོས་དུང་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་སྐྱུ་མའི་དབང་གིས་ནལ་འབྱོར་  
 པའི་ཡེ་ཤེས་སྐྱུ་མ་འབྱུང་བ་ཉིད་དོ། །དེ་སྐད་ཏུ། འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་  
 བ་རེལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “རབ་<sup>4</sup>འབྱོར་འདི་ལྟར་ཆོས་  
 ཐམས་ཅད་ནི་སྐྱུ་པ་ཡིན་དེ། ལ་ལ་ནི་ཉོན་ཐོས་ཀྱི་སྐྱུ་པ་ལོ། །ལ་ལ་ནི་རང་  
 སངས་བྱས་ཀྱི་སྐྱུ་པ་ལོ། །ལ་ལ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་པའི་སྐྱུ་པ་ལོ། །ལ་ལ་  
 ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱུ་པ་ལོ། །ལ་ལ་ནི་ཉོན་མོངས་པའི་སྐྱུ་པ་ལོ། །  
 ལ་ལ་ནི་ལས་ཀྱི་སྐྱུ་པ་ལོ། །རབ་འབྱོར་ནམ་གངས་འདིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་  
 སྐྱུ་པ་ལྟ་བུ་ལོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

ནལ་འབྱོར་པ་ནམས་དང་སོ་སོ་ལྟེ་བོ་ནམས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་ནི་འདི་ཡིན་དེ།  
 དེ་དག་ནི་སྐྱུ་མ་མཁན་བཞིན་ཏུ་སྐྱུ་མ་དེ་རི་ལྟ་བུ་བཞིན་ཏུ་ཡོངས་སུ་ཤེས་བས་……  
 བདེན་པ་ཉིད་མངོན་པར་ཞེན་པ་མེད་དོ། །དེ་ལས་ན་དེ་དག་ནལ་འབྱོར་པ་ཞེས་  
 བྱའོ། །གང་དག་གིས་<sup>6</sup>པ་ལྟ་དམོ་བ་བཞིན་ཏུ་དེ་ལ་བདེན་པ་ཉིད་མངོན་པར་  
 ཞེན་པ་དེ་དག་ནི་ཕྱིན་ཅི་ལོག་ཏུ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཕྱིར་བྱིས་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ།

1. ‘བྲག་ཅ’—ཁྱུ་དཔེར་མེད་ 2. ལྟ་བུ་—ཀྱས་ 3. ཚོས་ཞེས་ངེས་ཉིད་མ་བྱུང་ག།

4. ‘རབ་འབྱོར་’—ཁྱུ་དཔེར་མེད་ 5. ལྟ་བུ་—དེས་ན་ 6. ཁྱུ་དཔེར་—ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་འཕྲུག་པ་

कौतूहलं = ཕྱིས་པ་སོ་སོ་ལྟེ་བོ་བཞིན་ཉིད་མོ་ལ་



དེ་དག་ཐམས་ཅད་འགལ་བ་མེད་དོ། །དེ་སྐད་ཀྱི་འཕགས་བ་ཚོས་ཡང་དག་<sup>2</sup>

བར་སྤྱད་བ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ།

དཔེར་ན་སྤྱི་མཐོང་མཁན་པོ་ཞིག །

སྤྱི་ལ་བ་ཐར་བར་བྱ་བྱིར་བཅོམ། །

དེས་ནི་སྤྱར་ནས་དེ་ཤེས་བས། །

སྤྱི་ལ་བ་དེ་ལ་ཆགས་བ་མེད། །

སྤྱི་དག་སྤྱི་སྤྱི་ལ་བ་འདྲ་བར་ནི། །

ཚོགས་བའི་བྱང་ཆུབ་མཁས་བས་ཤེས། །

འགྲོ་བའི་ཆེད་དུ་གོ་བགོས་དེ། །

འགྲོ་བ་དེ་ལྟར་སྤྱར་ནས་ཤེས། །ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་ལྟར་བསྒྲུབ་བའི་རིམ་བ་འདིས་དེ་ཁོ་ན་བསྒྲུབ་བར་བྱའོ།

དེ་ལ་བྱིང་བ་དང་གོད་བ་ལ་སོགས་བ་བྱང་<sup>3</sup>ན་སྤྱར་བ་ལྟན་བ་བཞིན་དུ་ཞི་

བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་ཚོས་ཐམས་ཅད་པོ་ཉིད་མེད་བར་དམིགས་བ་ལ་བྱིང་བ་

དང་གོད་བ་ལ་སོགས་བ་དང་བྱལ་ཞིང་མངོན་བར་འདུ་བྱེད་བ་མེད་བར་ཤེས་བ་

འཇུག་བར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ཞེ་གནས་དང་ལྟག་མཐོང་རྒྱུད་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་.....

བའི་ལམ་ཚོགས་བ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཆོ་ཞེ་སྤྱི་དུ་བྱས་བ་དེ་སྤྱི་དུ་མོས་བའི་

སྤྱོད་ས་ཀྱིས་མོས་བས་སྤྱོད་བའི་ས་ལ་གནས་བས་བསྒྲུབ་བར་བྱའོ། །

དེ་ནས་ཇི་ལྟར་འདོད་བ་བཞིན་དུ་སྤྱི་ལ་སོ་ཀྱང་ས་བཞིག་བར་ལངས་ལ་འདི་

1. ཐུ་བེ་—སྤྱད་འཕགས་ 2. ཐུ་—བཀའ་ (མདོ་ཞ' ༤༩) 3. ཐུ་དཔེར་—ཡུའི་ཐུ་ཐུ་=

ལང་ནམས་སྤྱད་ན་



སྒྲུབ་དུ་བསམ་པར་བྱ་སྟེ། ཡང་<sup>1</sup>ནི་ཆོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ངོ་  
 བོ་ཉིད་མེད་<sup>2</sup>མེད་ཀྱི། ཀུན་རྫོབ་དུ་ཡོད་པར་བསམ་མོ། ་<sup>3</sup>དེ་སྒྲུབ་འཕགས་  
 བ་དཀོན་མཆོག་སྒྲིན་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “ཐེ་ལྷ་ར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 བདག་མེད་བ་ལ་མཁས་བ་ཡིན་ཞེ་ན། རིགས་ཀྱི་བྱ་འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གཞུགས་ལ་སོ་སོར་དོག་ ཆོར་བ་དང་།  
 འདུ་ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་ནམས་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་བ་ལ་སོ་སོར་དོག་དེ།  
 དེ་གཞུགས་ལ་སོ་སོར་དོག་བ་ན་གཞུགས་ཀྱི་སྦྱེ་བ་མི་དམིགས། ཀུན་<sup>5</sup>འབྱུང་  
 བ་མི་དམིགས། འགོག་བ་མི་དམིགས་སོ། ་<sup>6</sup>དེ་བཞིན་དུ་ཆོར་བ་དང་། འདུ་  
 ཤེས་དང་། འདུ་བྱེད་ནམས་དང་། རྣམ་པར་ཤེས་བའི་སྦྱེ་བ་མི་དམིགས།  
 (ཀུན་འབྱུང་བ་མི་དམིགས་འགོག་བ་མི་དམིགས་) སོ། ་<sup>7</sup>དེ་ཡང་དོན་དམ་པར་  
 སྦྱེ་བ་མེད་པར་གནས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡིན་གྱི། <sup>8</sup>ཐ་སྒྲུབ་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་  
 ཀྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ།” ་<sup>9</sup>ཞེས་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་། ་<sup>10</sup>བྱིས་པའི་སྒྲོ་ཅན་འདི་དག་  
 ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པའི་དངོས་བོ་ནམས་ལ་(<sup>11</sup>ཐུན་ཅི་ལོག་དུ་) མངོན་པར་ཞེན་པའི་...  
 དབང་གིས་འཁོར་བ་ན་ཀུན་དུ་འབྱུང་ཞིང་སྤྱུག་བསྐུལ་སྒྲ་ཆོགས་དག་ཉམས་སྤྱོད་  
 མྱོང་ངོ་སྒྲུབ་དུ་སྦྱིང་རྒྱུ་ཆེ་ཆེན་བོ་<sup>12</sup>མངོན་དུ་བྱས་ལ་འདི་སྒྲུབ་དུ་བསམ་པར་བྱ་སྟེ།

1. ལྷ་པོ་—ཡོང་ནི་ 2. ལྷ་པོ་—མེད་པ་ཡིན་མེད་ 3. ལྷ་པོ་—དེ་འཕགས་

4. ལྷ་པོ་—བཀའ་ (མདོ་—ལྷ་པོ་) 5. ལྷ་པོ་—ཀུན་འབྱུང་དང་འགོག་པའི་གོ་རིམ་འདི་ལས་  
 སྤྱུག་ཏེ་བཞེད་ཡོད། 6. ལྷ་པོ་དང་མདོ་ཉིད་དུ་གསལ་བ་བཞེན་འདིར་བཞེད་དོ།

7. བཞེན་འབྱུང་དཔལ་མ་བཞེན་པའི་ནང་མ་དཔལ་པའི་ངོ་བོ་ཞེས་གསལ་ཡང་ལྷ་པོ་དང་མདོ་ཉིད་དུ་  
 མ་ལྷ་པོ་ཀྱི་དང་བཞེན་པའི་གསལ་བ་བཞེན་འབྱུང་པར་མངོན་ནོ། 8. ལྷ་པོ་—འཕགས་པའི་  
 འཕགས་པ་= ཐུན་ཅི་ལོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་ཕྱིར། 9. ལྷ་པོ་—ཆོས་ཀྱི་འཕགས་པ་= མྱོང་རྒྱུ་ཆེ་ཆེན་



ཅི་ནས་བདག་གིས་ཐམས་ཅད་མཐུན་པ་ཉིད་ཐོབ་ནས་འདི་དག་ཆོས་ཉིད་ཁོང་དུ་  
ཅུང་པར་བྱེད་པར་འགྱུར་བ་དེ་ལྟར་བྱའོ་སྟུང་དུ་བསམ་མོ།

དེ་ནས་སངས་རྒྱུས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ཐམས་ཅད་ལ་མཆོད་པ་དང་  
བསྟོད་པ་གསོལ་དེ། འཕགས་པ་བཟང་པོ་སྟོན་པ་ལ་སོགས་པའི་སྟོན་ལམ་  
ཆེན་པོ་གདབ་པོ། དེ་ནས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྟིང་ཆེའི་སྟིང་པོ་ཅན་གྱི་སྟིན་པ་ལ་  
སོགས་པ་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་མཐའ་དག་སྐྱབ་པ་ལ་འཇུག་པར་  
བྱའོ། །དེ་སྐོར་དུ་འཕགས་པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྐྱད་པ་ལས་ཀྱང་བཀའ་  
སྟུང་དེ། “ཡང་དག་པ་ཆེ་ལྟ་བུ་བཞུགས་དུ་མཐོང་བའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
སེམས་ཅན་ནམས་ལ་སྟིང་ཆེ་ཆེན་པོ་འཇུག་པོ། །དེ་ཡང་འདི་སྟུང་དུ་བདག་  
གིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཡང་དག་པ་ཆེ་ལྟ་བུ་བཞུགས་དུ་མཐོང་བའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྟོ་  
འདི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱབ་པར་བྱའོ་སྟུང་དུ་བསམས་དེ། དེའི་སྟིང་ཆེ་  
ཆེན་པོ་དེས་བསྐྱལ་བས་ལྷག་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་དང་། ལྷག་པའི་སེམས་དང་།  
ལྷག་པའི་ཤེས་རབ་(ཉལ་བསྐྱབ་པ་གསུམ་) ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱས་ནས་ལྷ་  
ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་མངན་པར་རྫོགས་པར་འཛང་……  
བྱའོ།” །ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

ཐབས་དང་ཤེས་རབ་རྒྱུད་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པ་འདི་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
དབའ་ནམས་ཀྱི་ལམ་ཡིན་དེ། འདི་ལྟར་དོན་དམ་པ་མཐོང་ཡང་ཀུན་རྫོབ་མི་

1. ལྷ་པོ་—འདི་ཆོས་(ཆད་—འདི་དག་ཆོས་ཉིད་) 2. ལྷ་—བཀའ་(མདོ་ཞེས་པ་)

3. ལྷ་དཔེར་—‘མཐུན་པར་གྱི་ཤེས་རབ་ཉལ་བསྐྱབ་པ་གསུམ་’ཞེས་གསལ་ཡང་།

ལྷ་དཔེར་མང་མང་ཤེས་རབ་ཀྱི་བསམ་པ་ཉལ་བསྐྱབ་པ་ལ་བརྟུགས་ན་བསྐྱབ་པ་དང་བསམ་པ་

ནོར་བར་མེན་ནམ་སྟུང་མོ།



གཅོད་ལ། ཀུན་རྒྱུ་མ་བཅད་པས་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་སྤྱོན་དུ་འགྲོ་ཞིང་ཕྱིན་ཅི་  
 ལོག་མེད་པ་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱེད་པ་ལ་སོགས་<sup>1</sup>པ་ལ་འཇུག་གོ་<sup>2</sup> ཉི་མའི་  
 འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྱིན་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “ཇི་ལྟར་ན་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དབའ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་མཁས་པ་ཡིན་ཞེ་ན། འདི་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་བསྐྱབ་པ་ཐམས་ཅད་ལ་སྤྱོད་ཀྱང་བསྐྱབ་པ་དེ་ཡང་མི་དམིགས། བསྐྱབ་  
 བའི་ལས་<sup>4</sup>ཡང་མི་དམིགས། གང་སྤྱོད་པ་དེ་ཡང་མི་དམིགས་དེ། གྱུ་དེ་དང་  
 ཀྱེན་དེ་དང་གཞི་དེས་ཆད་པར་ལྟ་བར་མི་ལྟུང་ངོ་” ཞེས་འབྱུང་ངོ་། འཕའ་  
 པ་ཆོས་ཡང་དག་པར་སྤྱད་པ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ནམས་ཀྱི་སྐྱབ་པ་གང་ཞེ་ན། བཅོམ་<sup>6</sup>ལྟན་འདས་<sup>7</sup>བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 ནམས་ཀྱི་ལྷས་ཀྱི་ལས་གང་ཅི་ལགས་པ་དང་། དག་གི་ལས་གང་ཅི་ལགས་པ་  
 དང་། ཡིད་ཀྱི་ལས་གང་ཅི་ལགས་པ་དེ་དག་ཐམས་ཅད་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་  
 ཅད་ལ་ལྟ་བུས་འཇུག་པ་ལགས་སོ། །སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་སྤྱོན་དུ་འགྲོ་བ་ལགས་ས།  
 སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་དེ་དབང་དུ་བྱུར་བ་ལགས་སོ། །སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྤྱོན་  
 པ་དང་བདེ་བར་བཞུགས་པའི་སྐྱབ་པའི་བསམ་པ་ལས་བྱང་བ་ལགས་སོ། ཉི་ལྟར་  
 སྤྱོན་པར་བཞུགས་པའི་བསམ་པ་དང་ལྟན་པ་དེ་འདི་སྤྱོད་དུ་འདྲུ་ཤེས་བབྱེད་དེ།  
 སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཕན་པ་<sup>8</sup>སྐྱབ་པ་དང་བདེ་བ་སྐྱབ་པའི་སྐྱབ་པ་གང་ཡིན་

1. ‘སོགས་’—ཕྱི་དཔེར་མེད་ 2. ཕྱི་དཔེ་ལྟར་ན་—མཚམས་འདྲིར་གྲགས་གསལ་“འཇིག་རྟེན་ལས་  
 འདས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་གནས་སྐབས་ཞེས་སོགས་ནས་ལམ་འབྱུང་བ་ཁོང་དུ་ཆད་པར་བྱུང་།” ཞེས་  
 བའི་བར་བཀོད་ཡོད་ཀྱང་། གཞུང་དོན་ལ་བརྟགས་ན་པོད་དཔེར་བཀོད་པ་ལྟར་ལོགས་པར་མངོན་ནོ།  
 3. ཕྱི་—བཀའ་ (མདོ་ཕྱ་ 20) 4. ཕྱི་ཆོ་—ལམ་ལ་ཡང་ 5. ཕྱི་—བཀའ་ (མདོ་ཉ་ 70)  
 6. ‘བཅོམ་ལྟན་འདས་’—ཕྱི་དཔེར་མེད་ 7. ལྟ་བུ་—འདས་ཀྱིས་ 8. ལྟ་བུ་—བའི་སྐྱབ་ (ཆད་—  
 ཕན་པ་སྐྱབ་པ་དང་བདེ་བ་སྐྱབ་པའི་)



‘པ་དེ་བདག་གིས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་སྐྱེ་མ་<sup>1</sup>པ་ལང་སོ། །དེ་ཕྱང་བོ་ནམས་ལ་སྐྱེ་མ་  
 ལྷ་བྱར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་ལ་ཕྱང་བོ་ཡོངས་སུ་འདོར་བ་ཡང་མི་འཛེལ།  
 ཁམས་ནམས་ལ་སྐྱེ་ལ་གདུག་པ་ལྷ་བྱར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་ལ་<sup>2</sup>ཁམས་ལ་  
 ཡོངས་སུ་འདོར་བ་ཡང་མི་འཛེལ། རྩེ་མཆེད་ནམས་ལ་གྲོང་སྤོང་<sup>3</sup>པ་ལྷར་སོ་  
 སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་ལ་རྩེ་མཆེད་ཡོངས་སུ་སྤོང་བ་ཡང་མི་འཛེལ། གཞུགས་  
 ལ་དབྱ་བ་དེས་པ་ལྷར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གཞུང་  
 གྱི་སྐྱེ་ནམ་པར་སྐྱེ་བ་ཡང་མི་འདོར། ཚོར་བ་ལ་ཆུའི་ཆུ་བྱར་ལྷར་སོ་སོར་རྟོག་  
 པ་ཡང་སྐྱེ་ལ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་བསམ་གཏན་དང་དྲིང་དེ་འཛིན་ལ་སྐྱེ་མས་  
 བར་འཇུག་པའི་བདེ་བ་བསྐྱེད་པའི་སྤྱོད་བ་མི་ཅོམ་བ་ཡང་མ་ལགས། འདྲ་  
 ཤེས་ལ་སྒྲིག་གྱི་ལྷ་བྱར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་ལ་<sup>4</sup>པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་  
 ཤེས་སྐྱེ་བ་པ་མི་སྐྱེ་བ་ཡང་མ་ལགས། འདྲ་བྱེད་ནམས་ལ་ཆུ་གྲོང་ལྷར་སོ་  
 སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་ལ་སངས་བྱེས་ཀྱི་ཚོས་<sup>5</sup>མངོན་བར་འདྲ་བའི་བ་མི་སྐྱེ་བ་  
 ཡང་མ་ལགས། ནམ་པར་ཤེས་པ་ལ་སྐྱེ་མ་ལྷ་བྱར་སོ་སོར་རྟོག་པ་ཡང་སྐྱེ་ལ།  
 ཡེ་ཤེས་ཐོག་མར་འགྲོ་བའི་ལུས་དང་ངག་དང་ཡིད་ཀྱི་<sup>6</sup>ལས་སྐྱེ་བ་པ་མི་སྐྱེ་བ་  
 ཡང་མ་ལགས་སོ།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བྱེས་པར་འབྱུང་ངོ། །དེ་ལྷར་  
 མདོ་སྤེ་དེ་དང་དེ་དག་<sup>7</sup>ལས་ཐུབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཚུལ་སྐྱེ་བ་མཐའ་ལས་བ་  
 འབྱུང་བ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ།

1. ལྷ་པོ་—ལྷ་མ་ལགས་ 2. ལྷ་པོ་—བསྐྱེད་ 3. ལྷ་པོ་—སྤོང་ལྷར་ 4. ལྷ་—སྐྱེ་བ་  
 5. ‘མངོན་བར’—ཆུ་དཔེར་མེད། 6. ལྷ་པོ་—ལས་མི་(ཆུ་—ལས་སྐྱེ་བ་པ་མི་) 7. ལྷ་པོ་—དག་ལ་



“1འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་གནས་སྐབས་ན་ཐབས་ལ་བརྟེན་  
 པ་མི་འབྱུང་མོད་ཀྱི། ཐབས་བརྟེན་པའི་དུས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སྐྱུ་མ་  
 མཁན་ལྟར་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་ལ་སྦྱོར་  
 བ<sup>2</sup>དང་།<sup>3</sup> ཡེ་ཤེས་ལ་སྦྱོར་བའི་རྗེས་ལས་བྱང་བ་དངོས་པོ་འདི་དོན་གྱི་དེ་ཁོ་ན་རི་  
 ལྟ་བུ་བཞུགས་དུ་རྟོགས་པའི་ཤེས་རབ<sup>4</sup>ཡོད་པ་ཉིད་དེ། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་རྒྱང་དུ་  
 འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་དེ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །འཕགས་པ་སྒྲོ་བྲོས་མི་ཟད་པས་  
 བལྟན་པ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་། བསམ་གཏན་མི་ཟད་པའི་སྐབས་ནས་ཐབས་དང་ཤེས་  
 རབ་རྒྱང་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལམ་འབྱུང་བ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ། །རིམ་  
 པ་འདི་ལྟ་བུ་འདིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་<sup>6</sup>ལ་རྟག་དུ་གུས་  
 བར་ཡུན་རིང་དུ་གོམས་པར་བསྒྲུམས་ན་གནས་སྐབས་ཀྱི་བྱེ་བྲག་བཅུ་གཉིས་སུ་  
 འགྱུར་རོ། །གནས་སྐབས་དེ་དག་ནི་གོང་མ་གོང་མའི་ཡོན་ཏན་གནས་པའི་ཕྱིར་  
 སར་ནས་བར་བཞག་ལྟེ། མོས་བས་སྦྱོད་པའི་ས་ནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སའི་བར་  
 དུའོ།

དེ་ལ་རི་སྟོན་དུ་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་མངོན་སུམ་དུ་  
 མི་བྱེད་མོད་ཀྱི། མོས་བས་ཤིན་དུ་བརྟན་པ་ཅམ་དུ་ཟད་དེ། བདུད་ལ་སོགས་  
 བས་མི་བྱེད་ལ། གང་གི་ཆེ་མོས་པའི་སྦྱོབས་(<sup>7</sup>ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་སྒྲོམ་པར་བྱེད་པ་

- 
1. ལེགས་སྦྱར་བྱ་དཔེ་ལྟར་ན་ 'འཇིག་རྟེན་ལས་ཞེས་སོགས་ནས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ།' ཞེས་བ་  
 ཁོང་དུ་བཞུགས་ཡོད། 2. ལྟ་བུ་—བའི་རྗེས་ 3. ལྟ་དཔེར་—‘དང་ཡེ་ཤེས་ལ་སྦྱོར་བ’ ཞེས་བ་མེད་  
 4. ལྟ་བུ་—རབ་རྟེན་(ཆད་—ཤིས་རབ་ཡོད་པ་’རྟེན་) 5. འདིར་བྱང་འདྲིན་མཛད་མཚམས་གསལ་ཁ་  
 མེད་པས་དཔྱད་དགོས་སོ། 6. རྟེན་ལྟ་—རབ་རྟེན་ 7. ལྟ་དཔེར་—‘ཐལ་ལོན་འཇུག་པར་བྱེད་པ་’



དེ་ཆོ་སྐུ་པ་བཏུན་པའི་སྒོ་ནས་སྐུ་པའི་སར་ནས་པར་བཞག་ག།  
 ས་འདི་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནི་སོ་སོ་འི་སྒྲིབ་ཡིན་མོད་ཀྱི།  
 བྱིས་པའི་ཐོངས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་ཡང་དག་པར་འདས་དེ། ཏིང་ངེ་འཛིན་དང་།  
 གཟུངས་དང་། རྣམ་པར་ཐར་པ་དང་། མངོན་པར་ཤེས་པ་ལ་སོགས་པའི་  
 ཡོན་ཏན་གྲངས་མེད་པ་དག་དང་ལྡན་པ་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྱིན་ལས་འབྱུང་  
 པ་ཡིན་ནོ།

འདི་ཉིད་ཐ་མ་དང་། འབྲིང་དང་། རབ་དང་། རབ་ཀྱི་མཆོག་གི་གནས་སྐབས་  
 བཞིས་ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་བཞིས་རྣམ་པར་བཞག་མེ། འདི་ལྟར་  
 གང་གི་ཆོ་བྱི་མེད་ཀྱི་དོན་རྣམ་པར་འཛིག་པ་ན་ཤེས་པའི་སྒྲིབ་པ་ཆུང་ཟད་གསལ་  
 པ་བྱུང་བ་དེའི་ཆོ་ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་དྲོ་བར་གྱུར་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་  
 ནི་ཐོག་པ་ཆེན་པོ་འདིར་སྒྲིབ་པ་ཐོབ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་  
 ཤེས་པའི་སྒྲིབ་པ་དེ་ཉིད་འབྲིང་ཙམ་དུ་གསལ་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་ངེས་པར་འབྱེད་  
 པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་ཅེ་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །སྒྲིབ་པ་མཆེད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་  
 ཞེས་ཀྱང་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་དེ་ཉིད་ཆེས་གསལ་པར་གྱུར་དེ་མྱོ་ལོ་གྱི་དོན་མ་  
 སྒྲིབ་པའི་ཤེས་པའི་སྒྲིབ་པ་འབྱུང་བ་དེའི་ཆོ་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་ལ་གནས་པའི་<sup>3</sup>  
 མྱོར་ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་མཐུན་པ་བཟོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཁྱོགས་  
 གཅིག་ལ་ཁྱེད་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་ཀྱང་བྱ་མེ། གཟུང་པའི་རྣམ་པ་མི་

1. གྱི་དཔེར་—अस्यामपि भूमि = ས་འདིར་ཡང་ 2. གྱི་དཔེར་—सर्वधर्मनिरात्म्यं भावयता =  
 ཆོས་ཐམས་ཅད་པདག་མེད་པར་བསྐྱོམ་ན་ཞེས་གསལ་ཡང་བོད་དཔེ་ལྟགས་པར་མངོན་ནོ།

3. གྱི་ཐེ—པའི་ངེས་(ཆད་—པའི་མྱོར་'ངེས་པར་)



དམིགས་པར་ཞུགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཆོ་<sup>1</sup>འཛིན་པའི་རྣམ་པ་དང་གཉིས་སུ་  
མེད་པའི་ཤེས་པ་ཡང་<sup>2</sup>རྣམ་པར་འཛིག་པ་དེའི་ཆོ་ངེས་པར་འབྱེད་པའི་ཆ་དང་...  
མཐུན་པ་ཆོས་ཀྱི་མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་མ་ཐག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་  
ཀྱང་བྱ་སྟེ། དེ་མ་ཐག་ཁོ་ནར་དེ་ཁོ་ན་ལ་འཇུག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་བར་དུ་  
ནི་མོས་པས་སྟོད་པའི་ས་ཡིན་ནོ། །

ས<sup>3</sup>གཞན་དག་ནི་མདོར་ན་ཡན་ལག་བཅུ་གཅིག་ཡོངས་སུ་རྫོང་པའི་སྒྲོ་ནས་  
རྣམ་པར་བཞག་གོ། །དེ་ལ་ས་དང་པོར་<sup>4</sup>ནི་ཐོག་མར་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་  
མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་དོགས་པའི་ཡན་ལག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ལས་རྣམ་པར་བཞག་  
སྟེ། འདི་ལྟར་གང་གི་ཆོ་ཆོས་ཀྱི་མཆོག་གི་མཇུག་<sup>5</sup>ཐོགས་ཁོ་ནར་ཆོས་ཐམས་  
ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་མངོན་སུམ་དུ་བྱེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཤིན་དུ་གསལ་བ་འཛིག་  
དེན་ལས་འདས་པ་སྟོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ཐོག་<sup>6</sup>མར་བྱང་བ་དེའི་ཆོ་བྱང་...  
ཆུབ་སེམས་དབང་ཡང་དག་པ་ཉིད་སྟོན་མེད་པ་ལ་ཞུགས་པས་མཐོང་བའི་ལམ་...  
སྟེས་པའི་ཕྱིར་ས་དང་པོར་ཆུད་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་དེ་<sup>7</sup>ཁོ་ན་ཁོང་དུ་<sup>8</sup>མ་ཆུད་<sup>9</sup>  
བ་ས་འདི་ལ་ཐོག་མར་ཁོང་དུ་ཆུད་པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ས་<sup>10</sup>རབ་དུ་  
དགའ་བ་ཡིན་དེ། དེས་ན་ས་དེ་རབ་དུ་དགའ་བ་ཞེས་བྱའོ། །ས་དེར་མཐོང་  
བས་སྤང་བར་བྱ་བའི་ཉོན་མོངས་པ་བརྟུ་ཙ་བཅུ་གཉིས་སྟོང་ངོ་། །

1. གྱ་དཔེར་—ग्राह्यग्रहकाररहितम् = གཟུང་བ་དང་འཛིན་པའི་རྣམ་པ་བྲལ་བ་

2. 'ཡང་—གྱ་དཔེར་མེད་ 3. ལྟ་མེ—གཞན་དག་(ཆད་—'ས'གཞན་དག་)

4. ལྟ་མེ—པོ་ན་ 5. ལྟ་མེ—འཇུག་ 6. ལྟ་མེ—ཐོག་མ་

7. ལྟ་མེ—དེ་ཁོང་(ཆད་—དེ་ཁོ་ན་ཁོང་དུ་) 8. ལྟ་མེ—དུ་ཆུད་(ཆད་—དུ་མ་ཆུད་)

9. ལྟ་མེ—ཆུད་པས་འདི་ 10. 'ས'—གྱ་དཔེར་མེད་







སྐྱབ་པའི་ཕྱིར་རྩུག་བསྐྱེད་ཐམས་ཅད་བཟོད་པས་ན་བཟོད་པའི་པ་རྩུག་པ་  
ཤིན་ཏུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། ཉིང་ངེ་འཛིན་དེ་དག་ཐོབ་པས་ས་དེ་ནི་འཛིག་རྟེན་  
ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུང་བ་<sup>1</sup>ཚད་མེད་པ་བྱེད་པས་འོད་བྱེད་པ་ཞེས་བྱའོ།

དེ་འཛིག་རྟེན་པའི་ཉིང་ངེ་འཛིན་མཐའ་དག་ཐོབ་ཀྱང་ཇི་སྲིད་དུ་ཇི་ལྟར་ཐོབ་  
པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་<sup>2</sup>ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཀྱིས་ལན་མང་དུ་གནས་པར་བྱེད་པ་དང་།  
ཆོས་<sup>3</sup>དང་སྒྲོམས་པར་འབྱུག་<sup>4</sup>པའི་སེམས་བདང་སྒྲོམས་སུ་བྱེད་མི་རྒྱས་པ་དེ་སྲིད་  
དུ་ས་གསུམ་པའོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་ཇོགས་  
པས་ས་བཞི་པར་རྣམ་པར་གཞག་གོ། །ས་དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་<sup>5</sup>སེམས་དཔའ་རྒྱན་  
མི་འཆད་པར་(<sup>6</sup>ལྷས་དང་) དག་དང་ཡིད་ཀྱི་བཟོད་པ་ལས་ཡང་དག་པར་འདའ་<sup>7</sup>  
པའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཀྱིས་གནས་པས་ན་བཙོན་འགྲུས་ཀྱི་  
པ་རྩུག་པ་ཤིན་ཏུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། །ས་དེ་ནི་རྟེན་མོངས་པའི་ཤིང་མཐའ་  
དག་སྟེག་<sup>8</sup>པར་རྒྱས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འོད་འཕྲོ་བ་ཤིན་ཏུ་བྱང་  
པས་འོད་འཕྲོ་བ་ཅན་ཞེས་བྱའོ།

དེ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱིས་རྒྱན་མི་འཆད་པར་གནས་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །  
ཇི་སྲིད་དུ་བདེན་པ་རྣམས་བསྒྲོམ་པ་ན་འཁོར་བ་ལ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་། བྱང་ན་  
ལས་འདས་པ་ལ་མངོན་དུ་ཕྱོགས་པ་ལས་སེམས་བསྒྲོག་དེ། ཐབས་ཀྱིས་ཟིན་  
པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་(<sup>9</sup>ཀྱི་ཆོས་) བསྒྲོམ་མི་རྒྱས་པ་དེ་སྲིད་དུ་ས་བཞི་པའོ། །

1. ལྟ་ཐེ་—བ་མེད་(ཆད་—ལྟངས་པ་ཆད་མེད་) 2. ལྟ་ཐེ་—ཀྱི་ཆོས་(ཆད་—ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་)
3. 'ཆོས་'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 4. ལྟ་དཔེར་—सर्वसमापत्तिनां = ཐུགས་པར་འབྱུག་པ་ཐམས་ཅད་
5. ལྟ་ཐེ་—ལྟ་དཔེར་(ཆད་—ལྟངས་པ་སེམས་པ་དཔེར་) 6. ལྟ་དཔེར་ཡོད་
7. ལྟ་ཐེ་ལྟ་ཐེ་—བསྒྲོག་ 8. ལྟ་ཐེ་—བསྒྲོག་ 9. ལྟ་དཔེར་ཡོད་



གང་གི་ཆོ་རྒྱལ་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པས་ས་ལྷ་པར་ནམ་པར་  
བཞག་གོ། །དེ་བས་ན་ས་དེ་ལ་ཐབས་ཀྱིས་ཟིན་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་བསྐྱེད་  
པ་དེ་ཡོངས་<sup>1</sup>སུ་རྒྱུགས་པར་བྱེད་པ་ནི་ཤིན་དུ་སྤྱད་པར་དཀའ་བས་ན་ཤིན་དུ་  
སྤྱད་དཀའ་<sup>2</sup>པ་ཞེས་བྱའོ།

ས་དེ་ལ་(<sup>3</sup>འཕགས་པའི་) བདེན་པའི་ནམ་པ་སྐྱེད་པ་ལན་མང་དུ་བྱེད་པས་  
བསམ་གཏན་གྱི་པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཤིན་དུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་དེ། དེ་ཐབས་ཀྱིས་  
ཟིན་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱིས་<sup>4</sup>ལན་མང་དུ་གནས་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །ཇི་སྲིད་  
དུ་འཁོར་བར་འཇུག་པ་ལ་སོ་སོར་དྲི་བ་སྤྱོད་པ་དང་ལྷན་པས་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་  
ཀྱིས་མཚན་མ་མེད་པར་གནས་པ་ལ་མཉམ་པར་འཇོག་མི་རྒྱས་པ་དེ་སྲིད་དུ་ས་  
ལྷ་པའོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱལ་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པས་ས་  
ལྷ་པ་ནམ་པར་བཞག་གོ། །ས་དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་དྲིན་ཅིང་འབྲེལ་  
བར་འབྱུང་བ་བསྐྱེད་པས་གནས་པས་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཤིན་  
དུ་ཤས་ཆེ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཤིན་དུ་ཤས་  
ཆེ་བའི་ཕྱིར་ས་དེ་ལ་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མངོན་དུ་གྱུར་པ་(<sup>6</sup>བྱང་བས་  
མངོན་དུ་གྱུར་པ་) ཞེས་བྱའོ།

དེ་མཚན་མ་མེད་པར་གནས་པ་ཐོབ་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །ཇི་སྲིད་དུ་སྐབས་  
མེད་པར་མཚན་མ་མེད་པར་གནས་པ་ལ་མཉམ་པར་འཇོག་མི་རྒྱས་པ་དེ་སྲིད་དུ་  
ས་ལྷ་པའོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱལ་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་ལག་དེ་ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པས་ས་

1. 'ཡོངས་སུ་རྒྱུགས་པར་'—ཀྱི་དཔེར་མདུན་ 2. ལྷ་པའི་—དཀའ་ཞེས་(ཆད་—དཀའ་པ་ལྟས་)
3. ཀྱི་དཔེར་མདུན་ 4. ལྷ་པའི་—ཀྱིས་མང་དུ་(ཆད་—ཀྱིས་ལན་མང་དུ་)
5. ལྷ་པའི་—སྐྱེད་ 6. ཀྱི་དཔེར་མདུན་











ལ་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཆགས་པ་མེད་པ་དང་། ཐོགས་པ་མེད་པའི་ཡོ་ཤེས་  
 བསྐྱེད་པར་མི་ལྷན་པ་དེ་སྤྱོད་དུ་ས་བཅུ་བཤོ། །གང་གི་ཆོ་རྒྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཡན་  
 ལག་དེ་ཡོངས་སུ་ཐོགས་པས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སངས་རྒྱལ་པར་བཞག་གོ། །ས་རྒྱལ་  
 བར་གཞག་པ་འདི་ནི་འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འབྲེལ་བ་ལས་བསྐྱེད་ཏོ། །  
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་འདི་ནི་སྤྱན་སྤྱུང་ཆོགས་པ་རྒྱལ་པ་ཐམས་ཅད་མཐའ་དག་རབ་  
 ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པའི་ཕྱིར་འདི་ལས་གོང་ན་རྒྱལ་པ་གཞན་མེད་པས་དེ་ལས་ཆད་ས་  
 རྒྱལ་པར་གཞག་པ་མེད་དོ། །

སངས་རྒྱས་ཀྱི་ས་དེའི་ཡོན་ཏན་གྱི་ཕྱོགས་རབ་དུ་དབྱེ་བ་དཔག་དུ་མེད་  
 བས་རྒྱལ་པ་ཐམས་ཅད་བཞེད་པ་ནི་སངས་རྒྱས་རྒྱལ་པ་ཀྱང་མི་སྤྱོད་ན་བདག་  
 འདྲ་བས་ལྟ་སྒྲུབ་ཀྱང་ཅི་དགོས། །ཇི་སྐད་དུ། འཕགས་པ་སྤོང་བོ་བཞོད་པ་  
 ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་།

ཤིན་དུ་བདགས་ཀྱང་རང་བྱུང་གི།

ཡོན་ཏན་རྒྱལ་པ་ཀྱི་ཕྱོགས་གཅིག་མཐའ།

མི་དོགས་<sup>3</sup>སངས་རྒྱས་རྒྱལ་པ་དང་ནི།

ཆོས་རྒྱལ་པས་མ་གྱིས་མི་བྱུང་བོ། ། ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་པ་

ལྟ་བུའོ། །མདོར་<sup>4</sup>ན་འདི་ཙམ་ཞིག་བཞེད་པར་ལྷན་དེ། “<sup>5</sup>བདག་དང་གཞན་  
 གྱི་དོན་སྤྱན་སྤྱུང་ཆོགས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པ་ཉེས་པ་མ་ལུས་པ་བསལ་བའི་”

1. ‘ད་ལན་ཆད་ས་རྒྱལ་པར་གཞག་པ་མེད་དོ།’ ཞེས་བ་བྱ་དཔེར་མེད།

2. ལྟ་—བཀའ་(ལམ་ཆེན་—ག’ 200) 3. ལྟ་ཙམ་—དོགས་ 4. ལྟ་པ་—མདོར་འདི་ཙམ་

5. བདག་དང་གཞན་གྱི་དོན་……ཞེས་ཞོགས་ནས་བཙན་བསྐྱེད་བཀའ་སྤྱུལ་ནས་ཞེས་པའི་བར་བྱ་  
 དཔེར་ཆོང་མེད།



མཐར་ཐུག་པ་བརྟེན་ནས་སངས་ཀྱིས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་.....  
བཞུགས་དེ། ཡོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་སྐུ་ལ་བའི་སྐུས་འགྲོ་བ་མ་ལུས་བའི་  
དོན་ལྷན་གྱིས་ཐུབ་པའི་ཚུལ་གྱིས་མཛད་ཅིང་འཁོར་བ་ཆེ་སྤྱོད་པར་བཞུགས་སོ།

དེ་ལྟ་བུས་ན་དྲིག་པ་དང་ལྷན་པ་ནམས་ཀྱིས་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྱུང་  
གནས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ལ་དད་པ་བསྐྱེད་ལ་དེ་དག་གི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་  
བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར་ནས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་རབ་དུ་འབད་པར་བྱའོ། །སྐུ་གསུམ་  
ལ་སོགས་པའི་ནམ་པར་དབྱེ་བ་ནི་ཡི་གེ་མངས་ཀྱིས་དྲོགས་དེ་མ་བྲིས་སོ།

མདོ་སྤེ་དག་གི་ཚུལ་གྱི་<sup>1</sup>ལུགས་མཐུན་བ།

སྐུ་ལ་བའི་སྐུས་ཀྱི་ལམ་འདི་ལེགས་བཤད་བས།

བདག་གིས་བསོད་ནམས་མི་ཚུང་གང་ཐོབ་དེས།

འགྲོ་བ་ཤེས་ཞན་<sup>2</sup>སྤྱོད་མཆོག་སྐུར་ཐོབ་ཤོག །

སའི་སངས་བདག་དཔལ་ལྷ་བཅོན་པོས་བཀའ་སྐུ་ལ་ནས་<sup>3</sup>ཀམ་ལ་གྱི་.....  
ལས་བསྒྲུབ་པའི་རིམ་པ་མདོར་བསྐྱུས་པ་འདི་བཤིས་སོ། །བསྒྲུབ་རིམ་དང་པོ་  
རྫོགས་སོ། །གྲགས་ཀྱི་མཁན་པོ་བརྗོད་པའི་<sup>4</sup>དང་། རྒྱ་ཆེན་གྱི་ཡོ་ཙ་བ་  
བརྗོད་པའི་ཤེས་ལ་སོགས་པས་བསྐྱར་ཅིང་ཞུས་དེ་གཏན་ལ་ཕབ་བའོ། །

1. རྟེན་འགྲུབ་ 2. ལྟ་བུ་-གཞན་ 3. ལྟ་བུ་-ལྷན་པ་ 4. ལྟ་བུ་-བརྗོད་







༄༅། །ཏྲ་གར་སྐད་དུ། ལྷ་བཀྲ་ཀྲམ། བོད་སྐད་དུ། བསྐྱེད་<sup>1</sup>  
བའི་རིམ་པ། འཇམ་དཔལ་གཞིན་རྒྱར་གྱིར་བ་ལ་ཐུག་འཚལ་ལོ། །

ཐོག་པ་ཆེན་པོ་འི་<sup>2</sup>མདོ་སྡེའི་ཚུལ་གྱི་<sup>3</sup>རྗེས་སུ་འཇུག་པ་རྣམས་ཀྱི་<sup>4</sup>བསྐྱེད་  
བའི་རིམ་པ་མདོར་བཤད་དོ། །འདི་ལ་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་ཤིན་དུ་སྒྱུར་དུ་  
ཐོབ་པར་འདོད་པ་དོག་<sup>5</sup>པ་དང་ལྷན་པས་དེ་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་སྐྱེ་རྣམས་དང་རྒྱན་  
རྣམས་ལ་མངོན་པར་བཅོམ་པར་བྱའོ།

འདི་ལྟར་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་འདི་ནི་སྐྱེ་མེད་པ་ལས་འབྱུང་བར་མི་  
བྱུང་སྟེ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་དུ་འབྱུང་  
བར་ཐལ་བར་འབྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །ལྷོས་<sup>6</sup>པ་མེད་པར་འབྱུང་ན་ནི་གང་དུ་ཡང་  
ཐོགས་པར་མི་བྱུང་སྟེ། གང་གིས་ན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་ཉིད་  
དུ་མི་འབྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་ལ་ལར་བརྟུ་ལམ་ན་འགའ་ཞིག་འབྱུང་དུ་ཟད་  
བས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་ནི་སྐྱེ་ལ་ལྷོས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། ཐམས་ཅད་མཆེན་པ་  
ཉིད་དུ་ཡང་ལ་ལར་བརྟུ་ལམ་ན་འགའ་ཞིག་འབྱུར་དེ། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་  
མ་ཡིན། གནས་ཐམས་ཅད་དུ་མ་ཡིན། ཐམས་ཅད་ཀྱང་མ་ཡིན་པས་དེའི་  
ཕྱིར་དེ་ནི་སྐྱེ་དང་རྒྱན་ལ་ལྷོས་<sup>7</sup>པར་ངེས་སོ། །སྐྱེ་དང་རྒྱན་དེ་དག་གི་ནང་ནས་  
ཀྱང་མ་ནོར་ཅིང་མ་ཆང་བ་མེད་པ་རྣམས་བསྟེན་པར་བྱའོ། །སྐྱེ་ནོར་བ་ལ་ནན་  
དན་བྱས་ན་ནི་ཡུན་ཤིན་དུ་རིང་པོ་ཞིག་གིས་ཀྱང་འདོད་པའི་འབྲས་བྱ་འཐོབ་པ་  
མེད་དོ། དཔེར་ན། །རྩ་ལས་འོ་མ་བཞེས་བཞེན་ནོ། །སྐྱེ་མཐའ་དག་མ་སྤྱད་<sup>8</sup>

1. ལྷ་པོ་-སྐྱེམ་ 2. ལྷ་ཚོ་-པོ་ 3. ལྷ་པོ་-བྱེས་ 4. ལྷ་ཚོ་-ཀྱིས་ 5. ལྷ་ཚོ་-དོགས་  
6. 'པོ་-བཞེས་ 7. ལྷ་པོ་-བཞེས་ 8. ལྷ་པོ་-དཔྱད་



བ་ལས་ཀྱང་འབྲས་བྱ་འབྱུང་བ་མེད་དེ། ས་བོན་ལ་སོགས་བ་གང་ཡང་རྒྱང་བ་  
 ཞིག་མེད་ན་སྤྱ་གྲུ་ལ་སོགས་བ་འབྲས་བྱ་མི་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་  
 འབྲས་བྱ་དེ་འདོད་པས་རྒྱ་དང་རྒྱུན་མ་ནོར་བ་དང་མཐའ་དག་ལ་བསྟེན་བར་བྱའོ། །

འབྲས་བྱ་ཐམས་ཅད་མཐུན་བ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱ་དང་རྒྱུན་དེ་དག་གང་ཞེ་ན།

སྤྲུམ་བ། བདག་ལྟ་བུ་དཔྱུས་ཡོང་དང་འདྲ་བས་དེ་དག་བསྟེན་<sup>1</sup>བར་མི་རྒྱས་  
 མེད་ཀྱི། འོན་ཀྱང་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཉིད་ཀྱིས་མངོན་བར་ཚོགས་བར་སངས་  
 རྒྱས་ནས་གདུལ་བྱ་རྣམས་ལ་ཇི་སྐད་བཤད་བ་དེ་བཞིན་དུ་བདག་གིས་བཅོམ་ལྷན་  
 འདས་ཀྱི་བཀའ་<sup>2</sup>ཉིད་ཀྱིས་བཤད་དོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་དེར་བཀའ་  
 རྒྱུལ་<sup>3</sup>བ། “གསང་<sup>4</sup>བའི་བདག་པོ་ཐམས་ཅད་མཐུན་བའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྤྱིང་  
 ཇི་རི་ཙ་བ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། བྱང་རྒྱལ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་རྒྱ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། ཐབས་  
 ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་བ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་འབྱུང་ངོ་། དེ་ལྟ་བུས་ན་ཐམས་ཅད་  
 མཐུན་བ་ཉིད་ཐོབ་བར་འདོད་པས་སྤྱིང་ཇི་དང་། བྱང་རྒྱལ་ཀྱི་སེམས་དང་།  
 ཐབས་དང་གསུམ་པོ་འདྲི་དག་ལ་བསྐྱབ་བར་བྱའོ། །

སྤྱིང་ཇིས་བསྐྱོད་ན་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔའ་རྣམས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་……  
 མངོན་བར་གཤོན་བའི་ཕྱིར་ངེས་པར་དམ་འཆའ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་  
 བདག་ཉིད་ལ་ལྟ་བུ་བསལ་ནས་ཤིན་དུ་བྱ་དཀའ་ཞིང་རྒྱུན་མི་ཆད་ལ་ཡུན་རིང་……  
 པོར་བསྐྱབས་<sup>5</sup>པའི་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ལ་གུས་བར་འཇུག་གོ། །  
 དེར་<sup>6</sup>ཞུགས་ནས་ངེས་པར་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཡོངས་སུ་ཚོགས་

1. ལྟ་ཙེ་—བསྟེན་ 2. ལྟེ་—བདག་ཉིད་ 3. ལྟེ་—བཀའ་(རྒྱུད་པ་ལྟར་)

4. ལྟ་པེ་—གསང་བ་བའི་ 5. ལྟ་པེ་—བསྐྱབ་ 6. ལྟ་ལྟ་—དེ་



པར་སྐྱབ་<sup>1</sup>པོ། །ཆོག་མཁའ་ལོངས་སྤྱོད་ཆོག་མཁའ་ན་ཐམས་ཅད་མཆོག་པ་ཉིད་  
ལག་<sup>2</sup>མཐོལ་དུ་ཐོབ་པ་དང་འདྲ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་ཐམས་ཅད་མཆོག་  
པ་ཉིད་ཀྱི་ཅ་བ་ནི་སྤྱིང་ཇི་ཁོ་ན་ཡིན་པས་དེ་ནི་ཐོག་མཁའ་མ་ཁོ་ནར་གོམས་པར་བྱའོ། །  
ཆོས་ཡང་དག་པར་སྐྱད་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “བཅོམ་ལྷན་འདས་བྱང་  
ཆུབ་སེམས་དབུས་<sup>4</sup>ཆོས་རབ་དུ་མང་པོ་ལ་བསྐྱབ་པར་མི་བཟོའོ། །བཅོམ་ལྷན་  
འདས་བྱང་ཆུབ་སེམས་<sup>5</sup>པས་ཆོས་གཅིག་རབ་དུ་གཟུང་ཞིང་རབ་དུ་དྲིགས་པར་  
བགྱིས་ན་<sup>6</sup>སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་དེའི་ལག་མཐོལ་དུ་མཆོས་པ་ལགས་”  
སོ། །ཆོས་གཅིག་པོ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་སྤྱིང་ཇི་ཆོན་པོ་འོ།” ཞེས་  
འབྱུང་ངོ་། །

སྤྱིང་ཇི་ཆོན་པོས་ཡོངས་སྤྱོད་ཆོན་པས་ན་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་  
རང་གི་དོན་ཕྱན་སྐྱེས་ཆོག་པ་མཐའ་དག་བརྟེན་ཀྱང་སེམས་ཅན་གྱི་ཁམས་.....  
མཐར་ཐུག་པའི་བར་དུ་བཞུགས་པར་མཛད་དོ། །ཉན་ཐོས་བཞིན་དུ་སྐྱེད་པས་  
འདས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་གིན་དུ་ཞི་བར་ཡང་འཇུག་པར་མི་མཛད་དེ། སེམས་ཅན་  
ལ་གཟིགས་ནས་སྐྱེད་པས་འདས་པའི་གྲོང་ཁྱེར་ཞི་བ་དེ་ལྟགས་ཀྱི་ཁང་པ་.....  
འབར་བ་བཞིན་དུ་ཐག་རིང་དུ་སྤྱོད་<sup>7</sup>པས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ནམས་ཀྱི་<sup>8</sup>མི་གནས་  
པའི་སྐྱེད་པས་འདས་པའི་སྤྱིང་ཇི་ཆོན་པོ་<sup>9</sup>དེ་<sup>10</sup>ཉིད་ཡིན་ནོ། །

དེ་ལ་སྤྱིང་ཇི་བསྐྱེད་པའི་རིས་པ་དེ་དང་པོ་འཇུག་པ་ནས་བཅུམས་དེ་བཞིན་

1. ལྟ་ཐོ-བསྐྱབ་ 2. ལྟ་ཐོ-ལག་དུ་ 3. ལྟ་-བཀའ་ (མདོ་ཞེ་ ༥༤)

4. ལྟ་ཐོ-དབུས་ 5. ལྟ་ཐོ-སེམས་ཆོས་ (ཆད་-སེམས་པས་ཆོས་) 6. ལྟ་ཐོ-ནས་

7. ལྟ་ཐོ-ཁང་ 8. ལྟ་ཐོ-ཀྱིས་ 9. ལྟ་ཐོ-པོ་ནི་ 10. ལྟ་ཐོ-ཉིད་



པར་བྱའོ། །ཐོག་མར་རེ་ཞིག་བདང་སྒྲིམས་བསྒྲིམས་<sup>1</sup>པས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ཇེས་སུ་ཆགས་པ་དང་། །ཁོང་ཁྱོད་པ་བསལ་དེ་སྒྲིམས་པའི་སེམས་ཉིད་བསྐྱབ་པར་བྱའོ། །

སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་བདེ་བ་ནི་འདོད་སྤྱུག་བསལ་བ་ནི་མི་འདོད་ལ། ཐོང་མ་མེད་པ་ཅན་གྱི་འཁོར་བ་ན་<sup>2</sup>སེམས་ཅན་གང་ལན་བརྒྱར་བདག་གི་གཉིན་དུ་མ་གྱུར་པ་དེ་གང་ཡང་མེད་དོ་སྒྲིམ་དུ་ཡོངས་སུ་བསམ་ཞིང་། །འདི་ལ་བྱེད་པ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ན་ལ་ལ་ལ་ནི་ཇེས་སུ་ཆགས། །ལ་ལ་ལ་ནི་ཁོང་ཁྱོད་པར་བྱར་<sup>3</sup>པས། དེ་ལྟ་བུས་ན་བདག་གིས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སེམས་སྒྲིམས་པ་ཉིད་དུ་བྱའོ། །སྒྲིམ་དུ་དེ་ལྟར་ཡོད་ལ་བྱ་ཞིང་བར་མའི་ཕྱོགས་ནས་བཙུགས་དེ། །མཛེའ་བཤེས་དང་དགུ་ལ་ཡང་སེམས་སྒྲིམས་པ་ཉིད་དུ་བསྒྲོམ་མོ། །དེ་ནས་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སེམས་སྒྲིམས་པ་ཉིད་དུ་བསྐྱབས་ནས་བྱམས་པ་བསྒྲུབ་མོ། །བྱམས་པའི་<sup>4</sup>ཆུས་སེམས་ཀྱི་<sup>5</sup>གྱུད་བརྒྱན་དེ་གསེར་ཡོད་པའི་ས་གཞི་བཞིན་དུ་.....བྱས་ལ་སྒྲིང་ཇི་འདི་ས་བོན་བདུན་ན་བདེ་བླག་དུ་ཤིན་དུ་ཡོངས་སུ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་སེམས་ཀྱི་གྱུད་བྱམས་པས་བསྒྲོམ་ནས་སྒྲིང་ཇེ་བསྒྲོམ་པར་བྱའོ། །

སྒྲིང་ཇེ་དེ་ནི་སེམས་ཅན་སྤྱུག་བསལ་བ་ཐམས་ཅད་སྤྱུག་བསལ་དེ་དང་བལ་བར་འདོད་པའི་ནམ་པ་ཡིན་ན། །ཁམས་གསུམ་<sup>7</sup>པའི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ནི་སྤྱུག་བསལ་ཉིད་ནས་པ་གསུམ་གྱིས་ཅི་རིགས་པར་ཤིན་དུ་སྤྱུག་བསལ་བ་དག་ཡིན་པས་དེའི་ཕྱིར་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་དེ་བསྒྲོམ་པར་བྱ་ཏེ། །འདི་ལྟར་རེ་

1. ལྟ་བུ་—བསྒྲོམ་ 2. ལྟ་བུ་—ནས་ 3. ལྟ་བུ་—གྱུར། དེ་ལྟ་

4. ལྟ་བུ་—བའི་སེམས་ (ཆད་—བྱམས་པའི་ཆུས་སེམས་) 5. ལྟ་བུ་—གྱུད་

6. ལྟ་བུ་—ནམས་ལ་ 7. ལྟ་བུ་—གསུམ་སེམས་



ཞིག་སེམས་ཅན་དཔྱུལ་བ་པའི་སེམས་ཅན་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་<sup>1</sup>དག་ནི་རྒྱུན་མི་...  
 ཆད་ཅིང་ལྷན་རིང་ལ་ཆ་བ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུག་བསྐྱེད་སྒྲུབ་ཀྱི་ཆུ་བོར་བྱུང་...  
 བ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བཅུ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །དེ་བཞིན་དུ་  
 ཡི་དྲུགས་ནམས་ཀྱང་པལ་ཆེར་ཤིན་དུ་མི་བཟད་པའི་བཀྲེས་པ་དང་སྐྱོམ་པའི་རྒྱུག་  
 བསྐྱེད་གྱི་མེས་<sup>2</sup>བསྐྱེད་པའི་ལྷན་ཤིན་དུ་རྒྱུག་བསྐྱེད་མང་བོ་བྱུང་ངོ་། །ཞེས་  
 བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །དུད་འགོ་ནམས་ཀྱང་གཅིག་ལ་གཅིག་ཟ་བ་དང་། ཁྱོ་བ་  
 དང་། གསོད་པ་དང་། རྣམ་པར་འཛོལ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུག་བསྐྱེད་རྣམ་པ་  
 མང་བོ་བྱུང་བ་ཁོ་ནར་སྤྱང་ངོ་། །མི་རྣམས་ཀྱང་འདྲོད་པ་ཡོངས་སུ་ཆོལ་བས་  
 སོངས་ནས་<sup>4</sup>གཅིག་ལ་གཅིག་འཁྱུ་བ་དང་། གནོད་པ་<sup>5</sup>བྱེད་པ་དང་། རྒྱུག་  
 པ་དང་བྱམ་པ་དང་། མི་རྒྱུག་པ་དང་ལྷན་པ་དང་། དབྱལ་སོངས་ལས་གྱུར་  
 པ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུག་བསྐྱེད་དབག་དུ་མེད་པ་ཉམས་སུ་བྱུང་བར་སྤྱང་ངོ་། །

གང་དག་འདྲོད་ཆགས་ལ་སོགས་པའི་ཉོན་མོངས་པས་<sup>6</sup>ཀྱུན་ནས་དཀྱིས་...  
 བ་སྒྲུབ་ཆོགས་ཀྱིས་སེམས་དཀྱིས་པ་དག་དང་། གང་དག་ལྟ་བུ་འཛིན་ནས་པ་  
 སྒྲུབ་ཆོགས་གཟིང་གཟིང་བར་གྱུར་པ་དེ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་རྒྱུག་བསྐྱེད་གྱི་རྒྱ་ཡིན་...  
 བས་གད་ཀ་ན་འདུག་པ་བཞིན་དུ་ཤིན་དུ་རྒྱུག་བསྐྱེད་<sup>7</sup>བ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །རྒྱ་  
 རྣམས་ཀྱང་ཐམས་ཅད་འགྱུར་པའི་རྒྱུག་བསྐྱེད་ཉིད་ཀྱིས་རྒྱུག་བསྐྱེད་པ་དག་ལྟེ།  
 འདྲོད་པ་ན་སྤྱོད་པའི་རྒྱ་གང་<sup>8</sup>དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་དྲུག་དུ་འཛིན་པ་དང་...

1. ལྟ་བུ་—དེ་ནི་(ཆད་—དེ་དག་ཀྱི་) 2. ལྟ་བུ་དཔེ་མར་རྒྱུག་བསྐྱེད་ཀྱི་མེས་ཀྱིས་གསལ་  
 ཡང་། རྒྱ་དཔེ་དང་རྒྱ་ཐང་སྐུ་མ་སོགས་སུ་རྒྱུག་བསྐྱེད་ཀྱི་མེས་ཀྱིས་གསལ་བ་འཕྲུལ་བར་  
 མངོན་ནོ། ། 3. ལྟ་བུ་—སྐུ་མ་ 4. ལྟ་བུ་—པས་ 5. ལྟ་བུ་—གནོད་པ་དང་  
 6. ལྟ་བུ་—པས་ 7. ལྟ་བུ་—ཐུགས་ཀྱི་ལྟ་བུ་ 8. ལྟ་བུ་—གང་ཡིན་



ལྷུང་བ་ལ་སོགས་པའི་འཛིགས་པའི་ཕྱ་ངན་གྱིས་སེམས་ལ་གཞོན་ན་ཇི་ལྟར་བདེ།  
 འདྲ་བྱེད་གྱི་སྤྲུལ་བསྐལ་ཉིད་ནི་ལས་དང་ཉོན་མོངས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུའི་གཞན་  
 གྱི་དབང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དང་། སྐད་ཅིག་རེ་རེ་ལ་འཛིག་པའི་ངང་ཅན་གྱི་མཚན་  
 ཉིད་དེ། འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལ་ཁྲུབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་བས་ན་འགྲོ་བ་མཐའ་  
 དག་ནི་སྤྲུལ་བསྐལ་གྱི་མེ་ལྷེ་འབར་བའི་ནང་དུ་བྱུང་བ་ཡིན་པར་བརྟུན་ལ་ཇི་ལྟར་<sup>1</sup>  
 བདག་སྤྲུལ་བསྐལ་མི་འདོད་པ་ལྟར་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་དེ་དང་འདྲའོ་སྟུང་དུ་  
 བསམ་ཞིང་། ཀྱི་མ་གྱི་རྟུང་བདག་ལ་སྤྲུལ་པའི་སེམས་ཅན་འདི་དག་སྤྲུལ་བསྐལ་  
 ན། སྤྲུལ་བསྐལ་དེ་ལས་ཇི་ལྟར་ཐར་བར་བྱ་ཞེས་བདག་ཉིད་སྤྲུལ་བསྐལ་བ་བཞིན་  
 དུ་བྱེད་ཅིང་དེ་དང་བྲལ་བར་འདོད་པའི་ནམས་པའི་སྟོང་ཇི་དེས་<sup>2</sup>དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་<sup>3</sup>  
 འདྲུག་ཀྱང་ཅང་། སྟོད་ལམ་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་ཅང་སྟེ། དུས་ཐམས་ཅད་དུ་  
 སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱོས་པར་བྱ་སྟེ།<sup>4</sup> ཐོག་མ་ཁོ་ནར་མཆོང་བཤེས་ཀྱི་  
 ཕྱོགས་ནམས་ལ་ཇི་སྟོན་སྟོས་པའི་སྤྲུལ་བསྐལ་སྟེ་ཚོགས་ཉམས་སུ་སྤྱོང་བར་.....  
 མཐོང་བས་བསྐྱོས་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་སེམས་ཅན་མཉམ་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཁྱེ་བྲག་མེད་པར་མཐོང་ནས་སེམས་  
 ཅན་ཐམས་ཅད་ནི་བདག་གི་གཉེན་དུ་གྱུར་པ་ཁོ་ནའོ་སྟུང་དུ་ཡོངས་སུ་བསམ་.....  
 ཞིང་བར་མདུན་ཕྱོགས་ནམས་ལ་བསྐྱོས་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆེ་དེ་ལ་མཆོང་བཤེས་  
 ཀྱི་ཕྱོགས་བཞིན་དུ་སྟོང་ཇི་དེ་མཉམ་པར་ཞུགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆེ་ཕྱོགས་བཅའི་  
 སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་བསྐྱོས་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆེ་བྱ་ཅང་ཅ་སྟོང་དུ་སྤྲུལ་

1. ལྷུང་བའི་སྤྲུལ་བསྐལ་(ཆད་-ཇི་ལྟར་བདག་སྤྲུལ་) 2. ལྷུང་བའི་-དེ་ 3. ལྷུང་བའི་-ལས་ཀྱང་འདྲུག་ཀྱང་

4. ལྷུང་བའི་(སྤྲུལ་-ཅང་སྟེ། 'དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་ཅང་སྟེ།' དུས་ཐམས་ཅད་དུ་སེམས་ཅན་)

5. ལྷུང་བའི་-མཐོང་བར་ 6. ལྷུང་བའི་-ཀྱི་



པ་སྤྱུག་བསྐྱེད་པར་གྱུར་བའི་མ་བཞིན་དུ་བདག་ཉིད་ཀྱིས་<sup>1</sup>ཤིན་དུ་སྤྱུག་<sup>2</sup>པ་སྤྱུག་  
བསྐྱེད་པ་ལས་འདོན་པར་འདོད་པའི་ནམ་པ་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པའི་སྤྱིང་  
ཇི་དེ་སེམས་ཅན་མཐའ་ཅན་ལ་མཉམ་པར་བྱགས་པར་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་<sup>3</sup>ཇོགས་  
པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་འི་སྤང་ཡང་འབྲོབ་བོ། །

བྱམས་པ་བསྒྲུབ་པ་ནི་མཇེའ་བཤེས་ཀྱི་ཕྱོགས་<sup>4</sup>པ་ཐོག་མར་བྱས་ནས་  
བདེ་བ་དང་ཕྱད་པར་འདོད་པའི་ནམ་པ་སྟེ། རིམ་གྱིས་ཐ་མལ་བ་དང་དགྲ་ལ་  
ཡང་བསྒྲུབ་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་དེ་སྤྱིང་ཇི་གོམས་པར་བྱས་ནས། རིམ་གྱིས་  
སེམས་ཅན་མཐའ་ཅན་མངོན་པར་འདོན་པར་འདོད་པ་རང་གི་ངང་གིས་འབྱུང་བ་  
ཉིད་དུ་འགྱུར་བོ། །

དེས་ན་ཅ་བའི་སྤྱིང་ཇི་གོམས་པར་བྱས་ནས་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྒྲུབ་  
པར་བྱའོ། །བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དེ་ནི་ནམ་པ་གཉིས་ཏེ། ཀྱུན་ཇོབ་དང་། དན་  
དམ་པའོ། །དེ་ལ་ཀྱུན་ཇོབ་པ་ནི་སྤྱིང་ཇིས་སེམས་ཅན་མཐའ་ཅན་མངོན་པར་  
འདོན་པར་དམ་བཅས་ནས་འགྲོ་བ་ལ་ཕན་ཉེག་པས་པའི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་སྤྱི་  
གྱུར་ཅིག་སྤྱུག་དུ་སྤྱོད་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་ཇོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་འདོད་པའི་<sup>6</sup>  
ནམ་པས་སེམས་དང་བོ་བསྐྱེད་པའོ། །དེ་ཡང་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ལེན་ལས་བརྟན་  
པའི་ཆོ་ག་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་ཤོམ་པ་ལ་གནས་པ་མཁས་པ་པ་པོ་ལ་  
བོ་ལས་<sup>7</sup>སེམས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །

---

1. ལྷ་པོ་-ཀྱི་ 2. ལྷ་ཅོ་-སྤྱུག་བསྐྱེད་(ཆད་-ཤིན་དུ་སྤྱུག་'པ་སྤྱུག་'བསྐྱེད་)  
3. ལྷ་པོ་-ཆོ། བྱང་ཇི་(ཆད་-དེའི་ཆོ་ཇོགས་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། བྱང་ཇི་ཆེན་) 4. ལྷ་པོ་-ཕྱོགས་  
ཐོག་(ཆད་-ཕྱོགས་'ལ་ཐོག་) 5. ལྷ་པོ་-ཕན་པའི་(ཆད་-ཕན་'གཉེག་པས་'པའི་) 6. ལྷ་པོ་-  
པའི་སེམས་(ཆད་-པའི་'ནམ་པས་'སེམས་) 7. ལྷ་པོ་-ལས་བསྐྱེད་(ཆད་-ལས་'སེམས་'བསྐྱེད་)



དེ་ལྟར་ཀུན་རྫོབ་པའི་<sup>1</sup>བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་ནས་དོན་དམ་པའི་བྱང་.....  
 ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར་འབད་བར་བྱའོ། །དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་  
 སེམས་དེ་ནི་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་སྟོན་པ་མཐའ་དག་དང་བུལ་བ། ཡིན་དུ་  
 བསལ་བ། དོན་དམ་པའི་སྟོན་ལུལ། གྱི་མ་མེད་པ། མི་གཡོ་བ། རྒྱུང་  
 མེད་པའི་མར་མེད་ཀྱི་ལྷན་ལྷན་མི་གཡོ་<sup>2</sup>བའོ། །དེ་འགྲུབ་<sup>3</sup>པ་ནི་དག་དུ་གྲས་པར་  
 ཡུན་རིང་དུ་ཞི་བཞག་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ནྟལ་འབྱོར་གོམས་པར་བྱས་པ་ལས་.....  
 འགྱུར་དེ། འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལས་<sup>4</sup>ཇི་སྟངས་དུ།  
 “བྱམས་པ་གང་ཡང་ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱི་འཇམ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་  
 ཀྱི་འཇམ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་ཀྱི་<sup>5</sup>དགོ་པའི་ཆོས་འཇིག་རྟེན་པ་དང་  
 འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞི་བཞག་དང་ལྷག་མཐོང་གི་འབྲས་བྱ་  
 ཡིན་པར་རིག་པར་བྱའོ།” །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། དེ་གཉིས་ཀྱིས་དྲིང་  
 ང་འཇིན་ཐམས་ཅད་བསྐྱུས་པའི་ཕྱིར་ནྟལ་འབྱོར་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་<sup>6</sup>དུས་ཐམས་  
 ཅད་དུ་ངེས་པར་ཞི་བཞག་དང་ལྷག་མཐོང་བཞེན་པར་བྱ་སྟེ། འཕགས་པ་  
 དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་དེ་ཉིད་ལས།<sup>7</sup> “བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ཇི་སྟངས་  
 དུ་ངས་ཉན་ཐོས་ནམས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་དང་། དེ་བཞིན་  
 གཤེགས་པ་ནམས་ཀྱི་<sup>8</sup>དྲིང་ང་འཇིན་ནམ་པ་དུ་མ་བསྟན་པ་གང་དག་ཡིན་པ་དེ་.....  
 དག་ཐམས་ཅད་ཞི་བཞག་དང་ལྷག་མཐོང་གིས་བསྐྱུས་པར་རིག་པར་བྱའོ།” །  
 ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ།

1. ལྷ་མོ་—ཀྱི་ 2. ལྷ་མོ་—གཡོས་ 3. ལྷ་མོ་—གྲུབ་ 4. ལྷ་མོ་—བཞག་(མདོ་ཙ་ ༣༤)

5. ལྷ་མོ་—ཀྱིས་ 6. ལྷ་མོ་—ཀྱི་ 7. ལྷ་མོ་—བཞག་(མདོ་ཙ་ ༣༤) 8. ལྷ་མོ་—ཀྱི་



ཞིག་ནས་ཙམ་འབའ་ཞིག་གོས་ས་པར་བྱས་པས་ནི་ནལ་འབྱོར་པ་ནམས་  
 གྱི་སྒྲིབ་<sup>1</sup>པ་མི་སྒྲོང་<sup>2</sup>གི། །ར་ཞིག་ཉོན་མོངས་པ་ནམས་པར་གཞོན་པ་ཙམ་དུ་ཟད་  
 དེ་<sup>3</sup> ཤེས་རབ་གྱི་སྒྲིབ་པ་བྱུང་<sup>4</sup>པ་མེད་པར་བག་ལ་ཉལ་ལེགས་པར་ཆོས་ས་མི་  
 སྤྱིད་པའི་ཕྱིར་བག་ལ་ཉལ་ལེགས་པར་ཆོས་ས་པར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་བས་ན་  
 འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངས་པར་འབྲེལ་བ་དེ་ཉིད་ལས།<sup>5</sup> “བསམ་གཏན་གྱིས་  
 ཉི་ཉོན་མོངས་པ་ནམས་ནམས་པར་གཞོན་རོ། །ཤེས་རབ་གྱིས་ནི་བག་ལ་ཉལ་  
 ལེགས་པར་འཛོམས་པར་བྱེད་རོ།” ཞེས་བཀའ་བསྩལ་དོ། འཕགས་པ་དྲིང་ངེ་  
 འཛོན་<sup>6</sup>ཀྱུལ་པོ་ལས་<sup>7</sup>ཀྱང་།

དྲིང་ངེ་འཛོན་དེ་སྐྱོམ་པར་བྱེད་མེད་གྱི།

དེ་ནི་བདག་དུ་འདྲུ་ཤེས་འཛིག་མི་བྱེད། །

དེ་ནི་ཉོན་མོངས་ཕྱིར་ཞིང་རབ་དུ་འབྱུགས། །

སྒྲིབ་སྒྲོང་འདི་ན་དྲིང་འཛོན་བསྐྱོམ་པ་བཞིན། །

གལ་དེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་དོག།

སོ་སོར་དེ་བདག་ས་གལ་དེ་བསྐྱོམ་པ་ནི། །

དེ་ཉིད་བྱ་ངན་འདས་ཐོབ་འབྲས་བྱའི་རྒྱ། །

རྒྱ་གཞན་གང་ཡིན་དེས་ནི་ཞི་མི་འགྱུར། ཞེས་གསུངས་སོ།

བྱང་རྒྱལ་སེམས་པའི་སྤྱི་སྒྲོང་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་། “གང་དག་བྱང་རྒྱལ་སེམས་

1. ལྷ་མེ་—སྒྲིབ་པ་ནམས་ 2. ལྷ་མེ་—སྒྲོང་གྱི་ 3. ལྷ་མེ་—དོ། 4. ལྷ་མེ་—འབྱུང་

5. ལྷ་—བཀའ་(མདོ་‘ཙ’ ༤༩) 6. ལྷ་མེ་—འཛོན་གྱི་ 7. ལྷ་—བཀའ་(མདོ་‘ད’ ༢༠)

8. དཀོན་མཆོག་གསུངས་པ་ལོ་ལོ་ལོ་ལོ་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དཔལ་ལྷ་སྒྲོང་’ ཅེས་པར་བྱང་འཛོན་འདི་མེད་

ཆོད་ལྷང་བས་མདོ་མཚན་མཐུན་པ་གཞན་དུ་མེད་དམ་དཔྱད་པར་བྱའོ།



དཔའི་མེ་མོད་ཀྱི་ཚོས་ཀྱི་ནམ་གངས་འདི་མ་ཐོས། འཕགས་པའི་ཚོས་འདུལ་  
 བ་མ་ཐོས་པར་དྲིང་འཛིན་ཅམ་གྱིས་ཚོག་པར་འཛིན་བ་ནི་ང་གྱུལ་གྱི་དབང་...  
 གིས་མངོན་པའི་ང་གྱུལ་དུ་ལུང་ཞིང་། ཟླེ་བ་དང་། གླ་བ་དང་། ཉ་བ་དང་།  
 འཆི་བ་དང་། ལྷ་ངན་དང་། སྒྲི་སྒྲུགས་འདོན་བ་དང་། སྒྲུག་བསྐལ་བ་དང་།  
 ཡིད་མི་བདེ་བ་དང་། འཁྲུག་པ་ལས་ཡོངས་སུ་མི་གྲོལ། འགྲོ་བ་དུག་གི་<sup>2</sup>  
 འཁོར་བ་ལས་ཡོངས་སུ་མི་གྲོལ། སྒྲུག་བསྐལ་གྱི་ཕུང་བོ་ལས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་  
 མི་གྲོལ་དེ། དེ་ལ་དགོངས་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་འདི་སྐད་ཅེས། གཞན་  
 ལས་<sup>3</sup>ཇེས་སུ་མཐུན་པ་ཐོས་བ་ནི་གླ་གི་ལས་གྲོལ་བར་འགྱུར་རོ། ཞེས་བཀའ་  
 བསྟུན་དོ།” ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་ལྟ་བུས་ན་སྒྲིབ་པ་མཐའ་དག་སྐྱངས་ནས་ཡོངས་སུ་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་...  
 འབྱུང་བར་འདོད་པས་<sup>4</sup>ཞི་གནས་ལ་གནས་ཤིང་ཤེས་རབ་བསྒྲོམ་པར་བྱའོ། །  
 དེ་སྐད་དུ། འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བཅེགས་པ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་བཀའ་སྟུལ་དེ།  
 ཚུལ་ཁྲིམས་ལ་ནི་གནས་ནས་དྲིང་འཛིན་ཐོབ་ཐེ། །  
 དྲིང་འཛིན་ཐོབ་ནས་ཀྱང་ཤེས་རབ་སྒྲོམ་པར་བྱེད། །  
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནི་ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པ་འཐོབ། །  
 ཡེ་ཤེས་ནམ་པར་དག་པས་ཚུལ་ཁྲིམས་ཕུན་སུམ་ཚོགས། །  
 ཞེས་བཀའ་བསྟུན་དོ། །འཕགས་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་བསྒྲོམ་པའི་མདོ་

1. ལྷ་མོ་—ལྷུ་དབང་(ཆད་—ལྷུ་གྱི་དབང་) 2. ལྷ་མོ་—དུག་དུ་

3. ལྷ་ལྷ་—གཞན་ལ་(ཆད་—གཞན་ལས་) 4. ལྷ་མོ་—བ་

5. ལྷ་མོ་—བཀའ་(དཀོན་བཅེགས་—ཆ་འདོད་སྐྱང་གིས་ལྷུ་པའི་ལྷུ་ ༡༩༩)



ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “རིགས་ཀྱི་བྱ་ཤེས་རབ་ལ་ཉེ་བར་མི་གནས་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
དབང་<sup>2</sup>རྣམས་ཀྱིས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཇི་ལྟར་ཡང་འབྱུང་  
བར་ང་མི་སྒྲུའོ། །རིགས་ཀྱི་བྱ་རྣམས་གྲངས་འདིས་ཀྱང་འདྲ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
དབང་རྣམས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་འབྱུང་བ་གང་ཅི་ཡང་  
ཆུང་།<sup>3</sup> དེ་ཐམས་ཅད་ནི་རྣམས་པར་མ་གཤེད་ས་པའི་སེམས་ཀྱིས་<sup>4</sup>དོན་དང་ཆོས་  
ཡང་དག་པར་བསམས་པ་ལས་བྱུང་བར་རིག་པར་བྱའོ།” ཞེས་བཀའ་བསྩལ་དོ།

ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་རྣལ་མཐོང་འབང་ཞིག་གིས་ནི་ནྟེ་འབྱོར་བའི་……  
སེམས་ལྷལ་རྣམས་ལ་རྣམས་པར་གཤེད་པར་འབྱུང་གི།<sup>6</sup> ཆུང་གི་ནང་ན་འདྲུག་  
བའི་མར་མེ་བཞིན་དུ་བརྟན་<sup>7</sup>པར་མ་འབྱུར་པོ། དེ་བས་ན་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྣང་བ་  
ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་འབྱུང་ཟླ། དེ་ལྟར་བས་ན་གཉིས་ཀ་དང་འདྲ་བར་བརྟེན་  
བར་བྱའོ། དེའི་ཕྱིར་འཕགས་པ་ཡོངས་སུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཆེན་པོ་འི་  
མདོ་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་། “ཉན་ཐོས་རྣམས་ཀྱིས་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་མི་  
མཐོང་ཟླ། ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཤས་ཆེ་བའི་ཕྱིར་དང་། ཤེས་རབ་ཆུང་བའི་ཕྱིར་  
རོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་རྣམས་ཀྱིས་ནི་མཐོང་མཛད་ཀྱི་མི་གསལ་དེ། ཤེས་  
རབ་ཀྱི་ཤས་ཆེ་བའི་ཕྱིར་དང་། ཉིང་འཛིན་ཆུང་བའི་ཕྱིར་<sup>9</sup>རོ། །དེ་བཞིན་  
གཤེགས་པས་ནི་ཐམས་ཅད་གཟིགས་དེ། ཞི་གནས་དང་རྣལ་མཐོང་མཚུངས་  
པར་ལྡན་བའི་ཕྱིར་རོ།” ཞེས་བཀའ་བསྩལ་དོ། ཞི་གནས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་

- 
1. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་པ་ 27)
  2. ལྟེ་པེ་—དབང་ཤི་ཐེག་པ་པ་རྣམས་ཀྱི་ཐེག་པ་
  3. ལྟེ་པེ་—བྱང་ཆུབ་སེམས་ 4. ལྟེ་པེ་—ཀྱི་ 5. ལྟེ་པེ་—གཤེད་ས་ 6. ལྟེ་པེ་—གྱིས་
  7. ལྟེ་པེ་—གནས་ 8. ཆོས་ཞེས་ངེས་ཆེད་མ་བྱ་བ།
  9. ལྟེ་པེ་—ཕྱིར་དང་



ནི་མར་མེ་རྒྱང་གིས་<sup>1</sup>མ་བསྐྱོད་པ་བཞིན་དུ་ནམ་པར་དོག་པའི་རྒྱང་ནམས་ཀྱིས་<sup>2</sup>  
 སེམས་གཡོ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །ལྷག་མཐོང་གིས་ནི་ལྷ་བ་ངན་པའི་བྲི་མ་མཐའ་  
 དག་སྤངས་པས་གཞན་དག་གིས་མི་བྱེད་ད། རྒྱ་བ་སྒྲོན་མེདི་མདོ་ལས་<sup>3</sup>ཇི་སྐད་དུ།  
 ཞི་གནས་སྟོབས་ཀྱིས་གཡོ་བ་མེད་པར་འགྱུར།

ལྷག་མཐོང་གིས་ནི་རེ་དང་འདྲ་བར་འགྱུར། །ཞེས་གསུངས་པ་  
 ལྟ་བུའོ། །དེ་ལྷ་བས་ན་གཉིས་ཀ་ལ་ནལ་འབྱོར་དུ་བྱས་པར་གནས་སོ།།

དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་ནལ་འབྱོར་བས་གང་གིས་བདེ་བར་སྐྱར་དུ་ཞི་.....  
 གནས་དང་ལྷག་མཐོང་འགྱུར་བར་འགྱུར་བ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་ཚོགས་  
 ལ་ཇི་བཞུན་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཞི་གནས་ཀྱི་ཚོགས་གང་ཞིན། མཐུན་པའི་ཡུལ་  
 ན་གནས་པ་དང་། འདོད་པ་རྒྱང་བ་དང་། ཚོག་ཤེས་པ་དང་། བྱ་བ་མང་  
 བོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་དང་། རྒྱལ་ཁྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་དང་། འདོད་པ་  
 ལ་སོགས་པའི་ནམ་པར་དོག་པ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པའོ།།

དེ་ལ་ཡོན་ཏན་ལྷ་དག་དང་ལྷན་པ་ནི་མཐུན་པའི་ཡུལ་ཡིན་པར་ཤེས་པར་  
 བྱ་སྟེ། གོས་དང་ཟས་ལ་སོགས་པ་ཚོགས་མེད་པར་རྟེན་པའི་ཕྱིར་རྟེན་སྒྲ་བ་  
 དང་། སྤྱི་བོ་མི་སྐྱན་པ་དང་དགྲ་ལ་སོགས་པ་མི་གནས་པའི་<sup>4</sup>ཕྱིར་གནས་བཟང་  
 པ་དང་། ནད་མེད་པའི་ས་ཡིན་པས་ས་བཟང་བ་དང་། གྲོགས་རྒྱལ་ཁྲིམས་  
 དང་ལྷན་པ་<sup>5</sup>ལྷ་བ་མཚུངས་པ་ཡིན་པས་གྲོགས་བཟང་བ་དང་། རྟོན་མོ་སྤྱི་བོ་

1. ལྷ་བེ་གི་ 2. ལྷ་བེ་ཀྱི་ 3. ལྷ་བ་ལྷན་(མདོ་དུ་ 20) རྒྱ་བ་སྒྲོན་མེདི་མདོ་དང་།

དྲིང་ངེ་འཛོན་བྱུང་བའི་མདོ་ཞེས་བ་མཚན་ཐ་དེ་དུ་བཞུད་པ་ལས་མདོ་ཐ་དེ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།།

4. ལྷ་བེ་བའི་གནས་(ཆད་བའི་བྱེད་གནས་)

5. ལྷ་བ་བ་མཚུངས་(ཆད་ལྷན་པ་ལྷ་བ་མཚུངས་)



མང་བོ་དག་གིས་མ་གང་བའི་ཕྱིར་དང་། མཚན་མོ་སྐྱེ་ཆུང་བའི་ཕྱིར་ལེགས་  
 བར་ལྷན་པའོ། འདྲོད་པ་ཆུང་བ་གང་ཞེ་ན། ཆོས་གོས་ལ་སོགས་<sup>1</sup>པ་བཟང་  
 བོའམ་མང་བོ་ལ་ལྷག་པར་ཆགས་པ་མེད་པའོ། །ཆོག་གེས་པ་གང་ཞེ་ན།  
 ཆོས་གོས་ལ་སོང་བ་ངན་ངོན་ཅམ་རྟེན་པས་དྲག་དུ་ཆོག་གེས་པ་གང་ཡིན་པའོ། །  
 བྱ་བ་མང་བོ་ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་གང་ཞེ་ན། ཉོ་ཚང་ལ་སོགས་པ་ལས་ངན་  
 བ་ཡོངས་སུ་སྤང་བ་དང་། བྱིས་པ་དང་རབ་དུ་བྱང་བ་གང་དག་ཏུ་ཅང་སྒྲིམ་  
 འདྲིན་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤང་བ་དང་། སྒྲན་བྱེད་པ་སྐར་མ་རྩི་བ་ལ་སོགས་པ་  
 ཡོངས་སུ་སྤངས་པ་<sup>2</sup>གང་ཡིན་པའོ། །

ཚུལ་ཁྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་གང་ཞེ་ན། སྒྲིམ་པ་གཉིས་ཀྱི་ལ་ཡང་རང་  
 བཞིན་དང་བཅས་པའི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་དང་བཅས་པའི་བསྐྱེད་པའི་གཞི་མི་འདུལ་བ་  
 དང་། བག་མེད་པར་རལ་ན་ཡང་སྐྱེན་པ་སྐྱེན་<sup>3</sup>པར་འགྱུར་པས་ཆོས་བཞིན་དུ་བྱེད་  
 པ་དང་། ཉན་ཐོས་ཀྱི་སྒྲིམ་པ་ལ་ཕམ་པ་བཅོས་སུ་མི་ཆུང་བར་གསུངས་པ་གང་  
 ཡིན་པ་དེ་ལ་ཡང་འགྱུར་པ་རང་ལྷན་པ་དང་། བྱིས་མི་བྱ་བའི་སེམས་དང་ལྷན་  
 པ་དང་། སེམས་གང་གིས་ལས་དེ་བྱས་པའི་སེམས་དེ་ལ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་  
 སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཕྱིར་རམ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་གཤམས་  
 པའི་ཕྱིར་དེའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་ཁོ་ན་ཡིན་པར་བརྗོད་པར་བྱའོ། །  
 དེ་ནི་འཕགས་པ་མ་སྐྱེས་དགའི་འགྱུར་པ་བསལ་<sup>4</sup>པ་ལས་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་རྒྱ་  
 བར་བྱའོ། །དེ་བས་ན་<sup>5</sup>དེ་འགྱུར་པ་མེད་པར་བྱས་ལ་སྒྲིམ་པ་ལ་མངོན་པར་  
 བརྗོད་པར་བྱའོ། །

1. ལྷ་མོ་-སོགས་བཟང་ 2. ལྷ་མོ་-བ་ཡོན་(ཆད་-བ་གང་ཡོན་) 3. ལྷ་མོ་-སྐྱེན་པས་

4. ལྷ་མོ་-གསལ་ 5. ལྷ་མོ་-ན་འགྱུར་



འདོད་པ་ནམས་ལ་ཡང་ཚེ་འདི་དང་ཚེ་ཕྱི་མ་ལ་ཉེས་དམགས་ནམ་པ་མང་  
 བོར་འགྱུར་བར་ཡིད་ལ་བྱས་ལ་དེ་དག་ལ་ནམ་བར་རྟོག་པ་སྤང་བར་བྱའོ། །  
 ནམ་པ་གཅིག་དུ་ན་འཁོར་བ་<sup>1</sup>པའི་དངོས་པོ་སྤྲུག་པའམ་མི་སྤྲུག་པ་ཡང་ཅུང་སྟེ།  
 དེ་<sup>2</sup>དག་ཐམས་ཅད་ནི་ནམ་བར་འཇིག་པའི་ཚོས་ཅན་མི་བརྟན་པ་སྟེ། གཤམ་མི་  
 ཟ་བར་དེ་དག་ཐམས་ཅད་<sup>3</sup>དང་བདག་རིང་བོར་མི་ཐོགས་པར་འབྲལ་བར་གྱུར་ན།  
 བདག་དེ་ལ་ཅི་ཞིག་སྤྲུག་པར་ཆགས་པ་ལ་སོགས་པར་འགྱུར་སྟམ་དུ་བསྐྱོམས་་་་  
 བས་ནམ་བར་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་སྤང་བར་བྱའོ། །

སྤྲུག་མཐོང་གི་ཚོགས་གང་<sup>4</sup>ཞེ་ན། སྦྱིས་བྱ་དམ་པ་ལ་བརྟེན་པ་དང་།  
 མང་དུ་ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་བཙལ་བ་དང་། ཚུལ་བཞིན་སེམས་པའོ། །དེ་ལ་  
 སྦྱིས་བྱ་དམ་པ་ཇི་ལྟ་བུ་<sup>5</sup>ལ་བརྟེན་བར་བྱ་ཞེ་ན། གང་མང་དུ་ཐོས་པ་དང་།  
 ཚོག་གསལ་བ་དང་། སྦྱིང་རྒྱུ་དང་ལྡན་པ་དང་། སྦྱོ་བ་བཟོད་པའོ། །

དེ་ལ་མང་དུ་ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་བཙལ་བ་གང་ཞེ་ན། གང་བཙོས་ལྡན་  
 འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་ཡན་ལག་བཅུ་གཉིས་པོ་ངེས་པའི་དོན་དང་དྲང་བའི་དོན་ལ་  
 གྱུས་བར་བྱས་ཤིང་ཤིན་དུ་ཉན་པ་སྟེ། འདི་ལྟར་འཕྲུ་བ་དགོངས་པ་ངེས་པར་  
 འབྲེལ་བ་ལས།<sup>6</sup> “འཕགས་པའི་གཏམ་འདོད་པ་བཞིན་དུ་ས་ཐོས་པ་ནི་སྤྲུག་  
 མཐོང་གི་གོགས་ཡོན་ནོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། དེ་ཉིད་ལས།<sup>7</sup> “སྤྲུག་མཐོང་  
 ནི་ཐོས་པ་དང་བསམས་པ་ལས་བྱུང་བའི་ལྟ་བ་ནམ་བར་དག་པའི་རྒྱ་ལས་བྱུང་བ་

1. ལྟ་བ་—པའི་དངོས་ 2. ལྟ་བ་—དེ་ཐམས་ 3. ལྟ་བ་—ཅད་རིང་བོར་(ཆད་—ཅད་དྲང་བདག་  
 རིང་བོར་) 4. ལྟ་བ་—གང་ཞེ་ག 5. ལྟ་བ་—བྱ་བརྟེན་ 6. ལྟ་བ་—བཀའ་(མདོ་ཙ་མ་ལ་  
 7. ལྟ་བ་—བཀའ་(མདོ་ཙ་མ་ལ་)







གཞིན་པའི་བསམ་བ་ཅན་གྱིས་<sup>1</sup>སྤྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་བྱས་ལ། ཕྱོགས་བཅུ་  
ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡན་ལག་...  
ལུས་ཕྱག་བྱས་ནས། སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྐྱ་གཟུགས་རི་  
མོ་ལ་སོགས་པ་མདུན་དུ་བཞག་གས་གཞན་དུ་ཡང་རྒྱུ་ཤི། དེ་དག་ལ་ཅི་རྒྱས་  
ཀྱིས་མཆོད་པ་དང་བསྟོད་པ་བྱས་ལ་རང་གི་སྤྲིག་པ་བཤགས་ནས་འགྲོ་བ་མཐའ་  
དག་གི་བསོད་ནམས་ལ་ཇེས་སུ་ཡི་རང་བར་བྱས་ལ། ལྷན་ཤིན་དུ་འཇམ་པོ་<sup>2</sup>  
བདེ་བ་ལ་ཇི་བཅུན་ནས་བར་སྤང་མཛད་ཀྱི་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་ལྷ་བྱའས། སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་  
ཕྱིན་དུ་ཡང་རྒྱུ་ཤི། མིག་ཏུ་ཅང་ཡང་མི་དགྲ། ཏུ་ཅང་ཡང་མི་གཟུམ་<sup>3</sup>པར་སྤྲི་  
ཅི་མོར་གཏད་<sup>4</sup>ཅིང་། ལུས་ཏུ་ཅང་ཡང་མི་སྦྱ།<sup>5</sup> ཏུ་ཅང་ཡང་མི་དགྲ་བར་  
དྲང་བོར་བསྤངས་ལ་དྲན་བ་ནང་དུ་བཞག་ཤི་འདུག་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ཕྱག་པ་  
མཉམ་པར་བཞག་<sup>6</sup>ལ་མགོ་མི་མཐོ་མི་དམའ་ཞིང་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་མ་ཡོ་བར་...  
བཞག་ཤི། ལྷ་ནས་ལྷེ་བའི་བར་དྲང་བོར་བཞག་གོ། མོ་དང་མཆུ་ཡང་ཐ་མལ་  
པར་བཞག་གོ། ལྷེ་ཡང་ཡ་<sup>7</sup>མོ་འི་དྲུང་དུ་གཞན་<sup>8</sup>འོ། །དབྱགས་ཕྱི་ནང་དུ་  
རྒྱ་བ་ཡང་སྒྲ་ཅན་དང་། རྒྱམས་<sup>9</sup>པ་ཅན་དང་། དབྱགས་གོད་པ་ཅན་དུ་མི་  
བཏང་གི། ཅི་ནས་ཀྱང་མི་ཚོར་བར་དལ་<sup>10</sup>བྱ་དལ་བྱས་ལྷན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཚུལ་  
གྱིས་དབྱགས་ནང་དུ་རྒྱབ་པ་དང་ཕྱིར་འབྱུང་བ་དེ་ལྟར་བྱའོ། །

དེ་ལ་ཐོག་མར་རེ་ཞིག་ཞི་གནས་བསྐྱབ་པར་བྱ་ཤི། ཕྱི་རོལ་གྱི་ཡུལ་ལ་  
ནས་བར་གཡོང་བ་ཞི་ནས་ནང་དུ་དམིགས་པ་ལ་རྒྱན་དུ་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་...

1. ལྷ་མེ་གྱི་ 2. ལྷ་མེ་བ་ 3. ལྷ་མེ་ཟུམ་ 4. ལྷ་མེ་བཟུང་ 5. ལྷ་མེ་དགྲ་

6. ལྷ་མེ་གཞན་ 7. ལྷ་མེ་ལས་ 8. ལྷ་མེ་གཞན་ 9. ལྷ་མེ་

10. ལྷ་མེ་བར་དལ་བྱས་ལྷན་



ལ་དགའ་བ་དང་ཤིན་ཏུ་སྤངས་པ་དང་ལྷན་པའི་སེམས་ཉིད་ལ་གནས་པ་ནི་ནི་.....  
གནས་ཞེས་བྱའོ། །ཞི་གནས་དེ་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་ཆོ་དེ་ཁོ་ན་ལ་ནམ་པར་  
དབྱེད་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ལྷག་མཐོང་ཡིན་དེ། འཕགས་པ་དགོན་མཆོག་སྤྱིན་  
ལས་<sup>1</sup>ཇི་སྤྱད་དུ། “ཞི་གནས་ནི་སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །ལྷག་མཐོང་ནི་  
ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་བའོ།” །ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །

འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲེལ་བ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་། “བཅོམ་ལྷན་  
འདས་ཇི་ལྟར་ནི་གནས་ཡོངས་སུ་ཆོལ་བར་བགྱིད་པ་དང་། ལྷག་མཐོང་ལ་  
མཁས་པ་ལགས། བཀའ་སྤྱུལ་བ། དུམས་པ་ངས་ཆོས་གདགས་པ་  
ནམ་པར་གཞིག་པ་འདི་ལྟ་སྟེ། མདོ་འི་སྟེ་དང་། དབྱངས་ཀྱིས་བསྟན་པའི་  
སྟེ་དང་། ལུང་དུ་བསྟན་པའི་སྟེ་དང་།<sup>3</sup> ཆོགས་སུ་བཅད་པའི་སྟེ་དང་།  
ཆེད་དུ་བཟོད་པའི་སྟེ་དང་། སྤྱོད་གཞིའི་སྟེ་དང་། རྟོགས་<sup>4</sup>པ་བཟོད་པའི་སྟེ་  
དང་། དེ་ལྟ་བུ་བྱུང་བའི་སྟེ་དང་། སྦྱེས་པ་རབས་ཀྱི་སྟེ་དང་། ཤིན་ཏུ་  
གྱས་པའི་སྟེ་དང་། མད་དུ་བྱུང་བའི་<sup>5</sup>ཆོས་ཀྱི་སྟེ་དང་། གདན་ལ་པལ་བར་  
བསྟན་པའི་སྟེ་གང་དག་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་ལ་བཤད་པ་དེ་དག་བྱང་ཆུབ་  
སེམས་དབས་ལེགས་པར་ཐོས། ལེགས་པར་གཞུང་། ཁ་རྟོན་བྱང་བར་བྱས།  
ཡིད་ཀྱིས་ལེགས་པར་བརྟགས། མཐོང་བས་ཤིན་ཏུ་རྟོགས་པར་བྱས་ནས་དེ་  
གཅིག་ལྷ་དབེན་པར་འདུག་སྟེ་<sup>6</sup>ནང་དུ་ཡང་དག་བཞག་ནས་ཇི་ལྟར་ལེགས་པར་  
བསམས་པའི་ཆོས་དེ་དག་ཉིད་ཡིད་ལ་བྱེད་ཅིང་སེམས་གང་གིས་ཡིད་ལ་བྱེད་.....

- 
1. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་ལྟ་2) 2. ལྷ་-བཀའ་(མདོ་ལྟ་26) 3. ལྷ་མེ-སྟེ་དང་། ཆེད་  
(ཆེད་-སྟེ་དང་། ཆོགས་སུ་བཅད་པའི་སྟེ་དང་། ཆེད་དུ་) 4. ལྷ་མེ-རྟོག་  
5. ལྷ་མེ-བའི་སྟེ་(ཆེད་-བྱུང་བ་པའི་ཆོས་ཀྱི་སྟེ་) 6. ལྷ་མེ-དེ་



བའི་སེམས་<sup>1</sup>དེ་ནང་དུ་རྒྱན་ཆགས་སུ་ཡིད་ལ་བྱེད་བས་ཡིད་ལ་བྱེད་དོ། །<sup>2</sup>དེ་  
 ལྟར་ཞུགས་ཤིང་དེ་ལ་ལན་མང་དུ་གནས་བ་དེ་ལ་ལུས་<sup>3</sup>ཤིན་དུ་སྤངས་བ་<sup>4</sup>དང་།  
 སེམས་ཤིན་དུ་སྤངས་བ་འབྱུང་བ་གང་ཡིན་བ་དེ་ནི་ཞི་གནས་ཞེས་བྱ་སྟེ། །<sup>5</sup>དེ་  
 ལྟར་ན་བྱང་རྒྱུ་སེམས་དབའ་ཞི་གནས་ཡོངས་སུ་ཚོལ་བར་བྱེད་བ་ཡིན་ནོ། །  
 དེས་<sup>6</sup>ལུས་ཤིན་དུ་སྤངས་བ་དང་། སེམས་<sup>7</sup>ཤིན་དུ་སྤངས་བ་དེ་ཐོབ་ནས་དེ་  
 ཉིད་ལ་གནས་དེ། སེམས་ཀྱི་<sup>8</sup>རྣམ་པར་གཡེང་བ་སྤངས་ནས་ཇི་ལྟར་བསམས་<sup>9</sup>  
 བའི་ཚོས་དེ་དག་ཉིད་ནང་དུ་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྟོང་ཡུལ་གཟུགས་བརྟན་དུ་སོ་  
 སོར་རྟོག་བ་བྱེད།<sup>10</sup> མོས་བར་བྱེད་དོ། །དེ་ལྟར་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་སྟོང་ཡུལ་  
 གཟུགས་<sup>11</sup>བརྟན་དེ་དག་ལ་ཤེས་བྱའི་ངོན་དེ་རྣམ་པར་འབྱེད་བ་དང་། རབ་དུ་  
 རྣམ་པར་འབྱེད་བ་དང་། ཡོངས་སུ་རྟོག་བ་དང་། ཡོངས་སུ་རྟོག་བ་དང་།  
 བཟོད་བ་དང་། འདོད་བ་དང་། བྱེ་བྲག་འབྱེད་བ་དང་། ལྟ་བ་དང་།  
 རྟོག་<sup>12</sup>པ་གང་ཡིན་བ་དེ་ནི་རྣམ་མཐོང་ཞེས་བྱ་སྟེ། །དེ་ལྟར་ན་བྱང་རྒྱུ་སེམས་  
 དབའ་<sup>13</sup>ལྟག་མཐོང་ལ་མཁས་བ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་གསུངས་སོ། །

དེ་ལ་ནལ་འབྱོར་བ་ཞི་གནས་མངོན་བར་བསྐྱབ་<sup>14</sup>པར་འདོད་བས་ཐོག་  
 མར་<sup>15</sup>ཇེ་ཞིག་མདོ་འི་སྡེ་དང་། དབྱངས་ཀྱིས་བརྟན་བའི་སྡེ་ལ་སོང་<sup>16</sup>པ་གསུང་  
 རབ་མཐའ་དག་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་གཞིལ་བ། དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་བབ་བ། དེ་

1. ལྟ་བུ་—སེམས་ནང་ 2. ལྟ་བུ་—ལུས་ནི་ 3. ལྟ་བུ་—འབྱུང་(ཆད་—བ་དང་སེམས་ཤིན་དུ་  
 སྤངས་བ་འབྱུང་) 4. ལྟ་བུ་—དྲིང་ 5. ལྟ་བུ་—སེམས་ཡོངས་སུ་སྤངས་

6. ལྟ་བུ་—སེམས་ཀྱིས་ 7. ལྟ་བུ་—བསམ་ 8. ལྟ་བུ་—བྱེད་དོ། 9. ལྟ་བུ་—གཟུགས་དེ་  
 (ཆད་—གཟུགས་བརྟན་དེ་) 10. ལྟ་བུ་—རྟོག་ 11. ལྟ་བུ་—དབའི་

12. ལྟ་བུ་—སྐྱབ་ 13. ལྟ་བུ་—མ་ 14. ལྟ་བུ་—སོགས་གསུང་རབ་



བཞིན་ཉིད་ལ་འབབ་<sup>1</sup>པའོ་ཞེས་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་དེ་ལ་སེམས་ཉི་བར་བཞག་...  
 བར་བྱའོ། །ནམ་བུ་གཅིག་དུ་ན་ནམ་བུ་ཇི་ཅམ་གྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་  
 བར་བྱུང་<sup>2</sup>པ་ཐུང་པོ་ལ་སོགས་པ་དེ་ལ་སེམས་ཉི་བར་བཞག་པར་བྱའོ། །ནམ་  
 བུ་གཅིག་དུ་ན་ཇི་ལྟར་མཐོང་བ་དང་། ཇི་ལྟར་ཐོས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐུ་  
 གཟུགས་ལ་སེམས་བཞག་པར་བྱ་སྟེ། འཕགས་པ་དྲིང་འཛིན་གྱི་བྱུང་པོ་  
 ལས་<sup>3</sup>ཇི་སྐད་དུ།

གསེར་གྱི་ཁ་དོག་ལྟ་བུའི་སྐུ་ལས་ཀྱིས།<sup>4</sup>

འཛིག་དེན་མགོན་པོ་ཀུན་དུ་མཛོས་བ་སྟེ།

དམིགས་པ་དེ་ལ་གང་གིས་<sup>5</sup>སེམས་འཇུག་པ།

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་དེ་མཉམ་བཞག་ཅེས་བྱ། ཞེས་གསུངས་

པ་ལྟ་བུའོ།

དེ་ལྟར་གང་ལ་འདོད་པའི་དམིགས་པ་དེ་ལ་སེམས་བཞག་ནས་ད་ཉིད་ལ་  
 ཕྱིར་ཞིང་རྒྱན་<sup>6</sup>དུ་སེམས་བཞག་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་ཉི་བར་བཞག་ནས་སེམས་  
 ལ་འདི་ལྟར་དབྱེད་<sup>7</sup>པར་བྱ་སྟེ། ཅི་དམིགས་པ་ལེགས་པར་འཛིན་དམ།<sup>8</sup> འོན་  
 དེ་བྱིང་ངམ། འོན་དེ་སྤྱི་རྒྱུ་ལྱུང་ལ་ནམ་བུར་འཕྱར་བས་ནམ་བུར་གཡེངས་  
 སམ་སྐྱེས་དུ་བཏོག་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་གཡ་དེ་སྐྱུ་གས་པ་དང་གཉིད་ཀྱིས་ནོན་  
 ནས་སེམས་བྱིང་ངམ། བྱིང་དུ་དྲོགས་པ་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ། མཆོག་དུ་དགའ་  
 བའི་དངོས་པོ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་སྐུ་གཟུགས་ལ་སོང་བའོ། །སྤང་བའི་འདུ་ཤེས་

1. ལྟ་བུ་-བུ་ 2. ལྟ་བུ་-འབྱུང་བ་ 2. ལྟ་བུ་གཉིད་(མདོ་དུ་དེ་ ༡༩)

4. ལྟ་བུ་-ཀྱི་ 5. ལྟ་བུ་-གེ་ 6. ལྟ་བུ་-རྒྱན་དུ་བཞག་(ཆད་-རྒྱན་དུ་'སེམས་'བཞག་)

7. ལྟ་བུ་-སྤྱེད་ 8. ལྟ་བུ་-ནམ་



ཡིད་ལ་བྱུང་། །དེ་ནས་བྱིང་བ་ཞི་བར་བྱས་ནས་ཅི་ནས་ཀྱང་དམིགས་པ་དེ་ཉིད་<sup>1</sup>  
ལ་སེམས་ཀྱིས་<sup>2</sup>དམིགས་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་གྱུར་པ་དེ་ལྟར་བྱུང་།

གང་གི་ཆོ་དམུས་ཡོང་ལྟ་བུའམ། མི་སྐྱེས་པར་ཞུགས་པ་ལྟ་བུའམ། མིག་  
བཅུམས་པ་ལྟ་བུར་སེམས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ཤིན་ཏུ་གསལ་བར་མི་མཐོང་བ་དེའི་  
ཆོ་བྱིང་བར་གྱུར་བར་རིག་པར་བྱུང་། །གང་གི་ཆོ་བྱི་རོལ་གྱི་གཞུགས་ལ་སོད་  
པ་ལ་དེ་དག་གི་ཡོན་ཏན་དོག་པས་རྒྱལ་<sup>3</sup>པའི་ཕྱིར་རམ། གཞན་ཡིད་ལ་བྱིད་  
པས་སམ། རྒྱུ་བྱིང་བའི་ཡུལ་ལ་འདོད་པས་སེམས་གོད་བའམ་གོད་ཏུ་<sup>4</sup>དྲོད་  
བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་འདུ་བྱིད་ཐམས་ཅད་མི་དོག་པ་དང་། རྒྱལ་བསྐལ་བ་ལ་  
སོགས་པ་ཡིད་འབྱུང་བར་འབྱུར་བའི་དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱུང་། །དེ་ནས་ནས་  
བར་གཡང་བ་ཞི་བར་བྱས་ནས་<sup>5</sup>དྲན་པ་དང་ཤེས་བཞིན་གྱི་ཐལ་པས་ཡིད་<sup>6</sup>ཀྱི་……  
སྒྲུང་བོ་ཆོ་དམིགས་བའི་སྒྲོང་བོ་དེ་ཉིད་ལ་གདགས་པར་བྱུང་། །གང་གི་ཆོ་  
བྱིང་བ་དང་གོད་པ་མེད་པར་གྱུར་<sup>7</sup>དེ། དམིགས་པ་དེ་ལ་<sup>8</sup>སེམས་ནལ་ཏུ་འཇུག་  
བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་ནི་ཙུལ་བ་སྒྲོད་ལ་བཅང་སྒྲུམས་སུ་བྱ་ཞིང་། དེའི་ཆོ་<sup>9</sup>  
སྒྲིང་འདོད་ཀྱི་བར་ཏུ་འདུག་པར་བྱུང་། །དེ་ལྟར་ཞི་གནས་གོམས་པར་བྱས་པ་  
དེའི་ལྷན་<sup>10</sup>དང་སེམས་ཤིན་ཏུ་སྤངས་པར་གྱུར་པ་དང་། ཇི་ལྟར་འདོད་པ་  
བཞིན་ཏུ་དམིགས་པ་<sup>11</sup>ལ་སེམས་<sup>12</sup>རང་དབང་ཏུ་གྱུར་པ་དེའི་ཆོ་དེའི་ཞི་གནས་……  
གྲུབ་པ་ཡིན་པར་རིག་པར་བྱུང་། །

1. ལྟ་བུ་—ཉིད་སེམས་ 2. ལྟ་བུ་—ཀྱིས་ཤིན་ 3. ལྟ་བུ་—བཞུགས་ 4. ལྟ་བུ་—ཏུ་འཇུག་དོད་  
5. ལྟ་བུ་—ནས་ནས་པ་དང་ཤེས་བཞིན་ 6. ལྟ་བུ་—ཡིད་ལ་སྒྲུང་ 7. ལྟ་བུ་—འབྱུར་  
8. ལྟ་བུ་—ལ་ནལ་(ཆད་—དེ་ལ་སེམས་ནལ་) 9. ལྟ་བུ་—ཆོ་ནམ་སྒྲོད་ 10. ལྟ་བུ་—ལ་  
11. ལྟ་བུ་—པ་དེ་ལ་ 12. ལྟ་བུ་—སེམས་དབང་



དེ་ནས་ཞི་གནས་གྲུབ་ནས་ལྷག་མཐོང་བསྒྲིམ་པར་བྱ་ཏེ། འདི་སྐྱམ་དུ་  
 བསམ་པར་བྱའོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་བཀའ་ཐམས་ཅད་ནི་ལེགས་པར་  
 གསུངས་པ་ཏེ། མངོན་སུམ་<sup>1</sup>མཐ་བརྒྱད་པས་དེ་ཁོ་ན་མངོན་<sup>2</sup>པར་གསལ་བར་  
 བྱེད་པ་དང་། དེ་ཁོ་ན་ལ་གཞིལ་བ་ཉིད་དོ། །དེ་ཁོ་ན་ཤེས་ན་སྤང་བ་བྱུང་  
 བས་སྐྱན་པ་བསལ་བ་བཞིན་དུ་ལྷ་བའི་དྲ་བ་ཐམས་ཅད་<sup>3</sup>དང་བྲལ་བར་འགྱུར་རོ། །  
 ཞི་གནས་ཙམ་གྱིས་<sup>4</sup>ནི་ཡེ་ཤེས་དག་པར་མི་འགྱུར་ཞིང་སྒྲིབ་པའི་སྐྱན་པ་ཡང་……  
 སེལ་བར་མི་འགྱུར་གྱི། ཤེས་རབ་ཀྱིས་<sup>5</sup>ནི་དེ་ཁོ་ན་ལེགས་པར་བསྒྲིམས་ན་  
 ཡེ་ཤེས་ནས་པར་དག་པར་འགྱུར། ཤེས་རབ་ཁོ་ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་རྟོགས་པར་  
 འགྱུར། ཤེས་རབ་ཁོ་ནས་སྒྲིབ་པ་ཡང་དག་པར་སྤོང་བར་འགྱུར་དེ། དེ་ལྷ་  
 བས་ན་བདག་གིས་<sup>6</sup>ཞི་གནས་ལ་གནས་དེ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཡོངས་སུ་……  
 བཅོམ་པར་བྱའི། ཞི་གནས་ཙམ་གྱིས་<sup>7</sup>ནི་ཚོག་པར་འཛིན་པར་མི་བྱའོ་སྐྱམ་<sup>8</sup>  
 དུ་བསམ་མོ།

དེ་ཁོ་ན་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། གང་དོན་དམ་པར་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་གང་  
 ཟག་དང་ཚོས་ཀྱི་བདག་གཉིས་ཀྱིས་སྤོང་བ་ཉིད་དེ། དེ་ཡང་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རིལ་  
 དུ་ཕྱིན་པས་རྟོགས་པར་འགྱུར་གྱི། གཞན་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་དེ། འཕགས་པ་  
 དགོངས་པ་ངེས་པར་འགྲུལ་བ་ལས།<sup>9</sup> “བཅོམ་ལྷན་འདས་བྱང་རྒྱལ་སེམས་  
 དབས་ཚོས་ནམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་མཆིས་པ་ཉིད་པ་རིལ་དུ་ཕྱིན་པ་གང་གིས་<sup>10</sup>……

1. ལྷ་པོ་—ལྷ་མ་ལྷན་ (ཆད་—མངོན་སུམ་མཐ་བརྒྱད་) 2. ལྷ་མོ་—མངོན་སུམ་དུ་

3. ལྷ་པོ་—ཅད་ཐམས་ 4. ལྷ་པོ་—བྱི 5. ལྷ་པོ་—ཀྱི་

6. ལྷ་པོ་—གོ་ 7. ལྷ་པོ་—བྱི 8. ལྷ་པོ་—ལྷ་མ་ལྷན་ (ཆད་—ལྷ་མ་ལྷན་དུ་བསམ་མོ།)

9. ལྷ་པོ་—བཀའ་ (མདོ་ཙ་ ༤༦) 10. ལྷ་པོ་—གོ་



འཛིན་པ་ལགས། སྤྱན་རས་གཟིང་དབང་ཕྱག་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པས་  
འཛིན་དོ” ཞེས་ཆེ་སྒྲད་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེ་<sup>1</sup>ལྟ་བས་ན་ཞི་གནས་ལ་  
གནས་དེ་ཤེས་རབ་བསྒྲོམ་པར་བྱའོ། །

དེ་ལ་ནལ་འབྱོར་པས་འདི་ལྟར་ནས་པར་དབྱད་པར་བྱ་སྟེ། གང་ཟག་  
ནི་སྤང་བོ་དང་ཁམས་དང་སྦྱེ་མཆེད་ལས་གྲུད་ན་མི་དམིགས་སོ། །གང་ཟག་ནི་  
སྤང་བོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་དེ། སྤང་བོ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་  
ནི་མི་དྲག་པ་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། གང་ཟག་ནི་དྲག་པ་དང་།  
གཅིག་ཕྱིར་ང་བོ་ཡིན་པར་གཞན་དག་གིས་བདགས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་  
དམ་གཞན་དུ་བཟོད་དུ་མི་རུང་བའི་གང་ཟག་གི་དངོས་བོ་ཡོད་པར་མི་རུང་སྟེ།  
དངོས་བོ་ཡོད་པའི་ནས་པ་གཞན་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་འདི་ལྟ་སྟེ།  
འཛིག་དེན་གྱི་ང་དང་ངའི་ཞེས་བྱ་བ་འདི་ནི་འཁྲུལ་པ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་དབྱད་པར་བྱའོ།

ཆོས་<sup>2</sup>ལ་བདག་མེད་པ་ཡང་འདི་ལྟར་བསྒྲོམ་པར་བྱ་སྟེ། ཆོས་ཞེས་བྱ་  
བ་ནི་མདོར་བསྟུན་སྤང་བོ་ལྟ་དང་། སྦྱེ་མཆེད་བཅུག་ཉིས་དང་། ཁམས་བཙོ་  
བབྱད་དོ། །དེ་ལ་སྤང་བོ་དང་། སྦྱེ་མཆེད་དང་། ཁམས་<sup>3</sup>གཞུགས་ཅན་  
གང་དག་ཡིན་པ་དེ་དག་ནི་དོན་དམ་པར་ན་སེམས་ཀྱི་ནམ་པ་ལས་གྲུད་ན་མེད་དེ།  
དེ་དག་རྒྱལ་ཕྱ་རབ་དུ་བཤིག་ལ་རྒྱལ་ཕྱ་རབ་ནམས་ཀྱང་ཆ་ཤས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་……  
སོ་སོར་བདགས་<sup>4</sup>ན་ངོ་བོ་ཉིད་ངེས་པར་གཞུང་<sup>5</sup>དུ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་  
བས་ན་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ནས་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་<sup>6</sup>ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་……

1. ལྟ་བུ་—དེ་བས་ 2. ལྟ་བུ་—ཆོས་བདག་ 3. ལྟ་ཆོ་—ཁམས་དང་གཞུགས་

4. ལྟ་བུ་—རྟོག་ 5. ལྟ་བུ་—བཟུང་ 6. ལྟ་བུ་—པ་ན་



བ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་བའི་དབང་གིས་སྤྲོ་ལམ་ན་དཔེགས་པའི་གཞུགས་ལ་སོང་།  
 བ་སྤང་བ་བཞིན་དུ་བྱིས་བ་ནམས་ལ་སེམས་ཉིད་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ཕྱི་རེལ་།  
 དུ་ཆད་བ་བཞིན་དུ་སྤང་གི། དོན་དམ་པར་ན་འདྲི་ལ་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ནི་  
 སེམས་ཀྱི་ནམ་བུ་ལས་གྲུང་ན་མེད་དོ་ཞེས་དབྱུང་བར་བྱའོ། །དེ་འདྲི་སྤྲོ་ལ་དུ་  
 རྒྱུ་ལས་གསུམ་པོ་<sup>1</sup>འདྲི་ནི་སེམས་ཙམ་སོ་སྤྲོ་ལ་དུ་སེམས་ཤིང་། དེས་<sup>2</sup>དེ་ལྟར་  
 ཆོས་བདགས་པ་མཐའ་དག་ནི་སེམས་ཁོ་ན་ཡིན་པར་དོགས་ནས་<sup>3</sup>དེ་ལ་སོ་སོར་  
 བདགས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བདགས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་།  
 སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་དོགས་པོ། །དེ་འདྲི་ལྟར་དབྱུང་དོ། །

དོན་དམ་པར་ན་སེམས་ཀྱང་བདེན་པར་མི་བྱང་སྟེ། གང་གི་ཆོ་བརྒྱན་<sup>4</sup>  
 བའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་ནམ་བུ་འཛིན་པའི་སེམས་ཉིད་སྤྲོ་ཆོགས་  
 ཀྱི་<sup>5</sup>ནམ་བུ་སྤང་བ་དེའི་ཆོ་དེ་བདེན་པ་ཉིད་དུ་གཤམ་ལ་འགྱུར། ཇི་ལྟར་གཞུགས་  
 ལ་སོགས་པ་བརྒྱན་པ་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཀྱང་དེ་ལས་གྲུང་ན་མེད་པས་བརྒྱན་པ་།  
 ཉིད་དོ། །ཇི་ལྟར་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་སྤྲོ་ཆོགས་ཀྱི་ནམ་བུ་ཡིན་པས་གཅིག་  
 དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཀྱང་དེ་ལས་གྲུང་ན་མེད་པའི་  
 ཕྱིར་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་སེམས་ནི་སྤྲོ་ལ་  
 སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལྟ་བུ་ཁོ་ནའོ། །

སེམས་ཇི་ལྟར་བ་<sup>6</sup>དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་<sup>7</sup>ཀྱང་སྤྲོ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་  
 བོ་ཉིད་ལྟ་བུ་ཁོ་ནའོ་ཞེས་དབྱུང་དོ། །དེས་དེ་ལྟར་གཤམ་རབ་ཀྱིས་<sup>8</sup>སེམས་

1. ལྟ་བུ་གཞུགས་པ་ 2. ལྟ་བུ་-དེ་དོ་ 3. ལྟ་བུ་-ན་ 4. ལྟ་བུ་-རྒྱན་ 5. ལྟ་བུ་-ཀྱིས་  
 6. ལྟ་བུ་-བ་བཞིན་ 7. ལྟ་བུ་-ཅད་སྤྲོ་(ཆད་-ཅད་ཀྱང་སྤྲོ་) 8. ལྟ་བུ་-ཀྱི



གྲིང་བོ་<sup>1</sup>ཉིད་ལ་སོ་སོར་བརྟགས་ན་དོན་དམ་པར་སེམས་ནི་ནང་དུ་ཡང་མི་དམིགས།  
 ལྷ་རོལ་དུ་<sup>2</sup>ཡང་མི་དམིགས། གཉིས་ཀྱི་མེད་པར་ཡང་མི་དམིགས། འདས་  
 བའི་སེམས་ཀྱང་མི་དམིགས། མ་འོངས་པ་ཡང་མི་དམིགས། ཉ་ལྷར་བྱུང་བ་  
 ཡང་མི་དམིགས་སོ། །སེམས་སྒྲེ་བའི་ཆོ་<sup>3</sup>གང་ནས་ཀྱང་མི་འོང་། འགག་  
 བའི་ཆོ་<sup>4</sup>གང་དུ་ཡང་མི་འགྲོ་ཞེ། སེམས་ནི་གཟུང་<sup>5</sup>དུ་མེད་པ། བསྟན་དུ་  
 མེད་པ། གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་འོ། །བསྟན་དུ་མེད་ཅིང་གཟུང་དུ་མེད་ལ་  
 གཟུགས་ཅན་མ་ཡིན་པ་གང་ཡིན་པ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཅི་འདྲ་ཞེ་ན། འཕགས་  
 བ་དགོན་མཆོག་བརྟགས་པ་ལས་<sup>6</sup>ཇི་སྟངས་གསུངས་པ་ལྟ་བུ་ཞེ། “འོད་སྤངས་  
 སེམས་ནི་ཡོངས་སུ་བཅའ་ན་མི་ཆེད་དོ། །གང་མ་<sup>7</sup>ཆེད་པ་དེ་མི་དམིགས་སོ། །  
 གང་མི་དམིགས་པ་དེ་འདས་པ་ཡང་མ་ཡིན། མ་འོངས་པ་ཡང་མ་ཡིན། ཉ་  
 ལྷར་བྱུང་བ་ཡང་མ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་བྱ་ཆེར་འབྱུང་ངོ་། དེས་<sup>8</sup>དེ་ལྷར་བཏེ་  
 ན་སེམས་ཀྱི་དང་པོ་ཡང་དག་པར་ཇིས་སུ་མི་མཐོང་། བ་མ་ཡང་དག་པར་ཇིས་  
 སུ་མི་མཐོང་། བར་མ་ཡང་དག་པར་ཇིས་སུ་མི་མཐོང་ངོ་།

ཇི་ལྷར་སེམས་ལ་མཐའ་དང་དབྱས་མེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་  
 མཐའ་དང་དབྱས་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་དོ། །དེས་དེ་ལྷར་<sup>9</sup>སེམས་མཐའ་དང་  
 དབྱས་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་ནས་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་གང་ཡང་མི་དམིགས་སོ། །  
 སེམས་གང་གི་ཡོངས་སུ་དོག་པ་དེ་ཡང་སྤོང་བར་དོགས་སོ། །དེ་དོགས་པས་  
 སེམས་ཀྱི་ནམ་པར་བསྐྱབས་<sup>10</sup>པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཟུགས་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་

1. ལྷ་བོ་-དུ་ 2. ལྷ་ཅོ་-ཆོ་ཡང་ 3. ལྷ་ཅོ་-ཆོ་ཡང་ 4. ལྷ་བོ་-བཟུང་

5. ལྷ་-བཀའ་(དགོན་བརྟགས་ཆ་ ༡༤༠) 6. ལྷ་བོ་-མི་ 7. ལྷ་བོ་-དེ་

8. ལྷ་བོ་-ལྷར་མཐའ་ 9. ལྷ་བོ་-བསྐྱབ་



ཀྱང་ཡང་དག་པར་རྒྱུ་མི་མཐོང་ངོ་། །དེས་དེ་ལྟར་གྲུ་རབ་ཀྱིས་འཛིན་  
 བསམ་ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པར་རྒྱུ་མི་མཐོང་བས་གཞུགས་དྲག་གོ་  
 ཞེ་ལམ། མི་དྲག་གོ་ཞེ་ལམ། སྤྱོད་ངོ་ཞེ་ལམ། མི་སྤྱོད་ངོ་ཞེ་ལམ། རྒྱ་  
 བ་དང་བཅས་པའོ་ཞེ་ལམ། རྒྱ་བ་མེད་པའོ་ཞེ་ལམ། རྒྱ་བའོ་ཞེ་ལམ།  
 མ་རྒྱ་བའོ་ཞེ་ལམ། ཡོད་པའོ་ཞེ་ལམ། མེད་པའོ་ཞེས་ཉིད་དག་པར་མི་བྱེད་  
 རོ།<sup>3</sup> །ཇི་ལྟར་གཞུགས་ལ་དྲག་པར་མི་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཆོར་བ་དང་། འདུ་  
 གྲུ་དང་། འདུ་བྱེད་དང་། རྒྱ་བ་པར་གྲུ་བ་རྒྱ་མ་ལ་ཡང་དྲག་པར་མི་  
 བྱེད་ལོ། །ཆོས་ཅན་མ་གྲུབ་ན་དེའི་<sup>4</sup>བྱེ་བྲག་རྒྱ་མ་ལ་ཀྱང་མི་འགྲུབ་པས་དེ་ལ་དྲག་  
 པར་ག་ལ་འགྲུར། དེས་དེ་ལྟར་གྲུ་རབ་ཀྱིས་རྒྱ་བ་པར་དབྱེད་དེ་<sup>5</sup>གང་གི་ཆོ་  
 རྒྱ་འབྱུར་པས་དངོས་པོ་གང་གི་ངོ་བོ་ཉིད་དོན་དམ་པར་ངས་པར་མི་འཛིན་པ་  
 དེའི་ཆོ་རྒྱ་པར་མི་དྲག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་འཇུག་གོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་  
 ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་ཀྱང་དྲགས་སོ། །

གང་གྲུ་རབ་ཀྱིས་དངོས་པོ་འདི་ངོ་བོ་ཉིད་སོ་སོར་བདགས་ནས་མི་  
 བསྐྱེད་གྱི། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་པ་ཅེས་འབའ་ཞིག་སྐྱོམ་པར་བྱེད་  
 པ་དེའི་རྒྱ་བ་པར་དྲག་པ་རྒྱ་མ་ལ་མི་ལྟོག་ཅིང་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ཉིད་དྲགས་  
 པར་ཡང་མི་འགྲུར་དེ། གྲུ་རབ་ཀྱི་སྤྱོད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །འདི་ལྟར་  
 ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲག་པ་ཉིད་ལས་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟར་བཞིན་དུ་གྲུ་བའི་  
 མི་རྒྱ་ན་གཞུགས་ཤིང་གཞུགས་པའི་མི་བཞིན་དུ་དྲག་པའི་ཤིང་སྤྲེག་གོ། །ཞེས་

- 
1. ལྟ་བུ་ཀྱི་ 2. ལྟ་བུ་ཞེ་ལམ་ 3. ལྟ་བུ་དམ་ 4. ལྟ་བུ་དེའི་ཕྱིར་
  5. ལྟ་བུ་དེ་དངོས་པོ་གང་གི་ཆོ་ 6. ལྟ་བུ་དྲག་ 7. ལྟ་བུ་པ་དྲག་(ཆད་པ་ཉིད་དྲགས་)
  8. ལྟ་བུ་གཞུགས་



བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྩལ་15]།

འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྱིན་ལས་2ཀྱང་བཀའ་སྩལ་དེ།3 “དེ་ལྟར་སྤྱོན་  
ལ་མཁས་པ་དེ་སྤྱོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྤོང་བ་ཉིད་བསྐྱེམ་...  
བ་ལ་ནལ་འབྱོར་དུ་བྱེད་དོ། །དེ་སྤོང་བ་ཉིད་4ལ་བསྐྱེམ་པ་མང་བས་གནས་གང་  
དང་གང་དུ་སེམས་འཕྲོ་ཞིང་སེམས་མངོན་པར་དགའ་བའི་གནས་དེ་དང་དེ་དག་  
གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་བཅའ་ན་སྤོང་བར་རྟོགས་སོ། །སེམས་གང་ཡིན་པ་  
དེ་ཡང་བརྟགས་ན་སྤོང་བར་རྟོགས་སོ། །སེམས་གང་གིས་5རྟོགས་པ་དེ་ཡང་  
ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱན་དུ་བཅའ་ན་སྤོང་བར་རྟོགས་དེ། དེ་དེ་ལྟར་རྟོགས་པས་མཚན་  
མ་མེད་བའི་ནལ་འབྱོར་ལ་འཇུག་གོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །འདིས་6ནི་ཡོངས་  
སུ་རྟོག་7པ་སྤྱོན་8དུ་གཏོང་བ་ཉིད་མཚན་མ་མེད་པ་ཉིད་ལ་འཇུག་པར་བསྟན་དོ།9།  
ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡོངས་སུ་སྤོང་བ་ཅུ་མ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱི་དངོས་བོ་འི་ངོ་བོ་  
ཉིད་མི་དཔྱོད་10པར་11ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་དུ་འཇུག་པ་མི་སྤྱིད་པར་ཤིན་དུ་...  
གསལ་བར་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་12ལྟར་དེ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་གཞུགས་ལ་སོགས་  
བའི་དངོས་བོ་འི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བརྟགས་ནས་བསམ་...  
གཏན་བྱེད་གྱི། གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་གནས་ནས་བསམ་གཏན་མི་བྱེད་ཅིང་།  
འཇིག་རྟེན་འདི་དང་13འཇིག་རྟེན་པ་རྣམས་ཀྱི་བར་ལ་གནས་ནས་བསམ་གཏན་མི་...  
བྱེད་དེ།14 གཞུགས་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་མི་དམིགས་བའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ལྟ་

1. ལྟ་བུ་སྩལ་བ་ 2. ལྟ་བུ་(མདོ་ལྟ་ཅེས་) 3. ལྟ་བུ་-5]།

4. ལྟ་བུ་-9ད་བསྐྱེམ་པ་ 5. ལྟ་བུ་-གི 6. ལྟ་བུ་-འདི 7. ལྟ་བུ་-རྟོགས་

8. ལྟ་བུ་-མངོན་དུ་སྤོང་བ་ 9. ལྟ་བུ་-5 10. ལྟ་བུ་-སྤྱོད་ 11. ལྟ་བུ་-པར་མི་

(ཆད་-བར་ནམ་པར་མི) 12. ལྟ་བུ་-དེ་དེ་ལྟར་ 13. ལྟ་བུ་-དང་པ་རྣམས་ 14 ལྟ་བུ་-དོ།



བས་ན་མི་གནས་པའི་བསམ་གཏན་པ་ཞེས་བྱའོ།

ཤེས་རབ་ཀྱིས་དངོས་བོ་མཐའ་དག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བརྟགས་ནས་གང་གི་ཕྱིར་མི་དམིགས་པར་བསམ་གཏན་བྱེད་པ་དེའི་ཕྱིར་ཤེས་རབ་མཆོག་གི་བསམ་གཏན་པ་ཞེས་བྱ་སྟེ། འཕགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛོད་དང་། འཕགས་པ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེ་ལ་སོགས་པ་ལས་བསྟན་པ་བཞིན་ནོ།

དེ་ལྟར་གང་ཟག་དང་ཆོས་ལ་བདག་མེད་པའི་<sup>1</sup>དེ་ཁོ་ན་ལ་བྱུགས་པ་དེ་ཡོངས་སུ་བརྟག་པར་བྱ་བ་<sup>2</sup>བཟླ་བར་བྱ་བ་གཞན་མེད་པས་དྲི་བ་དང་དབྱེད་པར་བྱ་བ་དང་བྱལ་བ། བཛོད་པ་མེད་པ་དང་གཅིག་དུ་གྱུར་པའི་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་རང་གི་ངང་གིས་<sup>3</sup>འཇུག་པ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པས་<sup>4</sup>དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་བསྐྱོམ་ཞིང་འདུག་པར་བྱའོ། དེར་གནས་ནས་སེམས་ཀྱི་རྒྱུན་ནས་བར་མི་གཡེང་བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་བར་སྐབས་སུ་འདོད་ཆགས་ལ་སོགས་པས་སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་ནམ་པར་གཡེང་བ་དེའི་ཆོ་ནམ་པར་གཡེངས་<sup>5</sup>བ་ཆོར་བར་བྱས་ལ་སྐར་དུ་མི་སྤྲུག་པ་བསྐྱོམ་པ་ལ་སོགས་པས་<sup>6</sup>ནམ་པར་གཡེང་བ་ཞི་བར་བྱས་ནས་སྐར་དུ་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་སེམས་ཕྱིར་ཞིང་འཇུག་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་དེ་ལ་སེམས་མངོན་པར་མི་དགའ་བར་<sup>7</sup>མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དྲིང་འཛིན་གྱི་<sup>8</sup>ཡོན་དམ་མཐོང་བས་དེ་ལ་མངོན་པར་དགའ་བ་བསྐྱོམ་པར་བྱའོ། །ནམ་པར་གཡེང་བ་ལ་ཉེས་པར་<sup>9</sup>མཐོང་བས་ཀྱང་མི་དགའ་བ་རབ་དུ་ཞི་བར་བྱའོ། །ཇི་སྟེ་སྤྲུགས་

1. ཕྱེ་ཆོ་—མེད་པ་དེ་ལྟར་ཁོ་ན་ 2. ཕྱ་བེ་—བ་གཞན་(ཆད་—བ་“བཟླ་བར་བྱ་བ་”གཞན་)

3. ཕྱ་བེ་—གེ་ 4. ཕྱ་བེ་—བ་ 5. ཕྱ་ཐེ་—གཡེང་བ་ 6. ཕྱ་བེ་—བ་ 7. ཕྱ་བེ་—བ་

8. ཕྱ་བེ་—གྱིས་ 9. ཕྱ་བེ་—བ་



བ་དང་གཉིད་ཀྱིས་ནོན་<sup>1</sup> རྒྱ་བ་མི་གསལ་བས་སེམས་བྱང་ངས་བྱང་དུ་དྲོགས་<sup>2</sup>  
 བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་གོང་ས་བཞིན་དུ་མཆོག་དུ་དགའ་བའི་དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱང་  
 བས་སྐྱར་དུ་བྱང་བ་ཞི་བར་བྱས་ལ། ཡང་དམིགས་བ་དེ་ཁོ་ན་དེ་ཉིད་ཤིན་དུ་  
 དམ་པོར་གཟུང་བར་བྱའོ། །ཇི་ལྟེ་གང་གི་ཆོ་སྒྲོན་བཀའ་<sup>3</sup> བ་དང་། ཅེས་བ་  
 ཇིས་སྤྱ་དན་བས་བར་སྐབས་སྤྱ་སེམས་འཕྱར་བའམ་གོང་དུ་དྲོགས་བར་མཐོང་……  
 བ་དེའི་ཆོ་གོང་ས་བཞིན་དུ་མི་དྲག་བ་ལ་སོགས་བ་ཡིད་འབྱུང་བར་འབྱར་བའི་……  
 དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱས་<sup>4</sup> ལ་གཡེང་བ་ཞི་བར་བྱ་ཞིང་།<sup>5</sup> དེ་ནས་ཡང་དེ་ཁོ་ན་  
 ཉིད་ལ་སེམས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་བ་མེད་པར་འཇུག་པར་འབད་པར་བྱའོ།

ཇི་ལྟེ་གང་གི་ཆོ་བྱིང་བ་དང་གོང་བ་དང་བྲལ་བར་གྱུར་ནས་མཉམ་པར་ལྷན་  
 ཏི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པར་འབྱར་བ་དེའི་ཆོ་རྩལ་བ་……  
 སྒྲོད་དེ་བདང་སྒྲོམས་སྤྱ་བྱའོ། །གལ་དེ་སེམས་མཉམ་པར་ལྷགས་བ་ལ་བརྩལ་<sup>6</sup>  
 བ་བྱས་ན་དེའི་ཆོ་སེམས་ནས་བར་གཡེང་བར་འབྱར་རོ། །གལ་དེ་སེམས་བྱིང་  
 བར་གྱུར་བ་ལ་བརྩལ་<sup>7</sup> བར་སྤྱས་ན་<sup>8</sup> དེའི་ཆོ་ཤིན་དུ་བྱིང་བས་ལྷག་མཐོང་……  
 མེད་དེ། སེམས་དཔྱུས་ཡོང་བཞིན་དུ་འབྱར་རོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་སེམས་བྱིང་  
 བར་གྱུར་ན་བརྩལ་<sup>9</sup> བར་བྱའོ། །མཉམ་པར་གྱུར་ན་བརྩལ་<sup>10</sup> བར་མི་བྱའོ། །  
 གང་གི་ཆོ་ལྷག་མཐོང་བསྒྲོམས་པས་ཤེས་རབ་ཤིན་དུ་ཤེས་ཆེ་བར་གྱུར་བ་དེའི་……

- 
1. ལྷ་མོ་—གནོན་ 2. ལྷ་མོ་—དྲོགས་བ་དེའི་(ཆད་—དྲོགས་‘བར་མཐོང་བ་’དེའི་)  
 3. ལྷ་མོ་—བཀའ་ 4. ལྷ་མོ་—ཐུག་པ་ལ་ 5. ལྷ་མོ་—ཞིང་དེ་ཁོ་(ཆད་—ཞིང་། ‘དེ་ནས་ཡང་’  
 དེ་ཁོ་ན་) 6. ལྷ་མོ་—བརྩལ་ 7. ལྷ་མོ་—བརྩལ་  
 8. ལྷ་མོ་—ནས་དེའི་ཤིན་(ཆད་—དེའི་‘ཆོ་’ཤིན་དུ་) 9. ལྷ་མོ་—བརྩལ་ 10. ལྷ་མོ་—བརྩལ་



ཆོ་ཞི་གནས་རྒྱུ་བས་མར་མེ་རྒྱུ་ལ་བཞག་པ་<sup>1</sup>བཞིན་དུ་སེམས་གཡོ་བར་.....  
འགྱུར་དེ། དེའི་ཕྱིར་དེ་ཁོ་ན་གིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་དེ། དེ་  
བས་ན་དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་བསྐྱོམ་བར་བྱའོ། །ཞི་གནས་<sup>2</sup>ཀྱི་ཤས་ཆེ་བར་གྱུར་  
ན་ཡང་ཤེས་རབ་བསྐྱོམ་བར་བྱའོ། །

གང་གི་ཆོ་གཉིས་ཀ་མཉམ་<sup>3</sup>དུ་འཇུག་པའི་ཆོ་ལུས་དང་སེམས་ལ་གནོད་  
བར་མ་གྱུར་གྱི་བར་དུ་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་གནས་པར་བྱའོ། །  
ལུས་ལ་སོགས་པ་<sup>4</sup>ལ་གནོད་བར་གྱུར་ན་དེའི་བར་སྐབས་སུ་འཛིག་དེན་མཐའ་...  
དག་རྒྱུ་མ་དང་། སྒྲིག་རྒྱུ་དང་། མི་ལས་དང་། རྒྱ་རྒྱུ་དང་། མིག་ཡོར་<sup>5</sup>  
ལྟ་བུར་ལྟ་ཞིང་འདི་སྒྲིམ་དུ་བསམ་བར་བྱ་སྟེ། སེམས་ཅན་འདི་དག་གི་ཆོས་  
ཟབ་མོ་འདི་ལྟ་བུ་ཁོང་དུ་མ་རྒྱུད་བས་འཁོར་བ་ན་ཀྱན་དུ་ཉིན་མོངས་པར་འགྱུར་...  
གྲིས།<sup>6</sup> བདག་གིས་ཅི་ནས་ཀྱང་དེ་དག་ཆོས་ཉིད་དེ་ཁོང་དུ་རྒྱུད་བར་འགྱུར་<sup>7</sup>  
བ་དེ་ལྟར་བྱའོ་སྒྲིམ་དུ་བསམ་ཞིང་། སྒྲིང་རྩེ་ཆེན་པོ་<sup>8</sup>དང་བྱང་རྒྱུ་གྱི་སེམས་  
མངོན་དུ་བྱའོ། །དེ་ནས་ངལ་བསོ་ལ། ཡང་དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་རྫོང་  
བ་མེད་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་འཇུག་པར་བྱའོ། །ཡང་སེམས་གིན་དུ་སྒྲོ་བར་གྱུར་  
ན་དེ་བཞིན་དུ་ངལ་བསོ་བར་བྱའོ། །འདི་ནི་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་  
འབྲེལ་བར་<sup>9</sup>འཇུག་པའི་ལམ་སྟེ་ནམ་པར་དྲིག་པ་དང་བཅས་པ་དང་། ནམ་པར་  
མི་དྲིག་པའི་གཞུགས་བརྟན་ལ་དམིགས་པའོ། །

1. ལྟ་བུ་—བ་དེ་བཞིན་ 2. ལྟ་བུ་—གནས་ཤས་ 3. ལྟ་བུ་—མཉམ་པར་

4. ལྟ་བུ་—བ་གནོད་(ཆད་—སོགས་བ་ལ་གནོད་) 5. ལྟ་བུ་—གཡོར་ 6. ལྟ་བུ་—གྲོ་

7. ལྟ་བུ་—གྱུར་བ་ 8. ལྟ་བུ་—པོ་དེ་ཐང་རྩུབ་ 9. ལྟ་བུ་—བ་



དེ་ལྟར་ན་ལ་འབྱོར་བས་རིམ་བཤེས་པ་འདིས་<sup>1</sup>ཆུ་ཚོད་གཅིག་<sup>2</sup>གས།      མེལ་ཚོ་  
 ཐུན་ཕྱིད་དམ།      ཐུན་གཅིག་གས།      རི་སྤྱིད་འདྲོད་ཀྱི་བར་དུ་དེ་ཁོ་ན་བསྐྱོམ་  
 ཞིང་འདུག་པར་བྱའོ། །འདི་ནི་དོན་རབ་དུ་ནམ་བར་འབྱེད་<sup>3</sup>བའི་བསམ་གཏན་ཏི།  
 འཕའ་བ་ལང་ཀར་གཤེད་བ་ལས་བསྐྱེད་ཏི། །དེ་ནས་འདྲོད་ན་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་  
 ལངས་ད་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་མ་<sup>4</sup>བཤིག་པར་འདི་སྒྲུམ་དུ་ཚོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་དོན་  
 དམ་བར་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་བ་ཉིད་ཡིན་དུ་ཟིན་ཀྱང་། ཀྱན་རྫོབ་དུ་ནམ་བར་གནས་  
 བ་ཉིད་དོ། །དེ་ལྟར་ཡིན་ན་ལས་དང་འབྲས་བུ་འབྲེལ་བ་ལ་སོགས་པ་རི་ལྟར་  
 ནམ་བར་གནས་པར་འགྱུར། བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་།<sup>5</sup>

དངོས་བོ་སྦྱ་བ་ཀྱན་རྫོབ་དུ། །

དམ་བའི་དོན་དུ་རང་<sup>6</sup>བཞིན་མེད། །ཅེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །

སེམས་ཅན་གྱིས་བའི་སྒོ་ཅན་འདི་དག་ནི་ངོ་བོ་བ་ཉིད་མེད་པའི་དངོས་བོ་  
 ནམས་ལ་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པ་སྒོ་འདོགས་པས་སྒོ་ཕྱིན་ཅེ་ཡོག་དུ་གྱུར་ཏི།  
 ཡུན་རིང་བོར་འཁོར་བའི་འཁོར་ལོ་ན་ཡོངས་སུ་འཁྲུམས་པས་བདག་གས་ཅི་  
 ནས་ཀྱང་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་སྒོ་ན་མེད་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་  
 བར་བྱ་ཞེ། དེ་ནས་ཐམས་ཅད་མཆུན་པའི་གོ་འཕང་ཐོབ་པར་བྱ་<sup>7</sup>ལ། དེ་  
 དག་ཚོས་ཉིད་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱའོ་སྒྲུམ་<sup>8</sup>ཏུ་བསམས་ལ། དེ་ནས་དལ་བྱས་  
 སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་བཤིག་ཞེ་<sup>9</sup>ཕྱོགས་བཅུ་ན་བརྒྱགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་

- 
1. ལྷ་བོ་—འདི་ 2. ལྷ་བོ་—ཅེག་ 3. ལྷ་བོ་—དབྱི་ 4. ལྷ་བོ་—མོ་  
 5. ལྷ་བོ་—བཀའ་(མདོ་རྩ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ ༡༦༤) 6. ལྷ་བོ་—རང་ནི་  
 7. ལྷ་བོ་—ཐམས་ལ་ 8. ལྷ་བོ་—སྒྲུམ་པ་སེམས་ 9. ལྷ་བོ་—དྲི་







དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་སངས་རྒྱུ་<sup>1</sup>ནམས་ཀྱི་ཞིང་ལ་སོགས་པ་སྤྱན་སྲུང་ཚོགས་  
 པ་གང་བཀའ་སྤྱུལ་པ་དེ་གང་གི་འབྲས་བུ་ཡིན་པར་འགྲུབ། དེ་ལྟ་བུ་ན་ནམ་  
 པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྷན་པ་ཐམས་ཅད་མཆོག་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྤྱན་བ་  
 ལ་སོགས་པ་ཐབས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་འགྲུར་བས་བཅོམ་ལྷན་འདས་.....  
 ཀྱིས་ཐམས་ཅད་མཆོག་པའི་ཡེ་ཤེས་<sup>2</sup>དེ་ནི་ཐབས་ཀྱིས་མཐར་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ། །  
 ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །དེའི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་སྤྱན་བ་ལ་སོགས་པ་  
 ཐབས་ལ་ཡང་བསྟན་པར་བྱའི། རྫོང་བ་ཉིད་འབའ་ཞིག་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །དེ་  
 རྒྱུ་དུ་འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་དུ་རྒྱས་པ་བསྐྱུས་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་...  
 སྤྱུལ་དོ། “བྱམས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་  
 ཡང་དག་པར་བསྐྱབས་<sup>4</sup>པ་འདི་ནི་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱིར་ཡིན་ན། དེ་ལ་མི་  
 ལྷན་པོ་དེ་དག་འདི་རྒྱུ་དུ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་<sup>5</sup>དུ་...  
 ཕྱིན་པ་ཁོ་ན་ལ་བསྐྱབས་པར་བྱའི།<sup>6</sup> པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ལྷག་ས་ནམས་<sup>7</sup>ཀྱིས་ཅི་  
 ཞིག་བྱ་<sup>8</sup>ཞེས་ཟེར་ཞིང་། དེ་དག་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་གཞན་དག་ལ་ཡང་སྤྱན་  
 འབྱིན་པར་སེམས་སོ། །མ་པས་པ་འདི་རི་རྣམས་དུ་སེམས། ཀྱ་<sup>9</sup>ཤི་ཀའི་རྒྱལ་  
 བོར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེས་<sup>10</sup>ཐུག་རོན་གྱི་ཕྱིར་རང་གི་ཤ་ཁྲ་ལ་བྱིན་པ་དེ་ཤེས་  
 རབ་འཆལ་བ་ཡིན་ནམ། བྱམས་པས་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་ནི་མ་  
 ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་བ། བྱམས་པ་བྱང་ཆུབ་

1. ལྟ་བུ་—རྒྱས་ཀྱི་ 2. ལྟ་བུ་—ཤེས་ཀྱི་(ཆད་—ཤེས་དེ་ནི་ཐབས་ཀྱིས་)

3. མདོ་འདི་བཀའ་འགྲུར་དུ་མེད་ཆོད་རྒྱང་བས་དཔལ་པར་བྱའོ། 4. ལྟ་བུ་—བསྐྱབས་

5. ལྟ་བུ་—རོལ་ཕྱིན་(ཆད་—རོལ་དུ་ཕྱིན་) 6. ལྟ་བུ་—ཐུག་ 7. ལྟ་བུ་—ནམས་ཅི་

8. ལྟ་བུ་—ཐུ་ཟེར་ 9. ལྟ་བུ་—ཀ་ཤི་ 10. ལྟ་བུ་—དེ་



སེམས་དབའི་སྤྲུང་བ་སྤྲོད་པ་ན་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་དང་ལྷན་པའི་དགོ་བའི་ཅ་  
 བ་གང་དག་བསམས་པའི་དགོ་བའི་ཅ་བ་དེ་དག་གིས་གནོད་པར་གྱུར་དམ།  
 བྱམས་པས་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་ནི་མ་ལགས་སོ། བཅོམ་ལྷན་  
 འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྲུལ་བ། མ་ཐམ་བ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུར་སྤྱིན་  
 བའི་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཡང་དག་པར་བསྐྱེད་པ། བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུར་ཚལ་ཁྱིམས་  
 ཀྱི་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་བ། བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུར་བཅོད་པའི་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་བ།  
 བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུར་བཅོན་འགྲུས་ཀྱི་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་བ། བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུར་  
 བསམ་གཏན་གྱི་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་བ། བསྐྱེད་པ་དུག་ཅུར་གཤམ་རབ་ཀྱི་པ་རེལ་  
 དུ་ཕྱིན་པ་ཡང་དག་པར་བསྐྱེད་པ་ན། དེལ་མི་ལྷན་པོ་དེ་དག་<sup>1</sup>འདི་སྐད་དུ་  
 ཚལ་གཅིག་ཁོ་ནས་བྱང་ཆུབ་མྱེ། འདི་ལྷ་མྱེ། མྱོང་བ་ཉིད་ཀྱི་<sup>2</sup>ཚལ་གྱིས་སོ་  
 ཞེས་ཟེར་དེ། དེ་དག་ནི་སྤྲོད་པ་ཡོངས་སུ་མ་དག་པར་འགྱུར་རོ།” ཞེས་  
 བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་ངོ་།

ཐབས་དང་བྲལ་ན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་གཤམ་རབ་འབའ་ཞིག་གིས་ནི་  
 ཉན་ཐོས་<sup>3</sup>བཞིན་དུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛེད་པ་བྱེད་མི་རྒྱས་ཀྱི། ཐབས་ཀྱིས་<sup>4</sup>  
 བསྐྱེད་པ་ན་རྒྱས་པར་འགྱུར་དེ། འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་བཅོམ་པའི་པ་ལས་<sup>5</sup>  
 ཇི་སྐད་དུ། “འོད་སྤངས་འདི་ལྷ་མྱེ་དཔེར་ན་ལྷོན་པོས་ཟིན་པའི་བྱལ་པོ་ནམས་  
 དགོས་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་གཤམ་རབ་ཐབས་  
 མཁས་པས་<sup>6</sup>ཡོངས་སུ་ཟིན་པ་<sup>7</sup>དེ་ཡང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛེད་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་

1. ལྷ་མྱེ་—དག་ཅུག་ 2. ལྷ་མྱེ་—ཀྱིས་ 3. ལྷ་མྱེ་—ཐོས་ཀྱི་བཞིན་ 4. ལྷ་མྱེ་—ཀྱི་  
 5. མྱེ་—བཀའ་(དཀོན་བཅོམ་པ་ཅེ་ ༡༢༩) 6. ལྷ་མྱེ་—ཐམས་ཅད་ 7. ལྷ་མྱེ་—པ་ཡང་



དོ།” ཞེས་གསུངས་པ་ལྟ་བུའོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་ལམ་གྱི་ལྟ་  
བ་ཡང་གཞན། ཟུ་སྟེགས་ཅན་དང་། ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱི་ལམ་གྱི་ལྟ་བ་ཡང་  
གཞན་དེ། འདི་ལྟར་ཟུ་སྟེགས་ཅན་ནམས་ཀྱི་<sup>1</sup>ལམ་གྱི་ལྟ་བ་ནི་བདག་ལ་སོང་  
བར་<sup>2</sup>ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དང་ལྷན་བའི་ཕྱིར་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དྲུ་ཤེས་རབ་དང་  
བྲལ་བའི་ལམ་ཡིན་དེ། དེ་བས་ན་དེ་དག་ཐར་པ་མི་ཐོབ་བོ། །

ཉན་ཐོས་ནམས་ཀྱིས་ནི་སྦྱིང་ཇེ་ཆེན་པོ་དང་བྲལ་བས་ཐབས་དང་མི་ལྷན་པ་  
ཡིན་དེ། དེ་བས་ན་དེ་དག་གཅིག་དྲུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་གཞིལ་བར་འགྱུར་  
རོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་ལམ་<sup>3</sup>ནི་ཤེས་རབ་དང་<sup>4</sup>ཐབས་དང་ལྷན་  
བར་འདོད་དེ། དེ་<sup>5</sup>བས་ན་དེ་དག་མི་གནས་བའི་བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་  
གཞིལ་བར་འགྱུར་རོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་ལམ་ནི་ཤེས་རབ་དང་  
ཐབས་དང་ལྷན་བར་འདོད་དེ། དེས་ན་མི་གནས་བའི་བྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཐོབ་སྟེ།  
ཤེས་རབ་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་<sup>6</sup>ནི་འཁོར་བར་མི་ལྷུང་ལ། ཐབས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་<sup>7</sup>ནི་  
བྱ་ངན་ལས་འདས་བར་མི་ལྷུང་བའི་ཕྱིར་རོ། །

དེ་བས་ན་འཕགས་པ་ག་ཡུ་མགོ་འི་རི་ལས།<sup>8</sup> “བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
ནམས་ཀྱི་ལམ་ནི་མདོར་བསྟུ་<sup>9</sup>ན་འདི་གཉིས་དེ། གཉིས་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་  
སྟེ། ཐབས་དང་ཤེས་རབ་བོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །འཕགས་པ་དབལ་  
མཆོག་དང་བོ་ལས་<sup>10</sup>ཀྱང་། “ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རིལ་དུ་ཕྱིན་པ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

1. ལྟ་བུ་-ཀྱིས་ 2. ལྟ་བུ་-བ་ལ་ 3. ལྟ་བུ་-ལམ་ཤེས་(ཆད་-ལམ་ལྟ་ཤེས་)

4. ལྟ་བུ་-དང་ལྷན་(དབ་དང་ཐམས་དང་ལྷན་) 5. ལྟ་བུ་-དེས་ན་མི་(ཆད་-དེས་ན་དེ་དག་མི་)

6. ལྟ་བུ་-ཀྱིས་འཁོར་ 7. ལྟ་བུ་-ཀྱིས་བྱ་ 8. ལྟ་བུ་-བཀའ་(མདོ་ཙ་ 222)

9. ལྟ་བུ་-བསྟུ་ 10. ཆོས་ཞེས་ངེས་ཆེད་མ་བྱུང་ག།



ཐབས་ལ་མཁས་པ་ནི་པ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་བཀའ་སྩལ་དོ། །འཕགས་པ་དྲི་  
མ་མེད་པར་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་། “བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་  
ནམས་ཀྱི་འཛིང་བ་ནི་གང་། ཐར་བ་ནི་གང་ཞེ་ན། ཐབས་མེད་པར་སྤྲོད་པར་  
འགྲོ་བ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འཛིང་བའོ། །ཐབས་ཀྱིས་  
སྤྲོད་པའི་འགྲོ་བར་འགྲོ་བ་ནི་ཐར་པའོ།<sup>2</sup> །ཤེས་རབ་མེད་པར་སྤྲོད་པར་འགྲོ་བ་  
ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འཛིང་བའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱིས་སྤྲོད་  
པའི་འགྲོ་བར་འགྲོ་བ་ནི་ཐར་པའོ། །ཐབས་ཀྱིས་མ་<sup>3</sup>ཟིན་པའི་ཤེས་རབ་ནི་  
འཛིང་བའོ། །ཐབས་ཀྱིས་ཟིན་པའི་ཤེས་རབ་ནི་ཐར་པའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱིས་<sup>4</sup>མ་  
ཟིན་པའི་ཐབས་ནི་འཛིང་བའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཟིན་པའི་ཐབས་ནི་ཐར་པའོ།” །  
ཞེས་གྲུ་ཆར་བཀའ་སྩལ་དོ། །

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཤེས་རབ་ཙམ་བསྟན་ན་ནི་ཉན་ཐོས་ཀྱིས་འདོད་པའི་  
བྱ་ངན་ལས་འདས་པར་ལྷུང་བས་འཛིང་བ་བཞིན་དུ་འགྱུར་དེ། མི་གནས་པའི་  
བྱ་ངན་ལས་འདས་པས་གྲོལ་བར་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་ཐབས་དང་བྲལ་  
པའི་ཤེས་རབ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་ཀྱི་འཛིང་བའོ། །ཞེས་བྱའོ། །  
དེ་ལྟ་བུས་ན་ལྷགས་<sup>5</sup>པས་ཉན་པ་<sup>6</sup>ལ་མེ་བསྟན་པ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་……  
དཔའ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་ལྷགས་<sup>7</sup>པ་ཙམ་སྤང་བའི་ཕྱིར་ཐབས་དང་བཅས་པའི་ཤེས་  
རབ་ཀྱིས་<sup>8</sup>སྤོང་བ་ཉིད་བསྟན་པར་བྱའོ། །ཉན་ཐོས་བཞིན་དུ་མངོན་དུ་ནི་མི་བྱ་སྟེ།

1. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་—མ་ 207) 2. ལྟེ་མི་—ཐར་པའོ། ཐབས་(ཆད་—ཐར་པའོ། ‘ཤེས་རབ་  
མེད་པར་སྤྲོད་པར་འགྲོ་བ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་འཛིང་བའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱིས་  
སྤྲོད་པའི་འགྲོ་བར་འགྲོ་བ་ནི་ཐར་པའོ།’ ཐབས་) 3. ལྟེ་མི་—མ་ 4. ལྟེ་མི་—ཀྱི་  
5. ལྟེ་མི་—ལྷག་ 6. ལྟེ་མི་—མེ་ལ་བསྟན་ 7. ལྟེ་ཙམ་—ལྷག་ 8. ལྟེ་མི་—ཀྱི་







པ་ལས་<sup>1</sup>ཐེ་སྐད་དུ། “འོད་སྤངས་འདི་ལྟ་ཏེ། དཔེར་ན་སྤྲུགས་དང་སྤྲུག་གིས་  
ཡོངས་སུ་ཟིན་པའི་དུག་གིས་ནི་འཆི་བར་བྱེད་མི་རུས་སོ། །དེ་བཞིན་དུ་བྱང་  
ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་<sup>2</sup>ཀྱི་ཉིན་མོངས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་ཟིན་པས་……  
ཀྱང་ཡོག་པར་ལྷུང་བར་བྱེད་མི་རུས་སོ།” །ཞེས་བཀའ་སྩལ་དོ། །

དེ་<sup>3</sup>ལྟ་བུས་ན་གང་གི་ཕྱིར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ཐབས་ཀྱི་ལྟོ་བས་ཀྱིས་……  
འཁོར་བ་མི་འདོར་བ་དེའི་ཕྱིར་བྱང་ལས་འདས་པར་མི་ལྷུང་ངོ་། །གང་གི་  
ཕྱིར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལྟོ་བས་ཀྱིས་དམིགས་པ་མཐའ་དག་སྤོང་བ་དེའི་ཕྱིར་འཁོར་……  
བར་མི་ལྷུང་ཏེ། དེ་བས་ན་མི་གནས་པའི་བྱང་ལས་འདས་པ་སངས་རྒྱས་  
ཉིད་འཕྱོལ་བོ། །དེ་བས་ན་འཕགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛོད་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་། “དེ་  
ཤེས་རབ་ཀྱི་ཤེས་པས་ནི་ཉིན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་འདོར་བོ། །ཐབས་  
ཀྱི་ཤེས་པས་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་མི་གཏོང་ངོ་།” །ཞེས་བཀའ་  
སྩལ་དོ། །འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་པར་འབྱེལ་བ་ལས་<sup>5</sup>ཀྱང་། “སེམས་  
ཅན་གྱི་དོན་ལ་ཤིན་དུ་མི་སྤྱོད་པ་དང་། འདྲ་བྱེད་མཛོད་པར་འདྲ་བ་ཐམས་  
ཅད་ལ་ཤིན་དུ་མི་སྤྱོད་པ་ནི་སྤྲོ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་རྒྱུགས་པའི་བྱང་ཆུབ་……  
དུ་ངས་<sup>6</sup>མ་བཟུན་དོ།” །ཞེས་བཀའ་སྩལ་དོ། །དེ་<sup>7</sup>ལྟ་བུས་ན་སངས་རྒྱས་  
ཉིད་ཕྱོལ་བར་འདོད་པས་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་ཀྱི་བསྟེན་པར་བྱའོ། །

དེ་ལ་འཛིག་དེན་ལས་འདས་པའི་ཤེས་རབ་བསྐྱེམ་པའི་གནས་སྐབས་སམ།

1. ལྟོ་—བཀའ་(དཀོན་བརྟུགས་‘ཆ’ ༡༣༠)

2. ལྟོ་མེ་—ནམས་ཉིན་ 3. ལྟོ་མེ་—དེ་བས་ 4. ལྟོ་—བཀའ་(མདོ་‘མ’ 212)

5. ལྟོ་—བཀའ་(མདོ་‘ཅ’ ༡༠) 6. ལྟོ་མེ་—ངས་བཟུན་(ཆད་ལྱོན་—ངས་‘མ’བཟུན་)

7. ལྟོ་མེ་—དེ་བས་



ཤིན་དུ་མཉམ་བར་བཞག་པའི་གནས་སྐབས་ན་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཐབས་ལ་.....  
 བཞེན་<sup>1</sup>པ་མེ་འབྱུང་དུ་ཟེན་ཀྱང་། དེ་ལ་སྤྱོད་པ་དང་དེའི་རྗེས་ལས་བྱུང་བའི་ཤེས་  
 རབ་<sup>2</sup>གང་ཡང་བྱུང་བ་དེའི་ཆོ་ཐབས་ལ་བཞེན་<sup>3</sup>པ་འབྱུང་བ་<sup>4</sup>ཉིད་དེ། དེའི་  
 སྤྱིར་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་གཉིས་ཅིག་ཅར་འཇུག་གོ །གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་  
 སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་ཤེས་རབ་དང་ཐབས་རྒྱུད་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་པའི་ལས་  
 ནི་འདི་ཡིན་དེ། སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་ལྟ་བའི་སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོས་ཡོངས་སུ་  
 ཟེན་བས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ལས་བཞེན་པ་དང་། ལངས་པའི་ཐབས་  
 ཀྱི་དུས་ན་ཡང་སྐྱུ་མ་མཁན་བཞིན་དུ་སྤྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པ་ཁོ་ནའི་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་  
 པ་ལ་བཞེན་<sup>5</sup>པ་སྟེ། འཕགས་པ་སྤྱོད་གྲོས་མི་ཟད་བས་བཞུན་པ་ལས་<sup>6</sup>རྗེ་སྤྱོད་དུ།  
 “དེ་ལ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་ཐབས་ནི་གང་། ཤེས་རབ་མངོན་པར་སྐྱབ་པ་ནི་  
 གང་ཞེ་ན། གང་གི་སྤྱིར་མཉམ་བར་བཞག་པ་ན་སེམས་ཅན་<sup>7</sup>ལ་ལྟ་བས་<sup>8</sup>ན་  
 སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོའི་དམིགས་པ་ལ་སེམས་ཉེ་བར་འཇོག་པ་དེ་ནི་དེའི་ཐབས་སོ། །  
 གང་གི་སྤྱིར་ཞིབ་དང་རབ་དུ་ཞི་བར་སྒྲོམས་པར་འཇུག་པ་དེ་ནི་དེའི་ཤེས་.....  
 རབ་པོ།” །ཞེས་བྱ་ཆེར་བཀའ་སྤྱུལ་པ་ལྟ་བུའོ། །བདུན་བདུལ་བའི་ལུ་  
 ལས་<sup>9</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “གཞན་ཡང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་སྤྱོད་

- 
1. བྱེ་ཆོ་-བཏེན་ 2. ལྟ་མེ་-རབ་འབྱུང་ 3. བྱེ་ཆོ་-བཏེན་ 4. ལྟ་མེ་-བ་དེ་ཉིད་  
 5. བྱེ་ཆོ་-བཏེན་ 6. བྱེ་-བཀའ་(མདོ་མ་ ༡༡༩) 7. ལྟ་མེ་-ཅན་ལྟ་(ཆད་-སེམས་  
 ཅན་ལ་ལྟ་) 8. ལྟ་མེ་-བས་སྤྱིང་(ཆད་-བས་ན་སྤྱིང་)  
 9. བྱ་ཆེར་རྣམས་ལེན་ཉེར་གཏེག་པ་བདུན་བདུལ་བའི་ལུ་ལྟར་འཇིན་འདོམ་སྤྱད་པས་མདོ་  
 གཞན་དུ་མེད་དམ་དཔྱད་པར་བྱའོ།







བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་ཤེས་རབ་དང་། ཐབས་ཀྱི་ཚལ་ཁོན་སྐྱབ་  
 བའི་དབང་དུ་མཛད་ནས། དེའི་སྦྱོར་བ་འཁོར་བ་ན་གནས་པ་ཡང་ཡིན་པ་ལ།  
 བསམ་བ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་གནས་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བཀའ་སྩལ་དོ།

དེ་ལྟར་སྦྱོར་བ་ཉིད་དང་སྦྱིང་ཇི་ཆེན་པོ་འི་སྦྱིང་བོ་ཅན་གྱི་ཉམས་པ་ཡང་དག་  
 བར་ཇོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་བསྐྱོས་པའི་སྦྱིན་པ་ལ་སོགས་པའི་ཐབས་  
 གོམས་པར་བྱས་ལ། རོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་བསྐྱེད་<sup>1</sup>པའི་སྦྱོར་སྒྲུ་  
 མ་བཞིན་དུ་དྲག་པར་དུས་དུས་སུ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གི་སྦྱོར་བ་ལ་ཅི་ལྟས་  
 སུ་བསྐོས་པར་བྱ་ཏེ། འཕགས་པ་སྦྱོད་ཡུལ་ཡོངས་སུ་དག་པའི་མདོ་ལས།<sup>2</sup>  
 གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ་སེམས་ཅན་གྱི་རོན་བྱེད་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་...  
 ནམས་ཀྱི་ཕན་ཡོན་ཇི་སྟེད་དུ་བསྟན་པ་དེ་བཞིན་དུ་ཉེ་བར་གནས་པའི་དྲན་པས་.....  
 དུས་ཐམས་ཅད་དུ་ཐབས་ལ་མཁས་པ་གོམས་པར་བྱའོ།

དེ་ལྟར་སྦྱིང་ཇི་དང་། ཐབས་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་གོམས་པར་  
 བྱས་པ་དེ་<sup>3</sup>ཆོ་འདི་ལ་གཤོན་མི་ཟ་བར་བྱུང་བར་དུ་འགྱུར་དོ། དེས་ན་མི་ལམ་  
 ན་དྲག་དུ་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་མཐོང་བར་འགྱུར། མི་ལམ་  
 བཟང་བོ་གཞན་དག་ཀྱང་མི་བར་འགྱུར། ལྷ་ནམས་ཀྱང་ཡི་རངས་ནས་སྤང་བ་  
 བྱེད་པར་འགྱུར། སྟེན་ཅིག་རེ་རེ་ལ་ཡང་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོགས་  
 གྱུ་ཆེན་པོ་སོགས་པར་འགྱུར། ཉོན་མོངས་པའི་སྦྱིབ་པ་དང་། གནས་ངན་

1. ལྟ་བུ་—སྦྱོད་པ་སྒྲུ་མ་ 2. མདོ་དེར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་གི་ཕན་ཡོན་ཇི་སྟེད་བསྟན་པའི་ཚུལ་  
 ནམས་ལ་ཞུས་འཕངས་མཛད་པ་ལས་དངོས་སུ་བྱང་ཆུབ་ཉམས་པ་ལ་ཉེ་བར་གནས་པར་བྱའོ།

3. ལྟ་བུ་—སྦྱོད་



ལེན་ཀྱང་བྱང་<sup>1</sup>བར་འགྱུར། རྟེན་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་བདེ་བ་དང་ཡིད་བདེ་བ་  
མང་བར་འགྱུར། སྤྱི་བོ་མང་བོ་ལ་སྤྱུག་བར་འགྱུར། ལྷན་ལ་ཡང་ནད་ཀྱིས་  
མི་ཐེབས་བར་འགྱུར། སེམས་ལས་སྤྱི་བོ་མི་དེ་ཀྱི་མཚོག་ཀྱང་ཐོབ་བར་  
འགྱུར་དེ། དེས་ན་མངོན་བར་ཤེས་བ་ལ་སོགས་བ་ཡོན་དན་ཁྱད་བར་ཅན་ཐོབ་བོ།

དེ་ནས་རྩུ་འཕྲུལ་གྱི་སྤྱི་བོ་ཀྱིས་<sup>2</sup>འཛིན་དེ་གྱི་ཁམས་མཐའ་ལས་བ་དག་  
དུ་སོང་ནས་སངས་རྒྱུས་བཅོམ་ལྷན་འདས་<sup>3</sup>ནམས་ལ་མཚོད་བ་བྱེད་དོ། ཁྱིེ་དག་  
ལ་ཚོས་ཀྱང་ཉན་དོ། འཛིན་བདེ་དུས་ཀྱི་ཚོན་ཡང་གདོན་མི་ཟ་བར་སངས་རྒྱུས་  
དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་མཐོང་བར་འགྱུར་དོ། ཁོ་རབས་གཞན་ན་  
ཡང་སངས་རྒྱུས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་དང་མི་འབྲལ་བའི་ཡུལ་དང་། ཁྱད་  
བར་དུ་འཕགས་བའི་ཁྱིེ་དུ་<sup>4</sup>ཡང་སྤྱི་བོ་བར་འགྱུར་དེ། དེས་ན་འབད་མི་དགོས་  
བར་བསོད་ནམས་དང་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་ཡོངས་སྤྱི་ལོགས་བར་བྱེད་དོ། །  
ཡོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་དང་། གཞི་ལོག་འཁོར་མང་བར་འགྱུར་དོ། ཤེས་རབ་ནི་  
བས་སྤྱི་བོ་མང་བོ་ཡོངས་སྤྱི་སྤྱི་བོ་བར་<sup>5</sup>ཡང་བྱེད་བར་འགྱུར་དོ། ཁོ་རབས་  
ཐམས་ཅད་དུ་ཆོ་རབས་དྲན་བར་འགྱུར་དེ། དེ་ལྟར་མན་ཡོན་ཚད་མེད་བ་མདོ་  
གཞན་དག་ལས་འབྱུང་<sup>6</sup>བ་ཁོང་དུ་ཆུད་བར་བྱའོ། །

དེས་དེ་ལྟར་སྤྱི་བོ་ཆེ་དང་། ཐམས་དང་། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དུག་དུ་  
གྱུས་བར་ཡུན་རིང་དུ་བསྐྱེད་ན་རིས་གྱིས་སེམས་ཀྱི་<sup>7</sup>རྒྱུད་ཤིན་དུ་ཡོངས་སྤྱི་  
དག་བའི་སྤྱི་བོ་ཀྱི་འབྱུང་བས་ཡོངས་སྤྱི་སྤྱི་བོ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་གཙུག་<sup>8</sup>ཤིང་།

1. ལུ་ལུ་-འབྱུང་ 2. ལུ་ལུ་-ཀྱི་ 3. ལུ་ལུ་-འདས་ལ(ཆད་-འདས་ནམས་ལ་)

4. ལུ་ལུ་-དུ་སྤྱི་ 5. ལུ་ལུ་-བར་བྱེད་ 6. ལུ་ལུ་-བྱུང་ 7. ལུ་ལུ་-སེམས་འདྲི་

8. ལུ་ལུ་-གཙུག་



གཞུང་པའི་མེ་བཞིན་དུ་ཡང་དག་པའི་དོན་ལ་བསྐྱོས་པ་རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་  
 གྱུར་ནས་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་རྟོག་པའི་དྲ་བ་མཐའ་དག་དང་……  
 བུལ་བ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་སྒྲོས་པ་མེད་པ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་རྟོགས་བ། རྩི་  
 མ་མེད་ཅིང་མི་གཡོ་ལ་མར་མེ་རླུང་མེད་པར་བཞག་པ་བཞིན་དུ་མི་གཡོ་བ་ཚད་<sup>1</sup>  
 མར་གྱུར་བ། ཆོས་ཐམས་ཅད་བདག་མེད་པའི་<sup>2</sup>ངོ་བོ་དེ་ཁོ་ན་མངོན་དུ་བྱེད་  
 བ་མཐོང་བའི་ལས་གྲིས་<sup>3</sup>བསྐྱུས་པ་དོན་དམ་པའི་བྱང་རླབ་ཀྱི་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་……  
 ཉིད་འབྱུང་ངོ་། །དེ་བྱང་ནས་དངོས་བོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་པ་ལ་ཞུགས་<sup>4</sup>བ་  
 ཡིན་དེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རིགས་སུ་སྒྲེས་པ་ཡིན། བྱང་རླབ་སེམས་  
 དབའི་སྒྲོན་མེད་པ་ལ་ཞུགས་པ་ཡིན། འཇིག་རྟེན་གྱི་འགྲོ་བ་ཐམས་ཅད་ལས་  
 ཡོག་པ་ཡིན། བྱང་རླབ་སེམས་དབའི་ཆོས་ཉིད་དང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་རྟོགས་<sup>5</sup>  
 བ་ལ་གནས་པ་ཡིན། བྱང་རླབ་སེམས་དབའི་ས་དང་བོ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་  
 ཡན་ཡོན་དེ་རྒྱས་པར་ས་བཅུ་བ་ལ་སོགས་པ་ལས་ཁོང་དུ་རྒྱད་པར་བྱའོ། །  
 འདི་ནི་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་བསམ་གཏན་དེ། འཕགས་པ་ལང་ཀར་  
 གཤེགས་པ་ལས་བསྐྱེད་དེ། འདི་ནི་བྱང་རླབ་སེམས་དབའ་ནམས་ཀྱི་སྒྲོས་པ་  
 མེད་པ་ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་ལ་འཇུག་པའོ། །

མོས་པས་སྒྲོད་པའི་ས་ལ་ནི་མོས་པའི་དབང་གིས་འཇུག་པར་ནམ་པར་……  
 བཞག་གི། ཁངོན་པར་འདུ་བྱེད་པས་ནི་ས་ཡིན་ནོ། །ཡེ་ཤེས་དེ་བྱང་བར་  
 གྱུར་ན་ནི་མངོན་དུ་ཞུགས་པ་ཡིན་དེ། དེ་ལྟར་ས་དང་བོར་ཞུགས་པ་དེ་<sup>6</sup>ཐྱིས་

- 
1. ལྷ་མོ་—ཚད་མེད་པར་ 2. ལྷ་མོ་—བའི་དེ་ 3. ལྷ་མོ་—གྲུ་ 4. ལྷ་མོ་—བཞུགས་  
 5. ལྷ་མོ་—རྟོག་ 6. ལྷ་མོ་—དེས་



བསྐྱེད་པའི་ལམ་ལ་འཛིན་ཏེན་ལས་འདས་བ་དང་། དེའི་ཆེས་ལ་ཐོབ་ངའི་ཡེ་  
ཤེས་གཉིས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་དང་། ཐབས་བསྐྱེད་པའི་ལམ་གྱིས་བསྐྱེད་པའི་  
སྤང་བར་བྱ་བའི་སྒྲིབ་བ་བསལ་བ་ལྟ་བུ་བྱུང་ཆེས་སྤང་བའི་སྤྱིར་དང་།  
ཡོན་ཏན་ཁྱད་པར་ཅན་གོང་མ་གོང་མ་ཐོབ་<sup>1</sup>པའི་སྤྱིར་<sup>2</sup>ས་འོག་མ་ནམས་ཡོངས་་་་  
སྤྱི་སྤྱོད་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་བར་ལ་ཞུགས་ནས་ཐམས་ཅད་་་་  
མཁྱེན་བ་ཉིད་ཀྱི་བྱ་མཆོར་འཇུག་ཅིང་དགོས་པ་ཡོངས་སྤྱི་འགྲུབ་པའི་དམིགས་་་་  
བ་ཡང་འཐོབ་ཤི། འདི་ལྟར་རིམ་བཤུ་ནས་སེམས་ཀྱི་རྒྱ་ཡོངས་སྤྱི་དག་པར་  
འཕགས་པ་ཡང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱོད་དོ། །འཕམ་བ་དགོངས་  
བ་ངས་པར་འགྲུབ་པ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་། “རིམ་གྱིས་<sup>4</sup>ས་གོང་མ་གོང་མ་ནམས་སྤྱི་  
གསེར་ལྟ་བུར་སེམས་ནམ་པར་སྤྱོད་ལ་སྒྲ་ན་མེད་པ་ཡང་དག་པར་ཆོགས་པའི་་་་  
བྱང་ཆུབ་ཀྱི་བར་དུ་མངོན་པར་ཆོགས་པར་འཛང་བུའོ།” ཞེས་གསུངས་སོ།

ཐམས་ཅད་མཁྱེན་བ་ཉིད་ཀྱི་བྱ་མཆོར་ཞུགས་པ་ན་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་  
བུར་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ཉི་པར་འཛོ་བའི་ཡོན་ཏན་གྱི་སྤང་བོ་དང་ནི་ལྟན།  
སྤྱིན་གྱི་སྤྱོན་ལམ་གྱི་འབྲས་བུ་ཡོད་པར་ནི་མཛད། ཐུགས་ཆེ་ཆེན་པོ་འི་རང་བཞིན་  
དུ་ནི་འགྲུར། ལྟན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཐབས་སྤྱོད་ཆོགས་དག་དང་ལྟན། སྤྱི་ལ་བ་  
དབག་དུ་མེད་པ་དག་གིས་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པའི་དོན་ནམ་པ་ཐམས་ཅད་ནི་མཛད།  
ཡོན་ཏན་སྤྱན་སྤྱོད་ཆོགས་པ་མ་ལུས་པ་<sup>5</sup>རབ་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པར་ནི་གྲུར།<sup>6</sup> བག་

1. ལྟ་བུ་—ཐོབ་པའི་(ཆད་—ཐོབ་པའི་ 2. ལྟ་བུ་—ཕྱར་གོང་མ་ 3. ལྟ་བུ་—བཀའ་(མདོ་ཙ་ 35)

4. ལྟ་བུ་—ཁྱེན་གོང་(ཆད་—ཁྱེན་མ་གོང་) 5. ལྟ་བུ་—བ་མཐའ་(ཆད་—བ་དག་གྱི་མཐའ་)

6. ལྟ་བུ་—འགྲུར་



ཆགས་དང་བཅས་པའི་ཉེས་པའི་རྒྱུ་མ་མཐའ་དག་བསལ་ནས། སེམས་ཅན་གྱི་  
 ཁམས་<sup>1</sup> གྱི་མཐས་གཏུགས་པར་བཞུགས་པ་ཡིན་པར་རྟོགས་པ་དང་ལྷན་པས་……  
 སངས་རྒྱས་བཙུགས་ལྷན་འདས་ཡོན་ཏན་མཐའ་དག་གི་འབྱུང་གནས་ལ་དད་པ་……  
 བསྐྱེད་ལ་ཡོན་ཏན་དེ་ཡོངས་སུ་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར་བདག་ཉིད་ཐམས་ཅད་གྱིས་འབད་  
 བར་བྱའོ། །

དེ་བས་ན་བཙུགས་ལྷན་འདས་གྱིས་<sup>2</sup> འད་སྐད་དུ། “ཐམས་ཅད་མཐུན་  
 པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ནི་སྤྱིང་ཇི་ཅི་ཙམ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། བྱུང་ཆུབ་གྱི་སེམས་གྱི་  
 རྒྱུ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན། ཐམས་ཅད་མཐུན་ཕྱིན་པ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་བཀའ་  
 ལྷན་ཏོ། །

དམ་པ་ཐུག་རྟོག་ལ་སོགས་རྒྱུ་མ་མཐའ་བསྐྱེད་པ། །

ཡོན་ཏན་ནམས་གྱིས་མི་ངོམས་ཆུ་ཡི་མཚོ་འདྲ་དག། །

ནམ་པར་ཕྱེ་ནས་ལེགས་པར་བཤད་ནམས་འཛིན་བྱེད་དེ། །

ངང་པ་རབ་དགའ་ཆུ་ལས་འོ་མ་ལེན་པ་བཞིན། །

དེ་ལྟ་བུས་ན་མཁས་ནམས་གྱིས། །

ཕྱོགས་ལྗང་དཀྱུགས་ཡིད་རིང་སྤྱོདས་ལ། །

བྱིས་པ་ལས་ཀྱང་ལེགས་པ་ཤད་པ། །

ཐམས་ཅད་སྤང་བ་ཁོ་ནར་བྱ། །

1. ལྟ་བུ་—ཁམས་མཐུན་

2. ལྟ་བུ་—བཀའ་(ལྟ་བུ་མ་ནམས་སྤང་མཛོན་བྱང་ ༡༡༣)



དེ་ལྟར་དབྱ་མའི་ལམ་བཤད་པས། །

བདག་གིས་བསོད་ནམས་གང་ཐོབ་པ། །

དེ་ཡིས་སྤྱོད་པོ་མ་ལུས་པ། །

དབྱ་མའི་ལམ་ནི་ཐོབ་པར་ཤོག། །

བསྒྲུབ་པའི་རིམ་པ་ལྷུ་ཅུ་ཀླུ་མའལ་གྱི་ལས་བར་དུ་མཛད་པ་ཚོགས་སོ། །

ཁྱུ་ཁར་ཁྱི་མཁན་པོ་བསྐྱོད་པར་། ། ཡོ་ཅུ་བ་བརྩེ་ཡེ་ཤེས་སྤྲུལ་ཅིང་  
ལྷུས་དེ་གཏན་ལ་ཕབ་པའོ། །



THE HISTORY OF THE

REIGN OF KING CHARLES THE FIRST

BY SAMUEL JOHNSON

IN THREE VOLUMES

LONDON: PRINTED BY A. MILLAR, IN ST. PAUL'S CHURCH-YARD, 1742.

THE SECOND VOLUME

CONTAINING THE HISTORY OF THE

REIGN OF KING CHARLES THE FIRST

FROM THE DEATH OF KING CHARLES THE FIRST

TO THE DEATH OF KING CHARLES THE SECOND

IN THREE VOLUMES

BY SAMUEL JOHNSON

IN THREE VOLUMES

BY SAMUEL JOHNSON

IN THREE VOLUMES

BY SAMUEL JOHNSON

IN THREE VOLUMES

BY SAMUEL JOHNSON

IN THREE VOLUMES

BY SAMUEL JOHNSON



༡༡། །ཁྱེ་གར་སྐད་དུ། ལྷ་བཙུགས། བོད་སྐད་དུ། བསྐྱོམ་<sup>1</sup>  
པའི་རིམ་པ། འཇམ་དབལ་གཞིན་རྒྱུ་གྱུར་པ་ལ་བྱག་འཚལ་ལོ། །

ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འི་<sup>2</sup>མདོ་སྡེ་འི་ཚུལ་ལ་ཞུགས་པ་ནས་ཀྱི་ཕྱིར་བསྐྱོམ་<sup>3</sup>པའི་  
རིམ་པ་མདོར་བཟོད་པར་བྱའོ། །དེ་ལ་བཙུམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
དབལ་ནིས་ཀྱི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐ་དད་པ་ཚད་མེད་<sup>4</sup>པ་དབལ་དུ་མེད་པ་ལ་སོང་།<sup>5</sup>པའི་  
དབྱེ་བས་བསྟན་དུ་ཟིན་ཀྱང་། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གཞིས་ཀྱིས་དྲིང་ངེ་འཛིན་  
ཐམས་ཅད་ལ་ཁུབ་བས་ན་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་དུ་འབྲེལ་བར་འཇུག་ཀྱི་  
པའི་ལམ་དེ་ཉིད་བཟོད་པར་བྱའོ། །བཙུམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྲུལ་<sup>6</sup>པ།

སྐྱེ་བ་པོ་<sup>7</sup>ལི་ལྷག་མཐོང་དང་། །

ཞི་གནས་གོམས་པར་བྱས་ན་ནི། །

གནས་ངན་ལེན་གྱི་འཛིང་བ་དང་། །

མཚན་མའི་མཚིང་བ་ནས་གྲོལ་འགྱུར། །ཞེས་སོ། །དེ་  
ལྟ་བུས་ན་སྐྱེ་བ་པོ་<sup>8</sup>མཐའ་དག་སྤོང་བར་འདོད་པས་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་ཀྱི་  
བསྐྱོམ་<sup>9</sup>པར་བྱའོ། །ཞི་གནས་ཀྱི་སྤྱོད་པས་ཀྱིས་ནི་མར་སེ་རྒྱུང་མེད་པ་ན་གནས་པ་  
བཞིན་དུ་<sup>10</sup>རང་གི་དམིཌ་པ་ལས་སེམས་སེ་གཡོ་བར་འགྱུར་རོ། །ལྷག་མཐོང་  
གིས་<sup>11</sup>ནི་སྐྱེ་བ་པོ་<sup>12</sup>མཐའ་དག་པ་བཞིན་དུ་ཚོས་ཀྱི་དེ་ཁོ་ན་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་ཀྱི་

1. ལྷ་པོ་-སྐྱོམ་ 2. ལྷ་ཙོ་-པོ་ 3. ལྷ་པོ་-སྐྱོམ་ 4. ལྷ་ཙོ་-མེད་དཔག་

5. ལྷ་ཙམེར་-མཁའི་མེད་པའི་དབྱེ་བས་ 6. ལྷ་ཙམེར་(མདོ་ཙམེར་མཐོང་པའི་ལྷ་ཙམེར་ ༩)

7. ལྷ་ཙོ་-པོ་ལོ་ 8. ལྷ་པོ་-བ་སྤོང་(ཆད་-སྐྱེ་བ་མཐའ་དག་སྤོང་)

9. ལྷ་ཙམེར་-སྤོང་པའི་ལྷ་ཙམེར་ 10. ལྷ་ཙམེར་-ཅུང་ལྷ་ཙམེར་ 11. ལྷ་ཙམེར་-ཅུང་ལྷ་ཙམེར་

12. ལྷ་ཙོ་-གོས་སྐྱེ་བ་པོ་ 13. ལྷ་པོ་-བ་ཉི་(ཆད་-སྐྱེ་བ་པོ་ཉི་མ་)



རབ་དུ་རྟོགས་པས་ཡང་དག་པའི་ཤེས་1རབ་ཀྱི་རྣམ་པ་འབྱུང་སྟེ། རྒྱུ་པ་  
མཐའ་དག་སྤྱོད་བར་འབྱུང་རོ།

དེ་ལྟ་བུས་ན་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་ནལ་འབྱུང་བ་ནམས་ཀྱི་དམིགས་པའི་  
དངོས་བོ་བཞི་བརྟན་དེ། རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་དང་། རྣམ་  
པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་བརྟན་དང་། དངོས་བོའི་མཐའ་དང་།  
དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པའོ། །དེ་ལ་ཞི་གནས་ཀྱིས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་  
གཞུགས་བརྟན་གང་ཡིན་པ་དང་། སངས་བྱེས་ཀྱི་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་ལ་  
མོས་2ནས་དམིགས་པ་སྟེ། དེ་ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་གཞུགས་བརྟན་ཞེས་  
བྱའོ། །དེ་ལ་ཡང་དག་པའི་དོན་3ལ་རྣམ་པར་རྟོག་པ་མེད་པས་ན་དེ་རྣམ་པར་  
མི་རྟོག་པ་ཞེས་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་ཐོབ་པ་དང་ཇི་ལྟར་4ཟླ་བའི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་  
གཞུགས་བརྟན་ལ་མོས་དེ་དམིགས་པས་ན་གཞུགས་བརྟན་ཞེས་བྱའོ། །ནལ་  
འབྱུང་པས་དེ་ཁོ་ནའི་དོན་རྟོག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་གང་གི་ཆོ་ལྷག་མཐོང་གི་5གཞུང་  
བརྟན་དེ་ཉིད་ལ་དབྱེད་6པ་དེའི་ཆོ་ལྷག་མཐོང་གི་མཚན་ཉིད་དེ་ཁོ་ན་ལ་རྟོག་པའི་  
རྣམ་པར་7རྟོག་པ་དེ་ན་ཡོད་པས་ན་རྣམ་པར་རྟོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་...  
བརྟན་ཞེས་བྱའོ། །ནལ་འབྱུང་བ་གཞུགས་བརྟན་དེ་ཉིད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་རྟོག་  
པས་ཆོས་ཐམས་ཅད་8ཀྱི་ངོ་བོ་9ཉིད་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་ཁོང་དུ་རྒྱུད་དེ། བདག་

- 
1. ལྟ་དཔེར་—ཞུགས་ = ཡེ་ཤེས་ 2. ལྟ་བུ་—མོས་པས་ 3. ལྟ་དཔེར་—ལྟ་པ་འཁོར་ལྟུང་ = ཡང་  
དག་པའི་དོན་ལ་བརྟན་པ་ན་ 4. 'ཇི་ལྟར་'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 5. ལྟ་ཆོ་—གོས་  
6. ལྟ་བུ་—སྟོན་པའི་ཆོ་ 7. ལྟ་དཔེར་—འཁོར་ལྟུང་ = རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་(ཞེས་གསལ་བ་མ་  
འཐུང་བར་མཛད་ནི) 8. ལྟ་བུ་—ཅད་འོ་བོ་(ཆད་—ཐམས་ཅད་'ཀྱི་'འོ་བོ་) 9. ལྟ་བུ་—བོ་ཇི་



གི་བཞིན་<sup>1</sup>གྱི་<sup>2</sup>གཟུགས་<sup>3</sup>བརྒྱན་མེ་ཡོང་གི་ནང་དུ་བྱུང་བ་ལ་བཏགས་ན་བདག་.....  
 གི་བཞིན་ལ་མི་སྤྲུལ་བ་ལ་སོགས་པ་མངོན་པ་བཞིན་ནོ། །གང་གི་ཆོ་དངོས་  
 བོའི་མཐའི་མཚན་ཉིད་ཀྱི་དེ་བཞིན་ཉིད་རྟོགས་<sup>4</sup>པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་དངོས་བོའི་  
 མཐའ་ཁོང་དུ་རྒྱུད་པས་ན་ས་དང་བོ་ལ་དངོས་བོའི་མཐའ་ལ་དམིགས་པ་ཞེས་....  
 བཤོ། །དེས་ན་<sup>5</sup>སྤྲུལ་གྱི་བཟུང་<sup>6</sup>ཡེན་ཟ་བ་བཞིན་དུ་བསྒྲུབ་པའི་ལམ་གྱིས་<sup>7</sup>ས་  
 ལྷག་མ་ནམས་སུ་རིམ་གྱིས་ཤིན་དུ་རབ་དུ་རྒྱས་པར་དག་པའི་སྐད་ཅིག་བྱུང་བས་  
 གནས་གྱུར་ནས། གང་གི་ཆོ་སྤྲིབ་པ་མ་ལུས་པ་སྤངས་པའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་  
 ཡོངས་སུ་རྟོགས་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་<sup>8</sup>ས་ལ་ཡེ་ཤེས་དེ་ཉིད་དགོས་  
 པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པ་ལ་དམིགས་པ་ཞེས་བཤོ། །

དེ་ལྟ་བུ་འདྲིས་ཅི་བསྟན་པ་ཡིན་ཞེ་ན། ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་གོམས་<sup>9</sup>  
 པར་བྱས་པས་དངོས་བོའི་<sup>10</sup>མཐའ་རྟོག་པར་འགྱུར་དེ། དེས་<sup>11</sup>སྤྲིབ་པ་མཐའ་<sup>12</sup>  
 དག་སྤོང་བའི་མཚན་ཉིད་དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྱུབ་པ་ཐོབ་བ། །དེ་ཉིད་སངས་  
 རྒྱས་ཉིད་ཡིན་དེ། དེ་བས་ན་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པར་འདོད་པས་<sup>13</sup>ཞི་གནས་

1. ལྟ་མེ་—གཞན་ 2. ལྟ་མེ་—གྱུས་ 3. ལྟ་ཆོ་—གཟུགས་མེ་(ཆད་—གཟུགས་“བརྒྱན་”མེ་)
4. ལྟ་ཆོ་—རྟོག་ 5. ལྟ་མེ་—ནས་ 6. ལྟ་དཔེ་ལྟར་ན་“སྤྲུལ་གྱི་བཟུང་ཡེན་ཟ་བ་” ཞེས་བཞུད་  
 དགོས་ཆོད་དུ་སྤང་ཡང་། ལྟ་དག་དང་ཆོ་ན་དཔར་མར་“སྤྲུལ་བཟུང་གྱི་ཡེན་ཟ་བ་” ཞེས་འཕྲིན་སྤྲུ་  
 རྒྱ་ཅན་དང་། ལྟ་མཐའ་དང་མི་གང་དཔར་མར་“སྤྲུལ་བཟུང་གྱི་ཡེན་ཟ་བ་” ཞེས་འཕྲིན་སྤྲུ་  
 བཞུད་འདུག་པས། ལྷག་མ་བརྒྱུད་འཕྲིན་ཟེར་བའི་བཤད་མ་འདྲ་མེན་རྒྱལ་རྒྱ་ཡོད་ན་ལས་དེ་མེན་གྱི་  
 དཀའ་ཞིང་མེ་བདེ་བས་གོང་གསལ་ལྟར་ཡིན་ལྟམ་མོ། 7. ལྟ་མེ་—གྱུས་ལྷག་(ཆད་—གྱུས་“ས་ལྷག་མ་”)
8. ལྟ་མེ་—གྱེ་ཡེ་(ཆད་—གྱེ་“ས་ལ་ཡེ་ཤེས་”) 9. “གོམས་པར་བྱས་པས་”-རྒྱ་དཔེར་མར་
10. ལྟ་དཔེར་—समस्तवस्तु = དངོས་བོ་མཐའ་དག་གི་ 11. ལྟ་མེ་—དེ་
12. “མཐའ་དག་”-རྒྱ་དཔེར་མར་ 13. ལྟ་མེ་—བ་(ཆད་—བས་)



དང་ལྷག་མཐོང་ལ་བསྐྱོམ་<sup>1</sup>པར་བྱའོ། །ཁང་དེ་<sup>2</sup>གཉིས་ལ་མི་སྐྱོམ་པ་དེ་དག་  
 ཉི་དངོས་བོ་དེ་མཐའ་ཡང་མི་རྟོགས།<sup>3</sup> དགོས་པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པར་ཡང་  
 མི་འགྱུར་རོ་ཞེས་བལྟན་པར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་མདོར་ན་ཞི་གནས་ནི་སེམས་  
 ཅེ་གཅིག་པ་ཉིད་དོ། །ལྷག་མཐོང་ནི་ཡང་དག་པ་ལ་རྟོག་པ་འོ། །ཞེས་  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་འཕགས་པ་དགོན་མཆོག་སྤྱི་ལ་སོགས་པ་ལས་ཞི་གནས་  
 དང་ལྷག་མཐོང་གི་མཚན་ཉིད་བཀའ་སྤྱུལ་དོ། །དེ་ལ་ནལ་འབྱུར་པས་ཞི་གནས་  
 དང་ལྷག་མཐོང་གི་ཚོགས་ཚུལ་ཁྲིམས་ནམ་པར་དག་པ་ལ་<sup>4</sup>སོགས་པ་ལ་གནས་...  
 པ་དེས་སེམས་ཅན་(<sup>5</sup>ཐམས་ཅད་)ལ་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་བོ་བསྐྱེད་དེ། བྱང་ཆུབ་དུ་  
 སེམས་(<sup>6</sup>ལེགས་པར་)བསྐྱེད་ནས་ཐོས་པ་དང་བསམ་པ་དང་སྒྲོམ་པ་ལ་སྤྱར་.....  
 པར་བྱའོ།

དེ་ལ་ནལ་འབྱུར་པས་སྐྱོམ་པའི་དུས་ན་ཐོག་མར་བྱ་བ་ཅི་ཡོད་པ་ཐམས་  
 ཅད་ཡོངས་སུ་ཇིགས་པར་བྱས་ལ། བཤང་<sup>7</sup>གཅི་བྱས་ལ་སྤྱི་ཆོར་མ་མེད་པ་  
 ཡོད་དུ་འོང་བའི་ཕྱོགས་སུ་(<sup>8</sup>གནས་ནས།) བདག་གིས་<sup>9</sup>སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་  
 བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྤྱིང་བོ་ལ་དགོད་པར་བྱའོ་སྤྱི་ལ་ཡོངས་སུ་བསམ་ཞིང་འགྲོ་བ་...  
 མཐའ་དག་གའོན་པའི་བསམ་པ་ཅན་གྱི་སྤྱིང་ཇི་ཆེན་བོ་མངོན་དུ་བྱས་ལ། ཕྱིར་  
 བཅུ་ན་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཡན་...

1. ལྷ་དཔེར་—ཐེན་པར་བྱའོ། 2. ལྷ་མེ—དེ་ཉིད་ལ་ 3. ལྷ་མེ—རྟོག་

4. ལྷ་མེ—ལ་གནས་(ཆད་—ལ་སོགས་པ་ལ་གནས་) 5. ལྷ་དཔེར་—སྤྱི་ལ་ཡོངས་སུ་སེམས་ཅན་

ཐམས་ཅད་ལ་ 6. ལྷ་དཔེར་—སྤྱི་ལ་ཡོངས་སུ་བསྐྱེད་པ་ 7. ལྷ་མེ—བཤང་གཅི་

8. ལྷ་དཔེར་—འདེམས་སྤྱི་ལ་ཡོངས་སུ་བསྐྱེད་པ་ 9. ལྷ་མེ—གི་



ལག་ལྷན་ཕྱག་བྱས་ལ། མངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་སྐྱ་<sup>1</sup>གཟུགས་  
 རི་མོ་ལ་སོགས་པ་མདུན་དུ་བཞག་གས། གཞན་དུ་ཡང་ཅང་སྟེ་དེ་དག་ལ་ཅི་རྒྱས་  
 ཀྱིས་<sup>2</sup>མཆོད་པ་དང་བཟློད་པ་བྱས་ལ། རང་གི་སྒྲིག་པ་བཤགས་ནས། འགྲོ་  
 བ་མཐའ་དག་གི་བསོད་ནམས་<sup>3</sup>ལ་ཆེས་སྐྱ་ཡི་རང་བ་<sup>4</sup>བྱས་ནས། ལྷན་ཤིན་དུ་  
 འཇམ་པ་བདེ་བ་ལ་ཆེ་བཅུན་ནས་བར་སྤང་མཛད་གྱི་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་ལྷ་བྱའམ་སྦྱིལ་མོ་  
 ཀྱང་ཕྱིན་དུ་ཡང་ཅང་སྟེ། མིག་ཏུ་ཅང་མི་དགྲ། ཏུ་ཅང་མི་འཇུགས་<sup>5</sup>བར་སྤང་ཆེ་མོར་  
 གཏད་<sup>6</sup>ཅིང་། ལུས་ཏུ་ཅང་ཡང་མི་སྐྱ་<sup>7</sup>ཏུ་ཅང་ཡང་མི་དགྲ། བར་བྱང་བོར་བསྤངས་  
 ལ་བྱན་པ་ནང་དུ་བཞག་སྟེ་འདུག་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་སྤྱག་པ་མཉམ་པར་བཞག་  
 ལ་མགོ་མི་མཐོ་མི་དམའ་ཞིང་ཕྱོགས་གཅིག་དུ་མི་ཡོ་བར་བཞག་སྟེ།<sup>8</sup> ལྷ་  
 དང་ལྷེ་བ་བྱང་བོར་བཞག་གོ། །སོ་དང་མཆུ་ཡང་ཐ་མལ་བར་བཞག་གོ། །ལྷེ་  
 ཡང་ཡ་<sup>9</sup>སོ་འི་བྱང་དུ་བཞར་<sup>10</sup>འོ། །དབྱུགས་ཕྱི་ནང་དུ་རྒྱ་བ་ཡང་སྐྱ་ཅན་  
 དང་། རམ་བ་དང་། དབྱུགས་གོད་པ་ཅན་དུ་མི་བཏང་གོ། །ཅི་ནས་ཀྱང་  
 མི་ཚོར་བར་དལ་བྱ་དལ་བྱས་ལྷན་གྱིས་གྲུབ་པའི་ཚལ་གྱིས་དབྱུགས་ནང་དུ་རྒྱབ་  
 པ་དང་ཕྱིར་འབྱུང་བར་འབྱར་བ་དེ་ལྟར་བྱའོ། །

དེ་ལ་ནལ་འབྱོར་བས་ཐོག་མར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱ་གཟུགས་ཆེ་  
 ལྷར་མཐོང་བ་དང་ཆེ་ལྷར་ཐོས་པ་ལ་སེམས་<sup>11</sup>གཏད་དེ་བཞག་ནས་ཞི་གནས་སྐྱབ་  
 པར་བྱ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྐྱ་གཟུགས་དེ་ཡང་གསེར་བཙོ་མ་བཞིན་

- 
1. 'སྐྱ་གཟུགས' - རྒྱ་ཤེར་མཉམ་ 2. ལྷ་མོ་-ཀྱོ་  
 3. ལྷ་མོ་-ནམས་ཆེས་(ཆད་-ནམས་ལ་ཆེས་) 4. ལྷ་མོ་-བར་ 5. ལྷ་མོ་-འཇུག་  
 6. ལྷ་མོ་-བཟློད་ཅིང་ 7. ལྷ་མོ་-དགྲ་ 8. རྒྱ་ཤེར་-ཀི་ཏའི་= ཡང་ཅི།  
 9. ལྷ་མོ་-ཡས་སོ་འི་ 10. ལྷ་མོ་-གཞག་གོ་ 11. ལྷ་མོ་-སེམས་བཞག་ནས་



ཏུ་སེར་ལ་མཚན་དང་དཔེ་བྱ་བ་མཐོང་བོས་བརྒྱན་པ་འཁོར་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ནང་  
 ན་བཞུགས་ཤིང་ཐབས་སྤྲོ་ཚོགས་ཀྱིས་སེམས་ཅན་གྱི་དོན་མཛད་པ་རྒྱན་ཏུ་ཡིད་ལ་  
 བྱེད་པས་དེའི་ཡོན་ཏན་ལ་འདོད་པ་བསྐྱེད་ཅིང་བྱིང་པ་དང་གོད་པ་<sup>1</sup>ཞི་བར་བྱས་ལ།  
 རི་སྤྱོད་ཏུ་དེ་མཐུན་ཏུ་བཞུགས་<sup>2</sup>པ་བཞིན་ཏུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་གྱུར་པ་དེ་སྤྱོད་  
 ཏུ་བསམ་གཏན་བྱའོ། །དེ་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྤྱི་ལཱ་ཆུགས་བརྟན་བྱོན་  
 པ་དང་བཞུད་པ་ལ་དོག་པས་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམ་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་འདི་སྤྱོད་  
 བསམ་བར་བྱ་སྟེ། །རི་ལྷར་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་སྤྱི་ལཱ་ཆུགས་བརྟན་འདི་  
 གང་ནས་ཀྱང་མ་གཤེགས། གར་ཡང་མི་བཞུད། བཞུགས་བཞིན་ཏུ་ཡང་  
 ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྤོང་ལ། བདག་དང་བདག་གི་དང་བྲལ་བ་དེ་བཞིན་ཏུ་ཆོས་  
 ཐམས་ཅད་ཀྱང་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་<sup>3</sup>སྤོང་ཞིང་འོང་བ་དང་འགྲོ་བ་དང་བྲལ་བ་གཞུང་...  
 བརྟན་ལྟ་བུ་སྟེ། ཡོད་པ་ལ་སོགས་པའི་ངོ་བོ་དང་བྲལ་བའོ་ཞེས་དབྱེད་ནས་  
 རྣམ་པར་དོག་པ་མེད་ཅིང་བཟོད་པ་མེད་པ་ངང་<sup>4</sup>གཅིག་ཏུ་གྱུར་པའི་ཡིད་ཀྱིས་.....  
 དེ་ཁོན་བསྐྱོམ་ཞིང་རི་སྤྱོད་འདོད་པར་འདུག་པར་བྱའོ། །དྲིང་ངེ་འཛིན་འདི་ནི་  
 ད་ལྟར་གྱི་སངས་རྒྱས་མངོན་སྲུང་ཏུ་བཞུགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་...  
 བརྟན་ཏེ། དྲིང་ངེ་འཛིན་འདིའི་པན་ཡོན་ཞིབ་ཏུ་ནི་མདོ་སྟེ་དེ་ཉིད་ལས་རིགས་  
 པར་བྱའོ། །

རྣམ་པ་གཅིག་ཏུ་<sup>6</sup>ན་རྣམ་པ་རི་སྤྱོད་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་བསྐྱེད་པར་གྱུར་

1. ཏུ་དཔེར་—མྱེད་ལཱ་འཁོར་ = མྱོད་པ་སོགས་ 2. ཏུ་མེ—བཞུགས་པ་བཞིན་(ཆད་—

བཞུགས་པ་མེད་པ་བཞིན་) 3. ཏུ་མེ—ཀྱི་ 4. ཏུ་མེ—དང་གཅིག་

5. 'དྲིང་ངེ་འཛིན་—ཏུ་དཔེར་མེད་ 6. ཏུ་མེ—ཏུ་རྣམ་པ་(ཆད་—ཏུ་ན་རྣམ་པ་)











སེམས་ཅམ་ནམ་པར་གཞག་པ་ནི།

ལྷ་བ་ངན་པས་མི་རྟོགས་སོ། ། །ཞེས་འབྱུང་ངོ་། ། །དེ་  
འདི་སྒྱུ་མ་དུ་སེམས་དེ། །སེམས་ཉིད་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ན་<sup>1</sup>གཞུགས་ལ་  
སོགས་པ་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་པའི་དངང་གས་<sup>2</sup>མི་ལམ་ན་  
དམིགས་པའི་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་སྤང་བ་བཞིན་དུ་བྱིས་པ་ནམས་ལ་གཞུགས་  
ལ་སོགས་<sup>3</sup>པ་ཕྱི་རལ་དུ་<sup>4</sup>ཆད་པ་བཞིན་དུ་སྤང་སྟེ། །དེ་ལྷ་བས་ན་ཁམས་གསུམ་  
པོ་ནི་སེམས་ཅམ་ཁོ་ན་ཡིན་ནོ། །དེས་དེ་ལྷ་ར་ཆོས་སུ་གདགས་པ་མཐའ་དག་  
ནི་སེམས་ཁོ་ན་ཡིན་པར་རྟོགས་ནས། །དེ་ལ་སོ་སོར་བདགས་ན་ཆོས་ཐམས་  
ཅད་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་སོ་སོར་བདགས་པ་ཡིན་ནོ་སྒྱུ་མ་ནས་སེམས་ཀྱི་ངོ་བོ་.....  
ཉིད་ལ་སོ་སོར་རྟོག་གོ། །དེ་འདི་ལྷ་ར་དབྱེད་དོ་<sup>5</sup> །དོན་དམ་པར་ན་སེམས་  
ཀྱང་སྒྱུ་མ་བཞིན་དུ་མ་སྟེས་པ་སྟེ། །གང་གི་ཆོ་ལུན་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་གཞུགས་ལ་  
སོགས་པའི་ནམ་པ་འཛིན་པར་སེམས་ཉིད་སྤྲོ་ཆོགས་ཀྱི་ནམ་པར་སྤང་བ་དེའི་ཆོ་  
དེ་ལས་གཏུན་ན་མེད་པའི་ཕྱིར་དེ་ཉིད་ཀྱང་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་བཞིན་དུ་(<sup>6</sup>བདེན་  
པ་)ཉིད་དུ་ག་ལ་འབྱུར། །ཇི་ལྷ་ར་གཞུགས་ལ་སོགས་པ་སྤྲོ་ཆོགས་ཀྱི་ནམ་པ་  
ཡིན་པས་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་པ་དེ་བཞིན་དུ་སེམས་ཀྱང་དེ་.....  
ལས་གཏུན་ན་མེད་པའི་ཕྱིར་གཅིག་དང་དུ་མའི་ངོ་བོ་ཉིད་མ་ཡིན་ནོ། །སེམས་  
སྟེ་བའི་ཆོ་<sup>7</sup>གང་ནས་ཀྱང་མི་འོང་། །འགག་པའི་ཆོ་<sup>8</sup>གང་དུ་ཡང་མི་འགྱོ་

1. ལྷ་བེ་-ནས་ 2. ལྷ་བེ་-ག་ 3. ལྷ་བེ་-སོགས་ཕྱི་ (ཆད་-སོགས་པ་ཕྱི་)

4. ལྷ་-དུ་ 5. ལྷ་བེ་-དེ་ 6. བོད་དམེ་བཞི་ཀར་མེད་པ་ཉིད་དུ་'ཞེས་

གསལ་ཡང་། ལྷ་དམེར་-མཁའ་པོ་= བདེན་པ་ཉིད་དུ་'ཞེས་གསལ་པ་འཐད་པར་སྤང་ངོ་།

7. ལྷ་ཆོ་-ཆོ་ཡང་ 8. ལྷ་ཆོ་-ཆོ་ཡང་



ཕྱེ། རོན་དམ་པར་ན་བདག་དང་གཞན་དང་གཉིས་ཀྱི་ལས་སྤེལ་བར་མི་རིགས་སོ།  
 དེ་ལྟ་བུས་ན་སེམས་ཀྱང་སྒྱུ་མ་བཞིན་དེ།      སེམས་ཇི་ལྟ་བུ་དེ་བཞིན་དུ་ཆོས་  
 བཅས་ཀྱང་སྒྱུ་མ་ལྟ་བུ་ཕྱེ། རོན་དམ་པར་ན་མ་སྤེལ་པའོ་སྒྱུ་མ་དུ་བདག་པར་བྱའོ།  
 རྣལ་འབྱོར་པ་དེས་<sup>1</sup>སེམས་གང་གིས་<sup>2</sup>སོ་སོར་རྟོག་པ་ལ་བདགས་ན་དེའི་  
 ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མི་དམིགས་དེ།      དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པས་དམིགས་པ་གང་དང་  
 གང་ལ་སེམས་འབྲོ་བ་དེ་དང་དེ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་ཡོངས་སུ་བདགས་<sup>3</sup>ན་དེའི་<sup>4</sup>  
 ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མི་དམིགས་དེ།      དེ་<sup>5</sup>གང་གི་ཆོ་<sup>6</sup>མི་དམིགས་པ་དེའི་ཆོ་དངོས་  
 བོ་ཐམས་ཅད་བདགས་ཤིང་ཆུ་ཤིང་གི་སྤོང་བོ་<sup>7</sup>བཞིན་དུ་སྤྱིང་བོ་མེད་པར་རྟོགས་  
 ནས་<sup>8</sup>དེ་ལས་<sup>9</sup>སེམས་རྒྱུག་པར་བྱེད་དོ།      །ད་ནས་ཡོད་པ་ལ་སོགས་པར་<sup>10</sup>རྣམ་  
 བར་རྟོག་པ་མེད་པར་གྱུར་ནས་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་མཚན་མ་མེད་པའི་  
 རྣལ་འབྱོར་ཐོབ་བོ།      །དེ་སྐད་འཕགས་པ་དཀོན་མཆོག་སྤྱིན་ལས་<sup>11</sup>ཀྱང་བཀའ་  
 ལྟལ་དེ། “དེ་ལྟར་སྤྱོད་ལ་མཁས་པ་དེས་སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་ཕྱིར་  
 སྤོང་བ་ཉིད་བསྒྲོམ་པ་ལ་རྣལ་འབྱོར་དུ་བྱེད་དོ།      །དེ་ལྟར་སྤོང་བ་ཉིད་བསྒྲོམ་པ་  
 མང་བས་གནས་གང་དང་གང་དུ་སེམས་འབྲོ་ཞིང་སེམས་མངོན་པར་དགའ་བའི་  
 གནས་དེ་དག་གི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡོངས་སུ་བཅའ་ན་སྤོང་བར་རྟོགས་སོ། །སེམས་<sup>12</sup>  
 གང་ཡིན་པ་དེ་ཡང་བདགས་ན་སྤོང་བར་རྟོགས་སོ། །སེམས་གང་གིས་རྟོག་པ་དེ་<sup>13</sup>

1. ལྟ་བུ་-དེ་ 2. ལྟ་བུ་-གྲ་ 3. ལྟ་བུ་-བདགས་པ་

4. ‘དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱང་མི་དམིགས་དེ་’ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེར་མེད་ 5. ལྟ་བུ་-དེས་ 6. ལྟ་བུ་-ཆོ་དམིགས་  
 (ཆད་-ཆོ་མི་དམིགས་) 7. ལྟ་བུ་-བྱ་ 8. ལྟ་བུ་-ན་ 9. ལྟ་བུ་-པ་ 10. ལྟ་བུ་-པ་  
 (ཆད་-པར་) 11. ལྟ་བུ་-བཀའ་(མདོ་ལྟ་བུ་) 12. ‘སེམས་གང་ཡོན་པ་དེ་ཡང་བདགས་ན་  
 སྤོང་བར་རྟོགས་སོ། ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེར་མེད་ ལྟ་བུ་མང་ཆད་པར་མངོན་དོ། 13. ལྟ་བུ་-དེའི་







པའི་དེ་ཁོ་ན་ལ་ཞུགས་པས་བལྟ་<sup>1</sup>བར་བྱ་བ་དང་། བརྟག་པར་བྱ་བ་གཞན་མེད་  
 པའི་ཕྱིར་དབྱེད་བ་མེད་ཅིང་བཟོད་<sup>2</sup>པ་མེད་པར་<sup>3</sup>ངང་གཅིག་དུ་གྱུར་པའི་ཡིད་.....  
 རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་བ་མེད་པའི་ཕྱིར་ནྟལ་འབྱོར་.....  
 པས་དེ་ཁོ་ན་དེ་ཤིན་དུ་གསལ་བར་ངེས་པར་གཟུང་ཞིང་འདུག་པར་བྱའོ། །  
 དེར་<sup>4</sup>གནས་ཀྱང་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་ནས་པར་མི་<sup>5</sup>གཡེང་བར་བྱའོ། །

གང་གི་ཆོ་བར་སྐབས་སུ་སེམས་ཕྱི་རོལ་དུ་<sup>6</sup>ནམ་པར་གཡེངས་པར་.....  
 མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དེའི་ངོ་བོ་ཉིད་ལ་བརྟགས་ནས་ནམ་པར་གཡེངས་<sup>7</sup>བ་ཞི་ངར་.....  
 བྱས་ལ་ཡང་དེ་ཉིད་དུ་སེམས་བཞག་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་དེ་ལ་སེམས་མངོན་  
 པར་མི་དགའ་བར་མཐོང་བ་དེའི་ཆོ་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་མངུང་པའི་ཕྱིར་དེ་.....  
 ལ་དགའ་བ་བསྐྱེས་པར་བྱའོ། །ནམ་པར་གཡེང་བ་ལ་ཉེས་པར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་  
 མི་དགའ་བ་རབ་དུ་ཞི་བར་བྱའོ། །ཅི་ཕྱི་སྒྲགས་བ་དང་གཉིད་ཀྱིས་ནོན་པས་  
 རྒྱ་བ་མི་<sup>8</sup>གསལ་པའི་ཕྱིར་སེམས་བྱིང་བའམ་བྱིང་དུ་དྲིགས་པར་གྱུར་བ་དེའི་ཆོ་  
 མཆོག་དུ་དགའ་བའི་དངོས་པོ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་གཟུགས་ལ་སོགས་བའམ། རྣང་  
 པའི་འདུ་ཤེས་ཡིད་ལ་བྱས་ནས་བྱིང་བ་ཞི་བར་བྱས་<sup>9</sup>ནས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤིན་དུ་.....  
 བརྟན་<sup>10</sup>པར་གཟུང་བར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་ནྟལ་འབྱོར་བ་དཔྱུས་ཡོང་<sup>11</sup>དང་འདྲ་  
 བའམ། ལྷན་པར་ཞུགས་པའི་མི་དང་འདྲ་བའམ། མིག་བཙུམས་བ་དང་འདྲ་བ་དེ་

- 
1. 'བལྟ་བར་བྱ་བ་དང་'—ཐུ་དཔེར་མེད་ 2. ཐུ་དཔེར་—निर्विकल्पकचरमेव = རྟོག་པ་མེད་པར་  
 རང་གཅིག་ 3. ལྷ་མེ—བཟོད་པར་ངང་(ཆད་—བཟོད་པ་མེད་པར་དང་)  
 4. ལྷ་མེ—དེ་ལྷར་ 5. ལྷ་མེ—མེ་གཡོ་ 6. ལྷ་མེ—དུ་ 7. ལྷ་མེ—གཡེང་  
 8. 'མེ་གསལ་པ'—ཐུ་དཔེར་མེད་ 9. ལྷ་མེ—བྱས་པ་ 10. ལྷ་མེ—བརྟན་ 11. ལྷ་མེ—ལོང་འདྲ་



ཁོ་ན་ཉིད་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་འཛིན་པ་དེའི་ཚེ་(1)སེམས་)བྱིང་བ་དང་ལྷག་མཐོང་  
 མེད་པར་རིག་པར་བྱའོ། །རྩེ་2ལྟེ་གང་གི་ཚེ་སྒྲོན་བྱིང་བའི་ཡུལ་ལ་འདོད་པས་  
 བར་སྐབས་སུ་སེམས་ཤོད་པའམ། ཤོད་དུ་རྟོགས་པར་མཐོང་བ་དེའི་ཚེ་མི་ཉག་པ་  
 ལ་སོགས་པས་སྒྲིབ་པའི་དངོས་པོ་ཡིད་ལ་བྱས་ལ་ཤོད་པ་ཞི་བར་བྱའོ། །དེ་ནས་  
 ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་སེམས་མངོན་པར་འདུ་བྱེད་པ་མེད་པར་འཇུག་པ་ལ་འབད་  
 བར་བྱའོ། །གང་གི་ཚེ་རྣམ་པར་གཡང་བའི་ས་3ལྟ་བུའམ། སྤྱུ་བཞིན་དུ་  
 སེམས་མི་གནས་པར་གྱུར་པ་ན་ཤོད་4པ་དང་ཞི་གནས་མེད་པ་ཡིན་པར་རིག་པ་  
 བར་བྱའོ། །རྩེ་ལྟེ་གང་གི་ཚེ་བྱིང་བ་དང་ཤོད་པ་ལས་དབེན་པའི་ཕྱར་མཉམ་  
 བར་བྱུགས་ཤིང་རང་གི་ངང་གིས་འཇུག་པས་དེ་6ཁོ་ན་7ཉིད་ལ་སེམས་ཤིན་དུ་  
 གསལ་བར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་ཚོལ་བ་སྒྲོད་པས་བཅད་སྒྲིམས་སུ་བྱས་8ཏེ། དེའི་  
 ཚེ་ཞི་གནས་དང་ལྷག་མཐོང་རྒྱུ་འབྱེད་པའི་ལས་གྲུབ་པ་ཡིན་པར་རིག་པར་  
 བྱའོ།

ཡང་9གང་གི་ཚེ་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་10པས་ཤེས་རབ་ཤིན་དུ་ཤིས་ཚེ་  
 བར་གྱུར་པ་དེའི་ཚེ་ཞི་གནས་རྒྱུང་11བའི་ཕྱར་མར་མེ་རྒྱུང་ལ་བཞག་པ་བཞིན་དུ་  
 སེམས་གཡོ་བས་དེ་ཁོ་ན་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མི་མཐོང་བར་འགྱུར་ཏེ། དཀའ་ཕྱར་

- 
1. བྱིང་མེད་ཡོད་ 2. ལྟེ་མི་—ཅེ་ལྟེ་ 3. ལྟེ་མི་—མི་ 4. འདོད་ཤོད་པ་དང་ཞི་གནས་  
 གཉིས་ཀ་མེད་པའི་དོན་མ་ཡོན་གྱི། རྣམ་གཡང་ས་གྱི་དབང་གིས་སེམས་ཤོད་པ་དེའི་ཚེ་ཞི་གནས་  
 མེད་ཅེས་པའི་དོན་ནོ། །ཚུལ་འདྲ་གོང་སྒྲོས་ལྷག་མཐོང་ལ་ཡང་སྤྱར་བར་བྱའོ།  
 5. ལྟེ་མི་—བར་ཅེ་(ཆད་—བར་བྱའོ། ཅེ་ལྟེ་) 6. ལྟེ་མི་—དེ་ཉིད་(ཆད་—དེ་ཁོ་ན་ཉིད་)  
 7. བྱིང་མེད་—འགྲིལ་འཇུག་= དེ་ཁོ་ན་དེ་ཉིད་ལ་ 8. ལྟེ་མི་—ལྟེ་ 9. ལྟེ་མི་—དེ་ཡང་  
 10. ལྟེ་མི་—བསྐྱོམ་ 11. ལྟེ་ཚེ་—གཞི་གནས་མཚུངས་



དེའི་ཆོ་ཞི་གནས་བསྐྱེས་པར་བྱའོ། །ཞི་གནས་ཀྱི་ཤས་ཆེན་ཡང་གཉིད་ཀྱིས་ལོག་  
 པའི་མི་བཞིན་དུ་<sup>1</sup>དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་མི་འགྱུར་དེ། དེ་  
 ལྟ་བུས་ན་དེའི་ཆོ་ཡང་<sup>2</sup>ཤེས་རབ་བསྐྱེས་པར་བྱའོ། །གང་གི་ཆོ་སྤངས་གཉིས་རྒྱུ་  
 ཏུ་འབྲེལ་དེ་མཉམ་དུ་བྱུགས་པ་བཞིན་དུ་གཉིས་ཀ་མཉམ་དུ་བྱུགས་པར་གྱུར་བ་  
 དེའི་ཆོ་ཆེ་སྲིད་དུ་ལྷན་དང་སེམས་ལ་གནོད་པར་མ་གྱུར་པ་དེ་སྲིད་དུ་མངོན་པར་  
 འདུ་བྱ་བ་མེད་པར་གནས་པར་བྱའོ། །

མདོར་ན་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཐམས་ཅད་ལ་ཉིས་པ་དུག་ཡོད་དེ། ལེ་ལ་དང་།  
 དམིགས་པ་བཟེད་པ་དང་། སྤྱིང་བ་དང་། མྱོད་པ་དང་། མི་ཚོལ་བ་དང་།  
 ཚོལ་བའོ། དེ་དག་གི་གཉེན་པོར་སྤྱོད་བའི་འདུ་བྱེད་བཟུང་བསྐྱེས་པར་བྱ་སྟེ།  
 འདི་<sup>3</sup>ལྟ་སྟེ། དང་བ་དང་། འདུན་<sup>4</sup>པ་དང་། ཚོལ་བ་དང་། ཤིན་དུ་སྤྱངས་པ་  
 དང་། དྲན་པ་དང་། ཤེས་བཞིན་དང་། སེམས་པ་དང་། བདང་སྟོམས་སོ། །  
 དེ་ལ་དང་བོ་བཞི་ནི་ལེ་ལོ་འི་གཉེན་པོ་སྟེ། འདི་ལྟར་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཡོན་ཏན་  
 རྣམས་ལ་མངོན་པར་ཡོད་ཆེས་པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་དད་པས་ནལ་འབྱོར་བ་<sup>5</sup>འདོད་  
 པ་སྟེ་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ནས་འདོད་པར་གྱུར་པས་བཙོན་འགྲུས་ཚུལ་མོ། །  
 དེ་ནས་བཙོན་འགྲུས་ལ་བདེན་པས་ལྷན་དང་སེམས་ལས་སྤྱ་རྒྱུང་བ་ཉིད་དུ་བྱེད་ན།  
 དེ་ནས་ལྷན་དང་སེམས་ཤིན་དུ་སྤྱངས་པས་ལེ་ལོ་ལྟོག་<sup>6</sup>པར་འགྱུར་རོ། །དེ་  
 བས་<sup>7</sup>ན་དད་པ་ལ་སོགས་པས་ལེ་<sup>8</sup>ལོ་སྤྱོད་པར་འགྱུར་དེ། དེའི་སྤྱིར་དེ་དག་

1. ལྟ་བུ་-དུ་ཤིན་(ཆད་-དུ་དེ་ཁོ་ན་ཤིན་དུ་) 2. 'ཡང་'-ཀྱི་དམེར་མེད་

3. 'འདི་ལྟ་སྟེ་'-ཀྱི་དམེར་མེད། 4. ལྟ་བུ་-མདུན་པ་ 5. ལྟ་བུ་-བ་

6. ལྟ་བུ་-ལྟོག་ 7. ལྟ་བུ་-བས་དད་(ཆད་-བས་ན་དད་) 8. 'ལེ་ལོ་སྤྱོད་པར་འགྱུར་དེ་'

ཞེས་པ་ཀྱི་དམེར་མེད་



བསྐྱེད་པའི་མཁའ་མཁེ་ལྷ་མོ་འཕྲུལ་པའི་མཁའ་མཁེ་ལྷ་མོ་ །ཤེས་བཞིན་  
ནི་བྱང་བ་དང་མྱོད་བ་གཉིས་ཀྱི་གཉིན་པོ་ལྟེ། དེས་དེ་གཉིས་རྟོགས་ནས་སྤྱོད་  
བའི་ཕྱིར་རོ། །བྱང་བ་དང་མྱོད་བ་མཁའ་མཁེ་ལྷ་མོ་འཕྲུལ་པའི་མཁའ་མཁེ་ལྷ་མོ་  
དེའི་ཕྱིར་དེའི་གཉིན་པོར་སེམས་པ་བསྐྱེད་པའི་མཁའ་མཁེ་ལྷ་མོ་ །གང་གི་ཆོ་བྱང་བ་དང་།  
མྱོད་བ་རབ་དུ་ཞི་སྟེ་སེམས་ནས་དུ་འཇུག་པ་དེའི་ཆོ་བྱང་བ་ཉེས་པ་ལྟེ། དེའི་  
ཆོ་བྱང་གཉིན་པོར་བདང་སྟེ་སེམས་པ་བསྐྱེད་པའི་མཁའ་མཁེ་ལྷ་མོ་ །སེམས་མཉམ་པར་ཞུགས་  
པའི་ཆོ་གཤམ་དེ་ཆོ་བྱང་བ་ཕྱིས་ན་དེའི་ཆོ་སེམས་ནས་པར་གཤམ་པར་འགྱུར་རོ། །  
སེམས་བྱང་བར་གྱུར་པ་ལ་གཤམ་དེ་ཆོ་བྱང་བ་མ་ཕྱིས་ན་དེའི་ཆོ་སྟེ་མཉམ་པར་མཉམ་པའི་  
ཕྱིར་མཉམ་པར་བཞིན་དུ་སེམས་བྱང་བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་ན་སེམས་ཞུགས་  
པ་བསམ་ཞིང་མྱོད་བ་ཞི་བར་ཕྱིས་ལ་མཉམ་པར་གྱུར་པས་བདང་སྟེ་སེམས་སུ་བྱུང་།

དེ་ནས་ནས་འབྱུང་པ་ཇི་སྟེ་དུ་རབ་པ་དེ་སྟེ་དུ་མཉམ་པར་འབྱུང་བ་  
མཉམ་པར་ཁོ་ནར་དེ་ཁོ་ན་བསྐྱེད་ཞིང་འབྱུང་པར་བྱུང་། །ལུས་ཀྱི་སེམས་ལ་གཞིན་  
པར་གྱུར་ན་སྐབས་སྐབས་སུ་འཇིག་རྟེན་མཉམ་པར་དག་ལ་བརྟེན་ལ་རྒྱུ་མ་དང་།  
མི་ལམ་དང་། རྩ་ལྷ་ལྷ་བྱ་དང་། མིག་ཡོར་ལྷ་བྱར་རྟོགས་པར་བྱུང་། དེ་  
སྟེ་དུ་ནས་པར་མཉམ་པར་འཇུག་པ་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་ཏེ། “འཇིག་རྟེན་  
ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ནམ་མཁའི་རྒྱལ་དང་འདྲ་བར་...

1. ལྟ་པོ་—གཉིས་རྟོགས་(ཆད་—གཉིས་ཀྱི་གཉིན་པོ་ལྟེ། དེས་དེ་གཉིས་རྟོགས་)  
2. ལྟ་པོ་—པ་ཞི་(ཆད་སྟེ་ལྟ་པོ་པ་མཁའ་མཁེ་ལྷ་མོ་) 3. ལྟ་པོ་—དེ 4. ལྟ་པོ་—ཐམས་ཅད་,  
ཕུན་= ཞི་བར་ཐམས་ཅད་ 5. ལྟ་པོ་—ཀུ་ཡུ་འདི་= ལུས་ལ་སྟེ་གས་པ་  
6. མཉམ་པར་—ལྟ་པོ་པ་མཉམ་པར་ 7. ལྟ་པོ་—བཀའ་(ཆད་—མཉམ་པར་ 3) ལྟ་པོ་པ་མཉམ་པར་མཉམ་པར་  
ཆོག་ལྟ་པོ་པ་མཉམ་པར་མཉམ་པར་ཆོག་གོ།



མཉམ་བར་མཐོང་ངོ། །དེའི་རྒྱུ་ལ་བོད་པ་ནི་སྐྱུ་མ་དང་། སྐྱུ་མ་གྱུ་དང་།  
 (1མེ་ལམ་དང་།) རྩ་མེ་བཞིན་དུ་མཐོང་ངོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ། །དེ་ལྟར་འགྲོ་བ་  
 སྐྱུ་མ་ལྟ་བུར་རྟོགས་ནས་<sup>2</sup>སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྤྱིར་རྒྱུ་ཆེན་བོ་མངོན་དུ་བྱས་<sup>3</sup>  
 ལ་འདི་སྐྱུ་མ་དུ་བསམ་པར་བྱ་སྟེ། བྱིས་པའི་སྤྱོད་ཅན་དེ་དག་གིས་ཆོས་ཟབ་མོ་  
 འདི་ལྟ་བུར་རྟོགས་ནས་གཞོན་མ་ནས་ཞི་བའི་ཆོས་རྣམས་ལ་ཡང་ཡོད་པ་ལ་……  
 སོགས་པར་སྤྱོད་བདགས་དེ། ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་གྱུར་ནས་ལས་དང་ཉེན་མངས་པ་  
 རྣམས་པ་སྤྱོད་ཆོགས་བསྟོན་གས་<sup>4</sup>དེ། དེའི་ཕྱིར་འཁོར་བར་ཡོངས་སུ་འཇུགས་པས་  
 ན་བདག་གིས་ཅི་ནས་ཀྱང་། འདི་དག་ཆོས་ཟབ་མོ་འདི་ལྟ་བུ་ཁོང་དུ་ཆུད་པར་  
 བྱའོ་སྐྱུ་མ་དུ་བསམ་པར་བྱའོ། །དེ་ནས་ངལ་བསོས་<sup>5</sup>དེ། ཡང་དེ་བཞིན་དུ་  
 ཆོས་ཐམས་ཅད་མེ་སྤང་བའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་འཇུག་པར་བྱའོ། །ཡང་<sup>6</sup>སེམས་  
 རྒྱུ་བར་གྱུར་ན་ཡང་ངལ་བསོས་<sup>7</sup>དེ་དེ་བཞིན་དུ་འཇུག་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟ་བུའི་  
 རམས་པ་འདྲིས་ཆུ་ཆོད་གཅིག་གས། མེལ་<sup>8</sup>ཆོ་བྱུང་བྱེད་དམ། བྱུང་གཅིག་གས་  
 རི་སྤྱོད་རྣམས་པ་དེ་སྤྱོད་དུ་འདུག་པར་བྱའོ། །

དེ་ནས་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལས་ཐུང་བར་འདོད་ན་སྤྱིལ་མོ་གྱུང་མ་བཞིག་པར་……  
 འདི་སྐྱུ་མ་དུ་བསམ་པར་བྱ་སྟེ། ཆོས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་དོན་དམ་པར་ན་མ་  
 སྤྱོས་པ་ཡིན་ཡང་སྐྱུ་མ་བཞིན་དུ་གྱུ་དང་ཀྱིན་སོ་སོར་ངེས་པ་སྤྱོད་ཆོགས་<sup>9</sup>སྤྱུ་འདུས་  
 པའི་དབང་གིས་མ་བདགས་ན་ཉམས་དགའ་བ་སྤྱོད་ཆོགས་ཁོ་ན་དག་འབྱུང་སྟེ།

- 
1. རྩ་དབེར་ཡོད་ 2. ལྟ་བུ་-ན་ 3. ལྟ་བུ་-ཐམས་པ་ 4. ལྟ་བུ་-སོགས་  
 5. ལྟ་བུ་-བསོ་སྟེ་ 6. 'ཡང་'-རྩ་དབེར་ཡོད་ 7. ལྟ་བུ་-ངལ་བསོ་  
 8. 'མེལ་ཆོ་བྱུང་བྱེད་དམ'-རྩ་དབེར་ཡོད་ 9. ལྟ་བུ་-ཆོགས་འདུས་



དེས་ན་ཆད་པར་ལྟ་བར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །སྐར་འབའི་མཐར་ཡང་མི་འགྱུར་དེ།  
 འདི་ལྟར་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནམ་པར་དབྱེན་ན་མི་དམིགས་དེ། དེས་ན་དག་པོ་(པར་  
 ལྟ་བ་)ཉིད་དང་སྒྲོ་འདོགས་པའི་མཐར་ཡང་མི་འགྱུར་རོ། །དེ་ལ་གང་དག་  
 ཤེས་རབ་ཀྱི་མིག་དང་བྲལ་བས་ཕྱིན་ཅི་ལོག་གི་སྒྲོ་ཅན་དུ་གྱུར་ཅིང་བདག་དུ་.....  
 མངོན་པར་ཞེན་ནས་ལས་ནས་བ་སྒྲ་ཚོགས་པའི་དེ་དག་ནི་འཁོར་བ་ན་ཡོངས་  
 སྒྲ་འབྲས་མོ། གང་དག་འཁོར་བ་ལ་གཅིག་དུ་མི་ཕྱོགས་ཤིང་སྤྱི་ཆེ་ཆེན་བོ་  
 དང་བྲལ་བ་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་དུ་སྤྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་པ་པོ་དུ་ཕྱིན་  
 བ་ཆོགས་པར་མི་བྱེད་ཀྱི། བདག་འདུལ་བ་འབའ་ཞིག་བྱེད་པའི་སེམས་ཅན་  
 དེ་དག་ནི་ཐབས་མེད་པའི་ཕྱིར་ཉན་ཤོས་སེམས་རང་སངས་ལྱུས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་དུ་.....  
 ལྷུང་ངོ་། །

གང་དག་འགྲོ་བ་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་ཁོང་དུ་ཆད་ནས་ཀྱང་སྤྱི་ཆེ་ཆེན་  
 བོ་འི་སྤོབས་ཀྱིས་འགྲོ་བ་མཐའ་དག་གཤོན་པར་དམ་བཅས་ནས། སྒྲ་མ་མཁན་  
 བཞིན་དུ་སྒྲོ་ཕྱིན་ཅི་ལོག་དུ་མ་གྱུར་བས་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་གྱི་  
 ཆེན་བོ་ཡོངས་སྒྲ་སྒྲུབ་བ་དེ་དག་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གོ་འཕང་བརྟེས་ནས་  
 འཁོར་བ་ན་འགྲོ་བ་མ་ལུས་པ་ལ་པན་བ་དང་བདེ་བའི་ནམ་པ་དམས་ཅད་ཡང་.....

- 
1. བོད་དཔེར་སྒྲོ་འདོགས་པའི་མཐར་ཞེས་གསལ་ཡང་། ལྟ་དཔེར་—(अपवादान्त = སྐར་པའི་  
 མཐར་ཞེས་གསལ་བ་འཐད་པར་ཆད་ལྟ། ལྟ་ཕྱིན་འདུས་པ་ལ་བརྟེན་ནས་ལྟ་ཚོགས་ལྟ་ཆད་པས་  
 ཆད་པར་ལྟ་བ་དང་། སྐར་པའི་མཐར་མི་འགྱུར་བ་དང་། ཤེས་རབ་ཀྱིས་ནམ་པར་དབྱེན་ན་མི་  
 དམིགས་པས་དྲག་པར་ལྟ་བ་དང་སྒྲོ་འདོགས་པའི་མཐར་མི་འགྱུར་ཞེས་པའི་དོན་དུ་ཆད་ངོ་། །
2. ལྟ་བེ་—སྤྱི་ཆེ་ཆེན་ 3. ལྟ་དཔེར་ཡོད་ 4. ལྟ་—ལྟ་ཚོགས་ 5. 'སེམས་ཅན་གྱི་དོན་'  
 ལྟ་དཔེར་མེད་ 6. 'འབའ་ཞིག་'—ལྟ་དཔེར་མེད་ 7. 'ཀྱང་'—ལྟ་དཔེར་མེད་



དག་པར་སྐྱབ་ཅིང་བཞུགས་སོ། །དེ་དག་ཀྱང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་གས་<sup>1</sup>ཀྱི་སྒྲོབས་  
 ཀྱིས་ཉོན་མེད་ས་པ་མཐའ་<sup>2</sup>དག་སྤངས་པས་འཁོར་བར་ཡང་མི་རྒྱུང་ལ། སེམས་  
 ཅན་<sup>3</sup>ཐམས་ཅད་ལ་ལྟ་བུ་བས་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚྭ་གས་ཀྱི་ཆེ་ཞིང་ཚད་མེད་པ་བསཏ་  
 བའི་དབང་གིས་ན་སྤྱང་ན་ལས་འདས་པར་ཡང་མི་རྒྱུང་ངོ་། སེམས་ཅན་ཐམས་  
 ཅད་ཀྱི་ཉེ་བར་འཛོ་བར་ཡང་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟ་བུ་ན་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་  
 ལ་པན་པ་དང་བདེ་བ་བསྐྱེད་པར་འདོད་པ་མི་གནས་པའི་སྤྱང་ན་ལས་འདས་པ་  
 ཐོབ་པར་འདོད་པ་བདག་<sup>4</sup>གིས་<sup>5</sup>བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་གས་ཀྱི་ཆེན་པོ་  
 སྐྱབ་པ་ལ་དུས་<sup>6</sup>ཐམས་ཅད་དུ་མངོན་པར་བརྩོན་པར་བྱའོ་<sup>7</sup>སྐྱམ་དུ་བསམ་སོ། །  
 དེ་སྐད་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་བའི་མདོ་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “ཡེ་  
 ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་གས་ནི་ཉོན་མེད་ས་པ་མཐའ་དག་སྤང་བར་འགྱུར་<sup>9</sup>པ་འགས་སོ། །  
 བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚྭ་གས་ནི་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་འཛོ་བར་འགྱུར་བ་  
 ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་ལྟར་ལགས་པས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 སེམས་དབར་ཆེན་པོས་བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚྭ་ལ་བརྩོན་པར་བཤུའོ།”  
 ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྐྱེ་བ་འབྱུང་བའི་མདོ་  
 ལས་<sup>10</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “གང་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ནམས་འབྱུང་བ་དེ་ནི་

1. ‘ཚྭ་གས་ཀྱི་’-ཀྱི་དབེར་མེད་ 2. ‘མཐའ་དག་’-ཀྱི་དབེར་མེད་ 3. ལྟ་བུ་-ཅན་ལྟ་  
 (ཆད་-སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་’ལྟ་) 4. བོད་དབེར་-‘འདོད་པ་དག་གིས་’ཞེས་གསལ་ཡང་།  
 ཀྱི་དབེར་-‘ཤུཌ = བདག་གིས་’ཞེས་གསལ་པ་འབྱུང་བར་རྒྱུང་ངོ་། 5. ལྟ་བུ་-ག་(ཆད་-གིས་)  
 6. ‘དུས་ཐམས་ཅད་དུ་’-ཀྱི་དབེར་མེད་ 7. ལྟ་བུ་-ཐའོ། 15. སྐད་ 8. ཚེས་ཞེས་ངོས་སྟེན་མ་བྱུང་བ།  
 9. ལྟ་བུ་-འགྱུར་ལགས་ 10. ལྟ་བུ་-བཀའ་(ཐལ་ཆེན་ག་ ༥༠)མདོ་ཚྭ་འདོད་དག་ཚྭ་ལྟ་བུ་  
 ཉེ་བྱུང་འདོན་མཛད་པར་མངོན་ནོ།



ལྷ་གཅིག་ཏུ་<sup>1</sup>མ་ཡིན་ནོ། །དེ་ཅི་ལྟར་ཞེ་ན། གྲེ་རྒྱལ་བའི་སྤྲུལ་དེ་བཞིན་  
གཤེགས་པ་ནམས་ནི་ཡང་དག་པར་འགྱུར་བའི་རྒྱ་ཚད་མེད་པ་འབྱུང་ཕྱག་བཅུས་  
ཡང་དག་པར་འགྱུར་ཤི། བཅུ་གང་ཞེ་ན། འདི་ལྟ་ཤི། བསོད་ནམས་དང་  
ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོར་ཚད་མེད་པས་མི་ངོམས་པ་ཡང་དག་པར་འགྱུར་<sup>2</sup>བའི་རྒྱ་དང་།<sup>3</sup>  
ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱས་པར་འབྲུང་ངོ་། །འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པར་གྲུང་  
བས་བསྟན་པ་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “གྲེ་<sup>5</sup>གྲོགས་པོ་དག་དེ་བཞིན་གཤེར་  
བའི་སྤྲུལ་ནི་བསོད་ནམས་བརྒྱ་ལས་ངེས་པར་སྦྱེས་པའོ། དག་བའི་ཚོས་ཐམས་  
ཅད་ལས་<sup>6</sup>ངེས་པར་སྦྱེས་པའོ། །དག་བའི་ལས་ཚད་མེད་པ་ལས་ངེས་པར་  
སྦྱེས་<sup>7</sup>སོ།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་རྒྱ་ཆེར་འབྲུང་ངོ་། །

དེ་ལྟར་བྱས་ན་དལ་གྱིས་སྦྱིལ་མོ་ཀྱང་བཤིག་ཤི། རྩོགས་བཅུ་ན་བཞུང་  
བའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་བྱུག་བཅའ་ནས་དེ་……  
དག་ལ་མཆོད་པ་དང་བསྟོད་པ་བྱས་ལ། འཕགས་པ་བཟང་པོ་སྟོད་པ་ལ་སོགས་  
བའི་སྟོན་ལས་ཆེན་<sup>8</sup>པོ་གདབ་བོ། །དེ་ནས་སྟོང་པ་ཉིད་དང་སྟིང་རྩེའི་སྟིང་པོ་ཅན་  
སྤྲུལ་མེད་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་ཡོངས་སུ་བསྐྱེས་པའི་སྤྲུལ་བ་ལ་སོགས་པའི་བསོད་……  
ནམས་ཀྱི་ཚོགས་(<sup>9</sup>མཐའ་དག་)སྦྱུབ་པ་ལ་མངོན་པར་བརྩོན་པར་བྱའོ། །

གང་ཞིག་སེམས་ཀྱི་ནམ་པར་དྲིག་པས་བསྐྱེད་པའི་དག་བ་དང་མི་དག་བའི་  
ལས་ཀྱི་དབང་གིས་སེམས་ཅན་ནམས་མཐོ་རིས་ལ་སོགས་པའི་(<sup>10</sup>ལས་ཀྱི་)འབྲས་

1. ལྷ་པོ་—གཅིག་ཏུ་ 2. ལྷ་པོ་—གྲུབ་པའི་ 3. ལྷ་པོ་—བཀའ་(མདོ་—མ་། ༡༤༩)

4. ‘གྲེ་གྲོགས་པོ་དག’ཞེས་པ་རྒྱ་དཔེ་དང་མདོ་ངོ་མ་གཉིས་ཀྱི་མེ་ལྷང་།

5. ལྷ་པོ་—ཅད་ལ་(ཆད་—ཅད་ལས་) 6. ལྷ་པོ་—སྦྱེས་པའོ། 7. ‘ཆེན་པོ་’—རྒྱ་དཔེར་མེད་

8. ལྷ་པོ་དཔེར་ཡོད་ 9. ལྷ་པོ་དཔེར་ཡོད་







སྒྲིང་འཕགས་པ་གཡུ་མགོ་འི་རིམ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་གསུངས་དེ། “བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ནམས་ཀྱི་ལམ་ནི་མདོར་བསྟུན་གཉིས་དེ། གཉིས་གང་ཞིག་འདི་ལྟ་སྟེ།  
 ཐབས་དང་། ཤེས་རབ་བོ།” ཞེས་། འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་<sup>2</sup>  
 གསང་བ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་བཀའ་སྟུང་དེ། “ཐབས་དང་ཤེས་རབ་འདི་གཉིས་ཀྱིས་  
 བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་ལམ་<sup>4</sup>ཐམས་ཅད་བསྟུས་པར་འགྱུར་རོ།” ཞེས་འབྱུང་  
 སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་སྤོང་བ་ནི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཆེན་པོ་བྱས་པར་འགྱུར་  
 རོ། འདྲ་བས་ན་ཐེག་<sup>5</sup>པ་ཆེན་པོ་སྤོང་བ། ཐོས་པ་ལྟར་བ། བདག་གི་ལྟ་བ་<sup>6</sup>  
 མཆོག་ཏུ་འཛིན་པ། སྒྲེ་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྟུན་བཀའ་སྟུང་མ་བྱས་པ། དེ་བཞིན་  
 གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི་ཆུལ་སྟོན་གས་པ། བདག་སྤང་བར་བྱས་ནས་  
 གཞན་ཡང་སྤང་བར་བྱེད་པ་རིགས་པ་དང་ལྷང་དང་འགལ་བའི་དུག་གིས་བདབ་...  
 བའི་ཆོག་ནི་མཁས་པ་བདག་ལ་ལེགས་སུ་འདོད་པས་ཟས་དུག་ཅན་བཞིན་དུ་བྱུང་  
 རིང་དུ་ཡོངས་སུ་སྤང་བར་བྱའོ། །

དེ་<sup>7</sup>ལྟར་དེས་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་སྤངས་ན་ཆོས་ཤིན་དུ་ནམ་...  
 བར་འབྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་<sup>8</sup>དག་པ་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཡན་ལག་དམ་པ་ཁོ་ན་ཡང་...  
 སྤངས་པར་འགྱུར་རོ། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་ནལ་འབྱེད་  
 པས་ཐབས་<sup>9</sup>གང་གས་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་<sup>10</sup>ནས་གཞུགས་ལ་སོགས་པའི་.....

---

1. རྟེན་བཀའ་(མདོ་-‘ཅ’ 222) 2. ལྟ་བུ་-བཤི་མདོ་(ཆད་-བཤི་‘གསང་བའི་’མདོ་)  
 3. ཆོས་ཞེས་ངོས་ནི་དེ་མ་བྱུང་བ། 4. ལྟ་དཔེར་-ཤུལ་མཐོང་= ལྟ་ལྟ་དུ་ལྟ་ན་པ་ 5. ལྟ་དཔེར་-  
 ‘ཐེག་པ་ཆེན་པོ་’ ཞེས་པ་ནས་མཆོག་ཏུ་འཛིན་པ་ཞེས་པའི་པར་མ་སྤང་བས་ཆད་པར་དངོན་ནོ།  
 6. ལྟ་བུ་-བཤི་ 7. ལྟ་བུ་-འདོ་ 8. ‘ཡང་དག་པ་’-ལྟ་དཔེར་མེད་  
 9. ‘ཐབས་’-ལྟ་དཔེར་མེད་ 10. ལྟ་བུ་-དུས་གཞུགས་(ཆད་-དུས་‘ནས་’གཞུགས་)



དངོས་པོ་ལ་མངོན་པར་ཞེན་ཅིང་གོམས་པའི་སེམས་ནམ་པར་མི་རྟོག་པ་ཉིད་ལ་<sup>1</sup>  
 རྣམ་པར་<sup>2</sup>བཞག་པར་བྱ།<sup>3</sup> གཤམ་དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་བྲན་པ་མེད་པ་དང་།  
 ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་འཇུག་གོ་ཞེ་ན། དེ་ཡང་རིགས་པ་མ་ཡིན་དེ། ཡང་  
 དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་ནི་ཉམས་སྲུང་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་མི་བྲན་  
 པར་བྱ་བ་དང་། ཡིད་ལ་མི་བྱ་བར་བྱེད་མི་བྱས་སོ། །གཤམ་དེ་བདག་གིས་<sup>4</sup>  
 ཆོས་འདི་དག་བྲན་པར་མི་བྱའོ། །ཡིད་ལ་མི་བྱའོ་སྟུང་དུ་དེ་ལྟར་བསྐྱོམ་ཞིང་དེ་  
 དག་ལ་བྲན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་བསྐྱོམ་པ་ནི་དེའི་ཆོ་དེས་དེ་  
 དག་གིས་དུ་བྲན་པ་དང་། གིན་དུ་ཡིད་ལ་བྱས་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་ལྟེ་བྲན་  
 པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་ཅམ་ལ་བྲན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་  
 པ་མེད་པ་སྐད་དུ་བྱ་ན། དེའི་ཆོ་དེ་གཉིས་རྣམ་པ་གང་གིས་མེད་པར་འགྱུར་བ་  
 དེ་ཉིད་དབྱེད་དགོས་དེ། མེད་པ་ནི་རྒྱུར་<sup>5</sup>བྱང་བར་<sup>6</sup>ཡང་མི་འགྱུར་དེ། གང་  
 གིས་<sup>7</sup>མཚན་<sup>8</sup>མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་ལས་<sup>9</sup>རྣམ་པར་མི་རྟོག་  
 པ་ཉིད་དུ་འགྱུར། དེ་ཅམ་གྱི་ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པར་འགྱུར་དུ་ཟིན་ན་ནི་  
 བརྒྱལ་<sup>10</sup>བ་ཡང་བྲན་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་  
 ཉིད་དུ་འཇུག་པར་འགྱུར་རོ། །ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་རྣམ་  
 པ་གཞན་གྱིས་<sup>11</sup>བྲན་པ་མེད་ཅིང་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་<sup>12</sup>བའི་ཐམས་ཅད་གཞན་

1. ལྟ་བུ་—ལ་བཞག་ 2. ལྟ་དཔེར་—པའི་ཞེས་པ་ 3. ལྟ་བུ་—ཐུན། (འདིར་ཐུན་  
 ཞེས་པ་མ་དག་པར་མངོན་དུ། ལྟ་དཔེར་དང་གཞན་དོན་གང་ལ་བཞག་པ་ཀྱང་དེ་ཆོག་ལས་མ་འདས་སོ།)  
 4. ལྟ་བུ་—ག་ 5. ལྟ་བུ་—རྒྱ་བྱང་(ཆད་—རྒྱ་བྱང་) 6. ལྟ་བུ་—བ་ 7. ལྟ་བུ་—ག་  
 8. ལྟ་དཔེར་—མཚན་མ་ཞེས་པ་ནས་ཉིད་དུ་འགྱུར་ཞེས་པའི་བར་མཚན་ 9. ལྟ་བུ་—ལ་  
 10. ལྟ་བུ་—རྒྱ་བྱང་ 11. ལྟ་བུ་—ག་ 12. ལྟ་བུ་—བ་



མེད་པོ།

དཔལ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་གྱུར་དུ་ཟིན་ཀྱང་ཡང་  
 དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་ན་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པ་ལ་འཇུག་<sup>2</sup>  
 པར་ཇི་ལྟར་འགྱུར། ཆོས་རྣམས་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱིས་སྤྱོད་པར་གནས་པ་ཁོ་ན་ཡིན་  
 དུ་ཟིན་ཀྱང་སོ་སོར་རྟོག་པ་<sup>3</sup>དེ་མེད་ན་དེ་དག་<sup>4</sup>གི་སྤྱོད་པ་ཉིད་རྟོགས་པར་མི་  
 འགྱུར་རོ། །སྤྱོད་པ་ཉིད་རྟོགས་པ་མེད་པས་ནི་སྤྱི་བ་པ་སྤྱོད་པར་མི་འགྱུར་རོ། །  
 དེ་ལྟར་གྱུར་དུ་ཟིན་ན་ཐམས་ཅད་<sup>5</sup>ཀྱང་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་རང་ཐར་བར་འགྱུར་རོ། །  
 ཡང་ན་ལ་འབྱོར་པ་དེ་གཤམ་དེ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་དཔལ་པ་<sup>7</sup>ཉམས་པ་འཇུག་ མྱོངས་  
 པས་དཔལ་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མི་འཇུག་ན་ནི་དེའི་ཆོ་འདོན་དུ་མྱོངས་པ་ཡིན་  
 པས་དེ་ན་ལ་འབྱོར་པར་<sup>8</sup>ཇི་ལྟར་འགྱུར། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་  
 པར་དེ་ལ་དཔལ་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་གོམས་པར་བྱས་པས་  
 སྤྱོད་པ་ཉིད་གོམས་པར་བྱས་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་  
 སྤྱོད་པ་ཀྱང་རིང་དུ་བསྐྱངས་པར་འགྱུར་རོ། །ཅི་སྟེ་དེ་དཔལ་པ་ཉམས་པ་ཡང་མ་  
 ཡིན། སྤྱོད་པ་ཡང་མ་ཡིན་ན་ནི་དེའི་ཆོ་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་མེད་པར་  
 ཇི་ལྟར་དཔལ་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་བྱེད་ཀྱས་པར་འགྱུར།  
 དཔལ་བཞིན་དུ་ཡང་མི་དཔལ། མཐོང་བཞིན་དུ་ཡང་མི་མཐོང་ངོ་ཞེས་བྱས་མི་བྱང་ངོ་། །  
 དཔལ་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་གོམས་པར་བྱས་ན་<sup>9</sup>ཇི་ལྟར་སྤྱོད་

1. ལྟ་བུ་མེད་པར་(ཆད་-བྱེད་པ་མེད་པར་འགྱུར་) 2. ལྟ་བུ་མེད་-ཆམ་མཁའ་མཁའ་མཁའ་མཁའ་ =  
 ཇི་ལྟར་རྟོགས་པར་འགྱུར་ 3. ལྟ་བུ་-པ་མེད་ 4. ལྟ་བུ་-དག་སྤྱོད་པར་རྟོགས་
5. ལྟ་བུ་-ལྟ་བུ་ 6. ལྟ་བུ་-ཅད་དུས་ 7. ལྟ་བུ་-དཔལ་པ་ཉམས་(ཆད་-དཔལ་པ་ཉམས་པར་འགྱུར་)
8. ལྟ་བུ་-པས་ 9. ལྟ་བུ་-ནས་



གྱི་གནས་ཆེས་སྲ་བ་ལ་སོགས་པ་དང་། སངས་བྱུང་གྱི་ཆོས་<sup>1</sup>ལ་སོགས་  
པར་འགྱུར་དེ། འགལ་བའི་ཕྱིར་བྱོ་བ་དང་འགལ་བ་དྲང་བ་བཞུག་པའི་ཆོ་བྱོ་  
བ་རེག་པའི་ཆོར་བ་མི་འབྱུང་བ་བཞིན་ནོ།

ཡང་ནལ་འབྱོར་བ་དྲིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྒྲིམས་པར་བྱུགས་པ་ལ་གལ་དེ་ཡིད་  
གྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡོད་ན་དེའི་ཆོ་དཔེ་གདོན་མི་<sup>2</sup>ཐ་བར་ཅི་ཞིག་ལ་དམིགས་མཁོ་  
དགོས་དེ། སོ་སོ་འི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱི་ཤེས་པ་ནི་སྒྲིབ་དུ་དམིགས་པ་མེད་པར་  
མི་འགྱུར་རོ། ཅི་སྟེ་མེད་ན་ནི་དེའི་ཆོ་ཇི་ལྟར་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་  
རྟོགས་པར་འགྱུར། གཉན་བོ་གང་གིས་ནི་ཉན་མོངས་(2པའི་སྒྲིབ་)པ་སྒྲིང་བར་  
འགྱུར། བསམ་གཏན་བཞི་པ་མ་ཐོབ་པའི་སོ་སོ་འི་<sup>3</sup>སྐྱེ་བོ་འི་སེམས་ནི་འགོག་  
པར་འགྱུར་མི་སྲིད་དོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་དཔེ་པའི་ཆོས་ལ་<sup>4</sup>འཕྲན་པ་མེད་པ་དང་།  
ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པ་<sup>5</sup>འབྱུང་བ་དེ་ཡང་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་པ་སྒྲིམ་དུ་  
འགྲོ་བ་ཡིན་པར་བརྟ་<sup>6</sup>བར་བྱ་སྟེ། གང་གི་ཕྱིར་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་རྟོག་  
པ་ཉིད་ཀྱིས་དྲན་པ་མེད་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པ་མེད་པར་བྱེད་རུས་ཀྱི་གཞན་  
དུ་མ་ཡིན་དེ། འདི་ལྟར་ནལ་འབྱོར་བ་གང་གི་ཆོ་ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་  
བདགས་ན་དོན་དཔེ་པར་ན་དུས་གསུམ་དུ་ཆོས་སྐྱེས་པ་གང་ཡང་<sup>7</sup>མ་མཐོང་བ་དེའི་  
ཆོ་ཇི་ལྟར་ན་དྲན་པ་དང་། ཡིད་ལ་བྱེད་པར་བྱ། དོན་དཔེ་པར་<sup>8</sup>ན་དུས་<sup>9</sup>  
གསུམ་མེད་པའི་ཕྱིར་བྱོང་བ་མེད་པ་<sup>10</sup>གང་ཡིན་པ་དེ་ཇི་ལྟར་དྲན་པར་བྱ། ཡིད་

1. གྱི་དཔེར་—ཐུགས་ཤིག་ཡིན་པའི་སངས་བྱུང་གྱི་ཆོས་གསལ་པ་ 2. གྱི་དཔེར་ཡོད་

3. ལྟ་བུ་—སོ་སོ་འི་སེམས་(ཆད་—སོ་སོ་འི་སྐྱེ་བོ་འི་སེམས་) 4. ལྟ་བུ་—ལས་ 5. སྟེ་ཆོ་—པར་

6. ལྟ་བུ་—ལྟ་ 7. ལྟ་བུ་—ཡངས་ 8. ལྟ་བུ་—པར་དུས་ 9. ལྟ་བུ་—དུས་སྟེ་(ཆད་—དུས་

གསུམ་) 10. ལྟ་བུ་—པ་དེ་(ཆད་—པ་གང་ཡིན་པ་དེ་)







གལ་དེ་ཆོས་ལ་བདག་མེད་སོ་སོར་དྲོག།

སོ་སོར་དེ་བདག་ས་གལ་དེ་བསྐྱོམ་བ་ནི།

དེ་ཉིད་ཐུང་ན་འདས་ཐོབ་འབྲས་བུའི་ཐུ།

ཐུ་གཞན་གང་ཡིན་དེས་<sup>1</sup>ནི་ཞི་མི་འབྱུང་། ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

མདོ་ཀུན་ལས་བདུས་བ་ལས་<sup>2</sup>ཀྱང་འབྱུང་སྟེ། “བདག་ལྷག་མཐོང་གི་སྦྱར་བ་ལ་  
ཞུགས་བར་གནས་ཀྱང་གཞན་<sup>3</sup>དག་ལྷག་མཐོང་གི་སྦྱར་བ་ལ་<sup>4</sup>མི་འཇུག་ན་བདུད་  
ཀྱི་ལས་སོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་།

ལྷག་མཐོང་<sup>5</sup>ནི་ཡང་དག་བར་སོ་སོར་དྲོག་པའི་ངོ་བོ་ཉིད་ཡིན་པར་འཇུག་  
བ་དཀོན་མཆོག་སྦྱོན་དང་། དགོངས་བ་ངས་བར་འབྲེལ་བ་(<sup>6</sup>སོགས་)ལས་  
ཀྱང་བཀའ་<sup>7</sup>སྦྱུང་དོ། འཕགས་བ་དཀོན་མཆོག་སྦྱོན་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་བཀའ་སྦྱུང་བ།  
“ལྷག་མཐོང་གིས་<sup>9</sup>བདག་ས་ནས་ངོ་བོ་ཉིད་མེད་པར་དྲོགས་བ་ནི་མཚན་མ་མེད་  
བ་ལ་འཇུག་པའོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་། འཕགས་བ་ལང་ཀར་གཤེགས་བ་ལས་<sup>10</sup>  
ཀྱང་། “སྦྱོ་གོས་ཆེན་པོ་གང་གི་སྦྱར་སྦྱོས་བདག་ས་ན་རང་དང་སྦྱེའི་མཚན་<sup>11</sup>  
ཉིད་(<sup>12</sup>ཀྱེ་དངོས་བོ་ནམས་)མི་དྲོགས་དེ། དེས་ན་ཆོས་ཐམས་ཅད་ངོ་བོ་ཉིད་  
མེད་པ་ཞེས་བུའོ།” ཞེས་བཀའ་སྦྱུང་དོ། གལ་དེ་ཡང་དག་བར་སོ་སོར་

1. ལྷ་མེ་—དེ་ནི་ 2. ལྷེ་—བལྟན་(དབུ་མ་ཀུ་༡༩༤) ཐུང་འཛིན་འདྲི་དྲིལ་བའི་འཕགས་

བ་འཇུག་དཔལ་རྣམ་པར་འབྱུང་བའི་མདོ་ཆོག་གོ།—ལྷེ་—བཀའ་(མདོ་ཀུ་ 212)

3. ལྷ་མེ་—གཞན་ལྷག་ 4. ལྷ་མེ་—པ་འཇུག་(ཆད་སྦྱོན་—སྦྱོར་བ་ལ་མེ་འཇུག་ན་)

5. ལྷ་མེ་—མཐོང་གི་ 6. ལྷ་དཔེར་ཡོད་ 7. ‘བཀའ་སྦྱུང་དོ’—ལྷ་དཔེར་མེད་

8. ཆོས་ཞེས་ངས་རྟོག་མ་བུང་བ། 9. ལྷ་མེ་—གི་ 10. ལྷེ་—བཀའ་(མདོ་ཀུ་ ༡༠༡)

11. ལྷེ་ཆོ་—མཚན་མེ (ཆད་—མཚན་ཉིད་མེ) 12. ལྷ་དཔེར་ཡོད་



དྲིལ་བ་ལ་མི་བྱ་ན། དེ་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་མདོ་སྡེ་དེ་དང་དེ་དག་ལས་<sup>1</sup>  
 ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲིལ་བ་ནས་བ་དུ་མ་བཀའ་སྡུལ་བ་དེ་དང་ཡང་འགལ་.....  
 བར་འགྱུར་རོ། །དེ་ལྟར་བས་ན་བདག་ནི་ཤེས་རབ་རྒྱུ་ཅུ་། བརྩོན་འགྲུས་  
 རྒྱུ་ཅུ་མྱེ། མང་དུ་བོས་བ་ཡོངས་སུ་ཚོལ་མི་ཉུས་སོ། །ཞེས་དེ་སྐད་བྱ་བའི་  
 རིགས་ཀྱི། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་<sup>2</sup>མང་དུ་བོས་བ་བསྐྱུགས་བའི་ཕྱིར་དུས་  
 ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་<sup>3</sup>དེ་སྤང་བར་ནི་མི་རིགས་སོ། །

ཚངས་བས་ཞུས་བ་ལས་<sup>4</sup>ཀྱང་བཀའ་སྡུལ་དེ། “གང་དག་བསམ་གྱིས་མི་བྱུབ་  
 བའི་ཚོས་ནམས་ལ་སེམས་<sup>5</sup>བར་ཞུང་བ་དེ་དག་ནི་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པའོ།” ཞེས་  
 འབྱུང་ངོ་། །དེ་ལ་གང་དག་དོན་དམ་བར་མ་སྦྱིས་བའི་ཚོས་ནིས་ལ་སྦྱེ་བར་ཡོངས་  
 སུ་བདགས་དེ། ཉན་བོས་ལ་སོགས་བ་བཞིན་དུ་དེ་<sup>6</sup>དག་ལ་མི་དྲག་བ་དང་སྦྱུག་  
 བསྐྱུལ་གྱི་ཚུལ་དུ་སེམས་བར་བྱེད་བ་དེ་དག་ནི་སྦྱོ་འདོཌ་བ་དང་སྦྱར་བ་འདེབས་..  
 བའི་མཐའ་དེ་དག་<sup>7</sup>ལ་སེམས་བ་འཕྱུག་བས་ཚུལ་བཞིན་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་དེ།  
 དེ་དག་གི་བའི་ཕྱིར་དེ་སྐད་བཀའ་སྡུལ་གྱི། ཡང་དག་པར་སོ་སོར་དྲིལ་བ་དེ་  
 དག་གི་བར་ནི་མ་ཡིན་དེ། དེ་ནི་མདོ་སྡེ་ཀྱན་ལས་ཀྱང་བཀའ་སྡུལ་བའི་ཕྱིར་རོ།  
 དེ་སྐད་ཚངས་བས་ཞུས་བ་དེ་ཉིད་ལས་<sup>8</sup>ཀྱང་བཀའ་སྡུལ་དེ། “བྱང་ཆུབ་སེམས་

1. ལྟེ་ཚོ་—ལ་ 2. ལྟེ་མི་—ཀྱི་ 3. ལྟེ་མི་—ཁང་སྤང་(ཆད་—ཁང་‘དེ་སྤང་’)

4. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘བ་’ 32) མདོ་འདི་ཚངས་བ་ཁྱད་པར་སེམས་ཀྱིས་ཞུས་བ་ལ་བྱའོ།

5. ཚོས་འདི་དེ་སྐད་དོན་ཀྱི་དཔེར་མེད་བ་ནི་ཆད་པར་ཐུང་མེ། ལྟེ་མ་རམ་མོད་དཔེར་སེམས་བཞུགས་’  
 ཞེས་དང་། མདོ་ཉིད་དུ་‘སེམས་བར་བཞུགས་བ་’ ཞེས་གསལ་བས་སོ། དེ་གཉིས་ལས་ཕྱི་མ་ཆེས་  
 འཐུན་པར་ཐུང་མེ། རྒྱུང་དོན་འབྱུག་བའི་ཚོན་འདྲ་སེམས་བ་འཕྱུག་པས་‘ཞེས་གསལ་བའི་ཕྱིར་རོ།

6. ‘དེ་དག་’—ཀྱི་དཔེར་མེད་ 7. ལྟེ་མི་—དག་སེམས་(ཆད་—དག་‘ལ་སེམས་’)

8. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་‘བ་’ 37)















1. ལྷ་མོ་—འགག་ 2. ལྷ་མོ་—པལྱེན་ནོ། 3. ལྷ་མོ་—པལྱེན་ 4. ལྷ་མོ་—ན་དམི་  
5. བོད་དམི་རྒྱལ་གྱི་ཚོགས་ཀྱི་རྒྱ་མཚན་ལ་ཞེས་གསལ་ཡང་། ལྷ་དམིར་ལྷ་མོ་ལྟར་མཇུག་པ་  
ལ་ཞེས་གསལ་ལ་འཕྲད་པར་སྤང་ངོ། 6. ལྷ་དམིར་—ब्राह्मात्मादि = ལྷ་རྣམས་ཀྱི་པདྨ་མོ་སྤྱོད་པ་  
7. ལྷ་མོ་—སྤང་ 8. ལྷ་དམིར་—अकुशलं = མེད་ཀྱི་ལ་ཞེས་གསལ་ཡང་རྒྱ་མཚན་ལ་འཕྲད་པར་  
མཇུག་པར་མངོན་ནོ། 9. ལྷ་མོ་—འགག་པ་དེ་(ཆད་—དག་པའི་ལས་གང་ཡོད་པ་དེ་ཉིད་)  
10. 'ལས་པ་—ལྷ་དམིར་མེད་ 11. ལྷ་མོ་—སྤང་ 12. ལྷ་མོ་—སྤང་འཕགས་ 13. ལྷ་མོ་—པདྨ་  
(ལས་ཆེན་ལ་ ༡༤༠) གུང་འཛིན་འདི་མཇུག་ལྷ་མོ་ལྟར་མཇུག་པ་ལྟར་མཇུག་པར་སྤང་ངོ།  
14. ལྷ་མོ་—སྤང་ 15. ལྷ་དམིར་—कर्मविशेषेण = ལས་ཀྱི་ཕྱི་ཕྱོད་ཀྱིས་

1. ལྷ་མོ་—དགལ་ 2. ལྷ་མོ་—བཞེན་ནོ། 3. ལྷ་མོ་—བརྟུན་ 4. ལྷ་མོ་—ན་དམི་  
5. བོད་དམེ་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་ཀྱི་དོན་མེད་པ་ཞེས་གསལ་ཡང་། ལྷ་དམེར་ལྷ་མོ་= ཚོགས་དོན་མེད་  
པ་ཞེས་གསལ་བ་འཕྱད་པར་སྤང་ངོ། 6. ལྷ་དམེར་—ब्राह्मतामादि = ལྷ་རྩེ་གྱི་བདག་པ་མེད་པ་  
7. ལྷ་མོ་—སྤང་ 8. ལྷ་དམེར་—अकुशलं = མེད་ཀྱི་མོ་ཞེས་གསལ་ཡང་དོན་ལ་བརྟགས་ན་མི་  
འཕྱད་པར་མངོན་ནོ། 9. ལྷ་མོ་—དགེ་མ་དེ་(ཆད་—དགེ་མའི་ལས་གང་ཡོན་མ་དེ་ཉིད་)  
10. 'ལས་'—ལྷ་དམེར་མེད་ 11. ལྷ་མོ་—སྤང་ 12. ལྷ་མོ་—སྤང་འཕགས་ 13. ལྷ་མོ་—བཀའ་  
(ལམ་ཆེན་ལ་ ༡༤༩) ཡང་འདྲིན་འདྲི་མེད་དེ་ཚོགས་ལྷ་མོ་སྤང་དོན་མེད་པ་གོ་དཔེ་ལ་སྤང་ངོ།  
14. ལྷ་མོ་—སྤང་ 15. ལྷ་དམེར་—कर्मविशेषेण = ལས་ཀྱི་ཕྱི་ཕྱི་ཕྱི་གསལ་



བ་དཀོན་མཆོག་བརྟེན་པ་ལས་1ཀྱང་། “ཅུ་ཁྱུང་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་གྱི་མཚན་  
 ཆེན་པོར་བྱུགས་པའི་ཅུ་ཁྱུང་པོ་བཞིན་དུ་བྱང་ཅུབ་སེམས་དབང་ནམས་སྒྲོ་སྒྲོ་……  
 ཚོར་ནས་དགོ་(2བའི་ཅ་བ)བསགས་པ་ཡང་(3ཐམས་ཅད་མཆོག་པ་ཉིད་དུ་ཡོངས་  
 སུ་བསྐྱོས་བ་)ཐམས་ཅད་མཆོག་པ་ཉིད་དུ་རོ་གཅིག་པ་ཉིད་དུ་འགྱུར་རོ” །ཞེས་  
 བསྐྱེད་སྤྲོད་པ་སོ། །

སངས་རྒྱུས་དང་བྱང་ཅུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་གཞུགས་ཀྱི་སྒྲུ་དང་། ཞིང་  
 ཡོངས་སུ་དག་པ་དང་། འོད་དང་། འཁོར་དང་། ཡོངས་སྒྲིད་ཆེན་པོ་ལ་  
 སོགས་པ་ཕྱན་སུམ་ཆོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་སྒྲིན་པ་ལ་སོགས་པ་བསོད་ནམས་  
 ཀྱི་ཆོགས་ཀྱི་འབྲས་བུ་ཉིད་ཡིན་པར་མདོ་སྡེ་4དང་དེ་དག་དུ་བཅོམ་ལྷན་འདས་……  
 ཀྱིས་བཀའ་སྒྲུལ་པ་དེ་དང་ཡང་འགལ་བར་འགྱུར་རོ།5 །དགོ་བ་སྒྲིད་པ་བཀའ་  
 བས་ནི་སོ་སོར་ཐར་བའི་སྒྲོམ་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་བཀའ་བར་གྱུར་དེ། དའི་  
 ཕྱིར་དའི་མགོ་བོ་དང་ཁ་སྒྲུབ་གསུམ་པ་དང་ཆོས་གོས་ཏུར་སྒྲིག་བཅང་6བ་ལ་སོར་  
 བ་ཡང་དོན་མེད་པར་འགྱུར་རོ། །དགོ་བའི་ལས་མངོན་པར་འདུག་པ་ལ་མི་  
 ཕྱོགས་པར་གྱུར་ན་འཁོར་བ་ལ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་། སེམས་ཅན་གྱི་དོན་7བྱ་བ་  
 ལ་མི་ཕྱོགས་པ་ཀུན་དུ་བསྐྱེད་པར་འགྱུར་དེ། དའི་ཕྱིར་དའི་བྱང་ཅུབ་ཀྱང་གྱུང་  
 བསྐྱེད་སྤྲོད་8པར་འགྱུར་རོ། །འཕགས་པ་དགོངས་པ་ངེས་9པར་འབྲེལ་བ་ལས་10  
 ཀྱང་བཀའ་སྒྲུལ་དེ། “སེམས་ཅན་གྱི་དོན་བྱ་བ་ལ་ཤིན་དུ་མི་ཕྱོགས་པ་དང་།

1. ལྷོ་—བཀའ་(དཀོན་པ་ཅན་པ་ཆ་ 720)
2. ལྷོ་ཐམས་ཅད་པོ་
3. ལྷོ་ཐམས་ཅད་པོ་ཐོ་ཐོ་ཐོ་  
 ལྷོ་ཐམས་ཅད་པོ་
4. ལྷོ་ཐོ་—སྒྲིད་(ཆད་—མདོ་སྡེ་“དེ”དང་)
5. ལྷོ་ཐོ་—རོ་སྒྲིད་  
 (ཆད་—འགྱུར་རོ། །དགོ་བ་“སྒྲིད་པ་”)
6. ལྷོ་ཐོ་—བཅང་
7. ལྷོ་ཐོ་—དོན་ལ་(ཆད་—  
 དོན་“བྱ་བ་”)
8. ལྷོ་ཐོ་—སྐྱེད་པར་
9. ལྷོ་ཐོ་—དེས་
10. ལྷོ་—བཀའ་(མདོ་“ཅ”70)



འདྲ་བྱེད་བ་མཛོན་བར་འདྲ་བ་ལ་ཤིན་<sup>1</sup>མི་ཕྱོགས་བ་ནི་སྐྱོན་མེད་བ་ཡང་...  
 དག་བར་ཐོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དྲུང་ས་<sup>2</sup>ལྷང་མ་བསྟན་དེ། །ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་དེ།  
 འཕགས་བ་ཉི་ཤེས་འཁོར་གྱིས་ལྷན་བ་ལས་<sup>3</sup>ཀྱང་། “འཁོར་བ་ལ་མི་ཕྱོགས་  
 བ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་འཆལ་བའི་ཚལ་ཁྲིམས་མཛོག་ཡིན་ནོ།” །  
 ཞེས་བསྟན་དེ། །“འཁོར་བ་ཡོངས་སུ་འཛིན་བ་ནི་ཚལ་ཁྲིམས་ཀྱི་མཛོག་ཡིན་ནོ།”  
 ཞེས་གསུངས་སོ། །འཕགས་བ་རྩི་མ་མེད་བར་གྲགས་པས་བསྟན་བ་ལས་<sup>4</sup>  
 ཀྱང་། “ཐབས་ཀྱིས་ཟིན་<sup>5</sup>པའི་འཁོར་བར་འགྲོ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་  
 རྣམས་ཀྱི་ཐར་བའོ། །ཐབས་<sup>7</sup>དང་བྲལ་བའི་ཤེས་རབ་ནི་འཛིང་བའོ། །ཤེས་  
 རབ་དང་བྲལ་བའི་ཐབས་ཀྱང་འཛིང་བའོ། །ཤེས་རབ་དང་བཅས་པའི་<sup>8</sup>ཐབས་  
 ནི་ཐར་བའོ། །ཐབས་དང་བཅས་པའི་ཤེས་རབ་ཀྱང་ཐར་བའོ།” །ཞེས་བཀའ་  
 སྤྱུལ་དེ། །འཕགས་བ་ནམ་མཁའ་<sup>9</sup>མཛོད་ལས་<sup>10</sup>ཀྱང་། “འཁོར་བར་<sup>11</sup>ཡོངས་  
 སུ་སྐྱོ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ།” །ཞེས་གསུངས་  
 སོ། །མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་བ་ལས་<sup>12</sup>ཀྱང་། “འདུས་མ་བྱས་<sup>13</sup>བ་ལ་ཡང་སོ་

- 
1. ལྷ་མི་—མཛོན་ཀྱི་ཕྱོགས་(ཆད་—དྲུང་མི་ཕྱོགས་)
  2. ལྷ་མི་—ངས་མ་
  3. དཀོན་པ་ཕྱོགས་(ཆད་པར་ཉི་ཤེས་འཁོར་གྱི་ལྷན་པ་ཞེས་ཡོད་ཀྱང་། ཉིན་ལྷང་འཛིན་འདྲི་མེད་པས་  
 མདོ་མཛོན་མཐུན་པ་གཞན་དུ་མེད་དམ་དཔྱད་པར་བྱའོ། འདྲི་ཐུན་གྱི་ཆུ་དཔེར་“ཉི་ཤེས་འཁོར་  
 ཕྱིས་ལྷན་པ་ལོགས་ལས་” ཞེས་གསལ།
  4. ལྷ་མི་—བཀའ་(མདོ་མ་ 207)
  5. “ཟིན་པའི་”ཆུ་དཔེར་མེད་
  6. ལྷ་མི་—ཀྱིས་
  7. ལྷ་མི་—ཐབས་ཀྱིས་
  8. ལྷ་མི་—པའི་ཤེས་རབ་ཀྱང་
  9. ལྷ་མི་—མཁའ་
  10. ལྷ་མི་—བཀའ་(མདོ་མ་ 208)
  11. ལྷ་མི་—འཁོར་བས་
  12. ལྷ་མི་—བསྟན་(དམ་མ་ཀུ་ 786)ལྷང་འཛིན་འདྲི་ལམགས་པ་འཇམ་  
 དཔལ་རྣམས་པར་འཐུག་པའི་མདོ་ཆོག་གོ། :— ལྷ་མི་—བཀའ་(མདོ་མ་ 217)
  13. ལྷ་མི་—བྱས་པ་



སོར་རྟོག་ལ། འདུས་བྱས་ཀྱི་དགེ་བས་ཀྱང་ཡོངས་སུ་སྒྲོ་བ་ནི་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ།།  
 བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ལས་ཡང་རབ་དུ་ཤེས་ལ་པ་རོལ་དུ་སྤྱོན་པའི་ལས་ཡང་ཡོངས་སུ་སྒྲོ་  
 ཚོལ་བ་ནི་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ།” ཞེས་བསྟན་ད། ཡང་དེ་ཉིད་ལས།<sup>1</sup> “སྤྱོན་  
 བ་ལ་སེམས་མངོན་པར་ཞེན་པ་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱི་བར་ལ་སེམས་མངོན་པར་ཞེན་...  
 བ་ནི་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ།” ཞེས་བཤད་པ་དེ་ལ་སྤྱོན་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟན་པ་  
 དགག་པ་ནི་མ་ཡིན་<sup>2</sup>གྱི། ངར་འཛིན་པ་དང་། ང་ཡིར་འཛིན་པ་ལ་སེམས་  
 མངོན་པར་ཞེན་པ། གཟུང་བ་དང་འཛིན་པ་ལ་སེམས་མངོན་པར་ཞེན་པ། དམིཌ་  
 བ་ཅན་ཀྱི་སྤྱོན་པ་ལ་སོགས་པ་<sup>3</sup>སྤྱོན་ཅི་ཡོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་...  
 དགག་པ་སྟེ། སྤྱོན་ཅི་ཡོག་དུ་མངོན་པར་ཞེན་པས་ཀྱན་ནས་བསྐྱང་<sup>4</sup>པའི་སྤྱོན་པ་  
 ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་དག་པར་མི་འགྱུར་དེ་བདུད་ཀྱི་ལས་སོ ཞེས་བཤད་དོ། །  
 དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་བསམ་གཏན་ཡང་བསྟན་པར་བྱ་བ་མ་ཡིན་པར་འགྱུར་རོ། །  
 དེ་ལྟར་གྱུར་ན་ཐར་བར་ཡང་ཇི་ལྟར་འགྱུར། དེའི་སྤྱིར་ན་དམིགས་པ་ཅན་སྟེ་<sup>5</sup>  
 ཚོགས་སུ་འདུ་ཤེས་པས་སྤྱོན་པ་བྱིན་<sup>6</sup>པ་ལ་སོགས་པ་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་ཡོངས་...  
 སུ་དག་པ་མ་ཡིན་པར་བསྟན་པའི་སྤྱིར་འཕགས་པ་ནས་མཁའ་མཛོད་ལས་<sup>7</sup>ཀྱང་།  
 “སེམས་ཅན་<sup>8</sup>སྤྱོན་<sup>9</sup>ཅི་ཡོག་གི་ལས་སྟེ་ཚོགས་ལ་སོགས་པའི་འདུ་ཤེས་ཅན་གྱི་...

1. ལྟེ་—བསྟན་(དཔྱད་མ་ཀུན་ ༡༩༩) :—གོང་གསལ་མདོ་དུ་ཉི་ཉེད་—202 2. ལྟེ་མི་—ཡན་ཉི་

3. ལྟེ་མི་—པ་ལ་ 4. ལྟེ་མི་—སྤྱང་ 5. ལྟེ་དཔེར་—སྤྱང་ལྟར་—སེམས་ཅན་ལྟ་ཚོགས་

6. ‘བྱིན་པ་’—ལྟེ་དཔེར་མེད་ 7. ལྟེ་—བཀའ་(མདོ་པ་ 200) 8. ལྟེ་མི་—སེམས་ཅན་ལྟ་

ཚོགས་ལ་སོགས་པའི་འདུ་ཤེས་ལྟར་ཞེས་གསལ་བ་ལྟེ་དཔེར་དང་མཐུན་ཆབ་ཆེ་ཡང་། མདོ་ངོ་མ་དང་

སྤྱིར་དམ་ལྟེ་དཔེར་དང་ལྟེ་དག་སྤྱིར་མ་གཞི་བཞུགས་ཆུང་མེ་མཐུན་པས་དཔྱད་པར་བྱའོ།

9. ‘བྱིན་ཅི་ཡོག་གི་ལས་’—ལྟེ་དཔེར་མེད་







དོག་པ་ཉིད་དུ་བཤད་གྱི།<sup>1</sup>      མཚན་མ་མེད་པར་གནས་ཤིང་མངོན་པར་འདུ་བྱ་  
 བ་མེད་པར་འཇུག་པ་ལ་གནས་པའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནི་ལུང་བཟུན་པ་ཡིན་  
 དེ།    གཞན་དུ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་དེ་ཅམ་དུ་བཟུན་དེ།      སྦྱོན་པ་ལ་སོགས་པ་<sup>2</sup>  
 ཐམས་ཅད་ལ་དོན་དམ་པར་ན་མ་སྦྱིས་པར་ཡོངས་སུ་བཟུན་གྱི།      སྦྱོད་པར་<sup>3</sup>མི་  
 བྱ་བ་ནི་བཀའ་མ་སྦྱལ་དོ།།

དེ་ལྟ་མ་ཡིན་ན་མར་མེ་མཛད་གྱི་སྒྲ་ལོགས་སུ་<sup>4</sup>སངས་རྒྱས་གང་དག་ལ་...  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་གྱིས་བསྟེན་<sup>5</sup>བཀུར་མཛད་པ་དེ་དག་གི་མཚན་བཅོམ་འདས་...  
 ལྷན་འདས་གྱིས་བསྐྱེད་པར་ཡང་<sup>6</sup>བཞེད་པར་མི་སྦྱོད་པ་དེ་དག་གིས་ཀྱང་བཅོམ་...  
 ལྷན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་གནས་སྐབས་ན་བཞུགས་པའི་སྦྱོད་པ་ཅིའི་ཕྱིར་དགག་  
 པ་མ་མཛད།      མར་མེ་མཛད་གྱིས་ཀྱང་དེའི་ཆོ་བཅོམ་ལྷན་འདས་གྱི་<sup>7</sup>སྦྱོད་པ་  
 དགག་པར་<sup>8</sup>མ་མཛད་པ་ཁོ་ན་སྟེ།      གང་གི་ཆོས་བརྒྱད་པ་ལ་གནས་ཤིང་ཞི་  
 བ་མཚན་མ་མེད་པ་ལ་གནས་པ་དེ་གཟིགས་ནས་དེའི་ཆོ་བཅོམ་ལྷན་འདས་ལུང་...  
 བཟུན་གྱི།      དེ་ན་དེའི་སྦྱོད་པ་བཀའ་བ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།      །ས་བརྒྱད་པ་ལ་བྱང་  
 ཆུབ་སེམས་དཔའ་ནམས་གྱི་མཚན་མ་མེད་པར་གནས་པ་མཚོག་དེ་ནི་དེ་དག་<sup>9</sup>དེ་  
 ཉིད་དུ་ཡོངས་སུ་བྱ་ངན་ལས་འདས་པར་འགྱུར་དུ་འོང་ངོ་།      །ཞེས་ས་བཅུ་<sup>10</sup>པ་  
 ལས་སངས་རྒྱས་ནམས་གྱིས་དགག་པ་མཛད་དོ།      །གལ་དེ་ནས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་  
 སྦྱོད་པ་དེ་མི་བྱ་བར་གྱུར་ན་ནི་སྤར་བཞེད་པ་ཐམས་ཅད་དང་ཡང་འགལ་བར་...  
 འགྱུར་ངོ།།

1. ལྟ་བུ་གྱིས་    2. ལྟ་བུ་ལས་    3. ལྟ་བུ་པ་    4. ལྟ་བུ་ན་    5. ལྟ་བུ་ལྟེན་  
 6. ལྟ་བུ་ཡང་མེ་(ཆད་ཡང་བཞེད་པར་མི་སྦྱོད་)    7. ལྟ་བུ་གྱིས་    8. ལྟ་བུ་པར་མཛད་  
 (ཆད་སྦྱོན་པར་མ་མཛད་པ་)    9. ལྟ་བུ་དག་ཉིད་    10. ལྟ་བུ་ས་བཅུ་ལས་



ཡང་ཚངས་བས་ཉུས་བ་དེ་ཉིད་ལས་<sup>1</sup>གསུངས་པ། “སྦྱིན་བ་ཡང་སྦྱིན་ལ་  
 དེའི་ནམ་བར་སྦྱིན་བ་<sup>2</sup>ལ་ཡང་མི་རེ་ལ། རྒྱལ་ཁྲིམས་ཀྱང་བསྐྱུང་བ་དེ་ཡང་སྦྱོ་  
 འདྲེགས་བས་མ་ཡིན།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་བ་འབྱུང་ངོ་། །ཚངས་བ་བྱང་  
 རྒྱལ་སེམས་དབང་ཚོས་བཞེད་དང་ལྷན་བ་ནམས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཚོས་ནམས་ལས་...  
 ཕྱིར་མི་ཁྲོག་བ་ཡིན་ནོ། །བཞེ་པོ་དེ་དག་གང་ཞེ་ན། འཁོར་བ་དཔག་དུ་  
 མེད་བ་ཡོངས་སུ་འཛིན་བ་དང་། སངས་རྒྱས་དཔག་དུ་མེད་བ་ལ་རིམ་འབྲུ་  
 དང་མཚོད་བ་དཔག་དུ་མེད་བ་བྱེད་པ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་བ་འབྱུང་བ་ཐམས་  
 ཅད་དང་འགལ་ཡོ། །དབང་བོ་རྒྱལ་བོ་ཁོ་ནས་སྦྱོད་པར་<sup>3</sup>བྱུང་། །དབང་བོ་  
 རྣམས་མི་བྱའོ་ཞེས་བཞེད་པར་མི་བྱང་སྟེ། འདི་ལྟར་ས་དང་བོ་ནས་བརྒྱང་  
 སྟེ་ས་བརྒྱ་པའི་བར་ལ་གནས་པའི་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་སྦྱིན་བ་ལ་...  
 སོགས་པའི་སྦྱོད་བ་ནམས་འབྱུང་ཞིང་རྣམས་མ་ནམས་ཀྱང་ཀྱན་དུ་མི་སྦྱོད་བ་ནི་མ་...  
 ཡིན་ནོ། །ཞེས་གསུང་པའི་ཕྱིར་ངོ་། །སར་རྒྱལ་བ་ནམས་དབང་བོ་རྒྱལ་བོ་  
 ཞེས་བྱ་བར་ཡང་མི་བྱང་སྟེ། འཕགས་བ་ཉེ་བར་འཁོར་གྱིས་ཉུས་བ་ལས་<sup>4</sup>  
 ཀྱང་། “མི་སྦྱི་བའི་ཚོས་ལ་བཟོད་བ་ལ་གནས་བ་ཉིད་ཀྱིས་གཏོང་བ་དང་།  
 གཏོང་བ་ཆེན་པོ་དང་། རབ་དུ་གཏོང་བ་དག་བྱའོ།” ཞེས་བཀའ་སྤྱུལ་ཏེ།<sup>5</sup> །  
 མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་བ་ལས་<sup>6</sup>ཀྱང་། “ཐ་རློ་དུ་བྱིན་བ་དུག་ལ་སོགས་བ་  
 སྦྱུབ་བ་དང་ལྷན་པའི་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དབང་ནམས་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་རྒྱ་

- 
1. ལྟེ་བཀའ་(མདོ་—བ་ཚངས་བ་ཁྱད་པར་སེམས་ཀྱིས་ཉུས་བ། 2. ལྟེ་མི་—བ་དེ་ལ་  
 3. ལྟེ་མི་—བ་བྱའི་ 4. ཚོས་ཞེས་ངོས་རྒྱུད་མ་བྱུང་བ། 5. ལྟེ་མི་—དྲ་  
 6. ཚོས་ཞེས་ངོས་རྒྱུད་མ་བྱུང་བ།



འབྲུལ་གྱིས་<sup>1</sup>འགྲོ་བ་ཡིན་ནོ།” ཞེས་བསྟགས་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་  
 རྩ་འབྲུལ་གྱིས་<sup>2</sup>འགྲོ་བ་ལས་མགྲོགས་པ་ནི་གཞན་མེད་དོ། །པ་རྩ་ལ་དུ་ཕྱིན་པ་  
 དུག་དང་། ས་བཅུ་མ་གཏོགས་པར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱི་<sup>3</sup>ཤིན་དུ་  
 གྱུར་བར་འཇུག་པའི་ལས་གཞན་ནི་མེད་དོ། ཞེས་སེམས་ཀྱི་རྒྱུད་<sup>4</sup>གསེར་དག་  
 པ་བཞིན་དུ་རིམ་གྱིས་འདག་པར་འགྱུར་རོ། ཞེས་མདོ་སྡེ་ལས་ཀྱང་བཀའ་  
 སྟུལ་དོ། །འཕགས་<sup>5</sup>པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་དང་། ས་བཅུ་པ་ལ་སོགས་  
 པ་ལས་ཀྱང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་གང་གི་ཆེ་དེ་བཞིན་ཉིད་ལ་གནས་པར་  
 གྱུར་བ་དེའི་ཆེ་ས་དང་བོར་ཆུད་པ་ཡིན་དེ། དེ་ནས་རིམ་གྱིས་ས་གོང་མ་རྣམས་  
 ཡོངས་སུ་སྦྱངས་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ས་ལ་འཇུག་གོ། ཞེས་<sup>7</sup>བཀའ་  
 སྟུལ་<sup>8</sup>པ་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་ས་དང་པ་རྩ་ལ་དུ་ཕྱིན་པ་ལས་<sup>9</sup>མ་གཏོགས་པར་སངས་  
 གྱུས་ཉིད་ཀྱི་<sup>10</sup>གྲོང་ཁྱིམ་དུ་ཅིག་ཅར་<sup>11</sup>འཇུག་པའི་སློ་གཞན་ནི་མེད་དོ། བཅོམ་  
 རྒྱན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་མདོ་སྡེ་ལ་སོགས་པ་གང་<sup>12</sup>ལས་ཀྱང་བཀའ་སྟུལ་དོ། །

གཤེད་བསམ་གཏན་ཉིད་དུ་པ་རྩ་ལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུས་བས་ན་དེ་བཞིན་  
 བས་པ་རྩ་ལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་བཞེན་པར་འགྱུར་དེ། དེའི་ཕྱིར་ཕྱིན་པ་ལ་སོང་  
 པ་<sup>13</sup>པ་<sup>14</sup>རྩ་ལ་དུ་ཕྱིན་པ་གཞན་སོ་སོར་བཞེན་མི་དགོས་པ་སྟེ་དུ་བྱ་ན་ཡང་།

1. ལྷ་པོ་—གྲོ་ 2. ལྷ་པོ་—གྲོ་ 3. ལྷ་པོ་—ཀྱུ་ 4. ལྷ་པོ་—རྒྱུད་འདུག་(ཆད་—  
 རྒྱུད་གསེར་དག་པ་) 5. རྒྱུད་འདུག་—མདོ་མཚན་དེ་གཉིས་མེད་ 6. བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་  
 ཞེས་སོགས་མདོ་དེ་དོན་ཐོབ་ཞུ་འདམས་མཛད་པ་ལས། མདོ་ཆོག་དངོས་ཀྱི་ལྷ་ལྟེན་མཛད་  
 པ་ནི་མེན་པར་ཐུང་ངོ་ 7. ‘ཞེས་བཀའ་སྟུལ་པ་སྟེ’—རྒྱུད་འདུག་མེད་ 8. ལྷ་པོ་—སྟུལ་སྟེ་  
 9. ལྷ་པོ་—པ་ 10. ལྷ་པོ་—ཀྱུ་ 11. ‘ཅིག་ཅར’—རྒྱུད་འདུག་མེད་ 12. ལྷ་པོ་—གང་ནས་  
 13. ལྷ་པོ་—པ་གཞན་ 14. ‘པ་རྩ་ལ་དུ་ཕྱིན་པ་གཞན་’—རྒྱུད་འདུག་མེད་



དེ་མི་ཅང་མེ་དེ་ལྟར་གྱུར་དུ་ཟེན་ན་སངས་རྒྱས་ལ་བ་ལང་གི་ལྷོ་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་  
 བྱས་པའི་ནང་དུ་ཡང་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་འདུས་པས་ན་དཀྱིལ་འཁོར་འབའ་  
 ཞིག་བྱའི། བསམ་གཏན་ལ་སོགས་པ་མི་བྱ་བར་འགྱུར་རོ། །ཉན་ཐོས་  
 འགོག་པའི་སྒྲིམས་པར་འཇུག་པ་ལ་སྒྲིམས་པར་ཞུགས་པ་ལ་ཡང་མཚན་མ་ལ་  
 སོགས་པ་ཀུན་དུ་མི་འབྱུང་བའི་ཕྱིར་དེ་ལྟར་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ཡོངས་སུ་  
 རྫོགས་པར་འགྱུར་དེ། །དེའི་ཕྱིར་ཉན་ཐོས་ནམས་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབའ་ནམས་བྱེ་བྲག་མེད་པར་བསྟན་པར་འགྱུར་རོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 ་ནམས་གནས་སྐབས་ཐམས་ཅད་དུ་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་  
 བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་རེ་རེ་ཡང་པ་  
 རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་འདུས་པར་བཀའ་སྤྱུལ་གྱི། །པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་གཅིག་  
 །ཁོ་ན་ཞིག་བསྟེན་པར་ནི་མ་གསུངས་སོ། །དེ་སྐད་འཕགས་པ་ཆོས་ཐམས་ཅད་  
 ་ཤིན་དུ་རྒྱས་པ་ལས་<sup>1</sup>ཀྱང་བཀའ་སྤྱུལ་དེ། “བྱམས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་  
 ་ནམས་ཀྱི་<sup>2</sup>པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་ཡང་དག་པར་བསྐྱབས་<sup>3</sup>པ་འདི་ནི་རྫོགས་པའི་  
 བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱིར་ཡིན་ན། དེ་ལ་ཡང་མི་ལྷན་པོ་དག་འདི་སྐད་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་  
 དབས་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཁོ་ན་ལ་བསྐྱབ་པར་བྱའི། པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་  
 པ་ལྷག་མ་ནམས་ཀྱིས་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེས་ཟེར་ཞིང་། དེ་དག་པ་རྩོལ་དུ་ཕྱིན་པ་  
 གཞན་<sup>4</sup>དག་ལ་སྤྱན་འབྱེན་པར་སེམས་སོ། །མ་པམ་པ་འདི་རྗེ་སྒྲིམ་དུ་སེམས།  
 ཀླ་ཤིའི་བྱུང་བོར་གྱུར་པ་གང་ཡིན་པ་དེས་སྤྱག་རོན་གྱི་ཕྱིར་རང་གི་ཤ་ཁྲ་ལ་བྱིན་

1. མདོ་འདི་བཀའ་འགྱུར་ནང་མེད་ཆོད་ལྟར་བས་དཔྱད་དགོས་སོ། 2. ལྟ་བུ་—ཀྱིས་  
 3. ལྟ་བུ་—བསྐྱབ་ 4. ལྟ་བུ་—གཞན་པ་



པ་དེ་ཤེས་རབ་འཆལ་བ་ཡིན་ནམ། བྱམས་པས་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྷན་  
 འདས་དེ་ནི་མ་ལགས་སོ། །བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་བ། བྱམས་  
 པ་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའི་སྤྱད་པ་སྤྱོད་པ་ན་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་དུག་དང་ལྷན་པའི་  
 དགོ་བའི་ཙ་བ་གང་དག་བསགས་པའི་དགོ་བའི་ཙ་བ་དེ་དག་གིས་གཞོད་པར་……  
 གྱུར་དམ། བྱམས་པས་གསོལ་བ། བཅོམ་ལྷན་འདས་དེ་ནི་མ་ལགས་སོ། །  
 བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་བཀའ་སྤྱུལ་བ། མ་ཐམ་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་བསྐལ་བ་དུག་  
 ཅུར་ཕྱིན་པའི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ་ཡང་དག་པར་བསྐྱབས། དེ་བཞིན་དུ་བསྐལ་བ་  
 དུག་ཅུར་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པའི་བར་དུ་ཡང་དག་པར་བསྐྱབས་ན། དེ་  
 ལ་མི་སྤྱན་བོ་དག་འདི་སྤྱད་ཅེས་ཆུལ་གཅིག་ཁོ་ནས་བྱང་ཆུབ་སྤྱེ། འདི་ལྟ་སྤྱེ།  
 སྤྱོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཆུལ་གྱིས་སོ་ཞེས་ཟེར་དེ། དེ་དག་ནི་སྤྱོད་པ་ཡོངས་སུ་མ་དག་  
 པར་འགྱུར་རོ།” ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་འབྱུང་ངོ་། སྤྱོད་པ་ཉིད་འབའ་  
 ཞིག་བསྟན་ན་ཉན་ཐོས་བཞིན་དུ་སྤྱང་ན་ལས་འདས་པའི་མཐར་ལྷུང་བར་འགྱུར་རོ།  
 དེའི་སྤྱར་ན་ཐབས་དང་བཅས་པའི་ཤེས་རབ་བསྟན་པར་བྱའོ།

དེ་ལྟ་བུས་ན་སློབ་དཔོན་ཁྱེད་ཀྱི་ཞལ་སྤྱན་ནས་ཀྱི་མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་པ་  
 ལས་<sup>1</sup>བཤད་བ། “ཐབས་མཁས་པ་དང་བྲལ་བའི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབའ་ཆོས་  
 ཟབ་སོ་ཉིད་ལ་མངོན་པར་བཅོན་པར་མི་བྱའོ།” ཞེས་འབྱུང་ངོ་། །འདིར་  
 ཡང་འཕཌ་པ་དྲི་མ་མེད་<sup>2</sup>པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ་ལ་སོགས་<sup>3</sup>པ་ཁྱེད་སྤྱང་སྤྱོད་པ་  
 ཅིང་བཤད་ཀྱི་<sup>4</sup> དེ་ཡང་སློབ་དཔོན་ཁྱེད་ཀྱི་ཞལ་སྤྱན་ནས་ཀྱི་བཀའ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།

1. སྤྱེ་—བསྟན་(དབུ་མ་—‘ཀེ’ ༢༠༦) 2. སྤྱ་མེ་—མེད་གྲགས་(ཆད་—མེད་‘པར’གྲགས་)

3. སྤྱ་མེ་—སོགས་ཁྱེད་ 4. སྤྱ་མེ་—ཀྱིས་



རིགས་པ་དང་ལྷན་དུ་<sup>1</sup>ལྷན་པ་(པོ་རོ་ནས།)      བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་གསུང་རབ་  
བདང་ལ།    མཁས་པ་དྲི་བ་དང་ལྷན་པས་འགྲོ་བ་སྤྱན་པོ་གཞན་གྱི་<sup>3</sup>ཆོག་བརྒྱུང་  
བ་མི་<sup>4</sup>རིགས་སོ།    །འཕགས་པ་གཙུག་<sup>5</sup>ན་རིན་པོ་ཆེ་ལས་ཀྱང་།    “སྤྱན་པ་ལ་  
སོགས་པ་དག་བ་མཐའ་དག་དང་ལྷན་པས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་དང་ལྷན་  
བའི་སྟོང་བ་ཉིད་ལ་བསྐྱེལ་བར་བྱའོ།”    །ཞེས་གསུངས་དེ།    སྟོང་བ་ཉིད་འབའ་  
ཞིག་ནི་མ་ཡིན་ནོ།    །འཕགས་པ་དགོན་མཆོག་བརྟེན་པ་ལས་<sup>6</sup>ཀྱང་བཀའ་  
སྤྱུལ་དེ།    “འོད་སྤྱངས་འདི་ལྟ་སྟེ་དཔེར་ན།    སྤྱོན་པོས་ཟིན་བའི་རྒྱལ་པོ་རྣམས་  
དགོས་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་རྒྱལ་སེམས་དབའི་ཤེས་རབ་ཐབས་  
མཁས་པས་<sup>7</sup>ཟིན་པ་ཡང་སངས་རྒྱས་ཀྱི་མཛད་པ་ཐམས་ཅད་བྱེད་དོ།”    །ཞེས་  
འབྱུང་ངོ།

དེ་བས་ན་སྟོང་བ་ཉིད་འབའ་ཞིག་བསྟེན་ན་<sup>8</sup>མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ལ་འཇུག་  
བར་འགྱུར་དུ་འོང་ངོ་ཞེས་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་<sup>9</sup>འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེད་  
བའི་གསང་བའི་མདོ་ལས་<sup>10</sup>    “གཅིག་དུ་སེམས་དམིགས་པ་མེད་པར་མི་བྱའི།  
ཐབས་ལ་མཁས་པ་ལ་ཡང་བརྟེན་པར་བྱའོ།”    །ཞེས་གསུངས་<sup>11</sup>སོ།    །དེ་

- 
1. ལྷ་མི་-ཁྱེད་དུ་བསྟན་པ་    2. ལྷ་དཔེར་ཡོད་    3. ལྷ་མི་-ཁྱེས་    4. ལྷ་དཔེར་-ཀླུ་འཁྱུ་  
ཡུལ་མ་= བརྒྱུད་རྒྱུ་སོ།    ཞེས་གསལ་པས་དགག་ཆོག་ཆད་པར་སྤངས་ངོ།    5. ལྷ་དཔེར་-  
'ཨ་ལྷ་རྟེན་ལྷ་ལྷ་= འཕགས་པ་དགོན་མཆོག་བརྟེན་པ་ལས་ཞེས་གསལ་ཞིང་།    ཁྱེད་འདྲིན་གྱི་ཆོག་  
རྣམས་ཀྱང་གོང་སྤྱོད་མདོ་དེར་མི་བཞིན་མ་རྟོག་པས།    དགོན་བརྟེན་གྱི་མདོ་གཞན་དུ་མེད་པས་  
དཔྱད་པར་བྱའོ།    6. ལྷ་མི་-ཐུག་(དགོན་བརྟེན་པ་ཆ་ ༡༢༩)    7. ལྷ་མི་-ཐམས་ཅད་  
(ཆད་-ཐམས་ཅད་པ་ཡང་)    8. ལྷ་མི་-ནས་    9. ལྷ་མི་-ཁྱེ་    10. ཆོས་ཞེས་ངོས་རྟོག་  
མ་བྱུང་བ།    11. ལྷ་མི་-གསུངས་དེ།







པོ་འི་འཛིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ན་<sup>1</sup>གང་སེམས་ཅན་ནམས་ཀྱི་ཡོངས་སྟོང་དུ་མི་འགྱུར་  
 བ་དེ་མེད་དོ། །རིགས་ཀྱི་བྱ་དེ་བཞིན་དུ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ཐབས་ལ་མཁས་  
 བ་ཡང་དམིགས་བ་གང་ཅི་ཡང་རུང་། བྱང་ཆུབ་ལ་ཕན་འདོགས་བར་གྱུར་  
 བ་ས་ཡིན་པར་མཐོང་བ་མེད་དོ། །ཞེས་ཀྱང་ཆེར་འབྱུང་ངོ་། །དེ་བཞིན་དུ་མདོ་  
 སྡེ་མཐའ་ཡས་བ་ལས་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ནམས་ཀྱི་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་  
 རྒྱལ་སྐྱབ་བ་བསྟན་དོ། །དེ་ལ་བདག་ཉིད་སྤྱོད་བ་ལ་སོགས་བ་བསོད་ནམས་ཀྱི་  
 ཚོགས་ལ་བཙོན་འགྲུས་ཅོམ་མི་རྒྱས་སུ་ཟིན་ཀྱང་། གཞན་དག་ལ་དེ་སྐད་དུ་  
 བསྟན་བ་ནི་མི་རིགས་སོ། །དེ་ལྟར་བྱས་ན་བདག་དང་གཞན་ལ་འབྲུ་བ་བྱས་  
 བར་འགྱུར་རོ།

དེ་ལྟར་བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་ཅི་ནས་ཀྱང་ཡང་དག་པར་སོ་སོར་བདག་  
 བར་བྱ་ཞིང་སྤྱོད་བ་ལ་སོགས་བ་བསོད་ནམས་ཀྱི་ཚོགས་མཐའ་དག་བསྐྱབ་པར་  
 བྱ།<sup>2</sup> ཞེས་རིགས་བ་དང་ལུང་གིས་བསྟན་བ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་དོག་བ་དང་ལྷན་  
 བས་<sup>3</sup>ཐོས་བ་ཉུང་བ་མངོན་པའི་ང་རྒྱལ་ཅན་ནམས་ཀྱི་ཚོག་དུག་བཞིན་དུ་སྤངས་ལ།  
 སྟོབ་དཔོན་ཁྱེད་སྐྱབ་ལ་སོགས་བ་སྐྱེ་བོ་མཁས་པའི་ཚོག་བདུད་ཅིའི་རྗེས་སུ་འཇུག་  
 བས་སེམས་ཅན་མཐའ་དག་ལ་སྤྱིང་རྗེ་ཆེན་པོ་བསྐྱེད་ནས་<sup>4</sup> རྒྱུ་མ་མཁན་བཞིན་  
 དུ་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་མ་གྱུར་བས་སྐྱ་ན་མེད་བ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་དུ་  
 ཡོངས་སུ་བསྟོས་པའི་སྤྱོད་བ་ལ་སོགས་པའི་དག་བའི་སྟོང་བ་མཐའ་དག་དང་།

1. ལྟ་བུ་—ན་སེམས་ 2. ལྟ་བུ་—ཐུག་ཏུ། ཞེས་ 3. ལྟ་བུ་—པར་ 4. ལྟ་བུ་—ན་



འགྲོ་བ་མ་ལུས་བ་གདོན་བ་ལ་མངོན་བར་བཙོན་བར་བྱ་ཞི། རི་སྐད་དུ་འཕགས་  
བ་ཚོས་ཡང་དག་བར་སྤྱད་བ་ལས།

དཔར་ན་སྤྱུ་མའི་མཁན་པོ་ཞིག །

སྤྱུ་ལ་བ་ཐར་བར་བྱ་བྱིར་བཙོན།

དེས་ནི་སྤར་ནས་དེ་ཤེས་བས།

སྤྱུ་ལ་བ་དེ་ལ་ཆགས་བ་མེད།

སྤྱི་བ་སྤྱུ་སྤྱུ་ལ་བ་འདྲ་བར་ནི།

རྒྱལ་པོ་འདྲ་ཆུབ་མཁས་བས་ཤེས།

འགྲོ་བའི་ཆེད་དུ་གོ་བགོས་དེ།

འགྲོ་བ་དེ་ལྟར་སྤར་ནས་ཤེས། །ཞེས་འབྱུང་བ་ལྟ་བུའོ།

དེ་ལྟར་ཐབས་དང་ཤེས་རབ་<sup>2</sup>ལ་དག་དུ་གྲུས་བར་བྱ་ཞི། གོ་མས་བར་  
བྱས་བ་དེའི་སེམས་<sup>3</sup>ཀྱི་རྒྱུད་རིམ་གྱིས་ཡོངས་སུ་སྒྲིན་བ་ན་གོང་ནས་གོང་དུ་ཤིན་  
དུ་ནམ་བར་དག་བའི་སྐད་ཅིག་འབྱུང་བས་ཡང་དག་བའི་དོན་ལ་བསྒྲོམ་བ་<sup>4</sup>རབ་  
ཀྱི་མཐར་བྱིན་བར་<sup>5</sup>གྱུར་ན་འཛིག་དེན་ལས་འདས་བའི་ཡེ་ཤེས་དོག་བའི་བྲ་བ་  
མཐའ་དག་དང་བྲལ་བ། ཚོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་དུ་གསལ་བར་<sup>6</sup>དོགས་བ། རི་  
མ་མེད་ཅིང་མི་གཡོ་བ་རྒྱུད་མེད་བའི་མར་མེ་དང་འདྲ་བ་འབྱུང་ཞི། དེའི་ཆོ་  
དངོས་པོ་འི་མཐའ་ལ་དམིགས་བ་ཐོབ་བར་འགྱུར་རོ། ས་དང་བོ་ཡང་ཐོབ་བ་ཡིན་

1. ལྟ་—བཀའ་(མདོ་ཉ་ ༤༩) 2. ལྟ་མི་—རབ་དྲག་(ཆད་—ཤེས་རབ་ལ་དྲག་)

3. 'ཞེས་ཀྱི་'—རྒྱུ་དབྱིངས་མེད་ 4. ལྟ་མི་—བ་ཤེས་རབ་ 5. ལྟ་མི་—མར་མེ་གྱུར་

ཅིས་བ་མ་དག་བར་མངོན་ནོ། 6. ལྟ་མི་—བ་



ནོ། །མཐོང་བའི་ལམ་ལ་ཡང་ཞུགས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་དེ་གོང་མའི་ས་ནམས་  
 ཡོངས་སུ་སྤངས་ནས་རིམ་གྱིས་གསེར་བཞིན་དུ་སྦྱོབ་པ་བསགས་པ་མ་ལུས་པ་<sup>1</sup>  
 མེད་པར་འགྱུར་ལ། ཆགས་པ་མེད་པ་དང་། ཐོགས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་  
 ཐོབ་ནས་ཡོན་ཏན་མ་ལུས་པའི་གཞི་སངས་རྒྱས་ཀྱིས་ཐོབ་པར་འགྱུར་དེ། དགོས་  
 པ་ཡོངས་སུ་གྲུབ་པ་ལ་དམིགས་པ་ཡང་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བུས་ན་སངས་  
 རྒྱས་ཐོབ་པར་འདོད་པས་<sup>2</sup>དབྱ་མའི་ལམ་ལ་མངོན་པར་བརྩོན་པར་བྱའོ།

དེ་<sup>3</sup>ལྟར་དབྱ་མའི་ལམ་བཤད་བས། །

བདག་གིས་<sup>4</sup>བསོད་ནམས་གང་ཐོབ་པ། །

དེ་ཡིས་སྦྱོ་བོ་མ་ལུས་པ། །

དབྱ་མའི་ལམ་ནི་ཐོབ་པར་ཤོག།

དམ་པ་ཐུག་དོགས་ལ་སོགས་དྲི་མ་ཐག་<sup>5</sup>བསྐྱངས་པ།

ཡོན་ཏན་ནམས་ཀྱིས་མི་ངོས་སུ་ཡི་མཚོ་འདྲ་དག།

ནམ་པར་སྦྱེ་ནས་ལེགས་པར་བཤད་ནམས་འཛིན་བྱེད་དེ།

ངང་པ་རབ་དགའ་ཆུ་ལས་འོ་མ་ལེན་པ་བཞིན། །

དེ་ལྟ་བུས་ན་མཁས་ནམས་ཀྱིས། །

ཐོགས་ལྷུང་<sup>6</sup>དཀྱགས་ཡིད་རིང་སྤོངས་ལ། །

1. ལྟ་བུ་ལ་ 2. ལྟ་བུ་ལ་འདོད་པ་ (ཆད་འདོད་པས་)

3. ལྟ་བུ་ལྟར་ན་—དེ་ལྟར་དཀྱའ་བའི་ལམ་བཤད་བས། །ཞེས་གསལ་གོ།

4. ལྟ་བུ་ལ་ 5. ལྟ་བུ་ལ་མཐུན་སྤྱངས་ 6. ལྟ་བུ་ལ་ཐོགས་ལྷུང་



བྱིས་པ་ལས་ཀྱང་ལེགས་པ་ཤད་པ། །

ཐམས་ཅད་སྤང་བ་ཁོ་ནར་བྱ། །

བསྐྱོམ་པའི་རིམ་པ་སློབ་དཔོན་ལྷུ་རྒྱུ་ཀམ་ལ་གྱི་ལས་ཐ་མར་མཛད་པ་ཚེགས་སོ། །

བྱ་གར་གྱི་མཁན་པོ་བརྒྱུ་མུ་དང་། ལྷ་ཆེན་གྱི་ལོ་རྒྱུ་བ་བརྗེ་ཡེ་ཤེས་སྟེ་ལ་

སོགས་པས་བསྐྱར་ཅིང་ལྷས་དེ་གཏན་ལ་ཡབ་པའོ། །

### 1. ལྷ་པོ་-སྐྱོམ་

ཙོ་ཆོས་ནམས་གང་དག་རྒྱ་ལས་བྱང་བ་དང་།

དེ་ཡི་རྒྱ་དང་དེ་འགོག་གང་ཡིན་པའང་།

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་བཀའ་སྒྲུལ་དེ།

དེ་སྐད་གསུངས་པའི་ཚལ་ཅན་དག་སྤྱོད་ཆེ།

(ལྷེ་-བཀའ་:— ༡༥ལ་བ་'ཀ' ༩༩)

སཐམས་ཅད་ལྷ།



आचार्यकमलशीलप्रणीतः

**भावनाक्रमः**

( संस्कृतपाठः )



महाराष्ट्र शासन

महाराष्ट्र शासन

( अ. १००० )



आचार्यकमलशीलप्रणीतो

भावनान्क्रमः प्रथमः

—: ❁ :—

[ 'महायानसूत्राणां य आदिकर्मिकस्य चर्यानियमः ।

तमधिकृत्य संक्षेपाद् भावनान्क्रमस्त्वभिधीयते ॥

अचिरेण सर्वज्ञतां प्राप्तुकामैः संक्षेपतः करुणा, बोधिचित्तम्, प्रतिपत्तिश्चेति त्रिषु स्थानेषु प्रयतितव्यम् ।

बुद्धत्वस्य अशेषधर्महेतुमूलं करुणैवेति ज्ञात्वा साऽऽदावेव 5 भावयितव्या । यथोक्तम् आर्यधर्मसंगीतिसूत्रे<sup>१</sup>—“अथ खल्ववलोकितेश्वरो बोधिसत्त्वो महासत्त्वो भगवन्तमेतदवोचत्—न भगवन् बोधिसत्त्वेन अतिबहुषु धर्मेषु शिक्षितव्यम् । एको धर्मो भगवन् बोधिसत्त्वेन स्वाराधितः सुप्रतिविद्धः कर्तव्यः । तस्य सर्वबुद्धधर्माः करतलगता भवन्ति । कतम एकधर्मः ? यदुत महाकरुणा । महाकरुणया भगवन् बोधिसत्त्वानां 15 सर्वबुद्धधर्माः करतलगता भवन्ति । तद्यथा भगवन् येन राज्ञश्चक्रवर्तिनश्चक्ररत्नं गच्छति तेन सर्वो बलकायो गच्छति, एवमेव भगवन् येन बोधिसत्त्वस्य महाकरुणा गच्छति, तेन सर्वे बुद्धधर्मा गच्छन्ति । तद्यथा भगवन् जीवितेन्द्रिये सति अन्येषामिन्द्रियाणां प्रवृत्तिर्भवति, एवमेव भगवन् महाकरुणायां सत्यामन्येषां बोधिसत्त्वानां ] धर्माणां 20 प्रवृत्तिर्भवति ।” इति ।

आर्याक्षयमतिनिर्देशे<sup>३</sup> चोक्तम्—“पुनरपरम्, भदन्त शारद्वतीपुत्र, बोधिसत्त्वानां महाकरुणाप्यक्षया । तत् कस्य हेतोः ? पूर्वज्जन्मत्वात् ।

१. 'महायानसूत्राणां य इत्यतः' 'सत्यामन्येषां बोधिसत्त्वानां' पर्यन्तं मूलसंस्कृतेऽनुपलब्धम् । २. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ८४ ) । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘म’-१३२ ) ।



तद्यथापि नाम, भदन्त शारद्वतीपुत्र, आश्वासाः [ प्रश्वासाः ]<sup>१</sup> पुरुषस्य जीवितेन्द्रियस्य पूर्वङ्गमाः, एवमेव महायान-सम्भार<sup>२</sup>-समुदागमाय बोधिसत्त्वस्य महाकरुणा पूर्वङ्गमा<sup>३</sup> इति विस्तरः । आर्यगयाशीषे<sup>४</sup> चोक्तम्—“किमारम्भा, मञ्जुश्रीः, बोधिसत्त्वानां चर्या, किमधिष्ठाना च ?  
 5 मञ्जुश्रीराह — महाकरुणारम्भा, देवपुत्र, बोधिसत्त्वानां चर्या सत्त्वा-धिष्ठाना ।” इति विस्तरः ।

तथा हि तया<sup>५</sup> प्रेर्यमाणा बोधिसत्त्वाः स्वात्मनिरपेक्षा एकान्तेन परोपकारार्थतया अतिदुष्करदीर्घकालिकेऽपि सम्भारोपार्जनपरिश्रमे प्रवर्तन्ते । तथा चोक्तम् आर्यश्रद्धाबलाधाने<sup>६</sup>—“तत्र [ महा ]<sup>७</sup> करुणयापि  
 10 सर्वसत्त्वपरिपाचनार्थं न तत् किञ्चित्<sup>८</sup> सुखोपाधानं यन्न परित्यजति ।” इति । अतोऽतिदुष्करे प्रवर्तमानो नचिरेणैव सम्भारान् परिपूर्वावश्यमेव सर्वज्ञपदम् अधिगच्छति । ततो बुद्धधर्माणां करुणैव मूलम् । महाकरुणा-परिग्रहादेव बुद्धा भगवन्तोऽधिगम्य सर्वज्ञपदम्<sup>९</sup> अशेषस्य जगतोऽर्थं विकुर्वाणास्तिष्ठन्त इति निर्वाणाप्रतिष्ठाने सैव भगवतां महाकरुणा  
 15 हेतुः ।

सा च दुःखितसत्त्वालम्बनमनस्कारबहुलीकारतो वृद्धिम्<sup>१०</sup> ( उप-याति )<sup>११</sup> । सर्वे च ते सत्त्वास्त्रिधातुकावचरास्त्रिविधदुःखतया यथायोगम् अत्यन्त<sup>१२</sup> दुःखिता एवेति सर्वेष्वेव सत्त्वेषु भावनीयम् । तथा च ये तावन्नारकास्ते विविधचिरन्तनदीर्घकालिकदाहादिदुःख [ नदीषु ]<sup>१३</sup>  
 20 निमग्ना एव भगवता वर्णिताः । तथा प्रेता अपि<sup>१४</sup> दुःसहतीव्रक्षुत्तृषादिदुःख-

१. भो० पा०—[ प्रश्वासाः ] । २. सम्भार—भो० न । ३. देगे—का० ( सूत्र—‘व’ ३८६ ) । ४. भो० पा०—महाकरुणाप्रेर्यमाणा । ५. देगे—का० ( सूत्र—‘छ’ १५ ) । ६. भो० पा०—[ महाकरुणयापि ] । ७. भोट-पाठानुसारम् उद्धारः ‘न किञ्चिद् दुःखिजन्म यत् न परिगृह्णाति’ । ८. भो० पा०—सर्वज्ञज्ञान । ९. वृद्धिम्—भो० न । १०. दूची-पाठे प्राप्त ‘उपेत्य’ स्थाने ‘उपयाति’ इति पाठः समीचीनतरः । ११. अत्यन्त—भो० न । १२. भो० पा०—[ दुःखनदीषु ] । १३. भो० पा०—अपि प्रायः ।



[अग्नि]<sup>१</sup> पीडाभिसंशोषितमूर्तयस्तीव्रदुःखम् अनुभवन्ति । येन वर्षशतेना-  
प्यशुचि खेटपिण्डनं<sup>२</sup> च भोक्तुं न लभन्त इत्यादि<sup>३</sup> वर्णितं भगवता । तिर्य-  
ञ्चोऽपि परस्पर [ भक्षण ]<sup>४</sup> क्रोधवर्धाहिंसादिभिरनेकविधं दुःखमनुभवन्तो  
दृश्यन्त एव । तथा हि केचिन्नासिकाभेदनताडनबन्धनादिभिरतन्त्रीकृत-  
शरीराः<sup>५</sup> परितः परिपीड्यमानाः कथमप्यनिच्छन्तोऽपि अतिदुर्वहगुरु- 5  
भारोद्वहनपरिखिन्नवपुषः<sup>६</sup> परिक्लाम्यन्ति, तथारण्येऽपि निवसन्तोऽनपराधाः  
केचित् क्वचित् [ अर्थ ]<sup>७</sup> तोऽन्विष्य हन्यन्ते । नित्यं च भयविह्वलमानसस्त-  
तस्ततः पलायमानास्तिष्ठन्तीत्यपरिमितम् एषां दुःखं दृश्यत एव । तथा  
मानुष्येऽपि नारकं दुःखं दृश्यत एव । अत्र ये चौरादयोऽङ्गच्छेदशूलार्पणोद्-  
बन्धनादिभिः कार्यन्त एव तेषां नारकमेव दुःखम् । ये च दारिद्र्याद्युप- 10  
हतास्तेषां प्रेतानामिव तत्क्षुत्तर्षादिभिर्दुःखम् । ये च भृत्यादयः परायत्ती-  
कृतात्मभावाः, ये च बलिभिराक्रम्य पीड्यन्ते तेषां तिरश्चामिव  
ताडनावरोधनादि दुःखम् । तथा पर्येष्टिकृतम् अन्योऽन्यद्रोहोपघातादि<sup>८</sup> कृतं  
प्रियविप्रयोगाप्रियसंयोगकृतं<sup>९</sup> चाप्रमेयमेषां दुःखम् । ये क्वचिद् ईश्वराः  
सुखिता इव लप्यन्ते<sup>१०</sup> तेऽपि विपर्यवसानसम्पदो विविधकुदृष्टिगहननिमग्ना 15  
नारकादिदुःखानुभवहेतुविविध<sup>११</sup> क्लेशकर्माण्युपचिन्वन्तः प्रपातस्थास्तरव<sup>१२</sup>  
इव दुःखहेतौ [ अपि ]<sup>१३</sup> वर्तमानाः परमार्थतो दुःखिता एव ।

देवा अपि ये तावत् कामावचरास्तेऽपि तीव्रकामाग्निसन्दीप्त-  
मानसा आक्षिप्तचित्ता इवास्वच्छचेतसः क्षणमपि समाधानं चेतसां न  
लभन्ते । तेषां प्रशमसुखधनदरिद्राणां कीदृशं नाम तत् सुखम् ? 20  
नित्यच्यवनपतनादिभयशोकोपहताः कथं सुखिता नाम ? ये च रूपारूपाव-

१. भो० पा०-[ दुःखाग्नि ] । २. भो० पा०-पिण्डमात्रम् । ३. भो० पा०-इति ।  
४. भो० पा०-[ परस्परभक्षण ] । ५. भो० पा०-आत्मातन्त्री । ६. शरीराः-भो० न ।  
७. वपुषः-भो० न । ८. सं० पठोऽस्पष्टः । ९. भो० पा०-दुःखानुभवो । १०. उपघात-  
भो० न । ११. भो० पा०-संयोगादि । १२. भो० पा०-दृश्यन्ते । १३. विविध-भो० न ।  
१४. तरव-भो० न । १५. भो० पा०-[ हेतो अपि ] ।



चरास्तेऽपि यदि नाम कियत्कालं दुःखदुःखतां व्यतीतास्तथाप्यत्यन्तं कामावचराणाम् अनुशयानाम् अप्रहाणात् तेषां पुनरपि नारकादि-  
विनिपातसम्भवाद् विपरिणामदुःखम् अस्त्येव । सर्वे नाम देवमनुष्याः  
क्लेशकर्मादिपारतन्व्यात् ते संस्कारदुःखतया दुःखिता एव ।

- 5 तदेवं सकलमेव जगद् दुःखाग्निज्वालावलीढम् इत्यवेत्य यथा  
मम दुःखमप्रियं तथान्येषामप्रियमिति<sup>१</sup> चिन्तयता सर्वेष्वेव सत्त्वेषु कृपा  
भावनीया । प्रथमं तावद् मित्रपक्षेषु पूर्वोक्ता विविधदुःखानुभवेष्वनुपश्यता  
भावनीया ।

- ततः सत्त्वसमतया<sup>२</sup> विशेषमपश्यताऽनादिमति च संसारे न  
10 कश्चित् सत्त्वो यो न मे शतशो बन्धुरभूदिति परिचिन्तयता व्यस्तेषु  
भावनीया । यदा मित्रपक्षेष्विव व्यस्तेषु [ अपि ]<sup>३</sup> तुल्या करुणा प्रवृत्ता  
भवति, तदा शत्रुपक्षेऽपि तथैव सत्त्वसमतादिमनसिकारेण भावनीया ।  
यदा च शत्रुपक्षेऽपि मित्रपक्षवत् समप्रवृत्ता भवति, तदा क्रमशो  
दशसु दिक्षु सर्वसत्त्वेषु [ अपि ]<sup>४</sup> भावयेत् । यदा च दुःखितबाल-  
15 प्रियेष्विव दुःखोद्धरणेच्छाकारा स्वरसवाहिनी सर्वसत्त्वेषु समप्रवृत्ता कृपा  
भवति, तदा सा निष्पन्ना भवति महाकरुणाव्यपदेशं च लभते । यथा  
अक्षयमतिसूत्रे च वर्णितम् । अयं च कृपाभावनाक्रमो भगवताऽभिधर्म-  
सूत्रादौ वर्णितः ।

- तस्यैवं कृपाभ्यासबलात् सकलसत्त्वाभ्युद्धरणप्रतिज्ञयानुत्तरसम्यक्-  
20 सम्बोधिप्रार्थनाकारम् अयत्नत एव बोधिचित्तमुत्पद्यते । यथोक्तम् आर्यदश-  
धर्मसूत्रे<sup>५</sup>—“सत्त्वान् अत्राणान् अशरणान् अद्वीपान् दृष्ट्वा करुणायै चित्तमु-  
पस्थाप्य<sup>६</sup> यावदनुत्तरायां सम्यक्सम्बोधौ चित्तमुत्पादयति” इति । यदि  
नाम<sup>७</sup> परसमादापनादिनापि बोधिसत्त्वस्य महासत्त्वस्य<sup>८</sup> बोधिचित्तमुत्पद्यते,

१. ज्वाला-भो० न । २. अप्रियम्-भो० न । ३. भो० पा०-चित्तसमतया । ४. भो०  
पा०-[ व्यस्तेषु अपि ] । ५. भो० पा०-[ सर्वसत्त्वेषु अपि ] । ६. भो० पा०-सर्वथा दुःख ।  
७. देगे-का० ( रत्नकूट-‘ख’ १६८ ) । ८. करुणायै चित्तमुपस्थाप्य-भो० न । ९. यदि  
नाम-भो० न । १०. महासत्त्वस्य-भो० न ।



तथापि कृपावेगतो यत् स्वयमेव बोधिसत्त्वस्य बोधिचित्तमुत्पद्यते तद् भगवता आर्यतथागतज्ञानमुद्रासमाधौ विशिष्टतरत्वेन वर्णितम् ।

तदेतद् बोधिचित्तं प्रतिपत्तिविकलमपि संसारे महाफलं भगवता वर्णितम् । तथा चोक्तं मैत्रेयविमोक्षे—“तद् यथापि नाम, कुलपुत्र, भिन्नमपि वज्ररत्नं सर्वम् अतिविशिष्टं सुवर्णालङ्कारमभिभवति, 5 वज्ररत्ननाम च न विजहाति, सर्वदारिद्र्यं च विनिवर्तयति । एवमेव, कुलपुत्र, प्रतिपत्तिभिन्नमपि सर्वज्ञताचित्तोत्पादवज्ररत्नं सर्वश्रावक-प्रत्येकबुद्धगुणसुवर्णालङ्कारम् अभिभवति । बोधिचित्तनाम न विजहाति, संसारदारिद्र्यं च विनिवर्तयति” इति ।

योऽपि पारमितासु सर्वेण<sup>३</sup> सर्वं सर्वथा शिक्षितुम् असमर्थः, 10 तेनापि बोधिचित्तम् उत्पादनीयमेव, उपायपरिग्रहेण महाफलत्वात् । यथा चोक्तम् आर्यराजाववादकसूत्रे—“यस्मात् त्वं महाराज, बहुकृत्यो बहुकरणीयः, असहः सर्वेण सर्वं सर्वथा” दानपारमितायां शिक्षितुम्, यावत् प्रज्ञापारमितायां शिक्षितुम् । तस्मात्तर्हि त्वं<sup>४</sup> महाराज एवमेव सम्बोधौ छन्दं श्रद्धां प्रार्थनां प्रणिधिं च, गच्छन्नपि तिष्ठन्नपि निषण्णोऽपि शया- 15 नोऽपि जाग्रदपि भुञ्जानोऽपि पिबन्नपि, सततसमितम् अनुस्मर, मनसि-कुरु भावय । सर्वबुद्धबोधिसत्त्वार्थं<sup>५</sup> श्रावकप्रत्येकबुद्धपृथग्जनानाम् आत्मनश्च अतीतानागतप्रत्युत्पन्नानि कुशलमूलानि पिण्डयित्वा, अनुमोदस्व अग्रया अनुमोदनया । अनुमोद्य च सर्वबुद्धबोधिसत्त्वप्रत्येकबुद्धार्थं<sup>६</sup> श्रावकाणां पूजाकर्माणि निर्यातय । निर्यात्य च सर्वसत्त्वसाधारणानि कुरु । ततः 20 सर्वसत्त्वानां यावत् सर्वज्ञताप्रतिलम्भाय सर्वबुद्धधर्मपरिपूरणाय दिने

१. देगे-का० ( अवतंसक-‘ड’ ३२३ ) सं०-गण्डव्यूहसूत्रमध्ये दशभङ्गासंस्करणे पृ० ४०५ । २. गुण भो० न । ३. सर्वेण-भो० न । ४. एतन्नामका बहवः सूत्रग्रन्थाः काग्युर-संग्रहे विद्यन्ते, यथा २१४, २१५, २२१ क्रमाङ्कितास्त्रयो ग्रन्थाः, किन्तु तत्र उद्धरणमिदं न प्राप्तम् । ५. भो० पा०-सर्वथा सर्वदा । ६. त्वं-भो० न । ७. आर्य-भो० न । ८. आर्य-भो० न ।



त्रैकाल्यम् अनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ परिणामय । एवं खलु त्वं महाराज,  
प्रतिपन्नः सन् राज्यं च कारयिष्यसि, राज्यकृत्यानि च न हापयिष्यसि,  
[ बोधिसम्भारांश्च परिपूरयिष्यसि ]<sup>१</sup> । इत्यादि<sup>२</sup>कमुक्त्वाह—“अथ खलु  
पुनस्त्वं महाराज, सम्यक्सम्बोधिचित्तकुशलमूलविपाकेन अनेककृत्यो देवेषु  
5 उपपन्नोऽभूः । अनेककृत्यो मनुष्येषु उपपन्नोऽभूः । सर्वासु च देवमनुष्यो-  
पपत्तिषु आधिपत्यं कारयिष्यसि” । इति विस्तरः ।

यत् पुनः प्रतिपत्तिसारं बोधिचित्तं तद् अतितरां विपुलं फलम्  
इति सिद्धम् । अत एव आर्यवीरदत्तपरिपृच्छायाम्<sup>३</sup> उक्तम्—

बोधिचित्ताद् वै यत् पुण्यं तच्च रूपि भवेद् यदि ।

10 आकाशघातुं सम्पूर्णं भूयश्चोत्तरितं भवेत् ॥

गङ्गाबालुकसंख्यानि बुद्धक्षेत्राणि यो नरः ।

दद्याद् रत्नप्रपूर्णानि लोकनाथेभ्य एव हि ॥

यश्चैकः प्राञ्जलिर्भूत्वा चित्तं बोधाय नामति ।

इयं विशिष्यते पूजा यस्या अन्तो न विद्यते ॥ इति ।

15 यथा आर्यगण्डव्यूहे<sup>४</sup> वर्णितम्—“बोधिचित्तं कुलपुत्र ! बीजभूतं सर्वबुद्ध-  
धर्माणाम्” इति विस्तरः । तच्च बोधिचित्तं द्विविधं प्रणिधिचित्तं  
प्रस्थानचित्तं च । आर्यगण्डव्यूहे<sup>५</sup> वर्णितम्, तथा—“दुर्लभास्ते, कुलपुत्र,  
सत्त्वाः सत्त्वलोके येऽनुत्तरायां सम्यक्सम्बोधौ प्रणिदधति इति । ततोऽपि  
दुर्लभतमास्ते सत्त्वा येऽनुत्तरां सम्यक्सम्बोधिम् अभिसम्प्रस्थिताः”  
20 इति । सकलजगतो हिताय बुद्धो भवेयमिति प्रथमतः प्रार्थनाकारा चेतना

१. भो० पा०—[ बोधिसंभारांश्च परिपूरयिष्यसि ] । २. भो० पा०—इत्यादि विस्तरेण ।

३. देगे-का० ( रत्नकूट-‘त्र’ २०२ ) । ४. गङ्गाबालुक.....इत्यादि श्लोकद्वयं भोटपाठे न  
विद्यते । ५. देगे-का० ( अवतंसक-‘ड’ ३०६ ) सं०-गण्डव्यूहः पृ० १६६ दरभङ्गा ।

६. देगे-का० ( अवतंसक-‘ड’ ३०८ ) सं०-गण्डव्यूहः पृ० ३६५ दरभङ्गा ।



तत्प्रणिधिचित्तम् । यतः प्रभृति संवरग्रहणे वर्तमानाः सम्भारेषु दृश्यन्ते<sup>१</sup> तत्प्रस्थानचित्तम् ।

संवरश्च विज्ञातप्रतिबलसंवरस्थितात् कल्याणमित्रात्<sup>२</sup> परतो ग्राह्यः । असति प्रतिरूपे ग्राहके<sup>३</sup> बुद्धबोधिसत्त्वान् आमुखीकृत्य यथा मञ्जुश्रियाऽम्बरराजभूतेन बोधिचित्तमुत्पादितं तथोत्पादनोयः । 5

एवमुत्पादितबोधिचित्तो बोधिसत्त्वः स्वयमेव दानादि ददाति<sup>४</sup> प्रतिपत्तौ प्रयोक्ष्यते, न हि स्वयमदान्तः परान् दमयतीति मत्त्वा । न चापि विना प्रतिपत्त्या बोधिरवाप्यते । यथोक्तम् आर्यगयाशीर्षे<sup>५</sup>— “प्रतिपत्तिसाराणां बोधिसत्त्वानां बोधिर्नाप्रतिपत्तिसाराणाम्” इति । आर्यसमाधिराजे<sup>६</sup> चोक्तम्—“तस्मात् प्रतिपत्तिसारो भविष्यामि इत्येवं 10 त्वया कुमार, शिक्षितव्यम् । तत् कस्य हेतोः ? प्रतिपत्तिसारस्य हि, कुमार, न दुर्लभा भवत्यनुत्तरा सम्यक्सम्बोधिः” इति ।

सा च प्रतिपत्तिर्बोधिसत्त्वस्य पारमिताऽप्रमाणसङ्ग्रहवस्त्वादिभेदेन अक्षयमतिरत्नमेघादिसूत्रेषु विस्तरेण वर्णिता । तथा लौकिकशिल्पादि-स्थानेष्वपि यावद् बोधिसत्त्वेन शिक्षितव्यम् । किं पुनर्लोकोत्तरेषु 15 ध्यानादिषु । अन्यथा कथं सर्वाकारं सत्त्वार्थं कुर्युः । सा चेयं संक्षेपेण बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञोपायरूपा प्रतिपत्तिर्न प्रज्ञामात्रं नोपायमात्रम् । यथा आर्यविमलकीर्तिनिर्देशे<sup>७</sup>—“प्रज्ञारहित उपाय उपायरहिता च प्रज्ञा बोधिसत्त्वानां बन्धनम्” इत्युक्तम् । उपायसहिता प्रज्ञा प्रज्ञासहित उपायो मोक्षत्वेन वर्णितः । आर्यगयाशीर्षे<sup>८</sup> चोक्तम्—“द्वाविमौ बोधिसत्त्वानां 20 संक्षिप्तौ मार्गौ । द्वाभ्यां मार्गाभ्यां समन्वागता बोधिसत्त्वा महासत्त्वाः”<sup>९</sup>

१. भो० पा०—प्रविशन्ति । २. कल्याणमित्रात्—भो० न । ३. ग्राहके—भो० न । ४. भो० पा०—आर्यमञ्जुश्रिया । ५. ददाति—भो० न । ६. देगे—का० ( सूत्र—‘व’ २६१ ) । ७. देगे—का० ( सूत्र—‘व’ २८ ) सं०—१० परि० पृ० १४ वरभङ्गा । ८. देगे—का० ( सूत्र—‘म’ २०१ ) सं०—४ परि० पृ० ११६ ति० संस्थानम् । ९. देगे—का० ( सूत्र—‘व’ २८८ ) । १०. महासत्त्वाः—भो० न ।



क्षिप्रमनुत्तरां सम्यक्सम्बोधिम् अभिसम्भोत्स्यन्ते । कतमौ द्वौ, उपायश्च प्रज्ञा च ।” इति ।

तत्र प्रज्ञापारमितां त्यक्त्वा दानादिपारमितासङ्ग्रहवस्त्वादिकं सर्वमेव क्षेत्रपरिशुद्धिमहाभोग[ बहु ]<sup>१</sup> परिवारसम्पत्सत्त्वपरिपाकनिर्माणा-  
 5 दिकसकलाभ्युदयधर्मसङ्ग्राहकं कुशलम् उपाय उच्यते । प्रज्ञा तु तस्यैव चोपायस्याविपरीतस्वभावपरिच्छेदहेतुः । तथा हि सम्यगुपायं विविच्याऽविपर्यस्तो यथावत् स्वपरार्थानुष्ठानाद् विषमिव मन्त्रपरिगृहीतं भुञ्जानो न संक्लिश्यते । तथा चोक्तमत्रैव सूत्रे—“उपायः सङ्ग्रहज्ञानम् प्रज्ञा परिच्छेदज्ञानम् ।” इति । आर्यश्रद्धाबलाधाने<sup>२</sup> चोक्तम्—“उपाय-  
 10 कौशलं कतमम् ? यत् सङ्ग्रहः सर्वधर्माणाम् । प्रज्ञा कतमा ? यत् सर्वधर्माणाम् असम्भेदेन कौशलम्” इति । एतो प्रज्ञोपायौ द्वावपि सर्वकालमेव सेवनीयौ भूमिप्रविष्टैरपि न तु प्रज्ञामात्रं नोपायमात्रम् । यतः सर्वास्वेव दशसु भूमिषु बोधिसत्त्वस्य पारमितासमुदाचारः पठितो दशभूमिकादौ “न<sup>३</sup> च परिशेषासु न समुदाचरति” इति  
 15 वचनात् ।

अष्टम्यां च भूमौ बोधिसत्त्वस्य शान्तविहारिणो बुद्धैर्व्युत्थानं<sup>४</sup> तद् विरुध्येत । तच्च ततस्तत्र पाठाद् अवगन्तव्यम् । [ तथा चोक्तं तत्रैव सूत्रे ] “तस्य खलु भो जिनपुत्र, बोधिसत्त्वस्य एवमिमामचलां बोधि-  
 सत्त्वभूमिमनुगतस्य पूर्वप्रणिधानबलाधानस्थितस्य बुद्धा भगवन्तस्तस्मिन्  
 20 धर्ममुखस्रोतसि तथागतज्ञानोपसंहारं कुर्वन्ति । एवं चैनं ब्रुवन्ति—साधु

१. भो० पा०—[बहुपरिवार] । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ २८६ ) । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘छ’ २८ ) । ४. कतमम्-भो० न । ५. नोपायमात्रम्-भो० न । ६. देगे-का० ( अवतंसक-‘ख’ ३१-परि० पृ० १८२ ) । ७. भो० पा०—भगवद्भिर्बुद्धैर्व्युत्थानम् । ८. अत्र ‘दशभूमिसूत्रतो यदवगन्तुं निर्देशः, तत्प्रतिपादकानि सूत्रवाक्यानि ‘तस्य खलु भो जिनपुत्र’ इत्यादीनि अत्रोद्धृतानि । ९. देगे-का० ( अवतंसक-‘ख’ ३१ परि० पृ० १८२ ) सं०—दशभूमि-पृ० ४३ दरभङ्गा ।



साधु कुलपुत्र । एषा परमार्थक्षान्तिर्बुद्धधर्मानुगमाय । अपि तु खलु पुनः  
 कुलपुत्र,<sup>१</sup> या अस्माकं दशबलचतुर्वैशारद्यबुद्धधर्मसमृद्धिः, सा तव  
 नास्ति । तस्या बुद्धधर्मसमृद्धेः पर्येषणाय अभियोगं<sup>२</sup> कुरु, वीर्यमारभस्व ।  
 एतदेव क्षान्तिमुखं मोन्मोक्षीः । अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, किं चापि त्वयैवं  
 शान्तविमोक्षविहारोऽनुप्राप्तः, इमान् पुनरशान्तानप्रशान्तान् बालपृथग्जनान् 5  
 नानाक्लेशसमुदाचार<sup>३</sup>प्राप्तान् विविधवितर्कोपहतमानसान् समन्वाहर,  
 अपेक्षस्व । अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, पूर्वप्रणिधानमनुस्मर सत्त्वार्थसंप्रापणं  
 ज्ञानमुखाचिन्त्यतां च । अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, एषा सर्वधर्माणां  
 धर्मता । उत्पादाद्वा तथागतानामनुत्पादाद्वा स्थितैवैषा धर्मता<sup>४</sup> धर्मधातु-  
 स्थितिः यदिदं सर्वधर्मशून्यता सर्वधर्मानुपलब्धिः । नैतया तथागता एव 10  
 केवलं प्रभाव्यन्ते, सर्वश्रावकप्रत्येकबुद्धा अपि ह्येतामविकल्पधर्मतामनु-  
 प्राप्नुवन्ति ।

अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, प्रेक्षस्व तावत् त्वमस्माकं कायाप्रमाणतां  
 च ज्ञानाप्रमाणतां च बुद्धक्षेत्राप्रमाणतां च ज्ञानाभिनिर्हारप्रमाणतां च  
 प्रभामण्डलाप्रमाणतां च स्वराङ्गविशुद्ध्यप्रमाणतां च । तथैव त्वमप्य- 15  
 भिनिर्हारमुत्पादय । अपि तु खलु पुनः कुलपुत्र, एकस्त्वेष आलोको योज्यं  
 सर्वधर्मानिर्विकल्पालोकः । ईदृशास्तु कुलपुत्र, धर्मालोकास्तथागतानाम-  
 पर्यन्तगता अपर्यन्तकृता अपर्यन्तबद्धाः, येषां संख्या नास्ति, गणना, प्रमाण-  
 मुपनिषदौपम्यं नास्ति, तेषामधिगमाय अभिनिर्हारमुत्पादय । अपि तु खलु  
 पुनः कुलपुत्र, प्रेक्षस्व तावद् दशसु दिक्षु अप्रमाणक्षेत्रतां च अप्रमाण- 20  
 सत्त्वतां च अप्रमाणधर्मविभक्तितां च । तत्सर्वमनुगणय । यथावत्तया  
 अभिनिर्हारमुत्पादय<sup>५</sup> । “इति हि भो जिनपुत्र, ते बुद्धा भगवन्त

१. कुलपुत्र-भो० न । २. अभियोगं-भो० न । ३. समुदाचार-भो० न ।  
 ४. धर्मता-भो० न । ५. यथावत्तया अभिनिर्हारमुत्पादय-भो० न । ६. ‘इति हि भो  
 जिनपुत्र ..... इत्यतः ..... निष्पादयति ।’ पर्यन्तोऽंशः मूलसंस्कृतानुवादभूतेषु काग्युर-  
 संस्करणेषु यः पाठः, भावनाक्रमोद्धतः भोटांशः त्रिभ्योऽपि भिन्नः ।



एवं भूम्यनुगतस्य बोधिसत्त्वस्य एवं प्रमुखान्यप्रमेयाण्यसंख्येयानि ज्ञानाभि-  
निर्हारमुखान्युपसंहरन्ति, यैर्ज्ञानाभिनिर्हारमुखैर्बोधिसत्त्वोऽप्रमाणज्ञान-  
विभक्तितोऽभिनिर्हारकर्माभिनिष्पादयति ।' आरोचयामि ते भो  
जिनपुत्र, प्रतिवेदयामि । ते चेद् बुद्धा भगवन्तस्तं बोधिसत्त्वमेवं सर्वज्ञज्ञाना-  
5 भिनिर्हारमुखेषु नावतारयेयुस्तदेवास्य परिनिर्वाणं भवेत्सर्वसत्त्वकार्यप्रति-  
प्रसन्धिश्च ।" इति विस्तरः ।

यच्च आर्यविमलकीर्तिनिर्देशे गयाशीर्षे चोक्तं तदपि पूर्वोक्तं विरुध्यते,  
एवं सामान्येनैव तत्राभिधानात् । यत् सर्वधर्मसङ्ग्रहवैपुल्ये<sup>१</sup> चोक्तं तदपि  
विरुध्यते एव । तत्रोक्तम्—“सूक्ष्मं हि मञ्जुश्रीः, सद्धर्मप्रतिक्षेपकर्मा-  
10 वरणम् । यो हि कश्चिन्मञ्जुश्रीः, तथागतभाषिते धर्म एकस्मिन्  
शोभनसंज्ञाम् उत्पादयति । एकस्मिन्नशोभनसंज्ञाम् उत्पादयति । स  
सद्धर्मं प्रतिक्षिपति । तेन सद्धर्मं प्रतिक्षिपता तथागतोऽभ्याख्यातो भवति”  
इति विस्तरम् उक्त्वा आह—“योऽयं मैत्रेय, षट्पारमितासमुदागमो  
बोधिसत्त्वानां बोधाय तं ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति । प्रज्ञापारमितायामेव  
15 बोधिसत्त्वेन शिक्षितव्यम्, किं शेषाभिः पारमिताभिरिति । तेऽन्या<sup>२</sup>मुपाय-  
पारमितां दूषयितव्यां मन्यन्ते । तत् किं मन्यसे, अजित ! दुष्प्रज्ञः स<sup>३</sup>  
काशिराजोऽभूद् येन कपोतार्थं श्येनाय स्वमांसानि दत्तानि ? मैत्रेय आह,  
नो हीदम्, भगवन् । भगवानाह—यानि मया मैत्रेय, बोधिसत्त्वचर्यां चरता  
षट्पारमितासंयुक्तानि कुशलमूलान्युपचितानि । अपकृतं नु तैः कुशलमूलैः ?  
20 मैत्रेय आह—नो हीदं भगवन्” । भगवान् आह, त्वं तावद् अजित,  
दानपारमितायां षष्टि कल्पान् समुदागतः । यावत् प्रज्ञापारमितायां  
षष्टि कल्पान् समुदागतः, तत् ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति—एकनयेनैव

१. भो० पा०—मार्गाभिनिर्हार । २. अयंसूत्रभोट-काग्युरसंस्करणेषु न प्राप्यतेऽमीषु  
दिवसेषु । ३. अन्याम्—भो० न । ४. भो० पा०—अहं काशिराजोऽभूम् । ५. भगवन्—  
भो० न ।



बोधिर्यदुत शून्यतानयेन" इति विस्तरः । वैरोचनाभिसम्बोधौ चोक्तम्<sup>१</sup>-  
"तदेतत् सर्वज्ञज्ञानं करुणामूलं बोधिचित्तहेतुकम् उपायपर्यवसानम्"  
इति । तस्मादुभयं सर्वकालमेव बोधिसत्त्वेन सेवनीयम् ।

एवं हि भगवताम् अप्रतिष्ठितनिर्वाणं सिध्यति । तथा हि दानादे-  
रुपायस्य रूपकायक्षेत्रपरिवारादिमहाभोगताफलसम्पत्परिग्रहाद् भगवतां 5  
न निर्वाणेष्ववस्थानम् । प्रज्ञया च<sup>२</sup> सकलविपर्ययसिप्रहाणाद् न  
संसारेऽवस्थानं विपर्ययसमूलत्वात् संसारस्य । अन्या<sup>३</sup> च प्रज्ञोपायस्वरूपया  
प्रतिपदा समारोपापवादान्तविवर्जनेन मध्यमा प्रतिपद् उद्भाविता ।  
प्रज्ञया समारोपान्तस्य वर्जनाद् उपायेनापवादान्तस्य वर्जनात् । अत एव  
आर्यधर्मसङ्गीतावुक्तम्<sup>४</sup> - "लक्षणानुव्यञ्जनरूपकायपरिनिष्पादनाभिरतश्च 10  
भवति, न धर्मकायाभिसमयमात्राभिरतः" इति । पुनरुक्तम् - "प्रज्ञोपाय-  
जनितस्तथागतानां परप्रत्ययतः संभवोऽनुगन्तव्यः" इति<sup>५</sup> ।

यत् पुनरुक्तम्<sup>६</sup> - "कोलोपमं धर्मपर्यायम् आजानद्भिर्धर्मा एव  
प्रहातव्याः, प्राग्<sup>७</sup> एवाधर्माः" इति । तद् विपरीताभिनिवेशप्रहाणतः  
प्रहातव्या इत्यभिप्रायादुक्तम्, न तु प्रयोजनसम्पादनार्थमपि नाश्रय- 15  
णीयम् । तथा चोक्तम् - "धर्मः प्रग्रहीतव्यो नोद्ग्रहीतव्यः" इति ।  
नोन्मार्गेण प्रग्रहीतव्य इत्यर्थः । यच्चापि क्वचिद् दानादि सांसारिक-  
फलत्वेन वर्णितं तत् प्रज्ञारहितानां दानादीनां पूर्वम् उक्तं तावन्मात्रकुशल-  
मूलसन्तुष्टांश्चाधिकृत्योत्तर<sup>८</sup> कुशलमूले प्रोत्साहनार्थम् । अन्यथा [आर्य-]  
विमलकीर्तिनिर्देशः<sup>९</sup> [ आदि पूर्वोक्तः ]<sup>१०</sup> सर्व एव विरुध्यते । तस्मात्तु 20  
द्वावपि प्रज्ञोपायौ सेवनीयाविति स्थितम् ।

१. देगे-का० (तन्त्र-'थ' १५३) उद्धरणमिदं भोटपाठानुसारम् द्र० 'संभवोऽनुगन्तव्यः'  
इत्याद्यनन्तरम् । २. च-भो० न । ३. अन्या-भो० न । ४. देगे-का० (सूत्र-'श' १८) । ५.  
भोटपाठे एतदुद्धरणानन्तरं पूर्वोक्तं वैरोचनाभिसम्बोधिरुद्धरणं लिखितम् । ६. यत् पुनरुक्तम्-  
भो० न । ७. प्राग्-भो० न । ८. भो० पा० उत्तरोत्तरम् । ९. भो० पा० [आर्यविमल....] ।  
१०. दूची पाठे-विमलकीर्त्यादिनिर्देशः । ११. भो० पा० [आदिपूर्वोक्तः] ।



तत्र प्रज्ञापरिगृहीता दानादयः पारमिताव्यपदेशं लभन्ते  
नान्यथेति । अतो दानादिपरिशुद्धये समाधानम् आस्थाय प्रज्ञोपादानार्थं  
यत्नं कुर्वीत ।

तत्र प्रथमं तावत् श्रुतमयी प्रज्ञोत्पादनीया । तथा हि तावद्  
5 आगमार्थम् अवधारयति । ततश्चिन्तामय्या प्रज्ञयानीतनेयार्थं  
निर्वेधयति । ततस्तया निश्चित्य भूतमर्थं भावयेन्नाभूतम् । अन्यथा हि  
विपरीतस्यापि भावनाद् विचिकित्सायाश्चाव्यपगमात् सम्यग्ज्ञानोदयो  
न स्यात् । ततश्च व्यर्थेव भावना स्यात् । यथा तीर्थिकानाम् ।<sup>१</sup> उक्तं च  
भगवता समाधिराजे<sup>२</sup>—

10 नैरात्म्यधर्मान् यदि प्रत्यवेक्षते  
तान् प्रत्यवेक्ष्य यदि भावयेत् ।  
स हेतुर्निर्वाणफलस्य प्राप्तये  
यो अन्यहेतुर्न स भोति शान्तये ॥ इति ।

तस्माच्चिन्तामय्या प्रज्ञया युक्त्यागमाभ्यां प्रत्यवेक्ष्य भूतमेव वस्तुस्वरूपं  
15 भावनीयम् । वस्तूनां स्वरूपं च परमार्थतोऽनुत्पाद एवागमतो युक्तितश्च  
निश्चितम् ।

तत्रागमतो यथोक्तम् आर्यधर्मसङ्गीतौ<sup>३</sup> - “अनुत्पादः सत्यमसत्यम्<sup>४</sup>  
अन्ये धर्माः” इति । एतच्च परमार्थानुकूलत्वाद् अनुत्पादः सत्यमित्यु-  
क्तम् । परमार्थतस्तु नोत्पादो नाप्यनुत्पादः, तस्य सर्वव्यवहारातीतत्वात् ।  
20 पुनश्चात्रैव<sup>५</sup> चोक्तम्—“उत्पादनरोधाभिनिविष्टः कुलपुत्र, लोकसन्निवेशः,

१. भो० पा०—तीर्थिकानां भावना । २. देगे-का० ( सूत्र-‘इ’ २७ ) सं०-६ परि०,  
पृ० ४६ दरभङ्गा । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ६ ) । ४. भो० पा०—उत्पादादयोऽन्ये ।  
५. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ४३ ) ।



तस्मात् तथागतो महाकारुणिको लोकस्योत्त्रासपदपरिहारार्थं व्यवहार-  
वशाद् उक्तवान्, उत्पद्यते निरुध्यते चेति न चात्र कस्यचिद्  
धर्मस्योत्पादः” इति । आर्यबुद्धसङ्गीतौ<sup>१</sup> चोक्तम्—“कतमा योनिशः पृच्छा,  
कतमा योनिः ? आह अनुत्पादो योनिः, तस्य पृच्छा योनिशः पृच्छा” ।  
पुनरत्रैवोक्तम्<sup>२</sup>—“चकारमुखाः<sup>३</sup> सर्वधर्माश्च्युत्युत्पत्तिविगताः । अभावमुखाः<sup>४</sup>  
सर्वधर्माः, स्वभावशून्यताम् उपादाय” इति । आर्यसत्यद्वयविभागे<sup>५</sup>  
चानुत्पादसमतया सर्वधर्माणां समता भवति । प्रज्ञापारमितायां चोक्तम्<sup>६</sup>—  
“रूपं सुभूते, रूपस्वभावेन शून्यम्, यावद् विज्ञानं विज्ञानस्वभावेन  
शून्यमिति स्वलक्षणशून्यताम् उपादाय” इति । हस्तिकक्ष्ये<sup>७</sup> चोक्तम्—

न कश्चित्लभ्यते भावो यस्योत्पादस्य संभवः ।

10

असंभवेषु धर्मेषु बालः सम्भवमिच्छति ॥ इति ।

पितापुत्रसमागमे<sup>८</sup> चोक्तम्—“सर्व एते धर्माः सर्वे समास्त्रैकाल्य-  
समतया । अतीतेऽध्वनि सर्वधर्माः स्वभावरहिता यावत् प्रत्युत्पन्नेऽध्वनि”  
इति । एवं तावद् आगततः प्रत्यवेक्षणीयम् । युक्त्या हि स्थिरीकृतस्या-  
गमार्थस्यान्यैरपोहितुम् अशक्यत्वात् । अतो युक्त्यापि<sup>९</sup> प्रत्यवेक्षणीयम् ।

15

तत्र संक्षेपतो युक्तिरुच्यते । उत्पादो भावानामहेतुको वा स्यात्  
सहेतुको वा । न तावद् अहेतुकः कादाचित्कत्वदर्शनात् । कारणानपेक्षा  
हि विशेषाभावाद् उत्पादकालवत् सदा सर्वत्रैव च भावाः किं न भवेयुः ।  
अभावकालाद् अविशेषाद् वा उत्पादकालेऽपि नैव भवेयुः । एवं तावन्न  
निर्हेतुको युक्तः । नापि सहेतुकः । तथा हि यस्तावदोश्वरादिस्तीर्थिकै-  
नित्यो हेतुः कल्पितस्ततो भावा न जायन्ते क्रमेणोत्पाददर्शनात् । न

20

१. देगे-का० ( सूत्र-‘ज’ २२२ ) । २. देगे-का० ( सूत्र-‘ज’ २०२ ) । ३. सं०  
दुब्धी-पाठे ‘अकारमुखाः’ । ४. भो० पा०-स्वभावमुखाः सर्वधर्माः । ५. देगे-का० ( सूत्र-‘म’  
२४६ ) । ६. प्रज्ञापारमितायां चोक्तम् ..... ? । ७. देगे-का० ( सूत्र-‘छ’ १०५ ) ।  
८. देगे-का० ( रत्नकूट-‘ड’ १६२ ) । ९. युक्त्यापि-भो० न ।



त्वविकलकारणस्य [फलस्य]<sup>१</sup> क्रमेणोत्पादो युक्तो निरपेक्षत्वात् ।  
 नापीश्वरादेः स्वयं समर्थस्य परापेक्षा । नित्यत्वेन परैरनुपकार्यत्वात् ।  
 अनुपकारिणि चापेक्षाऽयोगात् । अत एवेश्वरादीनां सर्वसामर्थ्यशून्यत्वाद्  
 वन्ध्यापुत्रादिवद् निःस्वभावत्वमेव । अर्थक्रियासमर्थत्वाद् वस्तुनः । तेषां  
 5 क्वचिदपि कार्ये न क्रमेण सामर्थ्यं यथा विचारितम् । नापि यौगपद्येन,  
 तथा हि सर्वकार्यं सकृद् उत्पाद्योत्तरकालेऽपि यद्युत्पत्तिसमर्थ एवासौ तदा  
 पुनरपि समर्थस्वभावानुवृत्तौ पूर्ववत् कार्योत्पत्तिप्रसङ्गः । अननुवृत्तौ वा  
 पूर्वस्वभावपरित्यागाद् अनित्यत्वप्रसङ्गः ।

तस्मान्न नित्यं नाम किञ्चिद् वस्तु विद्यते । अत एवोक्तं  
 10 भगवता<sup>२</sup>—“असत्समारोपः पुनर्महामते ! आकाशनिरोधनिर्वाण [आदि]<sup>३</sup>  
 अकृतकभावाभिनिवेशसमारोपः” इति । तस्मान्न नित्याद् एषामुत्पादो  
 युक्तः । नाप्यनित्यात्तत्रातीतानागतयोरवस्तुत्वान्न तावत्ततो जन्म युक्तम्  
 अहेतुकत्वप्रसङ्गात् । नापि वर्तमानात्, समानासमानकालयोस्तत उत्पादा-  
 योगात् । तथा हि न तावत् समानकालं कारणं स्वभाववत् कार्यस्यापि  
 15 तत्समानकालभावितया निष्पन्नत्वात् । नापि भिन्नकालम्, कालान्तर-  
 व्यवधानेनोत्पादेऽतीतादेरेवोत्पत्तिप्रसङ्गात् । अव्यवधानेनाप्युत्पादे  
 सर्वात्मना यद्यव्यवधानं तदैकस्मिन्नेव क्षणे सर्वक्षणानाम् अनुप्रवेशात्  
 कल्पस्य क्षणमात्रताप्रसङ्गः । यथा परमाणोः सर्वात्मना संयोगे  
 पिण्डस्याणुमात्रताप्रसङ्गः । अर्थैकदेशेन<sup>४</sup>, तदा क्षणस्य सावयवत्वप्रसङ्गः ।  
 20 स्वतोऽपि नोत्पद्यन्ते, निर्हेतुकपक्षेणैवास्य पक्षस्य सङ्गृहीतत्वात्  
 स्वात्मनि च कारित्रविरोधात् । नाप्युभयतः उभयपक्षभाविदोषद्वय-  
 [सङ्ग्रह<sup>५</sup>] प्रसङ्गात् ।

१. भो० पा०—[विकलकारणस्य फलस्य] । २. देगे-का० (सूत्र-‘च’ ८३) सं०-  
 लङ्कावतार-२ परि० पृ० ३१ दरभंगा । ३. भो० पा०—[निर्वाणादि] । ४. भो० पा०—  
 देशस्पृष्ट । ५. भो० पा०—[संग्रहप्रसङ्गात्] ।



तस्मात् परमार्थतोऽनुत्पन्ना एवामी भावाः । संवृत्या तूत्पादस्य विद्यमानत्वान्नागमादिविरोधः । तथा चोक्तं भगवता<sup>१</sup>—

भावा विद्यन्ति संवृत्या परमार्थे न भावकाः ।

निःस्वभावेषु या भ्रान्तिस्तत्सत्यं संवृतिर्भवेत् ॥ इति ।

इयं च युक्तिर्भगवतोऽभिप्रेता शालिस्तम्बादौ । स्वतः परत उभाभ्याम्<sup>५</sup> अहेतोश्च जन्मनिषेधात् ।

अथवा एवं युक्त्या विचारयेत् । द्विविधा भावा रूपिणोऽरूपिणश्च । तत्रापि तावद् रूपिणो घटादयस्तेऽणुशो विभिन्नरूपत्वाद् नैकस्वभावाः । अणूनां पूर्वापरस्थितानां पूर्वादिदिग्भागत्वेन विभिद्यमानानाम् असिद्धावप्यणुसंचयात्मकत्वे नानेकस्वभावो युक्तः, न चैकानेक- 10 स्वभावव्यतिरेकेणापरः कश्चिद् भावस्वभावोऽस्तीति निःस्वभावा एवामी परमार्थतः स्वप्नाद्युपलब्धरूपादिवद् रूपिणो भावाः । एतच्च भगवतैव चोक्तम् आर्यलङ्कावतारे<sup>२</sup>—“गोविषाणं पुनर्महामते, अणुशोऽपि विभिद्यमानं नावतिष्ठते । पुनरप्यणवोऽपि भिद्यमाना अणुत्वलक्षणेन नावतिष्ठन्ते” इति । 15

ये चारूपिणस्तेऽपि तथैव विचार्यमाणा निःस्वभावा एव । तथाहि, बाह्यस्य नीलादेरर्थस्याभावात् सामर्थ्यत एव विज्ञानादयोऽरूपिणः स्कन्धा नीलादिरूपेण प्रतिभासन्त<sup>४</sup> इत्यभ्युपेयम् । उक्तं च भगवता<sup>३</sup>—

“बहिर्धा नास्ति वैरूपं स्वचित्तं दृश्यते बहिः ।” इति ।

ततश्च नीलादिचित्राकारनिर्भासतया ग्राह्यग्राहकाकारनिर्भासतया नैक- 20

१. देगे-का० (सूत्र-‘व’ १७४) सं०-लङ्कावतार-॥१०॥४२६॥ पृ० १३५ दरभङ्गा ।  
दूचीपाठे— भावा जायन्ते संवृत्या परमार्थेऽस्वभावकाः ।

निःस्वभावेषु भावेषु भ्रान्तिः सा संवृतिर्मता ॥

२. देगे० का० (सूत्र-‘व’ ७६) सं०-२ परि०, पृ० २४ दरभङ्गा । ३. पुनः-भो० न ।

४. प्रतिभासन्त-भो० न । ५. देगे-का० (सूत्र-‘व’ १७६) सं०-लङ्कावतार ॥१०॥४२६॥ पृ० १३६, दरभङ्गा ।



स्वभावा अमी युक्ताः । न चैकस्यानेकरूपता युक्तिमती, एकानेक-  
विरोधात् । एकस्य कस्यचित् स्वभावस्यासिद्धावनेकरूपताऽप्ययुक्तिमती,  
एकसमूहरूपत्वाद् अनेकस्य ।

अथवा तत्रालीका एवामी रूपादय आकाराः प्रतिभासन्त  
5 इत्यभ्युपगम्यते, तदा विज्ञानम् अप्यलीकं प्राप्नोति । विज्ञानस्य  
तत्स्वरूपाव्यतिरेकात् । न हि स्वयं प्रकाशमानरूपताव्यतिरेकेणान्यद्  
विज्ञानस्य रूपमस्ति । स्वयं च न निर्भासन्ते रूपादयः । तेषां च  
विज्ञानस्वरूपापन्नानाम् अलीकत्वे सर्वमेव विज्ञानम् अलीकम् अभ्युपेतं  
स्यात् । तस्माद्<sup>१</sup> “मायोपमं च विज्ञानम्” इत्युक्तं भगवता ।

10 तस्माद् एकानेकस्वभावशून्यत्वेन परमार्थतोऽलीका एवामी सर्वभावा  
इति निश्चितमेतत् । अयं चार्थ उक्तो भगवता लङ्कावतारे<sup>२</sup>—

यथैव दर्पणे रूपम् एकत्वान्यत्ववर्जितम् ।

दृश्यते न च तत्रास्ति तथा भावेषु भावता ॥ इति ।

एकत्वान्यत्ववर्जितम्<sup>३</sup> इति, एकत्वान्यत्वरहितम् इत्यर्थः । पुनश्चोक्तम्<sup>४</sup>—

15 बुद्ध्या विविच्यमानानां स्वभावो नावधार्यते ।

अतो निरभिलाप्यास्ते निःस्वभावाश्च दर्शिताः ॥ इति ।

तदेवं चिन्तामय्या प्रज्ञया निश्चित्य भूतमर्थं तस्य प्रत्यक्षीकरणाय  
भावनामयीं प्रज्ञाम् उत्पादयेत् । “बहुश्रुतादिमात्रकेण नार्थः प्रत्यक्षो भवतीति  
निवेदितम् आर्यरत्नमेघादिषु । अनुभवश्च प्रतिपत्तृणाम्, न चापि स्फुटतर-

20 ज्ञानालोकोदयम् अन्तरेण सम्यगावरणतमोऽपहीयते । भावनाबहुलीकार-

१. तस्माद्-भो० न । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १८४ ) सं०-॥ १०।७०.६॥ पृ०  
११४ दरभङ्गा । ३. एकत्वान्यत्ववर्जितम् इति-भो० न । ४. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १६४ )  
सं०-लङ्कावतार ॥२।१७३॥ पृ० ४८, दरभङ्गा । ५. बहु-भो० न ।



तश्चाभूतेऽप्यर्थे स्फुटतरज्ञानम् उत्पद्यते । यथा अशुभादि<sup>१</sup>पृथ्वीकृत्स्नादि-  
समापन्नानां [ ज्ञानोद्भवत्वे ]<sup>२</sup> किम्पुनर्भूते । तथा च भावनायाः  
परिस्फुटज्ञानफलत्वेन साफल्यमुक्तम् आर्यसमाधिराजे<sup>३</sup>—

आरोचयामि प्रतिवेदयामि वो  
यथा यथा बहु च वितर्कयेन्नरः ।

5

तथा तथा भवति तन्निमित्तचित्त—

स्तेहि वितर्केहि तन्निश्चितेहि ॥ इति विस्तरः<sup>४</sup> ।

तस्मात् तत्त्वं साक्षात्कर्तुंकामो<sup>५</sup> भावनायां प्रवर्तते ।

तत्र प्रथमतः तावद् योगिना शमथो निष्पादनीयश्चित्तस्थिरी-  
करणाय । सलिलवच्चञ्चलत्वाच्चित्तस्य, न शमथमाधारमन्तेरण 10  
स्थितिरस्ति । न चासमाहितेन चेतसा यथाभूतं शक्यते ज्ञातुम् । उक्तं हि  
भगवता<sup>६</sup>—“समाहितचित्तो<sup>७</sup> यथाभूतं प्रजानाति” इति । शमथो  
लाभादिकामनानिरपेक्षस्य सम्यक्प्रवृत्तौ<sup>८</sup> स्थिरस्य दुःखाद्यधिवासनशीलस्या-  
रब्धवीर्यस्य शीघ्रतरं सम्पद्यते । अत एव आर्यसंधिनिर्मोचनादौ दानादय  
उत्तरोत्तरत्वेन वर्णिताः ।

15

तदेवं शीलादिशमथसम्भारेषु स्थितो मनोऽनुकूलदेशे सर्वबुद्ध-  
बोधिसत्त्वेषु प्रणामादिकं कृत्वा पापदेशनां पुण्यानुमोदनां विधाय  
सकलजगदभ्युद्धरणाशयो महाकरुणाम् एवाभिमुखीकृत्य कायम् ऋजुं  
प्रणिधाय सुखासनोपविष्टः पर्यङ्कमाभुज्य समाधिमभिनिष्पादयेत् ।

तत्र प्रथमं तावद् यद् वस्तु विचारयितव्यं यावता प्रकारेण 20  
सङ्क्षेपतः सकलवस्तुसङ्ग्रहो भवति तत्र चित्तं बध्नीयात् । सङ्क्षेप्तं

१. अशुभादि—भो० न । २. भो० पा०—[ज्ञानोद्भवत्वे] । ३. देगे—का० (सूत्र—‘द’ १३)  
सं०—॥४॥१६॥ पृ० २१, दरभङ्गा । ४. भो० पा०—इत्यादि । ५. कामो—भो० न । ६. देगे—  
का० (आर्यधर्मसङ्गीतिसूत्र—‘श’ ५२) । ७. चित्तो—भो० न । ८. भो० पा०—शीलसम्यक्स्थित ।



पुनर्वस्तु रूप्यरूपिभेदेन द्विधा भवति । एतच्चादिकर्मिकस्य विक्षेपदोष-  
परिहारार्थं संक्षिप्तं तावद् युक्तम् आलम्बयितुम् । यदा तु जितमनस्कारो  
भवति तदा स्कन्धधात्वादिभेदेन विशोध्य<sup>१</sup> विस्तरशोऽप्यालम्बत  
एव । तथा सन्धिनिर्मोचनादौ योगिनाम् अष्टादशप्रकारशून्यतालम्बनादि-  
5 भेदेन नाना<sup>२</sup>प्रकारम् आलम्बनम् उक्तम् ।

अत्रैव भगवता सत्त्वानुग्रहाद् रूप्यरूप्यादिभेदेन संक्षेपमध्य-  
विस्तारैः वस्तुभेदोऽभिधर्मादौ निर्दिष्टः । तच्च वस्तु अध्या<sup>३</sup>रोपाप-  
वादपरिहाराय स्कन्धधात्वादिसङ्ग्रहतो गणयेत् । ततो निश्चित्य सर्वं  
वस्तुसङ्ग्रहं तत्रैव पुनश्चित्तं प्रबन्धेन प्रेरयेत् ।

10 यदा त्वन्तरा रागादिना चित्तं बहिर्विक्षिपेत् तदावगम्य विक्षेपताम्  
अशुभादिभावनया विक्षेपम् उपशाम्य पुनस्तत्रैवोपर्युपरि चित्तं प्रेरयेत् ।  
अशुभादिभावनाक्रमस्तु ग्रन्थविस्तर<sup>४</sup>भयान्न लिखितः । यदा तु चित्तं<sup>५</sup>  
तत्रानभिरतं पश्येत्, तदा समाधेर्गुणदर्शनतोऽभिरतिं तत्र भावयेत् ।  
विक्षेपदोषदर्शनाद् अरतिं प्रशमयेत् । अथ यदा स्त्यानमिद्धाभिभवाद्  
15 आलम्बनग्रहणाप्रकटतयालीनं चित्तं भवति तदा लोकसंज्ञाभावनया  
प्रामोद्यवस्तुबुद्धादिगुणमनसिकारात् [वा<sup>६</sup>] लयम् उपशाम्य पुनस्तदेवालम्बनं  
वृद्धतरं गृह्णीयात् ।

अथ यदा पूर्वहसितरमिताद्यनुस्मरतोऽन्तरा चित्तम् उद्धतं पश्येत्,  
तदाऽनित्यतादिसंवेग<sup>७</sup>मनसिकाराद् औद्धत्यं प्रशमयेत् । ततः पुनस्तत्रैवा-  
20 लम्बने चित्तस्यानभिसंस्कारवाहितायां यत्नं कुर्वीत । अथ यदा  
लयौद्धत्याभ्यां विविक्ततया समप्रवृत्तं स्वरसवाहचित्तं पश्येत् तदाभोग-

१. विशोध्य-भो० न । २. नाना-भो० न । ३. अध्या-भो० न । ४. भो० पा०-  
अक्षरबाहुल्य । ५. चित्तं-भो० न । ६. भो० पा०-[मनसिकारात् वा लयं] । ७. भो०  
पा०-संवेगवस्तु ।



शिथिलीकरणाद् उपेक्षते । यदा तु समप्रवृत्ते सत्याभोगः क्रियते, तदा चित्तं विक्षिपेत् ।

यदा तु तत्रालम्बनेऽनभिसंस्कारवाहि यावदिच्छं चित्तं प्रवृत्तं भवति, तदा शमथो निष्पन्नो वेदितव्यः । एतच्च सर्वशमथानां सामान्य-  
लक्षणम्, चित्तैकाग्रतामात्रस्वभावत्वात् शमथस्य । आलम्बनं तु 5  
तस्यानियतमेव । अयं च शमथमार्गो भगवता<sup>१</sup> आर्यप्रज्ञापारमितादौ<sup>२</sup>  
निर्दिष्टः । यद् आह—“तत्र चित्तं स्थापयति, संस्थापयति, अवस्था-  
पयति, उपस्थापयति, दमयति, शमयति, व्युपशमयति, एकोतीकरोति,  
समादधाति” इति नवपदैः ।

तत्र स्थापयति, आलम्बनेन बध्नाति । संस्थापयति, तत्रैवालम्बने 10  
प्रबन्धेन प्रवर्तयति । अवस्थापयति, विक्षेपम् अवगम्य तं परिहरति ।  
उपस्थापयति, विक्षेपं परिहृत्य उपर्युपरि पुनस्तत्रैवालम्बने स्थापयति ।  
दमयति, रतिमुत्पादयति । शमयति, अरतिं व्युपशमयति विक्षेपदोष-  
दर्शनात् । व्युपशमयति, स्त्यानमिद्धादीन् व्युत्थितान् व्युपशमयति ।  
एकोतीकरोति, आलम्बने<sup>३</sup>ऽनभिसंस्कारवाहितायां यत्नं करोति । 15  
समादधाति, समप्राप्तं चित्तम् उपेक्षते समन्वाहरतीत्यर्थः । एष चैषां  
पदानाम् अर्थः पूर्वाचार्यैः मैत्रेयेण च व्याख्यातः ।

संक्षेपेण सर्वस्यैव समाधेः षड् दोषा भवन्ति । कौसीद्यम् आलम्बन-  
संप्रमोषः, लयौद्धत्यम्, अनाभोगः, आभोगतेति । तेषां प्रतिपक्षेणाद्यौ  
प्रहाणसंस्कारा भावनीयाः । तद् यथा—श्रद्धा, छन्दः, व्यायामः, प्रश्रद्धिः, 20  
स्मृतिः, सम्प्रजन्यम्, चेतना, उपेक्षा चेति । तत्राद्याश्चत्वारः कौसीद्यस्य  
प्रतिपक्षाः । तथाहि—समाधेर्गुणेष्वभिसम्प्रत्ययलक्षणया श्रद्धया तत्र योगिनोऽ-  
भिलाष उत्पद्यते । ततोऽभिलाषाद् वीर्यमारभेत । तद्वीर्यबलेन कायचित्त-



कर्मण्यताम् आसादयति । ततः प्रश्रब्धकायचेतसः कौसीद्यम् आवर्तते ।  
 अतः श्रद्धादयः कौसीद्यप्रहाणाय भावनीयाः । स्मृतिरालम्बनसम्प्रमोषस्य  
 प्रतिपक्षः । सम्प्रजन्यं लयौद्धत्ययोः प्रतिपक्षः । तेन लयौद्धत्ययोः सम्यगुप-  
 लक्षणात् । लयौद्धत्याप्रशमनकाले त्वनाभोगदोषः तत्प्रतिपक्षेण च चेतना  
 5 भावनीया । लयौद्धत्यप्रशमे सति यदा चित्तं प्रशमवाहि तदाऽऽभोगदोषः,  
 तत्प्रतिपक्षस्तदानीमुपेक्षा भावनीया ।

एभिरष्टाभिः प्रहाणसंस्कारैः समन्वागतः समाधिः परमकर्मण्यो  
 भवति । ऋद्ध्यादीन् गुणान् निष्पादयति । अत एवोक्तं सूत्रे<sup>१</sup>—“[ अष्ट ]<sup>२</sup>  
 प्रहाण [ संस्कार ]<sup>३</sup> समन्वागतः ऋद्धिपादं भावयति” इति । एषा च  
 10 चित्तैकाग्रता उत्तरोत्तरकर्मण्यतासम्प्रयोगाद् आलम्बनादिगुणविशेष-  
 योगाच्च ध्यानारूपिसमापत्तिः विमोक्षादिव्यपदेशं लभते ।

तथा हि यदोपेक्षावेदनासम्प्रयुक्ता सवितर्कसविचारा सा भवति,  
 तदाऽनागम्या उच्यते [ प्रथमध्यानप्रयोगचित्तत्वात् ]<sup>४</sup> । यदा च  
 कामतृष्णया [ पापधर्मैश्च ]<sup>५</sup> विविक्ता भवति [ वितर्कविचार ]<sup>६</sup>  
 15 प्रीतिसुखाध्यात्मसम्प्रसादैः<sup>७</sup> सम्प्रयुक्ता भवति, तदा प्रथमं ध्यानम्  
 उच्यते । अत एव प्रथमध्यानं वितर्कमात्ररहितं ध्यानान्तरमुच्यते । यदा  
 वितर्कविचाररहिता प्रथमध्यानभूमितृष्णया विविक्ता च भवति ।  
 प्रीतिसुखाध्यात्मसम्प्रसादैः सम्प्रयुक्ता भवति, तदा द्वितीयं ध्यानमुच्यते ।  
 यदा तु द्वितीयध्यानभूमितृष्णया विविक्ता भवति, सुखोपेक्षास्मृतिसम्प्रजन्य-  
 20 सम्प्रयुक्ता भवति, तदा तृतीयं ध्यानम् उच्यते । यदा तृतीयध्यानभूमि-  
 तृष्णया विविक्ता भवति । अदुःखासुखा उपेक्षास्मृत्यभिसम्प्रयुक्ता  
 भवति, तदा चतुर्थं ध्यानमुच्यते । एवम् अरूप्यसमापत्तिविमोक्षाभिभवायत-  
 नादिष्वालम्बनाकारादिभेदेन योज्यम् ।

१. उक्तं सूत्रे.....? । २. भो० पा०—[ अष्ट प्रहाण ] । ३. भो० पा०—  
 [ संस्कारसमन्वागतः ] । ४. भो० पा०—[ प्रथमध्यानप्रयोगचित्तत्वात् ] । ५. भो० पा०—  
 [ पापधर्मैश्च ] । ६. भो० पा०—[ वितर्कविचार ] । ७. अध्यात्मसम्प्रसादैः—भो० न ।



तदेवमालम्बने चित्तं स्थिरीकृत्य प्रज्ञया विवेचयेत् । यतो ज्ञानालो-  
कोत्पादात् सम्मोहबीजस्यात्यन्तप्रहाणं भवति । अन्यथा हि तीर्थिकानामिव  
समाधिमात्रेण क्लेशप्रहाणं न स्यात् । यथोक्तं सूत्रे<sup>१</sup>—

किञ्चापि भावयेत् समाधिमेतं  
न चो विभावेय्य<sup>३</sup> सा आत्मसंज्ञाम् । 5  
पुनः प्रकुप्यति किलेशु तस्य  
यथोद्वेगस्येह समाधिभावना ॥ इति ।

तत्रायम् आर्यलङ्कावतारे<sup>४</sup> संक्षेपात् प्रज्ञाभावनाक्रमो निर्दिष्टः—

चित्तमात्रं समारुह्य बाह्यमर्थं न कल्पयेत् ।  
तथतालम्बने स्थित्वा चित्तमात्रमतिक्रमेत् ॥ 10  
चित्तमात्रमतिक्रम्य निराभासमतिक्रमेत् ।  
निराभासस्थितो योगी महायानं स पश्यति ॥  
अनाभोगगतिः शान्ता प्रणिधानैर्विशोधिता ।  
ज्ञानं निरात्मकं श्रेष्ठं निराभासे न पश्यति ॥ इति ।

तत्रायमर्थः—प्रथमं योगी ये रूपिणो धर्मा बाह्यार्थतया परैः परिकल्पि- 15  
तास्तेषु तावद् विचारयेत् । किमेते विज्ञानाद् अन्ये, आहोस्विद्  
विज्ञानमेवैतत् तथा प्रतिभासते, यथा स्वप्नावस्थायामिति<sup>५</sup> । तत्र  
विज्ञानाद् बहिः परमाणुशो विचारयेत् । परमाणुंश्च भागशः प्रत्यवेक्ष-  
माणो योगी तान् अर्थान् समनुपश्यति । तस्यासमनुपश्यत एवं भवति  
चित्तमात्रमेवैतत् सर्वं न पुनर्बाह्योऽर्थो विपद्यते । तदेवम्— 20

१. देगे-का० ( सूत्र-‘द’ २७ ) सं०-समाधिराजसूत्र-॥६॥३६॥ पु० ४६ दरभङ्गा ।  
२. दूचीपाठे-न वापि भावयेत् सा आत्मसंज्ञा । ३. विभावेय्य-वि+भावेय्य = नाशोऽभावो  
वा । ४. देगे-का ( सूत्रे-‘व’ १६८ ) सं०-॥१०॥२४६-८॥, पु० १२४ दरभङ्गा । ५. भो०  
पा०-स्वप्नावस्थायामिति विचारयेत् ।



“चित्तमात्रं समारुह्य बाह्यमर्थं न कल्पयेत् ।”

रूपिधर्मविकल्पास्त्यजेद् इत्यर्थः ।

तेषाम् उपलब्धिलक्षणप्राप्तानां विचारयेद् अनुपलब्धेः । एवं रूपिणो धर्मान् विभाव्यारूपिणो विभावयेत् । तत्र यच्चित्तमात्रं तदप्यसति  
5 ग्राह्ये ग्राहको न युक्तो ग्राहकस्य ग्राह्यापेक्षत्वाद् । ततश्चित्तं ग्राह्यग्राहक-  
विविक्तम् अद्वयमेव चित्तमिति<sup>१</sup> विचारयेद् अद्वयलक्षणे-

“तथतालम्बने स्थित्वा तदपि चित्तमात्रम् अतिक्रमेत् ।”

ग्राहकमाकारमतिक्रमेत् । द्वयनिराभास एव<sup>२</sup> अद्वयज्ञाने तिष्ठेदित्यर्थः ।

एवं चित्तमात्रमतिक्रम्य तदपि<sup>३</sup> द्वयनिराभासं<sup>४</sup> यज्ज्ञानं तदति-  
10 क्रमेत् । स्वतः परतो भावानां जन्मानुपपत्तेः ग्राह्यग्राहकयोश्चालीकत्वे  
तदव्यतिरेकात् तस्यापि सत्यत्वमयुक्तमिति विचारयेत् । तत्राप्यद्वयज्ञाने  
वस्तुत्वाभिनिवेशं त्यजेत्, अद्वयज्ञाननिराभास एव ज्ञाने तिष्ठेदित्यर्थः ।  
एवं सति सर्वधर्मनिःस्वभावताप्रतिपत्तौ स्थितो भवति । तत्र स्थितस्य  
परमतत्त्वप्रवेशात् निर्विकल्पसमाधिप्रवेशः ।

15 तथा चाद्वयज्ञाननिराभासे ज्ञाने यदा स्थितो योगी तदा  
परमतत्त्वे<sup>५</sup> स्थितत्वात्, महायानं स पश्यति । एतदेव तत् महायानम्  
उच्यते यत् परमतत्त्वदर्शनम् । एतदेव तत् परमतत्त्वदर्शनं यत् सर्वधर्मान्  
प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयतः सम्यग्ज्ञानावलोके सत्यदर्शनम् ।<sup>६</sup> तथा चोक्तं  
सूत्रे०-“कतमं परमार्थदर्शनम् ? सर्वधर्माणाम् अदर्शनम् ।” इति ।

20 अत्रेदृशमेवाददर्शनमभिप्रेतं न तु निमीलिताक्षजात्यन्धानामिव  
प्रत्ययवैकल्याद् अमनसिकारतो वा यददर्शनम् ।

१. चित्तमिति-भो० न । २. एव-भो० न । ३. तदपि-भो० न । ४. भो० पा०-  
निराभासं ज्ञानम् अतिक्रमेत् । ५. भो० पा०-दर्शनं मार्गं । ६. भो० पा०-किञ्चिद्  
अदर्शनम् । ७. देगे-का० (सूत्र-‘ब’ ब्रह्मविशेषचिन्तिपरिपृच्छा पृ० ६१) ।



ततो भावाभिनिवेशादिविपर्यासदासनाया अप्रहीणत्वाद्  
 असंज्ञिसमापत्त्यादिव्युत्थितस्येव पुनरपि भावाभिनिवेशमूलस्य रागादि-  
 क्लेशगणस्योत्पत्तेरमुक्त एव योगी भवेत् । भावाभिनिवेशमूलो रागादिः  
 आर्यसत्यद्वयनिर्देशादौ<sup>१</sup> वर्णितः । यत्पुनरुक्तम् अविकल्पप्रवेशधारण्यम्<sup>२</sup>—  
 “अमनसिकारतो रूपादिनिमित्तं वर्जयति” इति । तत्रापि प्रज्ञया निरूपयतो<sup>३</sup>  
 योऽनुपलम्भः स तत्रामनसिकारोऽभिप्रेतो न मनसिकाराभावमात्रम् । न  
 ह्यसंज्ञिसमापत्त्यादिरिव अनादिकालिको रूपाद्यभिनिवेशो मनसिकार-  
 परिवर्जनमात्रात् प्रहीयते ।

संशयाप्रहाणे तु न पूर्वोपलब्धेषु च रूपादिष्वभिनिवेशमनसिकार-  
 परिवर्जनं शक्यं कर्तुम् अग्न्यपरिवर्जने दाहापरिवर्जनवत् । तथामी<sup>४</sup>  
 रूपादिमिथ्याविकल्पाः कण्टकादिवदुत्कील्य न हस्तेन चेतसोऽपनेतव्याः ।  
 किं तर्हि<sup>५</sup> संशयबीजापगमात् । तच्च संशयबीजं योगिनः समाध्यालोके  
 सति प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयतस्तेषां रूपादीनां पूर्वोपलब्धानाम् उपलब्धिलक्षण-  
 प्राप्तानाम् अनुपलम्भाद्, रज्जोः सर्पज्ञानवद् अपगच्छति नान्यथा । तथा<sup>६</sup>  
 संशयबीजापगमाद् रूपादिनिमित्तमनसिकारः शक्यते वर्जयितुं नान्यथा ।<sup>७</sup>  
 अन्यथा ह्यसति समाध्यालोके प्रज्ञाचक्षुषाप्यनवलोके यथा अन्धकूपावस्थित-  
 पुरुषस्यावचरकगतघाटादिष्विव योगिनो रूपादिष्वस्तित्वसंशयो नैव  
 निवर्तेत । तदनिवृत्त्या चा<sup>८</sup>प्रहीणतिमिरदोषस्येव योऽयुक्तोऽलीक<sup>९</sup>रूपा-  
 द्यभिनिवेशः प्रवर्तेत न केनापि निवर्त्येत ।

तस्मात् समाधिहस्तेन मनः सन्धाय सूक्ष्मतरप्रज्ञाशस्त्रेण तत्र<sup>१०</sup>  
 चेतसि रूपादिमिथ्याविकल्पबीजम्<sup>११</sup> उद्धरेत् । एवम् सत्युत्खातमूला इव

१. आदौ-भो० न । २. देगे-का० ( सूत्र-‘ष’ २ ) । ३. किं तर्हि-भो० न । ४. भो०  
 पा०-तदा । ५. भो० पा०-चक्षुरप्रहीणतिमिर । ६. अलीक-भो० न । ७. भो०  
 पा०-बीजरोग ।



तरवो भूर्मेर्निर्मूलतया मिथ्याविकल्पाः पुनश्चेतसि न विरोहन्ति । अत एवावरणप्रहाणाय शमथविपश्यनायुगनद्धवाही मार्गो भगवता निर्दिष्टः, तयोः अविकल्पसम्यग्ज्ञाने हेतुत्वात् । तथा चोक्तम्—

शीलं प्रतिष्ठाय समाधिलाभाः  
 5 समाधिलाभाच्च हि प्रज्ञाभावना ।  
 प्रज्ञया ज्ञानं भवति विशुद्धं  
 विशुद्धज्ञानस्य हि शीलसम्पत् ॥ इति ।

तथा हि यदा शमथेनालम्बने चित्तं स्थिरीकृतं भवति तदा प्रज्ञया विचारयतः सम्यग्ज्ञानालोक उत्पद्यते, तदान्धकारमिवालोके  
 10 प्रकाशयति आवरणम् अपह्रियते । अत एवानयोश्चक्षुरालोकयोरिव सम्यग्ज्ञानोत्पादं प्रत्यन्योऽन्यानुगुण्येनावस्थितत्वान्नालोकान्धकारवत् परस्परविरोधः । न हि समाधिरन्धकारस्वभावः । किं तर्हि चित्तैकाग्रता-लक्षणः । स च समाहितो यथाभूतं प्रजानातीति वचनादेकान्तेन प्रज्ञानुकूल एव भवति, न तु विरुद्धस्तस्मात् स्यात् समाहितस्य प्रज्ञया  
 15 निरूपयतः सर्वधर्माणामनुपलम्भः । स एव परमोऽनुपलम्भः । सा च तादृशी योगिनामवस्थानलक्षणा गतिरनाभोगा, ततः परं दृष्टव्यस्याभावात् । शान्तेति भावाभावादविकल्पलक्षणस्य प्रपञ्चस्योपशमात् ।

तथा हि यदा प्रज्ञया निरूपयन् न किञ्चिद् भावस्वभावम् उपलभते योगी, तदाऽस्य नैव भावविकल्पो भवति । अभावविकल्पोऽपि तस्य  
 20 नास्त्येव । यदि भावः कदाचिद् दृष्टो भवति, एवं सति तन्निषेधेनाभावविकल्पः प्रवर्तते । यदा तु कालत्रयेऽपि भावो योगिना प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयता नोपलब्धः, तदा कथं तस्य प्रतिषेधेनाभावविकल्पं कुर्वीत । एवमन्येऽपि विकल्पास्तदा तस्य न समुत्पद्यन्त एव भावाभावविकल्पाभ्यां



सर्वविकल्पस्य व्याप्तत्वात् । व्यापकाभावे च व्याप्यस्यासम्भवात् । अयमसौ परमनिर्विकल्पो योगः । तत्र स्थितस्य योगिनः सर्वविकल्पानाम् अस्तंगमात् सम्यक् क्लेशावरणं ज्ञेयावरणं च प्रहीयते । तथा हि क्लेशावरणस्यानुत्पन्नानिरुद्धभावेषु भावादिविपर्ययो मूलं कारणम् आर्यसत्यद्वयनिर्देशादौ वर्णितं भगवता ।

5

अनेन च योगाभ्यासेन सर्वभावादिविकल्पानां प्रहाणात् सकल<sup>१</sup>-भावादिविपर्ययस्याविद्यास्वभावस्य क्लेशावरणमूलस्य प्रहाणम् । ततो मूलोच्छेदात् क्लेशावरणं<sup>२</sup> सम्यक् प्रहीयते । तथा चोक्तं सत्यद्वयनिर्देशे<sup>३</sup>—  
“कथं मञ्जुश्रीः, क्लेशा विनयं गच्छन्ति, कथं क्लेशाः परिज्ञाता भवन्ति ? मञ्जुश्रीराह—परमार्थतोऽत्यन्ताजातानुत्पन्नाभावेषु सर्वधर्मेषु 10 संवृत्यासद्विपर्ययः । तस्माद् असद्विपर्ययात् सङ्कल्पविकल्पः । तस्मात् संकल्पविकल्पाद् अयोनिशो मनसिकारः । तस्माद् अयोनिशो मनसिकाराद् आत्मसमारोपः । तस्माद् आत्मसमारोपाद् दृष्टिपर्युत्थानम् । तस्माद् दृष्टिपर्युत्थानात् क्लेशाः प्रवर्तन्ते । यः पुनः देवपुत्र ! परमार्थतोऽत्यन्ताजातानुत्पन्नाभावान् सर्वधर्मान् 15 प्रजानाति, स परमार्थतोऽविपर्ययस्तः । यश्च परमार्थतोऽविपर्ययस्तः सोऽविकल्पः । यश्चाविकल्पः स योनिशः प्रयुक्तः । यश्च योनिशः प्रयुक्तः तस्यात्मसमारोपो न भवति । यस्यात्मसमारोपो न भवति तस्य दृष्टिपर्युत्थानं न भवति । यावत् परमार्थतो निर्वाणदृष्टिसर्वं<sup>४</sup> दृष्टिपर्युत्थानम् अपि न भवति । तस्यैवम् अनुत्पादविहारिणः क्लेशा अत्यन्तं विनीता 20 द्रष्टव्याः । अयम् उच्यते क्लेशविनयः । यदा, देवपुत्र ! क्लेशान् निराभासेन ज्ञानेन परमार्थतोऽत्यन्तशून्यान् अत्यन्ताभावान् अत्यन्त-निर्निमित्तात्<sup>५</sup> प्रजानाति, तदा देवपुत्र ! क्लेशाः परिज्ञाता भवन्ति । तत्र

१. सकल-भो० न । २. भो० पा०-क्लेशावरणमूल । ३. देगे-का० (सूत्र-‘म’ २५३) ।

४. सर्व-भो० न । ५. ठूची-पा०-अत्यन्तानित्यान् ।



यथापि नाम, देवपुत्र ! य आशीविषस्य गोत्रं प्रजानाति । स तस्याशी-  
विषस्य विषं शमयति । एवमेव देवपुत्र ! य. क्लेशानां गोत्रं प्रजानाति  
तस्य क्लेशाः प्रशाम्यन्ति । देवपुत्र आह—कतमन् मञ्जुश्रीः ! क्लेशानां  
गोत्रम् । आह<sup>१</sup>—यावद् एषा परमार्थतोऽत्यन्ताजातानुत्पन्नाभावेऽपि सर्वधर्मेषु  
5 कल्पना इदं क्लेशानां गोत्रम्” इति विस्तरः ।

भावादिविपर्यासेन च सकलविपर्यासस्य व्याप्तत्वात् । तत्प्रहाणे  
सकलविपर्यासप्रहाणाद् ज्ञेयावरणम् अप्यनेन सम्यक् प्रहीयते, विपर्यास-  
लक्षणत्वाद् आवरणस्य । ज्ञेयावरणे च प्रहीणे प्रतिबन्धाभावाद्  
रविकिरणवद् अपगतमेघाद्यावरणे<sup>२</sup> नभसि सर्वत्राव्याहतो योगि<sup>३</sup> प्रत्यक्षो  
10 ज्ञानालोकः प्रवर्तते । तथा हि वस्तुस्वभावप्रकाशरूपं विज्ञानम् । तच्च  
संनिहितम् अपि वस्तु प्रतिबन्धसद्भावान्न प्रकाशयति । प्रतिबन्धाभावे  
तु सति, अचिन्त्यशक्तिविशेषलाभात् किमिति सकलम् एव वस्तु यथावद्  
न प्रकाशयेत् । अतः संवृतिपरमार्थरूपेण सकलस्य वस्तुनो यथावत्  
परिज्ञानात् सर्वज्ञत्वम् अवाप्यते । अतोऽयम् एवावरणप्रहाणो सर्वज्ञत्वाधि-  
15 गमे च परमो मार्गः ।

यस्तु श्रावकादीनां मार्गस्तेन<sup>४</sup> विपर्यासाप्रहाणान् न सम्यग्  
आवरणद्वयं प्रहीयते । तथा चोक्तम् आर्यलङ्कावतारे<sup>५</sup>—“अन्ये तु कारणा-  
धीनान् सर्वधर्मान् दृष्ट्वाऽनिर्वाणेषु<sup>६</sup> निर्वाणम् इति बुद्ध्यो भवन्ति ।  
धर्मनैरात्म्यादर्शनाद् नास्ति महामते ! मोक्ष एषाम् । महामते,  
20 श्रावकयानिकाभिसमयगोत्रस्यानिर्याणि निर्याणबुद्धिः । अत्र महामते,

१. भो० पा०—आह—देवपुत्र ! । २. भो० पा०—मेघरहिते नभसि । ३. योगि—भो० न ।

४. भो० पा०—सर्वविपर्यासि । ५. देवे० का० ( सूत्र—‘व’ ङ० ) सं०—२ परि०, पृ० २७,  
दरभंग । ६. दृष्ट्वा—भो० न ( मूलसूत्रे—‘अन्ये पुनर्महामते कारणाधीनान् सर्वधर्मान्  
दृष्ट्वा निर्वाणगतिबुद्ध्यो भवन्ति । पृ० २७ ) ।



कुदृष्टिव्यावर्तनार्थं योगः करणीयः” इति । अत एव चान्येन मार्गेण मोक्षाभावाद् एकम् एव यानम् उक्तं भगवता ।

केवलम् [ बालेन बालस्य ]<sup>१</sup> अवतारणाभिसन्धिना श्रावकादिमार्गो देशितः । तथा हि स्कन्ध<sup>२</sup>मात्रमेवैतत्, न त्वात्मास्तीति<sup>३</sup> भावयन् श्रावकः पुद्गलनैरात्म्यम् अवतरति, विज्ञप्तिमात्रं त्रैधातुकमिति भावयन् विज्ञान- 5 वादिबाह्यार्थनैरात्म्यमवतरति । अनेन त्वस्याद्वयज्ञानस्य नैरात्म्यप्रवेशात् परमतत्त्वप्रविष्टो भवति । न तु विज्ञप्तिमात्रताप्रवेश एव तत्त्वप्रवेशः । यथोक्तं प्राक् । उक्तं च आर्यलोकोत्तरपरिवर्ते<sup>४</sup> “पुनरपरं भो जिनपुत्र ! चित्तमात्रं त्रैधातुकम् अवतरति, तच्च चित्तम् अनन्तमध्यतयाऽवतरति” इति । अन्तयोस्तपादभङ्गलक्षणयोः स्थितिलक्षणस्य च मध्यस्याभावाद् 10 अनन्तमध्यचित्तम् । तस्माद्<sup>५</sup> अद्वयज्ञानप्रवेश एव तत्त्वप्रवेशः ।

सा चेयं योगिनाम् अवस्था<sup>६</sup> कुतो विशोधिता ? इत्याह—

“प्रणिधानैर्विशोधिता” इति । महाकरुणया यत् सर्वसत्त्वार्थकरणाय बोधिसत्त्वेन प्रणिहितम्, ततः प्रणिधानबलाद् उत्तरोत्तरदानादिकुशलाभ्या- सात् सा तथा विशुद्धा जाता, येन सर्वधर्मनिःस्वभावताज्ञानेऽपि सकलसत्त्वा- 15 पेक्षा न व्यावर्तते यावत् संसार एव अननुलिप्ताः संसारदोषैरवतिष्ठन्त इति । कथं पुनरनाभोगा शान्तेत्यत्र कारणमाह—

ज्ञानं निरात्मकं श्रेष्ठं निराभासेन पश्यति । इति ।

यस्माद् यद् अद्वयलक्षणं ज्ञानम् अद्वयवादिनां<sup>७</sup> श्रेष्ठं परमार्थेनाभिमतं तदपि निरात्मकं निःस्वभावम् अद्वयनिराभासेन ज्ञानेन पश्यति योगी । 20 अतोऽपरस्य द्रष्टव्यस्याभावाद् अनाभोगा, सर्वविकल्पाभावात्<sup>८</sup> शान्तेति ।

१. भो० पा०—[ बालेन बालस्य ] । २. भो० पा०—स्कन्धादिधर्ममात्रा । ३. भो० पा०—नैरात्म्यभावना । ४. देगे—का० ( अवतंसक—‘ग’ ४४ परि० पृ० १७८ ) । ५. दूची० पा०—तस्मान्न । ६. भो० पा०—सा अवस्था । ७. भो० पा०—अभ्यन्तरज्ञेयवादिनां । ८. भो० पा०—सर्वविभिन्नविकल्पाभवात् ।



अत्रेदानीं कोऽसौ योगी विद्यते, यः पश्यतीति चेत् ? न परमार्थतः कश्चिद् आत्मादिः स्वतन्त्रोऽस्ति, योगी नापि कश्चित् पश्यति । किन्तु संवृत्या यथा रूपादिविषयाकारज्ञानोत्पादमात्रेण विज्ञानमेव लोके तथा तथा व्यवहियते देवदत्तो यज्ञदत्तं ज्ञानेन पश्यतीति न तु कश्चिद् आत्मा-  
 5 दिरस्ति । तथाऽत्रापि ज्ञानमेवाद्वयज्ञाननिराभासम्<sup>१</sup> उत्पद्यमानं तथा व्यपदिश्यते निराभासेन ज्ञानेन पश्यतीति । न हि सर्वधर्माणां परमार्थतो निःस्वभावत्वेऽपि संवृत्या योगिज्ञानम् अन्यद् वा पृथग्ज्ञानं नेष्टम् । तथा चोक्तम् आर्यसत्यद्वयनिर्देशे<sup>२</sup>—“परमार्थतोऽत्यन्ताभावश्च संवृत्या च मार्गं भावयति” इति ।

10 अन्यथा श्रावकप्रत्येकबुद्धबोधिसत्त्व [ बुद्ध ]<sup>३</sup> पृथग्जनादिव्यवस्था कथं भवेत्, किन्तु यस्य संवृत्याऽपि कारणं नास्ति स संवृत्याऽपि नोत्पद्यते । यथा शशविषाणादि । यस्य तु [ कारणं ]<sup>४</sup> विद्यते स परमार्थतोऽली-  
 कोऽपि समुत्पद्यत एव । यथा—मायाप्रतिबिम्ब [ प्रतिध्वनि ]<sup>५</sup> आदि । न च मायादेः संवृत्या प्रतीत्यसमुत्पादे परमार्थतो वस्तुत्वप्रसङ्गः, तस्य  
 15 विचाराक्षमत्वात् । अतः सर्वमेव मायोपमं जगत् । तत्र यथा क्लेशकर्म-  
 मायावशात् सत्त्वानां जन्ममाया प्रवर्तते, तथा योगिनामपि पुण्यज्ञान-  
 सम्भारमायावशाद् योगिज्ञानमाया प्रवर्तते एव । तथा चोक्तम् आर्यप्रज्ञापारमितायाम्—<sup>६</sup>“कश्चित् श्रावकनिर्मितः, कश्चित् प्रत्येक-  
 बुद्धनिर्मितः, कश्चिद् बोधिसत्त्वनिर्मितः, कश्चित् तथागतनिर्मितः, कश्चित्  
 20 क्लेशनिर्मितः कश्चित् कर्मनिर्मितः । अनेन सुभूते, पर्यायेण सर्व-  
 धर्मा निर्मितोत्पन्नाः” इति । अयं तु विशेषो योगिनां पृथग्जनेभ्यः, ते हि मायाकारवत् तां मायां यथावत् परिज्ञानात् सत्यतो नाभिनिविशन्ते,

१. भो० पा०—निराभासं ज्ञानं । २. देगे० का० (सूत्र—‘म’ २५) । ३. भो० पा०—  
 [ बोधिसत्त्व बुद्ध ] । ४. भो० पा०—[ तु कारणं ] । ५. भो० पा०—[ प्रतिबिम्ब प्रतिध्वनि ] ।  
 ६. देगे—का० ..... ? । ७. भो० पा०—सुभूते, सर्वधर्मा निर्मिताः कश्चित् ।



तेन ते योगिन उच्यन्ते । ये तां बालपृथग्जनवत्<sup>१</sup> कौतूहलं सत्यत्वेना-  
भिनिविष्टास्ते विपरीताभिनिवेशाद् बाला उच्यन्ते इति सर्वमविरुद्धम् ।  
तथा चोक्तम् आर्यधर्मसङ्गीतौ<sup>२</sup>—

मायाकारो यथा कश्चिन्निर्मित-मोक्षमुद्यतः ।

न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ॥

5

त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा सम्बोधिपारगः ।

संनह्यते जगद्धेतोर्जातिपूर्वं जगत् तथा ॥ इति ।

एवमनेन क्रमेण तत्त्वं भावयेत् ।

तत्र च लयौद्धत्यादीन् व्युत्थितान् पूर्ववत् प्रशमयेत् । यदा तु  
सर्वधर्मनिःस्वभावतालम्बने च लयौद्धत्यादिरहितम् अनभिसंस्कारेण प्रवृत्तं 10  
ज्ञानं भवति, तदा शमथविषयनायुगनद्धवाही मार्गो निष्पन्नो भवति ।  
तथा यावत् शक्नोति तावद् अधिमुक्तिबलेन अधिमुक्तिचर्याभूमौ स्थितो  
भावयेत् ।

ततो यथेच्छं पर्यङ्कमाभुज्य व्युत्थाय पुनरेवं चिन्तयेत् । यदि  
नामामी धर्माः परमार्थत एव निःस्वभावा अप्येते संवृत्या स्थिता एव । 15  
तथा चोक्तम् आर्यरत्नमेघे<sup>३</sup>—“कथं बोधिसत्त्वो नैरात्म्यकुशलो भवति ?  
इह कुलपुत्र, बोधिसत्त्वः सम्यक्प्रज्ञया रूपं प्रत्येवेक्षते, वेदनां संज्ञां  
संस्कारान् विज्ञानं प्रत्येवेक्षते । स रूपं प्रत्येवेक्षमाणो रूपस्योत्पादं नोपलभते,  
विरोधं नोपलभते, समुदयं नोपलभते । एवं वेदनायाः संज्ञायाः संस्का-  
राणां विज्ञानस्योत्पादं नोपलभते, निरोधं नोपलभते, समुदयं नोपलभते” । 20  
अयं च परमार्थतोऽनुत्पादविहारिण्याः प्रज्ञाया न पुनर्व्यावहारिकेण  
स्वभावेन” इति विस्तरः । एते च बालबुद्धय एव निःस्वभावेषु भावेषु<sup>४</sup>

१. भो० पा०—बालदर्शकवत् । २. देगे—का० (सूत्र—‘श’ ४३) । ३. देगे—का०  
(सूत्र—‘वा’ २५) । ४. ‘निरोधं नोपलभते समुदयं नोपलभते’—भो० न । ५. भावेषु—भो० न ।



विपरीताभिनिवेशात् संसारे परिभ्रमन्तो विविधानि दुःखानि प्रत्यनु-  
भवन्ति । महाकरुणाम् एव<sup>१</sup> आमुखीकृत्य एवमनुविचिन्तयेत्—तथाऽहं  
करिष्यामि यथा सर्वज्ञत्वं प्राप्य एतेषां धर्मतामवबोधयेयमिति ।

ततः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः पूजास्तोत्रोपहारं कृत्वा आर्यभद्रचर्या-  
5 प्रणिधानमभिनिर्हरेत् । ततः शून्यताकरुणागर्भं एव सकलदानादिपुण्य-  
ज्ञानसम्भारोपाजने प्रवर्तते । तथा चोक्तम् आर्यधर्मसंगीतौ<sup>२</sup>—“यथाभूतदर्शिनो  
बोधिसत्त्वस्य सत्त्वेषु महाकरुणा प्रवर्तते । एवं चास्य भवति—इदं मया  
समाधिमुखं सर्वधर्मयथाभूतदर्शं च सर्वसत्त्वानां निष्पादयितव्यम् । स तथा  
महाकरुणया संचोद्यमानोऽधिशीलम् अधिचित्तम् अधिप्रज्ञं च शिक्षात्रयं<sup>३</sup>  
10 परिपूर्णानुत्तरं सम्यक्सम्बोधिम् अभिसम्बुध्यते” इति ।

अयमेव प्रज्ञोपाययुगनद्धवाही बोधिसत्त्वानां मार्गो यत् परमार्थ-  
दर्शनेऽपि संवृतिं नोच्छेदयन्ति । संवृतिं चानुच्छेदयन्तो महाकरुणा-  
पूर्वङ्गमाविपर्यस्ता एव सत्त्वार्थक्रियासु प्रवर्तन्ते<sup>४</sup> । उक्तम् आर्यरत्नमेघे<sup>५</sup>—  
“कथं बोधिसत्त्वो महायानकुशलो भवति । इह बोधिसत्त्वः सर्वासु  
15 शिक्षासु शिक्षते, शिक्षामार्गं च नोपलभते । यच्च शिक्षते तदपि  
नोपलभते । यश्च शिक्षयते तमपि नोपलभते । न च तद्धेतुकं तन्निदानं  
तत्प्रत्ययम् उच्छेददृष्टौ पतति” इति । आर्यधर्मसंगीतौ<sup>६</sup> चोक्तम्—  
“कतमा बोधिसत्त्वानां प्रतिपत्तिः ? यत् किञ्चिद् बोधिसत्त्वानां कायकर्म,  
यत् किञ्चिद् वाक्कर्म, यत् किञ्चिन् मनःकर्म, तत् सर्वसत्त्वापेक्षकं  
20 प्रवर्तते, महाकरुणापूर्वङ्गमत्वात् । महाकरुणाधिपत्यं सर्वसत्त्वाहित-  
सुखाध्याशयसमुत्थितम्” इति । अयमेवं हिताशयः संज्ञीभवति । सा

१. एव-भो० न । २. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ १२ ) । ३. शिक्षात्रयं-भो० न ।

४. ठूची पाठे—“तत्र यदि नामलोत्तर प्रज्ञा.....इत्यतः.....मार्गोऽनुगन्तव्यः”  
पर्यन्तमत्रैव पठितम् । ५. देगे-का० ( सूत्र-‘वा’ २७ ) । ६. देगे-का० ( सूत्र-‘श’ ७४ ) ।

७. भो० पा०-भगवन् ! कतमा ।



मया प्रतिपत्तिः प्रतिपत्तव्या सर्वसत्त्वानां हितावहा सुखावहा ।  
 तस्य स्कन्धेषु मायावत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च स्कन्धपरित्यागं  
 स्पृहयतीति । धातुष्वाशीविषवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च धातुपरित्यागं  
 स्पृहयतीति । आयतनेषु शून्यग्रामवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न चायतनपरित्यागं  
 स्पृहयतीति । रूपस्य फेनपिण्डवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च तथागतरूपकाय- 5  
 विठपनां जहाति । वेदनाया बुद्बुदवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च तथागत-  
 ध्यानसमाधिसमापत्तिसुखनिष्पादनप्रयोगं नारभते । संज्ञायां मरीचिवत्  
 प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च तथागतज्ञाननिष्पादन<sup>१</sup> अप्रतिपत्तिः । संस्काराणां  
 कदलीवत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च बुद्धधर्मसंस्काराणाम् अप्रतिपत्तिः ।  
 विज्ञानस्य मायावत् प्रत्यवेक्षणा प्रतिपत्तिर्न च ज्ञानपूर्वङ्गमकायवाङ्- 10  
 मनस्कर्मनिष्पादना प्रतिपत्तिः<sup>२</sup> इति विस्तरः । एवम् अपर्यन्तेषु सूत्रान्तेषु  
 प्रज्ञोपायरूपा प्रतिपत्तिरनुगन्तव्या ।

तत्र<sup>३</sup> यदि नाम लोकोत्तरप्रज्ञावस्थायाम् उपायसेवना न सम्भवति,  
 उपायसेवनाकाले तु बोधिसत्त्वस्य मायाकारवद् अविपर्यस्तत्वात् लोकोत्तर-  
 ज्ञानात् प्रयोगपृष्ठभावनी यथावद् वस्तुपरमार्थतत्त्वाभिनिवेशनी प्रज्ञा 15  
 सम्भवत्येवेति, भवत्येव प्रज्ञोपाययुगनद्धवाही मार्गः । आर्याक्षयमति-  
 निर्देशे च ध्यानाक्षयतया प्रज्ञोपाययुगनद्धवाही मार्गोऽनुगन्तव्यः । एवमनेन  
 क्रमेण बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञाम् उपायं च सततं सत्कृत्य दीर्घकालाभ्यासेन  
 भावयतो द्वादशावस्थाविशेषा भवन्ति । ता एवावस्था उत्तरोत्तरगुण-  
 प्रतिष्ठार्थेन भूमयो व्यवस्थाप्यन्ते । अधिमुक्तिचर्याभूमेर्यावद् बुद्धभूमिरिति । 20

तत्र यावत् पुद्गलधर्मनैरात्म्यत्वं न साक्षात्करोति, केवलं दृढतराधि-  
 मुक्तिः । मारादिभिरप्यभेद्यो यदाधिमुक्तिबलेन<sup>३</sup> तत्त्वं भावयति, तदा

१. दूची० पा०—संज्ञायाम् अप्रतिपत्तिः । २. तत्र यदि नाम लोकोत्तर..... इत्यतः  
 .....मार्गोऽनुगन्तव्यः इत्यन्तं दूचीपाठे किञ्चित्पूर्वमेव पठितम् (द्र०-पृ०-१६४, टि०-४) ।  
 ३. भो० पा०—बलेनेव भावयति ।



दृढाधिमुक्तितोऽधिमुक्तिचर्याभूमिव्यवस्थाप्यते । अस्यामपि<sup>१</sup> भूमौ वर्तमानो बोधिसत्त्वः पृथग्जनोऽपि सर्वबालविपत्तिसमतिक्रान्तोऽसंख्येयसमाधिधारणी-विमोक्षाभिज्ञादिगुणान्वित आर्यरत्नमेघे पठ्यते ।

अस्या एव च मृदुमध्याधिमात्राधिमात्रतरावस्थाचतुष्टयेन चत्वारि  
 5 निर्वेधभागीयानि व्यवस्थाप्यन्ते । तथा हि यदा [ बाह्यार्थं विभावयता ]<sup>२</sup>  
 ईषत्स्पष्टो ज्ञानालोको भवति तदा उष्मगतनामकं निर्वेधभागीयं भवति ।  
 स चात्र महायान आलोकलब्धसमाधिरुच्यते । यदा तु स एव ज्ञानालोको  
 मध्यमस्पष्टो भवति, तदा मूर्धनामकनिर्वेधभागीयं भवति, वृद्धालोकश्च  
 समाधिरुच्यते । यदा तु स्पष्टतरो बाह्यार्थानाभासज्ञानालोको जायते,  
 10 तदा विजृप्तिमात्रावस्थानात् क्षान्तिनामकं निर्वेधभागीयं भवति ।  
 एकदेशप्रविष्टश्च समाधिरुच्यते । ग्राह्याकारानुपलम्भप्रवेशात् । यदा तु  
 ग्राह्यग्राहकाकार<sup>३</sup>रहितम् अद्वयं ज्ञानं<sup>४</sup> विभावयेत् तदाऽग्रधर्माख्यं निर्वेध-  
 भागीयं भवति । आनन्तर्यश्च स समाधिरुच्यते, तदनन्तरमेव  
 तत्त्वप्रवेशात् । अत्र तावद् अधिमुक्तिचर्याभूमिः ।

15 इतरास्तु भूमयः संक्षेपत एकादशाङ्गपरिपूरिता व्यवस्थाप्यन्ते ।  
 तत्र प्रथमा भूमिः प्रथमं पुद्गलधर्मनैरात्म्यतत्त्वाधिगमाङ्गपरिपूरिता  
 व्यवस्थाप्यते । तथा हि यदाऽग्रधर्मानन्तरं प्रथमतः लोकोत्तरं  
 सर्वप्रपञ्चरहितं सर्वधर्मनिःस्वभावतासाक्षात्कारि स्फुटतरं ज्ञानम्  
 उत्पद्यते, तदा बोधिसत्त्वः सम्यक्त्वन्ययाभाव<sup>५</sup>क्रान्तितो दर्शनमार्गोत्पादात्  
 20 प्रथमां भूमिं प्रविष्टो भवति । अत एवास्यां भूमौ प्रथमतोऽनधिगत-  
 तत्त्वाधिगमाद् बोधिसत्त्वः प्रमुदितो<sup>६</sup> भवति । तत एषा भूमिः प्रमुदि-  
 तेत्युच्यते । अत्र च द्वादशोत्तरं दर्शनहेयं क्लेशशतं प्रहीयते ।

१. भो० पा०—अस्यां भूमौ । २. हूची० पा०— सर्वधर्मनैरात्म्यं भावयता । ३. भो०  
 पा०—ग्रहणाकार । ४. भो० पा०—ज्ञानमपि । ५. हूविपाठे—न्यामाव । ६. भो० पा०—प्रमुदिता  
 भूमिर्भवति ।



शेषास्तु भूमयो भावनामार्गस्वभावाः । तासु भावनाहेयास्त्रैधातुकाः षोडश क्लेशाः प्रहीयन्ते । अस्यां च भूमौ बोधिसत्त्वस्य धर्मधातुसमुदागमता-प्रबोधात् स्वार्थं इव परार्थं प्रवर्तनाद् दानपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । स च बोधिसत्त्वः समधिगततत्त्वोऽपि<sup>१</sup> वा यावन्न शक्नोति सूक्ष्मापत्तिस्खलितेषु सम्प्रजन्यविहारी भवितुं तावत् प्रथमा भूमिः । यदा तु शक्नोति, 5 तदास्याङ्गस्य परिपूरितो द्वितीया भूमिव्यवस्थाप्यते । अत एवास्यां भूमौ सूक्ष्मापत्तिस्खलितसमुदाचारात् शीलपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । सर्वदौर्शील्यमलापगमाद् इयं भूमिर्विमलेत्युच्यते ।

स सूक्ष्मापत्तिस्खलितेषु सम्प्रजन्यविहारी भवति । यावन्न शक्नोति सकललौकिकं समाधिं समापत्तुं यथाश्रुतं चार्थम् आधत्तुं तावद् द्वितीयैव 10 भूमिः । यदा शक्नोति, तदा तस्याङ्गस्य परिपूरितस्तृतीया भूमिव्यवस्थाप्यते । अस्यां च भूमौ बोधिसत्त्वस्य श्रुतधारण्या सर्वलौकिक-समाध्याभिनिर्हारार्थं सर्वदुःखसहनात्, क्षान्तिपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । तेषां समाधीनां लाभाद् इयं भूमिरप्रमाणं लोकोत्तरं ज्ञानावभासं करोतीति प्रभाकरीत्युच्यते ।

स प्रतिलब्धलौकिकसकलसमाधिरपि यावन्न शक्नोति यथाप्रतिलब्धैर्बोधिपक्षैर्धर्मैर्बहुलं विहर्तुं सर्वसमापत्तीनां<sup>२</sup> च चित्तम् उपेक्षितुं तावत् तृतीया भूमिः । यदा तु शक्नोति तदा तस्याङ्गस्य परिपूरितश्चतुर्थी भूमिव्यवस्थाप्यते । अस्यां भूमौ बोधिसत्त्वस्याभीक्षणं काय<sup>३</sup>वाङ्मनोजल्पसमतिक्रमणाय बोधिपक्षैर्धर्मैर्विहरणात्, वीर्यपारमिताऽतिरिक्ततरा 20 भवति । इयं च सकलक्लेशेन्धनदाहसमर्थस्य बोधिपक्षधर्माचिष उद्गतत्वाद् अचिष्मतीत्युच्यते ।

सोऽभीक्षणं बोधिपक्षधर्मविहारी भवति । यावन्न शक्नोति सत्यानि भावयन् संसारानभिमुखं निर्वाणाभिमुखं च चेतो व्यावर्तयितुम् उपाय-

१. भो० पा०-अधिगततत्त्वोऽपि । २. भो० पा०-धर्मसमापत्ति । ३. काय-भो० न ।



संगृहीतान् बोधिपक्षान् धर्मान्<sup>१</sup> भावयितुम्, तावच्चतुर्थी भूमिः । यदा तु शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितः पञ्चमी भूमिर्व्यवस्थाप्यते । अत एवास्याम् इयम् उपायसंगृहीता बोधिपक्षभावना [ परिपूरितेन]<sup>२</sup> सुष्ठु दुःखेन जीयते अभ्यस्यता इति सुदुर्जयेत्युच्यते ।

- 5 अस्यां चार्य<sup>३</sup>सत्याकारभावनाबहुलीकाराद् ध्यानपारमिता अतिरिक्ततरा भवति । उपायसंगृहीतबोधिपक्षबहुलविहारो च भवति । यावद् न शक्नोति संसारप्रवृत्तिप्रत्यवेक्षणान् निर्वित्सहया चित्तसन्तत्याऽनिमित्तविहारं समापत्तुं तावत् पञ्चमी भूमिः । यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितः षष्ठी भूमिर्व्यवस्थाप्यते । अस्यां च बोधिसत्त्वस्य प्रतीत्य-
- 10 समुत्पादभावनाविहारात् प्रज्ञापारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । अत एव प्रज्ञापारमिताया अतिरिक्ततरत्वात् सर्वबुद्धधर्मेषु अभिमुखो<sup>४</sup>ऽस्यां भूमौ वर्तत इति कृत्वा अभिमुखीत्युच्यते ।

- सोऽनिमित्तविहारलाभी भवति । यावन्न शक्नोति निश्छिद्रम् अनिमित्तविहारं समापत्तुम्, तावत् षष्ठी भूमिः । यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितः सप्तमी भूमिर्व्यवस्थाप्यते । अस्यामपि भूमौ बोधिसत्त्वः सर्वनिमित्तं निर्निमित्तेन प्रतिविध्यति निमित्तकृतव्यवहारं च न विरोधयति । अतोऽस्याम् उपायपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । इयं च भूमिरनाभोगमार्गोपश्लेषात् सुष्ठु दूरङ्गमाद् दूरङ्गमा ।
- 15

- स निश्छिद्रानिमित्तविहारी भवति । यावन्न शक्नोत्यनाभोगवाहिनम् अनिमित्तविहारं समापत्तुं तावत् सप्तमी भूमिः । यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितोऽष्टमी भूमिर्व्यवस्थाप्यते । अस्यां च भूमौ अनाभोगेन कुशलपक्षयोगात् प्रणिधानपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । अनिमित्ताभोगाप्रकम्प्यत्वाद् इयम् अचलेत्युच्यते ।
- 20

१. धर्मान्-भो० न । २. भो० पा०-[ परिपूरितेन ] । ३. आर्य-भो० न ।

४. अभिमुखो-भो० न ।



सोज्ज्वलभोगानिमित्तविहारी च भवति । यावन्न शक्नोति पर्याय-  
निरुक्त्यादिप्रभेदैः सर्वाकारसर्वधर्मदेशनायां वशीभवितुं तावद् अष्टमी  
भूमिः । यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितो नवमी भूमिव्य-  
वस्थाप्यते । अस्यां च भूमौ बोधिसत्त्वस्य प्रतिसंविद्-विशेषलाभात्  
प्रज्ञाबलविशेषयोगाद् बलपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । सर्वाकारधर्म- 5  
देशनाकौशलतोऽनवद्यमतिविशेषलाभात् साधुमती भूमिरुच्यते ।

अस्यां च प्रतिसंविच्चतुष्टयलाभी भवति । यावन्न शक्नोति बुद्धक्षेत्र-  
पर्षन्निर्माणादि दर्शयितुं परिपूर्णधर्मसम्भोगं सत्त्वपरिपाकं च कर्तुम्, तावद्  
नवमी भूमिः । यदा तु शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितो दशमी  
भूमिव्यवस्थाप्यते । अस्यां च निर्माणादिना सत्त्वपरिपाचनाय 10  
ज्ञानविशेषयोगाद् बोधिसत्त्वस्य ज्ञानपारमिताऽतिरिक्ततरा भवति । इयं  
च धर्मदेशनामेधैः अनन्तेषु लोकधातुषु धर्मप्रवर्षणाद् धर्ममेघेत्युच्यते ।  
अपरैरपि स्कन्धपरिशुद्ध्यादिव्यवस्थापनैः भूमीनां व्यवस्थापनमस्ति,  
ग्रन्थविस्तरभयान्<sup>१</sup> न लिखितम् ।

स प्रतिलब्ध-निर्माणादिवशितोऽपि यावन् न शक्नोति सर्वस्मिन् ज्ञेये 15  
सर्वाकारम् असक्तम् । अप्रतिहृतं ज्ञानम् उत्पादयितुं तावद् दशमी भूमिः ।  
यदा शक्नोति तदाऽस्याङ्गस्य परिपूरितो बुद्धभूमिव्यवस्थाप्यते । एतच्च  
भूमिव्यवस्थापनम् आर्यसंधिनिर्माणे निर्दिष्टम् । अस्याश्च बुद्धभूमेः  
सर्वाकारसकलसंपत्प्रकर्षपर्यन्तगमनान्नापरम् उत्कृष्टं स्थानान्तरमस्ति  
[ तस्मात् ततः परं नास्ति भूमिव्यवस्था ]<sup>३</sup> इति । 20

अस्याश्च बुद्धभूमेर्गुणपक्षप्रभेदो बुद्धैरपि न शक्यते सर्वाकारं वक्तुम् ।  
तस्या अप्रमेयत्वात्, कथं पुनः अस्मत्सदृशैः । यथोक्तम् आर्यगण्डव्यूह<sup>४</sup>—

१. सर्व-भो० न । २. भो० पा०-अक्षरबाहुल्य । ३. भो० पो०-[ तस्मात् ततः परं  
नास्ति भूमिव्यवस्था इति ] । ४. देगे-का० ( अवतंसक-‘ग’ २६६ ) सं०-॥१॥१७ ॥  
पृ० २१, वरभङ्गा ।



गुणैकदेश-पर्यन्तं । नाधिगच्छेत् स्वयंभुवः ।  
 निरीक्ष्यमाणो<sup>१</sup> बुद्धोऽपि बुद्धधर्मा ह्यचिन्तितः ॥ इति ।  
 एतावत् संक्षेपेण वक्तुं शक्यते । [ स्वपरार्थसम्पत्तिप्रकर्षपर्यन्तगतः,  
 अशेषदोषापगमनिष्ठां प्राप्य भगवान् बुद्धो धर्मकाये स्थित्वा सम्भोग-  
 5 निर्माणकायाभ्याम् अनाभोगरूपेण अशेषजगदर्थं कुर्वन् यावत् संसारं  
 विहरति ।

तस्मात् प्रेक्षावद्भिः सर्वगुणाकरेषु भगवत्सु श्रद्धा उत्पादनीया,  
 तद्गुणपरिसाधनार्थं सर्वप्रकारेण प्रयतितव्यम् । त्रिकायादिविभागस्तु  
 ग्रन्थविस्तरभयान्न लिख्यते ।

10 नयस्यानुसारेण सूत्रस्य चाथ  
 सदुक्त्याऽस्य मार्गस्य जिनपुत्रकाणाम् ।  
 मयानल्पपुण्यं यदाप्तं च तेन  
 परामेतु बुद्धिं जगन्मन्दमाशु ॥  
 भूपतिश्रीदेवराजवचनेन ] कमलशीलेन भावनाक्रमस्य अयं संक्षेपः कृतः ।

भावनाक्रमः प्रथमः समाप्तः ।

१. दूची पाठे-निरीक्ष्यमाणोऽपि ।  
 वचनेन' अंशः संस्कृतेऽनुपलब्धः ।

२. 'स्वपरार्थसम्पत्ति' इत्यतः श्रीदेवराज-



## भावनक्रमो द्वितीयः

नमो मञ्जुश्रिये कुमारभूताय ।

महायानसूत्रनयानुप्रविश्यमानानां भावनाक्रमः संक्षेपतः कथ्यते ।  
इह अतिशीघ्रं सर्वज्ञताप्राप्तुकामेन प्रेक्षावता तत्प्रापक-हेतु-प्रत्ययेभ्योऽ-  
भियोगः करणीयः ।

इत्थमियं सर्वज्ञता तु हेतुं विना भवितुं न युज्यते, सर्वस्यापि सर्वदा 5  
सर्वज्ञताभावप्रसङ्गत्वात् । निरपेक्षभावे तु कुत्रापि प्रतिघो न स्याद्, यतो हि  
सर्वेऽपि सर्वज्ञा एव न भवन्ति । किं तर्हि कस्यचित् कदाचित् किञ्चिन्मात्रं-  
भूतत्वात् सर्वं हि वस्तु हेतुसापेक्षमेव । सर्वज्ञताऽपि कुत्रचित् कदाचित्  
किञ्चित् संभाव्यते । सर्वस्मिन्नपि काले नास्ति, सर्वस्मिन् स्थाने नास्ति,  
सर्वमपि नास्ति, तस्मात् सा तु नियतमेव हेतुप्रत्ययसापेक्षा । तद्धेतुप्रत्य- 10  
येष्वपि अभ्रान्ता अविकलाश्च सेवितव्याः । भ्रान्तहेत्वनुष्ठाने तु अतिदीर्घ-  
कालेनापि न इष्टफल-प्राप्तिः । यथा-शृङ्गात् पयोदोहवत् । सकलहेतुसेवनं  
विनाऽपि न फलोत्पादः । बीजादिषु कस्यचिदपि अभावे अङ्कुरादिफला-  
नुत्पादात् । तस्मात् तत्फलकामेनाभ्रान्तसकलं हेतुप्रत्ययं सेवनीयम् ।

के हेतुप्रत्ययाः सर्वज्ञताफलस्य इति ? उच्यते, मादृशो जात्यन्धसदृश- 15  
स्तान् दर्शयितुं न शक्नोति, तथापि भगवतैवाभिसंबुद्धय विनेयजनेभ्यो यथोक्तं  
तथैव मया भगवद्वचनेनैव कथ्यते । भगवांस्तान् अवोचत्—“गुह्याधिपते !  
“तत् सर्वज्ञज्ञानं करुणामूलं बोधिचित्तहेतुकम् उपायपर्यवसानम्” इति । तस्मात्  
सर्वज्ञतामधिगन्तुकामैः करुणा-बोधिचित्तोपायेषु एतेषु त्रिषु शिक्षितव्यम् ।

करुणया प्रेर्यमाणा बोधिसत्त्वाः सर्वसत्त्वाभ्युद्धारणर्थम् अवश्यं 20  
प्रतिज्ञास्यन्ति । अतः स्वात्मदृष्टिं निराकृत्य अतिदुष्कराविच्छिन्न-



दीर्घकाल-साधितपुण्यज्ञानसम्भारेषु आदरेण प्रवृत्तिः । तत्र प्रविश्य परिपूर्णं पुण्यज्ञानसम्भारम् अवश्यं साधयति । सम्भारपरिनिष्पत्तौ सर्वज्ञता करतलगतवद् भविष्यति । तर्हि सर्वज्ञतामूलं तु करुणाया एव भूतत्वात् सा तु प्रथमतरमेव भावनीया । आर्यधर्मसंगीतिसूत्रे<sup>१</sup>—“न भगवन् बोधिसत्त्वेन  
5 अतिबहुषु धर्मेषु शिक्षितव्यम् । एको धर्मो भगवन् बोधिसत्त्वेन स्वाराधितः सुप्रतिविद्धः कर्तव्यः । तस्य सर्वबुद्धधर्माः करतलगता भवन्ति । कतम एकधर्मः ? यदुत महाकरुणा ।” इति ।

महाकरुणापरिगृहीतत्वाद् भगवन्तो बुद्धाः सकलस्वार्थसम्पत्ति-  
लाभेऽपि सत्त्वधातुपर्यवसानपर्यन्तं तिष्ठन्ति । श्रावकवद् अतिशान्तेऽपि  
10 निर्वाणनगरे न प्रविशन्ति । सत्त्वान् अवलोक्य तच्छान्तनिर्वाणनगरं प्रज्वलदयोगूहवद् दूरं त्यक्तत्वाद् भगवताम् अप्रतिष्ठितनिर्वाणहेतुस्तु सा महाकरुणा एव ।

अत्र स करुणाभावनाक्रमः प्रथमप्रवेशादारभ्य अभिधातव्यः ।  
संप्रति उपेक्षाभावनया सर्वसत्त्वेषु अनुरागं द्वेषं च निरस्य समचित्तता  
15 प्रथमं निष्पादयितव्या ।

सर्वे सत्त्वाः सुखं कामयन्ते, दुःखं तु न कामयन्ते । अनादिमति च संसारे न कश्चित् सत्त्वो यो नाभूत् शतशो मे बन्धुरिति परिचिन्तय-  
तश्चात्र को विशेषः स्यात् ? तर्हि कस्मिंश्चिद् अनुरागः कस्मिंश्चिच्च द्वेषो  
भवेत्, तस्मान् मया सर्वेषु सत्त्वेषु चित्तसमतैव कार्या इति । एवं  
20 मनसिकारेण मध्यस्थपक्षत आरभ्य मित्रे शत्रौ च चित्तसमतामेव भावयेत् । ततः सर्वसत्त्वेषु चित्तसमतां साधयित्वा मैत्रीं भावयेत् । मैत्रीजलेन चित्त-  
संतानं सिंचयित्वा विद्यमानसुवर्णभूमिवत् कृत्वा करुणाबीजवपने सुखेन  
अतिसुविस्तारो भविष्यति । ततश्चित्तसंतानं मैत्र्या वासयित्वा करुणां  
भावयेत् ।

१. देगे-का० ( सूत्र-‘शु’ दृष्ट ) । २. द्रष्टव्यः-शिक्षासमुच्चयः, पृ० १५१ वरभङ्गा ।



सा च करुणा सर्वपीडितसत्त्वदुःखावगमेच्छाकाराऽस्ति । लोकत्रयस्य सर्वसत्त्वानां त्रिविधदुःखतया यथायोगम् अत्यन्तदुःखितत्वात् तदर्थं सर्वसत्त्वेषु सा भावनीया । 'तथा च ये तावन्नारकास्ते विविधचिरन्तनदीर्घकालिक-  
दाहादि-दुःखेषु निमग्ना एव भावतो वर्णिताः । तथा प्रेता अपि प्रायो दुःसहतीव्र-  
क्षुत्तृषदुःखान्गभिसंशोषितमूर्तयो बहुदुःखमनुभवन्ति इति वर्णिताः । तिर्यञ्चोऽपि 5  
परस्परभक्षणक्रोधवर्धाहंसादिभिरनेकविधं दुःखमनुभवन्तो दृश्यन्ते एव । मनुष्या अपि  
कामपर्येषणाकार्पण्याद् अन्योऽन्यद्रोहोपघातकृतं प्रियविप्रयोगाप्रियसंयोगं  
दारिद्र्याद्युत्पन्नम् अप्रमेयं दुःखमनुभवन्तो दृश्यन्ते ।

ये रागादिनाना-संकलेशपर्यवेष्टितचित्ताः, ये च विविधकुदृष्टिगहन-  
निमग्नास्ते सर्वेऽपि दुःखहेतुत्वात् प्रपातस्था इव अतिदुःखिता एव । देवा 10  
अपि सर्वविपरिणामदुःखदुःखिता एव । 'देवा अपि ये कामावचरास्तेऽपि नित्य-  
च्यवनपतनादिभयशोकोपहताः कथं सुखिता नाम ? संस्कारदुःखं तु कर्मकलेशलक्षणं  
हेतुपरतन्त्रस्वभावं प्रतिक्षणभङ्गुरस्वभावलक्षणं च सकलजगति व्याप्तम् ।  
'तस्मात् सकलमेव जगद् दुःखाग्निज्वालान्तरप्रविष्टम् अवेत्य यथा मम दुःखम्  
अप्रियम् अन्येषामपि तादृशम् इति चिन्तयता । अहो बत ! दुःखिता ममैते प्रिय- 15  
सत्त्वास्तु कथं तद्दुःखमुक्ताः स्युरिति स्वात्मदुःखवत् कृत्वा तन्निवारणे-  
च्छाकारया करुणया समाध्यवस्थायां सर्वचर्यासु वापि सर्वदा सर्वसत्त्वान्  
भावयेत् । प्रथमं तावद् मित्रपक्षेषु अनुभूतपूर्वोक्तविविधदुःखेषु अनुपश्यता  
भावनीया ।

ततः सत्त्वसमतयाविशेषमपश्यता 'सर्वे सत्त्वास्तु मे बन्धुभूता एव' 20  
इति परिचिन्तयता मध्यमपक्षेषु भावनीया । 'यदा तत्र मित्रपक्षेष्विव सा करुणा  
तुल्या प्रवृत्ता भवति तदा दशसु दिक्षु सर्वसत्त्वेषु भावयेत् । यदा दुःखितप्रिय-  
शिशोः मातृवत् स्वात्मनोऽतिप्रियं दुःखत उद्धरणेच्छाकारा स्वरसबाहिनीं सर्व-  
सत्त्वेषु समप्रवृत्ता कृपा भवति तदा सा निष्पन्ना भवति, महाकरुणाव्यपदेशं च लभते ।



प्रथमं तावद् मित्रपक्षे कृता मैत्रीभावना सुखसंयोगेच्छाकारा भवति, क्रमशः व्यस्तेषु शत्रुषु चापि भावनीया । तथाऽभ्यस्ता च सा करुणा क्रमशः सकलसत्त्वाभ्युद्धरणेच्छां स्वरसेन एव उत्पादयति ।

अतो मूलकरुणां भावयित्वा बोधिचित्तं भावयेत् । तद् बोधिचित्तं  
5 तु द्विविधम्-संवृतं परमार्थं च । तत्र संवृतं तु करुणया सकलसत्त्वाभ्युद्धरणं प्रतिज्ञाय 'जगद्धिताय बुद्धो भवेयम्' इति, अनुत्तरसम्यक्सम्बोधीच्छाकारः प्रथमश्चित्तोत्पादः । तथापि शीलपरिवर्तप्रदर्शित-विधिवद् बोधिसत्त्वः संवरस्थितान्यविद्वत्सु चित्तमुत्पादयेत् ।

01 तथा संवृतबोधिचित्तमुत्पाद्य परमार्थबोधिचित्तोत्पादार्थं प्रयति-  
10 तव्यम् । तच्च परमार्थगोचरम्, विमलम्, अचलम्, निर्वातप्रदीपप्रवाह-  
वन्निष्कम्पम् । तत्सिद्धिस्तु सततं सत्कृत्य दीर्घकालं शमथविपश्यनायोग-  
भावनाकरणाद् भविष्यति । आर्यसंधिनिर्मोचने<sup>१</sup> यथा "मैत्रेय !  
श्रावकाणां बोधिसत्त्वानां तथागतानां वा येऽपि सर्वेऽपि लौकिकलोकोत्तर-  
कुशलधर्माः शमथविपश्यनाफला वेदितव्या इति ।" तद्द्वयोः सर्वसमाधि-  
15 संगृहीतत्वात् सर्वयोगिभिः सदा अवश्यं शमथविपश्यने सेवनीये । तत्रैव  
आर्यसंधिनिर्मोचने<sup>२</sup> भगवता उक्तम्, तद्यथा—"मया श्रावकाणां बोधि-  
सत्त्वानां तथागतानां विविधसमाधयो दर्शिताः, ते सर्वे शमथविपश्यना-  
संगृहीता वेदितव्याः" इति ।

05 केवलं शमथमात्रभावनया न योगिनाम् आवरणप्रहाणम्, क्लेश-  
20 विक्रान्तिमात्रमेव तावत् । प्रज्ञालोकाभावेऽनुशयहान्यसंभवाद् अनुशय-  
संहारो न भविष्यति । तस्मात् तत्रैव आर्यसंधिनिर्मोचने<sup>३</sup> उक्तम्  
"ध्यानेन हि क्लेशानां विक्रान्तिः । प्रज्ञया तु अनुशयं संप्रतिहन्ति इति" ।

१. देगे-का० ( सूत्र-'ब' ३४ ) । २. देगे-का० ( सूत्र-'ब' ३४ ) । ३. देगे-का०  
( सूत्र-'ब' ४३ ) ।



आर्यसमाधिराजसूत्रे<sup>१</sup>ऽपि—

किं चापि भावेद्य समाधिलोके

न चो विभावेद्य स आत्मसंज्ञाम् ।

पुनः प्रकुप्यन्ति किलेशु तस्य

यथोद्वेकस्येह समाधिभावना ॥

5

नैरात्म्यधर्मान् यदि प्रत्यवेक्षते

तान् प्रत्यवेक्ष्य यदि भावयेत् ।

स हेतु निर्वाणफलस्य प्राप्तये

यो अन्यहेतुर्न स भोति शान्तये ॥ इति उक्तम् ।

बोधिसत्त्वपिटके<sup>२</sup>ऽपि—“ये बोधिसत्त्वपिटकस्य एतद्धर्मपर्यायाश्रवणे, 10  
आर्यविनयधर्मश्रवणं च विना समाधिमात्रेण संतोषग्रहणे तु अहंकारवशाद्  
अभिमाने पतिताः जन्मजरारोगमरणशोकपरिदेवनादुःखदौर्मनस्यकोपा-  
परिमुक्ताः । षड्गतिसंसारापरिमुक्ताः दुःखस्कन्धतोऽपि अपरिमुक्ताः ।  
तान् संधाय तथागतेन एवम् उक्तम्—परस्माद् अनुकूलश्रोता तु जरामरण-  
मुक्तो भविष्यति” इति । 15

तस्मात् सकलावरणं विहाय परिशुद्धज्ञानोद्भवकामेन शमथे स्थित्वा  
प्रज्ञा भावनीया । एवम् आर्यरत्नकूटे<sup>३</sup>ऽपि भाषितम्—

\*शोलं प्रतिष्ठाय समाधिलाभः

समाधिलाभाच्च हि प्रज्ञाभावना ।

प्रज्ञाया ज्ञानं भवति विशुद्धं

विशुद्धज्ञानस्य हि शीलसम्पत् ॥ इति ।

20

आर्यमहायानश्रद्धाभावनासूत्रे<sup>४</sup>ऽपि उक्तम्—“कुलपुत्र ! प्रज्ञायाम् अनु-  
पस्थितौ बोधिसत्त्वानां महायानश्रद्धा महायाने कथमपि उत्पत्स्यते  
( इति ) अहं न वक्ष्यामि । कुलपुत्र ! अनेन पर्यायेणापि एवं बोधि-

१. देगे का० ( सूत्र-‘द’ २७ ) सं०-६ परि० पृ० ४६ दरभंगा । २. देगे का०.....?

३. देगे-का० ( रत्नकूट-‘छ’ १४६ ) । ४. ब्र०-प्र० भा० क्र० । ५. देगे-का० ( सूत्र-‘व’ २१ ) ।



सत्त्वानां या काचिद् महायानश्रद्धा महायाने उत्पत्स्यते सा सर्वा तु अविक्षिप्तचित्तेन धर्मार्थसंचिन्तनात् समुत्पन्ना वेदितव्या ।”

- शमथं विना विपश्यनामात्रेण योगिचित्तं विषयेषु विक्षिप्यते, वायुमध्य-स्थितप्रदीपवच्च स्थिरं न भवति । अतो ज्ञानालोकोऽतिस्फुटो न भवति ।
- 5 तस्माद् उभयं समं सेवितव्यम् । अतः आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्रे<sup>१</sup>ऽपि उक्तम्—
- “श्रावकैस्तु तथागतगोत्रं न दृश्यते । समाधेरधिकत्वात् प्रज्ञायाश्च अल्पत्वात् । बोधिसत्त्वास्तु पश्यन्ति, किन्तु अस्फुटम्, प्रज्ञातिरेकात् समाधेश्चाल्पत्वात् । तथागतस्तु सर्वम् अवलोकयति शमथविपश्यनासमानयुक्तत्वाद्” इति । शमथबलेन च वायुना अक्षोभ्यप्रदीपवद् विकल्पवायुभिरिचितं न कम्पते ।
- 10 विपश्यनया तु सकलकुदृष्टिमलप्रहाणत्वाद् अन्यैरभेद्या । चन्द्रप्रदीप-सूत्रे<sup>२</sup> यथा—

अकम्पियः शमथबलेन भोति शैलोपमो भोति विपश्यनाय ।

इत्युक्तम् । अतः उभयेन योगकरणं स्थितम् ।

- तत्र आदौ संप्रति तेन योगिना सुखं शीघ्रं च शमथ-विपश्यना-
- 15 सिद्धये शमथविपश्यनासम्भारः सेवनीयः । तत्र शमथसंभारः कतमः ? अनुकूलदेशवासः, अल्पेच्छता, सन्तुष्टिः, क्रियाबाहुल्यपरिहारः, शील-विशुद्धिः, इच्छादिविकल्पपरित्यागश्च ।

- तत्र पञ्चगुणयुक्तो हि देशोऽनुकूलो ज्ञातव्यः । वस्त्रभोजनादेः अकृच्छ्रेण प्राप्तित्वात् सुलब्धः, दुर्जनशत्र्वाद्यनवस्थितत्वात् सुस्थानम्, नीरोग-
- 20 भूमित्वात् सुभूमिः, मित्रशीलवत्समदृष्टित्वात् सन्मित्रम्, दिवा बहु-जनापूरितत्वाद् रात्रौ अल्पशब्दत्वाच्च सुयुक्तम् । अल्पेच्छता कतमा ? चीबरादेरौत्कृष्टतमस्य आधिक्यस्य वा अनध्यवसानम् । संतुष्टिः कतमा ?

१. देगे-का०.....? २. देगे-का० ( सूत्र-‘द’ २० ) सं०-समाधिराजसूत्र-७ परि० पृ० ३६ वरमंगा ।



अवरमात्रचीवरादिलाभेन यः सदा सन्तोषः । क्रियाबाहुल्यपरिहारः कतमः ?  
 क्रयविक्रयादिदुष्कर्मपरिहारः, गृहस्थ-प्रव्रजितान्यतमातिसंस्तुतिपरिहारः,  
 ओषधिनिर्माणनक्षत्रगणनादिपरिहारश्च ।

शीलविशुद्धिः कतमा ? संवरद्वयेऽपि प्रकृति-प्रतिक्षेपसावद्यशिक्षा-  
 पदाभङ्गता, प्रमादभङ्गेऽपि शीघ्रातिशीघ्रं पश्चात्तापेन यथाधर्माचरणम् । 5  
 श्रावकसंवरे पाराजिकप्रतिविधानेऽयोग्यं कथनं यदस्ति तस्मिन्नपि  
 पश्चात्तापः, पश्चाच्च अकरण-मनसिकारः । यच्चित्तेन यत्कर्म कृतम्,  
 तच्चित्ते निःस्वभावताप्रतिसंख्यानाद् सर्वधर्मनिःस्वभावताभावनत्वात्  
 तच्छीलविशुद्धिरेव वक्तव्या । तत्तु आर्याजातशत्रुकौकृत्यविनोदनाद्  
 अवबोद्धव्यम् । तस्मात् कौकृत्याभावं कृत्वा भावनायाम् अभियोगः कर्त्तव्यः । 10

कामेष्वपि इह जन्मान्तरे च भाविनो विविधदोषान् मनसिकृत्य तेषु  
 विकल्पः परिहर्त्तव्यः । एतावता संसारभावः प्रियोऽप्रियो वापि तत्सर्वं  
 तु विनाशधर्मि अस्थिरं च । निश्चयेन तत्सर्वस्मिन् मयि च अचिरं वियोगे  
 भाव्ये सति मम तस्मिन् कथम् अध्यवसितादिर्भवेद् इति भावनया  
 सर्वे विकल्पाः परिहर्त्तव्याः । 15

विपश्यना-सम्भारः कतमः ? सत्पुरुषाश्रयः, बहुश्रुतपर्येषणा, योनिशो-  
 मनसिकारश्च । तत्र कीदृशं सत्पुरुषम् आश्रयेद् इति चेत्-यो बहुश्रुतः  
 प्रसन्नवाक्, कारुणिको निर्वित्सहश्च । तत्र बहुश्रुतपर्येष्टिः कतमा ?  
 यत् सादरं भगवद्द्वादशाङ्गधर्मप्रवचननेयार्थनीतार्थातिश्रवणम् । इत्थम्  
 आर्यसंधिनिर्मोचने-“यथेच्छम् आर्याख्यानाश्रवणं हि विपश्यनाविघ्नः” 20  
 इति उक्तम् । तत्रैव “विपश्यना च श्रवणमननाभ्यामुत्पन्नविशुद्धदृष्टिहेतो-  
 र्त्पद्यते ।” इत्युक्तम् । आर्यनारायणपरिपूच्छायाम्<sup>३</sup> अपि-“श्रुतिमति प्रज्ञा  
 प्रादुर्भवति । प्रज्ञावतः क्लेशाः प्रशाम्यन्ति ।” इत्युक्तम् ।

१. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ ३५ ) । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ ३४ ) । ३. देगे-का०  
 ( सूत्र-‘न’ ६२ ) इव सूत्रं ‘आर्यसर्वपुण्यसमुच्चयसमाधिसूत्र’ तोऽभिन्नम् ।



योनिशोमनसिकारः कतमः ? यस्य नीतार्थसूत्रनेयार्थसूत्रादि-  
सुनिर्णयस्तादृशे बोधिसत्त्वे निःशङ्के सति भावनायाम् ऐकान्तिकनिश्चयो  
भविष्यति । अन्यथा संशयान्दोलितयानस्थितस्तु शृङ्गाटकमध्यगत-  
मनुष्यवत् कुत्रापि ऐकान्तिकनिश्चयो न भविष्यति ।

- 5 योगिना तु सदा मत्स्यमांसादि परिहृत्य अप्रतिकूलं भोजनं नियत-  
मात्रकं भोक्तव्यम् । तथा तेन सञ्चितसकलशमथविपश्यनासम्भारेण  
बोधिसत्त्वेन भावनायां प्रवेष्टव्यम् ।

- तत्र प्रथमं तावद् योगो भावनाकाले सर्वम् इतिकरणीयं परिसमाप्य कृतमूत्र-  
पुरीषः कण्टकस्वरादिरहिते मनोज्ञकूले प्रदेशे स्थित्वा मया सर्वसत्त्वा बोधिमण्डे  
10 निष्पादयितव्या इति विनिश्चयन्, सकलजगदभ्युद्धरणाशयो महाकरुणाम् आमुखीकृत्य,  
दशदिगवस्थितान् सर्वबुद्धबोधिसत्त्वान् पञ्चाङ्गेन प्रणिपत्याग्रतो बुद्धबोधिसत्त्वान्  
पटादौ स्थापयित्वा अन्यत्र वा यथावत् तेभ्यश्च यथारुचि पूजास्तवनं कृत्वा स्वपापं  
प्रदेश्य, सकलस्य जगतः पुण्यम् अनुमोद्य, मृदुतरमुखीसने वैरोचनभट्टारकबद्धपर्यङ्केन  
अर्घपर्यङ्केन वा निष्पाद्य नात्युन्मीलिते नातिनिमीलिते नासिकाग्रविन्यस्ते चक्षुषी  
15 कृत्वा, नातिनम्रं नातिस्तब्धम् ऋजुकायं प्रणिधायान्तर्मुखावर्जितस्मृतिरूपविशेत् । ततः  
स्कन्धौ समौ स्थापयेत् । शिरो नोन्नतं नावनतम् एक-पादवै निश्चलं स्थापयितव्यम् । किं  
तर्हि नाभिप्रगुणा नासिका स्थापयितव्या । दन्तोष्ठं मृदु स्थापनीयम् । जिह्वा चोपरि  
दन्तमूले स्थापनीया । आश्वासप्रश्वासास्तु न सशब्दा नापि स्थूला नापि त्वरिताः  
करणीयाः । किं त्वसंलक्ष्यमाणा मन्दं मन्दमनाभोगेन यथा प्रविशेयुर्निगच्छेयुर्वा  
20 तथा करणीयम् ।

- तत्र प्रथमं तावत् शमथो निष्पादयितव्यः, बाह्यविषयविक्षेपशान्तेः  
आन्तरालम्बने सततं स्वरसवाहि प्रीतिप्रसन्नविविचित्तो एव स्थितिस्तु  
शमथ इति उच्यते । तस्यैव शमथस्यालम्बनकाले यस्तत्त्व-विचारः सा  
विपश्यना । आर्यरत्नमेघे<sup>२</sup> यथा—“शमथश्चित्तैकाग्रता । विपश्यना भूतप्रत्यवे-  
25 क्षेति” उक्तम् ।

१. द्र०-तृ० भा० क्र० ।

२. देगे-का० (सूत्र-‘वा’ ६२) ।

३. द्र०-तृ०



आर्यसंघिनिर्मोचनेऽपि<sup>१</sup>—“भगवन् कथं शमथपरिगवेषणं विपश्यना-  
 कौशलं चास्ति ? उच्यते । मैत्रेय ! मया धर्मोपचारो व्यवस्थापितः ।  
 तद्यथा—ये सूत्रगेयव्याकरण-गाथा-उदान-निदान-अवदान-इतिवृत्तक-जातक-  
 वैपुल्य-अद्भुतधर्म-उपदेश-वर्गाः बोधिसत्त्वेभ्य आख्यातास्ते बोधिसत्त्वैः  
 संश्रुत्य संधार्य, पाठमभ्यस्य, मनसा सम्परीक्ष्य, दृष्ट्या सुप्रतिविद्धच स 5  
 एकाकी विविक्तस्थः, अन्तः प्रतिसंलीनः, यथासुचिन्तितान् तानेव धर्मान्  
 मनसिकृत्य, येन चित्तेन मनसिकारस्तच्चित्ताभ्यन्तरं सततं मनसिकारेण  
 मनसिकारः । तथा प्रविश्य तत्र बहुशः स्थितः तस्यां कायप्रस्रब्धिचित्त-  
 प्रस्रब्धिसम्भवश्च योऽस्ति स तु शमथ इति । तर्हि बोधिसत्त्वः शमथ-  
 परिगवेषणं करोति । तेन कायप्रस्रब्धिः, चित्तप्रस्रब्धिश्च । ते प्राप्य 10  
 तत्रैव स्थितः, चित्तविक्षेपं विहाय यथा चिन्तितधर्मः तेषामेव अभ्यन्तरे  
 समाधिगोचरप्रतिबिम्बं प्रत्यवेक्षते, अधिमुच्यते, तादृक् समाधिगोचर-  
 प्रतिबिम्बम्, तज्ज्ञेयार्थे विविच्यते प्रवित्रेचनं परिकल्पनं पर्यवेक्षणं  
 क्षान्तिः, कामो विशिष्टविभागो दर्शनम्, अधिगमश्च योऽस्ति, सा तु  
 विपश्यना इति, तथा च बोधिसत्त्वविपश्यना कौशलम् इत्युक्तम् ।” 15

तत्र शमथाभिनिर्हारकामो योगी प्रथमं तावत् सूत्रगेयादिसकल-  
 प्रवचनं तु तथतापरायणम्, तथताप्राग्भारम्, तथताप्रवणम् इति सर्वं संग्राह्य  
 तत्र चित्तम् उपस्थापयेत् । एतावता कियदाकारेण सर्वधर्मसंग्रहभूते  
 स्कन्धादौ तत्र चित्तम् उपस्थापयेत् । एतावता यथादृष्ट-यथाश्रुतबुद्ध-  
 प्रतिमायां चित्तं स्थापितव्यम् । आर्यसमाधिराजे<sup>२</sup> यथा— 20

सुवर्णवर्णेन

समुच्छ्रयेण

समन्तप्रासादिकु लोकनाथः ।

यस्यात्र आलम्बनि चित्तु वर्तते

समाहितः सोच्यति बोधिसत्त्व ॥ इति उक्तम् ।

१. देगे-का० ( सूत्र 'च' २६ । २. देगे-का० ( सूत्र-'द' १३ ) सं०-॥ ४११३ ॥



तथा यत्र इच्छालम्बनं तस्मिन् चित्तं स्थापयित्वा तत्रैव उपर्युपरि सततं चित्तं स्थापयेत् । तत्र उपस्थाप्य चित्तम् ईदृशमेवं परीक्षेत । 'किम् आलम्बनं सुगृह्णाति, लीयते वा अथवा बाह्यविषयव्यसेकाद् विक्षिप्यते' इति परीक्षितव्यम् । तत्र यदि स्त्यानमिद्धाभिभवाद् चित्तं लीनं वा लयाभिशङ्का 5 दर्शने तत्काले प्रमोद्य वस्तुनि बुद्धप्रतिमादौ वा अलोकसंज्ञामनसिकारः कर्तव्यः । अथ लयम् उपशाम्य यथापि तत्रैव आलम्बने चित्तालम्बनम् अतिस्फुट-दर्शनं भवति तथा करणीयम् ।

यदा तु जात्यन्धवद् अन्धकारप्रविष्टपुरुषवद् वा विनिमीलिताक्षवद् वा चित्तम् आलम्बनं अतिस्फुटतरं न पश्यति तदा लीनं वेदितव्यम् । यदा बाह्यरूपादौ तेषां 10 गुणकल्पनया धावनेन, अन्यमनसिकारेण वा पूर्वानुभूतविषयेच्छया चित्तौद्धत्यं वा औद्धत्यशङ्कादर्शनं वा तदा सर्वे संस्कारा अनित्या दुःखादि-मनोसंवेगवस्तु मनसि कर्तव्यम् । ततः विक्षेपशान्तिं कृत्वा स्मृतिसम्प्रजन्य-रज्जुना मनोनागः तदालम्बनस्तम्भे एव बन्धितव्यः । यदा लयौद्धत्ये न भवतः तदालम्बने चित्तप्रशमनवहितां पश्येत्, तदा आभोगक्षिथिलीकरणाद् उपेक्षया 15 तत्काले यावदिच्छं तिष्ठेत् । इत्थं भावितशमथस्य तच्छरीरस्य चित्तस्य च प्रश्रब्धिर्भविष्यति । यथेच्छालम्बने चित्तं स्ववशे भविष्यति । तदा शमथो निष्पन्नो वेदितव्यः ।

ततः शमथं निष्पाद्य विपश्यनां भावयेत् । ईदृशं च मन्तव्यम् भगवतः सर्ववचनं तु सुभाषितम्, साक्षात् परम्परया वा तत्त्वप्रत्यक्षव्यञ्जनं तत्त्व- 20 परायणमेव च । तत्त्वज्ञाने आलोकोद्भवात् तमोनिरासवत् सर्वदृष्टिजाल-वियोगो भविष्यति । शमथमात्रेण ज्ञानशुद्धिर्न भविष्यति, आवरण-तमो-निरासश्चापि न भविष्यति । प्रज्ञया च तत्त्वसम्यग्भावनायां ज्ञानविशुद्धिर्भ-विष्यति । प्रज्ञया एव तत्त्वमवगम्यते प्रज्ञयैव आवरणं सम्यक् प्रहीयते ।



तस्मान्मया शमथे स्थित्वा प्रज्ञया तत्त्वं पर्येषितव्यम् । शमथमात्रेण संतोषो न करणीय इति विचारणीयम् ।

कीदृशं च तत्त्वम् इति चेत् ? यत् परमार्थतः सर्ववस्तुपुद्गल-धर्ममिताशून्यम्, तत्प्रज्ञापारमितया अधिगम्यते न चान्यथा । आर्यसंधि-निर्मोचने<sup>१</sup> यथोक्तम् “भगवन् ! कया पारमितया बोधिसत्त्वः धर्मनिःस्व- 5 भावतां गृह्णीयात् ? अवलोकितेश्वर ! प्रज्ञापारमितया गृह्यते ।” इति । तस्मात् शमथे स्थित्वा प्रज्ञां भावयेत् ।

तत्रैवं योगी विचारयेत्, ‘पुद्गलः न स्कन्धात्वायतनव्यतिरिक्त उपलभ्यते । न चापि पुद्गलः स्कन्धादिस्वभावः । ते स्कन्धादयस्तु अनित्याः, अनेकस्वभावत्वात्<sup>२</sup> पुद्गलस्य च नित्यैकरूपेण परैरूपकल्पितत्वात् । 10 नापि तत्त्वान्यत्वाभ्याम् अनभिलाप्यपुद्गलस्य वस्तुत्वं युक्तम् । वस्तुसतः प्रकारान्तराभावात् । तस्मात् तद्यथा भ्रम एव अयं लोकस्य यदुताहं ममेति विचारितव्यम् ।

धर्मनैरात्म्यमपि एवं भावनीयम् । धर्म इति संक्षेपतः पञ्चस्कन्धो द्वादशायतनम्, अष्टादशधातवश्च । तत्र ये च स्कन्धायतनधातुरूपिणः, न ते परमार्थतः चित्ताकारव्यतिरिक्ताः । तत्परमाणुशो विभागे परमाणवोऽपि 15 भागशः स्वभावताप्रत्यवेक्षमाणाः स्वभावनिश्चयग्रहणाभावात् ।<sup>३</sup> तस्माद् अनादिकालिकवितथरूपाद्यभिनिवेशवशात् स्वप्नोपलभ्यमानरूपादिप्रतिभासवद् बालानां चित्तमेव बहिः विच्छिन्नमिव रूपादिप्रतिभासं ख्याति । परमार्थतस्तत्र रूपादिस्तु न चित्ताकारव्यतिरिक्त इति विचारयेत् । तद् एवं त्रैधातुकमिदं तु चित्तमात्रमिति चिन्तयेत् ।<sup>४</sup> स एवं चित्तमेव सकलधर्मप्रज्ञप्तिं 20 निश्चित्य तत्र प्रत्यवेक्ष्य च सर्वधर्माणां स्वभावः प्रत्यवेक्षितो भवतीति चित्तस्वभावमपि प्रत्यवेक्षते । स एवं विचारयति ।

चित्तमपि परमार्थः सत्यं भवितुम् न युज्यते । यदा हि अलीकस्वभावरूपाद्याकरोपग्रहणे चित्तमेव चित्राकारं प्रतिभासते, तदा सत्यत्वं कुत्र भवेत् । यथा रूपादि

१. देगे-का० ( सूत्र-‘व’ ३७ ) । २. द्र०-तृ० भा० क्र० । ३. द्र०-तृ० भा० क्र० । ४. द्र०-तृ० भा० क्र० ।



अलीकं तथा चित्तमपि तदव्यतिरिक्तत्वाद् अलीकमेव । यथा चित्राकारतया रूपादयो नैकानेकस्वभावाः तथा चित्तमपि तदव्यतिरेकेण नैकानेकस्वभावम् । तस्मात् मायादिस्वभावोपममेव चित्तम् ।

यथा चित्तमेवं सर्वधर्मा अपि मायास्वभावसदृशा एव इति  
5 विचारयेत् । तेन तथा प्रज्ञया चित्तस्वभावे प्रत्यवेक्षमाणे परमार्थतः चित्तम् अभ्यन्तरेऽपि नोपलभते, बाह्येऽपि नोपलभते, अनुभयोऽपि नोपलभते, अतीतचित्तमपि नोपलभते, अनागतमपि नोपलभते, प्रत्युत्पन्नमपि नोपलभते । नापि चित्तमुत्पाद्यमानं कुतोऽप्यागच्छति, नापि निरुध्यमानं क्वचिदपि गच्छति । चित्तं तु अग्राह्यम् अनिर्देश्यम्, अरूपम् च ।  
10 अनिर्देश्यम् अग्राह्यम् अरूपम् च यदस्ति तस्य स्वभावः कीदृशः ? तथा आर्यरत्नकूटे<sup>१</sup> यथोक्तम्—“काश्यप ! चित्तं तु परिगवेष्यमाणं न लभ्यते । यन्न लब्धं तन्न आलम्ब्यते यच्च नालम्ब्यते तन्नातीतम्, नानागतम्, न च प्रत्युत्पन्नम् ।” इति विस्तरः । तद् एवं परीक्ष्यमाणे चित्तस्य आदि न समनुपश्यति, अन्तं न समनुपश्यति मध्यं न समनुपश्यति ।

15 यथा च चित्तम् अनन्तमध्यं तथा सर्वधर्मानपि अनन्तमध्यम् अवगच्छेत् । तेन तदेवं चित्तम् अनन्तमध्यम् अवगम्य किमपि चित्तस्वभावं नोपलभते । यदपि चित्तं परीक्ष्यते तदपि शून्यं प्रतिविध्यति । तत्प्रति-विध्यमाने चित्तविठपनास्वभावं रूपादिस्वभावमपि न समनुपश्यति ।  
20 तेन तथा प्रज्ञया सर्वधर्मस्वभावस्य असमनुदर्शनत्वाद् रूपं नित्यम् अनित्यं वा, शून्यम् अशून्यं वा, सास्त्रवम् अनास्त्रवं वा, उत्पन्नम् अनुत्पन्नं वा, भावोऽभावो वेति न विकल्पयति । यथा रूपं न विकल्पयति तथा वेदना-संज्ञासंस्कारविज्ञानेष्वपि न विकल्पयति । असिद्धे धर्मिणि तस्य विशेषणा-नामपि असिद्धत्वात्, तत्र कथं विकल्पयेत् । तद् एवं प्रज्ञया परीक्ष्यमाणो



यदा योगिना कस्यचिद् वस्तुनः स्वभावपरमार्थनिश्चयो न गृह्यते, तदा निर्विकल्पसमाधौ प्रविशति । सर्वधर्मनिःस्वभावता अपि अवगम्यते ।

यः प्रज्ञया वस्तुस्वभावं प्रत्यवेक्ष्य न भावयन्, मनसिकारपरिहार-  
मात्रं भावयति, तस्य विकल्पः कदापि न निवर्तते, न च निःस्वभावताव-  
बोधोऽपि भविष्यति, प्रज्ञालोकाभावात् । एवं सम्यक्प्रत्यवेक्षणात् सम्यग्- 5  
यथावज्ज्ञानाग्निभावेऽरणिमन्थनाग्निवत् कल्पनावृक्षो दह्यते इति भगवता  
उक्तम् ।

तथा उक्तम् आर्यरत्नमेघे<sup>१</sup>—“स एवम् अपक्षालकुशलः सर्वप्रपञ्चविगमाय  
शून्यताभावनाय योगमापद्यते । स शून्यताभावनबहुलो येषु येषु स्थानेषु चित्तं  
प्रसरति, चित्तमभिरमते, तानि तानि स्थानानि स्वभावतः परिगवेषमाणः शून्यं प्रति- 10  
विध्यति । यत् चित्तं तदपि परीक्षमाणः शून्यं प्रतिविध्यति, येनापि चित्तेन परीक्षते तद्  
अपि स्वभावतः शून्यं परिगवेष्यमाणं प्रतिविध्यति । स एवम् उपपरीक्षमाणो निर्निमित्त-  
तायां योगमापद्यते ।” इति भवति । अनेन तु पर्यवेक्षणपूर्वगामितायाः  
निर्निमित्तताप्रवेशं दर्शयति । मनसिकारपरिहारमात्रम्, प्रज्ञया वस्तुस्वभावतां  
च अविचार्य, अविकल्पताप्रवेशम् असंभाव्य, अतिस्फुटतरं दर्शयति । तथा 15  
तया प्रज्ञया रूपादिवस्तुस्वभावं सम्यग् यथावत् परीक्ष्य ध्यायति, रूपादौ  
स्थित्वा ध्यानं न करोति । इहलोकपरलोकयोर्मध्ये स्थित्वा ध्यानं न  
करोति, तद्रूपाद्यनुपलम्भात् । तस्माद् अप्रतिष्ठितध्यान इति  
उच्यते ।

प्रज्ञया स्कलवस्तुस्वभावतां प्रतिवीक्ष्य यस्माद् अनुपलम्भं ध्यायति<sup>२</sup>- 20  
तस्मात् प्रज्ञोत्तरध्यायी इति उच्यते । आर्यगगनगञ्ज-आर्यरत्नचूडादिषु  
यथा निर्दिष्टम् ।

<sup>३</sup>स एवं पुद्गलधर्मनैरात्म्यमयं तत्त्वमवतीर्णः, अपरस्य परीक्षणीयस्य दर्शनीयस्य  
च अभावाद् उपरतम्, वितर्क-विचार-अनभिलाषैकरसेन मनसा स्वरसवाहिना अनभि-

१. वेगे-का० ( सूत्र-‘वा’ ६२ ) । २. द्र०-तृ० भा० क्र० । ३. द्र०-तृ० भा० क्र० ।



- संस्कारतस्तत्त्वमेव स्फुटतरं भावयन् तिष्ठेत् । तत्र च स्थितश्चित्तसंतानं न विक्षिपेत् । यदान्तरा रागादीनां चित्तं बहिर्धा विक्षेपेत् तदा विक्षेपं विदित्वा शीघ्रम् अशुभभावनादिविक्षेपम् उपशम्य शीघ्रं तथतायां चित्तम् उपर्युपरि प्रवेशयेत् । यदा तु तत्रानभिरतं चित्तं पश्येत्, तदा समाधेर्गुणदर्शनाद् अभिरतिं तत्र भावयेत् ।
- 5 विक्षेपे च दोषदर्शनाद् अरतिं प्रशमयेत् । अथ स्त्यानमिद्धाभिभवाद् यदा अस्फुट-प्रचारतया लीनं चित्तं पश्येत्, लयाभिशाङ्कितं वा तदा पूर्ववत् प्रमोद्यवस्तु मनसिकारेण शीघ्रं लयमुपशमयेत् । पुनः तद् एव तत्क्षालम्बनम् अतिदृढतरं गृह्णीयात् । यदि तदा पूर्वहसितरमितान्यनुस्मृत्य चित्तमन्तरा समुद्रतं पश्येद् औद्धत्याभि-शाङ्कितं वा तदा अनित्यतादिसंवेगवस्तुमनसिकाराद् विक्षेपं शमयेत् । ततः पुनस्तत्रैव
- 10 तत्त्वे चित्तानभिसंस्कारवाहितायां यत्नं कुर्वीत ।

- अथ यदा लयौद्धत्याभ्यां विविक्ततया समप्रवृत्तं स्वरसवाहिस्फुटतरं तत्रैव तत्त्वे चित्तं उत्पादयते, तदा भोगशितिलीकरणाद् उपेक्षणीयम् । यदि समप्रवृत्ते चित्ते सति आभोगः क्रियते, तदा चित्तं विक्षेप्यते । लीनेऽपि चित्ते सति, यद्याभोगो न क्रियते, तदा अतिलीनत्वाद् विपश्यनारहितं, चित्तं च जात्यन्धवद् भविष्यति ।
- 15 तस्माच्चित्ते लीने सति भोगं कुर्वीत । समप्रवृत्ते सति भोगं न कुर्वीत । यदा च विपश्यनां भावयेत् प्रज्ञातिरिक्ततरा भवेत्, तदा शमथस्याल्पत्वात् प्रवात-स्थित-प्रदीपवत् प्रचलत्वाच्चित्तस्य न स्फुटतरं तत्त्वदर्शनं भवेत् । अतस्तदा शमथो भावयितव्यः । शमथस्याभ्याधिक्येऽपि प्रज्ञा भावयितव्या ।

- यदा उभयं समप्रवृत्तं तदा अनभिसंस्कारेणैव तावत् स्थातव्यं यावत्
- 20 कायचित्तपोडा न भवेत् । सत्यां कायादिपोडायां तदन्तरा सकलमेव लोकं मायामरीचि-स्वप्नजलचन्द्रोपमप्रतिभासवद् दृष्ट्वा ईदृशं चिन्तनीयम् । अमी सत्त्वास्तु एवं-विधधर्मगाम्भीर्यानवबोधतया संसारे संक्लिष्टाः । ततोऽहं करिष्यामि तांस्तां धर्मताम् अवबोधयेयुः, तथा करिष्यामि' इति चिन्तयन् महाकरुणां बोधिचित्ताभिमुखीं कुर्वीत । ततो विश्रम्य पुनरपि तथैव सर्वधर्मनिराभासं समाधिमवतरेत् । चित्तेऽति-
- 25 खेदे सति, तथैव विश्रमेत् । अयं तु शमथविपश्यनायुगनद्वप्रवृत्तिमार्गः सविकल्पनिर्विकल्पप्रतिबिम्बम् आलम्बते ।

एवं योगी अनेन क्रमेण घटिकाम् अर्धप्रहरम् एकप्रहरं वा यावत्कालेच्छा-पर्यन्तं तत्त्वं भावयन् तिष्ठेत् । इदं त्वर्थप्रविचयध्यानम् आर्यालङ्कावतारे



निर्दिष्टम् । तत इच्छया समाधेरुत्थातुं पर्यङ्कम् अभित्वैवम् अनुविचिन्तयेत्, अमी धर्माः सर्वे परमार्थतः निःस्वभावाः सन्तोऽपि संवृतौ व्यवस्थिता एव । तथा-  
ऽसति कर्मफलसम्बन्धादयः कथं व्यवस्थिताः स्युः ? भगवता चोक्तम्<sup>१</sup>—

“भावा विद्यन्ति संवृत्या परमार्थे न भावकाः ।” इत्युक्तम् ।

अमी बालबुद्धयो निःस्वभाववस्तुषु भावादिसमारोपेण विपर्यस्त- 5  
बुद्धयो भवन्ति । चिरकालं संसारचक्रे परिभ्रमन्ति, ततोऽहं करिष्यामि  
अनुत्तरपुण्यज्ञानसम्भारं परिपूर्णं, ततः सर्वज्ञपदं प्राप्य तान् धर्मताम्  
अवबोधयेयम् । एवं विचिन्तयेत् । <sup>२</sup>अथ शनैः पर्यङ्कं भित्त्वा दशदिग्व्यवस्थितान्  
सर्वबुद्धबोधिसत्त्वान् प्रणिपत्य तेभ्यश्च पूजास्तोत्रोपहारं कृत्यार्थभद्रचर्यादिमहा-  
प्रणिधानं प्रणिदधोत । ततः शून्यताकरुणागर्भसकलदानादिपुण्यसंभारोपाजनेऽ- 10  
भियोगः करणीयः ।

तथा च सति तद्ध्यानसर्वाकारवरोपेतशून्यताभिनिर्हारः स्यात् ।  
आर्यरत्नचूडे<sup>३</sup> यथोक्तम्—“स मैत्रीवर्मसंनद्धो महाकरुणास्थाने स्थित्वा  
सर्वाकारवरोपेतशून्यताभिनिर्हारध्यानं करोति । तत्र सर्वाकारवरोपेत-  
शून्यता कतमा ? या दानानपगति-शीलानपगति-क्षान्त्यनपगति-वीर्यानि- 15  
पगति-ध्यानानपगति-प्रज्ञानापगति-उपायानपगतीत्यादिविस्तरोक्तिरिति ।”  
बोधिसत्त्वस्तु सर्वसत्त्वपरिपाकं कुर्वीत । क्षेत्रकायबहुपरिवारादिसंपत्ति-  
प्रादुर्भावोपायदानादिकुशलं चावश्यं सेवेत ।

असति च तथा बुद्धानाम् क्षेत्रादिसंपत्तियोक्ता सा कस्य फलं स्यात् ।  
तस्मात् सर्वाकारवरोपेतं तत्सर्वज्ञज्ञानं तु दानाद्युपायेन परिपूर्णमाणत्वाद् 20  
भगवान् तत् सर्वज्ञज्ञानम् उपायेन पर्यन्तगतम् इत्यवोचत् । तस्माद् बोधि-  
सत्त्वेन दानाद्युपायोऽपि सेवितव्यो न तु शून्यता एव । आर्यसर्वधर्मवैपुल्ये<sup>४</sup>

१. देगे-का० (सूत्र-‘ख’ १७४) सं०-लङ्कावतारसूत्र ॥ १०।४२६ ॥, पृ० १३५  
वरभङ्गा । २. द्र०-तृ० भा० क्र० । ३. देगे-का० (रत्नकूट-‘छ’ २२०) । ४. देगे-  
का०.....? ।



- “योऽयं मैत्रेय ! षट्पारमितासमुदागमो बोधिसत्त्वानां सम्बोधाय तं ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति, प्रज्ञापारमितायाम् एवं बोधिसत्त्वेन शिक्षितव्यम्, किं शेषाभिः पारमिताभिरिति उच्यन्ते । तेऽन्याः पारमिता दूषयितव्या मंस्यन्ते । तत् किं मन्यसे अजित ! दुःप्रज्ञः स काशिराजोऽभूद् येन कपोतार्थेन श्येनाय स्वमांसानि दत्तानि ? मैत्रेय आह, नो हीदं भगवन् । भगवान् आह-यानि मया मैत्रेय ! बोधिसत्त्वचर्यां चरता षट्पारमिता-प्रतिसंयुक्तानि कुशलमूलान्युपचितानि, अपकृतं नु तैः कुशलमूलैः ? मैत्रेय आह नो हीदं भगवन् । भगवान् आह-त्वं तावद् अजित ! षष्टिकल्पान् दानपारमितायां समुदागतः, षष्टिकल्पान् शीलपारमितायां षष्टिकल्पान् क्षान्तिपारमितायां षष्टिकल्पान् वीर्यपारमितायां षष्टिकल्पान् ध्यानपारमितायां षष्टिकल्पान् प्रज्ञापारमितायां समुदागतः । तत् ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति । एकनयेनैव बोधिर्यदुत शून्यतानयेनेति ते चर्यापरिशुद्धा भवन्तीत्यादि ।”

- उपायरहिते सति बोधिसत्त्वः प्रज्ञया एव तु श्रावकवत् बुद्धकार्याणि कर्तुं न शक्नोति । उपायसनाथश्च समर्थो भवति । आर्यरत्नकूटे <sup>३</sup>यथोक्तम्-“तद्यथा काश्यप ! अमात्यसंगृहीता राजानः सर्वकार्याणि कुर्वन्ति, एवमेव उपायकौशल्यसंगृहीता बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञा सर्वबुद्धकार्याणि करोति ।” इति । बोधिसत्त्वानां मार्गदृष्टेरप्यन्या तीर्थिकानां श्रावकाणां च मार्गदृष्टिरप्यन्या । एवं तीर्थिकमार्गदृष्टिस्तु आत्मादौ विपर्यसयुक्तत्वात् सर्वेण सर्वः प्रज्ञारहितो मार्गः । तस्मात् ते मुक्तिं न प्राप्नुवन्ति ।

- श्रावकाणां तु महाकरुणारहितत्वाद् उपायायुक्तता । तस्मात् ते एकान्तनिर्वाणपरायणाः भवन्ति । बोधिसत्त्वमार्गस्तु प्रज्ञोपाययुक्तो मन्यते । तस्मात् ते अप्रतिष्ठितनिर्वाणपरायणा भवन्ति । बोधिसत्त्वानां मार्गस्तु प्रज्ञोपाययुक्तो मन्यते । तस्मात् ते अप्रतिष्ठितनिर्वाणं प्राप्नुवन्ति । प्रज्ञाबलेन तु संसारे न पतति, उपायबलेन च निर्वाणि न पतति ।

- तस्माद् आर्यगयाशीर्षे-“द्वाविमौ बोधिसत्त्वानां संक्षिप्तौ मार्गौ । कतमौ द्वौ-यदुत प्रज्ञा चोपायश्च ।” इत्याख्यातम् । आर्यश्रीपरमाद्येऽपि <sup>१</sup> उक्तम्—

१. द्र०-तृ० भा० क्र० । २. देगे-का० ( रत्नकूट 'छ' १२६ ) । ३. द्र०-तृ० भा० क्र० । ४. देगे-का० ( सूत्र-'च' २८८ ) । ५. द्र०-तृ० भा० क्र० । ६. देगे० का० .....?



“प्रज्ञापारमिता तु ‘माता’ अस्ति, उपायकौशल्यं च ‘पिता’ अस्ति ।”  
 आर्यविमलकीर्तिनिर्देशसूत्रेऽपि<sup>१</sup>—“बोधिसत्त्वानां किं बन्धनम् ? का च मुक्तिः ?  
 अनुपायेन भवगतिपरिग्रहो हि बोधिसत्त्वस्य बन्धनम् । उपायेन भवगति-  
 गमनं मुक्तिः । प्रज्ञारहितभावगतिपरिग्रहो बोधिसत्त्वस्य बन्धनम् । प्रज्ञया  
 भवगतिगमनं तु मुक्तिः । उपायेन अपरिगृहीता प्रज्ञा हि बन्धनम् । 5  
 उपायेन परिगृहीता प्रज्ञा मुक्तिः । प्रज्ञयापरिगृहीतापायो बन्धनम् ।  
 प्रज्ञया गृहीतोपायः मुक्तिः इति” विस्तरेण उक्तम् ।

बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञामात्रसेवनं तु श्रावकेष्टनिर्वाणपतितत्वाद् बन्धनवद्  
 भविष्यति । अप्रतिष्ठितनिर्वाणेन मुक्तिर्न भविष्यति । तस्मादुपायरहिता  
 प्रज्ञा तु बोधिसत्त्वानां बन्धनमित्युच्यते । तस्माद् वायुपीडितेन अग्निसेवन- 10  
 वद् बोधिसत्त्वेन विपर्यासवायुमात्रप्रहाणत्वात् सोपायप्रज्ञया शून्यता  
 सेवितव्या, न तु श्रावकवत् साक्षात्करणीया । यथा आर्यदशधर्मसूत्रे<sup>२</sup>  
 चोक्तम्—“कुलपुत्र ! तद्यथा यथा कश्चिन्मनुष्यः अग्निपरिचर्यां करोति,  
 स तदग्निस्तकारं करोति, गुरुं करोति, किन्तु सोऽयमिति मया सोऽग्निः  
 सत्कृत्य, गुरुकृत्य मानितश्च इति कृतेऽपि एष द्वाभ्यां हस्ताभ्यां 15  
 परिगृहीतव्य इति न चिन्तयति । तत् कस्मादिति चेत् तन्निधाने मयि  
 कायिकदुःखं चित्तदौर्मनस्यं वा सम्भाव्यते इति चिन्तनात् । तथैव च  
 बोधिसत्त्वेऽपि निर्वाणाशयोऽप्यस्ति, निर्वाण-प्रत्यक्षं न करोति । तत् कस्य  
 हेतोरिति चेत् ? तन्निधानाद् अहं बोधिं निवर्तयम् इति चिन्तनाद्” इति ।

केवलम् उपायमात्रसेवनेऽपि बोधिसत्त्वः पृथग्जनभूमेरनुत्तीर्णत्वाद् 20  
 अत्यवबद्ध एव भविष्यति । तस्मात् प्रज्ञासहितमुपायं सेवेत । एवं मन्त्र-  
 परिगृहीतविषयवद् बोधिसत्त्वक्लेशेऽपि प्रज्ञापरिग्रहबलेन भाविते सति  
 अमृतिकता । पुनः स्वभावेन अभ्युदयफलं दानादि यदस्ति तत्र किमुत



वक्तव्यम् । आर्यरत्नकूटे<sup>१</sup> चोक्तं यथा—“तद्यथाऽपि नाम काश्यप ! मन्त्रौषधपरि-  
गृहीतं विषं न विनिपातयति एवमेव बोधिसत्त्वानाम् क्लेशः प्रज्ञापरिगृहीतत्वाद् अपि  
न शक्नोति विनिपातयितुम् इति ।”

तस्माद् येन कारणेन बोधिसत्त्व उपायबलेन संसारमनुत्सृजति  
5 तस्माद् निर्वाणे न पतति । यस्मात् प्रज्ञाबलेन सकलालम्बनं प्रहीयते  
तस्मात् संसारे न पतति, तस्माद् अप्रतिष्ठितनिर्वाणबुद्धत्वं प्राप्यते । तस्माद्  
आर्यगगनगङ्गेऽपि<sup>३</sup> उक्तम्—“तत्प्रज्ञानेन हि सर्वक्लेशाः परिवर्ज्यन्ते ।  
उपायज्ञानेन हि सर्वसत्त्वा न परित्यज्यन्ते ।” इति । आर्यसंधि-  
निर्मोचनेऽपि<sup>४</sup>—“एकान्तसत्त्वार्थाविमुखस्य एकान्तसंस्काराभिसंस्कारविमुखस्य  
10 नानुत्तरा सम्यक्संबोधिरुक्ता मयेति ।” तस्माद् बुद्धत्वप्राप्तुकामेन प्रज्ञोपायौ उभौ  
सेवितव्यौ ।

तत्र लोकोत्तरप्रज्ञाभावनावसरे, अतिसमाहितावसरे वा दानाद्यु-  
पायसेवनासम्भावनायामपि तत्र प्रयोगतत्पृष्ठलब्धप्रज्ञयोः योऽपि भवति,  
तदा उपायसेवनं भवत्येव । तस्मात् प्रज्ञोपायौ युगपत् प्रवर्तते । पुनरपरं  
15 बोधिसत्त्वानाम् अयं हि प्रज्ञोपाययुगनद्धवाही मार्गः सर्वसत्त्वावलोकितमहा-  
करुणया परिगृहीतत्वात् लोकोत्तरमार्गः सेव्यते, उत्थानोपायकालेऽपि  
मायाकारवद् अविपर्यस्तमेव दानादि सेव्यते । आर्याक्षयमतिनिर्देशेऽपि<sup>५</sup>  
यथोक्तम्—“तत्र को हि बोधिसत्त्वोपायः ? कश्च प्रज्ञाभिनिर्हार इति ?  
यतः समाधाने सत्त्वावलोकितमहाकरुणावलम्बने चित्तोपस्थापना स एव  
20 उपायः । यतः शान्तिप्रशान्तिसमापत्तिः सा तु तत्प्रज्ञा” इति विस्तरः ।  
मारदमनपरिच्छेदेऽपि<sup>६</sup> उक्तम्—“पुनरपरं बोधिसत्त्वानां समुत्कर्षिक-  
प्रयोगस्तु प्रज्ञाज्ञानेन अभियोगं करोति । उपायज्ञानेन सर्वकुशलधर्मसंग्रहो

१. देगे-का० ( रत्नकूट-‘छ’ १३० ) । २. द्र० ‘काश्यपपरिवर्ते’ भोटप्रकाशे-पृ०  
१८३ तमे । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘प’ २१३ ) । ४. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १६ ) । ५. द्र०-तु०  
भा० क्र० । ६. देगे-का० ( सूत्र-‘म’ ११२ ) । ७. देगे-का० “” ?



ऽपि प्रयुज्यते । प्रज्ञाज्ञानेन नैरात्म्य-असत्त्व-अजीव-अपोष-अपुद्गलेषु च प्रयुज्यते । उपायज्ञानेन यः सर्वसत्त्वपरिपाकोऽपि प्रयोज्यः" इति विस्तरः । आर्यधर्मसंगीतिसूत्रे<sup>१</sup>ऽपि—

मायाकारो यथा कश्चिन्निर्मितं मोक्षमुद्यतः ।

न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ॥

त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा सम्बोधिपारगः ।

संनह्यते जगद्धेतोर्ज्ञातपूर्वं जगत् तथा ॥ इति ।

बोधिसत्त्वानाम् प्रज्ञोपायविधिरेव साध्यमधिकृत्य तत्प्रयोगसंसारे स्थितोऽपि अस्ति, आशयनिर्वाणे स्थितोऽपि स्याद् इत्युक्तम् ।

तादृश्यां शून्यतामहाकरुणागर्भानुत्तरसम्यक्संबुद्धौ परिणतदाना-  
द्युपायभावनां कृत्वा, परमार्थबोधिचित्तोत्पादार्थं पूर्ववत् नित्यं काले  
काले शमथविपश्यनाप्रयोगो यथाशक्ति भावनीयः । आर्यगोचरपरि-  
शुद्धिसूत्रे<sup>३</sup>—सर्वावस्थासु सत्त्वार्थकारिबोधिसत्त्वानामनुशंसा यथा  
निर्दिष्टा तथा संनिहितस्मृत्या सर्वदा उपायकौशलं भावितव्यम् ।

तादृक्करुणोपायबोधिचित्तभावकः स इह जन्मनि अवश्यं विशिष्टो  
भवति । तस्मात् स्वप्ने नित्यं बुद्धबोधिसत्त्वदर्शनं भविष्यति । सुस्वप्ना-  
न्तराप्यपि दृश्यन्ते । देवा अपि अनुमोदनाद् रक्षां करिष्यन्ति ।  
प्रतिक्षणमपि विपुलपुण्यज्ञानसम्भारसंचयो भविष्यति । क्लेशावरण-  
दौष्टुल्यमपि क्षीणं भविष्यति । सर्वदैव सुखसौमनस्यमधिकं भविष्यति ।  
बहुजनप्रियो भविष्यति । शरीरेऽपि रोगग्रस्तो न भविष्यति । परमचित्त-  
कर्मण्यतापि प्राप्ता भविष्यति । तस्माद् अभिज्ञतादिविशिष्टगुणप्राप्तिः ।

१. देगे—का० ( सूत्र—'श' ४३ ) । २. द्र०—प्र०, तु० भा० क्र० । ३. अत्र सूत्रस्य  
शब्दा न उदघृताः ।



अथ ऋद्धिबलेन अनन्तलोकधातून् गत्वा भगवतो बुद्धान् पूजयति ।  
 तेभ्यः धर्मोऽपि श्रूयते । मरणसमयेऽपि अवश्यमेव बुद्धबोधिसत्त्वदर्शनं  
 भविष्यति । जन्मान्तरेऽपि बुद्धबोधिसत्त्वानपगतदेशविशिष्टगृहे चापि जन्म  
 भविष्यति । तस्माद् अनायासपुण्यज्ञानसम्भारः परिपूरयिष्यते । महाभोगो  
 5 बहुपरिवारश्च भविष्यति । तीक्ष्णप्रज्ञया बहुजनपरिपाकमपि करिष्यन्ति ।  
 सर्वजातिषु जातिस्मरणं भविष्यति । तादृशी अपरिमितानुशंसा सूत्रान्त-  
 रेषु संभूता अवगन्तव्या ।

तेन तादृक्कण्ठोपायबोधिचित्तानि च नित्यम् आदरेण चिरं-  
 भवितानि क्रमशः चित्तसंताने अतिपरिशुद्धक्षणोत्पादेन परिपाकभूतत्वाद्  
 10 अरणिमन्थनाग्निवत् सम्यगर्थभावनाप्रकर्षपर्यन्तं गमनं भूत्वा लोकोत्तरज्ञान-  
 सकलविकल्पजालापगमनं निष्प्रपञ्चधर्मधातुप्रस्फुटावगतिः, निर्मलनिश्चल-  
 निर्वातस्थितप्रदीपवत् निश्चलप्रमाणभूतः, सर्वधर्मनैरात्म्यस्वभावः  
 तत्त्वसाक्षात्कारी, दर्शनमार्गसंगृहीतः परमार्थबोधिचित्तस्वभाव उत्पद्यते ।  
 तदुत्पादाद् वस्तुपर्यन्ततालम्बने प्रविष्टः । तथागतगोत्रे उत्पद्यते, बोधि-  
 15 सत्त्वानपक्षालप्रवृत्तिः, लोकसर्वगतिनिवृत्तिः, बोधिसत्त्वधर्मताधर्मधात्वव-  
 बोधस्थितिः, प्राप्तबोधिसत्त्वप्रथमभूमिः इत्यनुशंसा तद्विस्तरः दशभूम्या-  
 दिषु अवगन्तव्यः । इदं तथतालम्बनध्यानम् आर्यलङ्कावतारे निर्दिष्टम् ।  
 इदं तु बोधिसत्त्वानाम् निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पतायामेव प्रविशति ।

अधिमुक्तिभूमौ तु अधिमुक्तिवशात् प्रवृत्तिव्यवस्थापिता न तु  
 20 अभिसंस्कारेण । तज्ज्ञानप्रादुर्भावे तु साक्षात् प्रवेशः । तथा प्रथमभूमिप्रवेशः  
 तदनन्तरं भावनामार्गे लोकोत्तरेण तत्पृष्ठलब्धज्ञानेन द्वाभ्यां च प्रज्ञोपाय-  
 भावनाक्रमेण भावनाप्रहेयसंचितावरणस्य सूक्ष्मसूक्ष्मतरव्यवदानाद्  
 उत्तरोत्तरविशिष्टगुणप्राप्तये अधोभूमिपरिशोधनेन तथागतज्ञानपर्यन्तं  
 प्रविश्य, सर्वज्ञतासागरम् अवतीर्य, कार्यपरिनिष्पत्त्यालम्बनमपि प्राप्नोति ।  
 25 एवं क्रमेण एव चित्तसंतानपरिशुद्धिः आर्यलङ्कावतारेऽपि उक्ता । आर्य-



संधिनिर्मोचनेऽपि<sup>१</sup> यथोक्तम्—“क्रमेणोत्तरोत्तरभूमिषु सुवर्णवत् चित्तं व्यव-  
दाय, अनुत्तरसम्यक्संबोधिपर्यन्तम् अभिसंबुध्यति” इति ।

सर्वज्ञतासागरप्रवेशे सति चिन्तामणिवत् सकलसत्त्वोपजीविगुण-  
स्कन्धयुक्तः, पूर्वप्रणिधानफलसत्कृतः, महाकरुणास्वभावभूतः, अनाभोग-  
नानोपाययुक्तः, अपरिमितनिर्माणैरशेषजगत्सर्वार्थाकरः कृतः । अशेष- 5  
गुणसम्पत्तिप्रकर्षपर्यन्तभूतः, सवासनादोषं सकलमलं निराकृत्य, सत्त्व-  
धात्वन्तपर्यन्तविहारी, इति प्रेक्षावान् भगवति बुद्धे सकलगुणाकरे  
श्रद्धाम् उत्पाद्य तद्गुणपरिनिष्पत्त्यर्थं स्वयं सर्वान् प्रयत्नान् कुर्यात् । तस्माद्  
भगवता<sup>२</sup> एवमुक्तम्—“तदेतत् सर्वज्ञज्ञानं करुणामूलं बोधिचित्तहेतुकम् उपाय-  
पर्यवसानम्” इति । 10

दूरीकृतेर्ष्यादिमला हि सन्तो गुणैरतृप्ताः सलिलैरिवाब्धिः ।  
विवेच्य गृह्णन्ति सुभाषितानि हंसाः पयो यत्पयांसि प्रहृष्टाः ॥

पक्षपाताकुलं तस्माद् दूरीकृतं मनो बुधैः ।  
सर्वमेव ग्रहीतव्यं बालादपि सुभाषितम् ॥  
प्रकाश्य यत् प्रापि मया शुभम् असमपद्धितम् ।  
पुण्यमस्तु जनस्तेन प्राप्तो मध्यमपद्धितम् ॥ 15

आचार्यकमलशीलेन मध्ये निबद्धो भावनाक्रमः समाप्तः ।

भारतीयोपाध्यायेन प्रज्ञावर्मणा महालोकचक्षुषा वन्द्यज्ञानसेनेन  
चानूद्य सुनिर्णीतः ।

भावनाक्रमः द्वितीयः समाप्तः ।



१. देगे-का० (सूत्र-‘च’ ३६) । २. देगे-का० (तन्त्र-‘थ’ वैरोचनाभिसम्बोधि-  
१५३) । ३. द्र०-प्र० भा० क्र० । ४. द्र०-तृ० भा० क्र० ।







## भानवाक्रमस्तृतीयः

—: ❀ :—

महायानसूत्रान्तनयप्रवृत्तानां संक्षेपतो भावनाक्रमः कथ्यते । तत्र यद्यपि बोधिसत्त्वानामपरिमितोऽप्रमाणादिभेदेन<sup>१</sup> भगवता समाधिरूप-दिष्टः, तथापि शमथविपश्यनाभ्यां सर्वे समाधयो व्याप्ता इति । स एव शमथविपश्यनायुगनद्धवाही मार्गस्तावत् कथ्यते । उक्तं च भगवता<sup>२</sup>—

निमित्तबन्धनाज् जन्तुरथो दोष्टुलबन्धनात् ।

5

विपश्यनां भावयित्वा शमथं च विमुच्यते ॥ इति ।

तस्मात् सकलावरण-प्रहाणार्थिना शमथविपश्यने सेवनीये<sup>३</sup> । शमथबलेन स्वा<sup>४</sup>लम्बने चित्तम् अप्रकम्प्यं भवति निवातस्थितप्रदीपवत् । विपश्यनया यथावद् धर्मतत्त्वावगमात् सम्यग्ज्ञाना<sup>५</sup>लोकः समुत्पद्यते, ततः सकलम् आवरणं प्रहीयते, अन्धकारवद् आलोकोदयात् ।

10

अत एव भगवता चत्वार्यालम्बनवस्तूनि योगिनां निर्दिष्टानि । निर्विकल्पप्रतिबिम्बकम्, सविकल्पप्रतिबिम्बकम्, वस्तुपर्यन्तता, कार्य-परिनिष्पत्तिश्च । तत्र शमथेन यत् सर्वधर्मप्रतिबिम्बकं बुद्धादिरूपं चाधि-मुच्यालम्ब्यते तेन निर्विकल्पप्रतिबिम्बकम् उच्यते । तत्र भूतार्थनिरूपणा-विकल्पाभावान् निर्विकल्पकम् उच्यते । यथाश्रुतोद्गृहीतानाञ्च धर्माणां 15 प्रतिबिम्बकम् अधिमुच्यालम्ब्यत इति कृत्वा प्रतिबिम्बकम् उच्यते । तद् एव प्रतिबिम्बकं यदा विपश्यनया विचारयति योगी तत्त्वाधिगमार्थं तदा सविकल्पप्रतिबिम्बकम् उच्यते, तत्त्वनिरूपणविकल्पस्य<sup>६</sup> विपश्यना-लक्षणस्य तत्र समुद्भवात् । तस्यैव च प्रतिबिम्बस्य स्वभावं निरूपयन्

१. आविभेदेन-भो० न । २. देगे-का० (संघिनिर्माणसूत्र-‘च’ ३) । ३. भो० पा०-भावयेत् । ४. स्व० भो० न । ५. भो० पा०-प्रज्ञा । ६. दुची-पा०-अविकल्पाय ।



योगी दर्पणान्तर्गतस्वमुख-प्रतिबिम्बप्रत्यवेक्षणेन स्वमुखगतवैरूप्याणां विनिश्चयवत्, सर्वधर्माणां यथावत् स्वभावावगमात् । यदा वस्तु पर्यन्ततालक्षणां तथतां प्रतिविध्यति, तदा वस्तुपर्यन्ततावगमात् प्रथमायां भूमौ वस्तुपर्यन्ततालम्बनम् उच्यते । ततो भावनामार्गेण परिशिष्टासु 5 भूमिष्वोषधिरसायनोपयोगाद् इव क्रमेण विशुद्धतरतमक्षणोदयाद् आश्रय-परावृत्तौ सत्याम्, आवरण-प्रहाणलक्षण-कार्यपरिसमाप्तिर्यदा भवति तदा बुद्धभूमौ तद् एव ज्ञानं कार्यपरिनिष्पत्त्यालम्बनम् उच्यते ।

तद् एवम् अनेन किं दर्शितं भवति ? शमथविषयनाभ्यां समस्त<sup>१</sup>-वस्तुपर्यन्तताधिगमो भवति । तेन चावरणप्रहाणलक्षणा कार्यपरिनिष्पत्ति- 10 रवाप्यते । तद् एव च बुद्धत्वम् । अतो बुद्धत्वाधिगमार्थिना शमथविषयने सेवनीये । यस्तु ते न सेवते तस्य नैव वस्तुपर्यन्तताधिगमो नापि कार्यपरि-निष्पत्तिरिति । तत्र शमथश्चित्ताग्रता । विषयना भूतप्रत्यवेक्षेति संक्षेपाद् आर्यरत्नमेघादौ भगवता शमथविषयनयोर्लक्षणम् उक्तम् । तत्र योगिना शीलविशुद्ध्यादौ शमथविषयनासंभारे स्थितेन सर्व<sup>२</sup>सत्त्वेषु 15 महाकरुणाम् उत्पाद्य, समुत्पादित-बोधिचित्तेन श्रुतचिन्ताभावनायां प्रयोक्तव्यम् ।

तत्र प्रथमं तावद् योगी भावना-काले<sup>३</sup> सर्वम् इतिकरणीयं परिसमाप्य कृतमूत्रपुरीषः कण्टक-स्वरादिरहिते मनोऽनुकूले प्रदेशे स्थित्वा<sup>४</sup> मया सर्वसत्त्वा बोधिमण्डे निष्पादयितव्या इति विनिश्चयन्, सकलजगदभ्युद्धर- 20 णाशयो महाकरुणाम् आमुखीकृत्य, दशदिगवस्थितान् सर्वबुद्धबोधिसत्त्वान् पञ्चाङ्गेन प्रणिपत्याग्रतो बुद्धबोधिसत्त्वान् पीठादौ स्थापयित्वा अन्यत्र वा यथावत् तेभ्यश्च यथारुचि पूजास्तवनं कृत्वा स्वपापं प्रदेष्ट्य, सकलस्य जगतः पुण्यम् अनुमोद्य, मृदुतरमुखासने वैरोचनभट्टारकबद्धपर्यङ्केण

१. समस्त-भो० न । २. सर्व-भो० न । ३. दुर्ची-पा०-बलेन । ४. स्थित्वा-भो० न ।



अर्धपर्यङ्गेण वा निषद्य नात्युन्मीलिते नातिनिमीलिते नासिकाग्रविन्यस्ते  
चक्षुषी कृत्वा, नातिनम्रं नातिस्तब्धम् ऋजुकायं प्रणिधायान्तर्मुखावर्जित-  
स्मृतिरुपविशेत् । ततः स्कन्धौ समौ स्थापयेत् । शिरो नोन्नतं नावनतम्  
एकपाश्वे निश्चलं स्थापयितव्यम् । किं तर्हि<sup>१</sup> नाभिप्रगुणा नासिका  
स्थापयितव्या । दन्तोष्ठं मृदु स्थापनीयम् । जिह्वा चोपरि दन्तमूले 5  
स्थापनीया । आश्वासप्रश्वासास्तु न सशब्दा नापि स्थूला नापि त्वरिताः  
करणीयाः । किं त्वसंलक्ष्यमाणा मन्दं मन्दमनाभोगेन यथा प्रविशेयु-  
निर्गच्छेयुर्वा तथा करणीयम् ।

तत्र प्रथमं तावद् योगी यथादृष्टश्रुते तथागतविग्रहे चित्तं स्थापयि-  
त्वा शमथं निष्पादयेत् । तच्च तथागतविग्रहम् उत्तप्तकनकावदातं 10  
लक्षणानुव्यञ्जनालंकृतं पर्षन्मण्डलमध्यगतं नानाविधैरुपायैः सत्त्वार्थं  
कुर्वन्तं प्राबन्धिकेन मनसिकारेण तद्गुणाभिलाषं समुपादाय लयौद्धत्यादीन्<sup>२</sup>  
व्युपशमय्य तावद् ध्यायेद् यावत् स्फुटतरं पुरोऽवस्थितमिव तं पश्येत् ।  
ततः तस्य तथागतविग्रहप्रतिबिम्बकस्यागतिगतिं निरूपयतो विपश्यनां  
भावयति<sup>३</sup> । ततश्चैवंविधं विचिन्तयेत् । यथेदं तथागतविग्रहप्रतिबिम्बकं 15  
न कुतश्चिद् आगतं नापि क्वचिद् गमिष्यति तिष्ठदपि स्वभावशून्यम्  
आत्मात्मीयरहितं तथा एव सर्वधर्माः स्वभावशून्या आगतिगतिरहिताः  
प्रतिबिम्बोपमाः, भावादिरूपरहिता इति विचार्योपरतविचारेण निर्जल्पैक-  
रसे मनसा तत्त्वं भावयन् यावदिच्छं तिष्ठेत् । अयं च समाधिः  
प्रत्युत्पन्नबुद्धसंमुखावस्थितसमाधिर्निर्दिष्टः । अस्य चानुशंसा<sup>४</sup> विस्तर- 20  
तस्तत्रैव सूत्रे बोधयितव्या ।

एतावता प्रकारेण सर्वधर्मसंग्रहो भवति, तत्र चित्तम् उप-  
निबध्य लयौद्धत्यादिप्रशमेन शमथं निष्पादयेत् । रूप्यरूपिभेदेन च

१. किं तर्हि-भो० न । २. आदीन्-भो० न । ३. दूची-पा०-भवेत् । ४. भो०  
पा०-समाधेरनुशंसा ।



संक्षेपात् सर्वधर्मसंग्रहः । तत्र रूपस्कन्धसंगृहीता रूपिणः । वेदनादिस्कन्ध-  
स्वभावा अरूपिणः । तत्र बाला भावादिग्रहाभिनिवेशाद् विपर्यस्तधियः  
संसारे परिभ्रमन्ति । तेषां विपर्यासापनयनाय, तेषु च महाकरुणाम्  
आमुखीकृत्य, निष्पन्नशमथो योगी तत्त्वाधिगमाय ततो विपश्यनां  
5 भावयेत् । भूतप्रत्यवेक्षणा च विपश्यनोच्यते । भूतं पुनः पुद्गल-  
धर्मनैरात्म्यम् ।

तत्र पुद्गलनैरात्म्यं या स्कन्धानामात्मात्मीयरहितता । धर्मनैरात्म्यं  
या तेषामेव मायोपमता । तत्रैवं योगी निरूपयेत् । न तावद् रूपादि-  
व्यतिरिक्तः पुद्गलोऽस्ति । तस्या<sup>१</sup> प्रतिभासनात् । रूपादिष्वेवाहमिति  
10 प्रत्ययोत्पत्तिश्च । न चापि रूपादिस्कन्धस्वभावः पुद्गलः । तेषां रूपादीनाम-  
नित्यानेकस्वभावत्वात् । पुद्गलस्य च नित्यैकरूपेण परैरूपकल्पितत्वात् ।  
नापि तत्त्वान्यत्वाभ्याम् अनभिलाष्यपुद्गलस्य वस्तुत्वं युक्तम् । वस्तुसतः  
प्रकारान्तराभावात् । तस्माद्<sup>२</sup> अलीकविभ्रम एवायं लोकस्य यदुताहं  
ममेति निश्चयं प्रतिपन्नस्य । ततो रूपिणोऽपि धर्मान् धर्मनैरात्म्याधिगमाय  
15 विचारयेत्—किम् एते चित्तव्यतिरेकेण परमार्थसन्तः स्थिताः आहो-  
स्विच्चित्तमेव रूपादिनिर्भासं स्वप्नावस्थायां प्रतिभासवत् प्रतिभासत<sup>३</sup>  
इति । स तान् परमाणुशो निरूपयन्, परमाणूश्च भागशः प्रत्यवेक्षमाणो  
नोपलभते । तथा चानुपलभमानस्तेषु अस्तिनास्तित्वविकल्पान्  
निवर्तयति ।

20 चित्तमात्रञ्च त्रैधातुकम् अवतरति नान्यथा । अथ चोक्तं लङ्कावतारे<sup>४</sup>—

अणुशो विभजति द्रव्यं न चैव रूपं विकल्पयेत् ।

चित्तमात्रव्यवस्थानं कुदृष्ट्या न प्रसीदति ॥ इति ।

१. दूवी-पा०—तस्य प्रतिभासनात् ।

२. भो० पा०—तस्मात् तद्यथा ।

३. प्रतिभासत-भो० न । ४. देगे-का० ( सूत्र 'च' १७५ ) सं० ॥१०॥४३६॥ पृ० १३६,  
दरभंगा ।



तस्यैवं भवति चित्तमेवानादिकालिकवितथरूपाद्यभिनिवेशवशात् स्वप्नोपलभ्यमानरूपादिप्रतिभासवद् बालानां बहिः विच्छिन्नमिव रूपादिप्रतिभासं ख्याति । तस्माच्चित्तमात्रमेव त्रैधातुकम् । स एवं चित्तमेव सकलधर्मप्रज्ञप्तिं निश्चित्य तत्र प्रत्यवेक्ष्य च सर्वधर्माणां स्वभावः प्रत्यवेक्षितो भवतीति चित्तस्वभावमपि प्रत्यवेक्षते । स एवं विचारयति, 5 चित्तमपि परमार्थतो मायावद् अनुत्पन्नम् । यदा हि अलीकस्वभावरूपाद्या-कारोपग्रहेण चित्तमेव चित्राकारं प्रतिभासते, तदाऽस्यापि रूपादिवत् तदव्यतिरेकात् सत्यत्वं<sup>१</sup> कुत्र भवेत् ? यथा चित्राकारतया रूपादयो नैकानेक-स्वभावास्तथा चित्तमपि तदव्यतिरेकेण नैकानेकस्वभावम् । नापि चित्त-मुत्पाद्यमानं कुतश्चिद् आगच्छति । नापि निरुध्ययानं क्वचिद् गच्छति । 10 नापि स्वपरोभयतः परमार्थेनास्योत्पादो युक्तः । तस्मान् मायोपममेव चित्तम् । यथा चित्तमेवं सर्वधर्मा मायावत् परमार्थतोऽनुत्पन्नाः ।

येनापि चित्तेन प्रत्यवेक्षते योगी तस्यापि स्वभावं परीक्षमाणो नोप-लभते । तद् एवं यत्र यत्रालम्बने योगिनश्चित्तं प्रसरेत् तस्य तस्य स्वभावं परीक्षमाणो [ तत् स्वभावमपि नोपलभते ]<sup>२</sup>ऽसौ यदा नोपलभते तदा 15 सर्वमेव वस्तु विचार्य कदलीस्कन्धवद् असारमवगम्य, ततश्चित्तं विवर्त-यति । ततो भावादिविकल्पोपरतौ सर्वप्रपञ्चविगतम् आनिमित्तं योगं प्रतिलभते । तथा चोक्तम् आर्यरत्नमेघे<sup>३</sup>—“स एवम् अपक्षालकुशलः सर्व-प्रपञ्चविगमाय शून्यताभावनाया योगमापद्यते । स शून्यताभावनाबहुलो येषु येषु स्थानेषु चित्तं प्रसरति चित्तमभिरमते तानि तानि स्थानानि 20 स्वभावतः परिगवेषमाणः शून्यं प्रतिविध्यति [ यत् चित्तं तदपि परीक्ष-माणं शून्यं प्रतिविध्यति ]<sup>४</sup> येनापि चित्तेन परीक्षते तद् अपि स्वभावतः

१. भो० पा०—सुखमेव । २. भो० पा०—[ तत् स्वभावमपि नोपलभते ] । ३. देगे-का० (सूत्र—‘वा’ ६२) । ४. भो० पा०—[ यत् चित्तं तदपि परीक्षमाणः शून्यं प्रतिविध्यति ] ।



परिगवेष्यमाणं शून्यं प्रतिविध्यति । स एवम् उपपरीक्षमाणो निर्निमित्ततायां योगमापद्यते ।" तद् एव अनेनैवं दर्शितं भवति । यस्तु नोपपरीक्षते तस्य नास्ति निर्निमित्ततायां प्रवेश इति ।

- स एवं धर्माणां स्वभावमुपपरीक्षमाणो यदा नोपलभते, तदास्तीति  
 5 न विकल्पयति नास्तीति न विकल्पयति । योऽसौ नास्तीति कल्प्यते तस्य बुद्धौ सर्वदैवाप्रतिभासनात् । यदि हि भावः कदाचिद् दृष्टो भवेत्, तदा तस्य प्रतिषेधान् नास्तीति कल्पयेत् । यदा कालत्रयेऽपि योगिना प्रज्ञया निरूपयता भावो नोपलब्धः तदा कस्य प्रतिषेधान् नास्तीति कल्पयेत् ।  
 10 एवमन्ये विकल्पास्तस्य तदानीं न सन्ति एव, भावाभावविकल्पाभ्यां सर्वस्य विकल्पस्य व्याप्तत्वात् । एवं व्यापकाभावाद् व्याप्यस्याप्यभावः । एवं सति निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पतामवतीर्णो भवति, रूपादिषु चानिश्चितो भवति । प्रज्ञया च निरूपयतः सकलवस्तुस्वभावानुपलम्भात् प्रज्ञोत्तरध्यायी भवति ।  
 स एवं पुद्गलधर्मनैरात्म्यमयं तत्त्वमवतीर्णः, अपरस्य<sup>१</sup> परीक्षणीयस्य चाभावाद्, उपरतविचारेण निर्विकल्पैकरसेन<sup>२</sup> मनसा स्वरसवाहिना,  
 15 अनभिसंस्कारतः तद् एव तत्त्वं स्फुटतरम् अवधारयन् योगी तिष्ठेत् । तत्र च स्थितश्चित्तबन्धं न विक्षिपेत् ।

- यदान्तरा चित्तं बहिर्धा विक्षिप्तं पश्येत् तदा तत्स्वभावप्रत्यवेक्षणेन विक्षेपं प्रशमय्य, पुनस्तत्रैव चित्तमुपर्युपरि प्रेरयेत् । यदा तु तत्रानभिरतं चित्तं पश्येत्, तदा समाधेर्गुणदर्शनाद् अभिरतिं तत्र भावयेत् । विक्षेपे च  
 20 दोषदर्शनाद् अरतिं प्रशमयेत् । अथ स्त्यानमिद्धाभिभवाद् यदा<sup>३</sup> प्रचारतया लीनं चित्तं पश्येत्, लयाभिषङ्कितं वा तदा प्रमोद्यवस्तु बुद्धरूपादिकमालोकसंज्ञां वा मनसिकृत्य लयमुपशमयेत्, ततस्तद् एव तत्त्वं दृढतरं

१. भो० पा०—ब्रह्मव्यपरीक्षणीयस्य । २. भो० पा०—अनभिलार्पकरसेन । ३. भो० पा०—अस्पष्टप्रचारतया ।



गृहीयात् । यदा तु जात्यन्धवद् अन्धकारप्रविष्टपुरुषवद् विनिमीलिताक्षवत् स्फुटतरं तत्त्वं नावधारयेद् योगी, तदा तस्य लीनं चित्तं<sup>१</sup> वेदितव्यं विपश्यनारहितं च । अथ यथा पूर्वानुभूतविषयस्पृहया चित्तमन्तरा समुद्धतं पश्येद् औद्धत्याभिशङ्कितं वा, तदानित्यतादि संवेगवस्तुमनसिकाराद् औद्धत्यं शमयेत् । ततः पुनः तत्रैव तत्त्वे चित्तानभिसंस्कारवाहितायां यत्नं<sup>२</sup> कुर्वीत । यदा च विक्षिप्तपुरुषवद् वानरवद् वाऽनवस्थितवृत्ति चित्तं भवेत्, तद् औद्धत्यं बोद्धव्यं शमथरहितं च । अथ यदा लयौद्धत्याभ्यां विविक्ततया समप्रवृत्तं स्वरसवाहि स्फुटतरं तत्रैव<sup>३</sup> तत्त्वे चित्तम् उत्पाद्यते तदाभोग-शिथिलीकरणाद् उपेक्षणीयम् । तदा च शमथविपश्यनायुगनद्धवाही मार्गो निष्पन्नो वेदितव्यः ।

10

यदा च विपश्यना भावयेत् प्रज्ञातिरिक्ततरा भावयेत्, तदा शम-थस्याल्पत्वात् प्रवातस्थितप्रदीपवत् प्रचलत्वाच्चित्तस्य न स्फुटतरं तत्त्वदर्शनं भवेत् । अतस्तदा शमथो भावयितव्यः । शमथस्याभ्याधिक्ये मिद्धावष्टब्धपुरुषस्येव स्फुटतरं तत्त्वदर्शनं न स्यात् । तस्मात् तदा प्रज्ञा<sup>३</sup> भावयितव्या । यदा समप्रवृत्ते द्वे अपि भवतो युगनद्धवाहिबलीवर्द्धयवत्<sup>४</sup> तदानभिसंस्कारेणैव तावत् स्थातव्यं यावत् कायचित्तपीडा न भवेत् ।

15

संक्षेपतः सर्वस्यैव समाधेः षड् दोषा भवन्ति । कौसीद्यम्, आलम्बनसंप्रमोषः, लयः, औद्धत्यम्, अनाभोगः, आभोगश्चेति । एषां प्रतिपक्षेणाष्टौ प्रहाणसंस्कारा भावनीयाः । श्रद्धा<sup>५</sup>, छन्दः, व्यायामः, प्रसन्नधिः, स्मृतिः, संप्रजन्यम्, चेतना, उपेक्षा चेति । तत्राद्याश्चत्वारः<sup>६</sup> कौसीद्यप्रतिपक्षाः । तथाहि—समाधिगुणेष्वभिसंप्रत्ययलक्षणया श्रद्धया योगिनोऽभिलाषः समुत्पद्यते । ततोऽभिलाषवान् वीर्यमारभते । ततो वीर्या-रम्भणात् कायचित्तयोः कर्मण्यतां भावयति । ततः प्रसन्नधकायचेतसः

20

१. चित्तं-भो० न । २. तत्रैव-भो० न । ३. भो० पा०-पुनः प्रज्ञा ।  
४. भो० पा०-तद्यथा श्रद्धा ।



कौसीद्यं व्यावर्तते । ततः [ श्रद्धादयः कौसीद्यप्रहाणाय भवन्ति ]<sup>१</sup> तदर्थं ते भावनीयाः । स्मृतिरालम्बन-संप्रमोषस्य प्रतिपक्षः । संप्रजन्यं लयौ-  
द्धत्ययोः प्रतिपक्षः । तयोस्तेन समुपेक्ष्य परिवर्जनात् । लयौद्धत्याप्रशमन-  
काले<sup>२</sup> तु अनाभोगदोषः ततस्तत्प्रतिपक्षेण चेतना भावनीया । लयौद्धत्य-  
५ प्रशमे सति, यदा प्रशमवाहि चित्तं भवेत्, तदाभोगदोषः । तस्य प्रति-  
पक्षस्तदानीम् उपेक्षा भावनीया । यदि समप्रवृत्ते चित्ते आभोगः क्रियते,  
तदा चित्तं विक्षिप्यते । लीनेऽपि चित्ते सति यद्याभोगो न क्रियते, तदा  
विपश्यनारहितत्वाद् अन्धपुरुषवच्चित्तं लीनं स्यात् । तस्मात् लीनचित्तं  
निगृह्णीयाद्, उद्धतं प्रशमयेत्, पुनः<sup>३</sup> समप्राप्तम् उपेक्षेत ।

- 10 ततो यावदिच्छं योगी तावद् अनभिसंस्कारेणैव तत्त्वं भावयंस्तिष्ठेत् ।  
सत्यां तु काया<sup>४</sup>दिपीडायां पुनः पुनरन्तरा सकलमेव लोकं व्यवलोक्य  
मायाजल<sup>५</sup> चन्द्रोपमप्रतिभासं [वत्]<sup>६</sup> अवतरेत् । तथा चोक्तम् अविकल्प-  
प्रवेशे<sup>७</sup>-लोकोत्तरेण ज्ञानेनाकाशसमतलान् सर्वधर्मान्पश्यति । पृष्ठलब्धेन  
पुनर्मयामरोचिस्वप्नो<sup>८</sup>दकचन्द्रोपमान् पश्यतीति । तद् एवं मायोपमं जगद्  
15 अवगम्य, सत्त्वेषु महाकरुणाम् आमुखीकृत्यैवम् अनुविचिन्तयेत् । एवंविधं  
धर्मगाम्भीर्यम् अनवगच्छन्तोऽमी बालबुद्धय आदिशान्तेष्वेव धर्मेषु  
भावादिसमारोपविपर्यस्ता विविधकर्मक्लेशान् उपचिन्वन्ति । ततः संसारे  
परिभ्रमन्ति, ततोऽहं करिष्यामि यथैतान् एवंविधं धर्मागाम्भीर्यम् अवबोध-  
येयम् इति, ततो विश्रम्य पुनरपि तथैव सर्वधर्मनिराभासं समाधिमवतरेत् ।  
20 चित्तखेदे सति, तथैव विश्रम्य पुनरवतरेत् । एवम् अनेन क्रमेण घटिकाम्  
[ अर्धप्रहरम् ]<sup>९</sup> एकप्रहरं वा यावन्तं कालं शक्नोति तावन्तं  
कालं तिष्ठेत् ।

१. दूची-पा०-श्रद्धादयः प्रभवन्तीति । २. दूची-पा०-प्रशमनकाले । ३. पुनः-  
भो० न । ४. भो० पा०-कायचित्तिपीडा । ५. भो० पा०-मायास्वप्ने । ६. भो० पा०-  
[ प्रतिभासंवत् ] । ७. देगे-का० ( सूत्र-‘व’ ३ ) । ८. स्वप्न-भो० न । ९. भो० पा०-  
[ अर्धप्रहरम् ] ।



तत इच्छया समाधेः उत्थातुं पर्यङ्कम् अभित्वैवम् अनुविचिन्तयेत् । यदि नामामी धर्माः सर्व एव परमार्थतोऽनुत्पन्नास्तथापि मायावत् प्रति-  
नियतविविधहेतुप्रत्ययसामग्रीवशेन विचित्रा एवाविचाररमणीयाः प्रवर्तन्ते,  
तेन नोच्छेददृष्टिप्रसङ्गः । नाप्यपवादान्तस्य<sup>१</sup>, यतश्च प्रज्ञया विचार्यमाणा  
नोपलभ्यन्ते, तेन न शाश्वतदृष्टि<sup>२</sup>प्रसङ्गो नापि समारोपान्तस्य । तत्र ये 5  
प्रज्ञाचक्षुर्विकलतया विपर्यस्तमतय आत्माभिनिविष्टा विविधानि कर्माणि  
कुर्वन्ति ते संसारे परिभ्रमन्ति । ये पुनरेकान्तेन संसारविमुखा  
महाकारुण्यविकलतया च न [ सत्त्वाः<sup>३</sup> ]<sup>३</sup> दानादिपारमिताः परिपूरयन्ति  
आत्मानं दमयन्ति<sup>४</sup> ते सत्त्वा उपायविकलतया श्रावकप्रत्येकबुद्धबोधौ  
पतन्ति । 10

ये तु अस्वभावं जगद् अवगम्य<sup>५</sup> महाकारुण्यबलेन सकलजगदभ्यु-  
द्धरणकृतनिश्चया मायाकारवद् अविपर्यस्तधियो विपुलपुण्यज्ञानसंभारं  
समुपायन्ति ते तथागतं पदं प्राप्यासंसारमशेषस्य जगतः सर्वाकारं हित-  
सुखानि संपादयन्तः तिष्ठन्ति । ते च ज्ञान [सम्भारः]<sup>६</sup> बलेन [समस्तः]<sup>७</sup>  
क्लेशप्रहाणान् न संसारे पतन्ति सर्वसत्त्वापेक्षया च समुपार्जितविपुला- 15  
प्रमेयपुण्यसंभारवशेन न निर्वाणे पतन्ति, सर्वसत्त्वोपजीव्याश्च भवन्ति ।  
तस्मान् मया<sup>८</sup> सकलसत्त्वहितसुखाधानार्थिनाऽप्रतिष्ठितनिर्वाणम् अधिगन्तु-  
कामेन विपुलपुण्यज्ञान-संभारोपार्जनेऽभियोगः [सदा]<sup>९</sup> करणीयः । तथा  
चोक्तम् आर्यतथागतगुह्यसूत्रे<sup>१०</sup>—“ज्ञानसम्भारः सर्वक्लेशप्रहाणाय संवर्तते ।  
पुण्यसम्भारः सर्वसत्त्वोपजीवितायै संवर्तते । तस्मात् तर्हि भगवन् बोधि- 20  
सत्त्वेन महासत्त्वेन पुण्यसम्भारे ज्ञानसंभारे च सर्वदा<sup>११</sup>ऽभियोगः करणीयः”  
इति । आर्यतथागतोत्पत्तिसंभवसूत्रे<sup>१२</sup> चोक्तम्—“स खलु पुनरेष तथागतानां

१. भो० पा०—समारोपान्तः । २. दृष्टि—भो० न । ३. भो० पा०—[ सत्त्वार्थः ] ।  
४. भो० पा०—दमयन्त्येव । ५. भो० पा०—अवगम्यापि । ६. भो० पा०—[ ज्ञानसम्भारः ] ।  
७. भो० पा०—[ समस्तक्लेशः ] । ८. मया—भो० न । ९. भो० पा०—[ सदा करणीयः ] ।  
१०. देगे—का० .....? ११. सर्वदा—भो० न । १२. देगे—का० ( अवर्तसक—‘ग’ द० ) ।



संभवो नैकेन कारणेन भवति । तत् कस्य हेतोः ? समुदागतैस्तावद् भो  
जिनपुत्राप्रमेयशतसहस्रदशकारणैस्तथागताः समुदागच्छन्ति । कतमैर्दश-  
भिर्यदुताप्रमेयपुण्यज्ञानसम्भारातृप्तिसमुदागमकारणेनेति” विस्तरः । आर्य-  
विमलकीर्तिनिर्देशे चोक्तम्—“शतपुण्यनिर्जाताः सर्वकुशलधर्मनिर्जाता  
5 अप्रमाणकुशलमूलकर्मनिर्जाताः कायास्तथागतस्येति” विस्तरः ।

तद् एवं कृत्वा शनैः पर्यङ्कं भित्त्वा दशदिग्व्यवस्थितान् सर्वबुद्ध-  
बोधिसत्त्वान् प्रणिपत्य तेभ्यश्च पूजास्तोत्रोपहारं कृत्वार्यभद्रचर्यादि  
प्रणिधानं प्रणिदधीत । ततः शून्यताकरुणागर्भानुत्तरसंबोधिपरिणामित-  
सकल<sup>१</sup>दानादिपुण्यसंभारोपार्जनाभियुक्तो भवेत् ।

- 10 यस्तु मन्यते, चित्तविकल्पसमुत्थापितशुभाशुभकर्मवशेन सत्त्वाः  
स्वर्गादिकर्म<sup>२</sup>फलमनुभवन्तः संसारे संसरन्ति । ये पुनर्न किञ्चिच्चिन्तयन्ति  
नापि किञ्चित् कर्म<sup>३</sup>कुर्वन्ति ते परिमुच्यन्ते संसारात् । तस्मान्न किञ्चि-  
च्चिन्तयितव्यम् । नापि दानादिकुशलचर्या कर्तव्या । केवलं मूर्खजन-  
मधिकृत्य दानादिकुशलचर्या निर्दिष्टेति । तेन सकलमहायानं प्रतिक्षिप्तं  
15 भवेत् । महायानमूलत्वाच्च सर्वयानानां तत्प्रतिक्षेपेण सर्वम् एव यानं  
प्रतिक्षिप्तं स्यात् । तथा हि ‘न किञ्चिच्चिन्तयितव्यमिति’ ब्रुवता  
भूतप्रत्यवेक्षालक्षणा प्रज्ञा प्रतिक्षिप्ता भवेत् । भूतप्रत्यवेक्षा-मूलत्वात् सम्यग्-  
ज्ञानस्य तत्प्रतिक्षेपा<sup>४</sup>ल्लोकोत्तरापि प्रज्ञा<sup>५</sup> प्रतिक्षिप्ता भवेत् । तत्प्रतिक्षेपात्  
सर्वाकारज्ञता प्रतिक्षिप्ता भवेत् । नापि<sup>६</sup> दानादिचर्या कर्तव्येति वदता  
20 चोपायो दानादिः स्फुटतरमेव प्रतिक्षिप्तः ।

एतावद् एव च संक्षिप्तं महायानं यदुत प्रज्ञोपायश्च । यथोक्तम्  
आर्यगयाशीर्षे<sup>७</sup>—“द्वाविमौ बोधिसत्त्वानां संक्षिप्तौ मार्गौ । कतमौ द्वौ ? यदुत

१. देगे-का० ( सूत्र-‘म’ १८३ ) । २. भो० पा०-हे मित्राणि शतपुण्य.... । ३. भो०  
पा०-महाप्रणिधानं । ४. सकल-भो० न । ५. कर्म-भो० न । ६. कर्म-भो० न । ७. भो०  
पा०-तत्प्रतिक्षेपात् मूलच्छेदत्वात् । ८. भो० पा०-प्रज्ञापि । ९. तत्प्रतिक्षेपात्.....भवेत्-भो०  
न । १०. नापि-भो० न । ११. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ २८८ ) ।



प्रज्ञा चोपायश्च ।” आर्यतथागतगुह्यसूत्रे<sup>१</sup> चोक्तम्—“इमौ च प्रज्ञोपायौ बोधिसत्त्वानां सर्वपारमितासंग्रहाय संवर्तेते” इति । ततश्च महायानं प्रतिक्षिपता महत् कर्माविरणं कृतं स्यात् । तस्माद् [ महायानं प्रतिक्षिपतः, अल्पश्रुतस्य, आत्मदृष्टि परामृशतः, ]<sup>२</sup> अस्यानुपासितविद्वज्जनस्यानवधारित-तथागत-प्रवचननीतेः स्वयं विनष्टस्य परान् अपि नाशयतो युक्त्यागम-<sup>५</sup> दूषितत्वात्, विषसंसृष्टवचनं सविषभोजनमिव आत्मकामेन धीमता दूरत एव परिहर्तव्यम् ।

तथा ह्यनेन भूतप्रत्यवेक्षां प्रतिक्षिपता धर्मप्रविचयाख्यं प्रधानम् एव बोध्यङ्गं<sup>३</sup> प्रतिक्षिप्तं स्यात् । विना च भूतप्रत्यवेक्षया योगिनः कथम्<sup>४</sup> अनादिकालाभ्यस्तरूपादिभावाभिनिवेशस्य चित्तं निर्विकल्पतां प्रविशेत्<sup>५</sup> ?<sup>१०</sup> सर्वधर्मेष्वस्मृत्यमनसिकारेण प्रविशतीति चेत्, तद् अयुक्तम् । न हि विना भूतप्रत्यवेक्षयानुभूयमानेष्वपि सर्वधर्मेष्वस्मृतिरमनसिकारो वा शक्यते कर्तुम् । यदि च नामामी धर्मा मयाऽस्मर्तव्या नापि मनसिकर्तव्या इत्येवं भावयन्नस्मृतिमनसिकारौ तेषु भावयेत् तदा सुतराम् एव तेन ते स्मृता मनसिकृताश्च स्युः । अथ स्मृतिमनसिकाराभावमात्रम् अस्मृत्यमनसिकारा-<sup>१५</sup> वभिप्रेतौ, तदा तयोरभावः केन प्रकारेण भवतीति एतद् एव विचार्यते । न चाभावः कारणं युक्तम्, येन ततो [निर्निमित्तामनसिकारात्]<sup>६</sup> निर्विकल्पता भवेत् । [तन्मात्रतोऽविकल्पतायां]<sup>७</sup> संमूर्च्छितस्यापि स्मृतिमनसिकाराभावान् निर्विकल्पताप्रवेशप्रसङ्गः । न च भूतप्रत्यवेक्षां विनाऽन्य उपायोऽस्ति येन प्रकारेणास्मृत्यमनसिकारौ कुर्यात् ।<sup>२०</sup>

सत्यपि चास्मृत्यमनसिकारसम्भवे, विना भूतप्रत्यवेक्षया निःस्वभावता धर्माणां कथम् अवगता भवेत् ? न हि स्वभावत एव धर्माः

१. वेगे-का०.....? । २. भो० पा०-[ महायानं....परामृशतः ] । ३. भो० पा०-सम्यग्बोध्यङ्गं । ४. भो० पा०-केन उपायेन । ५. भो० पा०-व्यवस्थाप्यते । ६. भो० पा०-[ निर्निमित्तामनसिकारात् ] । ७. भो० पा०-[ तन्मात्रतोऽविकल्पतायां ] । ८. भो० पा०-कथं प्रविशेत् ?



शून्याः स्थिता इत्येवं विना तत्प्रत्यवेक्षया तच्छून्यताप्रतिवेधो भवेत् ।  
नापि विना शून्यताप्रतिवेधेन आवरणप्रहाणं संभवति सर्वत्र सर्वेषां  
मुक्तिप्रसङ्गात् ।

किं च तस्य योगिनो यदि सर्वधर्मेषु मुषितस्मृतितया मूढतया वा  
5 स्मृतिमनसिकारौ न प्रवर्तते, तदाऽत्यन्तमूढः कथम् असौ योगी भवेत् ।  
विना च भूतप्रत्यवेक्षया तत्रास्मृतिम् अमनसिकारं चाभ्यस्यता मोह एवाभ्य-  
स्तो भवेत् । तत एव सम्यग्ज्ञानालोको दूरीकृतः स्यात् । अथासौ न  
मुषितस्मृतिर्नापि मूढः, तदा कथं तत्रास्मरणम् अमनसिकारं कर्तुं शक्नुयाद्  
विना भूतप्रत्यवेक्षया । न हि स्मरन्नेव न स्मरति, पश्यन् एव न पश्य-  
10 तीति युक्तम् अभिधातुम् । अस्मृत्यमनसिकाराभ्यासाच्च कथं पूर्वनिवासा-  
नुस्मृत्यादि-बुद्धधर्मोदयो भवेत्, विरोधात् । न ह्युष्णविरुद्धं शीतम् आसेव-  
मानस्य उष्णस्पर्शसंवेदनं भवेत् ।

किं च समाधिसमापन्नस्य योगिनो यदि मनोविज्ञानम् अस्ति, तदा-  
ऽवश्यं तेन किञ्चिद् आलम्बयितव्यम् । न हि पृथग्जनानां सहसा निराल-  
15 म्बनं ज्ञानं भवेत् । अथ नास्ति, तदा कथं निःस्वभावता धर्माणामवगता  
भवेत् ? केन च प्रतिपक्षेण क्लेशावरणं<sup>१</sup> प्रहीयते ? न च चतुर्थध्याना-  
लाभिनः पृथग्जनस्य चित्तनिरोधः संभवति । तस्मात् सद्धर्मे यावत्स्मृत्य-  
मनसिकारौ पठितौ तौ भूतप्रत्यवेक्षापूर्वकौ द्रष्टव्यौ । अस्माद् भूतप्रत्य-  
वेक्षयाऽस्मृतिर्मनसिकारश्च शक्यते कर्तुम्, नान्यथा । तथा हि यदा  
20 निरूपयन् सम्यक्प्रज्ञया योगी कालत्रये परमार्थतः समुत्पन्नं न कञ्चिद्  
धर्मं पश्यति, तदा तत्र कथं स्मृतिमनसिकारौ कुर्यात् । यो हि कालत्रये-  
ऽप्यसत्त्वान् नानुभूतः परमार्थतः स कथं स्मर्येत, मनसि वा क्रियेत ।  
ततोऽसौ सर्वप्रपञ्चोपशमं निर्विकल्पं ज्ञानं प्रविष्टो भवेत् । तत्प्रवेशाच्च  
शून्यतां प्रतिविध्यति तत्प्रतिवेधाच्च प्रहीणसकलकुदृष्टिजालो भवति ।

१. भो० पा०-बुद्धधर्मादि । २. आवरणं-भो० न ।



उपाययुक्तः प्रज्ञासेवनतश्च सम्यक् संवृतिपरमार्थसत्यकुशलो भवति ।  
 अतोऽनावरणज्ञानलाभात् सर्वान् एव बुद्धधर्मान् अधिगच्छति । तस्मान्न  
 विना भूतप्रत्यवेक्षया सम्यग्ज्ञानोदयो नापि क्लेशावरणप्रहाणम् । तथा  
 चोक्तं मञ्जुश्रीविकृतिवृत्तसूत्रे<sup>१</sup>—“कथं दारिके बोधिसत्त्वो विजितसंग्रामो  
 भवति ? आह, यो मञ्जुश्रीः विचाय<sup>२</sup> विचाय सर्वधर्मान् नोपलभते” 5  
 इति । तस्माद् विस्फारितज्ञानचक्षुः प्रज्ञाशस्त्रेण क्लेशारीन् निर्जित्य,  
 निर्भयो विहरन् योगी, न तु कातरपुरुष इव विनिमीलिताक्षः ।  
 आर्यसमाधिराजेऽप्युक्तम्<sup>३</sup>—

नैरात्म्यधर्मान् यदि प्रत्यवेक्षते  
 तान् प्रत्यवेक्ष्य यदि भावयेत् । 10  
 स हेतु निर्वाणफलस्य प्राप्तये  
 योज्यहेतुर्न स भोति शान्तये ॥ इति ।

सूत्रसमुच्चये चोक्तम्—“आत्मना विपश्यनायोगम् अनुयुक्तो विहरति परांश्च  
 विपश्यनायां नाभियोजयतीति मारकमेति ।” विपश्यना च भूतप्रत्यवेक्षा-  
 स्वभावा आर्यरत्नमेघ-सन्धिनिर्मोचनादौ, आर्यरत्नमेघे च<sup>४</sup>—“विपश्यनां 5  
 निरूपयतो निःस्वभावताप्रतिवेधाद् अनिमित्तप्रवेश उक्तः ।” आर्यलङ्का-  
 वतारे<sup>५</sup> चोक्तम्—“यस्मात्, महामते, बुद्ध्या विचार्यमाणानां स्वसामान्यलक्षणं  
 भावानां<sup>६</sup> नावधार्यते । तेनोच्यन्ते निःस्वभावाः सर्वधर्माः” इति । तत्र तत्र  
 सूत्रे या भगवता नानाप्रकारा प्रत्यवेक्षा निर्दिष्टा सा विरुध्यते, यदि  
 भूतप्रत्यवेक्षा न कर्तव्या । तस्माद् एवं युक्तं वक्तुं वयम् अल्पप्रज्ञा अल्प- 20  
 वीर्याश्च न शक्नुमो बाहुश्रुत्यं पर्येषितुमिति । न हि तत्प्रतिक्षेपो युक्तो भगवता

१. देगे-का० ( सूत्र-‘ख’ २३१ ) । २. भो० पा०-मञ्जुश्रीः, विचाय सर्वधर्म..... ।  
 ३. देगे-का० ( सूत्र-‘द’ २७ ) सं०-६ परि० पृ० ४६, दरभङ्गा । ४. देगे-तेन०  
 ( मध्यमक-‘कि’ १६४ ) । ५. देगे-का० सूत्र.....? । ६. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १०१ )  
 सं०-२ परि० पृ० ४१ दरभङ्गा । ७. भावनां-भो० न ।



- बहुधा बाहुश्रुत्यस्य वर्णितत्वात् । तत् पुनर्ब्रह्मपरिपृच्छायाम् उक्तम्<sup>१</sup>—“ये त्वचिन्त्येषु धर्मेषु [चिन्तन]<sup>२</sup> विप्रयुक्ताः तेषाम् अयोनिश इति । तत्रापि ये परमार्थतोऽनुत्पन्नानां धर्माणाम् उत्पादं परिकल्प्यान्त्य-  
 दुःखादिरूपेण श्रावकादिवच्चिन्तां प्रकुर्वन्ति, तेषां समारोपापवादान्तेन  
 5 चिन्तां प्रवर्तयताम् अयोनिशः तद् भवतीति तत्प्रतिषेधाय यद् उक्तं न भूतप्रत्यवेक्षायाः स प्रतिषेधः तस्याः सर्वसूत्रेष्वनुज्ञानात् । तथा च तत्रैव ब्रह्मपरिपृच्छायाम्<sup>३</sup> उक्तम्—“चित्तशूरो<sup>४</sup> बोधिसत्त्व<sup>५</sup> आह—यश्चित्तेन सर्वधर्माश्चिन्तयति तत्र चाक्षतोऽनुपहतः स तेनोच्यते बोधिसत्त्वः” इति । तत्रैवोक्तम्<sup>६</sup>—“कथं वीर्यवन्तो भवन्ति, यदा सर्वज्ञताचित्तं विचीयमाना  
 10 नोपलभन्ते” इति । पुनः तत्रैवोक्तम्<sup>७</sup>—“मतिमन्तश्च ते भविष्यन्ति योनिशो धर्मान् प्रत्यवेक्षणतयेति” । पुनः तत्रैवोक्तम्<sup>८</sup>—“प्रविचिन्वन्ति ते धर्मान् यथा मायामरीचिकेति” ।

- तद् एवं यत्र यत्राचिन्त्यादिप्रपञ्चः<sup>९</sup> श्रूयते, तत्र तत्र श्रुतचिन्ता-  
 मात्रेणैव तत्त्वाधिगमं ये मन्यन्ते, तेषाम् अभिमानप्रतिषेधेन प्रत्यात्मवेद-  
 15 नीयत्वं धर्माणां प्रतिपादयते । अयोनिशश्च चित्तप्रतिषेधः क्रियत इति बोद्धव्यम्, न भूतप्रत्यवेक्षायाः प्रतिषेधः । अन्यथा बहुतरं युक्त्यागमविरुद्धं स्यात् । यथोक्तं प्राक् । किञ्च यद् एव श्रुतचिन्तामय्या प्रज्ञया विदितं तद् एव भावनामय्या प्रज्ञया भावनीयं नान्यत् । संदिष्ट-धावनभूम्यश्व-  
 धावनवत् । तस्मात् भूतप्रत्यवेक्षा कर्तव्या । यदि नामासौ विकल्पस्वभावा  
 20 तथापि योनिशो मनसिकारस्वभावत्वात्, ततो भूत<sup>१०</sup> निर्विकल्पज्ञानोदय इति कृत्वा तज्ज्ञानार्थिना सा सेवनीया । निर्विकल्पे च भूतज्ञानाग्नौ

१. देगे-का० (सूत्र-‘ब’ ३२) । २. भो० पा०-[ धर्मेषु चिन्तन ] । ३. देगे-का० (सूत्र-‘ब’ ६७) । ४. चित्तशूरो-भो० न । ५. भो० पा०-बोधिसत्त्वान् । ६. -देगे का० सूत्र-.....? । ७. देगे-का० (सूत्र-‘ब’ ४२) । ८. देगे-का० सूत्र-.....? । ९. भो० पा०-शब्दः श्रूयते । १०. भूत-भो० न ।



समुत्पन्ने सति, काष्ठद्वयनिर्घर्षसंजातवह्निना तत्काष्ठद्वयदाहवत् सापि पश्चात् तेनैव<sup>१</sup> दह्यत एवेत्युक्तम् आर्यरत्नकूटे ।

यच्चाप्युच्यते—न किञ्चित् कुशलादिकर्म कर्तव्यम् इति । तत्रैवैवं वदता कर्मक्षयान् मुक्तिरित्याजीवक<sup>२</sup>वादाभ्युपगमो भवेत् । न हि भगवत्प्रवचने कर्मक्षयान् मुक्तिरिष्यते । किं तर्हि, क्लेशक्षयात् । अनादिकालोपचितस्य 5 हि कर्मणो न शक्यते क्षयः कर्तुं तस्यानन्तत्वात् । अपायादिषु च तत्फलं भुञ्जानस्यापरस्यापि कर्मणः प्रसूतेः, क्लेशेषु चाविकलेषु तत्करणतया स्थितेषु कर्मणो निरोद्धुम् अशक्यत्वात् । प्रदीपानिरोधे तत्प्रभाया अनिरोधवत् । न चापि तस्य विपश्यनापवादिनः क्लेशक्षयः संभवतीत्युक्तं प्राक् । अथ क्लेशक्षयार्थं विपश्यना सेवनीयेति मन्यते, तदा क्लेशक्षयाद् एव मुक्तिः 10 सिध्यतीति कर्मक्षये तर्हि व्यर्थः श्रमः<sup>३</sup> । अकुशलकर्म न कर्तव्यम् इति युक्तमेतत्, कुशलं तु किमिति प्रतिषिध्यते । संसारावाहकत्वात् प्रतिषिध्यत इति चेत्, तद् अयुक्तम् । यद् एव 'आत्मादिविपर्याससमुत्थापितम्' 'कुशलं' तद् एव संसारावाहकं भवति । न तु बोधिसत्त्वानां महाकरुणासमुत्थापितम् अनुत्तरसंबोधिपरिणामितमपि । तथा आर्यदशभूमके<sup>४</sup> एत एव 15 दशकुशलकर्मपथाः परिणामनादिपरिशुद्धि<sup>५</sup>विशेषेण श्रावकप्रत्येकबुद्ध-बोधिसत्त्वबुद्धत्ववाहका भवन्तीति निर्दिष्टम् । आर्यरत्नकूटे<sup>६</sup> च, सर्वमहानदीनां महासमुद्रे प्रविष्टानां पयः स्कन्धवद् बोधिसत्त्वानां नानामुखोपचितं कुशलमूलं<sup>७</sup> सर्वज्ञतापरिणामितं<sup>८</sup> सर्वज्ञतैकरसं भवति इति वर्णितम् । 20

१. भो० पा०—ताभ्यां दह्यते । २. भो० पा०—अजीवकर्तव्यिक । ३. भो० पा०—व्यर्थः शब्दः । ४. दूची-पा०—बाह्यात्म । ५. दूची-पा०—अकुशलं । ६. भो० पा०—कुशलकर्म । ७. देगे-का० ( अवतंसक—'ख' १८६ ) । ८. दूची-पा०—परिकर्म । ९. देगे-का० ( रत्नकूट—'ख' १२६ ) । १०. मूलं-भो० न । ११. सर्वज्ञतापरिणामितं-भो० न ।



- या च बुद्धबोधिसत्त्वानां रूपकायक्षेत्रपरिशुद्धिः प्रभापरिवारमहा-  
भोगतादिसंपत्तिः दानादिपुण्यसम्भारफलसत्त्वेन तत्र तत्र सूत्रे वर्णिता भग-  
वता सापि विरुध्यते । कुशलचर्याप्रतिषेधे च प्रातिमोक्षसंवरादिरपि प्रतिक्षिप्तः  
स्यात् । ततो व्यर्थमेव तस्य शिरोमु<sup>१</sup>ण्डितकाषायधारणादि प्रसज्येत ।
- 5 कुशलकर्माभिसंस्कारवैमुख्ये च सति संसारवैमुख्यं सत्त्वार्थक्रियावैमुख्यं च  
सेवितं भवेत् । ततो बोधिः तस्य दूरे भवेत् । उक्तं ह्यायंसंधिनिर्मोचने<sup>२</sup>—  
“एकान्तसत्त्वार्थविमुखस्य एकान्तसंस्कारा<sup>३</sup>भिसंस्कारविमुखस्य नानुत्तरा  
सम्यक्संबोधिरुक्ता मयेति ।” आर्योपालिपरिपृच्छादौ<sup>४</sup> च—“संसारे वैमुख्यं  
बोधिसत्त्वानां परदौःशील्यमिति वर्णितम् । संसारपरिग्रहः तु परमं  
10 शीलम् ।” उक्तम् आर्यविमलकीर्तिनिर्देशे<sup>५</sup> च—“उपायाद् भवति संसारगमनं  
बोधिसत्त्वानां मोक्षः । उपायरहिता च प्रज्ञा बन्धः, प्रज्ञारहितश्चोपायो  
बन्धः । प्रज्ञासहित उपायो मोक्षः, उपायसहिता प्रज्ञा मोक्षः” इति  
वर्णितम् । आर्यगगनगञ्जे<sup>६</sup> उक्तम्—“संसारपरिखेदो बोधिसत्त्वानां मारकर्म  
इति ।” सूत्रसमुच्चये<sup>७</sup> च—“असंस्कृतं च प्रत्यवेक्षते संस्कृतैश्च कुशलैः  
15 परिखिद्यत इति मारकर्म इति । बोधिमार्गं प्रजानाति पारमितामार्गं च  
न पर्येषत इति मारकर्म इति ।” यत् पुनः तत्रैवोक्तम्—“दानचित्ताभिनिवेशाद्  
यावत् प्रज्ञाचित्ताभिनिवेशां मारकर्म इति तत्र न दानादीनां सेवाप्रतिषेधः  
किं त्वहंकारममकारचित्ताभिनिविष्टस्य ग्राह्यग्राहकचित्ताभिनिविष्टस्य  
चौपलम्भिकस्य यो विपरीताभिनिवेशो दानादौ तस्य प्रतिषेधः । विपरीता-  
20 भिनिवेशसमुत्थापिता हि दानादयोऽपरिशुद्धा भवन्तीति कृत्वा मारकर्मैत्यु-  
क्तम् । अन्यथा ध्यानम् अपि न सेवनीयं स्यात् । तथा च कथं मुक्तिः  
भवेत् ?

१. दूची-पा०-शिरस्तुण्डित । २. देगे-का० ( सूत्र-‘च’ १६ ) । ३. दूची-  
पा०-संसार । ४. देगे-का० ..... ? ५. देगे-का० ( सूत्र-‘म’-२०१ ) । ६. देगे-का०  
( सूत्र-‘प’ २७७ ) । ७. देगे-तेन० ( मध्यमक-‘कि’ १६४ ) । ८. देगे-तेन० ( मध्यमक-  
‘कि’ १६३ ) ।



अत एवौपलम्भिकस्य सत्त्व<sup>१</sup>नानात्वसंज्ञया यद्<sup>२</sup> दानादि तद्  
अपरिशुद्धम् इति प्रतिपादनाय आर्यगगनगञ्जेऽपि<sup>३</sup>—“सत्त्वनानात्व  
[ विपरीतकर्म ]”<sup>४</sup> संज्ञिनो दानादि मारकर्मैत्युक्तम्” । यच्चापि [त्रि]”  
स्कन्धपरिणामनायाम्<sup>५</sup> उक्तम्—“सर्वम् एव दान-शील-क्षान्ति-वीर्य-ध्यान-  
प्रज्ञासमताम् अजानतोपलम्भयति, तेन पर्येष्टितदानेन परामृष्टशीलेन शीलं 5  
रक्षितम् । आत्मपरसंज्ञिना क्षान्तिर्भावितेत्यादि तत् प्रतिदेशयामीति ।”  
तत्राप्यौपलम्भिकस्य नानात्वसंज्ञिनो विपरीताभिनिवेशसमुत्थापिता  
दानादयोऽपि शुद्धा भवन्तीति एतावन्मात्रं प्रतिपादितम् । न तु सर्वथा  
दानादीनां सेवनप्रतिषेधः<sup>६</sup> । अन्यथा सर्वस्यैव दानादेरविशेषेण प्रतिदेशना  
कृता स्यात्, नोपलम्भविपर्यासपतितस्यैव । यच्चापि ब्रह्मपरिपृच्छायाम्<sup>७</sup> 10  
उक्तम्—“यावती चर्या सर्वा परिकल्प्या । निष्परिकल्प्या च बोधि-  
रित्यादि ।” तत्राप्युत्पादादिविकल्पचर्यायाः प्रकृतत्वात् तस्याः परिकल्पत्व-  
मुक्तम् । अनिमित्तविहारे चानभिसंस्कारवाहिनः स्थितस्य बोधिसत्त्वस्य  
व्याकरणं भवति, नान्यस्येत्येतावन्मात्रं प्रतिपादितम् । सर्वेषां च  
दानादीनां परमार्थतोऽनुत्पन्नत्वं च परिदीपितम्, न तु चर्या न 15  
कर्तव्येत्यभिहितम् ।

अन्यथा हि दीपङ्कुरावदाने ये बुद्धा भगवता पर्युपासिता येषां तु  
कल्पमपि भगवता भाषमाणेन न शक्यं नामपरिकीर्तनं कथं तेषां भगवता  
बोधिसत्त्वावस्थायां चर्याप्रतिषेधो न कृतः । दीपङ्कुरेणापि तदानीं  
भगवतश्चर्याप्रतिषेधो न कृत एव । किं तु यदा शान्तानिमित्तविहारेऽष्टम्यां 20  
भूमौ स्थितोऽसौ दृष्टस्तदासौ व्याकृतो भगवता, तत्र तस्य चर्या

१. सत्त्व-भो० न । २. भो० पा०-दानं वदति । ३. देगे-का० ( सूत्र-‘प’ २७७ ) ।  
४. भो० पा०-[ विपरीतकर्म ] । ५. दूची-पा०-पुण्यस्कन्ध । ६. देगे-का० ( सूत्र-  
‘य’ ७२ ) । ७. दूची-पा०-अप्रतिषेधः । ८. दूची-पा०-नानुपलम्भादिपतित । ९. देगे-का०  
( सूत्र-‘ब’ ५८ ) ।



अप्रतिषिद्धा । सा चानिमित्तविहारपरमता बोधिसत्त्वानाम् अष्टम्यां भूमौ दशभूमिकैर्बुद्धैः प्रतिषिद्धा 'मा भूद् एतद् एव तेषां परिनिर्वाणम्' इति कृत्वा यदि तु सर्वथा चर्या न कर्तव्या भवेत् पूर्वोक्तं सर्वं विरुध्येत ।

- यच्च तत्रैव ब्रह्मपरिपृच्छायाम्<sup>१</sup> उक्तम्—“दानं च ददाति तच्चा-  
 5 विपाकाभिकाङ्क्षी, शीलं च रक्षति तच्चासमारोपितः” इत्यादि । चतुर्भिः ब्रह्मा ! धर्मेः समन्वागता बोधिसत्त्वा अवैवर्तिका भवन्ति बुद्धधर्मेषु । कतमै-  
 श्वतुर्भिः अपरिमितसंसारपरिग्रहेण अपरिमितबुद्धोपस्थानपूजयेत्यादि सर्वं विरुध्येत । नापि मृद्विन्द्रियेणैव चर्या कर्तव्या न तु तीक्ष्णेन्द्रियेणेति युक्तं वक्तुम् । यतः प्रथमां भूमिमुपादाय यावद्दशमीभूमिप्रतिष्ठितानां बोधि-  
 10 सत्त्वानां दानादिचर्या उत्पद्यते, न च परिशिष्टासु न समुदाचरतीति वचनात् । नहि भूमिप्रविष्टा अपि मृद्विन्द्रियायुक्ताः । आर्योपालिपरि-  
 पृच्छायाम्<sup>२</sup>—“अनुत्पत्तिकधर्मक्षान्तिप्रतिष्ठितेनैव त्यागमहात्यागाति-  
 त्यागाः कर्तव्याः” इति वर्णितम् । सूत्रसमुच्चये<sup>३</sup> च—“षट्पारमितादि-  
 15 प्रतिपत्तिमान् बोधिसत्त्वस्तथागतद्विगतिकः” इति वर्णितम् । न च तथा-  
 गतद्विगतेरन्या शोघ्रतरा गतिरस्ति । नापि षट्पारमितादशभूमिव्य-  
 तिरेकेणान्यो बोधिसत्त्वानां मार्गोऽस्ति यः शोघ्रतरवाही स्यात् । क्रमेणैव च चित्तसंततेः कनकशुद्धिवत् शुद्धिर्भवतीति सूत्रे वर्णितम् [ आर्यलङ्कावतार-  
 दशभूमिकादौ चोक्तं ]<sup>४</sup>—तथतायां यदा स्थितो बोधिसत्त्वो भवति, तदा प्रथमायां भूमौ प्रविष्टो भवति । ततः क्रमेणैव पूर्वभूमौः परिशोध्य  
 20 तथागतभूमिं प्रविशतीति । अतो नास्ति भूमिपारमिताव्यतिरेकेण [ युगपत् ]<sup>५</sup> बुद्धत्वपुरप्रवेशे अन्यन्मुखं नापि भगवता क्वचित् सूत्रादौ देशितम् ।

१. देगे-का० (सूत्र-‘ब’ ८६) । २. देगे-का० “.....”? । ३. देगे-तेन० ( मध्यमक-  
 कि.....? ) । ४. भो० पा०—[ आर्यलङ्कावतार-दशभूमिकादौ चोक्तं ] । ५. भो०  
 पा०—[ युगपत् ] ।



ध्यान एव षट्पारमितान्तर्गमात् तत्सेवनाद् एव सर्वपारमिताः  
 सेविता भवन्त्यतो न दानादयः [ अन्यपारमिताः ]<sup>१</sup> पृथक् सेवितव्या  
 इति चेत् तद् अयुक्तम् । एवं हि बुद्धे गोमयमण्डलेऽपि षट्पारमितान्त-  
 र्गमान् मण्डलकम् एव कर्तव्यं स्यान्न ध्यानादयः । श्रावकस्यापि  
 निरोधसमाधिसमापन्नस्य निमित्ताद्<sup>२</sup> एव असमुदाचारात् तदा षट्पार- 5  
 मितापरिपूरिप्रसङ्गः । ततश्च न श्रावकेभ्यो बोधिसत्त्वानां भेदः प्रतिपादितो  
 भवेत् । सर्वावस्थायाम् एव तु बोधिसत्त्वेन षट्पारमिताः परिपूरयितव्या  
 इति संदर्शनार्थं एकैकपारमितान्तर्भावः सर्वपारमितानां भगवता  
 सन्दर्शितः । न पुनरेकैव पारमिता सेवनीयेति । तथा चोक्तं सर्वधर्म-  
 वैपुल्ये<sup>३</sup>—“योऽप्ययं मैत्रेय ! षट्पारमितासमुदागमो बोधिसत्त्वानां संबोधाय 10  
 तं ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति, प्रज्ञापारमितायाम् एवं बोधिसत्त्वेन  
 शिक्षितव्यम्, किं शेषाभिः पारमिताभिरिति । तेऽन्याः पारमिता दूष-  
 यितव्या मंस्यन्ते । तत् किं मन्यसे, अजित ! दुष्प्रज्ञः स काशिराजोऽभूत्, येन  
 कपोतार्थेन श्येनाय स्वमांसानि दत्तानि ? मैत्रेय आह—नो हीदं भगवन् !  
 भगवान् आह—यानि मया मैत्रेय ! बोधिसत्त्वचर्यां चरता षट्पारमिता- 15  
 प्रतिसंयुक्तानि कुशलमूलान्युपचितानि । अपकृतं नु तैः कुशलमूलैः ? मैत्रेय  
 आह, नो हीदं भगवन्, भगवान् आह—त्वं तावद् अजित ! षष्टिकल्पान्  
 दानपारमितायां समुदागतः । एवं यावत् षष्टिकल्पान् प्रज्ञापारमितायां  
 समुदागतः । तत् ते मोहपुरुषा एवं वक्ष्यन्ति । एकनयेनैव बोधिर्यदुत  
 शून्यतानयेनेति ते चर्यापरिशुद्धा भवन्ति” इत्यादि । केवलं शून्यताम् एव 20  
 सेवमानाः श्रावकवन्निर्वाणे पतन्ति । अतः उपायसहिता प्रज्ञा  
 सेवनीया ।

अत एवाचार्यनागार्जुनपादैः सूत्रसमुच्चये<sup>४</sup>ऽभिहितम्—“न चोपाय-  
 कौशलरहितेन बोधिसत्त्वेन गम्भीरधर्मतायामभियोक्तव्यम्” इति । अत्र

१. [ अन्य-पारमिता ] ।

२. दृष्टो-पा०-अनिमित्ताद् ।

३. देगे-का०..... ?

४. देगे-तेन० (मध्यमक-कि० २०७) ।



- आर्यविमलकीर्तिनिर्देशादिज्ञापकस्तरूपन्यस्तः, न चाचार्यनागार्जुनपादोयं वचनम् । युक्त्यागमोपेतं त्यक्त्वा<sup>१</sup> भगवद्वचनं च परित्यज्य अन्यस्य मूर्खजनस्य वचनं प्रेक्षावता ग्रहीतुम् अयुक्तम्<sup>२</sup> । आर्यरत्नकूटे<sup>३</sup> च—“सकल-दानादिकुशलोपेततया सर्वाकारवरोपेतशून्यता सेवनीयेत्युक्तं न तु केवला ।”
- 5 आर्यरत्नकूटे<sup>४</sup> चोक्तम्—तद्यथा काश्यपामात्यसंगृहीता राजानः सर्वकार्याणि कुर्वन्ति एवम् एव उपायकौशल्यसंगृहीता बोधिसत्त्वस्य प्रज्ञा सर्वबुद्ध-कार्याणि करोति ।

- अत एव केवलां शून्यतां सेवमानस्य मा भून्निर्वाणप्रवेश इति । भगवता आर्यतथागतगुह्यसूत्रे<sup>५</sup> चोक्तम्—“नैकान्तनिरालम्बनं चित्तमात्र-
- 10 सेवनं कर्तव्यम् अपि तु उपायकौशल्यम् अपि सेवनीयम् इति प्रदर्शनार्थम् उक्तम्—तद्यथापि नाम, कुलपुत्र ! अग्निरुपादानाज् ज्वलति । अनुपादानः शाम्यति । एवम् एवारम्बणतश्चित्तं ज्वलति, अनारम्बणं<sup>६</sup> शाम्यति । तत्रोपायकुशलो बोधिसत्त्वः प्रज्ञापारमितापरिशुद्धारम्बणोपशमम् अपि जानाति । कुशलमूलारम्बणं च न शाम्यति । क्लेशारम्बणं च नोत्था-
- 15 पयति<sup>७</sup> । पारमितारम्बणं चोत्थापयति । शून्यतारम्बणं च प्रत्यवेक्षते सर्वसत्त्वमहाकरुणारम्बणं च प्रेक्षते इति हि कुलपुत्र ! उपायकुशलः प्रज्ञापारमितापरिशुद्धो बोधिसत्त्वोऽनारम्बणे वशितां प्रतिलभते” इति विस्तरम् उक्त्वा पुनश्च वदत्येवं हि—“नास्ति तत् किञ्चिद् आरम्बणं बोधि-सत्त्वस्य यत् सर्वज्ञज्ञानाभिनिर्हराय न संतिष्ठते । यस्य बोधिसत्त्वस्य
- 20 सर्वारम्बणानि बोधिपरिणामितानि, अयं बोधिसत्त्व उपायकुशलः सर्व-धर्मान् बोध्यनुगतान् पश्यति । तद्यथापि नाम कुलपुत्र, नास्ति तत् त्रिसाहस्रमहासाहस्रे लोकधातौ यत् सत्त्वानाम् उपभोगाय न स्यात् ।

१. त्यक्त्वा—भो० न । २. दुर्ची—पा०—युक्तम् । ३. भो० पा०—आर्यरत्नकूटे (देगे-का० रत्नकूट—‘छ’.....?) । ४. देगे—का० ( रत्नकूट—‘छ’ १२६ ) । ५. देगे—का०.....? ६. भो० पा०—चित्तं शाम्यति । ७. भो० पा० नोत्पद्यते । ८. दुर्ची—पा०—यत् न सत्त्वानाम् ।



एवम् एव, कुलपुत्र नास्ति तत् किञ्चिद् आरम्बणं यद् उपायकुशलो बोधिसत्त्वो बोधाय चोपकारीभूतं न पश्यति” इति विस्तरः । एवम् अनन्त-सूत्रान्तेषु बोधिसत्त्वानां प्रज्ञोपायप्रतिपत्तिर्निर्दिष्टा । तत्र यदि नाम स्वयं न शक्यते दानादिपुण्यसंभारवीर्यम् आरब्धुं तथापि अन्येषाम् एवम् उपदेशो दातुं न युक्तश्चेति स्वपरद्रोहः कृतः स्यात् ।

5

तद् एवं युक्त्यागमाभ्यां प्रतिपादितं यथा बोधिसत्त्वेनावश्यं भूतप्रत्य-वेक्षा कर्तव्या सकलदानादिपुण्यसम्भारश्चोपार्जयितव्यः । ततः प्रेक्षावताल्प-श्रुतानाम् अभिमानिकानां वचनं विषम् इवावधूयार्यनागार्जुनादिविद्वज्जन-वचनामृतानुगतेन सकलसत्त्वेषु महाकरुणाम् उपजनय्य मायाकारवद् अविपर्यस्तेनानुत्तरसंबोधिपरिणामितसकलदानादिकुशलचर्यायाम् अशेषजग-  
दुद्धरणे चाभियुक्तेन भवितव्यम् । यथोक्तम् आर्यवर्मसंगीतौ<sup>१</sup> —

10

मायाकारो यथा कश्चिन् निर्मितं मोक्तुमुद्यतः ।

न चास्य निर्मिते सङ्गो ज्ञातपूर्वो यतोऽस्य सः ॥

त्रिभवं निर्मितप्रख्यं ज्ञात्वा संबोधिपारगः ।

सन्नह्यन्ति जगद्धेतोः ज्ञातपूर्वं जगे तथा ॥ इति तस्यैवं 15

प्रज्ञाम् उपायं च सततं सत्कृत्याभ्यस्यतः क्रमेण [चित्तं]<sup>२</sup> संततिपरिपाकाद् उत्तरोत्तरविशुद्धतरतमक्षणोदयाद् भूतार्थभावनाप्रकर्षपर्यन्तगमेन सकल-कल्पनाजालरहितं स्फुटतरं धर्मधात्वधिगमं विमलं निश्चलनिवातदीप-वल्लोकोत्तरज्ञानम् उत्पद्यते । तदा च वस्तुपर्यन्ततालम्बनं प्रतिलब्धं भवति । दर्शनमार्गं च प्रविष्टो भवति । प्रथमा च भूमिः प्राप्ता भवति ।  
ततस्तदुत्तरा भूमीः परिशोधयन् क्रमेण कनकवद् अशेषावरणापगमे सति असक्तम् अप्रतिहतं ज्ञानं प्रतिलभ्य बुद्धभूमिम् अशेषगुणाधारां प्राप्तो भवति । कार्यपरिनिष्पत्तिं चालम्बनं प्रतिलभते । तस्माद् बुद्धत्वाधिगमार्थिना मध्यमपद्धतौ तावद् अभियोगः करणीय इति ।

20

१, देगे० का० ( सू० 'श' ४३ ) । २, भो० पा०—[ क्रमेण चित्तं ] ।



प्रकाश्य यत् प्रापि मया शुभम् 'असमपद्धितम्' २ ।

पुण्यमस्तु जनस्तेन प्राप्तो मध्यमपद्धितम् ३ ॥

दूरीकृतेर्ष्यादिमला हि सन्तो गुणैरतृप्ताः सलिलैरिवाब्धिः ।

विवेच्य गृह्णन्ति सुभाषितानि हंसाः पयो यत्पयसि प्रहृष्टाः ॥

5 पक्षपाताकुलं तस्माद् दूरीकृतं मनो बुधैः ।

सर्वमेव ग्रहीतव्यं बालादर्पि सुभाषितम् ॥

आचार्यकमलशीलेन अन्ते निबद्धो भावनाक्रमः समाप्तः ।

तृतीयः भावनाक्रमः समाप्तः ।

१. भो० पा०—मध्यमकपद ।

२. अत्र 'असमपद्धितम्' इत्यपि पाठो भवितुमर्हति ।

३. अत्र 'मध्यमपद्धितम्' इत्यपि पाठो भवितुमर्हति ।

ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवदत् ।

तेषां च यो निरोध एवादी महाश्रमणः ॥

। [ तृतीयांशः ]— भवतु सर्वमङ्गलम् ।



आचार्यकमलशीलप्रणीतः

**भावनाक्रमः**

( हिन्दीपाठ )



महाराष्ट्र सरकार

महाराष्ट्र

( अतिरिक्त )



## प्रथम भावनाक्रम

मञ्जुश्री कुमारभूत को नमस्कार ।

महायान सूत्रों में आदिकर्मिक के जो चर्या-नियम हैं, उनके आधार पर संक्षेप में भावनाओं का क्रम कहूँगा ।

सर्वज्ञता को शीघ्र ही प्राप्त करने की इच्छा वालों को संक्षेप में कुरुणा, बोधित्त तथा प्रतिपत्ति इन तीन स्थानों पर प्रयत्न करना चाहिए ।

बुद्ध के अशेष धर्महेतुओं का मूल कुरुणा ही है, ऐसा जान कर उसी की भावना सर्वप्रथम करनी चाहिये । जैसा कि **आर्यधर्मसंगीति** में कहा गया है—“तब भगवान् बुद्ध से बोधिसत्त्वमहासत्त्व-आर्यावलोकितेश्वर ने यह कहा—भगवन् ! बोधिसत्त्वों को अनेक धर्मों की शिक्षा नहीं लेनी चाहिये । भगवन् ! बोधिसत्त्व के द्वारा एक धर्म को आधार बनाकर अवबोध करने पर सभी बुद्धधर्म उसके करतल पर विद्यमान हो जाते हैं । वह एक धर्म क्या है ? वह है—महाकरुणा । भगवन् ! महाकरुणा से ही सभी बुद्धधर्म बोधिसत्त्वों के करतल पर स्थित हो जाते हैं । भगवन् ! जैसे चक्रवर्ती राजा का चक्ररत्न जहाँ होता है, वहाँ सारा बलकाय ( सेनासमूह ) विद्यमान होता है । भगवन् ! उसी प्रकार बोधिसत्त्व की महाकरुणा जहाँ विद्यमान होती है, वहाँ सभी बुद्धधर्म विद्यमान हो जाते हैं । भगवन् ! यथा जीवितेन्द्रिय (प्राण) के रहने पर अन्य इन्द्रियों की प्रवृत्ति होती है । भगवन् ! उसी प्रकार महाकरुणा विद्यमान हो तो बोधिसत्त्वों के अन्यधर्मों का भी प्रादुर्भाव होता है ।”

**आर्याक्षयमतिनिर्देश** में भी विस्तार से कहा गया है—“पुनश्च भदन्त शारद्वतीपुत्र ! बोधिसत्त्वों की महाकरुणा भी अक्षय है । वह किस कारण से है ? पूर्वगामी होने से है । भदन्त शारद्वतीपुत्र ! और भी, जैसे श्वास लेना और छोड़ना मनुष्य को जीवितेन्द्रिय का पूर्वगामी होता है, उसी प्रकार बोधिसत्त्व की महाकरुणा भी महायान के सम्भार की सिद्धि के लिये पूर्वगामी होती है ।” इत्यादि । **आर्यगयाशीर्ष** में भी विस्तार से कहा गया है—“मञ्जुश्री ! बोधिसत्त्वों की चर्या का आरम्भ क्या है ? अधिष्ठान क्या है ? मञ्जुश्री ने कहा—देवपुत्र ! बोधिसत्त्वों की चर्या का आरम्भ तो महाकरुणा है । अधिष्ठान सत्त्व है ।” इत्यादि ।



इसी प्रकार महाकरुणा से प्रेरित बोधिसत्त्व अपनी अपेक्षा न करके पूर्णतः (स्वात्म निरपेक्ष) परोपकारार्थी होते हैं। इसलिए वे अत्यन्त कठिन तथा दीर्घकाल तक चलने वाले सम्भार के संचय के परिश्रम में प्रवृत्त होते हैं। जैसा कि **आर्यभद्राबलाधान** में कहा गया है—“वहाँ महाकरुणा के द्वारा भी सभी सत्त्वों के परिपाक के लिये ऐसा दुःखी-जन्म कुछ भी नहीं, जिस को नहीं ग्रहण करता, और ऐसा कुछ भी सुख नहीं है, जिसे वह छोड़ नहीं देता।” इस प्रकार अतिदुष्कर में प्रवृत्त होकर शीघ्र ही सम्भारों को परिपूर्ण करके निश्चय ही सर्वज्ञपद प्राप्त करता है। अतः सभी बुद्धधर्मों की मूल महाकरुणा ही है। महाकरुणा के परिग्रह से ही भगवान् बुद्ध सर्वज्ञ पद प्राप्त करके समस्त जगत् के लिये कार्य करते रहते हैं। इस प्रकार निर्वाण में प्रतिष्ठित न होने में भगवान् की महाकरुणा हेतु है।

वह भी दुःखी सत्त्वों के विषय में बहुत अधिक सोचने के कारण उत्पन्न होती है। ‘वे सभी सत्त्व, तीनों लोकों में विचरण करने वालों को त्रिविध दुःखों से यथा-योग अत्यंत दुःखी हैं ही’ इस प्रकार से सभी सत्त्वों पर भावना करनी चाहिये। भगवान् ने कहा है कि जो नारक सत्त्व हैं वे तो अविच्छिन्न रूप से दीर्घकाल तक ताप आदि विभिन्न दुःखों में डूबे हुये रहते हैं, इसी प्रकार प्रेत भी कठिन और तीव्र भूख, प्यास आदि दुःखाग्नि के कष्ट से सूखे शरीर वाले होकर घोर दुःख का अनुभव करते हैं। अतः सौ वर्षों में भी अपवित्र, खेटपिंड (खखार) मात्र भी खाने को नहीं पाते हैं, इत्यादि भगवान् ने कहा है। तिर्यक् भी परस्पर खाने, क्रोध करने, मारने, पीड़ा देने आदि के कारण अनेक प्रकार के दुःखों का अनुभव करते हुए दिखाई ही देते हैं। जैसे कि—कोई नाक छेदने, मारने और बांधने आदि के द्वारा परतन्त्र शरीर वाले होते हैं और सब के द्वारा पीड़ित किये जाते हैं। वे चाहने पर भी किसी प्रकार कष्टदायक भारी बोझ का वहन करने से थके शरीर वाले एवं पीड़ित होते रहते हैं। उसी प्रकार वन में भी निवास करने वाले कुछ निर्दोष कहीं विशेषरूप से खोज कर मारे जाते हैं। हमेशा परस्पर भय से व्याकुल मन वाले जहाँ-तहाँ अनेक बार भागते रहते हैं। इस प्रकार अपार दुःख दिखलायी देते हैं। उसी प्रकार मनुष्यों में भी नारक दुःख आदि विद्यमान ही हैं, क्योंकि यहाँ जो चोर आदि को अंगों के काटने, शूलों पर चढ़ाने, बांधकर ऊपर लटकाने आदि के क्लेश हैं, वे तो नारक-दुःख ही हैं। जो लोग दरिद्रता आदि से पीड़ित हैं, उनको प्रेतों के समान भूख, प्यास आदि का दुःख है। जो दास आदि दूसरे के अधीन शरीर वाले हैं, और जो लोग बलवानों के द्वारा दबा कर पीड़ित किये जाते हैं, उनको पशुओं के समान मारने-बांधने आदि के दुःख हैं। इस प्रकार यात्रा से होने वाले, परस्पर-द्रोह और ताड़न आदि से, प्रिय के वियोग तथा,



अप्रिय के संयोग से होने वाले इनके दुःख अप्रमेय हैं। जो सम्पन्न लोग सुखी जैसे कहे जाते हैं, उनकी भी संपत्ति को अन्त में नष्ट होना है। वे अनेक कुदृष्टियों के गर्त में डूबे हुये हैं। वे नारकीय आदि दुःखों के अनुभव के हेतु-स्वरूप अनेक प्रकार के क्लेश तथा कर्मों का अर्जन होने से प्रपात-स्थित पेटों की भाँति दुःख के हेतुओं में रहते हुये वास्तव में वे दुःखी ही हैं।

देवता भी जो जब तक कामधातु में विचरण करने वाले हैं, वे भी उग्र काम की अग्नि से सन्तापित मन वाले, पागल की भाँति मलिन चित्त वाले होते हैं और एक क्षण भी समाहितमन नहीं हो पाते हैं। उस प्रशान्ति सुखरूपी धन से दरिद्र लोगों को वह सुख भला कैसे होगा? हमेशा च्युति, पतन आदि के भय और शोक से अभिभूत हुए वे कैसे सुखी होंगे और जो लोकरूप तथा अरूप (धातु) में विचरण करते हैं, वे भी यदि कुछ काल के लिए दुःख-दुःखता से मुक्त हैं; तो भी उनको कामावचरों के अनुशयों का अतिप्रहाण नहीं होने से पुनः उनका नारक आदि सत्त्वों में सम्भव होने से विपरिणाम का दुःख है ही ये देव तथा मनुष्य (जो हैं) सभी कर्म-क्लेश आदि के पराधीन होने के कारण वे 'संस्कारदुःख' से दुःखित हैं ही।

इसी प्रकार समस्त जगत् दुःखाग्नि की ज्वालमाला से ग्रस्त है, ऐसा देखकर जैसे मुझे दुःख प्रिय नहीं है, उसी प्रकार अन्यो को भी प्रिय नहीं है, ऐसा सोचते हुए समस्त प्राणियों पर कृपा की भावना करनी चाहिए। सर्वप्रथम तो मित्रपक्षों में पूर्व उक्त अनेक प्रकार के दुःखों के अनुभवों को देखकर भावना करनी चाहिए।

तब चित्त-समता से अन्तर न देखकर अनादि संसार में कोई भी सत्त्व ऐसा नहीं है, जो सौ बार मेरा बन्धु न हुआ हो, ऐसा सोचकर साधारण जनों पर भावना करें। जब मित्रपक्ष के समान साधारण जनों पर भी समान करुणा प्रवृत्त होती है, तब शत्रु-पक्ष में भी उसी प्रकार चित्त-समता आदि का विचार करके भावना करनी चाहिए। जब मित्रपक्ष के समान शत्रुपक्ष में भी समान रूप से प्रवृत्त हो, तब क्रमशः दशों दिशाओं में समस्त सत्त्वों में भी भावना करनी चाहिए। जब समस्त सत्त्वों में भी सर्वथा दुःख दूर करने की इच्छात्मक करुणा अनायास प्रवृत्त होती है, जैसे अपने दुःखी प्रिय पुत्र के ऊपर होती है, तब वह निष्पन्न होती है, और 'महाकरुणा' का नाम प्राप्त करती है। जैसे आर्याक्षयमतिनिर्देश सूत्र में वर्णन किया गया है। करुणा की भावना का यह क्रम भगवान् बुद्ध ने अभिधर्म-सूत्र आदि में कहा है।

इस प्रकार की करुणा-भावना के बल से सभी प्राणियों के उद्धार की प्रतिज्ञा की जाय तो अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में प्रार्थना स्वरूप बोधिचित्त अनायास ही उत्पन्न हो



जाता है। जैसा कि आर्यदशधर्म सूत्र में कहा गया है—“सत्त्वों को अरक्षित, अशरण तथा निराश्रय देखकर करुणा में चित्त लगाकर अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में चित्त को उत्पन्न करना चाहिए”। यद्यपि दूसरे के द्वारा सम्यग् ग्रहण करने से भी बोधिसत्त्व को बोधिचित्त उत्पन्न होता है, फिर भी महाकरुणा के वेग से बोधिसत्त्व में जो स्वयं बोधिचित्त उत्पन्न करता है, ( वह ) उसकी अपेक्षा अधिक विशिष्ट है, ऐसा भगवान् ने आर्यतथागतज्ञानमुद्रासमाधि में कहा है।

भगवान् ने कहा है कि—यह बोधिचित्त प्रतिपत्ति के विना भी संसार में महाफल (से युक्त) होता है। जैसा कि मंत्रेयविबोक्ष में कहा गया है—“कुलपुत्र ! जैसे दूटा हुआ भी वज्ररत्न सभी अत्यन्त विशिष्ट सुवर्ण के अलङ्कारों को अभिभूत कर देता है, और वज्ररत्न का नाम भी नहीं छोड़ता, तथा समस्त दरिद्रता को हटा देता है, कुलपुत्र ! उसी प्रकार सर्वज्ञता ( प्राप्ति के लिए ) चित्तोत्पादरूपी वज्ररत्न प्रतिपत्ति से अयुक्त भी सभी श्रावक तथा प्रत्येकबुद्ध के गुणरूपी सुवर्ण-अलङ्कारों को अभिभूत करता है, और वह बोधिचित्त का नाम भी नहीं छोड़ता है तथा संसार की दरिद्रता का भी निवारण करता है।”

जो पारमिताओं में पूर्णतः सब कुछ शिक्षित नहीं हो सकता, उस को भी बोधिचित्त उत्पन्न करना ही है, क्योंकि उपाय-परिग्रह से महाफल होता है। जैसा कि आर्यराजाववाक सूत्र में—“हे महाराज ! आप तो बहुकृत्य तथा बहुकरणीय हैं, अतः सबके द्वारा सबका सर्वथा दानपारमिता की शिक्षा से लेकर प्रज्ञापारमिता-पर्यन्त शिक्षित नहीं कर सकते हो, इसलिये महाराज तुम इस प्रकार सम्बोधि में इच्छा, श्रद्धा, प्रार्थना तथा प्रणिधि को चलते, रुकते, बैठते, सोते, जागते, खाते तथा पीते हुये भी हमेशा निरन्तर अनुस्मरण करो, मनस्कार करो, भावना करो। सभी बुद्ध, बोधिसत्त्व, आर्यश्रावक, प्रत्येकबुद्ध, पृथग्जन तथा अपने अतीत, भावी और वर्तमान के सभी कुशलमूलों का संग्रह करके अनुमोदन करो। उत्तम अनुमोदन से अनुमोदित करके फिर से भी बुद्ध, बोधिसत्त्व, प्रत्येकबुद्ध, आर्यश्रावकों को पूजन के कार्य में समर्पित करो और समर्पण करके भी समस्त सत्त्वों के लिये समान करो। उसके बाद सभी सत्त्वों के सर्वज्ञता तक की प्राप्ति के लिए तथा समस्त बुद्धधर्मों को परिपूर्ण कराने के लिए प्रतिदिन तीनों कालों में ( किये गये कुशलों ) को अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में परिणत करो। हे महाराज ! इस प्रकार प्रतिपन्न होकर स्वराज्य करोगे। राजकाज भी नहीं छूटेगा, बोधिसम्भार भी परिपूर्ण होगा।” इत्यादि कहकर इसके बाद फिर से—“हे महाराज ! आप सम्यक्संबोधिचित्त के कुशलमूल के विपाक से अनेक बार देव बने,



अनेक बार मनुष्य बने और सभी देव तथा मनुष्य जन्मों में अधिपति रहोगे।”  
इत्यादि विस्तृत रूप से कहा गया है।

और जो प्रतिपत्तिसार बोधिचित्त है, वह तो अति विपुल फल है, ऐसा सिद्ध होता है। जैसा कि **आर्यबोध्यदत्तपरिपृच्छा** में कहा गया है—

“बोधिचित्त से ( प्राप्ति ) जो पुण्य है, यदि रूपवान् हो तो, समग्र आकाश-धातु को भरकर उससे भी अधिक हो जायेगा। गंगा में जितनी बालू की संख्या है, ( उतनी संख्या में ) बुद्ध क्षेत्रों को रत्नों से भरकर जिस व्यक्ति के द्वारा लोकनाथ को, समर्पित करने की अपेक्षा, यदि कोई (व्यक्ति) अञ्जलि बाँधकर बोधि, के लिये चित्त को नमन करता है, वही पूजा अधिक विशिष्ट होगी, जिस का अन्त नहीं होगा।”

**आर्यगण्डव्यूह** में भी—“कुलपुत्र ! बोधिचित्त सभी बुद्धधर्मों का बीज है।” इत्यादि विस्तार से वर्णन किया गया है।

वह बोधिचित्त दो प्रकार का है—प्रणिधिचित्त तथा प्रस्थानचित्त। जैसा कि **आर्यगण्डव्यूहसूत्र** में कहा गया है—“हे कुलपुत्र ! वे सत्त्व दुष्प्राप्य हैं जो सत्त्व जगत् में अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में प्रणिधि करते हैं। उनसे भी अधिक दुष्प्राप्य तो वे सत्त्व हैं, जो अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में सम्यक् प्रस्थान किये हों।” ‘सारे जगत् के हित के लिये बुद्ध हो जाऊँ’ सर्वप्रथम ऐसी प्रार्थना के रूपवाली ( जो ) चेतना है वह ‘प्रणिधिचित्त’ है। जब से संवर ग्रहण करके सम्भारों में प्रवेश करता है तो वह ‘प्रस्थानचित्त’ है।

संवर तो अन्य प्रतिबल विद्वान् तथा संवर में स्थित कल्याण-मित्रों के पास से लेना चाहिये। अनुकूल ग्राहक के नहीं होने पर बुद्ध और बोधिसत्त्वों को अभिमुख करके जैसे आर्यमञ्जुश्री ने ‘अम्बरराज’ होकर बोधिचित्त का उत्पाद किया था, उसी प्रकार ( बोधिचित्त का ) उत्पाद करना चाहिए।

इस प्रकार बोधिचित्त को उत्पन्न करनेवाले बोधिसत्त्व स्वयं को विनीत किये बिना दूसरों को विनीत नहीं कर सकते, यह जानकर स्वयं को दान देने आदि प्रतिपत्ति में प्रयुक्त होते हैं। प्रतिपत्ति के बिना बोधि प्राप्ति नहीं होती है। जैसा कि—**आर्यगयाशीर्ष** में कहा गया है—“प्रतिपत्तिसार वाले बोधिसत्त्वों को बोधि होती है, न कि विप्रतिपत्तिसार वालों को”। **आर्यसमाधिराज** में भी कहा है—“इसीलिए मैं



प्रतिपत्तिसार होऊँगा, ऐसा कुमार आप को अध्ययन करना चाहिये। यह किस कारण से ? कुमार ! प्रतिपत्तिसार वाले को अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि दुष्प्राप्य नहीं होती है।”

वह बोधिसत्त्व की प्रतिपत्ति भी पारमिता, अप्रमाण तथा संग्रहवस्तु आदि के भेद ( अंश ) के रूप में **आर्याभयमति**, **रत्नमेघ** आदि सूत्रों में विस्तार से कही गयी है। उसी प्रकार बोधिसत्त्वों को लौकिक शिल्प आदि स्थानों तक में भी शिक्षा लेनी है, तो अलौकिक ध्यान आदि के विषय में कहना ही क्या। अन्यथा कैसे सत्त्वों के सभी अर्थाकारों को करेंगे ? संक्षेप में बोधिसत्त्व की यह प्रज्ञा तथा उपाय रूपवाली प्रतिपत्ति न तो उपाय-मात्र है, और न तो प्रज्ञा-मात्र ही है। जैसा कि **आर्यविमल-कीर्तिनिर्देश** में कहा है—“प्रज्ञा से रहित उपाय तथा उपाय से रहित प्रज्ञा बोधिसत्त्वों का बन्धन है।” उपाय के सहित प्रज्ञा तथा प्रज्ञा के सहित उपाय मोक्ष रूप में वर्णित है। **आर्यगयाशीर्ष** में भी कहा गया है—“संक्षेप में बोधिसत्त्वों के ये दो मार्ग हैं। दो मार्गों से युक्त बोधिसत्त्व-महासत्त्व तो शीघ्र ही अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि में अभिसंबुद्ध हो जायेंगे। वे दा क्या हैं ? वे हैं उपाय तथा प्रज्ञा।”

वहाँ प्रज्ञापारमिता को छोड़कर दान आदि पारमिता तथा संग्रहवस्तु आदि और क्षेत्रपरिशुद्धि, महाभोग, बहुपरिवार, सम्पत्ति, सत्त्वपरिपाक, निर्माण आदि अभ्युदय धर्म के संग्राहक सभी कुशलें को उपाय कहा जाता है। प्रज्ञा तो उस उपाय के अविपरीत स्वभाव को परिच्छिन्न करने का हेतु है। उससे सम्यग् उपाय का विवेक-परिच्छेद करके अविपर्यस्त यथावत् रूप से तथा स्वपर अर्थों की सिद्धि करने से मन्त्रों से परिगृहीत विष की भाँति संक्लेश की प्राप्ति नहीं होती है। जैसा कि उसी सूत्र में कहा गया है—“उपाय तो संग्रह का ज्ञान है। प्रज्ञा है परिच्छेद का ज्ञान।” जैसा कि **आर्यश्रद्धाबलाधान** में भी कहा गया है—“उपाय कौशल क्या है ? जो सभी धर्मों कर संग्रह है। प्रज्ञा क्या है ? जो सभी धर्मों के अमिश्रण की कुशलता है।” प्रज्ञा और उपाय इन दोनों का सेवन भूमि में प्रवेश कर चुके बोधिसत्त्वों को भी हमेशा करना चाहिए, न कि केवल प्रज्ञा तथा केवल उपाय का ही। क्योंकि—बोधिसत्त्व की दश भूमियों में भी सभी पारमिताओं का समुदाचार कहा गया है। **दशभूमिसूत्र** आदि में भी ऐसे वचन हैं कि “परिशेषों में असमुदाचार नहीं है।”

आठवीं भूमि में शान्त भाव से विहार करने वाले बोधिसत्त्वों का भगवान् बुद्ध द्वारा व्युत्थान कराने से विरोध होगा। जैसा कि उसी में कहा गया है—“हे जिनपुत्र ! बोधिसत्त्व के इस प्रकार अचला नाम की बोधिसत्त्व भूमि में स्थित और पूर्व प्रणिधान के बलाधान में तथा धर्ममुखस्रोत में स्थित हो जाने पर भगवान् बुद्ध उसके तथा गतज्ञान का उपसंहार करते हैं। और उससे ऐसा कहते हैं—कुलपुत्र ! बहुत अच्छा, बहुत



अच्छा । यह परमार्थ क्षान्ति सभी बुद्ध-धर्मों का अनुगम करने के लिये है । फिर भी कुलपुत्र ! जो हमारी दशबल, चारवैशारद्य आदि बुद्ध धर्म की सम्पत्ति है, वह तुमको नहीं । उस बुद्धधर्म की समृद्धि खोजने के लिए लग जाओ, प्रयत्न आरम्भ करो, इस क्षान्तिरूपी द्वार को मत छोड़ो । और फिर भी कुलपुत्र ! तुमने यह जो शान्ति-विमोक्ष में विहार प्राप्त किया है, फिर भी इन अशान्त, अप्रशान्त विभिन्न क्लेशों के समुदाचार करने वाले विविध वितर्कों से अवरुद्ध चित्त वाले, अज्ञानी (बाल) पृथग्जनों को सोचो, अपनाओ । फिर कहा—कुलपुत्र ! पूर्व प्रणिधान को याद करो और सत्त्वों को अर्थ प्राप्त कराने तथा ज्ञानमुख की अचिन्त्यता को भी । पुनः कुलपुत्र ! यह तो सभी धर्मों की धर्मता है । तथागतों की उत्पत्ति होने अथवा उत्पत्ति न होने से यह धर्मता और धर्मधातु की स्थिति तो स्थित ही है । जैसे कि सर्वधर्मशून्यता तथा सर्वधर्मों की अनुपलब्धि है । इससे केवल तथागत ही प्रभावित नहीं होते, श्रावक तथा प्रत्येकबुद्ध सभी इस अविकल्प-धर्मता को प्राप्त करते हैं ।

पुनः कुलपुत्र ! हमारे शरीर की अप्रमाणता, ज्ञान की अप्रमाणता, बुद्धक्षेत्र की अप्रमाणता, ज्ञान के अभिनिर्हार की अप्रमाणता, प्रभामण्डल की अप्रमाणता तथा स्वराङ्गविशुद्धि की अप्रमाणता को देखो । तुम भी उसी प्रकार का अभिनिर्हार उत्पन्न करो । और भी कुलपुत्र ! यह तो एक ही प्रकाश है जो कि सभी धर्मों का निर्विकल्प आलोक है । कुलपुत्र ! तथागतों के इस प्रकार के धर्मालोक तो पर्यन्तगामी होंगे, अपर्यन्तकृत तथा अपर्यन्त सम्बद्ध हो जायेंगे, जिनकी संख्या, गणना, प्रमाण, उपमा तथा तुलना भी नहीं है । उनको जानने के लिए अभिनिर्हार उत्पन्न करो । कुलपुत्र ! दशों दिशाओं की अप्रमाणक्षेत्रता को, अप्रमाण सत्त्वता को तथा अप्रमाण धर्म विभक्तता को देखो । उन सब की गणना करो, तथावत् अभिनिर्हार उत्पन्न करो । हे जिनपुत्र ! इस प्रकार की भूमि को प्राप्त बोधिसत्त्व को वे भगवान् बुद्ध इस प्रकार प्रमुख, अप्रमेय, असंख्य ज्ञान के अभिनिर्हार के द्वारों का उपसंहार करते हैं, जिन ज्ञान के अभिनिर्हार-द्वारों से बोधिसत्त्व अप्रमाण ज्ञान की विभक्ति से अभिनिर्हार कर्म का निष्पादन करते हैं । हे जिनपुत्र ! तुमको अधिमुक्ति प्राप्त करनी है, तुमको अवबोध करना है । यदि वे भगवान् बुद्ध द्वारा उन बोधिसत्त्वों को इस प्रकार सर्वज्ञज्ञान अभिनिर्हार के द्वारों पर प्रविष्ट न कराया जाय तो उसका वहीं परिनिर्वाण हो जायेगा और सभी सत्त्वों के कार्य भी विच्छिन्न हो जायेंगे ।” ऐसा विस्तार से कहा गया है । आर्यविमलकीर्तिनिर्देश तथा गयाशीर्ष में जो कहा गया है, वह इससे विरुद्ध ही हो जायेगा, क्योंकि वहाँ सामान्य रूप से ही कहा गया है ।

आर्यसर्वधर्मसंग्रहवैपुल्य में जो कहा है उसका भी विरोध ही हो जायेगा । उस विषय में कहा गया है—“हे मञ्जुश्री ! सद्धर्म के प्रतिक्षेप-कर्म का आवरण सूक्ष्म



है। मञ्जुश्री ! जो कोई तथागत के द्वारा कहे गये किसी धर्म में अच्छी संज्ञा उत्पन्न करता है, और किसी में अशोभन संज्ञा उत्पन्न करता है, वह सद्धर्म पर प्रतिक्षेप करता है। उस धर्मप्रतिक्षेप करनेवाले से तथागत पर आक्षेप हो जाता है।” ऐसा विस्तार से कहने के बाद फिर बोले—“हे मैत्रेय जो इन बोधिसत्त्वों की संबोधि के लिये षट्पारमिता का समुदागम (सम्यक्सिद्धि) करता है, उसको वे अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि—बोधिसत्त्व को प्रज्ञापारमिता में ही शिक्षित करना चाहिए, शेष पारमिताओं से क्या ? वे दूसरी उपायपारमिता को दूषित मानते हैं। अजित ! (आप) इसको क्या समझ रहे हैं ? क्या वह काशिराज दुर्बुद्धि था ? जिसने कबूतर के लिए अपना मांस बाज को दे दिया। मैत्रेय ने कहा, भगवन् ! यह नहीं है। भगवान् ने कहा—मैत्रेय ! बोधिसत्त्वचर्या का आचरण करते समय मैंने जिन षट्पारमिताओं से युक्त कुशलमूलों का अर्जन किया, क्या उन कुशलमूलों ने हानि पहुँचायी ? मैत्रेय ने कहा, भगवन् ! यह तो नहीं। भगवान् ने कहा हे अजित ! आप तो साठ कल्पों तक दानपारमिता का सम्यक् अनुष्ठान करते रहे। साठ कल्पों तक शीलपारमिता तथा साठ कल्पों तक प्रज्ञापारमिता का अनुष्ठान करते रहे। उस पर अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि एक ही नय से बोधि हो सकती है, जैसे कि शून्यतानय से ही।” ऐसा विस्तार रूप से कहा गया है। वैरोचनाभिसम्बोधि में भी कहा गया है—“यह सर्वज्ञ का ज्ञान तो करुणा की जड़ वाला, बोधिचित्त के हेतु से युक्त तथा उपाय-पर्यवसान वाला है।” इस-लिए दोनों का सर्वदा ही बोधिसत्त्वों को सेवन करना चाहिये।

इस प्रकार तथागत का अप्रतिष्ठित निर्वाण भी सिद्ध होता है। जैसे कि दान आदि उपाय के द्वारा रूपकाय, क्षेत्र, परिवार आदि महाभोग की फल सम्पत्ति का परिग्रहण करने से भगवान् के परिनिर्वाण में भी स्थिति नहीं होगी, प्रज्ञा के द्वारा सभी विपर्यासों का सम्यक् प्रहाण हो जाने से संसार में नहीं रहेगा, क्योंकि संसार का मूल तो विपर्यास है। इस प्रज्ञा तथा उपाय के स्वरूप वाले प्रतिपत्ति से समारोप तथा अपवाद के अन्तों का परिहार करके मध्यम-मार्ग का उद्भव होता है क्योंकि प्रज्ञा से समारोप अन्त का वर्जन होता है और उपाय से अपवाद अन्त का प्रहाण। इसलिए आर्यधर्मसंगीति में कहा गया है—“सुलक्षण तथा अनुव्यञ्जन रूपकाय के परिनिष्पादन में अभिमत होते हैं न कि धर्मकाय के अभिसमय मात्र में अभिरत।” पुनः कहा—प्रज्ञा तथा उपाय से उत्पादित तथागतों की सम्भावना अन्य प्रत्ययों पर अपेक्षित जाननी चाहिए।

फिर कहा—“धर्म को जहाज की भाँति जानने वालों के द्वारा धर्मों ही का प्रहाण करना चाहिए, अधर्म का तो और पहले ही।” यह तो विपरीत में अभिनिवेश



का प्रहाण कराने के अभिप्राय से 'प्रहाण करना चाहिए' ऐसा कहा गया न कि प्रयोजन सिद्ध करने के लिए भी आश्रय नहीं लेना चाहिये। फिर जैसा कहा गया है कि धर्म का परिग्रहण करना चाहिये पर उद्ग्रहण नहीं करना चाहिये। इसका अर्थ यह है कि—विपरीत मार्ग से ग्रहण नहीं करना चाहिए। और जो कहीं पर दान आदि संसार का फल कहा गया है, वह तो प्रज्ञा से रहित दान आदि के पूर्ववर्णित उतने ही कुशल-मूल से संतुष्ट होने वालों के विषय में श्रेष्ठ कुशलमूलों पर प्रोत्साहित करने के लिए है। यदि ऐसा नहीं होता तो आर्यबिसलकीर्तिनिर्देश आदि पूर्वोक्त सब विरुद्ध ही हो जायेगा। इसलिए यह सिद्ध हुआ कि—प्रज्ञा तथा उपाय दोनों का ही सेवन करना चाहिये।

वहाँ प्रज्ञा से परिगृहीत दान आदि 'पारमिता' का नाम प्राप्त करते हैं, अन्यथा नहीं। अतः दान आदि की परिशुद्धि के लिए समाधि में स्थित होकर प्रज्ञा उत्पन्न करने के लिए यत्न करना चाहिये।

अब वहाँ पहले श्रुतमयी प्रज्ञा उत्पन्न करनी चाहिए। तब उससे आगम के अर्थ का अवधारण होता है, उसके बाद चिन्तामयी प्रज्ञा के द्वारा नीतार्थ तथा नेयार्थों का भेदन करते हैं। तब उससे निश्चय करके भूत अर्थ की ही भावना करनी चाहिये, न कि अभूत अर्थ की। अन्यथा विपरीत की भावना और विचिकित्सा का भी निवारण न होने से सम्यक् ज्ञान का उदय नहीं होगा। इसलिए भावना व्यर्थ हो जायेगी, जैसे कि तीर्थिकों की भावना। जैसा कि भगवान् ने समाधिराज में भी कहा है—

“यदि धर्मों में नैरात्म्य का प्रत्यवेक्षण हो, और उसका प्रत्यवेक्षण करके यदि भावना करे तो वही फल (रूपी) निर्वाण की प्राप्ति का हेतु है। जो अन्य हेतु हैं, वे तो शान्ति के लिए नहीं होते।”

इसलिए चिन्तामयी प्रज्ञा के द्वारा युक्ति तथा आगम से परोक्षण करके सम्यक् (तत्त्व या) वास्तविक स्वरूप की भावना करनी चाहिये। वस्तुओं का स्वरूप परमार्थतः अनुत्पाद ही है, यह युक्ति तथा आगम से निश्चित किया गया है। उसमें आगम से जैसा कि आर्यधर्मसङ्गीति में कहा गया है—“अनुत्पाद ही सत्य है, उत्पाद आदि अन्य धर्म तो असत्य हैं।” यह भी परमार्थ के अनुकूल होने से अनुत्पाद सत्य है, ऐसा कहा गया है। परमार्थतः न उत्पाद है और न अनुत्पाद, क्योंकि वह सभी व्यवहारों से परे है। फिर उसीमें कहा गया है—“कुलपुत्र! लोक की स्थिति उत्पाद तथा निरोध के अभिनिवेश पर है। इसलिए महाकरुणावान् तथागत ने जगत् के भयस्थानों का निवारण करने के लिए व्यवहारवश कहा था कि 'उत्पाद होता है, निरोध



होता है', न कि ( परमार्थतः ) इसमें किसी भी धर्म का उत्पाद होता है।" **आर्यबुद्ध-सङ्गीति** में भी कहा गया है—“योनिशः पृच्छा क्या है ? योनि क्या है ? कहा गया कि अनुत्पाद योनि है, उसकी पृच्छा योनिशःपृच्छा है। फिर उसमें कहा—“सभी धर्म चकारमुख हैं, क्योंकि नाश तथा उत्पाद से रहित है। ( और ) सभी धर्म अभाव-मुख हैं, क्योंकि स्वभावता से शून्य हैं। **आर्यसत्यद्वयविभाग** में भी—“अनुत्पाद समता होने से सभी धर्मों की समता है”, ऐसा कहा गया है। **प्रज्ञापारमिता** में भी कहा गया है—“हे सुभूति ! रूप तो रूपस्वभाव से शून्य है, विज्ञानपर्यन्त विज्ञान के स्वभाव से शून्य है, क्योंकि स्वलक्षण-शून्यता के आधार पर है।

**हस्तिकक्षय** में भी कहा गया है—

“जिसका उत्पाद सम्भव हो, ऐसी कोई भी वस्तु प्राप्त नहीं है। असम्भव वस्तुओं में अज्ञानी लोग सम्भव की इच्छा करते हैं।”

**पितापुत्रसमागम** में भी कहा गया है—“ये सभी धर्म त्रिकाल में समता से ही समान हैं। अतीत काल में भी सभी धर्म स्वभावोपरहित थे, वर्तमान काल पर्यन्त स्वभाव से रहित हैं ” इस प्रकार आगम से परीक्षण करना चाहिये।

युक्ति के द्वारा स्थिर किये गये आगम के अर्थों को अन्यो के द्वारा अन्यथा कर सकना सम्भव नहीं है। इसलिए युक्ति से भी परीक्षण करना चाहिये। अब संक्षेप में युक्ति कही जा रही है। वस्तुओं की उत्पत्ति विना हेतु के होगी अथवा हेतु से ? कभी-कभी ही दिखाई पड़ने से विना हेतु के उत्पाद नहीं होगा। यदि कारण की अपेक्षा न होगी तो अन्तर नहीं हो सकेगा, इसलिए उत्पाद-काल की भाँति सदा और सर्वत्र वस्तुएँ क्यों न होने लगेंगी ? अभाव काल से भी अन्तर न होने के कारण उत्पत्ति के समय में भी नहीं होंगी, तो इस प्रकार हेतु के विना (उत्पाद) उचित नहीं है। सहेतु से भी ( उत्पाद नहीं है ), क्योंकि जैसा तीर्थिकों ने ईश्वर आदि नित्य-हेतु कल्पित किया है, उससे भी वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती, क्योंकि उत्पाद क्रमशः दिखाई देते हैं। अवि-कल हेतुओं के फल का क्रमशः उत्पन्न होना उचित नहीं है, क्योंकि वह निरपेक्ष है। स्वयं समर्थ ईश्वर आदि को अन्य की अपेक्षा नहीं होती, क्योंकि नित्य होने के कारण अन्यो के उपकार की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अनुपकारी में अपेक्षा का योग नहीं होता। इसीलिए ईश्वर आदि की सर्वसामर्थ्यो से शून्य होने के कारण वन्ध्यापुत्र आदि की भाँति निःस्वभावता ही है। वस्तु अर्थक्रियासमर्थ होने के कारण वह ( निरपेक्षतः ) किसी भी कार्य को क्रमशः उत्पन्न करने में समर्थ नहीं है, जैसा कि पहले विचार किया गया है। युगपद् भी (उत्पाद) नहीं होगा, क्योंकि इस प्रकार सभी कार्यों को युगपद् उत्पन्न करके, बाद में भी यदि वह वैसा ही उत्पाद कर सके, तब फिर से भी समर्थस्वभाव की अनुवृत्ति



होने से पहले जैसी कार्य की उत्पत्ति की सम्भावना होने लगेगी। अनुवृत्ति न होने पर पूर्वस्वभाव का परित्याग कर देने से अनित्यता की सम्भावना होने लगेगी।

इसलिए नित्य नाम की कोई भी वस्तु नहीं है। इसीलिए भगवान् ने कहा था कि “हे महामते ! आकाश, निरोध, निर्वाण आदि अकृत वस्तुओं पर अभिनिवेश करके समारोप होता है, वही असत् का समारोप है।” इस प्रकार इनका नित्य से उत्पाद युक्त नहीं है। अनित्य से भी नहीं है, क्योंकि इनमें भूत और भविष्य के अवस्तु होने से उससे उत्पाद अयुक्त है, क्योंकि बिना हेतु के उत्पाद की सम्भावना होने लगेगी। समान तथा असमान काल में उससे उत्पाद न होने से वर्तमान से भी उत्पाद नहीं होगा। इस प्रकार उत्पादकों का काल समान से नहीं होता है, क्योंकि हेतु के स्वभाव की भाँति कार्य की भी तत्समानकालता निष्पन्न होने लगेगी। भिन्न काल से भी उत्पत्ति नहीं होती, क्योंकि यदि कालान्तर के व्यवधान से उत्पाद होने लगेगा तो अतीत आदि से उत्पत्ति होने लगेगी। अव्यवधान से भी उत्पाद मानने पर पूरी तरह यदि व्यवधान हो तो एक ही क्षण में सभी क्षणों का अनुप्रवेश होगा, अतः कल्प के भी क्षणमात्र में हो जाने का प्रसङ्ग होगा। यथा परमाणुओं का सभी ओर संयोग होने पर तो पिण्ड के भी अणु मात्र होने का प्रसङ्ग आ जायेगा। यदि एक अंश से संयोग हो तो क्षण के सावयव हो जाने की सम्भावना होगी। स्वतः भी उत्पन्न नहीं होते, क्योंकि निहेतुक पक्ष में ही इस पक्ष का संग्रह हो जायेगा और स्वयं अपने में ही कर्त्ता का विरोध होगा। दोनों से भी ( उत्पाद सम्भव ) नहीं, क्योंकि दोनों पक्षों में होने वाले दोषों की सम्भावना होने लगेगी।

इसलिए ये सभी भाव परमार्थतः अनुत्पन्न ही हैं। संवृत्ति में उत्पाद के विद्यमान होने से आगम आदि का विरोध नहीं होगा, जैसा कि भगवान् ने भी कहा है—

“वस्तुओं की उत्पत्ति संवृत्ति से है। परमार्थतः वे निःस्वभाव हैं। निःस्वभाव पर होने वाली जो भ्रान्ति है, वही सम्यक् संवृत्ति मानी गयी है।”  
यही युक्ति भगवान् को अभीष्ट है, क्योंकि शालिस्तम्ब आदि सूत्रों में स्वतः, परतः, उभयतः और बिना हेतु के उत्पाद का निषेध किया गया है।

अथवा इस प्रकार युक्ति से परीक्षण करना चाहिये। भाव दो प्रकार के हैं—रूपी तथा अरूपी। इनमें जो घड़ा आदि रूपी हैं, वे तो अणुशः विभिन्न रूप वाले होने के कारण एक स्वभाव के नहीं हैं। आगे-पीछे अवस्थित अणु पूर्व आदि दिग्भेदों से पृथक् किये जाने पर सिद्ध नहीं होते हैं। अणुओं के संचयात्मक होने के कारण अनेक-स्वभाव भी ठीक नहीं हैं। और न तो एक तथा अनेक स्वभाव के अतिरिक्त वस्तु का कोई अन्य स्वभाव है। अतः ये रूपवान् भाव तो स्वप्न आदि में उपलब्ध रूप



आदि की भाँति परमार्थतः निःस्वभाव ही हैं। यह तो भगवान् ने आर्यलङ्कावतार में कहा भी है—“और फिर महामते ! गाय की सींग भी अणुओं में विभक्त करने पर नहीं रह सकती है। अणु भी विभक्त करने पर अणुओं के लक्षण से युक्त नहीं रह पायेंगे।”

और जो अरूपी हैं, वे भी उसी प्रकार परीक्षण करने पर निःस्वभाव ही हैं। ऐसा मानना चाहिये कि जैसे बाहर के नील आदि अर्थ, न होने के बल से विज्ञान आदि अरूपी स्कन्ध ही नील आदि के रूप में अवभासित होते हैं। भगवान् ने भी कहा है कि—

“बाह्य रूप नहीं हैं। अपना चित्त ही बाहर दिखाई देता है।” इसलिए नील आदि विभिन्न आकारों में दिखाई देने के कारण तथा ग्राह्य-ग्राहक के आकारों में दिखाई देने से इनका एक स्वभाव होना ठीक नहीं है, क्योंकि एक और अनेक में विरोध होने से एक का अनेक के स्वभाव का होना ही अनुचित है। किसी एक का स्वभाव असिद्ध होने पर अनेकरूपता भी उचित नहीं है, क्योंकि अनेक तो एक का समूह ही है।

यदि ये झूठे ही रूप आदि के आकार प्रतीत होते हैं, ऐसा मानते हैं तो विज्ञान भी असत्य हो जायेगा, क्योंकि विज्ञान भी उसके स्वरूप से भिन्न नहीं होगा। स्वयं प्रकाशमान स्वरूप के अतिरिक्त विज्ञान का कोई अन्य रूप नहीं है। रूप आदि अपने आप ही आभासित होते हैं, तो ज्ञान के स्वरूप को प्राप्त वे भी मिथ्या हो जायेंगे। अतः सारे ही विज्ञान को मिथ्या मानना होगा। इसीलिए ‘विज्ञान तो माया की भाँति है,’ ऐसा भगवान् ने कहा है। इसलिए एक तथा अनेक स्वभाव से, शून्य होने के कारण ये सभी वस्तुयें परमार्थतः सत्य नहीं हैं, ऐसा निश्चित है। यही अर्थ भगवान् ने आर्यलङ्कावतार में कहा है—

“जैसा दर्पण में रूप एकत्व तथा अन्यत्व से विवर्जित है, और दिखाई तो देता है, किन्तु वहाँ होता नहीं, वैसी ही वस्तुओं की स्थिति है”

‘एकत्वान्यत्ववर्जितम्’ इसका अर्थ है—एकत्व तथा अन्यत्व से रहित। फिर कहा गया है—

“बुद्धि के द्वारा विवेचित के स्वभाव का ग्रहण नहीं हो पाता है। इस लिए वे निरभिलाप तथा निःस्वभाव भी प्रदर्शित किये गये हैं।”



इस प्रकार चिन्तामयी प्रज्ञा के द्वारा भूतार्थ का परीक्षण करके उस का प्रत्यक्ष करने के लिए भावना-मयी प्रज्ञा को उत्पन्न करना चाहिए। बहुश्रुत आदि मात्र होने से अर्थ प्रत्यक्ष नहीं हो सकता है, ऐसा आर्यरत्नमेघ आदि में कहा गया है। प्रतिपत्ति करने वालों को ही अनुभव होता है। अतिस्पष्ट ज्ञान-आलोक के उदय के बिना सम्यक् (अर्थ) पर ढका हुआ तम (अन्धकार) का आवरण दूर नहीं होता। अनेक बार भावना करने पर अभूत-अर्थ में भी अतिस्फुट ज्ञान उत्पन्न होता है। जैसे कि अशुभ तथा पृथ्वीकृत्स्न आदि की समापत्ति करने वालों को ज्ञान होता तो फिर भूतार्थ के लिये कहना ही क्या ? इस प्रकार की गयी भावना का फल परिस्फुटज्ञान है, इसलिये सफलता है ऐसा भगवान् ने समाधिराज में कहा है—

“आप लोगों को अवबोधित करता हूँ प्रतिवेदन करता हूँ कि जैसे-जैसे मनुष्य अनेक बार परीक्षण करेगा वैसे-वैसे उस पर स्थित उन विकल्पों से चित्त आश्रित होता जायेगा।”

ऐसा विस्तार से कहा गया है। इसलिए तत्त्व को साक्षात्कार करने का इच्छुक भावना में प्रवृत्त होता है।

इसमें प्रथम ही योगी को चित्त स्थित करने के लिए शमथ सिद्ध करना चाहिए। चित्त की जल के समान चञ्चल होने से शमथ के आधार के बिना स्थिति नहीं है। असमाहित-चित्त से यथाभूत जानना सम्भव नहीं है। भगवान् ने कहा है कि—“समाहित चित्त के द्वारा यथाभूत को जानता है।” वह शमथ-लाभ आदि कामनाओं में निरपेक्ष सम्यक् प्रवृत्ति में स्थित, दुःखादि अधिवासना के स्वभाव वाले, वीर्य प्रारम्भ किये हुये (व्यक्ति) को शीघ्रता से सिद्ध होता है। इसलिए आर्यसंधिनिर्माण आदि में भी दान आदि उत्तरोत्तर के कारण के रूप में कहे गये हैं।

इस प्रकार शील आदि शमथ-सम्भारों में स्थित रहकर मन के अनुकूल स्थान में सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को प्रणाम आदि करके, पाप की देशना तथा पुण्य का अनुमोदन करके, सकल जगत् के उद्धार के आशय वाला महाकरुणा को अभिमुख करके, शरीर सीधा करके, सुखासन पर बैठकर, पर्यङ्कबाँधकर समाधि को अभिनिष्पन्न करे।

वहाँ पहले संक्षेप में जिस वस्तु का जितने प्रकार से विचार करना चाहिए, जो सभी वस्तुओं का संग्रह हो जाता है, उस पर चित्त प्रतिष्ठित करना चाहिए। संक्षिप्त



वस्तु रूपी तथा अरूपी भेद से दो प्रकार की है। आदिकर्मिक के विक्षेप दोष को दूर करने के लिए फिलहाल संक्षिप्त का आलम्बन करना उचित है। जब मनस्कार पर विजय प्राप्त कर लेता है, तब स्कन्ध, धातु आदि भेदों से संशोधन करके विस्तार का भी आलम्बन होता ही है। जैसा कि आर्यसन्धिनिर्मोचन आदि में कहा गया है कि—योगियों का अठारह प्रकार की शून्यता के आलम्बन आदि के भेद से अनेक प्रकार का आलम्बन है।

यहीं पर भगवान् ने सत्त्वों के उपकारहेतु रूपी, अरूपी आदि के भेद से संक्षेप मध्य तथा विस्तार के द्वारा वस्तुओं का भेद अभिधर्म आदि में कहा है। और उस वस्तु को अध्यारोप तथा अपवाद का परिहार करने के लिए स्कन्ध, धातु आदि के संग्रह के रूप में गिनना चाहिये। तब सर्ववस्तुओं के संग्रह का निश्चय करके उसी पर चित्त को पुनः पुनः प्रवृत्त करना चाहिये।

जब बीच में राग आदि से चित्त बाहर की ओर विक्षिप्त हो जाये, तब विक्षेप को जानकर अशुभ आदि की भावना से विक्षेप को शान्त करके पुनः उसी पर बारंबार चित्त को प्रवृत्त करना चाहिये। अशुभ आदि की भावना के क्रम यहाँ विस्तार के भय से नहीं लिखे गये हैं। जब चित्त को वहाँ अनभिरत देखे, समाधि के गुणों को देखने से उस पर अभिरति की भावना करे, विक्षेप के दोषों के दिखलाई पड़ने से अरति को शान्त करना चाहिए। फिर जब स्त्यान तथा मिद्ध से अभिभूत होने के कारण आलम्बन ग्रहण के अस्पष्ट होने से चित्त लीन हो, तब अलोक संज्ञा की भावना के द्वारा अथवा परममुदित वस्तु बुद्ध, आदि के गुणों का मनस्कार के द्वारा लय का उपशमन करके उसी आलम्बन को और भी दृढता के साथ ग्रहण करे।

जब पूर्व काल के हँसने, रमण आदि के स्मरण से बीच-बीच में चित्त में औद्धत्य दिखलाई पड़े, तब अनित्यता आदि संवेगों पर मनस्सिकार से औद्धत्य को प्रशान्त करना चाहिये। फिर उसी आलम्बन पर चित्त की अभिसंस्कार के बिना प्रवृत्ति कराने में प्रयत्न करना चाहिये। जब लय और औद्धत्य दोनों से रहित होने के कारण चित्त समप्रवृत्त तथा स्वरसवाही दिखलाई पड़े, तब आभोग को शिथिल करके उपेक्षा करनी चाहिये। जब समप्रवृत्ति होने पर यत्न किया जाता है, तब चित्त विक्षेप में पड़ जाता है।

जब उसी आलम्बन में अनभिसंस्कार में चित्त जबतक इच्छानुसार प्रवृत्त हो जाता है, तब ऐसा जानना चाहिए कि 'शमथ' निष्पन्न हो गया है। शमथ का स्वभाव तो चित्त की एकाग्रतामात्र है, यही सभी शमथों का सामान्य-लक्षण है। इसका



आलम्बन तो अनिश्चित ही है। इस मार्ग को प्रज्ञापारमिता आदि में भी भगवान् ने कहा है—जैसा कि “वहाँ चित्त स्थापित करता है, संस्थापित करता है, अवस्थापित करता है, उपस्थापित करता है, दमन करता है, शान्त करता है, व्युपशान्त करता है, एकाग्र करता है, समाहित करता है,” इन नव पदों से कहा गया है।

वहाँ ‘स्थापयति’ का तात्पर्य है चित्त को आलम्बन से बाँधना, ‘संस्थापयति’ का तात्पर्य है उसी आलम्बन पर प्रबन्ध के साथ प्रवृत्त करना। ‘अवस्थापयति’ का तात्पर्य है विक्षेप को जान कर परिहार करता है। ‘उपस्थापयति’ का तात्पर्य है विक्षेप-प्रहाण करते हुये आगे आगे पुनः उसी आलम्बन पर स्थापित करता है। ‘दमयति’ का तात्पर्य है रति को उत्पन्न करता है। ‘शमयति’ का तात्पर्य है विक्षेप के दोषों को देखकर अरति का प्रशमन करता है। ‘व्युपशमयति’ का तात्पर्य है स्त्यान-मिद्ध आदि उभरे हुये को प्रशान्त करता है। ‘एकोतीकरोति’ का तात्पर्य आलम्बन में अभिसंस्कार के बिना प्रवृत्ति कराने में यत्न करता है। ‘समादधाति’ का तात्पर्य है चित्त-समता हो जाने पर उपेक्षा करता है। अर्थात् समन्वाहरण करता है, ये इन पदों के अर्थ हैं, जिनको आर्यमैत्रेय तथा पूर्ववर्ती आचार्यों ने किया है।

संक्षेपतः सभी समाधियों के छः दोष होते हैं कौसीद्य, आलम्बन-संप्रमोष, लय, औद्धत्य, अनाभोग तथा आभोग। इनके प्रतिपक्ष में आठ प्रहाण-संस्कारों की भावना करनी चाहिये। वे हैं—श्रद्धा, छन्द, व्यायाम, प्रश्रब्धि, स्मृति, सम्प्रजन्य, चेतना तथा उपेक्षा। इनमें से प्रथम चार कौसीद्य के प्रतिपक्ष हैं। इस प्रकार समाधि के गुणों में अभिसम्प्रत्यय-लक्षणयुक्त श्रद्धा के कारण वहाँ योगी की अभिलाषा उत्पन्न होती है। तत्पश्चात् अभिलाषा से (योगी) वीर्य आरम्भ करते हैं, उस वीर्य के बल से काय तथा चित्त की कर्मण्यता प्राप्त करते हैं। उससे काय तथा चित्त की प्रश्रब्धि से कौसीद्य की निवृत्ति होती है। इसलिए श्रद्धा आदि की भावना कौसीद्य के प्रहाण-हेतु करनी चाहिये। स्मृति तो आलम्बन-सम्प्रमोष का प्रतिपक्ष है। सम्प्रजन्य लय तथा औद्धत्य का प्रतिपक्ष है, क्योंकि इससे लय तथा औद्धत्य का सम्यग् रूप से बोध होता है। लय और औद्धत्य का प्रशमन न होने के समय अनाभोग दोष होता है। इसके प्रतिपक्ष के रूप में चेतना की भावना करनी चाहिए। लय तथा औद्धत्य का प्रशमन होने पर जब चित्त प्रशमवाही होता है, तब आभोग दोष होता है। उसके प्रतिपक्ष में उस समय उपेक्षा की भावना करनी चाहिए।

इन आठ प्रहाण-संस्कारों से युक्त समाधि परमकर्मण्य होता है। उससे ऋद्धि आदि गुणों को सिद्ध करता है। इसीसे सूत्रों में कहा गया है कि “आठ प्रहाण संस्कारों से युक्त ऋद्धिपद की भावना करें।” वह चित्त की एकाग्रता उत्तरोत्तर



कर्मण्यता के सम्प्रयोग से और आलम्बन आदि गुणों का विशेषयोग होने से ध्यान, अरूपि-समापत्ति और विमोक्ष आदि के नाम को प्राप्त करती है।

इस प्रकार जब उपेक्षा वेदना से युक्त होती है, और वह सवितर्क तथा सविचार होती है, तब अनागम्य कहलाती है, क्योंकि प्रथम ध्यान का प्रयोग चित्त है। जब काम-तृष्णा तथा पाप-धर्मों से विविक्त हो जाता है, वितर्क, विचार, प्रीति, सुख और अध्यात्म-सम्प्रसाद से युक्त हो जाता है, तब 'प्रथम-ध्यान' कहा जाता है। इससे प्रथम ध्यान वितर्क मात्र से रहित होता है, और 'ध्यानान्तर' कहलाता है। जब वितर्क तथा विचार से रहित और प्रथम ध्यान भूमि की तृष्णा से विविक्त होता है, प्रीति, सुख, अध्यात्म-सम्प्रसाद से युक्त होता है, तब द्वितीय ध्यान कहा जाता है। जब द्वितीय ध्यान भूमि की तृष्णा से विविक्त होता है, सुख, उपेक्षा, स्मृति तथा सम्प्रजन्य से सम्प्रयुक्त होता है, तब तृतीय ध्यान कहा जाता है। जब तृतीय ध्यान भूमि की तृष्णा से विविक्त होता है, अदुःख, असुख, उपेक्षा तथा स्मृति से सम्प्रयुक्त होता है, तब चतुर्थ ध्यान कहा जाता है। इस प्रकार अरूपि-समापत्ति, विमोक्ष, अभिभवायतन आदि से भी आलम्बन तथा आकार आदि के भेदों से जोड़ना चाहिये।

इस प्रकार आलम्बन पर चित्त स्थिर करके प्रज्ञा से विवेचन करना चाहिये, जिससे ज्ञानालोक उत्पन्न होने से सम्मोह के बीज का अत्यन्त प्रहाण होगा, अन्यथा तीर्थिकों की भाँति समाधि मात्र के द्वारा क्लेश प्रहाण नहीं होगा। जैसा कि सूत्र (समाधिराज) में कहा गया है—

“इस समाधि की भावना भले ही की जाये, उससे आत्मसंज्ञा का विनाश नहीं होता, उससे पुनः क्लेश प्रकुपित होंगे, जैसे कि उद्रेक की समाधि-भावना।”

इस विषय में आर्यबुद्धकावतार में संक्षेप में प्रज्ञा की भावना का क्रम कहा गया है—

“चित्तमात्र पर आरुढ़ हो करके, बाह्य अर्थ की कल्पना न करे। तथता के आलम्बन पर स्थिर रहकर, चित्त-मात्र का भी अतिक्रमण करे। चित्तमात्र का अतिक्रमण करके निराभास का अतिक्रमण करे। निराभास में स्थित जो योगी होगा, उसे महायान दिखेगा। अनाभोग की गति शान्त होती है (और वह) प्रणिधानों से विशोधित होती है। श्रेष्ठ नैरात्म्य-ज्ञान को निराभास के द्वारा देखता है।”



इसका यह अर्थ है कि—प्रथम योगी, जो रूपी धर्म बाह्य-अर्थ के रूप में दूसरों के द्वारा परिकल्पित किये गये हैं, उनका विचार करे कि क्या ये विज्ञान से अलग हैं अथवा ये विज्ञान ही हैं, जो उसी प्रकार दिखलायी देता है? जैसे कि स्वप्न की अवस्था में। वहाँ विज्ञान से बाहर परमाणुशः विचार करे और परमाणुओं का भी भागों में परीक्षण करने पर योगी उन अर्थों को नहीं देखेगा। उसे उनके दिखाई नहीं पड़ने से ऐसा प्रतीत होने लगता है कि यह सब तो चित्तमात्र है, बाह्य-अर्थ तो है ही नहीं। उसे ऐसा कहा गया है—“चित्तमात्र पर आरुढ़ होकर बाह्यार्थ की कल्पना न करे।” रूपी धर्म के विकल्पों का प्रहाण करना चाहिए—यह इसका अर्थ है।

उन उपलब्धि लक्षण वाले ( भावों ) का परीक्षण करने पर उनकी अनुपलब्धि हो जाती है। इस प्रकार रूपी धर्मों का विवेचन करके अरूपी का विवेचन करना चाहिये। जो चित्तमात्र रहता है, वह भी ग्राह्य के न होने से ग्राहक संगत नहीं होता, क्योंकि ग्राहक को ग्राह्य की अपेक्षा होती है। इसलिए चित्त ग्राह्य तथा ग्राहक से विविक्त, अद्वय ही है ऐसा विचार करना चाहिये। अद्वय लक्षण है—

“तथता के आलम्बन पर स्थित रहकर (उस) चित्तमात्र का भी अतिक्रमण करना चाहिये।”

ग्राहक आकार का अतिक्रमण करना चाहिए। द्वय का निराभास ही अद्वय ज्ञान पर स्थित होना चाहिए, इसका यह अभिप्राय है।

इस प्रकार चित्तमात्र का भी अतिक्रमण करके, जो द्वय-निराभास ज्ञान है उसका भी अतिक्रमण करे, क्योंकि स्वतः तथा परतः भावों की उत्पत्ति युक्त नहीं है और ग्राह्य तथा ग्राहक मिथ्या ही हैं। उससे भी वे अव्यतिरेक होने से उसका भी सत्यत्व उचित नहीं है, ऐसा विचार करे। वहाँ अद्वय-ज्ञान में भी वस्तुता का अभिनिवेश त्याग देना चाहिये। अद्वय-ज्ञान के निराभास ज्ञान में ही रहना चाहिए, इसका यह अभिप्राय है। ऐसा होने पर वह सभी धर्मों की निःस्वभावता की प्रतिपत्ति में स्थित हो जाता है। उसमें स्थित होने वाले का परमतत्त्व में प्रवेश होने से निर्विकल्प समाधि में प्रवेश हो जाता है।

जब योगी अद्वय-ज्ञान के निराभास-ज्ञान में स्थित हो जाता है, तब परमतत्त्व में स्थित हो जाने से वह महायान को देखता है। जो परमतत्त्व का दर्शन है वही महायान कहलाता है। यही वह परमतत्त्व है, जो सभी धर्मों को प्रज्ञाचक्षु के द्वारा परीक्षण करने वाले को सम्यग् ज्ञान के प्रकाश का उदय होने पर सत्य का दर्शन है। जैसा कि सूत्र में भी



कहा गया है कि—“परमार्थ-दर्शन क्या है ? सभी धर्मों का दर्शन न होना ।” यहाँ इसी तरह का अदर्शन अभीष्ट है न कि आँखों को बन्द किये हुये और जन्म से अन्धों की भाँति प्रत्यय की अपूर्णता अथवा मनसिकार न होने से जो अदर्शन है ।

इसलिये भावों के अभिनिवेश आदि की विपरीतता की वासना का प्रहाण न होने से असंज्ञि-समापत्ति आदि से उठे हुए (व्यक्ति) की तरह योगी अमुक्त ही होगा, क्योंकि भाव आदि में अभिनिवेश के मूलभूत राग आदि क्लेश-समूह पुनः उत्पन्न होते हैं । “राग आदि की जड़ भावों का अभिनिवेश है” ऐसा आर्यसत्यद्वयनिर्देश आदि में भी कहा गया है । अधिकल्पप्रवेशधारणी में जो कहा गया है कि—“अमनसिकार से रूप आदि निमित्तों का प्रहाण करता है ।” वहाँ भी प्रज्ञा के द्वारा परीक्षण करने पर जो अनुपलब्धि होती है, वही अमनसिकार का अभिप्राय है, न कि मनसिकार का अभाव मात्र । क्योंकि असंज्ञिसमापत्ति आदि की भाँति अनादि काल से रूप आदि में अभिनिवेश वाले मनसिकार का परित्याग मात्र करने से प्रहाण होता नहीं ।

संशय का प्रहाण न करे तो पूर्वोपलब्ध रूप आदि में अभिनिवेश से मनसिकार का परिवर्जन करना सम्भव नहीं । जैसे कि अग्नि का परिवर्जन न करे तो दाह का परिवर्जन नहीं होता है । इस प्रकार इन रूपादि मिथ्या विकल्पों को कण्टक आदि की भाँति चित्त से अपने हाथों के द्वारा निकाला नहीं जा सकता । फिर कैसे ? संशय के बीजों को हटाने से । वहीं संशय के बीज को योगी की समाधि का आलोक होने पर प्रज्ञा की आँखों से परीक्षण करके, पूर्वतः उपलब्ध तथा उपलब्धिलक्षण प्राप्त रूपादि की अनुपलब्धि होने से रज्जु में सर्प के ज्ञान की भाँति दूर किया जा सकता है, अन्यथा नहीं । उसी प्रकार संशय का बीज दूर होने से रूप आदि निमित्तों के मनसिकार का त्याग किया जा सकता है, अन्यथा नहीं । ऐसा न हो तो समाधि का आलोकन होने से प्रज्ञा की चक्षु से भी न दिखाई पड़ने पर अन्धकूप में स्थित मनुष्य को घर के अन्दर पड़े हुए घट आदि में संशय होता है, उसी प्रकार योगी को भी रूपादि के अस्तित्व का संशय निवृत्त नहीं होता है । उसके निवृत्त न होने से आँखों का तिमिर दोष दूर न कर पाये हुये की भाँति जो अनुचित मिथ्या रूप आदि का अभिनिवेश प्रवृत्त होता रहेगा, और वह किसी के भी द्वारा दूर नहीं किया जा सकेगा ।

इसलिए समाधि के हाथ से मन को पकड़कर अतिसूक्ष्म प्रज्ञारूपी शस्त्र के द्वारा उस चित्त में विद्यमान रूप आदि के प्रति होने वाले मिथ्या-विकल्प के बीजरूपी रोग का निराकरण करना चाहिये । इस प्रकार जड़ से उखाड़े गये वृक्ष भूमि पर नहीं जमते, उसी प्रकार निर्मूल होने से (पुनः) मिथ्या-विकल्प चित्त में उत्पन्न नहीं



होंगे। अतः एव आवरण प्रहाण करने के लिए शमथ तथा विपश्यना (दोनों का) युगनद्ध-वाही मार्ग भगवान् ने निर्दिष्ट किया है, क्योंकि—“वे दोनों अविकल्प-सम्यग्-ज्ञान के हेतु हैं।”

जैसा कि (सूत्र में) कहा गया है—

‘शील में स्थित होकर समाधि प्राप्त होती है, समाधि प्राप्त होने पर ही प्रज्ञा की भावना होती है। प्रज्ञा से विशुद्ध ज्ञान होता है और विशुद्ध ज्ञान वाले को शील-सम्पत्ति होती है।’

इस प्रकार जब शमथ के द्वारा आलम्बन में चित्त स्थिर कर दिया जाता है, तब प्रज्ञा के द्वारा विचार करने पर सम्यग्ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न होता है। तब आलोक के प्रकाशित होने पर अन्धकार के निरास की भाँति आवरण दूर हो जाता है। अतः ये दोनों आँख तथा प्रकाश की भाँति सम्यग्ज्ञान को उत्पन्न करने में परस्पर अनुकूल स्थित होते हैं। आलोक तथा अन्धकार की भाँति एक का दूसरे से विरोध नहीं है। समाधि अन्धकार के स्वभाव का नहीं है। तब क्या है? चित्त की एकाग्रता के लक्षण वाला है। ‘वह समाहित होकर वास्तविकता को जानता है।’ इस वचन के कारण वह प्रज्ञा से पूर्णतः अनुकूल ही हो जाता है, न कि विरोधी। इसलिए समाहित की प्रज्ञा से परीक्षण करने पर सभी धर्मों की उपलब्धि नहीं होगी, वही परम अनुपलम्भ है। योगियों के उस तरह के अवस्थान के लक्षण तो अनाभोग है, क्योंकि उसके परे अन्य द्रष्टव्य नहीं रह जाता है। ‘शान्त’ तो भाव, अभाव आदि विकल्प के लक्षण वाले सारे प्रपञ्चों का उपशम है।

इस प्रकार जब योगी को प्रज्ञा से परीक्षण करने पर वस्तु का स्वभाव कुछ भी उपलब्ध नहीं होता है, तब उसको भाव-विकल्प नहीं ही होता है, अभाव का विकल्प भी उसमें नहीं ही है। यदि कभी कुछ भाव दिखाई पड़ता भी है, तो ऐसा होने पर उस निषेध से अभाव का विकल्प प्रवृत्त होता है। जब योगी को प्रज्ञाचक्षु के द्वारा परीक्षण करने पर तीनों कालों में भी भाव उपलब्ध नहीं होता, तब प्रतिषेध के द्वारा अभाव पर विकल्प कैसे करे? इस प्रकार अन्य विकल्प भी उस समय उसको नहीं उत्पन्न होते, क्योंकि भाव और अभाव दोनों विकल्पों के द्वारा सभी विकल्प व्याप्त हैं, क्योंकि व्यापक के बिना व्याप्य भी नहीं हो सकता है। इस प्रकार यह तो परम निर्विकल्प योग है। उसमें स्थित योगी के सभी विकल्पों का अस्त हो जाने से क्लेशावरण तथा ज्ञेयावरण सम्यग्रूप से प्रहीण हो जाते हैं। जैसे कि क्लेशावरण के अनुत्पन्न



तथा अनिरुद्ध वस्तुओं पर भाव आदि का विपर्यास मूल कारण है, ऐसा आर्यसत्यद्वय-निर्देश आदि में भगवान् ने कहा है ।

इस योगाभ्यास के द्वारा भाव आदि सभी विकल्पों का प्रहाण करने से समस्त भाव आदि विपर्यासों, अविद्यास्वभाव वाले क्लेशावरण के मूलों का प्रहाण हो जाता है, इसलिए मूल का उच्छेद होने से क्लेशावरण का मूल सम्यग् रूप से प्रहीण हो जाता है । जैसा कि आर्यसत्यद्वयनिर्देश में कहा गया है—“मञ्जुश्री ! क्लेशों को कैसे दबाया जा सकता है ? क्लेशों का परिज्ञान कैसे होता है ? मञ्जुश्री ने कहा - परमार्थतः अत्यन्त अज्ञात, अनुत्पन्न तथा अभाव वाले सभी धर्मों पर संवृत्ति से असद्विपर्यास होता है । उस असद्विपर्यास से संकल्प तथा विकल्प होते हैं । उस संकल्प तथा विकल्प से अयोनिशोमनसिकार होता है । उस अयोनिशोमनसिकार से आत्मसमारोप होता है, उस आत्मसमारोप से दृष्टिपर्युत्थान तथा उस दृष्टिपर्युत्थान से क्लेशों का प्रादुर्भाव होता है । देवपुत्र ! परमार्थतः सभी धर्मों को जिसने अत्यन्त अज्ञात, अनुत्पन्न तथा अभाव रूप में ज्ञान होता है, वह परमार्थतः अविपर्यस्त है, जो परमार्थतः अविपर्यस्त है, वह अविकल्प है । जो अविकल्प है, वह योनिशः प्रयुक्त है । जो योनिशः प्रयुक्त है उसको आत्मसमारोप नहीं होता है । जिसको आत्मसमारोप नहीं होता है, उसको दृष्टिपर्युत्थान नहीं होता है । परमार्थतः निर्वाण-दृष्टि-पर्यन्त सारे दृष्टिपर्युत्थान भी नहीं होते हैं । इस प्रकार अनुत्पाद में स्थित उसके क्लेशों को अत्यन्त विनीत देखना चाहिए । वह तो ‘क्लेश-विनय’ कहा जाता है, और जब हे देवपुत्र ! क्लेशों को निराभास ज्ञान के द्वारा परमार्थतः अत्यन्त-शून्य, अत्यन्ताभाव और अत्यन्त निर्निमित्त अच्छी तरह से जान लेता है, तब हे देवपुत्र ! क्लेशों का परिज्ञान हो जाता है । हे देवपुत्र ! और जैसे जो दुष्ट साँप की जाति जानता है, वह उस दुष्ट साँप के विष को शान्त करेगा । हे देवपुत्र ! उसी प्रकार जो क्लेशों के गोत्र को अच्छी तरह से जानता है उसके क्लेश शान्त हो जाते हैं । देवपुत्र ने कहा—हे मञ्जुश्री ! क्लेशों का गोत्र क्या है ? मञ्जुश्री ने कहा—हे देवपुत्र ! परमार्थतः अत्यन्त अज्ञात, अनुद्भूत और अभाव वाले सभी धर्मों पर जो परिकल्पनायें हैं, वे ही क्लेशों के गोत्र हैं ।” ऐसा विस्तार से कहा गया है ।

भाव आदि के विपर्यास से सभी विपर्यासों के व्यास होने से उसके प्रहाण पर सभी विपर्यासों का प्रहाण हो जाता है । अतः ज्ञेयावरण का भी इससे सम्यग्रूप से प्रहाण हो सकेगा, क्योंकि—आवरण तो विपर्यास के लक्षण वाले हैं । ज्ञेयावरण का प्रहाण करने पर प्रतिबन्ध न होने से सूर्यकिरण ( जिस प्रकार ) बादल आदि से रहित आकाश में सर्व निर्बाध फैलती है, उसी प्रकार योगी के प्रत्यक्ष में ज्ञान का प्रकाश फैलता है ।



इस प्रकार विज्ञान तो वस्तु-स्वभाव के प्रकाशस्वरूप है, और वह वस्तु उपस्थित होने पर भी प्रतिबन्ध होने से प्रकाशित नहीं होती। प्रतिबन्ध न होने पर तो अचिन्त्य विशेष शक्ति प्राप्त होने से क्यों सभी वस्तुओं को यथावत् प्रकाशित नहीं करेगा ? अतः संवृति तथा परमार्थ के रूप से सभी वस्तुओं का यथावत् परिज्ञान होने से सर्वज्ञता प्राप्त होती है। इसलिए यही आवरण के प्रहाण तथा सर्वज्ञता प्राप्ति का परम मार्ग है।

श्रावक आदि का जो मार्ग है, उससे सभी विपर्यासों का प्रहाण न हो पाने से दोनों आवरणों का सम्यक् प्रहाण नहीं हो पायेगा। जैसा कि **आर्यलङ्कावतार** में कहा गया है—“अन्य लोगों को तो सभी धर्मों को कारण के अधीन देखकर अनिर्वाण में भी निर्वाण की बुद्धि हो जाती है, क्योंकि हे महामते ! धर्मनैरात्म्य न देखने से इनको मोक्ष नहीं होता है। हे महामति ! श्रावकयान के अभिसमय के गोत्र वाले को तो अनिर्याण होने पर भी निर्याण की बुद्धि हो जाती है। हे महामते ! यहाँ कुदृष्टि से व्यावर्तन करने के लिये प्रयास करना चाहिए।” इसीलिये अन्य मार्ग के द्वारा मोक्ष न होने से ‘एक ही यान है,’ ऐसा भगवान् ने कहा है।

केवल बालों के द्वारा बाल-अवतारणा की अभिसन्धि से श्रावक आदि के मार्ग का उपदेश किया गया। जैसे कि—यह तो स्कन्ध आदि धर्म मात्र है, न कि आत्मा, इस प्रकार भावना करते हुये श्रावक पुद्गलनैरात्म्य में प्रवेश करता है। त्रैधातुक विज्ञप्ति मात्र है, इस प्रकार भावना करते हुये विज्ञान-वादियों के बाह्यार्थ नैरात्म्य में प्रवेश करता है। इस रीति से इस अद्वय ज्ञान का भी नैरात्म्य में प्रवेश करने के कारण परम तत्त्व (नैरात्म्य) में प्रविष्ट होता है, न कि विज्ञप्तिमात्रता में प्रवेश ही तत्त्व में प्रवेश है। जैसा पहले कहा गया है। **आर्यलोकोत्तरपरिवर्त** में भी कहा गया है कि—“और भी हे जिनपुत्र ! त्रैधातुक तो चित्तमात्र में अवतरित होता है, और वह चित्त भी अनन्त तथा अमध्य के रूप में अवतरित होता है।” उत्पाद और भङ्ग इन लक्षणों वाले दोनों अन्तों तथा स्थिति लक्षण वाले मध्य के न होने से चित्त अनन्त तथा अमध्य है। इसलिए अद्वय-ज्ञान में प्रवेश ही तत्त्व में प्रवेश है।

योगियों की वह अवस्था किससे विशुद्ध होगी ऐसा कहें तो (उत्तर) कहा है कि—“प्रणिधानों के द्वारा विशोधित होगी।” महाकरुणा के द्वारा जो समस्त सत्त्वों का अर्थ करने के लिए बोधिसत्त्वों ने प्रणिधान किया उस प्रणिधान के बल से उत्तरोत्तर दान आदि कुशलों का अभ्यास करने से वह उस प्रकार से परिशुद्ध हो जायेगी। उससे सभी धर्मों की निःस्वभावता का ज्ञान होने पर भी सभी सत्त्वों पर आश्रितता जब तक निवृत्त नहीं हो जाती, संसार के दोषों से लिप्त न होते हुये, अन्त तक संसार में ही रहते हैं।



कैसे अनाभोग और शान्त हैं ? इसका कारण कहते हैं—

“श्रेष्ठज्ञान नैरात्म्य को निराभास के द्वारा देखते हैं।” इसलिए अद्वयवादियों को अद्वयलक्षण वाला जो श्रेष्ठज्ञान परमार्थतः अभिमत है, वह भी नैरात्म्य है। निःस्वभाव को योगी अद्वय-निराभास ज्ञान से देखता है। इसके बाद दूसरे द्रष्टव्य के न होने से वह अनाभोग है, और सभी विकल्पों के न होने से शान्त है।

यहाँ यदि जब इस प्रकार का योगी कौन है, जो देखता है, ऐसा कहें तो, ( उत्तर है कि ) परमार्थतः आत्मा आदि स्वतन्त्र रूप से कोई योगी नहीं है, और न कोई देखता ही है। किन्तु संवृत्ति में जैसे रूपादि विषयों के आकार के ज्ञान के उत्पन्न मात्र होने से विज्ञान ही लोक में उन उन रूपों में प्रयुक्त होता है। जैसे देवदत्त या यज्ञदत्त को ज्ञान से देखता है। आत्मादि तो कुछ भी नहीं है। उसी प्रकार यहाँ भी अद्वयज्ञान-निराभास ज्ञान ही उत्पन्न होता हुआ, निराभास-ज्ञान के द्वारा देखता है, ऐसा कहा जाता है। सभी धर्मों की परमार्थतः निःस्वभावता होने पर भी संवृत्ति में चाहे योगियों का ज्ञान हो, अथवा पृथग्जन का ज्ञान हो दोनों भी अनभीष्ट नहीं हैं। जैसा कि **आर्यसत्यद्वयनिर्देश** में विस्तार से कहा गया है कि—“वह परमार्थतः अत्यन्त अभाव है, फिर भी संवृत्ति में मार्ग-भावना करता है।”

अन्यथा श्रावक, प्रत्येकबुद्ध, बोधिसत्त्व, बुद्ध, पृथग्जन आदि की व्यवस्था कैसे होगी ? लेकिन जिसका संवृत्ति में भी कारण नहीं है, वह तो संवृत्ति में भी उत्पन्न नहीं होता, जैसे खरगोश का सींग आदि। जिसका कारण है, वह तो परमार्थतः झूठा होने पर भी उत्पन्न होता ही है, जैसे कि माया, प्रतिबिम्ब और प्रतिध्वनि आदि। माया आदि का संवृत्ति में प्रतीत्यसमुत्पाद होने पर भी वे परीक्षण के अयोग्य होने से परमार्थरूप से उनके वस्तुत्व होने का अवसर नहीं होगा। इसलिए सारा जगत् माया की भाँति कहा गया है। वहाँ जिस प्रकार क्लेश तथा कर्म की माया के कारण सत्त्वों की जन्मरूपी माया उत्पन्न होती है, उसी प्रकार योगियों को भी पुण्य तथा ज्ञान की सम्भार-रूपी माया के कारण योगियों के ज्ञानरूपी माया प्रवृत्त होती ही है। जैसा कि **आर्यप्रज्ञापारमिता** में कहा गया है—“सुभूते ! इस प्रकार सभी धर्म निर्माण हैं,— कोई श्रावक का निर्माण है, कोई प्रत्येकबुद्ध का निर्माण है, कोई बोधिसत्त्व का निर्माण है, कोई तथागत का निर्माण है, कोई क्लेश का निर्माण है, कोई कर्म का निर्माण है। हे सुभूते ! इस पर्याय से सभी धर्मों का निर्माणोत्पाद होता है।”

योगियों का पृथग्जन से यही अन्तर है कि वे तो मायाकार की भाँति माया को यथावत् जानने के कारण सत्य के रूप में अभिनिविष्ट नहीं होते, इसीलिए वे ‘योगी’



कहे जाते हैं। जो लोग अज्ञानी पृथग्जन के समान उस खेल को सत्य के रूप में ही अभिनिवेश करते हैं, वे लोग विपरीत में अभिनिवेश करने से 'अज्ञानी' कहे जाते हैं, इस प्रकार वे सब अविरुद्ध हैं। जैसा कि **आर्यधर्मसङ्गीति** में कहा गया है—

“जैसे कोई मायाकार निर्माण मुक्ति को पाने के लिए प्रयास करता है, उसको पहले से वह ज्ञात होने से उस निर्माण पर आसक्ति नहीं होती। तीनों भव निर्माण की भाँति हैं, संबोधि में पारंगत ऐसा समझते हैं (और) वह जगत् के लिए कवच पहनता है, उसी प्रकार पहले से ज्ञात जगत् होता है।”

इस प्रकार के क्रम से तत्त्व की भावना करनी चाहिए।

उसमें लय, औद्धत्य आदि के उत्पन्न होने पर पूर्व की भाँति प्रशमन करना चाहिए। जब सभी धर्मों का निःस्वभावता के रूप में आलम्बन होने से लय, औद्धत्य आदि से रहित होकर ज्ञान अनभिसंस्कार से प्रवृत्त होता है, तब शमथ तथा विपश्यना का युगनद्धवाही मार्ग निष्पन्न होता है। उस समय जब तक समर्थ हो सके तब तक अधिमुक्ति के बल से अधिमुक्तिचर्या की भूमि पर स्थित होकर भावना करनी चाहिए।

उसके बाद इच्छानुसार पर्यङ्क को खोले विना ( समाधि से ) व्युत्थान करके पुनः इस प्रकार सोचना चाहिए कि यदि ये सभी धर्म परमार्थतः ही निःस्वभाव हों तो क्या संवृति में विद्यमान ही हैं ? जैसा कि—**आर्यरत्नमेघ** में कहा गया—“बोधिसत्त्व नैरात्म्य में कुशल कैसे होता है ? कुलपुत्र ! इसमें बोधिसत्त्व सम्यक् प्रज्ञा से रूप का प्रत्यवेक्षण करता है, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञानों का प्रत्यवेक्षण करता है, वह रूप का प्रत्यवेक्षण करता हुआ रूप के उत्पाद को नहीं पाता है, निरोध को नहीं पाता है, समुदय को नहीं पाता है। इस प्रकार वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञानों के उत्पाद को नहीं पाता है, निरोध को नहीं पाता है, समुदय को नहीं पाता है। यह भी परमार्थतः अनुत्पाद में स्थित रहने वाली प्रज्ञा के द्वारा है, न कि व्यावहारिक स्वभाव से।” ऐसा विस्तार से कहा गया है। ये बाल बुद्धि वाले इस प्रकार निःस्वभाव वस्तुओं में विपरीत अभिनिवेश के कारण संसार में परिभ्रमण करते हुए विविध दुःखों का अनुभव करते हैं, ऐसा समझकर महाकरुणा को अभिमुख करके इस प्रकार सोचना चाहिए कि—मैं वैसा ही करूँगा जिससे सर्वज्ञता प्राप्त करके इनको धर्मता का ज्ञान करा सकूँ।



उसके बाद सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों की पूजा, स्तुति तथा उपसंहार प्रदान करके आर्यभद्रचर्या आदि का महाप्रणिधान करना चाहिए। उसके बाद शून्यता तथा करुणा-गर्भ वाले दान आदि समस्त पुण्य और ज्ञान के सम्भार के अर्जन में प्रवृत्त होना चाहिए। जैसा कि आर्यधर्मसङ्गीति में कहा गया है—“यथाभूत देखने वाले बोधिसत्त्व की सत्त्वों में महाकरुणा प्रवृत्त होती है, और उसे इस प्रकार का (मन) होता है कि मुझे सभी धर्मों का यथाभूत दर्शन कराने वाली समाधि के सुख को सभी सत्त्वों में निष्पन्न कराना है। वह उस महाकरुणा के द्वारा प्रेरित होकर अधिशील, अधिचित्त तथा अधिप्रज्ञा (इन) त्रिशिक्षाओं को परिपूर्ण करके अनुत्तरसम्यक्सम्बोधि से अभिसम्बुद्ध होता है।”

यही उपाय तथा प्रज्ञा से युगनद्ध प्रवृत्त होने वाला बोधिसत्त्वों का मार्ग है, जो परमार्थ को देखने पर भी संवृति का उच्छेद नहीं करता है। संवृति का उच्छेद न करने वाले की महाकरुणा पूर्वगामिनी होकर विपर्यास के बिना सत्त्व के लिए क्रिया आदि में प्रवृत्त हो जाती है। आर्यरत्नमेघ में कहा गया है कि—“बोधिसत्त्व महायान में कैसे कुशल होता है? यहाँ बोधिसत्त्व सभी शिक्षाओं में शिक्षित होता है, किन्तु वह शिक्षा को भी नहीं प्राप्त करता है, और शिक्षा-मार्ग को भी नहीं प्राप्त करता है, और जिसे सिखाता है उसे भी उपलब्ध नहीं होता और जो सिखाया जाता है उसे भी उपलब्ध नहीं होता है। इस हेतु, प्रत्यय तथा निदान से वे उच्छेद दृष्टि में नहीं पड़ते।” आर्यधर्मसङ्गीति में भी कहा गया है कि—“बोधिसत्त्वों की प्रतिपत्ति क्या है? बोधिसत्त्वों के जो कुछ काय-कर्म हैं, जो कुछ वाक्-कर्म हैं, तथा जो कुछ चित्त-कर्म हैं, वे सभी सत्त्वों की अपेक्षा से प्रवृत्त होते हैं, क्योंकि—महाकरुणा पूर्वङ्गम होती है, और वे महाकरुणा के वशीभूत हैं। वे सभी सत्त्वों के हित तथा सुख करने के अध्याशय से उत्पन्न होते हैं, ऐसे हिताशय वाला इस प्रकार का संजी होता है, कि सभी सत्त्वों की हितकारी तथा सुख साधने वाली जो प्रतिपत्ति है, वही मुझको सिद्ध करनी है। उसमें स्कन्धों में माया की भाँति प्रत्यवेक्षण की भी प्रतिपत्ति होती है, न कि स्कन्ध के परित्याग की इच्छा करता है। धातुओं में आशीविष की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति होती है, न कि धातु के परित्याग की इच्छा करता है। आयतनों में शून्यग्राम की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति होती है, आयतन के परित्याग की इच्छा नहीं होती। रूप में फेनपिण्ड की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति होती है, तथागत के रूपकाय की विठपना (सिद्धि) को न छोड़े। वेदना में बुलबुले की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति करता है, न कि तथागत के ध्यान तथा समाधि की समापत्ति से होने वाले सुख की निष्पत्ति के प्रयोग का अनारम्भ। संज्ञा में मरीचि की भाँति प्रत्यवेक्षण की प्रतिपत्ति होती है,



न कि तथागत-ज्ञान के निष्पादन की अप्रतिपत्ति। संस्कारों में केले की भाँति प्रत्यवेक्षणा की प्रतिपत्ति होती है, न कि बुद्ध-धर्म के अभिसंस्कारों की अप्रतिपत्ति। विज्ञान में माया के समान प्रत्यवेक्षणा की सिद्धि होती है, न कि ज्ञान के पूर्वगामी काय, वाक् तथा चित्त से कर्म-निष्पत्ति की अप्रतिपत्ति।” इत्यादि विस्तार से कहा गया है। इस प्रकार इन विस्तृत सूत्रों से उपाय तथा प्रज्ञा के रूप वाली प्रतिपत्ति को जानना चाहिए।

वहाँ यदि लोकोत्तर-प्रज्ञा की अवस्था में उपाय का सेवन होना सम्भव नहीं है, अपितु उपाय के सेवनकाल में बोधिसत्त्व मायाकार की भाँति अविपर्यस्त होने के कारण लोकोत्तर ज्ञान में प्रयोग करता है, और ज्ञान में प्रयोग के बाद होने वाली यथाभूत वस्तु की परमार्थतत्त्व के अनभिनिवेश रूप से अवबोध कराने वाली प्रज्ञा सम्भव होती है। प्रज्ञा तथा उपाय का युगनद्धवाही मार्ग यही है। **आर्याक्षयमतिनिर्देश** में भी कहा गया है कि ध्यान की अक्षय अवस्था में उपाय तथा प्रज्ञा के युगनद्धवाही मार्ग का अवबोध होना चाहिए। इस प्रकार इसी क्रम से बोधिसत्त्व उपाय तथा प्रज्ञा का सदा सत्कारपूर्वक दीर्घकाल तक अभ्यास से भावना करेगा तो बारह अवस्था-विशेष होंगे। वही अवस्थाएँ उत्तरोत्तर गुण-प्रतिष्ठा के लिये होने से भूमि के रूप में व्यवस्थापित होती हैं, जो अधिमुक्तिचर्या भूमि से लेकर बुद्ध-भूमि पर्यन्त हैं।

जब तक पुद्गल तथा धर्मों के नैरात्म्य-तत्त्व का साक्षात्कार नहीं होता है, तब तक केवल दृढतर अधिमुक्ति होती है। मार आदि से अभेद्य होकर जब अधिमुक्ति बल से तत्त्व की भावना की जाती है, तब दृढ अधिमुक्ति के माध्यम से अधिमुक्तिचर्या की भूमि व्यवस्थापित होती है। इस भूमि में स्थित बोधिसत्त्व पृथग्जन होने पर भी उसका बालों की सभी विपत्तियों से समतिक्रान्त होकर समाधि, धारणी, विमोक्ष, अभिज्ञा आदि असंख्य गुणों से युक्त होना **आर्यारत्नमेघ** में कहा गया है।

यहीं मृदु, मध्य, अधिमात्र तथा अधिमात्रता की चार अवस्थाओं से चार निर्वेधभागीय व्यवस्थापित किये गये हैं। इस प्रकार जब बाह्यार्थों का विनाश होकर किञ्चित् ज्ञानालोक स्पष्ट हो जाये तब ऊष्मागत निर्वेधभागीय होता है। वह यहाँ महायान में आलोकलब्ध-समाधि कहा जाता है। जब वही ज्ञानालोक मध्यमात्र स्पष्ट हो तब मूर्धन् नामक निर्वेधभागीय कहा जाता है, और वृद्धालोक-समाधि भी कहा जाता है। जब वही अधिक स्पष्ट होकर बाह्यार्थ में आभासित न होने वाला ज्ञानालोक हो जाए, तब विज्ञान-मात्र के स्थित रहने के कारण क्षान्ति नामक निर्वेधभागीय होत है और एकदेश-प्रविष्ट-समाधि भी कहा जाता है, क्योंकि वह ग्राह्य के आकार के



अनुपलम्भ में प्रविष्ट हुआ रहता है। जब ग्राह्य तथा ग्राहक के आकार से रहित अद्वय-ज्ञान का विनाश करेगा तब अग्रधर्म नामक निर्वेधभागीय होता है, और वही आनन्तर्य-समाधि भी कहा जाता है, क्योंकि उसके अनन्तर ही तत्त्व में प्रवेश होता है। यहाँ तक तो अधिमुक्तिचर्याभूमि है।

अन्य भूमियाँ तो संक्षेप में एकादश अङ्गों से परिपूर्ण होने के कारण व्यवस्थापित की जाती हैं। वहाँ पर सर्वप्रथम प्रथम भूमि तो पुद्गल तथा धर्मों के नैरात्म्य तत्त्व-अधिगम के अङ्ग-परिपूर्ण हो जाने से व्यवस्थापित की जाती है। इस प्रकार जब अग्रधर्म के अनन्तर ही सभी धर्मों की निःस्वभावता का साक्षात् करने वाला, लोकोत्तर, सभी प्रपञ्चों से रहित, अतिस्फुट ज्ञान पहले ही उत्पन्न होता है, तब बोधिसत्त्व का सम्यक्त्व, निर्दोष में प्रवेश करने से दर्शनमार्ग उत्पन्न होने के कारण प्रथम भूमि में प्रविष्ट होता है। इसलिए इस भूमि में सर्वप्रथम बोधिसत्त्व अज्ञात तत्त्व का अवबोध होने के कारण प्रमुदित होता है, इसी से इस भूमि को 'प्रमुदिता' कहा जाता है। उस भूमि में एक सौ बारह दर्शन हेतु क्लेशों का प्रहाण किया जाता है।

शेष भूमियाँ तो भावना-मार्ग के स्वभाववाली हैं। उनमें भावना-हेतु त्रेधातुक सोलह क्लेशों का प्रहाण होता है। इस भूमि पर बोधिसत्त्व को धर्मधातु-समुदागमता का अवबोध होने से स्वार्थ की भाँति परार्थ में प्रवृत्ति होने के कारण दान-पारमिता अतिरिक्ततर होती है। वह बोधिसत्त्व-तत्त्व का अवबोध होने पर भी जब तक सूक्ष्मापत्ति-स्खलन में सम्प्रजन्य-विहारी बनने में असमर्थ रहता है, तब तक प्रथम भूमि होती है। जब वह समर्थ हो जाता है, तब इसके अङ्गों की परिपूर्ति हो जाने से द्वितीय भूमि व्यवस्थापित होती है। इसलिए इस भूमि में सूक्ष्मापत्ति-स्खलन से असमुदाचार के कारण शीलपारमिता अतिरिक्ततर होती है। सभी दुःशीलता के मलों से रहित होने के कारण वह भूमि 'विमला' कही जाती है।

वह सूक्ष्मापत्ति-स्खलन के सम्प्रजन्य में विहार करने वाला भी होता है। जब तक सभी लौकिक समाधियों को सम्प्रवृत्त करने तथा जैसा सुना गया है उस प्रकार के अर्थ को 'सर्वथा धारण करने में समर्थ नहीं हो जाता तब तक द्वितीया भूमि ही होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब अङ्गों की परिपूर्णता हो जाने से तृतीया भूमि व्यवस्थापित होती है। उस भूमि में बोधिसत्त्व को श्रुतधारण करने और सभी लौकिक समाधियों के अभिनिर्हार के लिये सभी दुःखों को सहन करने के कारण क्षान्तिपारमिता अतिरिक्ततर होती है। इन समाधियों के लाभ से यह भूमि अपरिमित-लोकोत्तर ज्ञान का अवभास कराती है, अतः 'प्रभाकरी' कही जाती है।



वह सभी लौकिक समाधियों को प्राप्त करने पर भी जब तक यथाप्राप्त बोधिपक्ष वाले धर्मों के साथ अनेक बार विहार करने में और सभी धर्मों तथा समापत्तियों के चित्त को उपेक्षा करने में असमर्थ होता है, तब तक तृतीया भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब उसके अङ्गों की परिपूर्णता हो जाने से चतुर्थी भूमि व्यवस्थापित होती है। इस भूमि में बोधिसत्त्व के निरन्तर काय, वाक् तथा चित्त के जल्प से सम्यग् रूप से अतिक्रमण करने के लिये बोधिपक्ष धर्मों के द्वारा विहार करने के कारण वीर्यपारमिता और अतिरिक्ततर हो जाती है। वह भूमि सभी क्लेशरूपी इन्धनों को जलाने में सक्षम बोधिपक्षधर्मरूपी प्रकाश उत्पन्न ने करके कारण 'अचिष्मती' कही जाती है।

वह बोधिपक्षधर्म में निरन्तर विहार करता है। जब तक सत्त्यों की भावना करता हुआ संसार के अनभिमुख तथा निर्वाण के अभिमुख चित्त को व्यावर्तन करके उपाय से संगृहीत बोधिपक्षधर्मों की भावना करने में असमर्थ हो, तब तक चतुर्थी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब अङ्गों की परिपूर्णता हो जाने के कारण पंचमी भूमि व्यवस्थापित की जाती है। इसी से इस भूमि में उपाय से संगृहीत बोधिपक्ष की भावना-परिपूर्णता बड़ी कठिनाई से जीती जाती है, अतः 'सुदुर्जया' कही जाती है।

इस भूमि में चार आर्यसत्त्यों के आकार की भावना अनेक बार करने से ध्यान-पारमिता अतिरिक्ततर हो जाती है और वह उपाय से संगृहीत बोधिपक्ष में अनेक बार विहार करने वाला भी हो जाता है। जब तक संसार में प्रवेश करने में प्रत्यवेक्षण द्वारा निर्वित्सह चित्त की संतति से अनिमित्त विहार की समापत्ति में असमर्थ होता है, तब तक षष्ठी भूमि होती है। जब समर्थ होता है, तब इस अङ्ग की परिपूर्णता होने के कारण षष्ठी भूमि व्यवस्थापित होती है। इस भूमि में बोधिसत्त्व के प्रतीत्यसमुत्पाद की भावना में विहार करने के कारण प्रज्ञापारमिता की अतिरिक्तता होती है। इस लिए प्रज्ञापारमिता की अतिरिक्तता के कारण उस भूमि में सभी बुद्धधर्मों में अभिमुख होता है, इसी से यह 'अभिमुखी' कही जाती है।

वह अनिमित्त विहार का प्राप्तकर्ता भी होता है। जब तक निश्छिद्रा अनिमित्त विहार की समापत्ति में समर्थ नहीं होता है, तब तक षष्ठी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब उस अङ्ग की परिपूर्णता होने के कारण सप्तमी भूमि व्यवस्थापित होती है। उस भूमि पर बोधिसत्त्व सभी निमित्तों को अनिमित्त से प्रतिविद्ध करता है, और निमित्तकृत व्यवहार का निषेध नहीं करता है। इसलिए इस भूमि में उपाय-पारमिता की अतिरिक्तता होती है। यह भूमि अनाभोग-मार्ग से सम्बद्ध होने के कारण अतिदूरङ्गम होने से 'दूरङ्गमा' कही जाती है।



वह निश्छिद्र-निर्निमित्त में विहार भी करता है। वह जब तक अनाभोगवाही-निर्निमित्त स्थिति की समाप्ति करने में समर्थ नहीं होता, तब तक सप्तमी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब इस अङ्ग की परिपूर्णता के कारण अष्टमी भूमि व्यवस्थापित की जाती है। इस भूमि में अनाभोग से कुशलपक्ष का योग होने के कारण प्रणिधान-पारमिता की अतिरिक्तता होती है। अनिमित्त भोग के द्वारा चलायमान न होने से यह 'अचला' कही जाती है।

वह अनाभोग-अनिमित्तविहारी भी हो जाता है। जब तक पर्याय, निरुक्ति आदि प्रभेदों से सभी प्रकार की सारी धर्मदेशना करने के वशीभूत होने में असमर्थ रहता है, तब तक अष्टमी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है तब उस अङ्ग की परिपूर्णता होने के कारण नवमी भूमि व्यवस्थापित होती है। उस भूमि में बोधिसत्त्व के विशिष्ट प्रतिसंविद् की प्राप्ति होने से प्रज्ञा के विशिष्ट बल से युक्त हो जाने के कारण बलपारमिता की अतिरिक्तता हो जाती है। सभी आकार की धर्मदेशना में कुशल होने के कारण अनवद्य-मति-विशेष का लाभ होने से 'साधुमती' भूमि कही जाती है।

इसमें वह चार प्रतिसंविदों को प्राप्त भी करता है। जब तक बुद्ध-क्षेत्र, परिवार, निर्माण आदि को दिखाने में तथा परिपूर्ण-धर्मसम्भोग और सत्त्वपरिपाक करने में समर्थ नहीं होता है, तब तक नवमी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब इस अङ्ग की परिपूर्णता होने के कारण दशमी भूमि व्यवस्थापित की जाती है। यहाँ निर्माण आदि से सत्त्वपरिपाक करने के लिए ज्ञानविशेष से युक्त होने के कारण बोधिसत्त्व की ज्ञान-पारमिता अतिरिक्ततर होती है। यह तो धर्मदेशनारूपी मेघों से अनन्त लोक-धातुओं में धर्म की विशेष वर्षा होने के कारण 'धर्ममेघ' कही जाती है। स्कन्ध-परिशुद्धि आदि दूसरी भी व्यवस्थाओं के द्वारा भूमियों की व्यवस्था होती है। इसे ग्रन्थ-विस्तार के भय से नहीं लिखा गया।

वह निर्माण आदि की वशिता-प्राप्ति होने पर भी जब तक समस्त ज्ञेयों पर सभी आकार के असक्त तथा अप्रतिहत ज्ञान को उत्पन्न करने में समर्थ नहीं होता, तब तक दशमी भूमि होती है। जब समर्थ हो जाता है, तब इस अङ्ग के परिपूर्ण होने के कारण बुद्धभूमि की व्यवस्था की गयी है। यह भूमियों की व्यवस्था तो आर्यसंघि-निर्माण में निर्दिष्ट की गयी है। इस बुद्ध-भूमि में सभी आकारों की सभी सम्पत्तियों का प्रकर्षपर्यन्तगमन होने से इससे श्रेष्ठ कोई और स्थान नहीं है और इसके बाद भूमि की व्यवस्था नहीं होती है।



इस बुद्धभूमि के गुणों के पक्षों का अप्रमेय-प्रभेद होने से पूर्णतः बुद्धों के द्वारा भी वे नहीं कहे जा सकते हैं, फिर मुझ जैसे के द्वारा कैसे ? जैसे कि आर्यागण्डव्यूह में कहा गया है कि—

“अचिन्त्य बुद्ध तथा धर्मों का निरीक्षण करने पर भी गुणों के एक अंग के अन्त का भी अवबोध नहीं होगा ।”

संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि स्व तथा पर के लिये संपत्तियों के प्रकर्षपर्यन्त में होकर अशेष दोषों के निवारण में निष्ठा को प्राप्त करके भगवान् बुद्ध धर्मकाय में स्थित होकर सम्भोग तथा निर्माण कार्यों के द्वारा अशेष जगत् का हित अनाभोग रूप से करते हुये संसार के अन्त तक रहेंगे ।

इसलिए प्रेक्षावानों के द्वारा सभी गुणों के आकर भगवानों में श्रद्धा उत्पन्न करनी चाहिए और उनके गुणों की पूर्णतः सिद्धि के लिए सभी तरह प्रयास करना चाहिए । त्रिकाय आदि के प्रभेद अक्षरों के आधिक्य के भय से नहीं लिखे जा रहे हैं ।

सूत्रों के नयों के अनुकूल जिन-पुत्रों के इस मार्ग का संभाषण करने से मैंने जो अनल्प पुण्य प्राप्त किया है, उससे अल्पज्ञानवाले जगत् को शीघ्र ही परमबुद्धि प्राप्त हो ।

भूपति श्रीदिव्यराज के आदेश से भदन्त कमलशील के द्वारा भावनाक्रम का यह संक्षेप किया गया ।

॥ प्रथम भावना-क्रम का हिन्ही अनुवाद समाप्त हुआ ॥





महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिये बहुत से युद्ध लड़े।  
उन्होंने अनेक सैनिकों को भेजा और बहुत से जहाजों को बनाया।  
उनकी सेना बहुत बड़ी थी।

उन्होंने अनेक जहाजों को बनाया और बहुत से सैनिकों को भेजा।  
उनकी सेना बहुत बड़ी थी।

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिये बहुत से युद्ध लड़े।  
उन्होंने अनेक सैनिकों को भेजा और बहुत से जहाजों को बनाया।  
उनकी सेना बहुत बड़ी थी।

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिये बहुत से युद्ध लड़े।  
उन्होंने अनेक सैनिकों को भेजा और बहुत से जहाजों को बनाया।  
उनकी सेना बहुत बड़ी थी।

महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिये बहुत से युद्ध लड़े।  
उन्होंने अनेक सैनिकों को भेजा और बहुत से जहाजों को बनाया।  
उनकी सेना बहुत बड़ी थी।

॥ महाराष्ट्र के राजा शिवाजी महाराज ने अपने राज्य को एकत्रित करने के लिये बहुत से युद्ध लड़े ॥



## भावनाक्रम द्वितीय

मञ्जुश्री कुमारभूत को नमस्कार ।

महायान-सूत्रनय में अनुप्रविष्ट हो रहे लोगों के लिए भावनाक्रम संक्षेपमें कहा जा रहा है । यहाँ सर्वज्ञता की प्राप्ति अतिशीघ्र ही करने के इच्छुक प्रेक्षावानों को उसे प्राप्त कराने वाले हेतुओं तथा प्रत्ययों में प्रयत्नशील होना चाहिये ।

इस प्रकार इस सर्वज्ञता का तो हेतु के बिना होना अनुचित है, क्योंकि सभी को सदा सर्वज्ञता हो जाने का प्रसङ्ग होगा । निरपेक्षता होने पर तो वह कहीं भी प्रतिहत नहीं होगी, क्योंकि सभी सर्वदा सर्वज्ञ हो नहीं होते हैं । इसलिए किसी को कभी कुछ ही होने से सभी वस्तुएँ हेतु पर आश्रित ही हैं । सर्वज्ञता भी किसी को कभी कुछ ही सम्भव है, सभी कालों में नहीं होती, सभी स्थानों में नहीं होती, सभी को भी नहीं होती, इसलिए उसका तो हेतुओं तथा प्रत्ययों पर आश्रित होना ही निश्चित है । उन हेतुओं तथा प्रत्ययों में से भी अभ्रान्त तथा अविकल का सेवन करना चाहिए । भ्रान्त हेतुओं के अनुष्ठान से अतिदीर्घकाल में भी इष्टफल की प्राप्ति नहीं हो पाती, जैसे सींग से दूध दुहना । समस्त हेतुओं के उपयोग किये बिना भी फल की उत्पत्ति नहीं हो पाती है, क्योंकि बीजादि में किसी के भी न होने पर अंकुर आदि फल नहीं उत्पन्न होते हैं । इसलिए उस फल का इच्छुक समस्त अभ्रान्त हेतु तथा प्रत्ययों का सेवन करे ।

फलरूपी सर्वज्ञता के हेतु तथा प्रत्यय क्या है ? कहा जाता है कि यद्यपि जात्यन्ध के समान मुझ जैसे के द्वारा वे सब नहीं कहे जा सकते हैं तथापि स्वयं भगवान् ने ही अभिसंबुद्ध होकर विनेय जनों के लिये जैसा कहा था, उसी प्रकार मैं भी भगवान् के वचनों से ही कहूँगा । भगवान् ने उससे कहा था—“गुह्याधिपते ! वह सर्वज्ञ का ज्ञान तो करुणा के मूल से उत्पन्न हुआ है बोधिचित्त के हेतु से उद्भूत है, उपाय-निष्ठागत वाला है ।” इसलिए सर्वज्ञता की प्राप्ति के इच्छुकों को करुणा, बोधिचित्त तथा उपाय इन तीनों की शिक्षा लेनी चाहिए ।

करुणा से प्रेरित बोधिसत्त्व सभी सत्त्वों के उद्धार के लिये अवश्य प्रतिज्ञा करेंगे । इसके बाद स्वात्म-दृष्टि छोड़कर अतिदुष्कर, अविच्छिन्न रूप से दीर्घकाल में सिद्ध किये गये पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों में आदर से प्रवृत्ति करते हैं । वहाँ प्रवेश



करके अवश्य ही पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों को परिपूर्णतः सिद्ध करेंगे। सम्भारों के परिपूर्ण हो जाने पर सर्वज्ञता हस्तगत की भाँति होगी। अतः सर्वज्ञता का मूल करुणा ही होने से उसकी तो आदि में ही भावना करनी चाहिए। जैसा कि आर्य-धर्मसंगीति में भी कहा गया है—“हे भगवन् ! बोधिसत्त्वों को अनेक धर्मों की शिक्षा नहीं लेनी चाहिए। भगवन् ! बोधिसत्त्व को एक ही धर्म का ग्रहण कर अबबोध करने पर सभी बुद्ध-धर्म उसके करतल पर विद्यमान हो जाते हैं। वह एक धर्म क्या है ? वह है महाकरुणा।”

महाकरुणा से परिगृहीत होने से भगवान् बुद्धों ने समस्त स्वार्थ सम्पत्ति की प्राप्ति हो जाने पर भी सत्त्वधातु के अन्त तक रहते हैं। श्रावक की भाँति अतिशान्त निर्वाणरूपी नगर में भी प्रवेश नहीं करते हैं। सत्त्वों को देखकर उस शान्त निर्वाण-नगर को प्रज्वलित अयोगृह के समान दूर छोड़ देने से भगवानों के अप्रतिष्ठित निर्वाण का हेतु तो वह महाकरुणा ही है।

यहाँ उस करुणा की भावना का क्रम प्रथम-प्रवृत्ति से आरम्भ करके कहा जाना चाहिए। सम्प्रति आदि में उपेक्षा की भावना से सभी सत्त्वों के प्रति अनुराग तथा द्वेष को दूर करके समचित्तता ही सिद्ध करनी चाहिए।

सभी सत्त्व सुख चाहते हैं, दुःख नहीं चाहते। अनादिकालिक संसार में जो सत्त्व सौ बार मेरा बन्धु न बना हो ऐसा कोई भी नहीं है, ऐसा सोचने पर इन में क्या अन्तर होगा ? (अतः) किसी से अनुराग, किसी से द्वेष हो जाने के कारण मैं सभी सत्त्वों में चित्तसमता ही करूँगा, ऐसा मनसिकार करके मध्यस्थ भाव से आरम्भ करके मित्र तथा शत्रु में भी चित्तसमता की ही भावना करनी चाहिए। इसके बाद सभी सत्त्वों पर चित्तसमता सिद्ध करके मैत्री की भावना करनी चाहिए। मैत्री के जल से चित्तसन्तान को सींच करके उसे सुवर्णयुक्त भूमि की भाँति करके करुणा का बीज बोया जाये तो सरलता से अतिविकास होगा। उसके बाद चित्त-सन्तान को मैत्री से वासित करके करुणा की भावना करनी चाहिए।

वह करुणा सभी दुःखित सत्त्वों के उन दुःखों को दूर कराने वाली इच्छा के आकार की है। त्रिधातु के सभी सत्त्व त्रिविध दुःखों से यथायोग अतिदुःखित ही हैं, इसलिए सभी सत्त्वों पर उसकी भावना करनी चाहिए। सम्प्रति इस प्रकार जो नारक सत्त्व हैं, वे तो अविचिछिन्नरूप से दीर्घकाल तक ताप आदि विभिन्न दुःखरूपी



नदी में डूबे हुये ही हैं, ऐसा भगवान के द्वारा कहा गया है। इसी प्रकार प्रायः प्रेत भी असह्य और तीव्र, भूख, प्यास आदि दुःखों की अग्नि से सूखे शरीर वाले होकर घोर दुःख का अनुभव करते हैं। पशु भी परस्पर भक्षण, क्रोध, वध, हिंसा आदि अनेक प्रकार के दुःखों का अनुभव करते हुए ही दिखाई देते हैं। मनुष्य भी भोगों की खोज से कृपण होकर परस्पर द्रोह और उपघात, प्रिय के वियोग और अप्रिय के संयोग, दरिद्रता आदि से होने वाले अप्रमेय दुःखों का अनुभव करते हुए दिखाई देते ही हैं।

जो लोग रागदि अनेक क्लेश वाली आसक्ति के द्वारा बँधे चित्त वाले हैं, और जो लोग विविध कुदृष्टियों में गहन रूप से डूबे हुये हैं, वे सभी दुःख के हेतु होने से प्रपात पर बैठे हुए ( व्यक्ति ) की भाँति बहुत दुःखी ही हैं। देवता भी सभी विपरिणामों के दुःखों से दुःखी ही हैं। जो देव काम ( धातु ) में विचरण करने वाले हैं, वे भी तो सदा च्युति, पतन आदि भय के शोक से उपहत-चित्त होने के कारण कैसे सुखी होंगे ? संस्कारदुःख ही कर्म क्लेश-लक्षण-हेतुक, परतन्त्र स्वभाव वाले और प्रतिक्षण में भङ्गस्वभाव लक्षण वाले हैं, जो सारे संसार में व्याप्त हैं। इसलिए समस्त जगत् को दुःखाग्नि की ज्वाला के भीतर में प्रविष्ट हुआ देखकर जैसे मुझे दुःख प्रिय नहीं है उसी प्रकार अन्यो को भी ( नहीं ) है, ऐसा सोचते हुए हाय ये दुःखी मेरे प्रिय उन दुःखों से कैसे मुक्त हो सकेंगे, इस प्रकार उसे अपने दुःखों के समान ( जान ) करके उनका निवारण करने की इच्छा के रूपवाली कृणा से चाहे समाधि में स्थित हों, अथवा सारी चर्या में ही हों सदा सभी सत्त्वों की भावना करनी चाहिए।

सबसे पहले मित्र-पक्ष पर पूर्वोक्त विभिन्न दुःखों के अनुभवों को देखकर उस कृणा की भावना करनी चाहिए। तब सत्त्वों में समता के कारण अन्तर न देखते हुये 'सभी सत्त्व मेरे बन्धुभूत ही हैं' ऐसा सोचकर मध्य पक्षों पर भावना करनी चाहिए। जब वहाँ मध्यपक्ष की भाँति कृणा समानरूप से प्रवृत्त होने लगे तब दश दिशाओं में सभी सत्त्वों पर भावना करनी चाहिए। जब दुःखित प्रिय शिशु की माता की भाँति स्वयं ही अतिप्रिय का दुःख से उद्धार करने की इच्छा के आकार की अनायास रूप से प्रवाहित हो पड़ने वाली कृणा सभी सत्त्वों पर समानरूप से प्रवृत्त हो जाती है, तब निष्पन्न मानी जाती है। ( और ) महाकृणा का नाम भी प्राप्त होता है।

मैत्री की भावना पहले मित्रपक्ष के और सुखसंयोग की इच्छा के आकार वाली होती है। क्रम से साधारण तथा शत्रु पर भी भावना करनी चाहिए। इस प्रकार उस कृणा का अभ्यास करने से क्रमशः समस्त सत्त्वों के अभ्युद्धरण करने की इच्छा अनायास ही उत्पन्न हो जायेगी।



अतः मूल-कृष्णा की भावना करके बोधिचित्त की भावना करनी चाहिए। यह बोधिचित्त दो प्रकार का है—संवृत तथा परमार्थ। इनमें संवृत तो कृष्णा के द्वारा 'समस्त सत्त्वों के अभ्युद्धार की प्रतिज्ञा करके जगत्-हित के लिए बुद्ध हो जाऊँ, ऐसे अनन्तरसम्यक्सम्बोधि की इच्छा के आकार वाला प्रथम चित्तोत्पाद होगा। वह भी शीलपरिवर्त में प्रदर्शित विधि के अनुसार बोधिसत्त्व संवर में स्थित अन्य विद्वान् से चित्तोत्पाद करे।

उस प्रकार संवृत बोधिचित्त उत्पन्न करके परमार्थ-बोधिचित्त के उत्पाद के लिए प्रयत्न करना चाहिए। वह परमार्थ बोधिचित्त तो लोकोत्तर, समस्त प्रपञ्चों से रहित, अतिस्फुट, परमार्थगोचर विमल, निश्चल, निर्वायु प्रदीपप्रवाह की भाँति निश्चल है। उसकी सिद्धि तो निरन्तर आदरपूर्वक दीर्घकाल तक शमथ तथा विपश्यना के योग की भावना से होगी। जैसा कि **आर्यसन्धिनिर्माचन** में कहा गया है—“मैत्रेय ! श्रावकों, बोधिसत्त्वों अथवा तथागतों के जो भी सारे लौकिक तथा लोकोत्तर कुशल धर्म हैं, उनको शमथ तथा विपश्यना के फलवाला जानना चाहिये।” उन्हीं दिनों में सभी समाधियों का संग्रह हो जाने से सभी योगियों को सदा अवश्य ही शमथ तथा विपश्यना का सेवन करना चाहिए। जैसा कि वहीं **आर्यसन्धिनिर्माचन** में भगवान् ने कहा था कि—“मैंने श्रावकों, बोधिसत्त्वों तथा तथागतों की जिन विविध समाधियों का निर्देश किया है, वे सभी शमथ तथा विपश्यना के द्वारा संगृहीत समझी जानी चाहिए।”

केवल शमथ मात्र की भावना से तो योगियों के आवरणों का प्रहाण नहीं होगा। कुछ समय के लिए क्लेशों पर विक्रान्ति (दबाव) मात्र होगी। प्रज्ञा का आलोक हुये बिना अनुश्या का समुचित रूप से नाश सम्भव न होने से अनुश्या का संहार नहीं होगा। इसलिए वहीं **आर्यसन्धिनिर्माचन** में कहा गया है कि—“ध्यान से तो क्लेशों की विक्रान्ति होती है। प्रज्ञा से अनुशय का समुचित रूप से प्रहाण करते हैं।” **आर्यसमाधिराज** सूत्र में भी कहा गया है—

“इस समाधि की भावना भले ही की जाये, उससे आत्मसंज्ञा विनाश नहीं होती। उससे पुनः क्लेश प्रकुपित होंगे, जैसे कि उद्वक की समाधिभावना। यदि धर्म पर नैरात्म्य का प्रत्यवेक्षण हो और उसका प्रत्यवेक्षण करके यदि भावना करे तो वही निर्वाणरूपी फल की प्राप्ति का हेतु है। अन्य जो हेतु है, उससे शान्ति नहीं होती है।”



बोधिसत्त्वपिटक में भी कहा गया है—“जिन्होंने बोधिसत्त्वपिटक के इस धर्म-पर्याय का श्रवण नहीं किया, आर्यविनय के धर्मों का श्रवण नहीं होने से समाधि-मात्र से सन्तुष्ट रहना तो अहंकारवशात् अभिमान में पतित होते हैं और जन्म, जरा, रोग, मरण, शोक, परिदेवना, दुःख, दौर्मनस्य, तथा कोप से परिमुक्त नहीं होंगे। षड्गति संसार से परिमुक्त न होंगे, दुःखस्कन्ध से भी परिमुक्त नहीं होंगे। उसको ध्यान में रखकर तथागत ने इस प्रकार कहा था कि—“अन्य से अनुकूल श्रवण करने वाला जरामरण से मुक्त हो जायेगा” ऐसा कहा गया है।

इसलिए समस्त आवरणों का प्रहाण करके परिशुद्ध ज्ञान के उत्पाद की इच्छा वाले को शमथ में स्थित होकर प्रज्ञा की भावना करनी चाहिए। इस प्रकार आर्यरत्नकूट में भी कहा गया है कि—

“शील में स्थित होने से समाधि प्राप्त होती है, समाधिलाभ होने से भी प्रज्ञा की भावना होगी। प्रज्ञा से विशुद्ध ज्ञान होता है। ( और ) विशुद्ध ज्ञान हो जाने से शील-सम्पत्ति होती है।”

आर्यमहायान-श्रद्धा-भावना सूत्र में भी कहा गया है—“कुलपुत्र ! प्रज्ञा के अनुपस्थित होने पर बोधिसत्त्वों की महायान में श्रद्धा महायान में जिस प्रकार उत्पन्न होगी, मैं नहीं कहूंगा। कुलपुत्र ! पर्याय से भी इस प्रकार बोधिसत्त्वों की जो कोई भी महायान में श्रद्धा, महायान में उद्भूत होगी, वे सब तो अविक्षिप्तचित्त के द्वारा अर्थ तथा धर्म के सम्यक् चिन्तन से उत्पन्न जानना चाहिए।”

शमथ के बिना केवल विपश्यना से योगी का चित्त विषयों पर विक्षिप्त हो जायेगा, वायुमध्यस्थित प्रदीप की भांति स्थिर नहीं होगा। इसलिए ज्ञान का आलोक अतिस्फुट नहीं होगा, इसलिए दोनों का समानरूप से सेवन करना चाहिए। अतः आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्र में भी कहा गया है—“श्रावकों के द्वारा तथागत का गोत्र नहीं देखा जाता है, क्योंकि समाधि अधिक तथा प्रज्ञा अल्प होती है। बोधिसत्त्वों को दीखता है, लेकिन अस्पष्ट है, क्योंकि प्रज्ञा का अतिरेक तथा समाधि की अल्पता होती है। तथागत तो सब देखते हैं, क्योंकि शमथ तथा विपश्यना दोनों से समानरूप से युक्त है।” शमथ के बल से वायु से अक्षोभित प्रदीप की भांति विकल्प-वायु से चित्त चञ्चल नहीं होता है। विपश्यना के द्वारा समस्त कुदृष्टि के मल का प्रहाण हो जाने से अन्य के द्वारा विभक्त नहीं हो सकती है। जैसा कि चन्द्रप्रदीपसूत्र में कहा गया है कि—“शमथ के बल से अकम्प्य होता है, और विपश्यना के बल से पर्वत की भांति हो जाता है।”



इसलिए दोनों से योग करना निर्णीत है।

इसमें पहले उस योगी को सरलता (तथा) शीघ्रता से शमथ तथा विषयना की सिद्धि के लिए शमथ तथा विषयना के सम्भार का सेवन करना चाहिए। इसमें शमथ-सम्भार क्या है? अनुकूलदेश में रहना, अल्प इच्छा, सन्तोष, बहुत सी क्रियाओं का परित्याग, शीलविशुद्धि तथा इच्छा आदि विकल्पों का परित्याग है।

इनमें पञ्चगुणों से युक्त (देश) को अनुकूल-देश जानना चाहिए। वस्त्र, भोजन आदि के बिना कठिनाई से प्राप्त होने से सुलब्ध, दुर्जन, शत्रु आदि के न रहने से सुस्थान, नीरोग भूमि होने से सुभूमि, मित्र शील से युक्त समदृष्टि होने से सुमित्रता तथा दिन में बहुत से लोगों से नहीं भरा हुआ और रात में अल्प शब्द होने से सुयुक्त कहा जाता है।

अल्प इच्छता क्या है? चीवर आदि की उत्कृष्टता या अधिकता में राग का न होना। सन्तुष्टि क्या है? केवल साधारण चीवर आदि की प्राप्ति से सदा संतोष का होना। बहुकार्यपरिहार क्या है? जो क्रय-विक्रय आदि दुष्कर्मों का परिहार, गृहस्थ तथा प्रव्रजित का (एक दूसरे से) अधिक वार्तालाप तथा प्रशंसा का परित्याग और ओषधि-निर्माण तथा नक्षत्रगणनादि का परित्याग करना है।

शीलविशुद्धि क्या है? दोनों संवरों में भी प्रकृति तथा प्रतिक्षेप से अवद्य शिक्षा के आधार की अभङ्गता और प्रमाद से भङ्ग होने पर भी शीघ्र से शीघ्र पश्चात्ताप के द्वारा धर्म का अनुसरण करना, श्रावक-संवर में पाराजिक के प्रतिविधान में अनुचित कथन है, उस पर भी पश्चात्ताप से युक्त होना तथा वाद में नहीं करने का मन बनाना, तथा जिस चित्त से वह कर्म किया है, उस चित्त में निःस्वभावता का प्रत्यवेक्षण या सभी धर्मों में निःस्वभावता की भावना करने से उसकी शील-विशुद्धि ही कहनी चाहिए। उसे तो **आर्याजातशत्रुकौकृत्य** से जानना चाहिए। अतः उस कौकृत्य का अभाव करके भावना में प्रयत्न करना चाहिये।

कामों में भी यहाँ तथा परलोक में होने वाले दोषों का मनसिकार करके इनमें विकल्पों का प्रहाण करना चाहिए। जो भी संसार के भाव प्रिय या अप्रिय हों वे सब तो विनाशधर्मी, (तथा) अस्थिर हैं। निःसन्देह उन सबमें और मुझमें शीघ्र ही वियोग संभव होने से मैं इस पर क्यों अधिक आसक्ति आदि करूँ, ऐसी भावना से सभी विकल्पों का प्रहाण करना चाहिए।



विषयना का सम्भार क्या है ? सत्पुरुषों का आश्रय, बहुश्रुतों का अन्वेषण तथा योनिशोमनस्कार हैं। वहाँ किस प्रकार के सत्पुरुष का आश्रय लेना चाहिये, ? ऐसा कहे तो जो बहुश्रुत, स्पष्टभाषी, करुणा से युक्त तथा दुःखसहिष्णु हो।

इसमें बहुश्रुतपर्येषणा क्या है ? जो भगवान् के द्वादशाङ्ग धर्मप्रवचन के नेयार्थ तथा नीतार्थ का आदरपूर्वक खूब श्रवण करना है। इस प्रकार **आर्यसंधिनिर्माण** में कहा गया है—“इच्छाभर आर्य-कथा को न सुनना विषयना का विधन है।” उसी में कहा गया है कि—“विषयना तो श्रवण तथा मनन से उत्पन्न विशुद्ध दृष्टि के कारण उत्पन्न होती है।” **आर्यनारायणपरिपृच्छा** में भी कहा गया है—“श्रवण से युक्त में प्रज्ञा का प्रादुर्भाव होता है। प्रज्ञावान् तो शान्त-क्लेश वाला होता है।”

योनिशोमनसिकार क्या है ? जिसे नीतार्थ सूत्र तथा नेयार्थ सूत्र आदि सुनिर्णीत करना है। इस प्रकार बोधिसत्त्व को शंका न होने पर भावना में ऐकान्तिक निश्चय होता है। अन्यथा संशय से डिगाये जा रहे यान में स्थित रहने पर तो चतुष्पथ के बीच पड़े हुये मनुष्य की भांति कहीं पर भी निश्चय नहीं कर सकेगा।

योगी को सदा मत्स्य, मांस आदि को छोड़कर, अप्रतिकूल तथा सीमित मात्रा में भोजन करना चाहिए। इस प्रकार जिस बोधिसत्त्व ने शमथ विषयना के समस्त सम्भारों को सञ्चित किया है, उसे भावना में प्रवेश करना चाहिये।

वहाँ सर्वप्रथम योगी भावना करते समय सभी आवश्यक कार्य समाप्त करके, मल-मूत्र करके, चुभने वाली आवाज आदि से रहित, मन के अनुकूल स्थान में स्थित होकर मुझे सभी सत्त्वों को बोधिमण्ड में स्थापित करना है, ऐसा सोचते हुये समस्त जगत् के उद्धार के आशय से युक्त महाकरुणा को सामने करके दसों दिशाओं में स्थित सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को पाँचों अंगों से प्रणाम करके बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों की मूर्ति-चित्रआदि सामने अथवा अन्य (वस्तु) पर स्थापित करके उनकी विधिवत् यथारुचि पूजा तथा स्तुति करके, अपने पापों का प्रायश्चित्त करके समस्त जगत् के पुण्यों का अनुमोदन करके, अतिमृदु सुखासन पर भट्टारकवैरोचन की पर्यङ्क भाँति या अर्धपर्यङ्क करके, आँखों को न तो अधिक खोलकर और न अधिक बन्द करके, नासिका के अग्रभाग पर (दोनों नेत्रों) को टिका कर, शरीर को न अधिक झुकाकर न अधिक तानकर, सीधे प्रणिधान करके स्मृति को भीतर की ओर मोड़ करके बैठना चाहिए। इसके बाद दोनों कंधों को बराबर स्थापित करे। सिर को न ऊँचा और



न नीचा रखकर एक ओर निश्चल रखना चाहिए। नाक से नाभि तक सिधाई में रखना चाहिये। दाँत और ओष्ठों को कोमलता के साथ रखना चाहिए, और जीभ को ऊपरी दाँतों की जड़ में लगाना चाहिए। आश्वास तथा प्रश्वास भी न शब्दसहित, न स्थूल और न तेज हो करना चाहिए। अपितु विना जाने धीरे-धीरे अनाभोग से जैसे भीतर आये और बाहर निकले वैसा करना चाहिए।

वहाँ सर्वप्रथम शमथ सिद्ध करना चाहिए। बाह्य विषयों पर होने वाले चित्त-विक्षेप को शान्त करके अभ्यन्तर में आलम्बन पर निरन्तर अनायास प्रवृत्त करके प्रीति तथा प्रश्रब्धि का चित्त में स्थित होना 'शमथ' कहा जाता है। उसी शमथ का आलम्बन करते समय जो तत्त्व-विचार है, वहीं 'विपश्यना' है। जैसा कि आर्यारत्नमेघ में कहा गया है—“शमथ तो चित्त की एकाग्रता है और विपश्यना भूतप्रत्यवेक्षण है।”

आर्यसंघिनिर्मोचन में भी कहा गया है—“भगवन् ! शमथ की परिगवेषणा तथा विपश्यना में कुशलता कैसे हो ? कहते हैं, मैत्रेय ! मेरे द्वारा धर्मोपचार व्यवस्थापित है। वह इस प्रकार है जो सूत्र, गेयं, व्याकरण, गाथा, उदान, निदान, अवदान, इतिवृत्तक, जातक, दैपुल्य, अद्भूतधर्म तथा उपदेशवर्ग बोधिसत्त्वों को बतलाये गये हैं, वे सब बोधिसत्त्वों को उन्हें अच्छी तरह से सुनकर, सम्यग् रूप से धारण करके, पाठ का अभ्यास करके, मन से सम्यक् परीक्षण करके, दृष्टि से प्रतिवेध करके, अकेले एकान्त स्थान में बैठकर, अभ्यन्तर में प्रतिसंलीन होकर जिस प्रकार समुचित रूप से विचारित है उन्हीं धर्मों का मनसिकार करके, जिस चित्त के द्वारा मनसिकार होता है उसी चित्त के अभ्यन्तर में सदा चिन्तन के द्वारा मनसिकार होता है। इस प्रकार प्रवेश करके उसमें अनेक बार स्थित होकर, उसमें जो काय तथा प्रश्रब्धि चित्त-प्रश्रब्धि होती है; उसी को शमथ कहा जाता है। इसलिए बोधिसत्त्व शमथ की परिगवेषणा करता है। इससे काय प्रश्रब्धि तथा चित्त-प्रश्रब्धि होती है। उनको प्राप्त करके उसी में स्थित होता है, और चित्त विक्षेप का प्रहाण करके यथावत् चिन्तन किये गये उन्हीं धर्मों का भीतर में समाधि-गोचर, प्रतिबिम्ब के रूप में प्रत्यवेक्षण करता है और अधिमुक्त करता है। उस प्रकार की समाधि का गोचर उन प्रतिबिम्बों पर उस ज्ञेयार्थ का विवेचन, प्रविवेचना, परिकल्पना पर्यवेक्षणा, क्षान्ति, इच्छा, विशिष्टविभाग, दर्शन तथा अधिगम करते हैं, उसीको विपश्यना कहा जाता है, और उस प्रकार से बोधिसत्त्व की विपश्यना में कुशलता होती है।”

वहाँ शमथ का अभिनिर्हार करने के इच्छुक योगी को आदि (प्रारम्भ) में तो सूत्र वर्ग, गेय आदि का समस्त प्रवचन तथतापरायणता, तथता में उतरना, तथता



की और आजाना, इस प्रकार के सभी संग्रह करके उन पर चित्त को उपस्थापित करना चाहिए। अथवा वहाँ कितने आकारों में सभी धर्मों के संग्रहभूत स्कन्ध आदि में चित्त को उपस्थापित करना चाहिए, या जैसी देखी और जैसी सुनी गयी थी (उसी) बुद्ध की प्रतिमा पर चित्त स्थापित करना चाहिए। जैसा कि आर्यसमाधिराज में कहा गया है—

“सुवर्ण वर्ण के समान शरीर से, लोकनाथ समन्ततः सुशोभित हैं। इस आलम्बन पर जिसका मन स्थिर होता है, वह बोधिसत्त्व उस पर समाहित कहा जाता है।”

इस प्रकार जिस पर इच्छा हो, उस आलम्बन पर चित्त स्थापित करके उसी पर उत्तरोत्तर सदा चित्त को स्थापित करना चाहिए। उस पर उपस्थापित करके इस प्रकार से चित्त का परीक्षण करना है कि क्या आलम्बन सम्यग् रूप से ग्रहण करता है अथवा लीन हो जाता है, या बाह्य विषय पर व्यासेक होने से विक्षिप्त हो जाता है, ऐसी परीक्षा करनी चाहिए। इसमें यदि स्त्यान तथा मिद्ध से अभिभूत होकर चित्त लीन होने अथवा लीन होने की शङ्का दिखायी पड़े, उसी समय परम आनन्द देने वाली वस्तु बुद्ध की प्रतिमा आदि या आलोक संज्ञा वाला मनसिकार करना चाहिये। इसके बाद लय को शान्त करके जैसे भी उसी आलम्बन पर चित्त का आलम्बन-अतिस्फुट दिखायी पड़े उसी प्रकार करना चाहिए।

जब जात्यन्ध की भाँति या अन्धकार में प्रविष्ट मनुष्य की भाँति, अथवा आँखे बन्द किये हुये (व्यक्ति) की भाँति चित्त आलम्बन को अतिस्फुट नहीं देख पाता है, तब उसको लीन हुआ समझना चाहिए। जब बाह्य रूपादि में इन्हीं के गुण की विकल्पना से दौड़ने से या अन्य मनसिकार से, या पूर्व अनुभव में आये विषय की इच्छा से चित्त में औद्धत्य हो या औद्धत्य होने की शंका दिखाई पड़े तब सभी संस्कार अनित्य, दुःख आदि मनःसंवेग की वस्तुओं का मनसिकार करना चाहिए। उसके बाद विक्षेप को शान्त करके स्मृति तथा संप्रजन्य की रज्जु से मनरूपी हाथी को उसी आलम्बन-वृक्ष से बद्ध करना चाहिए। जब लय तथा औद्धत्य का अभाव होकर उस आलम्बन पर चित्त की प्रशमवाहिता दिखाई दे तब आभोग को शिथिल करके उपेक्षा करें। उसी समय जबतक इच्छा हो तबतक बैठे रहें। इस प्रकार शमथ का अभ्यास करने वाले उस (साधक) को जब शरीर तथा चित्त की प्रश्रब्धि प्राप्त हो जाय और इच्छा के अनुसार आलम्बन पर चित्त अपने वश में हो जाये, तब समझना चाहिए कि शमथ निष्पन्न हो गया है।



इसके बाद शमथ सिद्ध करके विषयना की भावना करनी चाहिए, और इस प्रकार सोचना चाहिए कि भगवान् बुद्ध के सभी वचन सुभाषित हैं, क्योंकि इनका उद्देश्य साक्षात् या परमपरा से तत्त्व को प्रत्यक्ष रूप में प्रकाशित करना और तत्त्व पर परायण होना ही है। तत्त्व का ज्ञान होने पर सर्वदृष्टिजालों से मुक्ति हो जायेगी। जिस प्रकार आलोक के उदय होने से अन्धकार का निरास हो जाता है। शमथ मात्र से न ज्ञान की विशुद्धि होगी और न आवरण के अन्धकार का निरास होगा। प्रज्ञा के द्वारा तत्त्व की सम्यग् रूप से भावना करने पर ज्ञान की विशुद्धि होती है। प्रज्ञा से ही तत्त्व का अवगमन होता है। प्रज्ञा से ही आवरण का सम्यग् रूप से प्रहाण किया जाता है। इसलिए ऐसा सोचना चाहिए—मुझे शमथ में स्थित होकर प्रज्ञा के द्वारा तत्त्व की परिगवेषणा करना चाहिए; शमथ मात्र से संतोष नहीं करना चाहिए।

तत्त्व किस प्रकार का है? जो परमार्थतः सभी वस्तु पुद्गल तथा धर्म की दो आत्माओं से शून्य है। वह भी प्रज्ञापारमिता के द्वारा जाना जाता है, अन्यथा नहीं जैसा कि आर्यसंघनिर्माचन में कहा गया है कि—“भगवन्! बोधिसत्त्वों के द्वारा धर्मों की निःस्वभावता किस पारमिता के द्वारा ग्रहण की जा सकेगी? अवलोकितेश्वर! प्रज्ञापारमिता के द्वारा ग्रहण की जासकेगी।” इसलिए शमथ में स्थित होकर प्रज्ञा की भावना करें।

वहाँ योगी को इस प्रकार परीक्षण करना चाहिए कि पुद्गल स्कन्ध, धातु और आयतन से अलग नहीं दिखलाई पड़ता है। पुद्गल तो स्कन्ध आदि के स्वभाव का भी नहीं है, क्योंकि वे स्कन्ध आदि अनित्य तथा अनेक स्वभाव के हैं जबकि, अन्यो के द्वारा परिकल्पित किया गया है कि पुद्गल नित्य तथा एकरूप है। तत्त्वतः या अन्यतः में अनिर्वचनीय पुद्गल का वस्तु होना अयुक्त है, क्योंकि वस्तु सत्ता का कोई अन्य प्रकार नहीं होती है। अतः इस प्रकार लोक का ‘मैं’ और ‘मेरा’ ऐसा कहना तो भ्रम ही है, ऐसा विचार करना चाहिए।

धर्मनैरास्त्य की भी इसी प्रकार भावना करनी चाहिए। धर्म संक्षेप में पञ्च स्कन्ध, बारह आयतन तथा अठारह धातुयें हैं। इनमें जो रूपी (रूप वाला) स्कन्ध, आयतन तथा धातु है वे तो परमार्थतः चित्त के आकार से भिन्न नहीं हैं, क्योंकि उन सब का परमाणुओं में विभाग करने पर परमाणु के भी अंश की स्वभावता का प्रत्यवेक्षण करने पर ‘स्वभाव’ के निश्चय ग्रहण का अभाव है। इसलिए अनादि-काल से मिथ्या रूपादि के अभिनिवेश के कारण स्वप्न में दिखाई पड़ने वाले रूपादि के



प्रतिभास की भाँति, अज्ञानियों को ( अपना ) चित्त ही बाहर विच्छिन्न रूप आदि की भाँति प्रतिभासित होता है। परमार्थतः यह रूपादि चित्त के आकार से भिन्न नहीं है, ऐसा विचार करना चाहिए। वह इस प्रकार सोचते हैं—त्रैधातुक चित्तमात्र है। वह इस प्रकार चित्त के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण तथा विचार करता है कि—समस्त धर्म-प्रज्ञप्ति चित्त में ही बोध करके उस पर प्रत्यवेक्षण करने पर सभी धर्मों के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण हो जाता है।

परमार्थतः चित्त का भी सत्य होना युक्त नहीं है। जब मिथ्या स्वभाववाले रूपादि का आकार ग्रहण करने वाला चित्त ही अनेक आकारों में प्रतिभासित होता है, तब उसकी सत्यता कहाँ होगी? जैसे रूपादि मिथ्या है, उसी प्रकार चित्त भी इससे भिन्न न होने से मिथ्या ही है। जैसे रूप आदि अनेक आकार वाले होने से एक तथा अनेक स्वभाव के नहीं हैं, उसी प्रकार चित्त भी उससे भिन्न न होने के कारण एक तथा अनेक स्वभाव का नहीं है। इसीलिए चित्त तो माया आदि के स्वभाव के समान ही है।

यथावत् चित्त की तरह समस्त धर्म भी माया आदि के स्वभाव के समान ही हैं, ऐसा विचार करना चाहिए। उसके द्वारा ( साधक के द्वारा ) इस प्रकार प्रज्ञा से चित्त के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण किये जाने पर परमार्थतः चित्त भीतर में भी उपलब्ध नहीं होता, बाहर में भी उपलब्ध नहीं होता। दोनों न होने पर भी उपलब्ध नहीं होता। अतीत चित्त भी उपलब्ध नहीं होता, भविष्य का भी उपलब्ध नहीं होता है और प्रत्युत्पन्न में भी उपलब्ध नहीं होता है। न तो चित्त उत्पन्न होते समय कहीं से आता है और न तो निरुद्ध होते समय भी कहीं जाता है, क्योंकि चित्त तो अग्राह्य, अनिर्दर्शन ( तथा ) अरूप है। जो अनिर्दर्शन-अग्राह्य और अरूपी है, उसका स्वभाव किस प्रकार का है? ऐसा कहें तो जैसा आर्यरत्नकूट में कहा गया है, वह उस प्रकार का है—“काश्यप ! चित्त परिगवेषणा करने पर उपलब्ध नहीं होगा। जो अनुपलब्ध है, वह आलम्बित नहीं होगा, जो अवलम्बित नहीं होता है वह अतीत भी नहीं, अनागत भी नहीं, प्रत्युत्पन्न भी नहीं है।” ऐसा विस्तार से कहा गया है। इस प्रकार परीक्षण करने पर चित्त का आदि सम्यग् रूप से दिखलाई नहीं पड़ेगा, अन्त भी सम्यग् रूप से दिखलाई नहीं पड़ेगा, मध्य भी सम्यग् रूप से दिखलाई नहीं पड़ेगा।

जिस प्रकार चित्त में अन्त तथा मध्य नहीं होता है, उसी प्रकार सभी धर्मों को भी अन्तरहित तथा मध्यरहित जानना चाहिए। इस से इस प्रकार चित्त को



अन्त तथा मध्य से रहित जानने से चित्त की स्वभावता कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ेगी। जिससे चित्त को परिज्ञान होता है, उसका भी शून्य के रूप में बोध होता है। उसका बोध होने से चित्त के आकार में सिद्ध हुआ स्वभाव रूप आदि का स्वभाव भी सम्यग् रूप से दिखलाई नहीं पड़ेगा। वह इस प्रकार प्रज्ञा के द्वारा सभी धर्मों का स्वभाव सम्यग् रूप से दिखलाई न पड़ने से रूप नित्य है या अनित्य है, शून्य है या अशून्य, सास्त्रव है या अनास्त्रव है, उत्पन्न है या अनुपन्न है, सत् है या असत् है, ऐसा विकल्प नहीं करता है? जिस प्रकार रूप में विकल्प नहीं करता है, उसी प्रकार वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञानों पर भी विकल्प नहीं करता है। धर्मों के असिद्ध होने के कारण उसके विशेषणों की भी सिद्धि नहीं होगी। अतः उनमें विकल्प कैसे होगा? इस प्रकार उसकी प्रज्ञा के द्वारा परीक्षा करने पर जब योगी को किसी वस्तु के स्वभाव की परमार्थता का निश्चय अवधारण नहीं होता, तब निर्विकल्प समाधि में प्रविष्ट होता है। और सभी धर्मों की निःस्वभावता का भी अवबोध होता है।

जो प्रज्ञा के द्वारा वस्तुओं के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण करके भावना नहीं करता, केवल मनसिकार-परिहार मात्र की भावना करता है, उसके विकल्प कभी भी निवृत्त नहीं होते हैं, और निःस्वभाव बोध भी नहीं होगा, क्योंकि प्रज्ञा के आलोक का अभाव होता है। इस प्रकार सम्यक् प्रत्यवेक्षण से सम्यक् यथावत् ज्ञान की अग्नि होने पर अरणिमन्थन के अग्नि की भाँति कल्पनारूपी वृक्ष को जला डालेगा, ऐसा भगवान् ने कहा है।

आर्यरत्नमेघ में कहा गया है—“इस प्रकार दोषों को ( दूर करने में ) निपुण ( विशेषज्ञ ) वह (व्यक्ति) सभी प्रपञ्चों को दूर करने के लिए शून्यता की भावना का योग करेगा। इस प्रकार शून्यता की भावना अधिक करने से वह जिस-जिस स्थान में चित्त फैलता है, चित्त अभिरत होता है, उन-उन स्थानों की स्वभावता का अन्वेषण करने पर शून्य का अवबोध होता है। जो चित्त है, वह भी परीक्षण करने पर शून्य का बोध होता है। जिस चित्त से वह परीक्षण करता है, वह भी परीक्षण करने पर स्वभावतः शून्य ही ज्ञात होता है। वह इस प्रकार से परीक्षण करते हुये अनिमित्त योग में प्रवृत्त होता है।” इससे पर्यवेक्षण पूर्णगामिता का निर्निमित्तता में प्रवेश दिखलाया गया है। मनसिकार के परित्याग मात्र से प्रज्ञा के द्वारा वस्तु के स्वभाव पर विचार किये बिना निर्विकल्पता में प्रवेश का असंभव होना अतिस्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया गया है। इस प्रकार वह प्रज्ञा के द्वारा रूप आदि वस्तु के स्वभाव का



सम्यक् यथावत् परीक्षण करके ध्यान करता है, न कि रूप आदि में स्थित होकर। इस लोक तथा परलोक के बीच में रहकर ध्यान नहीं करता है, क्योंकि वे रूप आदि उपलब्ध नहीं होते हैं, इसलिए ( उसे ) 'अप्रतिष्ठितध्यान' कहा जाता है।

प्रज्ञा से समस्त वस्तुओं की स्वभावता का प्रत्यवेक्षण करके, जिस कारण से अनुपलम्भ ध्यान करता है, इसे 'प्रज्ञोत्तरध्यान' कहा जाता है, जैसा कि आर्यगण-गञ्ज तथा रत्नचूड आदि में निर्दिष्ट है।

इस प्रकार वह पुद्गल तथा धर्मनैरात्म्य के तत्त्व में प्रविष्ट होता है और वह अन्य परीक्षणीय और दर्शनीय न होने से वितर्क तथा विचार से रहित, अनभिलाष्य के एक स्वरूप वाला, मनसिकार में अनायास रूप से प्रविष्ट, अनभिसंस्कार के कारण तत्त्व की अतिस्फुट रूप से भावना करते हुए बैठा रहे। वहाँ रहकर चित्त के संतान को विक्षिप्त नहीं करना चाहिए। जब बीच में राग आदि से चित्त बाहर विक्षिप्त हो, तब विक्षेप जानकर शीघ्रता से अशुभ की भावना आदि से विक्षेप को शान्त करके शीघ्र ही तथ्यता में पुनः चित्त को प्रविष्ट करना चाहिए। जब वहाँ चित्त को अनभिरत देखे तब समाधि के गुणों को देखने से वहाँ अभिरतिकी भावना करनी चाहिए। विक्षेप में दोष दीखने से भी अनभिरतिकी शान्त करना चाहिए। यदि स्त्यान तथा मिद्ध से अभिभूत होकर अस्पष्ट प्रचार के कारण चित्त के लय की या लीन होने की शङ्का दिखलाई पड़े, तब पूर्व के समान परममुदित वस्तु के मनसिकार से शीघ्र लय को शान्त करके पुनः उसी तत्त्व के आलम्बन का अतिदृढता से ग्रहण करना चाहिए। यदि जब पहले के हँसने तथा खेलने का अनुस्मरण होकर बीच में चित्त के समुद्रत होने पर या औद्धत्य का संदेह दिखाई पड़े, तब पूर्ववत् अनित्यत्व आदि संवेग की वस्तुओं का मनसिकार करके विक्षेप की शान्ति करें। उसके बाद फिर से उसी तत्त्व में चित्त की अनभिसंस्कारवाहिता में प्रयत्न करना चाहिए।

यदि जब लय तथा औद्धत्य से विविक्त होकर समानरूप से चित्त उसी तत्त्व पर स्वरसवाही होता है, तब भोग को शिथिल करके उपेक्षा करे। यदि चित्त के संप्रवृत्त होने पर आभोग किया जाये, तब चित्त विक्षिप्त हो जायेगा। यदि चित्त के लीन हो जाने पर अनाभोग हो, तब अतिलीनता के कारण विपश्यना नहीं होगी, क्योंकि चित्त जात्यन्ध की भाँति हो जायेगा। इसलिए चित्तलीन हो जाने पर यत्न करे। समता होने पर यत्न नहीं करना चाहिये।



जब विपश्यना की भावना करने से प्रज्ञा अतिरिक्ततर हो जाती है, तब शमथ की अल्पता के कारण प्रवात में रखे हुए प्रदीप की तरह चित्त के चञ्चल होने से तत्त्व अतिस्फुट नहीं दिखलाई पड़ेगा। इसलिए उस समय शमथ की भावना करनी चाहिये। शमथ के अतिरिक्ततर हो जाने पर भी प्रज्ञा की भावना करनी चाहिये।

जब दोनों ही समान रूप से प्रवृत्त हो जायें, तब (जबतक) काय तथा चित्त में पीडा न होने लगे, तब तक अनभिसंस्कार के साथ स्थित करना चाहिये। काय आदि में पीडा होने पर इसके बीच में, समस्त लोक को माया, मरीचि, स्वप्न, उदकचन्द्र तथा प्रतिभास की भाँति देखकर यह सोचना चाहिये कि ये सत्त्व तो इस प्रकार के गम्भीर धर्म का अवबोध न होने के कारण संसार में संक्लिष्ट हो गये हैं, अतः मैं अवश्य वैसा ही करूँगा कि इनको उस धर्मता का अवबोध करा सकूँ, ऐसा सोचकर महाकरुणा तथा बोधिचित्त को अभिमुख करना चाहिये। इसके बाद विश्राम करके फिर उसी प्रकार सर्वधर्मनिराभास समाधि में प्रवृत्त हो जाये। फिर चित्त में बहुत खेद होने पर उसी प्रकार विश्राम करना चाहिये। यह शमथ एवं विपश्यना का युगनद्धवाही मार्ग है, जो सविकल्प तथा निर्विकल्प प्रतिबिम्ब पर आलम्बित है।

इस प्रकार योगी इस क्रम से एक घण्टा या आधा प्रहर या एक याम जितना भी रहना चाहे, उतने समय तक तत्त्व की भावना करते हुए बैठा रहे। यह 'अर्थप्रविचयध्यान' आर्यलङ्कागतार में निर्दिष्ट है। इसके बाद चाहे तो समाधि से उठकर पर्यङ्क को बिना खोले (उसको) इस प्रकार सोचना चाहिये कि ये सभी धर्म परमार्थतः निःस्वभाव होने पर भी संवृति में व्यवस्थित ही हैं। अन्यथा कर्म तथा फल का सम्बन्ध किस प्रकार व्यवस्थित हो सकेगा? भगवान् ने भी कहा था—  
“वस्तुओं की उत्पत्ति संवृति में है। परमार्थ में निःस्वभाव है।”

ये बालबुद्धि वाले सत्त्व निःस्वभाव-वस्तुओं में सत्ता आदि का समारोप करने से विपरीतबुद्धि होकर दीर्घकाल तक भवचक्र में परिभ्रमण करते हैं। अतः मैं अवश्य अनुत्तर पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों को परिपूर्ण करके, इसके बाद सर्वज्ञ पद प्राप्त करके उन लोगों को धर्मता का अवबोध कराऊँगा, ऐसा सोचे। इसके बाद धीरे से पर्यङ्क को खोलकर दश दिशाओं में स्थित सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को प्रणाम करके, उनकी पूजा तथा स्तुति प्रदान करके 'आर्यभद्रचर्या' आदि महाप्रणिधान करना चाहिये। इसके बाद शून्यता तथा महाकरुणा से गर्भित दानादि समस्त पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों का अर्जन करने के लिए प्रयत्न करना चाहिये।



ऐसा होने पर वह ध्यान सर्वाकारवरोपेतशून्यता निष्पन्न होता है। जैसा कि **आर्यरत्नकूट** में कहा गया है—“वह मैत्री का कवच पहनकर महाकरुणा के स्थान पर बैठकर सर्वाकारवरोपेतशून्यता के अभिनिर्हीर वाला ध्यान करता है। वह सर्वाकारवरोपेतशून्यता क्या है? जो दान से अनपगति, शील से अनपगति, क्षान्ति से अनपगति, वीर्य से अनपगति, ध्यान से अनपगति, प्रज्ञा से अनपगति तथा उपाय से अनपगति” इत्यादि विस्तार से कही गयी है। बोधिसत्त्व को तो सभी सत्त्वों का परिपाक करना चाहिये और क्षेत्र, काय, बहु-परिवार आदि सम्पत्ति उपाय वाले दानादि कुशलों का अवश्य सेवन करना चाहिये।

अन्यथा बुद्धों के क्षेत्र आदि की जो सम्पत्ति कही गयी है, वह किसका फल होगी? इसलिए सर्वाकारवरोपेत वह सर्वज्ञताज्ञान तो दान आदि उपायों से परिपूर्ण होने के कारण भगवान् ने ‘वह सर्वज्ञज्ञान तो उपाय से पारङ्गत है’, ऐसा कहा है। अतः बोधिसत्त्व को दान आदि उपायों का भी सेवन करना चाहिये, न कि केवल शून्यता का। इस प्रकार **आर्यसर्बधर्मवैपुल्य** में कहा गया है—“हे मैत्रेय! यह तो बोधिसत्त्वों की सम्बोधि के लिए षट्पारमिता का समुदागम करता है, उसको जो अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि—बोधिसत्त्व को प्रज्ञापारमिता में ही शिक्षित करना चाहिये, शेष पारमिताओं से क्या? वे लोग अन्य पारमिताओं को भी दूषित करने की बात सोचते हैं। हे अजित! इसको क्या समझ रहे हैं? क्या काशीराज दुर्बुद्धि था? जिसने कबूतर के लिए अपना मांस श्येन को दे दिया। मैत्रेय ने कहा—भगवन्! यह नहीं है। भगवान् ने कहा—मैत्रेय! बोधिसत्त्व-चर्या का आचरण करते समय मैंने जो षट्पारमिताओं से युक्त जिन कुशलमूलों का अर्जन किया, क्या उन कुशलमूलों ने हानि पहुँचायी? मैत्रेय ने कहा—भगवन्! यह तो नहीं। भगवान् ने कहा—हे अजित! आपने भी साठ कल्पों तक दानपारमिता का सम्यक् अनुष्ठान किया है, साठ कल्पों तक शीलपारमिता, साठ कल्पों तक क्षान्तिपारमिता, साठ कल्पों तक वीर्य-पारमिता, साठ कल्पों तक ध्यानपारमिता और साठ कल्पों तक प्रज्ञापारमिता का भी अनुष्ठान किया है। उस पर अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि—एक ही नय से बोधि हो सकती है, जैसे कि शून्यता नय से ही। वे लोग तो चर्या-अपरिशुद्ध हो जायेंगे।” इत्यादि।

उपाय से रहित होने पर बोधिसत्त्व केवल प्रज्ञा से ही श्रावक की भाँति बुद्ध के कार्य नहीं कर सकेगा। उपाय की सहायता से समर्थ होगा। जैसा कि **आर्यरत्नकूट** में कहा गया है—“काश्यप! जिस प्रकार मन्त्रीसहित राजा सभी कार्य करते हैं, उसी प्रकार उपाय-कौशल से युक्त बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा सभी बुद्धकार्य करती है।”



बोधिसत्त्वों के मार्ग की दृष्टि भी अन्य है, तैथिक तथा श्रावकों की मार्ग-दृष्टि भी अलग है। इस प्रकार तीर्थिकों की मार्ग-दृष्टि तो आत्मा आदि की विपरीतता से युक्त होने के कारण पूरी की पूरी प्रज्ञा से रहित मार्ग है। इसलिए उन लोगों को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी।

श्रावकों की भूमि तो महाकरुणा से रहित होने से उपाय से युक्त नहीं है, अतः वे लोग एकान्त निर्वाण में लग जायेंगे। बोधिसत्त्वों के मार्ग को प्रज्ञा तथा उपाय से युक्त मानते हैं, इसलिए वे लोग अप्रतिष्ठित निर्वाण में परायण होने लगेंगे। बोधिसत्त्वों के मार्ग को प्रज्ञा तथा उपाय से युक्त मानते हैं, इस कारण (वे) अप्रतिष्ठित निर्वाण को प्राप्त करते हैं, क्योंकि प्रज्ञा के बल से संसार में नहीं गिरता है, (और) उपाय के बल से (श्रावक) के निर्वाण में भी नहीं गिरता है।

अतः आर्यगयाशीर्ष में कहा गया है—“बोधिसत्त्वों के मार्ग संक्षेप में दो हैं, कौन से दो? उपाय तथा प्रज्ञा।” आर्यश्रीपरमाद्य में भी कहा गया है—“प्रज्ञापारमिता माता है और उपाय-कौशल है पिता।” आर्यविमलकीर्तिनिर्देश में भी कहा गया कि—“बोधिसत्त्वों के बन्धन क्या हैं? मोक्ष क्या है? विना उपाय से संसार की गति का परिग्रह करना बोधिसत्त्वों का बन्धन है। उपाय से संसार की गति का परिग्रहण करना बोधिसत्त्वों का बन्धन है। उपाय से संसार की गति में चलना मुक्ति है। प्रज्ञा के विना भवगति का परिग्रहण करना बोधिसत्त्व का बन्धन है। प्रज्ञा के द्वारा भवगति में जाना मुक्ति है। उपाय से अपरिगृहीत प्रज्ञा बन्धन है। उपाय से परिगृहीत प्रज्ञा मुक्ति है।” इत्यादि विस्तार से कहा गया है।

बोधिसत्त्व प्रज्ञा-मात्र का सेवन करने पर श्रावकों के इष्ट निर्वाण में गिर जायेंगे, जितके कारण (वह निर्वाण) बन्धन की भाँति हो जायेगा। अप्रतिष्ठित निर्वाण से मुक्ति नहीं होगी। इसलिये उपाय से रहित प्रज्ञा बोधिसत्त्वों का बन्धन है, ऐसा कहा जाता है। अतः वायु से पीड़ित लोगों के अग्नि-सेवन की भाँति बोधिसत्त्व विपर्यास रूपी वायु-मात्र का प्रहाण करने के लिए उपायसहित प्रज्ञा के द्वारा शून्यता का सेवन करे न कि श्रावक की भाँति साक्षात्कार करे। जैसा कि आर्यदश-धर्मसूत्र में कहा गया है—“कुलपुत्र! जैसे कोई मनुष्य अग्नि की परिचर्या करता है, वह उस अग्नि का सत्कार करता है। गुरुकार करने पर भी वह इस प्रकार सोचता है, मैं उस अग्नि का सत्कार करता हूँ, गुरुकार करता हूँ। बहुमान करने पर भी इसको दोनों हाथों से परिग्रहण करूँगा, ऐसा नहीं सोचता। वह कैसे? इस आश्रय से मुझे शारीरिक दुःख या मन में दौर्मनस्य उत्पन्न होगा ऐसा



सोचेगा। उसी प्रकार बोधिसत्त्व भी निर्वाण का आशय वाला होने पर भी निर्वाण का प्रत्यक्ष नहीं करता है। वह किस कारण से है, ऐसा कहे तो इसके आश्रय से मैं बोधि से निवृत्त हो जाऊँगा, ऐसा सोचता है।”

केवल उपायमात्र का सेवन करने पर भी बोधिसत्त्व पृथग्जन की भूमि से अतीत न होने से खूब बँधा ही रहेगा। अतः प्रज्ञासहित उपाय का सेवन करना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र से परिगृहीत विष की भाँति बोधिसत्त्वों के क्लेश भी यदि प्रज्ञा का परिग्रह होने के बल से भावना करने पर अमृत हो जाते हैं तो स्वभाव से अभ्युदय-फलवाले दान आदि का कहना ही क्या। **आर्यरत्नकूट** में भी कहा गया है—“जैसे कि काश्यप ! जैसे मन्त्र तथा औषधि से परिगृहीत विष घातक नहीं हो सकता है, उसी प्रकार प्रज्ञा से परिगृहीत बोधिसत्त्वों का क्लेश से भी विनिपात नहीं होता है।”

अतः जिस कारण से बोधिसत्त्व उपाय के बल से संसार का परित्याग नहीं करता, उसी के कारण (श्रावक) के निर्वाण में भी पतित नहीं होता है। जिस कारण से प्रज्ञा के बल से समस्त आलम्बनों का प्रहाण करता है, उसी के कारण संसार में नहीं गिरता है। अतः अप्रतिष्ठित निर्वाण-बुद्धत्व की प्राप्ति होती है। इसलिए **आर्यगगन-गञ्ज** में भी कहा गया है—“उस प्रज्ञा के ज्ञान से सभी क्लेशों का परिवर्जन कर दिया जाता है (और) उपायज्ञान से सभी सत्त्वों का परित्याग नहीं होता है।” **आर्यसन्धि-निर्माचन** में भी कहा गया है—“पूरी तरह से सत्त्वार्थ से विमुक्त होने वाले, और पूरी तरह से संस्कार के अभिसंस्कार से विमुक्त होने वाले के लिए मैंने अनुत्तर सम्यक्सम्बोधि को नहीं कहा है।” इसलिए बुद्धत्व प्राप्त करने के इच्छुक को उपाय तथा प्रज्ञा दोनों का सेवन करना चाहिए।

वहाँ लोकोत्तर प्रज्ञा की भावना करते समय या अत्यन्त समाहित होने के समय दान आदि उपायों का सेवन सम्भव न होने पर भी, वहाँ प्रयोग तथा पृष्ठलब्ध में होने वाली जो भी प्रज्ञा होती है, उस समय उपाय का सेवन होता ही है। इसलिए प्रज्ञा तथा उपाय दोनों युगनद्ध प्रवृत्त होते हैं। और फिर बोधिसत्त्वों का प्रज्ञा तथा उपाय से युगनद्धवाही मार्ग यही है। सभी सत्त्वों को देखने वाली महाकरुणा से परिगृहीत होने के कारण लोकोत्तर मार्ग का सेवन तथा उत्थान-उपाय के काल में भी मायाकार की भाँति केवल अविपर्यस्त दान आदि का सेवन करते हैं। जैसा कि **आर्याक्षयमतिनिर्देश** में—“वहाँ बोधिसत्त्व का उपाय क्या है ? प्रज्ञा अभिनिर्हार क्या है ? जिसके कारण समाहित होकर सत्त्वों को देखने से महाकरुणा के आलम्बन



पर चित्त को उपस्थापना हो, वही उसका उपाय है। जिससे शान्ति तथा प्रशान्ति की समापत्ति होती है, वही उसकी प्रज्ञा है।” इत्यादि विस्तृत रूप से कहा गया है। **मारदमनपरिच्छेद** में भी “और भी बोधिसत्त्वों का समुत्कर्षिक प्रयोग तो प्रज्ञा के ज्ञान से अभियोग भी करता है, उपायज्ञान से सभी कुशल धर्मों के संग्रह में भी योग करता है। प्रज्ञा के ज्ञान से नैरात्म्य, असत्त्व, अजीव, अपोष तथा अपुद्गल में भी योग करता है। उपाय के ज्ञान से सभी सत्त्वों का जो परिपाक करने में प्रयोग है,” इत्यादि विस्तार से कहा गया है। **आर्यधर्मसंगीतिसूत्र** में भी कहा गया है—

“जैसे कोई मायाकार निर्माण को मुक्त करने के लिए प्रयास करता है, उसको पहले से वह ज्ञात होता है, अतः उस निर्माण पर आसक्त नहीं होता। तीनों भवों को निर्माण की भाँति समझकर सम्बोधि में पारंगत वह जगत् के लिए कवच पहनता है, क्योंकि उसे जगत् पहले से ज्ञात होता है।”

बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा तथा उपाय की विधि ही साध्य को लक्ष्य करके उसका प्रयोग संसार में स्थित भी है, और आशय निर्वाण में स्थित भी है। ऐसा कहा गया है।

इस प्रकार शून्यता तथा महाकरुणा के हृदय वाले अनुत्तर-सम्यक्सम्बुद्ध में परिणत दान आदि उपायों पर अभ्यास करके परमार्थ-बोधिचित्त-उत्पाद करने के लिए पहले जैसी सदा समय-समय पर शमथ तथा विपश्यना के प्रयोग पर यथाशक्ति भावना करनी चाहिये। **आर्यगोचरपरिशुद्धिसूत्र** में कहा गया है—सभी अवस्थाओं में सत्त्वों के अर्थों को करने वाले बोधिसत्त्वों की अनुशंसा का जैसा निर्देश किया गया है, उसी प्रकार उपस्थित स्मृति के द्वारा सर्वदा उपाय-कौशल की भावना करनी चाहिये।

इस प्रकार करुणा, उपाय तथा बोधिचित्त की भावना करने वाला वह इस जन्म में अवश्य विशिष्ट होता है। अतः स्वप्न में सदा बुद्ध तथा बोधिसत्त्व का दर्शन होगा, अन्य सुस्वप्न भी दिखाई पड़ेंगे। देव भी अनुमोदन से रक्षा करेंगे। प्रतिक्षण में भी विपुल पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों का संचय हो सकेगा। क्लेश आवरण तथा दौष्टुल्य का भी क्षय हो जायेगा। सर्वदा ही सुख तथा सौमनस्य अधिक हो जायेंगे। बहुत लोगों का प्रिय हो जायेगा। शरीर भी रोगग्रस्त नहीं होगा। चित्त की परम अकर्मण्यता भी प्राप्त हो सकेगी। अतः अभिज्ञता आदि विशिष्ट गुणों की प्राप्ति हो जायेगी।

इसके बाद (साधक) ऋद्धि के बल से अनन्त लोकधातुओं में जाकर भगवान् बुद्धों की पूजा करता है। इनसे धर्म का भी श्रवण करता है। मृत्यु के समय में भी



अवश्य ही बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों का दर्शन हो सकेगा। अन्य जन्मों में भी बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों से अनपगत क्षेत्रों तथा विशेष गृहों में भी उत्पाद होगा। इसलिए अनायास पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों को परिपूर्ण करेगा। महाभोग तथा बहुपरिवार वाला हो जायेगा। तीक्ष्ण प्रज्ञा के द्वारा बहुजन का परिपाक भी करेगा। सभी जन्मों में जाति-स्मरण हो सकेगा। अन्य सूत्रों में भी होने वाली इस प्रकार की अपरिमित अनुशंसा का अवबोध करना चाहिये।

इसके द्वारा इस प्रकार से करुणा, उपाय तथा बोधिचित्त की सदा आदरपूर्वक दीर्घकाल तक भावना करने से क्रमशः चित्त-सन्तान में अति परिशुद्ध क्षण के उत्पन्न होने से परिपाक हो जाने के कारण अरणि-मन्थन की अग्नि की भाँति सम्यग् अर्थ की भावना का प्रकर्षपर्यन्त गमन होकर लोकोत्तर ज्ञान विकल्पजालों की अपगति, निष्प्रपञ्च-धर्मधातु का अतिस्फुट अवगमन, निर्मल, निश्चल, निर्वायु में रखे गये प्रदीप की भाँति निश्चल प्रमाणभूत, सभी धर्म-नैरात्म-स्वभाव वाले तत्त्व का साक्षात्कार, दर्शन मार्ग से संगृहीत, परमार्थ-बोधिचित्त का स्वभाव उत्पन्न होता है। उसके उत्पन्न होने से वस्तु-अन्त आलम्बन में प्रवृत्ति होती है। तथागत के गोत्र में उत्पन्न होता है। बोधिसत्त्व की निर्दोषता में प्रवृत्ति होती है, जगत् की सभी गतियों से निवृत्ति होती है, बोधिसत्त्व की धर्मता तथा धर्मधातु की अवगति में स्थिति होती है। बोधिसत्त्वों की प्रथम भूमि की प्राप्ति होती है। इस प्रकार की अनुशंसा को विस्तार से दशभूमि आदि से जानना चाहिये। यह तथता में आलम्बन कराने वाला ध्यान आर्यलङ्कावतार में निर्दिष्ट है। यह तो बोधिसत्त्वों की निष्प्रपञ्च निर्विकल्पता में ही प्रविष्ट होता है।

अधिमुक्ति भूमि में तो अधिमुक्तिवशात् प्रवृत्ति होना व्यवस्थापित है, न कि अभिसंस्कार से। उस ज्ञान का प्रादुर्भाव होने पर साक्षात् प्रवेश होता है। इस प्रकार प्रथम भूमि में प्रविष्ट होकर, वह बाद में भावनामार्ग में लोकोत्तर तथा इसके पृष्ठलब्ध ज्ञान दोनों के द्वारा प्रज्ञा तथा उपाय की भावना से क्रमशः भावना-प्रहेय संचित आवरण का सूक्ष्म से भी अतिसूक्ष्म का व्यवदान होने से और उत्तरोत्तर विशिष्ट गुणों को प्राप्त करने के लिए अधोभूमियों का परिशोधन करने से तथागत के ज्ञान-पर्यन्त में प्रवेश करके सर्वज्ञता के सागर में प्रविष्ट हो कार्य-परिनिष्पत्ति का आलम्बन भी प्राप्त करता है। इस तरह से क्रम से ही चित्त-सन्तान की परिशुद्धि का होना आर्यलङ्कावतार में भी कहा गया है। आर्यसन्धिनिर्माचन में भी कहा गया है—  
“क्रम से उत्तरोत्तर भूमियों में सुवर्ण की भाँति चित्त को विशुद्ध करके अनुत्तर सम्यक्-सम्बोधिपर्यन्त अभिसम्बुद्ध हो जायेगा।



सर्वज्ञता के सागर में प्रवेश हो जाने पर चिन्तामणि की भाँति समस्त सत्त्वों के उपजीवी गुण-स्कन्ध से भी युक्त है, पूर्व प्रणिधान के फल से सत्कृत किया है, महाकरुणा के स्वभावभूत हुए हैं, अनाभोग से ही नाना उपायों से युक्त है, अपरिमित निर्माणों से अशेष जगत् के सभी अर्थ-अकारों को किया है, सारी गुण सम्पत्तियों के प्रकर्षपर्यन्त में पहुँचा हुआ है, वासना-सहित समस्त दोष मलों का निरास करके सत्त्व-धातु के अन्त-पर्यन्त विहार करने वाले हैं, ऐसा ( समझकर ) प्रेक्षावान् उस भगवान् बुद्ध के समस्त गुणों के आकार में श्रद्धा उत्पन्न करके उन गुणों की परिनिष्पत्ति के लिए स्वयं सभी तरह के प्रयत्न करे ।

अतः भगवान् ने इस प्रकार कहा है—“यह सर्वज्ञ ज्ञान तो करुणा के मूल से प्रादुर्भूत, बोधिचित्त-हेतु से उद्भूत और उपाय से पर्यवसित है ।”

सत्पुरुष ईर्ष्यादि मलों को दूर करके, जल से सागर की भाँति गुणों से अतृप्त रहते हैं । विवेचन करके सुभाषितों का ग्रहण करते हैं । जैसे कि प्रसन्न होकर हंस जल से दूध ले लेते हैं ॥ १ ॥

इसलिए विद्वानों को पक्षपात से उद्विग्न मन को दूर करके, वालों से भी सभी सुभाषितों का ग्रहण करना ही चाहिये ॥ २ ॥

इस प्रकार मध्यमक मार्ग का आख्यान करने से, मैंने जो पुण्य प्राप्त किया है, उससे अशेष जनों को मध्यम-मार्ग-प्राप्ति हो ॥ ३ ॥

आचार्य कमलशील द्वारा मध्य में विरचित भावनाक्रम समाप्त हुआ । भारतीय उपाध्याय प्रज्ञावर्म तथा लोचवा वन्द्य ज्ञानसेन द्वारा अनुवाद प्रस्तुत करके निर्णय किया गया है ।

द्वितीय भावनाक्रम का हिन्दी अनुवाद समाप्त हुआ ।



## तृतीय भावनाक्रम

मञ्जुश्री कुमारभूत को नमस्कार ।

महायानसूत्र-नय के अनुसार प्रवृत्त हो गये लोगों के लिए संक्षेप में भावनाओं का क्रम कहा जा रहा है। उसमें यद्यपि भगवान् के द्वारा बोधिसत्त्वों की समाधि को अपरिमित, अप्रमाण आदि के भेद से कहा गया है, तथापि शमथ तथा विपश्यना से सभी समाधियाँ व्याप्त हैं। इसलिए उसी शमथ तथा विपश्यना से युगनद्धवाही मार्ग को कहने जा रहा हूँ। भगवान् ने कहा है—

“विपश्यना तथा शमथ की भावना करके प्राणी दौष्टुल्य बन्धन और निमित्त-बन्धन से मुक्त हो जायेंगे।”

इसलिए सभी आवरणों का प्रहाण करने के इच्छुकों को शमथ तथा विपश्यना का सेवन करना चाहिये। शमथ के बल से विना हवा वाले स्थान में रखे गये दीपक की तरह चित्त अपने आलम्बन में निश्चल रहता है, और विपश्यना से अन्धकार में सूर्योदय की भाँति धर्म-तत्त्व का यथावद् ज्ञान होने से सम्यग् ज्ञान का आलोक उत्पन्न होता है और उससे समस्त आवरणों का प्रहाण हो जाता है।

इसलिए भगवान् ने योगियों के लिये चार आलम्बन की वस्तुओं का निर्देश किया है—निर्विकल्प-प्रतिबिम्ब, सविकल्प-प्रतिबिम्ब, वस्तुपर्यन्तता तथा कार्य-परि-निष्पत्ति। वहाँ शमथ से सभी धर्मों के प्रतिबिम्ब तथा बुद्ध आदि की प्रतिमा की अधिमुक्ति करके जो आलम्बन किया जाता है, उसी को निर्विकल्प-प्रतिबिम्ब कहा जाता है। उसे भूतार्थ के निरूपण में निर्विकल्प होने से ‘निर्विकल्पक’ कहा जाता है। सुनने और ग्रहण करने के अनुरूप धर्मों की प्रतिबिम्ब में अधिमुक्ति कराकर आलम्बन करने से प्रतिबिम्ब कहा गया है। जब योगी तत्त्व के अर्थाधिगम के लिए विपश्यना के द्वारा उसी प्रतिबिम्ब का विचार करता है, तब विपश्यना के लक्षण-तत्त्व-निरूपण का विकल्प वहाँ उत्पन्न होने से सविकल्प-प्रतिबिम्ब कहा जाता है, क्योंकि योगी उसी प्रतिबिम्ब के स्वभाव का निरूपण करते हुये सभी धर्मों के स्वभाव का यथावत् अवबोध करता है, जैसे कि-दर्पण के अन्दर अपने मुख के प्रतिबिम्ब का निरीक्षण करने से अपने मुख के दोष का निश्चय हो जाता है। जब वस्तु की पर्यन्तता के



लक्षण वाली तथता का अवबोध होता है तब वस्तु की पर्यन्तता का अवगमन होने के कारण प्रथम भूमि में वस्तु-पर्यन्तता-आलम्बन कहा जाता है। अतः ओषधि की रसायन के उपयोग की भाँति भावनामार्ग के द्वारा शेष भूमियों में क्रमशः विशुद्धत रतम क्षण के प्रादुर्भूत होने से आश्रयपरावृत्ति हो जाने पर जब अशेष आवरण-प्रहाणलक्षण-कार्यपरिसमाप्ति होती है, तब बुद्धभूमि में वही ज्ञान कार्यपरिनिष्पत्ति आलम्बन कहा जाता है।

इस प्रकार से क्या दर्शाया जाता है ? शमथ तथा विपश्यना की भावना से सभी वस्तुओं की पर्यन्तता का अधिगम होता है और उससे समस्त आवरणों के प्रहाण-लक्षण वाली कार्यपरिनिष्पत्ति की प्राप्ति होगी, वही बुद्धत्व है। इसलिए बुद्धत्व का अधिगम करने के इच्छुक को शमथ तथा विपश्यना का सेवन करना चाहिये। जो उन दोनों की भावना नहीं करता उसको न तो वस्तुपर्यन्ता का अधिगम होगा, और न कार्यपरिनिष्पत्ति ही होगी। वहाँ शमथ चित्त की एकाग्रता है, और विपश्यना है भूतप्रत्यवेक्षण, ऐसा संक्षेप में भगवान् ने आर्यरत्नमेघ आदि में शमथ तथा विपश्यना का लक्षण कहा है। इसमें योगी की शीलविशुद्धि आदि के द्वारा शमथ तथा विपश्यना के सम्भार में स्थित होकर जिसने सभी सत्त्वों पर महाकरुणा को उत्पन्न करना चाहिये और ठीक से उत्पादित बोधिचित्त के द्वारा श्रवण, चिन्तन तथा भावना का प्रयोग करना चाहिए।

सर्वप्रथम योगी को भावना के समय सभी आवश्यक कार्य समाप्त करके मलमूत्र से निवृत्त होकर चुभने वाली आवाज आदि से रहित और मन के अनुकूल स्थान में स्थित होकर 'मुझे सभी सत्त्वों को बोधि-गर्भ में स्थापित करना है, ऐसा निश्चय करते हुए समस्त जगत् के उद्धार के आशय के साथ महाकरुणा को अभिमुख करके दसों-दिशाओं में स्थित सभी बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों के पाँचों अंगों से प्रणाम करके सामने या अन्यत्र बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों की मूर्ति, वस्त्र आदि स्थापित करके उनकी यथावत् यथारुचि पूजा तथा स्तुति करके अपने पापों की देशना करके, समस्त जगत् के पुण्यों का अनुमोदन करना चाहिए। अति मृदु-सुखासन पर भट्टारकवैरोचन की भाँति पर्यङ्कबद्ध या अर्धपर्यङ्क करके, आँखों को न तो अधिक खोलना चाहिए और न ही अधिक बन्द करना चाहिए, अपितु नासिका के अग्रभाग पर (दोनों नेत्रों) को टिकाकर, न अधिक झुकाकर न अधिक तान कर शरीर को सीधा करके स्मृति को अन्तर्मुखी करके बैठना चाहिए। इसके बाद दोनों कन्धों को बराबर स्थापित करे। सिर को न ऊँचा और न नीचा रख कर एक ओर



निश्चल रखना चाहिये। नाक को नाभि की सिधार्ई में रखना चाहिये। दन्त और होठों को सामान्य रखना चाहिए और जोभ को ऊपरी दन्तों की जड़ में लगाना चाहिए। आश्वास तथा प्रश्वास भी न शब्दसहित, न स्थूल और न तेज ही करना चाहिये, अपितु विना जाने धीरे-धीरे विना प्रयास के जैसे भीतर आये और बाहर निकले वैसा करना चाहिये।

वहाँ प्रथमतः योगी को जैसा सुना और जैसा देखा है, उसी प्रकार की तथागत की मूर्ति पर चित्त स्थापित करके शमथ को सिद्ध करना चाहिये। तपाये हुए सोने की भाँति चमकदार लक्षणों तथा अनुव्यञ्जनों से अलंकृत, परिवार-मण्डल में बैठे हुए अनेक उपायों से सत्त्वों का हित कर रहे, उस तथागत की प्रतिमा का निरन्तर मनसिकार के द्वारा उसके गुणों की अभिलाषा उत्पन्न करनी चाहिये। लय, औद्धत्य आदि को शान्त करके तबतक ध्यान करता रहे, जबतक उसे सामने रखे हुए की भाँति स्फुटतर न दिखाई पड़े। इसके बाद तथागत की प्रतिमा के प्रतिबिम्ब के आने-जाने का निरूपण करने से विषयना की भावना करनी चाहिये। तत्पश्चात् इस प्रकार सोचना चाहिये कि—जिस प्रकार तथागत की प्रतिमा का प्रतिबिम्ब न तो कहीं से आया है और न कहीं भी जायेगा, बैठी हुई भी स्वभाव से शून्य है और आत्मा तथा आत्मोय से रहित है। उसी प्रकार सभी धर्म स्वभाव से शून्य, आने और जाने से रहित प्रतिबिम्ब की तरह भाव आदि के रूप से रहित हैं, ऐसा विचार करके निर्विकल्प तथा अनिर्वचनीय एक ही रसवाले चित्त के द्वारा तत्त्व की भावना करते हुए जबतक इच्छा हो, बैठे रहना चाहिये। यह समाधि प्रत्युत्पन्न-बुद्धसम्मुखावस्थित-समाधि में निर्दिष्ट है। इस समाधि की अनुशंसा उसी सूत्र में विस्तृत रूप से जाननी चाहिये।

अनेक प्रकार से जो सर्वधर्मसंग्रह होता है, उसी पर चित्त को स्थापित करके लय, औद्धत्य आदि के प्रशमन के लिए शमथ सिद्ध करना चाहिये। संक्षेप में सभी धर्म रूपी तथा अरूपी के भेद से संगृहीत हैं। वहाँ रूपी तो रूप-स्कन्ध में संगृहीत है। वेदना आदि स्कन्ध अरूपी के स्वभाव वाले हैं। यहाँ अज्ञानी लोग सत्ता आदि के ग्रहण में अभिनिवेश करने से विपरीतबुद्धि होकर संसार में परिभ्रमण करते रहते हैं। उनके विपर्यास को दूर करने के लिए, उनके प्रति महाकरुणा को अभिमुख करके, योगी को शमथ सिद्ध होने पर, तत्त्वाधिगम करने के लिए तब से विषयना की भावना करनी चाहिए। भूत-प्रत्यवेक्षण को विषयना कहा जाता है। भूत (सम्यग्) तो पुद्गल तथा धर्म का नैरात्म्य है।



पुद्गल-नैरात्म्य वह है, जो स्कन्धों को आत्मा तथा आत्मीयता से रहित होना है। जो उनकी ही माया की समानता है, वही धर्मनैरात्म्य है। योगी के द्वारा इस प्रकार का परीक्षण किया जाना चाहिए। पुद्गल रूपादि से भिन्न नहीं है, क्योंकि उसका प्रतिभास नहीं होता है, और रूप आदि में ही 'मैं हूँ' ऐसा ज्ञान उत्पन्न होता है। पुद्गल रूपादि-स्कन्ध के स्वभाव का भी नहीं है, क्योंकि वे रूपादि अनित्यता तथा अनेकता के स्वभाव के हैं, और पुद्गल को नित्य तथा एकरूप वाला अन्यो ने कल्पित किया है। तत्त्व या अन्यत्व से अनिर्वचनीय पुद्गल का वस्तु होना उचित नहीं है, क्योंकि वस्तुसत् का अन्य आकार नहीं होता है, ऐसा विचार करना चाहिए। इसलिए इस प्रकार लोक का यह 'मैं' और 'मेरा' ऐसा कहना झूठा तथा भ्रम ही है, ऐसा निश्चित रूप से जानने लगे तब धर्म-नैरात्म्य-बोध करने के लिए विचार करना चाहिए कि—क्या ये रूपी धर्म चित्त से भिन्न परमार्थ-सत् के रूप में स्थित हैं, या चित्त ही रूपादि में प्रतिभासित होता है, जैसे कि स्वप्न की अवस्था में प्रतिभास होता है, वैसा ही प्रतिभासित होता है। वह उनको परमाणुशः परीक्षण करते हुए परमाणुओं का भी भागों में प्रत्यवेक्षण करते हुए प्राप्त नहीं करता है। इस प्रकार प्राप्त न होने से सत्ता और असत्ता के विकल्पों को निवृत्त करता है।

त्रिधातु भी चित्तमात्र में ज्ञात होता है, अन्यथा नहीं। जैसा कि लङ्कावतार में भी कहा गया है—

“द्रव्य तो अणुशः विभक्त किये जाते हैं, किन्तु रूप में विकल्प नहीं करना चाहिए। चित्तमात्र की व्यवस्था तो कुदृष्टि वालों को अवगत नहीं होगी।”

वह इस प्रकार सोचता है कि चित्त ही अनादिकाल से मिथ्या रूपादि पर अभिनिवेश के कारण स्वप्न में दिखाई पड़ने वाले रूपादि के प्रतिभास की भाँति अज्ञानियों को रूपादि का प्रतिभास बाहर विच्छिन्न-सा आभासित होता है। इसलिए त्रिधातु चित्तमात्र ही है। वह इस प्रकार समस्त धर्म-प्रज्ञप्तियों का चित्त ही है (ऐसा) निश्चय करके उसी में प्रत्यवेक्षण करने पर सभी धर्मों के स्वभाव का प्रत्यवेक्षण हो जाता है, ऐसा चित्त के स्वभाव का भी प्रत्यवेक्षण करता है। वह इस प्रकार विचार करता है, कि परमार्थतः चित्त भी माया की भाँति अनुत्पन्न है। जब मिथ्या स्वभाव वाले रूप आदि का आकार ग्रहण करने से चित्त ही अनेक आकारों में प्रतिभासित होता है, तब इससे व्यतिरेक न होने से उसकी भी रूपादि की भाँति सत्यता कैसे होगी ? जिस प्रकार रूपादि अनेक आकार वाला होने से एक तथा अनेक स्वभाव के



नहीं हैं, उसी प्रकार चित्त भी उससे अलग न होने के कारण एक तथा अनेक स्वभाव का नहीं है। उत्पन्न किया जा रहा चित्त कहीं से भी नहीं आता है और न तो निरोध होते समय भी कहीं जायेगा। परमार्थतः स्व, पर तथा उभय से उत्पन्न होना अनुचित है। इसलिए चित्त भी माया की भाँति है। और चित्त की तरह समस्त धर्म भी माया की भाँति परमार्थतः अनुत्पन्न हैं, ऐसा विचार करना चाहिए।

योगी जिस चित्त से प्रत्यवेक्षण करता है, परीक्षण करने पर उसका स्वभाव भी उपलब्ध नहीं होता है। इस प्रकार योगी की चित्त का जिस आलम्बन पर प्रसरण होता है, उसके स्वभाव का परीक्षण करने पर उसका स्वभाव भी उपलब्ध नहीं होता है। जब उसे नहीं पाता तब सभी वस्तुओं का परीक्षण करके केले के तने की भाँति निःसार जानकर उससे चित्त को निवृत्त कर देता है। तब भाव आदि विकल्पों से रहित हो जाने पर सभी प्रपञ्चों से रहित, अनिमित्त-योग को प्राप्त करता है। जैसा कि **आर्घरत्नमेघ** में कहा गया है—“इस प्रकार वह दोषों को ( दूर करने में ) निपुण सभी प्रपञ्चों को दूर करने के लिए शून्यता की भावना का योग करेगा। इस प्रकार शून्यता की भावना अधिक करने से वह जिस-जिस स्थान में चित्त फैलाता है, चित्त अभिरत होता है, उन-उन स्थानों की स्वभावता का अन्वेषण करने पर शून्य का अवबोध होता है। जो चित्त है उसका भी परीक्षण करने पर शून्य का बोध होता है। जिस चित्त से वह परीक्षण करता है, वह भी परीक्षण करने पर स्वभावतः शून्य ही ज्ञात होता है। वह इस प्रकार उपपरीक्षण करते हुए निर्निमित्त योग में प्रवृत्त होता है।” वही इससे इस प्रकार का प्रकट होता है कि जो उपपरीक्षण नहीं करता उसका तो निर्निमित्तता में प्रवेश नहीं होगा।

इस प्रकार वह धर्मों के स्वभाव की उपपरीक्षा करते हुए जब नहीं पाता तब ( वह ) ‘है’ ऐसा विकल्प नहीं करता है और ‘नहीं है’ ऐसा भी विकल्प नहीं करता है। क्योंकि जो ‘नहीं है’ ऐसा विकल्प करता है, उसकी बुद्धि में सर्वदा प्रतिभास नहीं होता है। यदि भाव कभी दिखलाई पड़ता, तब प्रतिषेध के कारण ‘नहीं है’ ऐसा विचार करे। जब योगी को प्रज्ञा के द्वारा परीक्षण करने पर तीनों कालों में भी वस्तु उपलब्ध नहीं होती तब किसका निषेध करने से ‘नहीं है’ ऐसा विचार करेगा। इस प्रकार उस समय उसको अन्य विकल्प नहीं होते, क्योंकि भाव तथा अभाव के विकल्पों से सभी विकल्पों पर व्याप्त होने से व्यापक के अभाव से व्याप्य का भी अभाव होगा। ऐसा होने पर निष्प्रपञ्च-निर्विकल्पता में ही प्रवेश होता है और रूपादि पर भी आश्रित नहीं होता। प्रज्ञा से परीक्षण करने पर समस्त वस्तुओं की स्वभावता



की अनुपलब्धि होने से प्रज्ञोत्तर-ध्यायी भी हो जाता है। वह इस प्रकार पुद्गल तथा धर्मनैरात्म्य के तत्त्व में प्रविष्ट होकर अन्य दर्शनीय तथा अन्य परीक्षणीय के न होने से उपरत विचार वाले निर्विकल्प एकरस वाले स्वरसवाही मन से अनभिसंस्कार के कारण योगी उसी तत्त्व की अतिस्फुट रूप से अवधारणा करके बैठे। वहाँ बैठने पर भी चित्त के सन्तान में विक्षेप न करें।

जब बीच में चित्त को बाहर की ओर विक्षिप्त देखा जाय, तब उसके स्वभाव के परीक्षण से विक्षेप को शान्त करके फिर वहीं पर चित्त को स्थापित करना चाहिये। जब उसमें चित्त को अभिरत न देखे, तब समाधि के गुणों को देखने से उसमें अभिरति की भावना करे। विक्षेप में दोष देखने से अरति को शान्त करना चाहिये। यदि स्त्यान तथा मिद्ध का अभिभव हो जाने से जब अस्पष्ट प्रचार के कारण चित्त को लीन देखे अथवा लय में ( है ऐसी ) अभिशंका हो जाये, तब प्रमोद की वस्तु बुद्ध की प्रतिमा आदि या आलोकसंज्ञा को मन में करके लय का उपशमन करे, तब उसी तत्त्व को अतिदृढ़ता से ग्रहण करे। जब योगी जात्यन्ध की भाँति या अन्धकार में प्रविष्ट मनुष्य की भाँति या आँख बन्द किये हुए ( व्यक्ति ) की भाँति तत्त्व की अतिस्फुट अवधारणा नहीं करता, तब चित्त को लीन ( हो जाना ) और विपश्यना से रहित समझना चाहिये। फिर जब पूर्वानुभूत विषय की इच्छा से चित्त में बीच समय में औद्धत्य या औद्धत्य का सन्देह दिखाई पड़े, तब अनित्यता आदि संवेग की वस्तुओं का मनसिकार करके औद्धत्य की शान्ति करे। उसके बाद फिर से उसी तत्त्व में चित्त की अनभिसंस्कारवाहिता में प्रयत्न करे। जब विक्षेप में पड़े हुए पुरुष की भाँति या बन्दर की भाँति चित्त अनवस्थित हो जाये, तब औद्धत्य ( का होना ) और शमथ से विहीनता जाननी चाहिये। जब लय तथा औद्धत्य से विविक्त होने के कारण सम्प्रवृत्त होकर स्वरसवाही उसी तत्त्व में चित्त खूब स्पष्ट रूप से उत्पन्न होता है, तब आभोग को शिथिल करके उपेक्षा करे। तब शमथ तथा विपश्यना में युगनद्धवाही मार्ग को निष्पन्न जाना चाहिये।

जब विपश्यना की भावना करने पर प्रज्ञा अतिरिक्ततर हो जाती है, तब शमथ की अल्पता के कारण प्रवात में रखे हुए प्रदीप की तरह चित्त के चञ्चल होने से तत्त्व अतिस्फुट नहीं दिखलाई पड़ेगा। इसलिए तब शमथ की भावना करनी चाहिये। शमथ के भी अतिरिक्ततर हो जाने पर मिद्ध से अवष्टब्ध मनुष्य की भाँति तत्त्व अतिस्फुट दिखाई नहीं पड़ेगा। इसलिए उस समय में प्रज्ञा की भावना करनी चाहिये। जब दोनों ही समान रूप से युगनद्धवाही दो बैलों की भाँति प्रवृत्त हो जाते हैं, उस



समय अनभिसंस्कार से ही तबतक रुकना चाहिये, जबतक कि काय और चित्त में पीडा न होने लगे।

संक्षेप में सभी समाधियों के छह दोष होते हैं। ( जैसे कि ) कौसीद्य, आलम्बन-सम्प्रमोष, लय, औद्धत्य, अनाभोग तथा आभोग। इनके प्रतिपक्ष में अष्टप्रहाण-संस्कारों की भावना करना चाहिये। ( जो ) इस प्रकार है—श्रद्धा, छन्द, व्यायाम, प्रसन्नधि, स्मृति, सम्प्रजन्य, चेतना तथा उपेक्षा। इनमें प्रथम चार कौसीद्य के प्रतिपक्ष हैं, क्योंकि इस प्रकार समाधियों के गुणों में विश्वास-लक्षणवाली श्रद्धा से योगी को अभिलाषा उत्पन्न होता है। तब अभिलाषवान् वीर्य का आरम्भ करता है। तत्पश्चात् वीर्य के आरम्भ से काय तथा चित्त की कर्मण्यता होती है। उससे काय तथा चित्त की प्रसन्नधि होने से कौसीद्य की निवृत्ति होती है। इसलिए श्रद्धा आदि के द्वारा कौसीद्य का प्रहाण करते हैं। इसीलिए उनकी भावना करनी चाहिये। स्मृति आलम्बन-सम्प्रमोष का प्रतिपक्ष है, सम्प्रजन्य लय तथा औद्धत्य दोनों का प्रतिपक्ष है, क्योंकि इसी से उन दोनों को जानकर प्रहाण करते हैं। लय तथा औद्धत्य की शान्ति न होने के समय तो अनाभोग दोष होगा, इसलिए उसके प्रतिपक्ष के रूप में चेतना की भावना करनी चाहिये। जब लय तथा औद्धत्य का प्रशमन होने पर चित्त प्रशमवाही हो जाये, तब आभोग दोष होता है। तब उसके प्रतिपक्ष उपेक्षा की भावना करनी चाहिये। यदि चित्त के समप्रवृत्त होने पर आभोग किया जाता है, तब चित्त विक्षिप्त हो जाता है। यदि चित्त के लीन हो जाने पर आभोग नहीं किया जाता है, तब विपर्ययना-रहित हो जाने के कारण अन्धे पुरुष की भाँति चित्त लीन हो जायेगा। इसलिए लीन चित्त का निग्रह करके उद्धत का प्रशमन करना चाहिये और सम्प्राप्त होने पर उपेक्षा करनी चाहिये।

उसके बाद योगी को जबतक इच्छा रहे, तबतक अनभिसंस्कार से ही तत्त्व की भावना करके बैठना चाहिये। काय तथा चित्त में पीडा होने पर बीच-बीच में बार-बार समस्त ही लोक को देखकर माया, स्वप्न, जलचन्द्र तथा प्रतिभास की तरह जानना चाहिये। जैसा कि अबिकल्पप्रवेश में भी कहा गया है—“लोकोत्तर ज्ञान के द्वारा सभी धर्मों को आकाश-तल की भाँति सम देखता है। उसके पृष्ठलब्ध से माया, ( मरु ) मरीचि, स्वप्न तथा उदकचन्द्र की भाँति देखता है।” इस प्रकार जगत् को माया को भाँति जानकर सभी सत्त्वों में महाकरुणा के अभिमुख करके इस प्रकार सोचना चाहिये कि ये बालबुद्धि वाले इस प्रकार के गम्भीर धर्म को (ठीक से) न समझने के कारण आदि से शान्ति वाले धर्मों में सत्ता आदि का समारोप करते हैं। और विपर्यास में पड़कर



विभिन्न कर्म तथा क्लेशों का उपार्जन करते हैं। अतः वे संसार में परिभ्रमण करते हैं, इसलिए मैं अवश्य वैसा ही करूँगा, जिससे इनको इस प्रकार के गम्भीर धर्म को समझा सकूँ, ऐसा सोचना चाहिये। इसके बाद विश्राम करके फिर उसी प्रकार सर्वधर्मनिराभास-समाधि में प्रवृत्त हो जायें। फिर चित्त में कष्ट होने पर उसी प्रकार विश्राम करके फिर प्रवृत्त होना चाहिये। इस प्रकार इसी क्रम से एक घड़ी या एक पहर जितने समय तक रहा जा सके, उतने समय तक बैठना चाहिये।

इसके बाद समाधि से उठना चाहें तो पर्यङ्क को विना खोले इस प्रकार सोचना चाहिये कि यदि ये सभी धर्म परमार्थतः अनुत्पन्न हैं, फिर भी माया की भाँति विविध निश्चित हेतु-प्रत्यय-संग्रहों के कारण अनेक प्रकार के अविचार-रमणीय ही प्रादुर्भूत होते हैं। इसलिए उच्छेद-दृष्टि का अवसर नहीं होगा और न तो अपवाद का अन्त भी, क्योंकि प्रज्ञा से परीक्षण करने पर (कुछ भी) उपलब्ध नहीं होता है, इसलिए न तो शाश्वत-दृष्टि का प्रसङ्ग है, और न समारोपान्त का भी। वहाँ जो लोग प्रज्ञाचक्षु से रहित हो जाने के कारण विपर्यस्तबुद्धि होकर आत्माभिनिवेश से विविध कर्म करते हैं, वे लोग संसार में परिभ्रमण करते रहते हैं। और जो लोग पूर्णतः संसार से विमुख होकर, महाकरुणा से रहित, सत्त्वों के लिए दान आदि पारमिता को परिपूर्ण करते रहते हैं और अपना दमन मात्र करते हैं, उनका उपाय से रहित होने से श्रावक तथा प्रत्येक बुद्ध की बोधि में पतन होता है।

जो लोग जगत् को निःस्वभाव समझ करके महाकरुणा के बल से समस्त जगत् का उद्धार करने का निश्चय करके मायाकार की भाँति अविपर्यस्त बुद्धि होने से विपुल पुण्य तथा ज्ञान के सम्भारों को निष्पन्न करते हैं, वे लोग तथागत के पद को प्राप्त करके संसार-पर्यन्त अशेष जगत् के सभी प्रकार के हितों तथा सुखों को सिद्ध करते हुए रहेंगे। वे लोग ज्ञानसम्भार के बल से समस्त क्लेशों के प्रहाण के कारण संसार में पतित नहीं होते हैं और सभी सत्त्वों की अपेक्षा से सञ्चित अतिविपुल, अप्रमेय पुण्यसम्भार के कारण निर्वाण में भी पतित नहीं होते और सभी सत्त्वों के उपजीव्य भी हो जाते हैं। इसलिए समस्त सत्त्वों का हित तथा सुख-साधनों के इच्छुक अप्रतिष्ठित निर्वाण की प्राप्ति को चाहने वाले मुझको विपुल पुण्य तथा ज्ञानसम्भार के उपार्जन के लिए सदा अभियोग करना चाहिये, ऐसा सोचना चाहिये। जैसा कि आर्यातथागत-गुह्यसूत्र में भी कहा गया है कि—“ज्ञानसम्भार तो समस्त क्लेशों का प्रहाण करने के लिए होता है, पुण्यसम्भार सभी सत्त्वों की उपजीविका के लिए होता है। भगवन्! इस कारण से बोधिसत्त्व महासत्त्व को पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों में सदा



अभियोग करना चाहिये। आर्यतथागतोत्पत्तिसम्भवसूत्र में भी विस्तार से कहा गया है—“और वह यह तथागतों की उत्पत्ति तो एक ही कारण से नहीं होती। वह किस कारण से है? हे जिनपुत्र! तथागत तो सम्यक् सिद्ध अप्रमेय दस लाख कारणों के द्वारा सम्यग् रूप से सिद्ध होते हैं। किन दस प्रकारों से? जैसे कि अप्रमेय पुण्य तथा ज्ञानसम्भारों से अतृप्ति को सम्यक् निष्पन्न कराने वाले हेतुओं से” इत्यादि। आर्यधम्मलकीर्तिनिदेश में भी “हे मित्र! तथागत के शरीर तो सौ पुण्यों से ही उत्पन्न हैं, सभी कुशलधर्मों से उत्पन्न हुए हैं, अप्रमेय कुशलमूलकर्मों से उत्पन्न हुए हैं”, इत्यादि विस्तार से कहा गया है।

इस प्रकार से धीरे-धीरे पर्यङ्क खोलकर दशदिशाओं में स्थित समस्त बुद्धों तथा बोधिसत्त्वों को प्रणाम करना चाहिये, और उनके लिये पूजा तथा स्तुति करके आर्यभद्रचर्या आदि विपुलप्रणिधानों को करना चाहिये। इसके बाद शून्यता तथा कर्षण के गर्भवाली अनुत्तरसंबोधि में परिणामना किये गये समस्त दान आदि पुण्य-सम्भारों की उपार्जना में अभियुक्त हो जाना चाहिए।

जो लोग यह मानते हैं कि—‘चित्त-विकल्प से उत्पन्न होने वाले शुभ तथा अशुभ कर्मों के वशीभूत होने से सत्त्व स्वर्ण आदि कर्मफल को भोगते हुये संसार में घूमते रहते हैं, और जो लोग कुछ भी नहीं सोचते हैं और कुछ भी कर्म नहीं करते हैं, वे लोग संसार से मुक्त हो जायेंगे। इसलिए कुछ भी सोचना नहीं चाहिए। दान आदि कुशलचर्या भी नहीं करनी चाहिये (क्योंकि) दान आदि कुशलचर्या तो मूर्खपुरुषों को लक्ष्य करके कही गयी है।’ ऐसा सोच कर बोलते हैं। उनके द्वारा समस्त महायान का प्रतिक्षेप होता है। समस्त यानों की जड़ महायान ही होने के कारण उसका प्रतिक्षेप करने पर समस्त यानों का प्रतिक्षेप हो जायेगा। इस प्रकार ‘कुछ भी नहीं सोचना चाहिए’, ऐसा कहने से तो भूतप्रत्यवेक्षण-लक्षणवाली प्रज्ञा का प्रतिक्षेप हो जायेगा, क्योंकि सम्यग्ज्ञान का मूल तो भूतप्रत्यवेक्षणा है, उसका प्रतिक्षेप होने पर मूल कटने के कारण लोकोत्तर-प्रज्ञा भी प्रतिक्षिप्त हो जायेगी। उसके प्रतिक्षिप्त हो जाने से सर्वाकारज्ञता प्रतिक्षिप्त हो जायेगी। ‘दान आदि कुशलचर्या भी नहीं करनी चाहिये’ ऐसा बोलने से भी दान आदि उपायों का प्रतिक्षेप तो स्पष्ट ही हो जायेगा।

संक्षेप में इतना ही है कि उपाय तथा प्रज्ञा ही महायान है। जैसा कि आर्यगयाशीर्ष में कहा गया है—“बोधिसत्त्वों के मार्ग संक्षेप में दो हैं। कौन से दो



हैं ? इस प्रकार है—उपाय तथा प्रज्ञा ।” आर्यतथागतगुह्यसूत्र में भी—“उपाय तथा प्रज्ञा ये दोनों बोधिसत्त्वों की सभी पारमिताओं के संग्रह के लिये होते हैं,” ऐसा आता है । इसलिये महायान का प्रतिक्षेप करने वाले के द्वारा महान् कर्मावरण किया हुआ हो जायेगा । महायान का प्रतिक्षेप करने वाले, अल्पश्रवण, आत्मदृष्टि-परामर्श वाले, विद्वज्जनों की सेवा न करने वाले, तथागत के प्रवचन की नीतियों को धारण न करने वाले स्वयं विनष्ट होकर और दूसरों को भी नष्ट कर रहें, युक्ति तथा आगमों से विरुद्ध होने के कारण विष से मिले हुये वचनों को सविष-भोजन की भाँति, अपना-हित चाहने वाले बुद्धिमान् व्यक्ति के द्वारा दूर से ही परित्याग कर देना चाहिए ।

इस प्रकार उसके द्वारा भूतप्रत्यवेक्षा के प्रतिक्षिप्त होने के कारण धर्मप्रविचय नामक प्रमुख बोध्यङ्ग ही प्रतिक्षिप्त हो जायेगा । भूतप्रत्यवेक्षा के बिना योगी किस उपाय से अनादिकाल से अभ्यस्त रूपादि भावों में अभिनिवेश वाले चित्त को निर्विकल्पता में प्रवेश करेगा ? यदि ‘सभी धर्मों में अस्मृति तथा अमनसिकार के द्वारा प्रवेश होगा’ ऐसा कहें तो वह भी अयुक्त है, क्योंकि भूतप्रत्यवेक्षण के बिना अनुभूत होने वाले सभी धर्मों में अस्मृति अथवा अमनसिकार नहीं किया जा सकता है । और यदि मुझे इन धर्मों का स्मरण नहीं करना है, मनसिकार नहीं करना है, इस प्रकार भावना करते हुये, उनपर अस्मृति तथा अमनसिकार की भावना की जाये तो, उस समय इनमें ये निश्चित रूप से स्मृत तथा मनसिकृत हो जायेंगे । यदि स्मृति तथा मनसिकार के अभाव मात्र को अस्मृति तथा अमनसिकार स्वीकार किया जाये, तो तब उन दोनों का अथवा किस प्रकार से होगा, यही विचार किया जाना चाहिए । अभाव का हेतु होना अनुचित है । कैसे निर्निमित्त तथा अमनसिकार से निर्विकल्पता होगी ? इसमें से अविकल्पता हो जाये तो, संमूर्च्छित व्यक्ति को भी स्मृति तथा मनसिकार न होने से निर्विकल्पता में प्रवेश का पसङ्ग होने लगेगा । भूतप्रत्यवेक्षा के बिना अन्य उपाय नहीं है, जिसके द्वारा अस्मरण तथा अमनस्कार किया जा सके ।

अस्मरण तथा अमनसिकार संभव होने पर भी भूतप्रत्यवेक्षा के बिना धर्मों की निःस्वभावता का ज्ञान कैसे होगा ? सभी धर्म स्वभाव से शून्यता में स्थित ही हैं, ( किन्तु ) इस प्रकार उस प्रत्यवेक्षा के बिना उनकी शून्यता का प्रतिवेध नहीं होता है । शून्यता का प्रतिवेध न होने से आवरण का ग्रहण सम्भाव नहीं है । यदि ऐसा हो तो सभी की सर्वत्र मुक्ति की प्रसङ्ग होने लगेगा । पुनः यदि उस योगी को सभी धर्मों में मुषितस्मृतिता अथवा मोह के कारण स्मृति और मनसिकार की प्रवृत्ति नहीं



होती, तब अत्यन्त मूढ़ होने से वह योगी कैसे होगा ? भूतप्रत्यवेक्षण के विना अस्मृति तथा अमनसिकार की भावना करने से मोह का ही अभ्यास हो जायेगा । उसी से सम्यग्ज्ञान का आलोक दूर हो जायेगा । यदि वह मुषितस्मृति भी नहीं है और मूढ़ भी नहीं है तो वहाँ भूतप्रत्यवेक्षा के विना कैसे अस्मरण तथा अमनसिकार करने में समर्थ होगा ? स्मरण करते हुये भी स्मरण नहीं करता तथा देखते हुये भी नहीं देखता, ऐसा कहना अयुक्त है । अस्मृति तथा अमनसिकार की भावना से कैसे पूर्वनिवासानुस्मृति आदि बुद्धधर्मों का उदय होगा, क्योंकि विरोध है । जैसे कि उष्ण के विरोधी शीत का सेवन करने पर उष्ण-स्पर्श की वेदना नहीं होती है ।

समाधि में समाहित योगी का यदि मनोविज्ञान हो तो, तब उसे अवश्य ही किसी का आलम्बन करना पड़ेगा । पृथग्जनों को एकाएक अनालम्बनज्ञान नहीं हो सकता है । यदि नहीं है तो किस प्रकार धर्मों की निःस्वभावता का अवबोध होगा ? किस प्रतिपक्ष के द्वारा क्लेश-आवरण का प्रहाण होगा ? चतुर्थ ध्यान की अप्राप्ति वाले पृथग्जन का चित्त-निरोध होना असम्भव है । इसलिए सद्धर्म में जो अस्मृति तथा अमनसिकार कहे गये हैं, उनके भी भूतप्रत्यवेक्षणपूर्वक ही देखना चाहिए । इसलिए भूतप्रत्यवेक्षण से ही अस्मरण तथा अमनसिकार किये जा सकते हैं, अन्यथा नहीं । इस प्रकार जब योगी सम्यक्प्रज्ञा से निरूपण करता हुआ तीनों कालों में कोई भी धर्म परमार्थतः उत्पन्न नहीं देखता है, तब वहाँ स्मरण तथा मनसिकार कैसे करेगा ? जो परमार्थतः तीनों कालों में भी नहाने के कारण अनुभव में नहीं आता है, उसका अस्मरण अथवा मनसिकार कैसे किया जा सकता है और इस कारण सभी प्रपञ्चों के उपशमन-निर्विकल्पज्ञान में प्रविष्ट होता है । उसमें प्रवेश करने से शून्यता का अवबोध करता है, तथा उसका अवबोध होने से समस्त कुदृष्टिजालों का प्रहाण करता है ।

उपाय से युक्त प्रज्ञा का सेवन करने से संवृत्ति तथा परमार्थ सत्यों में पूर्णतः कुशल हो जाता है । अतः अनावरणज्ञान की प्राप्ति होने से सभी बुद्धधर्मों को प्राप्त करता है । इसलिए भूतप्रत्यवेक्षण के विना न तो सम्यक्ज्ञान का उदय होता है, और न क्लेशावरण का प्रहाण ही । आर्यमञ्जुश्रीविकृतसूत्र में भी कहा गया है कि— “हे दारिके ! बोधिसत्त्व संग्राम को कैसे जीतता है ? उत्तर है—मञ्जुश्री बारम्बार विवेचन करने पर सभी धर्मों को उपलब्ध नहीं करता है ।” इसलिए ज्ञानरूपी चक्षु को फैलाकर प्रज्ञा के शास्त्र से क्लेशरूपी शत्रुओं को पराजित करके योगी निर्भय विचरण करता है, न कि भीत पुरुष की भाँति आँखें बन्द करके । आर्यसमाधिराज-सूत्र में भी कहा गया है—



“यदि धर्म पर नैरात्म्य की प्रत्यवेक्षा करे और यदि उनकी प्रत्यवेक्षा करके भावना करे तो, वही निर्वाणरूपी फल की प्राप्ति का हेतु है। अन्य जो हेतु है, उससे शान्ति नहीं होती है।”

सूत्रसमुच्चय में भी कहा गया है कि—“स्वयम् विपश्यनायोग में लगे रहने पर भी अन्यो को विपश्यना-योग में अभियुक्त न करना मारकर्म है।”

विपश्यना तो भूतप्रत्यवेक्षण के स्वभाव की है, ऐसा आर्यारत्नमेघ और सन्धि-निर्मोचन आदि में कहा गया है। आर्यारत्नमेघ में भी—“विपश्यना का परीक्षण करने से निःस्वभावता का अवबोध होने के कारण निर्निमित्त-प्रवेश कहा गया है।” आर्यलङ्कावतार में भी कहा गया है—“हे महामते ! बुद्धि से परीक्षित किये जा रहे भावों के स्व तथा सामान्यलक्षणों का ज्ञान नहीं हो पाता। इसीलिए ऐसा कहा गया है कि सभी धर्म निःस्वभाव हैं। यदि ‘भूतप्रत्यवेक्षणा’ नहीं की जाती है तो, इस प्रकार भगवान् ने उन सूत्रों में जो भूतप्रत्यवेक्षण अनेक प्रकार के बतलाये हैं, उनका भी विरोध हो जायेगा। इसलिए अल्प-प्रज्ञा और अल्पवीर्य हम बहुश्रुति-अन्वेषण में असमर्थ हैं, ऐसा कहना युक्त है। भगवान् ने बहुश्रुतता की प्रशंसा की थी, इसलिए कदापि उसका प्रहाण करना उचित नहीं है।

ब्रह्मपरिपृच्छा में कहा गया है कि—“जो अचिन्तनीय धर्मों पर चिन्तन विप्रयुक्त है, उसको अयोनिश होती है।” इसमें भी जो लोग परमार्थतः अनुत्पन्न धर्मों के उत्पाद की परिकल्पना करके श्रावक आदि के समान इन पर अनित्य तथा दुःख के रूप में चिन्तन करते हैं, उनकी तो समारोप तथा अपवाद के उन अन्तों में चिन्तन न प्रवृत्त होने से अयोनिश होता है, इस प्रकार उसके प्रतिषेध के लिए जो कहा गया है, वह भूतप्रत्यवेक्षा का प्रतिषेध नहीं है, क्योंकि वह तो सभी सूत्रों में कहा गया है। इस प्रकार ब्रह्मपरिपृच्छासूत्र में ही कहा गया है—“चित्तशूर बोधिसत्त्व ने कहा है कि जो सभी धर्मों को चित्त से सोचता है और वहाँ अक्षत तथा अनुपहत होता है, उसी से वह बोधिसत्त्व कहा जाता है।” फिर उसी में कहा गया है कि—“कैसे वीर्य से युक्त होते हैं ? जब सर्वज्ञता-चित्त को खोजते हुए प्राप्त नहीं करते हैं।” फिर उसी में कहा गया है—“वे बुद्धिमान होंगे जो योनिशः धर्मों की प्रत्यवेक्षणा करते हैं।” फिर उसी में कहा गया है—“वे लोग धर्मों को माया तथा मरीचि की भाँति प्रविभक्त करते हैं।”



यह इस प्रकार जहाँ-जहाँ पर अचिन्त्य आदि शब्दों का श्रवण होता है, वहाँ-वहाँ श्रवण तथा चिन्तन मात्र से ही जो लोग तत्त्वाधिगम मानते हैं, उनके अभिमान के प्रतिषेध के लिये धर्मों की प्रत्यात्मवेदनीयता प्रतिपादित होती है और अयोनिश चित्त का भी प्रतिषेध किया जाता है, ऐसा जानना चाहिए। भूतप्रत्यवेक्षण का प्रतिषेध नहीं होता है। अन्यथा अनेक युक्ति तथा आगमों से विरोध हो जायेगा, जैसा पहले कहा जा चुका है। और श्रवण तथा चिन्तन से होने वाली प्रज्ञा के द्वारा जो भी ज्ञान हुआ उसी की भावनामयी प्रज्ञा के द्वारा भावना करनी चाहिए, दूसरे की नहीं। जैसे देखी गयी धावन-भूमि पर ही घोड़े की दौड़ होती है। इसलिए भूतप्रत्यवेक्षा करनी चाहिए। यद्यपि वह विकल्प-स्वभाव की है, फिर भी योनिशोमनसिकार के स्वभाव की होने से उससे निर्विकल्पक ज्ञान का उत्पाद होता है, ऐसा समझकर उस ज्ञान का इच्छुक होने से उसका सेवन करना चाहिए। निर्विकल्प सम्यग्ज्ञानरूपी अग्नि के उत्पन्न होने पर दो लकड़ियों की रगड़ से उत्पन्न अग्नि से उन लकड़ियों के जलने की भाँति वह भी बाद में उसी से जल जायेगी, ऐसा आर्यरत्नकूट में कहा गया है।

यह जो कहा गया है कि कुशल आदि कुछ भी कर्म नहीं करना चाहिए, कर्म के क्षय से मुक्ति होती है, ऐसा कहने पर वहाँ आजीवकवाद की मान्यता हो जायेगी। भगवान् के प्रवचनों में कर्म के क्षय से मुक्ति होती है, ऐसा अभीष्ट नहीं है, फिर कैसे? क्लेशक्षय से। अनादिकाल से एकत्रित किये गये कर्मों का क्षय करना संभव नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं। दुर्गति आदि में उसके फल का उपभोग करते समय अन्य कर्मों का भी उत्पाद होता है, क्लेशों का अभाव न होकर वह कारण के रूप में स्थित रहने पर कर्म का निरोध नहीं हो सकता है, जैसा कि प्रदीप के निरोध के बिना उसकी प्रभा का निरोध नहीं होता है। उस विपश्यना का अपवाद करने वाले के क्लेश का क्षय असम्भव है, ऐसा पहले कहा जा चुका है। यदि क्लेश-क्षय के लिए विपश्यना का सेवन करना चाहिए ऐसा माने तब क्लेश-क्षय से ही मुक्ति सिद्ध होगी, इस प्रकार कर्म-क्षय के लिए परिश्रम व्यर्थ हो जायेगा। अकुशल कर्म नहीं करना चाहिए, यह कहना युक्त है। कुशल का इस प्रकार प्रतिषेध क्यों किया जाता है? यदि संसार का उत्पादक होने से प्रतिषेध किया जाता है, ऐसा कहे तो वह भी अनुचित है। आत्मादिविपर्यास से समुत्थापित जो कुशल कर्म हैं, वही संसारावाहक होते हैं, न कि बोधिसत्त्वों के कर्म महाकरुणा से समुत्थापित और अनुत्तरसम्यक्संबोधि में परिणमित कर्म भी। उसी प्रकार आर्यादशभूमि में भी—वहीं दशकुशल-कर्म-पथ परिणामना आदि परिशुद्धि-विशेष से श्रावकत्व प्रत्येकबुद्धत्व, बोधिसत्त्वता तथा



बुद्धत्व के साधक होते हैं, ऐसा निर्देश किया गया है। **आर्यारत्नकूट** में भी वर्णन किया गया है कि—“महासागर में प्रविष्ट सभी महानदियों के जलराशि की भाँति बोधिसत्त्वों के नाना माध्यमों से संगृहीत ( अर्जित ) कुशलमूल सर्वज्ञता में परिणमित होकर सर्वज्ञता में एक रस हो जाते हैं।”

जो बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों के रूप-काय, क्षेत्रपरिशुद्धि, प्रभा, परिवार, महाभोग आदि की सम्पत्ति है, वह तो दान आदि पुण्यसम्भारों का फल है, ऐसा जहाँ-तहाँ सूत्रों में भगवान् के द्वारा वर्णित है, उनका भी विरोध होने लगेगा। कुशल-चर्या के प्रतिषेध से प्रातिमोक्षसंवर आदि का भी प्रतिषेध हो जायेगा। इसलिए शिर तथा मुख का क्षौर, काषायधारण आदि भी व्यर्थ हो जायेगा। कुशल कर्म की अभिसंस्कार से विमुखता हो जाने पर, संसार से विमुखता तथा सत्त्वार्थक्रिया से विमुखता का संसेवन होने लगेगा। इसलिए उससे बोधि भी दूर हो जायेगी। **आर्यसन्धिनिर्मोचन** में कहा गया है कि—“पूरी तरह से सत्त्वार्थक्रिया से विमुख होने वाले, और पूरी तरह से संस्कार के अभिसंस्कार से विमुख होने वाले के लिए मैंने अनुत्तर सम्यक्सम्बोधि को नहीं कहा है।” **आर्योपालिपरिपृच्छा** आदि में भी कहा गया है कि—“संसार से विमुख होना बोधिसत्त्वों का परम दुःशील है।” संसार-परिग्रह तो परमशील है। **आर्यविमलकीर्तिनिर्देश** में कहा है कि—“उपाय से संगृहीत संसारगमन तो बोधिसत्त्वों का मोक्ष है। उपाय से रहित प्रज्ञा बन्धन है। प्रज्ञा से रहित उपाय भी बन्धन है। प्रज्ञासहित उपाय मोक्ष है। उपायसहित प्रज्ञा भी मोक्ष है।” **आर्यगगनगञ्ज** में कहा है कि—“संसार में परिखेद होना बोधिसत्त्वों का मारकर्म है।” **सूत्रसमुच्चय** में भी असंस्कृत का भी प्रत्यवेक्षण होता है और संस्कृत कुशलों से भी परिखेद होना मारकर्म है। बोधिमार्ग का भी प्रज्ञान होता है, पारमिता मार्ग का पर्येषण नहीं करता है, यह मारकर्म है। पुनः उसी में कहा गया है कि—“दान में चित्ताभिनिवेश से प्रज्ञा में चित्ताभिनिवेश तक तो मारकर्म हैं।” वहाँ दान आदि के सेवन का प्रतिषेध नहीं किया गया है, किन्तु अहंकार तथा ममकार में चित्ताभिनिवेश करने वाले, ग्राह्य-ग्राहक में चित्ताभिनिवेश करने वाले, औपलम्भिक के दान आदि में जो विपरीत-अभिनिवेश है, उनका निषेध किया गया है। विपरीत-अभिनिवेश से समुत्थापित दान आदि परिशुद्ध नहीं होते हैं, क्योंकि मारकर्म हैं, अन्यथा ध्यान भी असेवनीय हो जायेगा। इस प्रकार से तो मुक्ति भी कैसे होगी ?

इसलिए औपलम्भिक के सत्त्व-नानात्व की संज्ञा से जो दान देना आदि है वह तो अपरिशुद्ध है, ऐसा प्रतिपादन करने के लिए **आर्यगगनगञ्ज** में भी



कहा गया है—“सत्त्व-नानात्व विपरीत कर्म आदि की संज्ञा वाले दान आदि तो मारकर्म है।” त्रिस्कन्धपरिणामना में भी कहा गया है—“जो मैंने सारा ही दान, शील, शान्ति, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा की समता न जानने से उपलम्भ में पतित के द्वारा दान पर्येष्टित, परामृष्टशील से शील की, रक्षा की, स्व तथा पर की संज्ञा से क्षान्ति की, भावना आदि की प्रतिदेशना करता हूँ।” वहाँ भी उपलम्भिक नानात्व संज्ञा वाले के विपरीत अभिनिवेश के द्वारा समुत्थापित दान आदि अपरिशुद्ध होते हैं, इतना ही कहा गया है, न कि सर्वथा दानादि के सेवन का निषेध। अन्यथा दान आदि की अविशेष रूप से प्रतिदेशना हो गयी होती, न कि केवल विपरीत उपलम्भ में पतित होने की। जो कि ब्रह्मपरिपृच्छा में भी कहा गया है कि—“जितनी चर्यायें हैं, वे सब परिकल्पित हैं। निष्परिकल्प तो बोधि है” इत्यादि। उसके भी उत्पादादि विकल्प-चर्या के सामायिक होने से उसकी भी परिकल्पितता कही गयी है। अनभिसंस्कारवाही निर्निमित्त में स्थित बोधिसत्त्व का व्याकरण है, अन्य का नहीं। इतना मात्र प्रतिपादित किया गया है। दानादि सभी की परमार्थतः अनुत्पन्नता का प्रतिपादन किया गया है, न कि चर्या नहीं करनी चाहिये, ऐसा कहा गया है।

अन्यथा दीपङ्कर से पूर्ववर्ती जिन बुद्धों का भगवान् ने सत्कार किया था और जिनके नाम भगवान् कल्प में भी नहीं कह सकते हैं, इन सबके द्वारा भी भगवान् ने बोधिसत्त्व-अवस्था में उन चर्याओं का क्यों प्रतिषेध नहीं किया? दीपङ्कर ने भी उस समय भगवान् की चर्या का प्रतिषेध नहीं किया है। जब अष्टम भूमि में स्थित होकर ये शान्तनिर्निमित्त-विहार में देखे गये तब भगवान् ने उसका व्याख्यान किया है, किन्तु वहाँ उसकी चर्या का निषेध नहीं है। आठवीं भूमि में बोधिसत्त्वों की निर्निमित्त विहार-परमता तो, यहीं उनका परिनिर्वाण न हो जाये, ऐसा दशभूमिसूत्र में बुद्धों के द्वारा प्रतिषिद्ध की गयी है। यदि वह चर्या सर्वथा करणीय नहीं होगी तो पूर्वोक्त सभी का विरोध हो जायेगा।

पुनः वहीं ब्रह्मपरिपृच्छा में कहा गया है कि—“दान भी देता है और उसके विपाक की आकाङ्क्षा नहीं करता है, शील की भी रक्षा करता है, और वह भी समारोपित नहीं हैं” इत्यादि। “हे ब्रह्म! चार धर्मों से युक्त बोधिसत्त्व बुद्धधर्मों में अवैवर्तिक होते हैं। किन चारों से? अपरिमित संसार के परिग्रहण, अपरिमित बुद्धों के सत्कार, पूजा” इत्यादि कहे गये सभी का विरोध हो जायेगा। केवल मृद्विन्द्रिय के द्वारा ही चर्या की जानी चाहिये, न कि तीक्ष्णन्द्रिय के द्वारा, ऐसा कहना उचित नहीं है, क्योंकि इस प्रकार प्रथम भूमि से लेकर दसवीं भूमि तक में प्रतिष्ठित बोधिसत्त्वों की



दान आदि चर्याओं की उत्पत्ति होती है, न कि परिशिष्टों में भी समुदाचार नहीं है, ऐसा कहा गया है। भूमि में प्रविष्ट भी मृद्वन्ध्रिय हैं ऐसा कहना उचित नहीं है। जैसा **आर्योपालिपरिपृच्छा** में भी कहा गया है कि—“अनुत्पत्तिक-धर्मक्षान्ति में स्थित होने वाले को ही त्याग, महात्याग, अतित्याग करना चाहिए।” **सूत्रसमुच्चय** में भी “षट्पारमिता आदि प्रतिपत्तियों से युक्त बोधिसत्त्व तथागत की ऋद्धि से चलता है”, ऐसा वर्णित है। तथागत की ऋद्धि की गति से अन्य शीघ्र गति नहीं है, और न षट्पारमिता तथा दश भूमि के अतिरिक्त बोधिसत्त्वों के लिए अन्य मार्ग ही है, जो और अधिक तेजगति वाला हो। स्वर्ण-शुद्धि की भाँति क्रमशः ही चित्त-संतति की शुद्धि होती है, ऐसा सूत्र में कहा गया है। **आर्यलङ्कावतार** तथा **दशभूमि** में भी जब बोधिसत्त्व तथता में स्थित हो जाता है, तब प्रथम भूमि में प्रविष्ट होता है। उसके बाद क्रम से ही पूर्व भूमियों का परिशोधन करके तथा गतभूमि में प्रवेश करता है, ऐसा कहा गया है। इसलिए भूमि तथा पारमिता से अतिरिक्त बुद्धत्वरूपी नगर में युगपत् प्रवेश करने का अन्य द्वार नहीं है, क्योंकि भगवान् ने सूत्र आदि किसी में भी नहीं कहा है।

यदि ध्यान में ही षट्पारमिता का अन्तर्भाव हो जाने से, उसके सेवन से ही सभी पारमिताओं का सेवन हो जायेगा, इसलिए दान आदि अन्यपारमिता का पृथग् रूप से सेवन नहीं करना पड़ेगा, ऐसा कहें तो वह भी ठीक नहीं। इस प्रकार होता तो बुद्ध के गोमयमण्डल में भी षट्पारमिताओं के संगृहीत हो जाने से मण्डल ही करना पड़ेगा, न कि ध्यान आदि। निरोधसमाधि की समापत्ति में प्रविष्ट श्रावक को भी निमित्त आदि असमुदाचार से ही इस प्रकार की षट्पारमिता-परिपूर्णता का प्रसङ्ग हो जायेगा। इसलिए श्रावकों से बोधिसत्त्वों का भेद प्रतिपादित नहीं हो सकेगा। बोधिसत्त्वों को सभी अवस्था में षट्पारमिताओं की परिपूर्ति करनी चाहिए। इसे दिखाने के लिए भगवान् ने एक-एक पारमिता में भी सभी पारमिताओं का संग्रह दिखलाया है न कि एक ही पारमिता का सेवन। इस प्रकार **सर्वधर्मगौपुल्य** में भी कहा है कि—“हे मैत्रेय ! षट्पारमिताओं का समुदागम बोधिसत्त्वों की सम्बोधि के लिए कहा गया है, उसे वे अज्ञानी लोग इस प्रकार कहेंगे कि बोधिसत्त्व को प्रज्ञापारमिता में ही शिक्षित करना चाहिए, शेष पारमिताओं से क्या ? वे अन्य पारमिताओं को दूषित करना चाहते हैं। हे अजित ! तो क्या आप समझ रहे हैं कि क्या वह जो काशी का राजा दुर्बुद्धि था, जिसने कबूतर के लिए अपना मांस बाजपक्षी को दे दिया। मैत्रेय ने कहा, भगवन् ! यह नहीं है। भगवान् ने कहा—मैत्रेय ! बोधिसत्त्व-चर्या का आचरण करते समय मैंने षट्पारमिताओं से युक्त जिन



कुशलमूलों का अर्जन किया, क्या उन कुशलमूलों ने हानि पहुँचायी? मैत्रेय ने कहा—भगवान् ! यह तो नहीं। भगवान् ने कहा है—हे अजित ! आपने भी साठ कल्पों तक दानपारमिता का सम्यग् अनुष्ठान किया है, उसी प्रकार साठ कल्पों तक प्रज्ञापारमिता तक का भी अनुष्ठान किया है। उस पर अज्ञानी पुरुष इस प्रकार कहेंगे कि एक ही नय से बोधि हो सकती है, जैसे कि शून्यतानय से ही। वे लोग चर्या से अपरिशुद्ध हो जायेंगे” इत्यादि। केवल शून्यता का सेवन करने से श्रावक की भ्रांति निर्वाण में पतित होंगे। इसलिए उपायसहित प्रज्ञा का सेवन करना चाहिए।

इसलिए आचार्य नागार्जुनपाद ने सूत्रसमुच्चय में कहा है कि—उपायकौशल से रहित बोधिसत्त्व को गम्भीरधर्मता से अभियोग नहीं करना चाहिए।” यहाँ भी आर्य-विमलकीर्तिनिर्देश आदि को स्रोतों के रूप में ( उन्होंने ) प्रतिपादित किया है, न कि वे आचार्य नागार्जुनपाद के वचन हैं। युक्ति तथा आगमन से युक्त को त्यागकर, भगवान् के वचनों को छोड़कर विद्वान् प्रेक्षावानों को अन्य मूर्खजनों के वचनों का ग्रहण करना उचित नहीं है। आर्यरत्नकूट में भी कहा गया है—“दान आदि समस्त कुशलों से युक्त सर्वाकारवरोपेतशून्यता की भावना करनी चाहिए, न कि केवल शून्यता की। आर्यरत्नकूट में भी कहा गया है—“काश्यप ! जिस प्रकार मन्त्री सहिता राजा सभी कार्य करता है, उसी प्रकार उपायकौशल से युक्त बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा सभी बुद्ध के कार्य करती है।”

इसलिए केवल शून्यता का सेवन करने वाले का क्या निर्वाण में प्रवेश नहीं होने लगेगा? ऐसा भगवान् ने आर्यतथागतगुह्यसूत्र में भी कहा है कि—एकान्त निरालम्ब-चित्त का सेवन नहीं करना चाहिए। अपितु उपाय-कौशल का भी सेवन करना चाहिए।” यह दिखाने के लिए कहा गया है कि—“कुलपुत्र ! जिस प्रकार अग्नि उपादान से ही जलती है और उपादान न होने से शान्त हो जाती है। उसी प्रकार आलम्बन से चित्त ज्वलित होता है, आलम्बन न होने से चित्त शान्त हो जाता है। इसमें उपाय-कौशल वाला बोधिसत्त्व प्रज्ञापारमिता-परिशुद्ध होने से आलम्बन का उपशम भी जानेगा और कुशलमूल आलम्बन को भी शान्त नहीं करेगा। क्लेश-आलम्बन भी नहीं उठता, किन्तु पारमिता-आलम्बन भी उत्थापित करता है। शून्यता का आलम्बन-प्रत्यवेक्षण करता है, और सभी सत्त्वा की महाकरुणा के आलम्बन को भी देखेगा। कुलपुत्र ! इस प्रकार उपायकुशल प्रज्ञापारमिता से विशुद्ध बोधिसत्त्व आलम्बन में वशिता को प्राप्त होता है।” ऐसा विस्तार से कहकर फिर कहते हैं—“इस प्रकार बोधिसत्त्व का ऐसा कुछ भी



आलम्बन नहीं है, जो सर्वज्ञ के ज्ञान के अभिनिर्हार के लिए स्थित न हो। जिस बोधिसत्त्व के सभी आलम्बन परमबोधि में परिणत हो जाते हैं, वही बोधिसत्त्व उपायकुशल हैं और सभी धर्मों को बोधि में अनुगत देखते हैं। कुलपुत्र! इस प्रकार भी ऐसा त्रिसहस्र-महासहस्र लोकधातुओं में कुछ भी नहीं है जो सत्त्वों के उपभोग के लिये न हो। कुलपुत्र! इसी प्रकार ऐसा कोई भी आलम्बन नहीं है, जिसे उपायकुशल बोधिसत्त्व बोधि में उपकारक नहीं देखता”। ऐसा विस्तार से कहा गया है। इस प्रकार अनन्त-सूत्रों में बोधिसत्त्वों की प्रज्ञा तथा उपाय की प्रतिपत्ति का निर्देश किया गया है। वहाँ वह स्वयं दान आदि पुण्य-सम्भार में वीर्य आरम्भ न कर सके, तो भी अन्यो को इस प्रकार देना युक्त नहीं है, इस प्रकार कहा जाये तो स्व और पर दोनों का द्रोह हो जायेगा।

इस प्रकार बोधिसत्त्व अवश्य ही भूतप्रत्यवेक्षण करके दानादि समस्त पुण्य-सम्भारों को अर्जित करे, ऐसा युक्ति तथा आगमों से प्रतिपादित किया गया है। इसलिए प्रेक्षावानों ने अल्पश्रुत, अभिमानियों के वचनों को विष की भाँति त्याग करके आचार्य नागार्जुन आदि विद्वज्जनों के अमृतवचनों के अनुसार चलकर समस्त सत्त्वों पर महाकरुणा उत्पन्न करके मायाकार की भाँति अविपर्यस्त होकर अनुत्तरसम्यक् सम्बोधि में परिणामित की गई दानादि सभी कुशल-चर्याओं में तथा अशेष जगत् का उद्धार करने में अभियोग करना चाहिये। जैसा कि **आर्यधर्मसंगीति** में कहा गया है—

“जैसे कोई मायाकार निर्मित को मुक्त करने के लिए प्रयास करता है, उसको पहले से वह ज्ञात होता है, अतः उस निर्मित पर आसक्त नहीं होता। तीनों भावों को निर्माण की भाँति समझकर सम्बोधि में पारंगत वह जगत् के लिए सन्नद्ध होता है, क्योंकि उसे जगत् पहले से ज्ञात होता है।”

इस प्रकार जो उपाय तथा प्रज्ञा में सदा सत्कार करके अभ्यास करता है, उसकी चित्तसन्तति का क्रमशः परिपाक होने पर उत्तरोत्तर अतिविशुद्ध क्षण का उदय होता है। भूतार्थ में भावना के प्रकर्षपर्यन्त हो जाने से समस्त कल्पनाजाल से रहित, अतिस्फुट धर्मधातु का अधिगम होता है। निर्मल, निश्चल, निर्वायु प्रदीप के समान लोकोत्तर ज्ञान उत्पन्न होता है। तब वस्तुपर्यन्तता-आलम्बन की प्राप्ति होती है और दर्शन मार्ग में भी प्रविष्ट होता है। प्रथम भूमि भी प्राप्त होती है। वह इसके आगे की भूमियों का परिशोधन करते हुए क्रमशः (संतप्त) कनक की भाँति समस्त अर्जित आवरणों के दूर हो जाने पर असक्त तथा अप्रतिहत ज्ञान प्राप्त करके समस्त



गुणों की आधारभूत बुद्धभूमि को प्राप्त करता है और कार्य-परिनिष्पत्तिरूप आलम्बन की भी प्राप्ति हो जाती है। इसलिए बुद्धत्व की इच्छावालों को मध्यम मार्ग पर अभियोग करना चाहिये।

इस प्रकार मध्यम मार्ग के निर्देश से मैंने जो पुण्य प्राप्त किया है, उससे अशेष जनों को मध्यम मार्ग की प्राप्ति हो जाये ॥ १ ॥

सत्पुरुष ईर्ष्या आदि मलों को दूर करके, जल से सागर की भाँति गुणों से अतृप्त रहते हैं और विवेचन करके सुभाषितों को ग्रहण करते हैं, जैसे कि हँस प्रसन्न होकर जल से दूध ले लेते हैं ॥ २ ॥

इसलिए विद्वानों को पक्षपात से क्षुब्ध मन को दूर करके, बालों से भी सभी सुभाषितों का ही ग्रहण अवश्य कर लेना चाहिये ॥ ३ ॥

आचार्य कमलशील द्वारा अन्त में विरचित् भावनाक्रम समाप्त हुआ।

तृतीय भावनाक्रम का हिन्दी अनुवाद समाप्त हुआ।

॥ भावनाक्रम समाप्त ॥

भवतु सर्वमङ्गलम्









परिशिष्ट-भाग

( १-६ )



मातृ-पुत्री-गीत

( ३-९ )



# प्रथम परिशिष्ट

(ཁ་སྒྲོན་དང་བོ།)

༥ ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་དཀའ་བའི་གནས་ལ་རྒྱལ་བའི་དགོངས་པ་ཕྱན་ཅི་མ་ལོག་  
བར་བཤད་པ་བཞུགས་ས།

༦། ཞི་ལྷག་གཉིས་རེ་རེས་མི་ཆོག་གིས་གཉིས་ཀ་བསྐྱེན་དགོས་པའི་  
སྐབས་སུ། ཆོས་ཡང་དག་པར་སྤྱད་པའི་མདོ་ལས།<sup>1</sup> “སེམས་མཉམ་  
བར་བཞག་ན་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་ཤེས་པར་འགྱུར་རོ”། ཞེས་  
གསུངས་པའི་དོན་ནི། སེམས་ཅེ་གཅིག་པ་ལ་འཛོག་པ་ཙམ་ཞིག་གོམས་ན་  
ཡང་དག་པའི་དོན་དོགས་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་པའི་དོན་མ་ཡིན་གྱི། མཉམ་  
བར་བཞག་པའི་སེམས་ཀྱིས་ཞེས་སྤྱར་རྒྱ་ཡིན་ལ། དེའི་དོན་ཡང་མཉམ་བར་  
བཞག་པའི་ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ་སེམས་བདྟན་བར་བྱས་པའི་འོག་ཏུ་……  
ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ལ་བདགས་ན་ཡང་དག་པའི་དོན་དོགས་པའི་ཡེ་ཤེས་སྒྲེ……  
བ་གསལ་བར་བཤད་པ་ཡིན་དེ། སྒྲོམ་རེས་དང་བ་ལས།<sup>2</sup> “འདི་ལྟར་གང་གི་  
ཆོ་ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ་སེམས་བདྟན་བར་བྱས་པ་དེའི་ཆོ་ཤེས་རབ་ཀྱིས་  
རབ་ཏུ་བདགས་ན་ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒྲུང་བ་འབྱུང་སྟེ། དེའི་ཆོ་སྒྲུང་  
བ་བྱུང་བས་ཐུན་པ་བསལ་བ་བཞིན་ཏུ་སྒྲིབ་པ་མི་འབྱུང་ངོ་། ཞེ་གཉིས་ཀ་  
ཡང་མིག་དང་སྒྲུང་བ་བཞིན་ཏུ། ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་འབྱུང་བ་ལ་ཕན་ཚུན་

1. ལྟེ་-བཀའ་ (མདོ་ 'ཞ' 12)  
2. ལྟེ་-བཀའ་ (དབུ་མ་ 'ཀ' 36)



མཐུན་པར་གནས་པ་ཡིན་གྱི། སྤང་བ་དང་སྦྱན་པ་བཞིན་དུ་མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ།  
 ཉིང་ངེ་འཛིན་ནི་སྦྱན་པ་དེ་ངོ་བོ་ཉེ་མ་ཡིན་དེ། ཅི་ཞེ་ན། སེམས་ཅེ་གཅིག་  
 བའི་མཚན་ཉིད་དེ་ནི་མཉམ་པར་བཞག་ན་ཡང་དག་པ་ཇི་ལྟ་བུ་བཞིན་དུ་རབ་དུ་་་་  
 ཤེས་སོ། །ཞེས་བཀའ་སྤྱད་པ་དེ་ཕྱིར་དེ། ཤེས་རབ་དང་ཤིན་དུ་མཐུན་པ་  
 ཡིན་གྱི། མི་མཐུན་པ་མ་ཡིན་ནོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ།

དེ་བས་ན་ཞི་གནས་བསྐྱེད་པ་སེམས་བདུན་པོ་རྗེས་པ་ནི་སྤང་བ་དང་འདྲ།  
 ཤེས་རབ་ཀྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དབྱེད་པ་ནི་མིག་དང་འདྲ་བར་ཤེས་པར་བྱ་ཡི།  
 ཞི་གནས་ནི་སེམས་མི་གཡོ་བར་ཅེ་གཅིག་དུ་གནས་པ་ཡིན་ལ། ལྷག་མཐོང་ནི་  
 ཡུལ་ལ་དབྱེད་པ་ཡིན་པས། གཅིག་གིས་གཅིག་ལ་གཞོན་པ་ཡིན་ཅོ་སྟུང་དུ་  
 མེ་གཟུང་ངོ་། །ཡང་ཞི་གནས་དང་བྲལ་བའི་སེམས་རྒྱང་ནང་གི་མར་མེ་བཞིན་  
 དུ་གཡོ་བ་དང་། ཞི་གནས་ཀྱི་སྟོབས་ཀྱིས་ནི་རྒྱང་མེད་པ་ན་གནས་པ་དེ་མར་  
 མེ་བཞིན་དུ་རྟམ་དོག་གི་རྒྱང་གིས་མི་གཡོ་བར་བཤད་པ་མི་འཐད་དེ། ལྷག་  
 མཐོང་ལ་དབྱེད་སྟོང་བྱེད་པའི་ལྷགས་ལ་ཞི་གནས་གྲུབ་ཀྱང་ལྷག་མཐོང་སྟོང་པའི་  
 ཆོ་རྟམ་དོག་གི་རྒྱང་གིས་གཡོ་བའི་ཕྱིར་རོ་སྟུང་ན། ཞི་གནས་གྲུབ་པ་ལ་བདེན་  
 ནས་ལྷག་མཐོང་སྟོང་པ་ན་སེམས་ཀྱི་གཡོ་བ་ཐམས་ཅད་ཐོག་པར་ཁས་ལེན་ན་་་་  
 སྟོན་དེ་ཡོད་ཀྱང་། སེམས་ཀྱི་གཡོ་བ་ཅམ་ཐོག་པ་མིན་གྱི། གཡོ་བའི་སྟོན་ཐོག་  
 བ་ལ་བསམས་ནས་དེ་ལྟར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་ངོ་། །གཡོ་བའི་སྟོན་གང་སྟུང་ན།  
 རང་འདོད་པའི་ཡུལ་ལ་སེམས་འཛོག་པ་ན་རང་དབང་མེད་པར་མི་འདོད་པའི་་་་  
 ཡུལ་ལ་སེམས་རྒྱག་པའོ།

གོ་རིམ་ངས་ཚུལ་གྱི་སྐབས་སུ། ཞི་གནས་མི་སྦྱབ་པར་དང་པོ་ནས་ལྟ་



ཐོག་དུ་སེམས་གནས་པ་ཙམ་ཞིག་གོས་ས་པར་བྱེད་ན།      དེ་ལས་དྲིང་ངེ་འཛིན་  
 དེ་འཛིག་རྟེན་པའི་བསྐྱོམས་བྱུང་དུ་འགོ་སླིད་ཀྱང་།      དེའང་ཞི་གནས་བསྐྱོམས་བྱུང་དུ་  
 སོང་བ་ཡིན་གྱི། ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་བྱུང་དུ་སོང་བ་མིན་པས།      ད་དུང་ལྷག་མཐོང་  
 བསྐྱོམས་བྱུང་བསྐྱེད་དགོས་སོ།      །དེའི་ཕྱིར་ཞི་གནས་དེ་སྟོན་དུ་བཤད་ནས་དབྱེད་  
 སྐྱོམས་བྱི་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་བྱུང་བསྐྱེད་དགོས་པས།      སྟོན་དུ་ཞི་གནས་བསྐྱབས་  
 བས།      དེའི་འོག་དུ་ལྷག་མཐོང་སྐྱབ་པ་ལས་མི་འདའོ།      དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་  
 དམིགས་པའི་འཛིག་རྟེན་པའི་བསྐྱོམས་བྱུང་བསྐྱེད་རྒྱས་ན།      དེ་ཙམ་ཞིག་བསྐྱོམས་  
 བས་འཛིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བསྐྱོམས་བྱུང་བསྐྱེད་རྒྱས་སོ་ཞེས་ཀྱང་སྒྲུ་མི་རྒྱས་  
 རྟེ།      འཛིག་རྟེན་པའི་བསྐྱོམས་བྱུང་གི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ལ་དེ་བཞིན་དུ་ཉི་ཅང་  
 ཐལ་བར་འགྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ།

གཞན་ཡང་མདོ་དགོངས་འགྲེལ་ལས།      ཞི་གནས་སྟོན་དུ་སྐྱབ་པ་ལ་བརྟེན་ནས་  
 དབྱེད་སྐྱོམས་བྱིས་ཤིན་སྐྱངས་འདྲིན་རྒྱས་རྒྱས་སུ་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་བར་གསུངས་  
 པ་སོགས་ཀྱི་གོ་རིམ་ངས་པ་ཅན་དུ་བཤད་པའི་གཞུང་དུ་མ་དང་འགལ་བའི་ཕྱིར།  
 དེ་ལྟར་འདོད་དུ་མི་བྱུང་ངོ།      །དེ་ལྟར་ན་ཐོག་པ་གཞན་གྱི་ལྷགས་ལྟར་ཡུལ་ཅན་  
 རྒྱད་པར་ཅན་གྱིས་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་སྐྱོམས་པའི་སྐབས་ཀྱི་དམིགས་བསམ་པ་མ་གཏགས་  
 པ་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོམས་བྱུང་སྐྱར་མ་བསྐྱེད་པ་གསར་དུ་བསྐྱེད་པའི་གནས་སྐབས་  
 ཐམས་ཅད་དུ་ཞི་གནས་སྟོན་དུ་བསྐྱབས་པ་ལ་བརྟེན་ནས།      དབྱེད་སྐྱོམས་བྱིས་ལྷག་  
 མཐོང་བསྐྱོམས་བར་ངས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།

གལ་དེ་ཞི་གནས་འཛིག་སྐྱོམས་བྱིས་སྐྱབ་པ་དང་།      ལྷག་མཐོང་དབྱེད་སྐྱོམས་  
 བྱིས་སྐྱབ་པ་ཡིན་དུ་ལྷག་ཀྱང་།      སྟོན་དུ་ཞི་གནས་བསྐྱབས་པ་ལ་བརྟེན་ནས།



ཕྱིས་ལྷག་མཐོང་བསྐྱོས་པའི་གོ་རིམ་ངེས་པར་དགོས་པའི་གྲུ་མཚན་གང་ཡིན་.....  
 ལྷམ་ན། འདྲི་ནི་དོགས་དཀའ་བས་བཤད་པར་བྱ་སྟེ། དཔེར་ན་ལག་པས་སྟ་རེ་  
 བརྒྱངས་ནས་ཤང་སྟོང་གཅོད་པ་ན། ལག་པ་ཤན་དུ་འདར་ན། སྟ་རེ་ཤིང་སྟོང་ལ་  
 རི་ཅམ་བརྒྱབ་ཀྱང་། ཤང་སྟོང་གཅོད་མི་རྒྱས་པ་བཞེན་དུ། ཞི་གནས་སྟོན་དུ་མ་  
 བྱུང་ན། དཔྱད་པའི་སེམས་ལ་གནས་པའི་ཅི་འབྱར་གྱི་མེད་པས་རི་ཅམ་དཔྱད་  
 ཀྱང་མི་མཐུན་ཕྱོགས་འཇམས་པའི་སྟོབས་མི་འབྱུང་ངོ་། །སྟོབས་ལྷན་གྱི་ལག་  
 པ་ཤིན་དུ་བདྲན་པས་ནི་བའི་སྟ་རེ་བརྒྱངས་ནས་བཅད་ན་ཤང་སྟོང་སྟར་དུ་གཅོད་  
 རྒྱས་པ་བཞེན་དུ། ཞི་གནས་ཀྱང་ངེ་འཛིན་ཤིན་དུ་བདྲན་པའི་ལག་པས་བརྒྱང་  
 བའི་སེམས་ཀྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་ནི་ན་པོ་ཐོགས་དེ དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དཔྱད་  
 པ་གོས་ན། མི་མཐུན་ཕྱོགས་འཇམས་པའི་སྟོབས་དང་ལྷན་པར་འབྱར་ངོ་།

དེ་ལྟར་ཡང་སྒྲོམ་རམ་དང་པོ་ལས། “དེ་ལྟ་བུས་ན་དྲིང་ངེ་འཛིན་གྱི་  
 ལག་གིས་སེམས་བརྒྱངས་དེ་ཤིན་དུ་ཆ་སྒྲ་བའི་ཤེས་རབ་ཀྱི་མཚན་གྱིས། གཞུང་  
 ལ་སོགས་པ་ལ་ལོག་པར་ནམ་པར་དོག་པའི་ས་བོན་གྱི་རྒྱག་རྒྱ་སེམས་དེ་ལ་ཡོད་  
 པ་བསལ་བར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་བྱས་ན་ཅ་བ་ནས་ཕྱང་བའི་ཤིང་དག་ས་ལ་མེ་སྐྱེ་  
 པ་བཞིན་དུ་ཅ་བ་མེད་པས་ན་ལོག་པར་ནམ་པར་དོག་པའི་སེམས་ཀྱང་སྐྱེ་བར་མི་  
 འབྱར་ངོ་།” ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ཡང་ལན་རྒྱང་ཤིས་ཤིག་བརྒྱབ་པས་ཤིང་  
 མི་འཆད་པ་བཞིན་དུ། ལན་དུ་མར་ཤེས་རབ་ཀྱིས་མ་དཔྱད་ན་ལྷག་མཐོང་ནས་  
 པ་ཅན་མི་འབྱུང་བས། ཡང་དང་ཡང་དུ་དཔྱད་པར་བྱའོ། །ཡུལ་ལ་ནམ་པ་  
 དུ་མར་དཔྱད་པའི་ཚོ། མི་དཔྱད་པར་ཅེ་གཅིག་དུ་འཛོག་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་



མེད་མེད་ཀྱང་། ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཅི་བདན་བོ་ཡོད་པས་ནས་བར་མི་རྟོག་པའི་ངང་  
ནས་དབྱེད་པ་སྒྲུབ་ཕྱིད་པ་ཞིག་འོངས་པ་ཤེས་པར་བྱའོ།

གནས་ཆ་ཤིན་དུ་བདན་པའི་སེམས་རྒྱུད་ལ། གནས་པའི་ཅི་ན་རེ་འཇུག་  
པས། དེའི་ངང་ནས་ཞེ་སྤང་དང་ཆགས་པ་སོགས་སྦྱེ་བ་ན། སྤང་ཞི་གནས་  
མ་གྲུབ་པའི་དུས་བཞིན་དུ། འབྲས་པ་བྱ་བ་དང་བར་མ་ཆད་པ་སོགས་མི་སྦྱེ་བར།  
འབྲས་ཞེན་པ་དང་རྒྱན་ཅུང་ཐུང་པ་སོགས་སུ་སྦྱེ་བ་མཐོང་ནས། འདི་ནི་ནས་རྟོག་  
འཕྲོ་བ་མིན་གྱི་ཡེ་ཤེས་འཕྲོ་བ་ཡིན་ཟེར་བ་དང་། ཉོན་མོངས་ཡིན་ཡང་ལས་  
གསོག་མི་ནུས་ཟེར་བ་དང་། མཆོམས་དེ་ནས་ཉོན་མོངས་སྦྱེ་བའི་རྟོན་ལ་ཞུགས་  
ཀྱང་། འཆིང་མི་ནུས་པས་ཉོན་མོངས་ལས་དུ་བྱེད་པའི་དུས་ཡིན་ཟེར་བ་སོགས་  
ཉིང་ངེ་འཛིན་གྱི་གོ་བ་ཤིན་དུ་ཆུང་བ་ནས་ལ་འབྱུང་མེད་ཀྱང་། འདི་ནི་ཕྱི་  
ནང་དང་ཐོག་པ་ཆེ་ཆུང་གཉིས་ཀའི་ཐུན་མོང་བ་ཡིན་པར་ཤེས་པར་བྱའོ།

ཞི་གནས་ཆ་སྒྲོམས་པའི་སྐབས་སུ་ཞི་གནས་ཤས་ཆེན་ཡང་གཉིད་ཀྱིས་  
ལོག་པའི་མི་བཞིན་དུ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཤིན་དུ་གསལ་བར་མཐོང་བར་མི་འབྱུང་དེ།  
དེ་ལྟ་བུས་ན་དེའི་ཆོ་ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ། །ཞེས་གསུངས་པ་ལ་ཞི་གནས་  
ཏེ་ཅང་བསྐྱེད་དུགས་པས་སྦྱོད་སྦྱིང་མ་འདོད་པ་དང་། དབྱེད་ཀྱང་འགྲོ་མི་ཉན་པར་  
སེམས་གནས་ཆ་ལ་བྱིལ་བྱལ་འགྲོ་ན། དབྱེད་ནས་སྦྱོང་བ་ནས་རྟོག་སྒྲོམ་པ་ཡིན་པས།  
དེ་ལས་མི་རྟོག་པ་ཐུན་རེ་སྒྲོམ་པ་ཁྱད་པར་དུ་འཕཇ་སོ་སྒྲུབ་ནས་དབྱེད་སྒྲོམ་དོར་  
བར་མི་བྱ་ཏེ། སྒྲོབ་དཔོན་དབྱིག་གཉིན་གྱིས། “གཞུགས་ན་དབྱེད་པའི་ཐོས་  
པ་ལས་བྱུང་བ་ནས་མ་ནི། ཐོས་པ་ལས་བྱུང་བ་དང་སྒྲོམ་པ་ལས་བྱུང་བ་ནས་



ཀྱེ་ཡིན་དེ། བསམས་བ་ལས་བྱུང་བ་ནི་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ།” །ཞེས་གསུངས་ལ།  
 དེའི་འགྲེམ་བཤད་ལས།<sup>1</sup> “བསམས་བ་ལས་བྱུང་བ་མེད་པའི་གདན་ཚིགས་ནི།  
 གང་གི་ཚེ་དག་སེམས་པར་ཙུལ་བ་དེ་ཁོ་ནའི་ཚོ། དེ་དག་གི་དྲང་ངེ་འཛིན་ཉིད་  
 ཏུ་ཉེ་བར་གནས་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་པོ།” །ཞེས་གཞུགས་ཁམས་སུ་སྦྱེས་  
 པའི་ཐ་མལ་བ་ནམས་ཀྱང་། བསམས་བྱུང་གི་སེམས་པ་ལ་ཙུལ་བ་བྱས་བ་ན་  
 བསམས་བྱུང་ལ་པར་ལ་མཆེད་མི་ཉན་པར་དྲང་ངེ་འཛིན་ཉིད་ཏུ་འགྲོ་བར་གསུངས་  
 པའི་ཕྱིར་རོ།

ཞི་ལྷག་གཉིས་པོ་རེ་རེ་ལའང་ཇི་ལྟ་བ་དང་ཇི་སྟེད་པ་ལ་དམིགས་བ་གཉིས་  
 གཉིས་ཡོད་པར་ནི། ཤེར་ཕྱིན་མན་ངག་ལས་ཀྱང་།<sup>2</sup> “དེ་ལ་ཇི་སྟེད་པ་ཡོད་པར་  
 བྱུར་བ་དང་། ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བྱུར་བ་ལ། ནམ་པར་མི་དོག་པའི་གཞུགས་  
 བརྟན་དུ་བྱུར་བ་ནི་ཞི་གནས་ཀྱི་དམིགས་པའོ། ཇི་སྟེད་པ་ཡོད་པར་བྱུར་བ་དང་  
 ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་བྱུར་བ་ལ་དོག་པ་དང་བཅས་པའི་གཞུགས་བརྟན་དུ་བྱུར་བ་ནི་  
 ལྷག་མཐོང་གི་དམིགས་པའོ།” །ཞེས་གསུངས་སོ། །སོ་སྦྱེདེ་སར་ཡང་ཇི་  
 སྟེད་པ་ལ་དམིགས་པའི་ལྷག་མཐོང་བསྟེད་པ་ལ་ནི། ཞི་རགས་ཀྱི་ནམ་པ་ཅན་  
 ཏུ་སྒྲིམ་པར་མ་ངས་དེ། ཁམས་བཙེ་བཀྱད་ཀྱི་མཚན་ཉིད་སོ་སོར་ཡང་དང་ཡང་  
 ཏུ་དབྱེད་བ་ལས་ལྷག་མཐོང་སྦྱེ་བར་གསུངས་པའི་ཕྱིར་དེ། ཤེར་ཕྱིན་མན་ངག་  
 ལས།<sup>3</sup> “དེ་ནས་ཞི་གནས་དེ་ཉིད་ལ་བརྟེན་དེ། རྩ་ཚིགས་ཀྱི་གཞུགས་བརྟན་

1. ཟློ་བུན་(མངོན་པ་ 'གྱ' 703)

3. ཟློ་བུན་(ཞེས་པ་ཅམ་ 'ད' 722)

1. ཟློ་བུན་(ཞེས་པ་ཅམ་ 'ད' 725)



འདི་དག་ཉིད་ནི་འདི་ལྟ་སྟེ། གཞུགས་ཀྱི་ཁམས་ནས་ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་བར་འདི་  
 དག་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་སྟེ། དེ་ལྟར་ལན་མང་དུ་ནམ་པར་སྤེལ་ནས་ཡོངས་  
 སྤྱོད་གསལ་བར་བྱས། ཡོངས་སྤྱོད་བྱུང་བར་བྱས་པས་ལྷག་མཐོང་ཆོགས་པར་  
 བྱའོ།” ཞེས་གསུངས་དེ། འདི་ནི་དགོངས་འབྲེལ་གྱི་མདོའི་དོན་དུ་འདྲ་ལོ།  
 ལྷག་མཐོང་འདིས་ནི་ཉམས་མེད་མཛོད་གྱུར་གྱི་གཉེན་པོ་མི་བྱེད་ཀྱང་། དྲིང་  
 འཛིན་གྱི་ཅལ་སྤྱོད་བའི་ཕྱིར་དུ་བྱེད་དོ། །འདི་ལ་བདེན་ནས་ཇི་སྟེན་བ་ལ་དམིཌ་  
 བའི་ལྷག་མཐོང་གཞན་མང་པོ་ཡང་དོགས་པར་ནས་སོ། །ཞེས་ནི་ལྷག་གཉིས་  
 ཀྱི་དཀའ་བའི་གནས་ལ་བྱལ་བའི་དགོངས་པ་ཕྱིན་ཅི་མ་ཡོག་པར་བཤད་པ་འདི་  
 ནི། ཞི་ལྷག་གཉིས་ཀྱི་ནམ་འབྱུང་བ་ཆེན་པོ་སྤྱོད་བཟང་གྲགས་པའི་དབལ་གྱིས་  
 སྤྱར་བའོ། །འདི་ལ་བདེན་ནས་ཡང་དག་པའི་ལམ་ལ་ཕྱིན་ཅི་ཡོག་དུ་དོག་པའི་  
 དེ་མ་ནི་བར་གྱུར་ཅིག །མཛུ་ལོ།

- 
1. གཞུང་འདི་བསྐྱམ་རིམ་གྱི་བརྗོད་པའི་གཙོ་བོ་ནི་ལྷག་གི་ནམ་ཐུག་དང་འབྲེལ་ཆེ་གོང་།  
 ནམ་ཐུག་དེ་ལ་བརྟན་པའི་ལོག་པར་རྟོག་པ་ཞི་བ་དང་། དཀའ་བའི་གནས་ནམས་བྱལ་  
 བའི་དགོངས་པ་བཞེན་གསལ་བར་མཛད་པ་སོགས་ཀྱི་དགོས་པ་ཆེ་བས་འདྲོད་བཞེད་དོ།







## द्वितीय परिशिष्ट

शमथ-विपश्यनादुःस्थल-जिनाभिप्रायाविवरणीयम्

( मूल तिब्बती ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद )

शमथ एवं विपश्यना दोनों में से केवल एक ही से पर्याप्त नहीं, अपितु दोनों का सेवन आवश्यक है। इस सन्दर्भ में आर्यधर्मसंगीतिसूत्र में कहा गया है—“चित्त समाहित होने पर यथावत् तत्त्व का ज्ञान हो जाता है।” इसका तात्पर्य यह नहीं है कि चित्त को एकाग्रता में रखने मात्र का अभ्यास होने से यथावत् तत्त्व का अवबोध हो जायेगा, अपितु ‘समाहित चित्त द्वारा’ यह ( वाक्य ) जोड़ना चाहिये। जिसका अभिप्राय यह है कि समाहित शमथ द्वारा आलम्बन पर चित्त स्थिर करने के पश्चात् प्रज्ञा के द्वारा तत्त्व-परीक्षण करने पर भूतार्थ-अवबोधक ज्ञान का उत्पाद स्पष्ट रूप से कहा गया है। जैसे प्रथम भावनाक्रम में कहा गया है कि “इस प्रकार जब शमथ द्वारा आलम्बन में चित्त स्थिर कर दिया जाता है, तब प्रज्ञा के द्वारा सुपरीक्षण करने पर सम्यग्ज्ञान का अवभास होता है। उस समय आलोक आने पर अन्धकार की निवृत्ति की भाँति आवरण अपगत हो जाता है। ये दोनों भी चक्षु एवं प्रकाश की भाँति सम्यग्ज्ञान के उत्पाद में परस्पर अनुकूल ही स्थित होते हैं, न कि आलोक तथा अन्धकार की भाँति विरोध है। समाधि अन्धकार-स्वभाव का नहीं है। तब क्या है? वह चित्त की एकाग्रता के लक्षण वाला है। समाधि में स्थित होने पर यथावत् तत्त्व का सम्यग्ज्ञान होना कहा गया है, क्योंकि ( यह समाधि ) प्रज्ञा के अत्यन्त अनुरूप है, न कि विरोधी।”

अत एव शमथ की भावना से चित्त-स्थिरता की प्राप्ति आलोक-सदृश है। प्रज्ञा-द्वारा तत्त्व पर परीक्षण करना चक्षु के समान जानना चाहिये। शमथ तो अचल-चित्त की एकाग्रता में स्थित है, और विपश्यना विषयों पर परीक्षण करती है। अतः वे एक दूसरे के बाधक हैं, ऐसा ग्रहण नहीं करना चाहिये। अपि च शमथ-रहित चित्त वायु मध्य में ( स्थित ) दीपक के समान चञ्चल होता है और शमथ के बल से वायु-रहित ( स्थल ) में स्थित प्रदीप की भाँति विकल्प-वायु द्वारा अविचलित कहना युक्त नहीं है, क्योंकि विपश्यना की विचारात्मक-भावना करने वालों के मत में शमथ की सिद्धि होने पर भी विपश्यना की भावना करते समय विकल्प-वायु से ( चित्त ) विचलित हो जाता है, ऐसा माने, तो शमथ सिद्धि के आधार पर विपश्यना की भावना करते समय चित्त की सारी चालन को निवृत्त मानेंगे, तो उक्त दोष होगा, पर वह चित्त की चालन-मात्र की निवृत्ति नहीं है, अपितु चालन के दोष की निवृत्ति के अभिप्राय से



ऐसा कहा गया है। चालन का दोष क्या है ? स्ववाञ्छित विषयों पर चित्त स्थापित करते समय विवश होकर अनिच्छित विषय की ओर चित्त का चला जाना।

क्रम-निर्धारण के सम्बन्ध में शमथ की साधना न कर प्रारम्भ से ही दृष्टि (तत्त्व) में चित्त की स्थितिमात्र का अभ्यास करने पर उससे वह समाधि लौकिक भावनामयी हो सकती है, पर वह शमथ ही भावनामयी हुई है, न कि विपश्यना-भावनामयी। अतः पुनः विपश्यना-भावनामयी को उत्पन्न करना पड़ेगा। इसलिए शमथपूर्वक विचारात्मक-भावना द्वारा विपश्यना-भावनामयी उत्पन्न करनी होती है। अतः पहले शमथसिद्धि के पश्चात् विपश्यना की साधना करनी होती है। न कि इसके अतिरिक्त। तत्त्वावलम्बी लौकिक-भावनामयी का उत्पाद कर सकता है तो मात्र इतनी ही भावना से लोकोत्तर-भावनामयी का उत्पाद हो जायेगा, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि लौकिक-भावनामयी वाले सभी गुणों का उसी प्रकार से अति-प्रसङ्ग हो जायेगा।

अपि च सन्धिनिर्माण सूत्र में शमथ को पहले सिद्ध करके उसी के आधार पर विचारात्मक भावना द्वारा प्रश्रब्धि आनीत होने तक विपश्यना की भावना करनी चाहिये, इत्यादि कथन से (शमथ एवं विपश्यना का) नियतक्रम बताने वाले अनेक ग्रन्थों का विरोध हो जाने के कारण ऐसा मानना उचित नहीं है। अतएव इतर यान के मतानुसार विशिष्ट विषयी द्वारा तत्त्व-भावना की विशेष अवस्था को छोड़कर विपश्यना-भावनामयी की पूर्व अनुत्पन्न-उत्पाद सभी अवस्थाओं में शमथ की सिद्धिपूर्वक विचारात्मक भावना द्वारा विपश्यना की भावना करना सुनिश्चित होता है।

यदि 'शमथ' स्थिति-भावना द्वारा तथा 'विपश्यना' विचारात्मक भावना द्वारा सिद्ध होती है, तथापि पहले शमथ सिद्ध करके, बाद में विपश्यना की भावना का क्रम सिद्ध होने का क्या कारण है ? यह दुर्बोध है, अतः कहा जा रहा है। जैसे कि हाथ से कुल्हाड़ी पकड़कर वृक्ष काटते समय हाथ अधिक काँपता है, तब वृक्ष में कुल्हाड़ी का कितना भी प्रहार करें, तो भी वृक्ष नहीं कट पाता, उसी प्रकार शमथ पहले सिद्ध न हो तो विचार-चित्त में स्थिर-रस का उपलेप नहीं होता है। अतः कितना भी परीक्षण किया जाये तो भी विपक्ष-विनाश करने में सामर्थ्य नहीं हो पाता है। बलवान् के अति-स्थिर हाथ से गृहीत तीक्ष्ण कुल्हाड़ी द्वारा काटने पर वृक्ष शीघ्रता से कटने में समर्थ हो जाता है, उसी प्रकार अतिदृढता से युक्त शमथ की समाधि के हाथों से गृहीत चित्त द्वारा प्रज्ञारूपी तीक्ष्ण शस्त्र लेकर तत्त्व-परीक्षण का अभ्यास हो जाने पर विपक्ष-विनाश करने में समर्थ हो जायेगा।



जैसा कि प्रथम भावनाक्रम में कहा गया है—“इसलिए समाधि के हाथ द्वारा चित्त को ग्रहण कर अतिसूक्ष्म प्रज्ञारूपी शस्त्र द्वारा उस चित्त में विद्यमान रूपादि के प्रति होने वाले मिथ्याविकल्प के बीजरूपी रोग का निराकरण करना चाहिए। ऐसा करने पर जैसे मूलतः उखाड़े गये वृक्ष (पुनः) जमीन से उत्पन्न नहीं होते हैं, उसी प्रकार निर्मूल होने से मिथ्याविकल्प चित्त का भी उत्पाद नहीं होगा।” वह भी कुछ ही प्रहारों से वृक्ष को कटाई नहीं होती, उसी प्रकार अनेक बार प्रज्ञा के द्वारा परीक्षण न करे तो, सशक्त विषयना की सिद्धि नहीं होगी। अतः पुनः पुनः परीक्षण करना चाहिए। अनेक प्रकार से विषय-परीक्षण करते समय विना परीक्षण किये एकाग्रता में स्थित-समाधि नहीं होगी, तथापि समाधि का स्थिर रस विद्यमान होने से निर्विकल्परसेन परीक्षण करने का आभास होता है, यह समझना चाहिए।

स्थिति-पक्ष का अतिदृढ़ता वाले चित्त-सन्तान में स्थिति का रस निरन्तर प्रवृत्त होने से उसी प्रवाह में राग, द्वेष आदि उत्पन्न होने पर पहले शमथ असिद्धि की अवस्था के समान तीव्रवेग और नैरन्तर्य आदि न होकर किञ्चित् मन्दगति और अल्पसन्तान आदि उत्पन्न होना देखकर (कुछ लोगों का) कहना है कि—यह तो विकल्प का स्फुरण नहीं अपितु ज्ञान का स्फुरण है, क्लेश होने पर भी (उसके द्वारा) कर्मसंचय का समर्थ न होना और उस अवधि से क्लेश-उत्पाद के प्रत्ययों में अवतरित हो जाने पर भी बन्धन में असमर्थ हो जाता है। इसलिये यह क्लेश का मार्ग के रूप में उपयोग करने का समय है इत्यादि (विचार) समाधि के अल्प ज्ञान वाले लोगों में हो सकता है। पर यह स्थिति बौद्ध, बौद्धेतर तथा महायान-हीनयान दोनों में सामान्य है, ऐसा समझना चाहिए।

शमथ की समता-अवस्था में ‘शमथ की मात्रा अधिक होने से भी सोये हुये मनुष्य की तरह स्फुटतर तत्त्व-दर्शन नहीं होगा। अत एव उस अवस्था में प्रज्ञा की भावना करनी चाहिए।’ उस कथन के अनुसार शमथ के अतिसेवन से (आलम्बन पर) विवेचन करने की इच्छा नहीं होती, और विवेचन करने पर भी (विषय विवेचना की ओर) न जाकर चित्त स्थिरता की ओर स्वरसेन चलने लगे तो विवेचन के द्वारा अनुवर्तन करना विकल्प-भावना है। अतः इससे तो निर्विकल्प की भावना एक मुहूर्त करना अत्युत्तम है, ऐसा मानकर विवेचनात्मक-भावना नहीं छोड़नी चाहिए। क्योंकि आचार्य वसुबन्धु ने कहा है—“रूपापचर में श्रुतमयी तो श्रुतमयी तथा भावनामयी की है, क्योंकि (उसमें) चिन्तामयी नहीं है।” उसके भाष्य (स्फुटार्थ) में भी कहा गया है—“(उसमें) चिन्तामयी न होने का कारण यह है कि



जिस समय वे लोग ( किसी विषय का ) चिन्तन करना आरम्भ करते हैं, उस समय ही वे समाधि में ही उपस्थित होने लगते हैं ।” ऐसे रूपधातु में उत्पन्न साधारण लोग भी चिन्तामयी का चिन्तन करना आरम्भ करते हैं तो चिन्तामयी की ओर प्रसृत न होकर समाधि में ही प्रवृत्त हो जाते हैं ।

शमथ तथा विपश्यना दोनों में से एक-एक का भी यथावत् और यावत् ( दोनों विषयों का ) आलम्बन करने वाले दो-दो होते हैं, जैसा कि—**प्रज्ञापारमिता उपदेश** में भी कहा गया है कि “उसमें ( जो ) यावत् विद्यमान होने और यथावत् रूप में होने में निर्विकल्प-प्रतिबिम्बभूत तो शमथ का आलम्बन होता है । यावत् विद्यमान होने और यथावत् के रूप में होने में सविकल्प-प्रतिबिम्बभूत तो विपश्यना का आलम्बन है ।” पृथग्जन-भूमि में भी यावत् आलम्बन करने वाले विपश्यना के उत्पाद के लिये सूक्ष्म-स्थूल आकार की भावना का निश्चय नहीं है, क्योंकि प्रत्येक अष्टादश धातुओं के लक्षणों का पुनः पुनः परीक्षण करने पर विपश्यना का उत्पाद होना कहा गया है । **प्रज्ञापारमिता उपदेश** में कहा गया है—“तत्पश्चात् उसी शमथ के आधार पर उनका अनेक प्रकार का प्रतिबिम्ब इस प्रकार है—रूपधातु से मनोधातु यावत् इन्हें ‘सर्वधर्म’ कहा जाता है । इस प्रकार अनेक बार विभाजित करके परीक्षण एवं विवेचन से विपश्यना सम्पन्न करे ।” यह **सन्धिनिर्मोचनसूत्र** का भी अभिप्राय प्रतीत होता है । यह विपश्यना से प्रत्यक्ष-क्लेशों का प्रतिपक्ष नहीं, तथापि समाधि के पराक्रम के अभ्यास के लिये ( उसकी भावना ) की जाती है । इसके आधार पर अन्य अनेक यावत् आलम्बन करने वाली विपश्यनाओं को भी जाना जा सकता है । यह ‘शमथ तथा विपश्यना के दुःस्थलों का जिन ( बुद्ध ) के अभिप्राय अविपरीत कथन’<sup>१</sup> शमथ एवं विपश्यना के महायोगी चोङ्खापा लोसङ् डगपाई पल (श्रीपाद सुमतिकीर्ति) के द्वारा रचा गया । इससे सम्यग्मार्ग के विपरीत विकल्पमल शान्त हों ।

सर्वमङ्गलम्

—: ० :—

१. यह ग्रन्थ तीनों भावनाक्रमों के मुख्य अभिधेय ‘शमथ तथा विपश्यना’ से अत्यधिक सम्बन्धित है । जिस में उन विषयों पर आश्रित मिथ्या-विकल्पों के निवारण तथा कठिन स्थलों के स्पष्टीकरण समुचित प्रकाश डाला गया है । इस प्रयोजन से परिशिष्ट में इसे जोड़ा गया है ।



(ཁ་སྒྲོན་གཉིས་པ་)

### शमथ भावना विधि: चित्र के रूप में

དེ་དག་ཀྱང་སེམས་གནས་དགུང་ཕྱེ་བ་དང་། དེ་ནམས་སྟོབས་ཀྱི་གསེས་  
འགྲུབ་ལྟགས་དང་། ཡིད་བྱེད་པའི་རྒྱུད་ཚུལ་ནམས་ཤེས་ན་དྲིང་དེ་འཛིན་སྟོན་

1. རྩེ་-བརྩན་(སེམས་ཅིམ་,པོ་ ༩༩)དེའི་འབྲུལ་བ་སློབ་དཔོན་དཔྱུག་གཉིན་གྱིས་མངའ་བ་(སེམས་ཅིམ་,པོ་ 96)དེའི་འབྲུལ་བ་པད་སློབ་དཔོན་སློབ་རྩན་གྱིས་མངའ་བ་(སེམས་ཅིམ་,པོ་ 203)



མེད་བདེ་ཐུག་དུ་འགྲུབ་པར་གསུངས་པས། དཔུ་མ་སྤྱིང་བོ་ལས།<sup>1</sup>

ཡིད་ཀྱི་སྤྱང་བོ་ལོག་འགྲོ་བ།

དམིགས་པའི་ཀ་བ་བརྟན་བོ་ལ།

དུན་པའི་ཐག་པས་ངས་བཅིངས་ནས།

ཤེས་རབ་ལྷགས་ཀྱིས་རིམ་དབང་བྱ། |ཞེས་པ་ལྟར་སྤྱང་བོ་

ཆེ་མ་དུལ་བ་འདུལ་བའི་དཔེ་དང་སྤྱར་དེ་འོག་དུ་རིམ་བཞོད་པ་ནམས་ཀྱི་དོན་...  
རག་རིམ་ཙམ་འགོད་པ་ལ། སེམས་གནས་དགུ་ནི། སེམས་འཛོག་པ། རྒྱན་  
དུ་འཛོག་པ། སྤྱན་དེ་འཛོག་པ། ཉི་བར་འཛོག་པ། དུལ་བར་བྱེད་པ། ཞི་  
བར་བྱེད་པ། རྣམ་པར་ཞི་བར་བྱེད་པ། ཅེ་གཅིག་དུ་བྱེད་པ། མཉམ་པར་  
འཛོག་པ་རྣམས་ཡིན་ལ།

དེ་དག་ལྟོབས་དུག་གིས་འགྲུབ་ལྷགས་ནི། སྤྱང་མའི་གདམས་ངག་གོས་  
པའི་ལྟོབས་ཀྱིས་སེམས་གནས་དང་བོ་འགྲུབ། བསམ་པའི་ལྟོབས་ཀྱིས་གཉིས་  
པ་འགྲུབ། དུན་པའི་ལྟོབས་ཀྱིས་གསུམ་པ་དང་བཞི་པ་འགྲུབ། ཤེས་བཞིན་  
ཀྱི་ལྟོབས་ཀྱིས་ལྔ་པ་དང་དུག་པ་འགྲུབ། བཅོན་འགྲུས་ཀྱི་ལྟོབས་ཀྱིས་བདུན་  
པ་དང་བརྒྱད་པ་འགྲུབ། འདྲིས་པའི་ལྟོབས་ཀྱིས་དགུ་པ་འགྲུབ་པ་ཡིན་ནོ།

དེ་དག་ཡིད་བྱེད་བཞིར་སྤྱད་ཚུལ་ནི། དང་བོ་དང་གཉིས་པའི་སྐབས་  
བསྐྱེས་པ་དེ་འཇུག་པའི་ཡིད་བྱེད་དང་། བར་པ་ལྔའི་སྐབས་ཆད་ཅིང་འཇུག་པའི་  
ཡིད་བྱེད་དང་། བརྒྱད་པ་ནི་ཆད་པ་མེད་པར་འཇུག་པའི་ཡིད་བྱེད་དང་། དགུ་  
པ་ནི་ལྷན་གྱིས་འགྲུབ་པའི་ཡིད་བྱེད་དུ་འཛོག་པ་ཡིན་ནོ། |དེ་ལྟར་སེམས་གནས་

1. རྩེ་—བརྟན་ (དཔུ་མ་/ཇ'—ཅ) ཉིན་དང་འགྲིལ་རྟོག་གི་འཕར་བ་ (དཔུ་མ་/ཇ'—ཇ)



དབྱ་རིས་གྱིས་འབྱུང་བའི་མཐར་ཤིན་སྤངས་མི་གཡོ་བ་ཐོབ་པ་དང་དུས་མཉམ་དུ་  
བསམ་གཏན་དང་པོ་འི་ཉིར་བསྐྱོགས་ཀྱིས་བསྐྱུས་པའི་ཞི་གནས་གྲུབ་པ་ཡིན་ནོ།

དེ་ལྟ་བུས་ཞི་གནས་གྲུབ་པའི་རྒྱུ་ཟུམ་མོ་དབྱ་མའི་ལྟ་བུ་ལ་རྩེ་གཅིག་  
དུ་དབྱུང་འཛོག་ཆ་མཉམ་དུ་གོམས་པར་བྱས་པས། དབྱུང་བ་རང་སྟོབས་ཀྱིས་  
བྱངས་པའི་ཤིན་སྤངས་ཁྱད་པར་ཅན་ཐོབ་པ་ན། ལྷག་མཐོང་མཚན་ཉིད་པ་ཐོབ་  
པ་ཡིན་ལ། དེ་ལྟར་ཚུལ་བཞིན་ཉམས་སྲུང་བའི་ན་ཞི་ལྷག་རྩེ་དུ་འབྲེལ་བའི་  
དྲིང་འཛིན་ཤེས་རབ་ཀྱི་རལ་གྱི་རྣམ་པོས་སྤང་བྱ་སྦྱིབ་གཉིས་ཀྱི་གཡུལ་ངོ་རིས་...  
གྱིས་བཅོམ་ནས་སྲུབ་ཞིའི་ཀྱལ་ཐབས་ཆེན་པོ་མངོན་དུ་བྱས་དེ། ཉམས་མཁའ་ཆེ་  
སྤྱིད་བར་འགྲོ་བའི་རེ་བ་སྐྱོང་བའི་འཕྱིན་ལས་ལྷན་གྲུབ་གྲུན་མི་ཆད་པ་འབྱུང་བ་...  
ཡིན་ནོ།<sup>1</sup> །

བསྐྱུང་བ་འདོད་པའི་དགེ་སྤྱོད་དག །

དཔེན་བ་དག་ཀྱང་འཐོབ་པར་ཤོག །

གཡེང་བ་ཐམས་ཅད་སྤངས་ནས་ནི། །

སེམས་ནི་ལས་རྩང་སྦྱོམ་གྱུར་ཅིག །

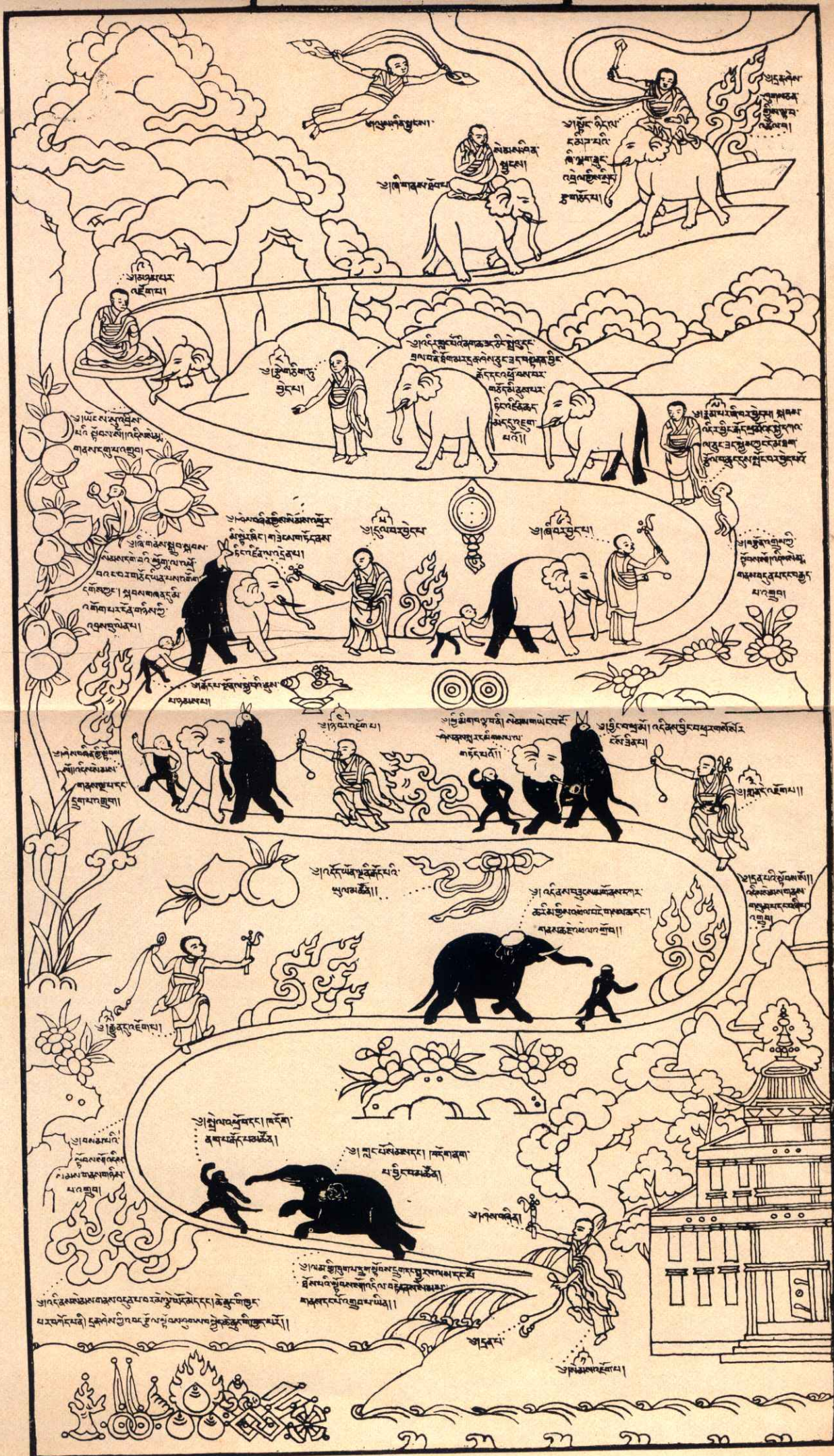
( ལྷ་-བཟུན་-དབྱ་མ་-ལ་ ' ༣༩ )

- 
1. ཞོང་གསལ་ཞི་གནས་སྦྱོམ་ཚུལ་གྱི་རྣམ་པ་ཞུགས་དང་། དཔེ་རིས་ཀྱི་བཤད་པ་འདྲོ་ནི་སྦྱབས་ཆེ་  
ཁྱོད་ཅེས་པོ་ཆེས་མང་དུ་བཞོ།











## चतुर्थ परिशिष्ट

भोट-संस्कृत शब्दकोश

(अथवा वं न्नं न्नां न्नां न्नां न्नां)

ग

|                             |    |                    |     |
|-----------------------------|----|--------------------|-----|
| गुप्तगर्भः गुप्तः गुप्तः    | २० | काशिराजोऽभूद्      | १७४ |
| गुप्तः गुप्तः               | २४ | समुदाचारः          | १७२ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २७ | सम्मोहबीज०         | १८५ |
| गुप्तः गुप्तः               | २८ | अजीवक              | २३७ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २३ | अवधारयति           | १७६ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २८ | समुदयं नोपलभते     | १८३ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २३ | संवृतिपरमार्थरूपेण | १८० |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २८ | संदिष्टधावनभूमि    | २३६ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २८ | प्रत्ययवैकल्य      | १८६ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २३ | कारणाधीन           | १८० |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २७ | त्रिकायादि         | २०० |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | ८  | अशरण               | १६८ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २४ | पर्यङ्कमाभुज्य     | १८१ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | ८८ | अर्धपर्यङ्केन वा   | २०८ |
| गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः | २८ | पर्यङ्कमाभुज्य     | १८३ |



|                                 |     |                   |     |
|---------------------------------|-----|-------------------|-----|
| ཕྱེ་བ་དང་འཛིག་པའི་མཚན་ཉིད།      | १३  | उत्पादभङ्गलक्षण   | १६१ |
| ཕྱེ་བ་མེད་པ་མཉམ་པ་ཉིད་གྱིས།     | १७  | अनुत्पादसमतया     | १७७ |
| ཕྱེ་བོ་མཁས་པ་ལ་བསྟེན་བཀུར་མ་    | १३० | अनुपासितविद्वज्जन | २३३ |
| བྱས་པ།                          |     |                   |     |
| ཕྱེ་བོ་ལྷན་བོའི་དབང་དུ་མཛོད་ནས། | १३४ | मूर्खजनमधिकृत्य   | २३२ |
| ཕྱེ་བུ་དམ་པ་ལ་བདེན་པ།           | ८७  | सत्पुरुषाश्रयः    | २०७ |
| ཕྱེས་རབ།                        | ८७  | जातक              | २०६ |
| སྒྲག་པའི་གནས་སྒྲངས་པའི་ཕྱིར།    | १०  | त्रासपदपरिहारार्थ | १७७ |

ཁ

|                              |     |                    |     |
|------------------------------|-----|--------------------|-----|
| ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་མེད་པའི་སློ་གྲོས། | ७०  | अनवद्यमति          | १६६ |
| ཁས་སྒྲང་པར་གྱུར་དོ།          | ३१  | अभ्युपेतं स्यात्   | १८० |
| ཁོང་དུ་ཆུད་པར་བྱ།            | ३०  | प्रतिवेदयामि       | १८१ |
| ཁུབ་པར་བྱ་བ།                 | ८०  | व्याप्य            | १८६ |
| ཁུབ་པར་བྱེད་པ་མེད་པ།         | ८०  | व्यापकाभाव         | १८६ |
| ཁྱིམ་པ།                      | ८४  | गृहस्थ             | २०७ |
| ཁྱ།                          | १०  | इयेन               | १७४ |
| མཁས་པ་མཐུ་དང་ལྷན་པ།          | ११  | विज्ञातप्रतिबल     | १७१ |
| མཁས་པ་བདག་ལའུ་སྲུ་འདོད་པས།   | १३० | आत्मकमेन धीमता     | २३३ |
| འཁོར་བ་ན་ཀུན་དུ་འཁྲུམ་ཞིང་།  | ४८  | संसारे परिभ्रमन्तो | १६४ |
| འཁོར་བ་ན་འཁོར་དེ།            | १३६ | संसारे संसरन्ति    | २३२ |



|                             |                           |     |
|-----------------------------|---------------------------|-----|
| ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०० | संसाराबाहकत्वात्          | २३७ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥       | प्रतिषिध्यते              |     |
| ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०१ | संसारपरिखेदः              | २३८ |
| ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०२ | सांसारिकफल                | १७५ |
| ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०३ | पर्वन्मण्डलमध्यगतं        | २२५ |
| वसुदेवाय नमः ॥              |                           |     |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०४   | यदान्तरा                  | २२८ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०५   | गङ्गाबालुकसंख्यानि        | १७० |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०६   | प्रपातस्था                | २०३ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०७   | प्रपातस्थास्तरवः          | १६७ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०८   | प्रतिबन्धाभावाद्          | १६० |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०९   | उत्तरोत्तरविशुद्धतरतमक्षण | २४३ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११०   | पिण्डस्याणुमात्रताप्रसङ्ग | १७८ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १११   | शून्यग्रामवत्             | १६५ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११२   | गोविषाण                   | १७६ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११३   | हस्तिकक्षये               | १७७ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११४   | अद्वीपान्                 | १६८ |
| नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११५   | निदान                     | २०६ |



|                                 |     |                     |     |
|---------------------------------|-----|---------------------|-----|
| श्लोकः                          | १०१ | मूढः                | २३४ |
| दशरः वः दः वः वः                | १०  | प्रीतिसुख           | १८४ |
| दशरः वः वः दः वः                | ३८  | रतिमुत्पादयति       | १८३ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः दः वः | १३७ | शुभाशुभकर्मवशेन     | २३२ |
| दशरः वः वः दः वः वः दः वः       | १०० | दशकुशलकर्मपथाः      | २३७ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | १०  | कुशलमूलानि          | १६६ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | १५० | कुशलमूलारम्भणं      | २४२ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | १३  | कल्याणमित्रात्      | १७१ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | ३३  | प्रयोजनसम्पादनार्थं | १७५ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | १३१ | कार्यपरिनिष्पत्ति   | २२४ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | २८  | अत्राणान्           | १६८ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | १४५ | निरोधसमाधि          | २४१ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | ४८  | निरोधं नोपलभते      | १६३ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | ५   | विपरिणामदुःख        | १६८ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | ८४  | कौकृत्याभाव         | २०७ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | १३४ | अस्वभावं जगद्       | २३१ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | १३  | सकलजगतो हिताय       | १७० |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | ८१  | षड्गतिसंसार         | २०५ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | ४५  | जगद्धेतो            | १६३ |
| दशरः वः दः वः दः वः दः वः       | १३  | अम्बरराज            | १७१ |



|                 |     |                         |     |
|-----------------|-----|-------------------------|-----|
| सुखं तु भवति वा | ३८  | संस्थापयति              | १८३ |
| सुखं तु भवति वा | ४४  | सततं स्वरसवाहि          | २०८ |
| सुखं तु भवति वा | ४०  | नानामुखोपचितं कुशलमूलं  | २३७ |
| सुखं तु भवति वा |     |                         |     |
| सुखं तु भवति वा | १   | भावनाक्रम               | १६५ |
| सुखं तु भवति वा | ४४  | माया                    | १६२ |
| सुखं तु भवति वा | ४७  | मायाकार                 | १६२ |
| सुखं तु भवति वा | ४६  | मायावशाद्               | १६२ |
| सुखं तु भवति वा | ३३  | आवरणतमोऽपहीयते          | १८० |
| सुखं तु भवति वा | ४३  | आवरणद्वय                | १६० |
| सुखं तु भवति वा | १३३ | कण्टकस्वररहित           | २२४ |
| सुखं तु भवति वा | १   | प्रतिपत्ति              | १६५ |
| सुखं तु भवति वा | ७   | प्रतिपत्तिविकल          | १६६ |
| सुखं तु भवति वा | ११  | प्रतिपत्तिसारं          | १७० |
| सुखं तु भवति वा | ३१  | समारोपापवादान्त         | १७५ |
| सुखं तु भवति वा | ३६  | आरोपापवाद               | १८२ |
| सुखं तु भवति वा | ७३  | कदाचित् किञ्चित्        | २०० |
| सुखं तु भवति वा | १७० | संमूर्च्छित             | २३३ |
| सुखं तु भवति वा | १७३ | भावनाप्रकर्षपर्यन्तगमेन | २४३ |
| सुखं तु भवति वा | ३३  | भावनामयी प्रज्ञा        | १८० |



८

|          |     |                      |     |
|----------|-----|----------------------|-----|
| ८३ ८३ ८३ | ८४  | अवरमात्र             | २०७ |
| ८३ ८३ ८३ | १०८ | अपायादिषु            | २३७ |
| ८३ ८३ ८३ | १३  | नीतने यार्थ निर्वेधय | १७६ |
| ८३ ८३ ८३ |     |                      |     |
| ८३ ८३ ८३ | ४३  | निर्याणबुद्धिः       | १६० |
| ८३ ८३ ८३ | ५३  | निर्वेधभागीय         | १६६ |
| ८३ ८३ ८३ | ५८  | निरुक्ति             | १७६ |
| ८३ ८३ ८३ | ४८  | निःस्वभावेषु भावेषु  | १६३ |
| ८३ ८३ ८३ |     |                      |     |
| ८३ ८३ ८३ | ११८ | स्वभावतः परिगवेषमाणः | २२७ |
| ८३ ८३ ८३ | १३० | वस्तुपर्यन्तता       | २२३ |
| ८३ ८३ ८३ | १५३ | वस्तुपर्यन्ततालम्बन  | २४३ |
| ८३ ८३ ८३ | ५६  | वस्तुपरमार्थतत्त्व   | १६५ |
| ८३ ८३ ८३ | ८४  | भावाभिनिवेश          | १८७ |
| ८३ ८३ ८३ | ५७  | अभिमुख               | १६८ |
| ८३ ८३ ८३ | १०  | अभ्युदयधर्म          | १७२ |
| ८३ ८३ ८३ | १०८ | अभ्युदयफल            | २१७ |
| ८३ ८३ ८३ | ४३  | अभिसमयगोत्र          | १६० |
| ८३ ८३ ८३ | ३८  | अनभिसंस्कारवाहितायां | १८३ |



|                                    |     |                     |     |
|------------------------------------|-----|---------------------|-----|
| सद्वर्गवत् सद्वर्गवत् प्रवे        | १७३ | अभियोगः करणीयः      | २४३ |
| सद्वर्गवत् प्रवे                   | ७३  | अभिज्ञः             | १६६ |
| सद्वर्गवत् प्रवे प्रवे प्रवे प्रवे | १०७ | अभिमानप्रतिषेधेन    | २३६ |
| सद्वर्गवत् प्रवे प्रवे प्रवे       | ३३  | प्रत्यक्षीकरणाय     | १८० |
| सद्वर्गवत् प्रवे प्रवे प्रवे       | १४  | मन्त्रपरिगृहीतं     | १७२ |
| सद्वर्गवत् प्रवे प्रवे प्रवे       | १०८ | मन्त्रपरिगृहीतविष   | २१७ |
| सद्वर्गवत् प्रवे प्रवे प्रवे       | ३७  | पूर्वहसितरमित       | १८२ |
| सद्वर्गवत् प्रवे प्रवे प्रवे       | १०९ | पूर्वनिवासानुस्मृति | २३४ |
| सद्वर्गवत् प्रवे प्रवे प्रवे       | १७  | पूर्वप्रणिधानबलाधान | १७२ |

उ

|                             |    |                       |     |
|-----------------------------|----|-----------------------|-----|
| उत्तमः                      | ३८ | सकृद्                 | १७८ |
| उत्तमः उत्तमः उत्तमः        | ३८ | नापि यौगपद्येन        | १७८ |
| उत्तमः उत्तमः उत्तमः उत्तमः | ३९ | एकानेकस्वभावशून्य     | १८० |
| उत्तमः                      |    |                       |     |
| उत्तमः उत्तमः उत्तमः उत्तमः | ४  | अन्योऽन्यद्रोहोपघात   | १६७ |
| उत्तमः उत्तमः उत्तमः        | ७  | भगवन्                 | १६५ |
| उत्तमः उत्तमः उत्तमः उत्तमः | ८८ | जिह्वा चोपरि दन्तमूले | २०८ |

क

|                |    |                       |     |
|----------------|----|-----------------------|-----|
| कः कः कः कः कः | ८३ | भागशः प्रत्यवेक्षमाणो | १८५ |
| कः कः कः       | ७७ | बुद्बुद्बुद्बुद्      | १६५ |



|                           |     |                           |     |
|---------------------------|-----|---------------------------|-----|
| कुं.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र। | १२८ | कदलीस्कन्धवद्             | २२७ |
| कुं.पे.मं.र।              | १२९ | कदलीवत्                   | १६५ |
| कुं.पे.सुं.वो.वर्षे.र।    | १३० | पयःस्कन्धवद्              | २३७ |
| के.दु.वर्षे.र।            | ८७  | उदान                      | २०६ |
| के.पे.मं.र।               | ८८  | संतुष्टिः                 | २०६ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३१ | धर्मकायाभिसमय             | १७५ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३२ | धर्ममुखस्रोत              | १७२ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३३ | धर्मप्रवर्षणाद्           | १६६ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३४ | अग्रधर्मान्तर             | १६६ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३५ | धर्ममेघ                   | १६६ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३६ | धर्मधातुसमुदागमता         | १६७ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३७ | अभिधर्मसूत्र              | १६८ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३८ | सर्वधर्मसङ्गः ग्रहवैपुल्य | १७४ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १३९ | सर्वधर्मशून्यता           | १७३ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १४० | सर्वधर्मानुपलब्धिः        | १७३ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १४१ | धर्मविभक्तितां            | १७३ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १४२ | सर्वधर्माणां धर्मता       | १७३ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १४३ | धर्मनैरात्म्य             | १६० |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १४४ | धर्मप्रज्ञप्ति            | २२७ |
| के.पे.मं.सुं.वो.वर्षे.र।  | १४५ | खेटपिण्ड                  | १६७ |



|                             |    |                          |     |
|-----------------------------|----|--------------------------|-----|
| सक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ३७ | प्रामोद्यवस्तु           | १८२ |
| सक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ४० | पूजास्तोत्रोपहारं कृत्वा | १८४ |
| सक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ४४ | यज्ञदत्त                 | १८२ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ५४ | दौःशील्यमल               | १८७ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ३४ | च्युत्युत्पत्तिविगताः    | १७७ |

६.

|                             |     |                       |     |
|-----------------------------|-----|-----------------------|-----|
| ईश्वरऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा  | ४७  | यावत् शक्नोति तावद्   | १८३ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ४०  | मञ्जुश्रीराह          | १८६ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ११  | लोकनाथ                | १७० |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | १३  | लौकिकशिल्प            | १७१ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | १७  | लोकसर्वगतिनिवृत्तिः   | २२० |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | १७  | लोकोत्तरध्यान         | १७१ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ७   | त्रिधातुकावचराः       | १६६ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ३७  | उत्पादनरोधाभिनिविष्टः | १७६ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ५   | भयशोकोपहताः           | १६७ |
| अक्रेणऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा | ४   | भयविह्वलमानस          | १६७ |
| ईश्वरऽनुदण्डवद्विद्वत्संवा  | १३३ | वैरोचनभट्टारक         | २२४ |



|                            |     |                        |     |
|----------------------------|-----|------------------------|-----|
| ईसं सुं यिं रं वं          | १०  | अनुमोदन                | १६६ |
| वईं नुं षेनं पदिं पदं वं   | १३५ | अनभिलाष्यपुद्गल        | २२६ |
| ११                         |     |                        |     |
| ११ प्रोसं दं रं ससं क्रुसा | १०  | श्रावकप्रत्येकबुद्ध    | १६६ |
| ११ प्रोसं गुं प्रेमां वा   | १३  | श्रावकयान              | १६० |
| ११ यं यं रं रं             | १०  | शयानोऽपि               | १६६ |
| ११ वं रं रं रं             | ३८  | उपस्थापयति             | १८३ |
| ११ रं रं रं रं             | ८०  | क्लेशावरण              | १८६ |
| ११ रं रं रं रं             | ८०  | अद्वयज्ञाननिराभासज्ञान | १८७ |
| ११ रं रं रं रं             | ८३  | अद्वयलक्षण             | १६६ |
| ११ रं रं रं रं             | ३८  | समादधाति               | १८३ |
| ११ रं रं रं रं             | ३८  | समाहितचित्त            | १८१ |
| ११ रं रं रं रं             | ३३  | समाधानम्               | १७६ |
| ११ रं रं रं रं             | १   | महाकरुणा               | १६५ |
| ११ रं रं रं रं             | १०० | महाकरुणासमुत्थापितम्   | २३७ |
| ११ रं रं रं रं             | १७५ | करुणाबीजवपने           | २०२ |
| ११ रं रं रं रं             | १३८ | असारमवगम्य             | २२७ |
| ११ रं रं रं रं             | १   | कृपा                   | १६८ |
| ११ रं रं रं रं             | ११० | पर्युपासिता येषां      | २३६ |







|                                      |     |                      |     |
|--------------------------------------|-----|----------------------|-----|
| ལྷན་ཡིན་དུ་འཇམ་པ་བདེ་བ་ལ།            | ༡༩༩ | मृदुतरसुखासने        | २२४ |
| ལྷོང་བ་ཉིད་དང་སྤྱིང་ཆེན་སྤྱིང་བོ་ཅན། | ༡༩༠ | शून्यताकरुणागर्भं    | १९४ |
| ལྷོང་བ་ཉིད་རྣམ་པ་བཅོ་བརྒྱད།          | ༢༠  | अष्टादशप्रकारशून्यता | १९२ |
| ལྷོང་བར་རྟོགས་སོ།                    | ༡༩༧ | शून्यं प्रतिविध्यति  | २२७ |
| ལྷོང་གསུམ་གྱི་ལྷོང་ཆེན་པོ།           | ༡༩༠ | त्रिसाहस्रमहासहस्र   | २४२ |
| ལྷོབས་ཀྱི་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་པ།           | ༩༠  | बलपारमिता            | १९६ |
| ལྷོབས་བཅུ།                           | ༡༩  | दशबल                 | १७३ |
| བདག་མི་བཟོད་པ་ས།                     | ༡༩  | विचाराक्षमत्वात्     | १९२ |
| ཐ་                                   |     |                      |     |
| ཐ་སྤྱད་ཀྱི་དབང་གིས།                  | ༩༠  | व्यवहारवशाद्         | १७७ |
| ཐ་སྤྱད་ཐམས་ཅད་ལས་འདས་པ།              | ༩༠  | सर्वव्यवहारातीत      | १७६ |
| ཐ་སྤྱད་འདྲོགས་དེ།                    | ༡༡  | व्यवहियते            | १९२ |
| ཐབས་ཀྱི་མཐར་ཕྱིན་པ།                  | ༩༧  | उपायपर्यवसानम्       | १७५ |
| ཐབས་ཀྱི་པ་རེལ་དུ་ཕྱིན་པ།             | ༩༧  | उपायपारमिता          | १९४ |
| ཐབས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ།             | ༩   | उपायपरिग्रहण         | १६६ |
| ཐབས་དང་བྲལ་བའི་ཤེས་རབ།               | ༡༠  | उपायरहितप्रज्ञा      | १७१ |
| ཐབས་དང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ངོ་བོ།             | ༡༠  | प्रज्ञोपायरूपा       | १७१ |
| ཐབས་བསྟེན་བའི་དུས་ན།                 | ༩༩  | उपायसेवनकाले         | १९५ |
| ཐབས་མེད་བའི་ཕྱིར།                    | ༡༩  | उपायविकलतया          | २३१ |
| ཐབས་ལ་མཁས་པ་གང་ཞིང་ན།                | ༡   | उपायकौशलं कतमम्      | १७२ |



|                       |     |                    |     |
|-----------------------|-----|--------------------|-----|
| समसः उदः सप्तः वः ३५५ | १२  | सर्वज्ञत्वाधिगम    | १६० |
| समसः उदः सप्तः वः ३५५ |     |                    |     |
| वर्तमानः              | १४० | सर्वज्ञतैकरसं      | २३७ |
| समसः उदः सप्तः वः ३५५ | ३   | सर्वज्ञपदम्        | १६६ |
| समसः उदः ५५५ वः ३५५   | १२  | सर्वत्राव्याहतो    | १६० |
| समः वः ३५५ वः ३५५     | १२  | मोक्षाभावाद्       | १६१ |
| समः ३५५ वः ३५५        | १२  | प्राञ्जलिभूत्वा    | १७० |
| वेत्तः                | १२  | विचिकित्सा         | १७६ |
| वेत्तः ३५५ वः ३५५     | ८६  | संशयबीज            | १८७ |
| वेत्तः ३५५ वः ३५५     | ८७  | संशयान्दोलितयान    | २०८ |
| वेत्तः ३५५ वः ३५५     | ८६  | संशयाप्रहाण        | १८७ |
| वेत्तः ३५५ वः ३५५     | ८२  | महायान             | १८५ |
| वेत्तः ३५५ वः ३५५     | १   | महायानसूत्र        | १६५ |
| वेत्तः ३५५ वः ३५५     | १   | महायानसंभार        | १६६ |
| वेत्तः ३५५ वः ३५५     | १२  | श्रुतमयीप्रज्ञा    | १६७ |
| सप्तः ३५५ वः ३५५      | ८०  | अनुकूलदेशवासः      | २०६ |
| सप्तः ३५५ वः ३५५      | १२  | अचिन्त्यशक्तिविशेष | १६० |
| सप्तः ३५५ वः ३५५      | १४  | बलिभिराक्रम्य      | १६७ |



५

|   |                            |     |
|---|----------------------------|-----|
| ५. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०.            | प्रत्युत्पन्नबुद्धसंमुखाव- |     |
| ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८.           | स्थितसमाधिः                | २२५ |
| ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८.           | प्रत्युत्पन्नेऽध्वनि       | १७७ |
| ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८.           | अधिवासनशील                 | १८१ |
| ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८.           | श्रद्धा                    | १६६ |
| ९९. १००. १०१. १०२. १०३. १०४. १०५. १०६. १०७. १०८.  | सद्धर्मप्रतिक्षेपकर्माविरण | १७४ |
| १०९. ११०. १११. ११२. ११३. ११४. ११५. ११६. ११७. ११८. | शनैः पर्यङ्कं भित्वा       | २३२ |
| ११९. १२०. १२१. १२२. १२३. १२४. १२५. १२६. १२७. १२८. | विषसंसृष्टवचनं             | २३२ |
| १२९. १३०. १३१. १३२. १३३. १३४. १३५. १३६. १३७. १३८. | तत्त्वं भावयेत्            | १६३ |
| १३९. १४०. १४१. १४२. १४३. १४४. १४५. १४६. १४७. १४८. | तत्त्व विचाराः             | २०८ |
| १४९. १५०. १५१. १५२. १५३. १५४. १५५. १५६. १५७. १५८. | तत्त्वान्यत्वाभ्याम्       | २२६ |
| १५९. १६०. १६१. १६२. १६३. १६४. १६५. १६६. १६७. १६८. | इतिवृत्तक                  | २०६ |
| १६९. १७०. १७१. १७२. १७३. १७४. १७५. १७६. १७७. १७८. | आनन्तर्यसमाधि              | १६६ |
| १७९. १८०. १८१. १८२. १८३. १८४. १८५. १८६. १८७. १८८. | तथतालम्बन                  | १८५ |
| १८९. १९०. १९१. १९२. १९३. १९४. १९५. १९६. १९७. १९८. | तथतापरायणम्                | २०६ |
| १९९. २००. २०१. २०२. २०३. २०४. २०५. २०६. २०७. २०८. | तथागतविग्रह                | २२५ |
| २०९. २१०. २११. २१२. २१३. २१४. २१५. २१६. २१७. २१८. | तथागतनिमित्तः              | १६२ |
| २१९. २२०. २२१. २२२. २२३. २२४. २२५. २२६. २२७. २२८. | तथागतदिधगतेरन्या           | २४० |



|                                 |     |                      |     |
|---------------------------------|-----|----------------------|-----|
| देवि ह्येवमवधिमेव               | ११४ | तत्पृष्ठलब्धज्ञानेन  | २२० |
| देवि अत्र सप्तमं च              | ११५ | तत्फलं भुञ्जान       | २३७ |
| देवि दस्य वदन्त्यस्य वदि प्रुम् | ११६ | परमार्थानुकूलत्वात्  | १७६ |
| देवि दस्य वदन्त्यस्य वदि प्रुम् | ११७ | परमार्थतोऽलीका       | १६२ |
| देवि दस्य वदन्त्यस्य वदि प्रुम् | ११८ | परमार्थतोऽविपर्यस्त  | १८६ |
| देवि दस्य वदन्त्यस्य वदि प्रुम् | ११९ | परमार्थतोऽलीक        | १६२ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२० | परमार्थक्षान्ति      | १७३ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२१ | प्रार्थना            | १६६ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२२ | अर्थक्रियासमर्थ      | १७८ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२३ | ऋजुं प्रणिधाय        | १६१ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२४ | अभ्युद्धरणप्रतिज्ञय  | १६८ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२५ | स्मृतिः              | १८३ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२६ | मुषितस्मृतित         | २३४ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२७ | उष्णस्पर्शसंवेदनं    | २३४ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२८ | विनेयजनेभ्यो         | २०० |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १२९ | अभ्युद्धरणाशयो       | १८१ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १३० | आत्मदृष्टि परामृशतः  | २३३ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १३१ | स्वात्मनिरपेक्षा     | १६६ |
| देवि दस्य वदि वदेव              | १३२ | स्वपरार्थानुष्ठानाद् | १७२ |



|                                    |     |                        |     |
|------------------------------------|-----|------------------------|-----|
| བདག་དང་གཞན་གྱི་དོན་སྤྱོད་སྤྱོད་... |     |                        |     |
| ཚོགས་པ།                            | ༧༠  | स्वपरार्थसम्पत्ति      | २०० |
| བདག་དང་གཞན་དུ་འདྲ་ཤེས་པས།          | ༡༧༩ | आत्मपरसंज्ञिना         | २३६ |
| བདག་དང་བདག་གི་བ་དང་བྲལ་བ།          | ༡༨༠ | आत्मात्मीयरहितं        | २२५ |
| བདག་དུ་སྒྲོ་འདོགས་པ།               | ༧༠  | आत्मसमारोप             | १८६ |
| བདག་མ་དུལ་ན།                       | ༡༩  | नहि स्वयमदान्तः        | १७१ |
| བདག་གཞན་གཉིས་ཀྱི་ལས།               | ༡༩༤ | स्वपरोभयतः             | २२७ |
| བདག་གཞན་ལ་འཁྲུ་བ་བྱས་པ།            | ༡༩༧ | स्वपरद्रोहः कृतः       | २४३ |
| བདེ་བ་དང་སྤྱད་པར་འདོད་པའི་རྣམ་པ།   | ༡༧  | सुखसंयोगेच्छाकारा      | २०४ |
| བདུད་བདུལ་བའི་ལུ།                  | ༡༧༠ | मारदमनपरिच्छेद         | २१८ |
| མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་པ།                 | ༡༦༠ | सूत्रसमुच्चय           | २३५ |
| འདས་པའི་དུས་ན།                     | ༩༧  | अतीतेऽध्वनि            | १७७ |
| འདས་མ་འོངས་ད་ལྟར།                  | ༡༠  | अतीतानागतप्रत्युत्पन्न | १६६ |
| འདུ་བྱེད་གྱི་སྤྱུག་བསྐྱེད།         | ༧   | संस्कारदुःख            | १६८ |
| འདུ་བྱེད་མངོན་པར་འདུ་བྱ་བ།         | ༡༧༧ | संस्काराभिसंस्कार      | २३८ |
| འདུ་ཤེས་མེད་པའི་སྒྲོམ་པར་འཇུག་པ།   | ༠༧  | असंज्ञिसमापत्ति        | १८७ |
| འདུག་ཀྱང་རྩང་།                     | ༡༠  | निषण्णोऽपि             | १६६ |
| འདུན་པ།                            | ༡༠  | छन्द                   | १६६ |
| འདུལ་བར་བྱེད་དོ།                   | ༩༤  | दमयति                  | १८३ |
| འདོད་བ་རྣུང་བ།                     | ༤༠  | अल्पेच्छता             | २०६ |



|                             |    |                |     |
|-----------------------------|----|----------------|-----|
| ॠद्वेदः पदः श्लेषः पदः ५... |    | तीव्रकामाग्नि- |     |
| ॠद्वेदः पदः १।              | ७  | सन्दीप्तमानसा  | १६७ |
| ॠद्वेदः पदः श्लेषः पदः १।   | ८० | कामतृष्णा      | १८४ |
| ॠद्वेदः पदः २।              | ८३ | परमाणु         | १८५ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।  | ३४ | पापदेशना       | १८१ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।  | ४  | प्रियविप्रयोग  | १६७ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।  | ७  | दुःखदुःखता     | १६८ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।  | ७७ | सर्वदुःखसहनात् | १६७ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।  | ८  | त्रिविधदुःख    | १६६ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।  | ८  | दुःखितसत्त्व   | १६६ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।  | १३ | संवरग्रहणे     | १७१ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।  | १३ | संग्रहवस्तु    | १७१ |
| ॠद्वेदः पदः १।              | १० | पिण्डयित्वा    | १६६ |

१.

|                                |    |                         |     |
|--------------------------------|----|-------------------------|-----|
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १।     | ८० | अध्यात्मसमप्रसादः       | १८४ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १। ३८  |    | सर्वसामर्थ्यशून्यत्वाद् | १७८ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १। ३८  |    | समर्थस्वभावानुवृत्तौ    | १७८ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १। ८८  |    | अवस्थानलक्षणा           | १८८ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १। ११३ |    | दौष्टुल्य               | २१६ |
| ॠद्वेदः पदः पदः पदः पदः १। ११७ |    | दौष्टुल्यबन्धन          | २२३ |











| सं      |                               |     |                        |
|---------|-------------------------------|-----|------------------------|
| सं. २८५ | सुत्रं च द्वा. २८५. २८५. २८५. | २४९ | षट्पारमितान्तर्गमात्   |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५० | पारमिताव्यपदेश         |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५१ | पाराजिक                |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५२ | व्यस्तेषु              |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५३ | कपोतार्थं              |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५४ | त्रिस्कन्धपरिणामना     |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५५ | सर्वाकारसकल-           |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५६ | संपत्प्रकर्षपर्यन्तगमन |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५७ | उत्तरोत्तरकर्मण्यता    |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५८ | बाह्यार्थनैरात्म्य     |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २५९ | अविपरीत                |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २६० | विपर्ययासवासना         |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २६१ | विपर्यस्तमतयः          |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २६२ | विपरीताभिनिवेश         |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २६३ | अविपर्यस्त             |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २६४ | अवैवर्तिका             |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २६५ | सूक्ष्मसूक्ष्मतर       |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २६६ | आर्यरत्नकूट            |
| सं. २८५ | सुत्रं च २८५. २८५.            | २६७ | आर्यरत्नमेघ            |



|                               |     |                             |     |
|-------------------------------|-----|-----------------------------|-----|
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | १३  | आर्यगयाशीर्ष                | १७१ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय |     |                             |     |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | ८०  | आर्यसंधिनिर्माचन            | २०४ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | ७   | आर्यराजाववादकसूत्र          | १६६ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय |     |                             |     |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | १०८ | आर्यसर्वधर्मवैपुल्य         | २१५ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | १   | आर्यधर्मसंगीतिसूत्र         | १६५ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | ८   | आर्यदशधर्मसूत्र             | १६८ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय |     |                             |     |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | १०३ | आर्यमञ्जुश्रीविकुर्वितसूत्र | २३५ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय |     |                             |     |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | १३  | आर्यलोकोत्तरपरिवर्त         | १६१ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय |     |                             |     |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | १४  | आर्योपालिपरिपृच्छा          | २३८ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय |     | आर्यमहायानश्रद्धा-          |     |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | ८७  | भावनासूत्र                  | २०५ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | १३  | आर्यसमाधिराजसूत्र           | १७१ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | ३   | आर्यश्रद्धाबलाधान           | १७२ |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय |     |                             |     |
| ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय | १३६ | आर्यतथागतोत्पत्तिसंभवसूत्र  | २३१ |



|                                    |     |                        |     |
|------------------------------------|-----|------------------------|-----|
| འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་...       |     | आर्यतथागतज्ञान-        |     |
| ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱའི་དྲིང་ངེ་འཛིན། | ८   | मुद्रासमाधि            | १६६ |
| འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་...       |     |                        |     |
| གསང་བའི་མདོ།                       | १३७ | आर्यतथागतगुह्यसूत्र    | २३१ |
| འཕཇ་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ།          | ८७  | आर्यसत्यद्वयनिर्देश    | १८६ |
| འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་ནམ་...          |     |                        |     |
| བར་འབྱུང་པ།                        | १७  | आर्यसत्यद्वयविभाग      | १७७ |
| འཕགས་པ་སྤོང་བོ་བཀོད་པའི་མདོ།       | ११  | आर्यगण्डव्यूहसूत्र     | १७० |
| འཕཇ་དྲི་མ་མེད་བར་གྲགས་པས་...       |     |                        |     |
| བསྟན་པ།                            | १८  | आर्यविमलकीर्तिनिर्देश  | १७१ |
| འཕགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛོད།                | १०७ | आर्यगगनगञ्ज            | २१८ |
| འཕགས་པ་དབལ་མཚོག་དང་བོ།             | १०७ | आर्यश्रीपरमाद्य        | २१६ |
| འཕགས་པ་དབལ་སྦྱིན་གྱིས་ལྷས་པ།       | ११  | आर्यवीरदत्तपरिपृच्छा   | १७० |
| འཕགས་པ་སྤྱད་ལྷམ་ཡོངས་སུ་...        |     |                        |     |
| དག་པའི་མདོ།                        | १११ | आर्यगोचरपरिशुद्धिसूत्र | २१६ |
| འཕགས་པ་སྒྲོ་གྲོས་མེ་ཟད་པའི་མདོ།    | १   | आर्याक्षयमतिनिर्देश    | १६५ |
| འཕགས་པ་མ་སྦྱིས་དགའི་འབྱོར་...      |     | आर्याजातशत्रु-         |     |
| པ་བསལ་པ།                           | ८४  | कौकृत्यविनोदन          | २०७ |
| འཕཇ་པ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེའི་མདོ།      | १०३ | आर्यरत्नचूडसूत्र       | २१५ |
| འཕགས་པ་བཟང་བོ་སྤྱོད་པ།             | ४७  | आर्यभद्रचर्या          | १६४ |



འཕགས་པ་ཡོངས་སུ་བྱ་བ་ལས་...

འདས་པ་ཆེན་པོ་འི་མདོ། ༥༩

འཕགས་པ་ཡོངས་སུ་བྱ་བ་ལས་པའི་མདོ། ༦༠

འཕགས་པ་སངས་རྒྱལ་བའོ་ལ། ༦༡

འཕགས་པ་སྤྲོད་མེད་ཀྱི་བྱས་ཀྱིས་པ། ༥༧

འཕགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩལ་

དུ་ཕྱིན་ལ། ༥༨

བ་

བ་སྒྲུང་གི་སྤྱི་བའི་དཀྱིལ་འཁོར། ༧༥

བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་ཉེས་ལ། ༧༦

བག་མེད་ལ། ༥༧

བག་ལ་ཉལ། ༥

བར་ས་ཆོད་པ་ལས། ༦༠

བྱ་བ་སང་པོ་ཡོངས་སུ་སྒྲུངས་ལ། ༥༩

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས། ༥༥

བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཆོགས། ༧༧

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང། ༧

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་དབང་བའི་...

སེམས། ༧༦

བྱང་ཆུབ་སེམས་དབང་འི་སྤྱི་སྤྱོད། ༥༧

आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्र २०६

आर्यलङ्कावतारसूत्र ७६-

आर्यबुद्धसङ्गीति १७७

आर्यनारायणपरिपृच्छा २०७

आर्यप्रज्ञापारमिता १६२

गोमयमण्डल २४१

सवासनादोष २२१

प्रमाद २०७

अनुशय १६८

अव्यवधाने १७८

क्रियाबाहुल्यपरिहारः २०६

बोधिपक्षधर्म १६७

बोधिसम्भार १७०

बोधिसत्त्व १६५

चित्तशूरो बोधिसत्त्व २३६

बोधिसत्त्वपिटक २०५







|                 |     |                         |     |
|-----------------|-----|-------------------------|-----|
| ॡगुॡवॡॡगुॡॡ     | १   | प्रवृत्तिर्भवति         | १६५ |
| ॡगुॡवॡॡॡॡॡॡॡॡॡ  | ७   | विपर्यवसानसम्पदो        | १६७ |
| ॡगुॡवॡॡॡॡॡॡॡॡॡ  | १८  | अपर्यन्तबद्धाः          | १७३ |
| ॡगुॡवॡॡॡॡॡॡॡॡॡ  | ७४  | दानपारमिता              | १९७ |
| ॡगुॡवॡॡॡॡॡॡॡॡॡ  | ४१  | अशिविषय गोत्र           | १९० |
| ॡ               |     |                         |     |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | १३० | अविचाररमणीय             | २३१ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | ३०  | अजित                    | १७४ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | ३८  | अकृतकभाव                | १७८ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | १७  | अशान्तानप्रशान्ता       | १७३ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | ८७  | बहुश्रुतपर्येषणा        | २०७ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | १४० | दीपङ्कुर                | २३६ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | १०३ | कातरपुरुष               | २३५ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | ७७  | अप्रतिष्ठितध्यान        | २१३ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | १४४ | अनुत्पत्तिकधर्मक्षान्ति | २४० |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | १३० | अरति प्रशमयेत           | २२८ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | १७  | चतुर्वैशारद्य           | १७३ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | १०  | न हापयिष्यसि            | १७० |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | ७   | न विजहाति               | १६६ |
| ॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡॡ | ५   | अप्रियसंयोग             | १६७ |



|                              |     |                    |     |
|------------------------------|-----|--------------------|-----|
| सिं गणसं पदं सुन्दरं यत् १५५ | ११  | अप्रतिष्ठितनिर्वाण | १७५ |
| सिं सुखं यो १७४              | १७  | मोहपुरुष           | १७४ |
| सिं दक्षिणसं पदं दसं १८८     | ८८  | परमोऽनुपलम्भः      | १८८ |
| सिं सुखं यो २०               | २०  | अनाभोगः            | १८३ |
| सिं गायं यो ६८               | ६८  | अचल                | १८८ |
| सिं गायं दसं सुन्दरं ८८      | ८८  | चक्षुरालोक         | १८८ |
| सिं गायं सुखं यो ८४          | ८४  | निमीलिताक्ष        | १८६ |
| सिं सुखं यो ८०               | ८०  | व्यपदेशं लभते      | १८४ |
| सु सुखं यत् २३               | २३  | तीर्थिकानाम्       | १७६ |
| सु सुखं यत् ८६               | ८६  | अन्धकूपावस्थित     | १८७ |
| सिं सुखं यो ३३               | ३३  | दर्पणे             | १४० |
| सिं गायं सु ३८               | ३८  | वन्द्यापुत्र       | १७८ |
| सिं सुखं यत् ६३              | ६३  | अधिमुक्तिबलेन      | १८५ |
| सिं सुखं यत् ११०             | ११० | अधिमुक्तिवशात्     | २२० |
| सिं सुखं यत् ६३              | ६३  | अधिमुक्तिचर्याभूमि | १८५ |
| दक्षिणसं पदं ३०              | ३०  | आलम्बनसंप्रमोषः    | १८३ |
| दक्षिणसं सु सुखं यत् ८३      | ८३  | उपलब्धिलक्षण       | १८६ |
| दक्षिणसं सु सुखं यत् ८४      | ८४  | जात्यन्धा          | १८६ |
| सिं सु सुखं यत् ८०           | ८०  | अद्भूतधर्मवर्ग     | २०१ |
| सिं सु सुखं यत् ८३           | ८३  | स्वप्नावस्था       | १८५ |



|                                    |    |                      |     |
|------------------------------------|----|----------------------|-----|
| सुभासः पदं मात्रेण ग्रीष्मं नृणाम् | ३७ | स्त्यानमिद्धाभिभवाद् | १८२ |
| सुभासः पदं पदे पदं पदं             | ३८ |                      |     |
| पदे सुभासः पदे पदं पदं             | ३९ | हितमुखाध्याशय        | १८४ |
| सुभासः पदं पदं पदं                 | ४० | मरीचिवत्             | १८५ |
| सुभासः पदं पदं पदं                 | ४१ | प्रणिधि              | १८६ |
| सुभासः पदं पदं पदं                 | ४२ | प्रणिधिचित्त         | १८७ |
| सुभासः पदं पदं पदं                 | ४३ | प्रणिधान             | १८८ |

|                           |    |                |     |
|---------------------------|----|----------------|-----|
| मात्रं पदं मात्रं पदं पदं | ४४ | अरणिमन्थनाग्नि | २१३ |
| उप पदं पदं पदं            | ४५ | उत्खातमूला     | १८९ |
| उप पदं पदं पदं            | ४६ | एकोतीकरोति     | १९० |
| उप पदं पदं पदं            | ४७ | किमारम्भा      | १९१ |
| उप पदं पदं पदं            | ४८ | वीर्यपारमिता   | १९२ |
| उप पदं पदं पदं            | ४९ | व्यायामः       | १९३ |
| उप पदं पदं पदं            | ५० | आभोगदोषः       | १९४ |

कं

|                  |    |                   |     |
|------------------|----|-------------------|-----|
| कंदः पदं पदं पदं | ५१ | ब्रह्मपरिपृच्छा   | २३६ |
| कंदः पदं पदं पदं | ५२ | निमित्तकृतव्यवहार | १९८ |
| कंदः पदं पदं पदं | ५३ | अप्रमाण           | १९९ |
| कंदः पदं पदं पदं | ५४ | गाथा              | २०६ |







|                           |    |                    |     |
|---------------------------|----|--------------------|-----|
| ཐུན་པ་ཉིད་ཡིན་པས།         | ༢༩ | अलीकत्वे           | १८० |
| བཐུན་པ་འབྲུག་པ།           | ༢༩ | अलीकवीभ्रम         | २२६ |
| ཞ.                        |    |                    |     |
| ཞི་གནས།                   | ༣༠ | शमथ                | १८१ |
| ཞི་གནས་ཀྱི་ཚེགས།          | ༣༡ | शमथसम्भार          | १८१ |
| ཞི་གནས་ཀྱིས་དམིགས་པ་ལ།    | ༣༧ | शमथेनालम्बने       | १८८ |
| ཞི་གནས་དང་ལྷན་སྦྱོང་རྒྱུ་ |    |                    |     |
| འབྲེལ་པ།                  | ༣༨ | शमथविषयनायुगलद्व   | १८८ |
| ཞི་གནས་ཡོངས་སུ་འཚོལ་བར་   |    |                    |     |
| བརྒྱུད་པ།                 | ༤༠ | शमथपरिगवेषणं       | २०६ |
| ཞི་བ་ནས་བར་ཐར་པ།          | ༧༩ | शान्तविमोक्ष       | १७३ |
| ཞི་བར་གནས་པ་ལ།            | ༧༩ | शान्तविहारिणो      | १७२ |
| ཞི་བར་བྱེད་དོ།            | ༩༤ | शमयति              | १८३ |
| ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ།         | ༧༠ | क्षेत्रपरिशुद्धि   | १७२ |
| གཞན་གྱི་དྲིང་ལ་འཛིག་པ།    | ༩༧ | परप्रत्ययतः        | १७५ |
| གཞན་གྱིས་ཡང་དག་བར་འཛིན་   |    |                    |     |
| དུ་བརྟུག་པ།               | ༩  | परसमादापन          | १६८ |
| གཞན་དག་གིས་བརྟུགས་པའི་    |    |                    |     |
| ཕྱིར་དོ།                  | ༧༩ | परैरूपकल्पितत्वात् | २२६ |
| གཞེ་མེད་པར།               | ༩༠ | आधारमन्तरेण        | १८१ |







|                                  |    |                        |     |
|----------------------------------|----|------------------------|-----|
| གཞུངས།                           | ༩༩ | धारणी                  | १६३ |
| གཞུང་བ་དང་འཛིན་བ་ལས་དབན་བ།       | ༩༩ | ग्राह्यग्राहकविविक्तम् | १८६ |
| གཞུང་བ་དང་འཛིན་པའི་ནམ་པར།        | ༩༩ | ग्राह्यग्राहकाकार      | १७६ |
| བཟང་བར་འདྲ་ཤེས་པ།                | ༩༩ | शोभनसंज्ञाम्           | १७४ |
| བཟོད་པའི་ཡ་རོལ་དུ་སྦྱོན་པ།       | ༩༩ | क्षान्तिपारमिता        | १६७ |
| འོང་བ་དང་འགྲོ་བ་དང་བྲལ་བ།        | ༩༩ | आगतिगतिरहिताः          | २२५ |
| འོང་གྱི་དཀྱིལ་འཁོར་ཚད་མེད་པ།     | ༩༩ | प्रभामण्डलाप्रमाण      | १७३ |
| འོང་འཕྲོ་བ་ཅན།                   | ༩༩ | अचिन्मति               | १६७ |
| འོང་བྱེད་པ།                      | ༩༩ | प्रभाकरी               | १६७ |
| ཡང་དག་པ་ཁོ་ནའི་ངོན།              | ༩༩ | भूतमर्थ                | १७६ |
| ཡང་དག་པ་མེ་ལྔ་བ་བཞིན་དུ་སྒྲོལ་བ། | ༩༩ | यथाभूतदर्शन            | १६४ |
| ཡང་དག་པ་ཉིད་གྱི་སྒྲོལ་ལ་         | ༩༩ | परमतत्त्वप्रवेशात्     | १८६ |
| ཞུགས་པས།                         | ༩༩ | वितथरूपद्य             | २२७ |
| ཡང་དག་པ་ས་ཡིན་པའི་གཞུགས་         | ༩༩ | सम्यग्ज्ञानावलोक       | १८६ |
| ཡ་སོགས་པ།                        | ༩༩ | सम्यक्प्रज्ञया         | १६३ |
| ཡང་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་གྱི་སྒྲོལ་བ།    | ༩༩ |                        |     |
| ཡང་དག་པའི་ཤེས་རབ་གྱིས་           | ༩༩ |                        |     |



ཡན་ལག་བརྒྱ་གཅིག་ཡོངས་སུ་

རྒྱལ་ས་པ།

ཡབ་སྐུ་ས་མཇུག་པ་ལས།

ཡིད་དུ་འོང་བའི་ཕྱོགས།

ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཁྲགས་པ།

ཡིད་ལ་མི་བྱེད་པ།

ཡིད་མི་བདེ་བ་དང་འཁྲུག་པ།

ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྒོ་བསམ་གྱིས་མི་ཁྲུབ་པ།

ཡེ་ཤེས་ཀྱི་པ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པ།

ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མིག་ཕྱེ་ཡ།

ཡེ་ཤེས་ཉེ་བར་སྐྱབ་པ།

ཡེ་ཤེས་ནས་བར་དག་པ།

ཡེ་ཤེས་མངོན་བར་སྐྱབ་པ།

ཡོངས་སུ་སྐྱབ་པ།

ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་སྒྲིན་དུ་གདོང་བ་ཉིད།

ཡོངས་སུ་རྟོག་པ།

ཡོངས་སུ་སྐྱབ་པ་བྱས་པའི་བྱེ་

བྱལ་གྱིས།

ཡོངས་སུ་སྒྲིན་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར།

ཡོངས་སུ་བཅའ་བའི་ཕྱིར།

༤༦

༤༧

༤༨

༤༩

༥༠

༥༡

༥༢

༥༣

༥༤

༥༥

༥༦

༥༧

༥༨

༥༩

༦༠

༦༡

༦༢

༦༣

༦༤

एकादशाङ्गपरिपूरिता

पितापुत्रसमागमे

मनोऽनुकूलदेश

जितमनस्कार

अमनसिकार

दौर्मनस्यकोप

ज्ञानमुखाचिन्त्यतां

ज्ञानपारमिता

विस्फारितज्ञानचक्षुः

ज्ञानोपसंहारं

विशुद्धज्ञान

ज्ञानाभिनिर्हार

परिनिष्पादन

पर्यवेक्षणपूर्वगामिता

पर्यवेक्षण

परिशुद्धिविशेषण

परिपाचनार्थं

पर्येषणाय

१६६

१७७

१८१

१८२

१८६

२०५

१७३

१६६

२३५

१७२

१८८

१७३

१७५

२१३

२०६

२३७

१६६

१७३



|                       |     |              |     |
|-----------------------|-----|--------------|-----|
| ཡོན་དན་ས་ལུས་པདྨ་གཞི། | १७३ | अशेषगुणाधारा | २४३ |
| གཡམ་སྒྲོ་བ།           | १७४ | उपहत         | १७३ |
| གཡོག་འཁོར་མང་བོ།      | १७५ | बहुपरिवार    | १७२ |

२.

|                                     |     |                         |     |
|-------------------------------------|-----|-------------------------|-----|
| རང་གི་སྒྲིག་པ་བཤགས་ནས།              | १७६ | स्वपापं प्रदेश्य        | २२४ |
| རང་གི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སྒྲོང་བ་ཉིད།     | १७७ | स्वलक्षणशून्यता         | १७७ |
| རང་བཞིན་དང་། བཅས་པདྨ་ཁ་ན་           |     |                         |     |
| མ་གྲོ་བ།                            | १७८ | प्रकृति-प्रतिक्षेपावद्य | २०७ |
| རང་བཞིན་མེད་ལ།                      | १७९ | निःस्वभावेषु            | १७९ |
| རང་སངས་རྒྱས།                        | १८० | प्रत्येकबुद्ध           | १८२ |
| རབ་ཀྱི་མཚོག།                        | १८१ | अधिमात्रतर              | १८६ |
| རབ་དུ་དགའ་བ།                        | १८२ | प्रमुदिता               | १८६ |
| རབ་དུ་རྟོགས་པ།                      | १   | मुप्रतिविद्धः           | १८५ |
| རབ་དུ་རྣམ་པར་འབྱེད་པ།               | १८३ | प्रविवेचन               | २०९ |
| རབ་དུ་ཞི་བ་བདེ་བའི་ནོར་གྱི་དབྱེལ་བ། | १८४ | प्रशममुखधनदरिद्रा       | १८७ |
| རབ་དུ་ཤེས་པ།                        | १८५ | प्रजानाति               | १९० |
| རབ་བྱུང་།                           | १८६ | प्रव्रजित               | २०७ |
| རབ་འབྱེད།                           | १८७ | सुभूते                  | १८२ |
| རབ་རིབ་ཀྱི་སྒྲོན།                   | १८८ | तिमिरदोष                | १८७ |
| རི་བོང་གི་རྩ་ལ་སོགས་པ།              | १८९ | शशविषाणादि              | १८२ |



|                                    |     |                   |     |
|------------------------------------|-----|-------------------|-----|
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा।           | १८  | युक्त्यागमाभ्यां  | १७६ |
| सिंहासः वः दः सुदः दः सुदः वः।     | १८० | युक्त्यागमोपेतं   | २४२ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीः दः सुदः वः। | १८४ | बहुतरं युक्त्यागम | २३६ |
| सिंदः सुदः वः।                     | ९८  | दुरङ्गमा          | १६८ |

८०

|                          |     |                          |     |
|--------------------------|-----|--------------------------|-----|
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | १   | करतलगता                  | १६५ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | ११० | उत्थानोपायकाले           | २१८ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | ११  | उन्मार्ग                 | १७५ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | ९   | क्लेशकर्माण्युपचिन्वन्तः | १६७ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | १   | आदिकर्मिक                | १६५ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | ९०  | साधुमती                  | १६६ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | १९  | साधु साधु                | १७२ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | १३  | आगमार्थम्                | १७६ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | ८०  | व्याकरण                  | २०६ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | ३०  | कायचित्तकर्मण्यताम्      | १८३ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | ३०  | कौसीद्यम्                | १८३ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | १९  | महाभोग                   | १७२ |

९०

|                          |     |                 |     |
|--------------------------|-----|-----------------|-----|
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | ३   | शारद्वतीपुत्र   | १६५ |
| सिंहासः वः दः सुदः गीसा। | १८८ | काण्ठद्वयनिघर्ष | २३७ |



|                                 |    |                         |     |
|---------------------------------|----|-------------------------|-----|
| ཤེན་དུ་དངོས་བོ་མེད་པ།           | ༡༠ | अत्यन्ताभावा            | १८६ |
| ཤེན་དུ་ཆ་སྤྲོ་བ།                | ༧༧ | सूक्ष्मतर               | १८७ |
| ཤེན་དུ་བྱུང་བ།                  | ༡༠ | अत्यन्तं विनीता         | १८८ |
| ཤེན་དུ་སྤྱོད་པ།                 | ༡༠ | अत्यन्तशून्य            | १८९ |
| ཤེན་དུ་བྱ་དགའ་ཞིང་རྒྱན་མི་ཆད་པ། | ༧༧ | अतिदुष्कराविच्छिन्न     | २०१ |
| ཤེན་དུ་བྱ་དགའ་ཞིང་ཡུན་རིང་པ།    | ३  | अतिदुष्करदीर्घकालिक     | १६६ |
| ཤེན་དུ་སྤྱང་དགའ་བ།              | ༩༧ | सुदुर्जय                | १९८ |
| ཤེན་དུ་སྤྱངས་པ།                 | ༩༠ | प्रश्रब्धिः             | २०६ |
| ཤེན་དུ་ས་སྤྱེས་པ།               | ༡༠ | अत्यन्ताजात             | १८९ |
| ཤེན་དུ་མི་ཟད་པའི་བགྲེས་པ་དང་    |    |                         |     |
| སྤྱོད་པ།                        | ༧  | दुःसहतीब्रक्षुत्तर्ष    | १६७ |
| ཤེན་དུ་ས་ཆོན་མ་མེད་པ།           | ༡༧ | अत्यन्तनिर्निमित्त      | १८६ |
| ཤེན་དུ་ཤས་ཆེ་བ།                 | ༩༡ | अतिरिक्ततरा             | १९७ |
| ཤེས་པའི་སྤྱང་བ།                 | ༧༧ | ज्ञानालोक               | १८५ |
| ཤེས་བྱའི་སྤྱིབ་པ།               | ༧༩ | ज्ञेयावरण               | १८६ |
| ཤེས་བཞིན།                       | ३༩ | सम्प्रजन्य              | १८३ |
| ཤེས་རབ་ཀྱི་ས་རྒྱ་དུ་བྱེན་པ།     | ༩  | प्रज्ञापारमिता          | १६६ |
| ཤེས་རབ་ཀྱི་མཁུ་གཤིས་བདུགས་དེ།   | ༧༧ | प्रज्ञाचक्षुषा निरूपयतः | १८६ |
| ཤེས་རབ་ཀྱི་ས་ཆོན་གྱིས།          | ༧༧ | प्रज्ञाशस्त्रेण         | १८७ |
| ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་བློ་བྱེད་པ། | ३३ | प्रज्ञापरिगृहीता        | १७६ |



|  |                   |     |
|--|-------------------|-----|
| प्रेषः सवः सङ्गः श्रीः ससमः सङ्गः वा। ७७ | प्रज्ञोत्तरध्यायी | २१३ |
| प्रेषः सवः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १७   | प्रज्ञासहित उपाय  | १७१ |
| प्रेषः सवः सङ्गः सङ्गः। ३०               | दुष्प्रज्ञः       | १७४ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १३३             | कृतमूत्रपुरीषः    | २२४ |

सः

|  |                       |     |
|--|-----------------------|-----|
| सः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १४                             | दशभूमिसूत्र           | १७२ |
| सः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। ३०                             | शालिस्तम्ब            | १७६ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। ४४                          | बुद्ध                 | १६२ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः      |                       |     |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १०  | सर्वबुद्धधर्मपरिपूरण  | १६६ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १७  | बुद्धधर्मसमृद्धिः     | १७३ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १४८ | सर्वबुद्धकार्याणी     | २४२ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १०  | बुद्धभूमि             | १६६ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १४७ | बुद्धत्वपुर           | २४० |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः      |                       |     |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १०  | बुद्धबोधिसत्त्व       | १६६ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः      |                       |     |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। ४७  | सर्वबुद्धबोधिसत्त्वैः | १६४ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १०  | जाग्रदपि              | १६६ |
| सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः सङ्गः। १४  | भूमिप्रविष्ट          | १७२ |



|   |     |                          |     |
|---|-----|--------------------------|-----|
| सोमसः अमुगसः वा                             | ५   | आक्षिप्तचित्ता           | १६७ |
| सोमसः उक्त्वाः क्रिः दैवः प्रोक्तः वा       | १७  | सत्त्वार्थसंप्रापणं      | १७३ |
| सोमसः उक्त्वाः क्रिः दैवः प्रोक्तः वा       |     |                          |     |
| प्रोक्तः वा                                 | १४० | सत्त्वार्थक्रियावैमुख्यं | २३८ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः |     |                          |     |
| अर्कः वा                                    | १३५ | सर्वसत्त्वोपजीवया        | २३१ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | १०  | सर्वसत्त्वसाधारणानि      | १६६ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | १८  | सत्त्वपरिपाक             | १७२ |
| सोमसः अर्कः वा                              | ३८  | चित्तस्थापयति            | १८३ |
| सोमसः वा                                    | ३८  | चेतना                    | १८३ |
| सोमसः उक्त्वाः                              | ४३  | चित्तमात्रं              | १६१ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | ८३  | चित्तमात्रमतिक्रमेत      | १८६ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | ३७  | चित्तैकाग्रता            | १८३ |
| सोमसः अर्कः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः    | ५   | अस्वाच्छचेतसः            | १६७ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | १०  | पृथग्जनानाम्             | १६६ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | ५८  | प्रतिसंविद्              | १६६ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | ४४  | पृथग्जन                  | १८२ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | ३७  | प्रत्यवेक्षणियम्         | १७७ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | १४३ | प्रतिवेशयामि             | २३६ |
| सोमसः उक्त्वाः प्रोक्तः उक्त्वाः क्रिः दैवः | ३१  | संभवोऽनुगन्तव्यः         | १७५ |







|                       |     |               |     |
|-----------------------|-----|---------------|-----|
| झणःसर्पेःगीःकैः       | ८७  | विषयनासम्भार  | २०७ |
| झणःपदेःकुपःमिः        | १०  | अधिशीलम्      | १९४ |
| झणःपदेःमेःः           | १०  | अधिप्रज्ञम्   | १९४ |
| झणःपदेःमेःः           | १०  | अधिचित्तम्    | १९४ |
| झणःसुः                | ७१  | उद्रक         | १८५ |
| झणःसुःसुवःपदेःसवःःकैः | ११४ | अनाभोगनानोपाय | २२१ |

मङ्गलम्



|     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|
| 100 | 100 | 100 | 100 |
| 100 | 100 | 100 | 100 |
| 100 | 100 | 100 | 100 |
| 100 | 100 | 100 | 100 |
| 100 | 100 | 100 | 100 |
| 100 | 100 | 100 | 100 |
| 100 | 100 | 100 | 100 |

100



## उद्धृत ग्रन्थों की सूची

‘མདོ།’

ཤེས་བྱངས།

|                                     |                             |
|-------------------------------------|-----------------------------|
| སྒྲུང་བོའི་ཆུལ།                     | 25                          |
| བདུད་བདུལ་བའི་ལེན།                  | 110                         |
| ནཱ་བར་མི་རྟོག་བ་ལ་འཇུག་བའི་གཞུངས།   | 24, 123                     |
| སྒྲུང་བོ་གསུམ་བ་ཡོངས་སུ་བསྡོམས།     | 122,                        |
| འཕགས་བ་དགོན་མཆོག་གླིན།              | 44, 50, 40, 122, 122        |
| འཕགས་བ་དགོན་མཆོག་བཅུགས་བ།           | 42, 45, 104, 104, 110, 110, |
| འཕགས་བ་གཡུ་མགོའི་རིའི་མདོ།          | 2, 12, 10, 105, 120         |
| འཕགས་བ་རྒྱལ་བོ་ལ་གདམས་བའི་མདོ།      | 0                           |
| འཕགས་བ་དགོངས་བ་ངས་བར་འབྲེལ་བ།       | 40, 45, 40, 100, 111, 110   |
| འཕགས་བ་ཆོས་བཅུ་བའི་མདོ།             | 4, 104                      |
| འཕགས་བ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་      |                             |
| བར་བསྐྱུས་བ།                        | 100, 111                    |
| འཕགས་བ་ཆོས་ཡང་དག་བར་བསྐྱུད་བའི་མདོ། | 1, 21, 20, 11, 50, 11, 11   |
| འཕགས་བ་འཇམ་དབལ་ནཱ་བར་རོལ་བའི་མདོ།   | 102                         |
| འཕགས་བ་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་བའི་ལེན།    | 12                          |



|                                      |                            |
|--------------------------------------|----------------------------|
| འཕགས་པ་ཉི་ཤེར་འཁོར་གྱིས་ལྷན་པ།       | 147                        |
| འཕགས་པ་དྲི་ཏེ་འཛིན་གྱི་པོ་འི་མདོ།    | 13, 13, 13, 17, 17, 17, 17 |
| འཕགས་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་དད་པ་བསྐྱོས་   |                            |
| བའི་མདོ།                             | 13                         |
| འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྦྱེ་བ་       |                            |
| འབྱུང་བའི་མདོ།                       | 135                        |
| འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ |                            |
| ཕྱག་རྒྱའི་དྲི་ཏེ་འཛིན་གྱི་མདོ།       | 1                          |
| འཕགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་        |                            |
| བའི་མདོ།                             | 135, 136, 140              |
| འཕགས་པ་དད་པའི་སྟོབས་བསྐྱེད་པ།        | 3, 14,                     |
| འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་བསྟན་པ།           | 10, 14                     |
| འཕགས་པ་བདེན་པ་གཉིས་རྣམ་པར་འབྱེད་པ།   | 15                         |
| འཕགས་པ་དྲི་མ་མེད་པར་གྲགས་པས་བསྟན་པ།  | 10, 10, 13, 14, 14         |
| འཕགས་པ་སྟོང་པོ་བཞེད་པའི་མདོ།         | 13, 10                     |
| འཕགས་པ་ནམ་མཁའ་མཛོད།                  | 100, 147, 148              |
| འཕགས་པ་དབང་མཚོག་དང་བོ།               | 105                        |
| འཕགས་པ་དབང་སྦྱིན་གྱིས་ལྷན་པ།         | 11                         |
| འཕགས་པ་སྦྱོར་ཡུལ་ཡོངས་སུ་དག་པའི་མདོ། | 113                        |
| འཕགས་པ་སྟོ་གྲོས་མི་ཟད་པའི་མདོ།       | 1, 1, 14, 110              |



|                                    |                     |
|------------------------------------|---------------------|
| འཕགས་བ་ས་སྐྱེས་དགའི་འགྱོད་བ་བསལ་བ། | ༥༣                  |
| འཕགས་བ་གཙུག་ན་རིན་པོ་ཆེས་ཁྱས་བ།    | ༡༠༩                 |
| འཕགས་བ་ཡོངས་སྤྱ་མུ་ངན་ལས་འདས་བ་    |                     |
| ཆེན་པོ་འི་མདོ།                     | ༤༩                  |
| འཕགས་བ་ལྟར་གཤེགས་བ།                | ༣༡, ༣༢, ༧༩, ༧༩, ༡༠༠ |
| འཕགས་བ་ཤེས་རབ་ཀྱི་པ་རྩ་དུ་ཕྱིན་བ།  | ༧༩                  |
| འཕགས་བ་སངས་རྒྱས་བཟོ་བ།             | ༩༠                  |
| འཕགས་བ་སྤྱད་མེད་ཀྱི་བྱས་ཁྱས་བ།     | ༤༧                  |
| བྱང་རྒྱལ་སེམས་པའི་སྤེ་སྤྱོད།       | ༤༧                  |
| བྱམས་བའི་རྣམ་པར་ཐར་བ།              | ༩                   |
| ཆངས་པས་ཁྱས་བ།                      | ༡༠༧, ༡༧༩, ༡༧༧       |
| ཁྲི་བ་སྐྱོན་མེད་མདོ།               | ༤༠                  |
| ཡབ་སྐུས་མཇལ་བའི་མདོ།               | ༩༧                  |
| ས་བཅུ་བའི་མདོ།                     | ༡༧, ༡༠༩             |
| ས་ལུ་ལྟར་བའི་མདོ།                  | ༩༠                  |
| ‘རྒྱུད།’                           |                     |
| རྣམ་པར་རྒྱང་མཛད་མཛོན་པར་རྫོགས་པར་  |                     |
| བྱང་རྒྱལ་བ།                        | ༩༩                  |
| ‘བསྐྱན་བཅོས།’                      |                     |
| མདོ་ཀྱན་ལས་བདུས་བ།                 | ༡༠༠, ༡༧, ༡༧༧, ༡༧༤   |







**षष्ठ परिशिष्ट**  
**उद्धृत ग्रन्थों की सूची**  
( संस्कृत पाठ )

| सूत्रग्रन्थ-                | पृष्ठ संख्या                    |
|-----------------------------|---------------------------------|
| अविकल्पप्रवेशधारणी          | 187,230                         |
| आर्यगगनगञ्ज                 | 128,218,238,239                 |
| आर्यगण्डव्यूह               | 170,199                         |
| आर्यगयाशीर्ष                | 166,171,216,232                 |
| आर्यगोचरपरिशुद्धिसूत्र      | 219                             |
| आर्यतथागतगुह्यसूत्र         | 231, 233, 242                   |
| आर्यतथागतज्ञानमुद्रासमाधि   | 169                             |
| आर्यतथागतोत्पत्तिसंभवसूत्र  | 231                             |
| आर्यदशधर्मसूत्र             | 168,217                         |
| आर्यधर्मसंगीतिसूत्र         | 165,175,176,193,194,202,219,243 |
| आर्यनारायणपरिपृच्छा         | 207                             |
| आर्यप्रज्ञापारमिता          | 177,192                         |
| आर्यबुद्धसङ्गीति            | 177                             |
| आर्यमञ्जुश्रीविकुर्वितसूत्र | 235                             |
| आर्यमहापरिनिर्वाणसूत्र      | 206                             |
| आर्यमहायानश्रद्धाभावनासूत्र | 205                             |
| आर्यरत्नकूट                 | 205,212,216,218,237,242         |
| आर्यरत्नचूड                 | 215                             |
| आर्यरत्नमेघ                 | 193,194,208,213,227,235         |
| आर्यराजाववादकसूत्र          | 169                             |
| आर्यलङ्कावतार               | 179,180,185,190,226,235         |
| आर्यलोकोत्तरपरिवर्त         | 191                             |
| आर्यविमलकीर्तिनिर्देश       | 171,175,217,232,238             |
| आर्यवीरदत्तपरिपृच्छा        | 170                             |
| आर्यश्रद्धाबलाधान           | 166,172                         |



|                                     |                                   |
|-------------------------------------|-----------------------------------|
| आर्यश्रीपरमाद्य                     | 216                               |
| आर्यसत्यद्वयनिर्देश                 | 189, 192                          |
| आर्यसत्यद्वयविभाग                   | 177                               |
| आर्यसन्धिनिर्मोचन                   | 204, 207, 209, 211, 218, 221, 238 |
| आर्यसमाधिराज                        | 171, 176, 181, 205, 209, 235      |
| आर्यसर्वधर्मवैपुल्य                 | 174, 215, 241                     |
| आर्याजातशत्रुकौकृत्यविनोदन          | 207                               |
| आर्याक्षयमतिनिर्देश                 | 165, 168, 195, 218,               |
| आर्योपालिपरिपृच्छा                  | 238, 240                          |
| चन्द्रप्रदीपसूत्र                   | 206                               |
| त्रिस्कन्धपरिणामना                  | 239                               |
| दशभूमिसूत्र                         | 172, 237                          |
| पितापुत्रसमागम                      | 177                               |
| प्रत्युत्पन्नबुद्धसंमुखावस्थितसमाधि | 225                               |
| बोधिसत्त्वपिटक                      | 205                               |
| ब्रह्मपरिपृच्छा                     | 236, 239, 240                     |
| मारदमनपरिच्छेद                      | 218                               |
| मैत्रेयविमोक्ष                      | 169                               |
| शालिस्तम्ब                          | 179                               |
| हस्तिकक्षय                          | 177                               |
| तन्त्रग्रन्थ-                       |                                   |
| वैरोचनाभिसम्बोधि                    | 175                               |
| शास्त्रग्रन्थ-                      |                                   |
| सूत्रसमुच्चय                        | 235, 238, 240, 241                |



༥ ཉམ་བཅས་རུ་མེད།

| ནི།                | བཅོས།              | ཤོག་གྲངས། | ཡིག་ཐེང་། |
|--------------------|--------------------|-----------|-----------|
| བསྟེས་             | བརྟེས་             | 2         | 4         |
| ཀྲིས་ <sup>5</sup> | ཀྲིས་ <sup>1</sup> | 36        | 5         |
| ལས། <sup>3</sup>   | ལས། <sup>2</sup>   | 39        | 13        |
| ཆན་པོ་འི་          | ཆན་པོ་འི་          | 42        | 7         |
| རིག་བྱའོ།          | རིག་བར་བྱའོ།       | 71        | 1         |
| སྤངས་ཡི།           | སྤངས་པ་ཡི།         | 82        | 9         |
| ནས་འབྱོར་          | ནས་འབྱོར།          | 84        | 8         |
| མཆན་རིག་           | ཆན་རིག་            | 119       | 13        |
| དངས་སྤྱི་འི་       | དང་སྤྱི་འི་        | 119       | 18        |
| དངས་སྤྱི་འི་       | དང་སྤྱི་འི་        | 120       | 16        |
| (གཞུང་དངས་གཞི།)    |                    |           |           |
| སྤྱ་ཆོགས་          | སྤྱ་ཆོགས་          | 6         | 3         |
| सत्त्वसय           | सत्त्व             | 8         | 21        |
| उद)                | उद།                | 9         | 18        |
| काणां              | काणां              | 10        | 20        |
| दवे                | दवे                | 15        | 17        |
| २७                 | २८०                | 16        | 15        |



| ནོར།      | བཅོས།        | ཤོག་གྲངས། | ཡིག་ཐེང་། |
|-----------|--------------|-----------|-----------|
| གསལ་      | གསལ་)        | 17        | 20        |
| ཚུལ་      | “ཚུལ་        | 24        | 14        |
| ཡུལ་      | ཡུལ་         | 25        | 16        |
| བའི་རོ།   | བའི་ཕྱིར་རོ། | 32        | 3         |
| རྩ་འབྲུལ་ | རྩ་འབྲུལ་    | 40        | 2         |
| ཀྱེ་      | ཀྱེ་         | 53        | 11        |
| སྒྲིབ་    | སྒྲིབ་       | 60        | 22        |
| བྱའོ།     | བྱའོ།”       | 62        | 8         |
| སེམས་བས་  | སེམས་དབས་    | 75        | 6         |
| ངན་ནྟམ་བ་ | ངན་བ་ནྟམ་བ་  | 77        | 13        |
| བྱ་       | བྱ་          | 83        | 20        |
| མི་འབྲུལ་ | མི་འབྲུལ་    | 85        | 10        |
| ནྟམ་བ་    | ནྟམ་བ་       | 95        | 13        |
| མར་       | མར་          | 146       | 6         |
| བྱ་       | བྱ་          | 146       | 14        |
| སྒྲ་བེ་—  | སྒྲ་བེ་—     | 148       | 13        |
| ཀྱ་དཔེར་  | ཀྱ་དཔེར་     | 149       | 18        |
| ཀྱ་དཔེར་  | ཀྱ་དཔེ་      | 150       | 18        |
| གསལ་      | གསལ་         | 152       | 16        |



## शुद्धि-पत्र

| अशुद्धपाठ    | शुद्धपाठ    | पृष्ठ | पंक्ति |
|--------------|-------------|-------|--------|
| आदि          | आदौ         | 175   | 20,26  |
| ०त्तात्      | ०तान्       | 189   | 23     |
| ०भवात्       | ०भावात्     | 191   | 25     |
| मित          | ०मितं       | 193   | 4      |
| प्रत्येव०    | प्रत्यवे०   | 193   | 17     |
| विरो०        | निरो०       | 193   | 19     |
| ज्ञानलो०     | ज्ञानालो०   | 196   | 7      |
| ०णर्थम्      | ०णार्थम्    | 201   | 21     |
| दुख          | दुःख        | 203   | 2      |
| पर्यावे०     | पर्यावे०    | 203   | 9      |
| ते           | स           | 209   | 10     |
| धर्मः        | धर्माः      | 209   | 11     |
| विविच्यते    | विवेचयति    | 209   | 13     |
| व्यसे०       | व्यासे०     | 210   | 13     |
| ०लम्बेन      | ०लम्बने     | 210   | 14     |
| परमार्थः     | परमार्थतः   | 211   | 23     |
| ०करो         | ०कारो       | 211   | 23     |
| चित्तं       | चित्तम्     | 214   | 12     |
| ०प्रज्ञन     | ०प्रज्ञान   | 215   | 16     |
| ०भाव         | ०भव         | 217   | 4      |
| ०पर्यासि     | ०पर्यस्त    | 217   | 11     |
| ०क्रमः       | ०क्रमो      | 221   | 20     |
| ०भेदने       | ०भेदेन      | 223   | 3      |
| ०यानं        | मानं        | 227   | 10     |
| धर्मा०       | धर्म०       | 230   | 18     |
| अस्मृतिर्मन० | अस्मृतिरमन० | 234   | 19     |
| ०पाद्यते     | ०पाद्यते    | 236   | 15     |
| परंदौःशी०    | परमदौःशी०   | 238   | 9      |



## अशुद्धपाठ

निवेशां  
औ  
करनों  
तथा  
चञ्चल  
उद्रेक  
मार्ग  
होत  
ने करके  
०सत्त्वों  
प्रसङ्ग  
नहाने  
अस्मरण  
होजा०  
तथा गत०  
०प्रायार्वावि०  
विधिः  
बोधिसत्त्वेभ्यः

## शुद्धपाठ

निवेशो  
और  
करनी  
तथा-  
चञ्चल  
उद्रेक  
मार्ग  
होता  
करने के  
सत्त्वों  
प्रसङ्ग  
न होने  
स्मरण  
होजा०  
तथागत०  
०प्रायावि०  
विधिः  
बोधिसत्त्वेभ्यः

## पृष्ठ

238  
250  
250  
250  
257  
260  
269  
269  
271  
296  
304  
305  
305  
307  
310  
323  
327  
366

## पंक्ति

17  
22  
23  
30  
16  
20  
12  
29  
8  
22  
23  
18  
19  
16  
11  
2  
4  
18

—: ● :—



# केन्द्रीय उच्च तिब्बती-शिक्षा-संस्थान के प्रकाशन

1986

## I भोट-भारतीय ग्रन्थमाला

- |   |                                |
|---|--------------------------------|
| 1. तिब्बती पाठमाला ( Tibetan Reader )   | Rs. 15.00 HB<br>Rs. 10.00 PB   |
| 2. अभिसमयालङ्कारवृत्तिः स्फुटार्था ( संस्कृत तथा तिब्बती एक साथ )   | Rs. 85.00 HB<br>Rs. 75.00 PB   |
| 3. वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमितासूत्र ( संस्कृत, हिन्दी तथा तिब्बती एक साथ ) आचार्य-असंगकृत त्रिशतिका कारिका सप्तति ( संस्कृत तथा हिन्दी एक साथ ) | Rs. 60.00 HB<br>Rs. 45.00 PB   |
| 4. चौरासी सिद्धों का वृत्तान्त ( हिन्दी तथा तिब्बती एक साथ )  | Rs. 150.00 HB<br>Rs. 130.00 PB |
| 5. विमलकीर्तिनिर्देशसूत्र ( संस्कृत, हिन्दी तथा तिब्बती एक साथ )  | Rs. 200.00 HB                  |
| 6. न्यायप्रवेशसूत्रम् हरिभद्रसूरिकृतवृत्तिसहितम् ( तिब्बती तथा संस्कृत एक साथ )   | Rs. 140.00 HB<br>Rs. 100.00 PB |
| 7. बोधिपथप्रदीप ( तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी एक साथ )  | Rs. 70.00 HB<br>Rs. 50.00 PB   |
| 8. शून्यतासप्ततिः स्वोपज्ञवृत्त्या समन्विता ( संस्कृत, हिन्दी तथा तिब्बती एक साथ )  | Rs. 90.00 HB<br>Rs. 65.00 PB   |
| 9. भावनाक्रम ( तिब्बती, संस्कृत तथा हिन्दी एक साथ )   | Rs. ———HB<br>Rs. ———PB         |



**II दलाई लामा भोट-भारती ग्रंथमाला**

- |  |                              |
|--|------------------------------|
| 1. The Social Philosophy of Buddhism<br>( English )  | Rs. 2.00 PB                  |
| 2. बौद्ध समाज दर्शन ( हिन्दी )   | Rs. 1.00 PB                  |
| 3. प्रतीत्यसमुत्पादस्तुतिमुभाषितहृदयम्<br>( तिब्बती, संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी एक साथ ) | Rs. 60 00 HB<br>Rs. 45 00 PB |
| 4. धम्मपद<br>( पालि, संस्कृत, तिब्बती, हिन्दी तथा अंग्रेजी एक साथ )                        | Rs. 75 00 HB<br>Rs. 55 00 PB |
| 5. बौद्धविज्ञानवाद : चिन्तन एवं योगदान   | Rs. 45 00 HB<br>Rs. 35 00 PB |
| 6. विशति, भोट उपसर्ग प्रक्रिया<br>( मूल कारिका तिब्बती में तथा स्वभाष्य हिन्दी में )       | Rs. 55.00 HB<br>Rs. 45.00 PB |
| 7. gTam-rGyud-gSer-Gyi-Thaṅ-Ma of<br>dGe-hDun Chos-hPhel ( in Tibetan )                    | Rs. 26.00 HB<br>Rs. 20.00 PB |

**III सम्यग्-वाक्**

- |  |                              |
|--|------------------------------|
| 1. प्रतित्यसमुत्पाद ( निबन्ध-संग्रह )                                  | Rs. 80.00 HB<br>Rs. 65 00 PB |
| 2. Mādhyamika Dialectic & Philosophy of<br>Nāgārjuna ( निबन्ध-संग्रह ) | Rs. 60.00 HB<br>Rs. 45.50 PB |

**IV Prof. Lal Mani Joshi : Commemorial Series**

- |                       |             |
|-----------------------|-------------|
| 1. Naiḥśreyasa Dharma | Rs. 5.00 PB |
|-----------------------|-------------|

**V दुर्लभ बौद्ध ग्रंथ शोध योजना**

- |   |              |
|---|--------------|
| 1. धी: 1. दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध पत्रिका | Rs. 65.00 PB |
|---|--------------|



